

भोट भारती ग्रन्थमाला - ४

आचार्य अभयदत्तश्री-प्रणीत
चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

शुभं दयैकं श्रीरद्वैतस्य श्रुतं श्रुतं श्रुतं
शुभं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं



भोट विद्या संस्थानम्

अनुवादक एवं सम्पादक
प्रॉ० सेम्पा दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी

वृत्तान्त-२५४२

ख्रीस्ताब्द-१९९०

भोट-भारती ग्रन्थमाला - ४

आचार्य अभयदत्तश्री-प्रणीत
चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

ལྷོ་བ་དཔོན་མི་འཇིགས་སྤྱིན་གྱིས་མཛད་པའི་
གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞི་འཁོར་གྱིས།



भोट विद्या संस्थानम्

अनुवादक एवं सम्पादक
प्रो० सेम्पा दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४२

ख्रीस्ताब्द-१९९८

प्रधान सम्पादक : भिक्षु समदोङ्ग रिनपोछे

प्रथम संस्करण : ५०० प्रतियाँ, १९७९

द्वितीय संशोधित संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९८

मूल्य सजिल्द : रु० ३००.००
 अजिल्द : रु० २५०.००

© १९९८, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७
प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित

प्रकाशक

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

BIBLIOTHECA INDO - TIBETICA SERIES -IV

THE BIOGRAPHY OF EIGHTY FOUR SAINTS

BY

ĀCĀRYA ABHAYADATTA ŚRĪ



भोट विद्या संस्थानम्

Translated and Edited

by

Prof. Sempa Dorje

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2542

C.E. 1998

BIBLIOTHECA INDO - TIBETICA SERIES -IV

Chief Editor: *Prof. Samdhong Rinpoche*

First Edition: 500 copies, 1979

Second revised Edition: 550 copies, 1998

Price : Hardback: Rs. 300.00
Paperback: Rs. 250.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath -221 007
Varanasi (U.P.) India, 1998.

Publisher:

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

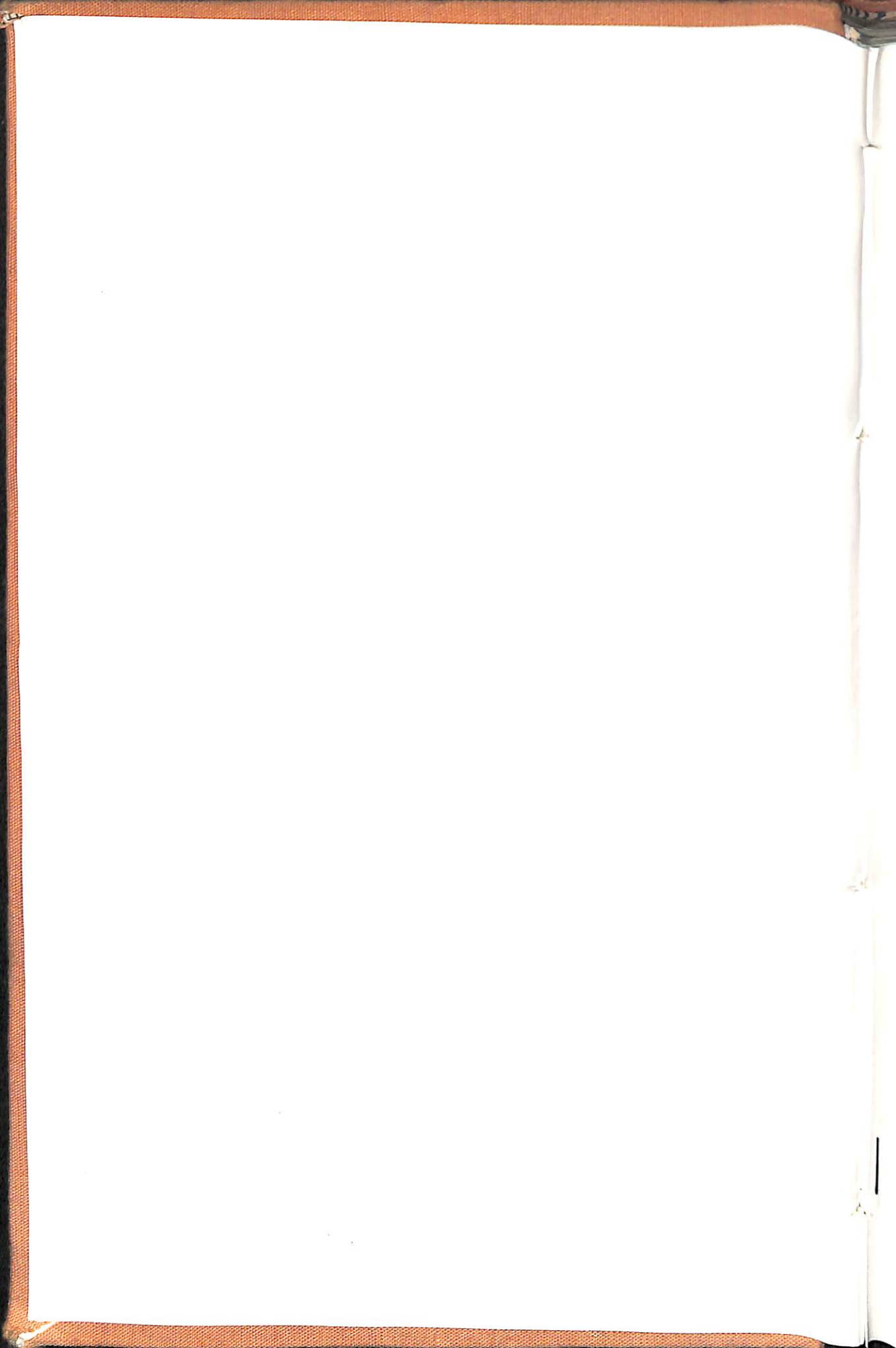
प्रकाशकीय

भारत में कुछ समय से महायान बौद्ध दर्शन तथा विशेषरूप से तन्त्र के क्षेत्र में जिज्ञासु-जन चौरासी सिद्धों के जीवन-वृत्तान्त और उनके रचना आदि कार्यों के सम्बन्ध में विशेष रुचि लेते दिखलाई पड़ते हैं। इसके साथ ही हिन्दी भाषा जगत् में जब से सिद्धों के दोहे हिन्दी भाषा में प्रारम्भिक विकास-क्रम की अवस्था के रूप में माने जाने लगे तब से दोहा-कोशों तथा सिद्धों के जीवन-वृत्तान्त पर शोध किया जाने लगा। इस प्रकार सिद्धों के दोहे-स्वरूप उपदेश और उनका जीवन-दर्शन अनेक भारतीय विद्वानों के समक्ष महत्त्वपूर्ण आकर्षण-बिन्दु बन गये।

परन्तु भातीय भाषाओं में सिद्धों से सम्बन्धित बहुत कम साहित्य उपलब्ध है। अतः भोट भाषा के माध्यम से अनेक प्रामाणिक सूचनाएं एवं अध्ययन-स्रोत मिलने की आशा की गई। उपर्युक्त कारणों से प्रेरित होकर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के तत्कालीन पालिविभाग अध्यक्ष प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय के सुझाव पर संस्थान ने १९७७ ई० में “चौरासी सिद्धों का जीवन दर्शन” विषय पर एक अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी आयोजित की। उस गोष्ठी में सम्मिलित हुए विद्वानों के बीच वितरण करने के उद्देश्य से भोट तनग्युर में संगृहीत आचार्य अभयदत्तश्री द्वारा रचित “चौरासी सिद्धों का जीवन-वृत्तान्त” संस्थान के मूलशास्त्र विभाग के आचार्य श्री सेम्पा दोर्जे द्वारा हिन्दी में अनूदित कराया गया। इस अनुवाद को विद्वानों में वितरित किया गया, जिसका सभी ने यथेष्ट स्वागत किया। तदनन्तर मूल तिब्बती पाठ का भी प्रो० सेम्पा दोर्जे द्वारा संशोधित पाठ प्रस्तुत करवाके संस्थान द्वारा १९७७ ई० में प्रकाशित किया गया।

प्रथम संस्करण के समय साधन-अभाव के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण और प्रकाशन सन्तोषजनक नहीं हुआ है। उस समय के हिन्दी अंश का मुद्रण भी परिसंवाद के निश्चित समय पर निकाल देने की शीघ्रता में हुआ, जिससे उसमें कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं। उसी तरह पुस्तक के तिब्बती भाषा में भी यत्र-तत्र कुछ दोष रह गये हैं, उन सबको इस द्वितीय संस्करण में संशोधन करके प्रकाशित किया गया है।

इस प्रकाशन से भोट-भारत के अनेक सुधी जन जिज्ञासुओं को ज्ञानलाभ होगा, ऐसी आशा है।



པར་སྐྱུན་པའི་ཆེད་བཟོད།

༡༡། །འཕགས་ཡུལ་དུ་བར་སྐྱུན་གྱི་ལྷན་པའི་ཐོག་ཆེན་གྱི་ཚོས་དང་།
 ལྷག་པར་གསང་སྐྱབས་ཀྱི་སྐོར་དོན་གཉེས་ཀྱི་སྐྱུ་ལམ་ཚོས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུའི་
 རྣམ་ཐར་ལོ་རྒྱུས་དང་། གསུང་ཚོམ་བསྐྱེད་བཅོས་ཁག་དང་། དོན་མགུར་འདུམ་
 སོགས་ལ་སློབ་སྦྱོང་གྱི་ཐུག་ཏུ་དོན་གཉེས་ཀྱི་སྐྱུ་ལམ་མང་དག་གྲུང་འདུག་ཅིང་།
 ལྷག་པར་ཉི་མའི་སྐད་ཡིག་ལ་སློབ་སྦྱོང་གྱི་སྐྱུ་ལམ་ཚོས་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཉེ་
 རིགས་རྣམས་ད་ལྟོ་ཉི་མའི་སྐད་ཡིག་འདིའི་འཕེལ་རིམ་གྱི་འགོ་འཇུག་ཡིན་པར་
 ཚད་འཛིན་གྱིས་གྲུབ་ཐོབ་དང་དོན་ཉེ་སྐོར་ལ་དོ་སྣང་ཉམས་ཞིབ་ཀྱི་སྐྱུ་ལམ་ཉེ་
 ཅང་མང་པོ་ཡོང་གི་འདུག་པ་བཅས་གང་ལྟར་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུའི་ལོ་རྒྱུས་དང་།
 ཁོང་ཚོའི་གསུང་མགུར་དོན་ཉེ་རིགས་འདི་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་མང་པོའི་དོ་སྣང་
 ཉམས་ཞིབ་ཀྱི་གཞི་རྩ་གལ་ཆེ་ཞིག་དུ་གྱུར་འདུག་པར་བརྟེན། དོན་སྐྱོད་དུ་འགྱུར་
 བའི་བསྐྱེད་བཅོས་ཁག་ནས་འདི་ཚོའི་སྐོར་མང་པོ་ཆེད་ཀྱི་ཡོད་པའི་རེ་འདུན་གྱི་སྐྱུ་
 མཁས་མང་བ་དང་། ལྷག་པར་ལེགས་སྐྱར་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་སློབ་དཔོན་
 ཆེན་པོ་ཇག་རྒྱལ་ལྷན་པའི་མཚོ་གཞི་དགོངས་འཆར་ལམ་སྟོན་བཞིན། རྒྱ་ལོ་
 ༡༩༧༧ ལོར་ “གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུའི་ལྷན་པ་དང་། རྣམ་ཐར་” ཞེས་པའི་བསྐོ་
 གཞིའི་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་མཁས་པའི་ཚོགས་འདུ་ཞིག་གོ་སྐྱོད་ལུ་སྐབས། རྒྱུགས་
 ཐེབས་མཁས་པ་ཚོར་འགྲེམས་སྤེལ་ལུ་ཆེད་བསྐྱེད་འགྱུར་དུ་བཞུགས་པའི་སྐོར་
 མི་འཛིགས་པ་སྐྱིན་པ་དཔལ་གྱིས་མཇེད་པའི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུའི་རྣམ་ཐར་དེ་

ཉིན་སྐད་དུ་བསྐྱུར་ན་ལེགས་ཚུལ་གྲོས་མོལ་བྱང་བ་ལྟར་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་
 སེམས་དཔའ་དོ་ཇིས་ཉིན་བསྐྱུར་མཛད་པ་དང་། བོད་ཡིག་དུ་ཡོད་པའི་རྣམ་ཐར་
 ངོ་མ་ཡང་སློབ་དཔོན་སེམས་དོར་མཚོག་ལ་རེ་བསྐྱུལ་ཞུས་པ་བཞིན་པར་ཅུ་དག་
 ཞུས་གནང་བ་བོད་ཀྱི་སློབ་ཁང་ནས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༧ ལོར་པར་འབྲེམས་ཞུས་གིང་།
 པར་འདེབས་ཀྱི་མཐུན་ཉེན་ཇི་བཞིན་མ་འཇོམས་སྐབས། པར་ཐངས་དང་པོ་
 སྤྱི་དག་ཅིག་མ་བྱུང་བ་དང་། རྣམ་ཐར་ཉིན་བསྐྱུར་དེ་ཇི་དྲག་གིས་པར་འདེབས་
 ཞུས་པས་ཞུ་དག་ནན་ཏན་མ་སོང་བས་ཡི་གེ་མ་དག་པ་ཡང་མང་ཙམ་ཞིག་ལུས་
 འདུག་པ་མ་ཟད། དི་མཚུངས་བོད་ཡིག་ཐོག་དུའང་ཞུ་དག་ཇི་བཞིན་མ་སོང་བའི་
 ཡི་གེ་དག་མིན་རེ་བྱུང་ལུས་འདུག་པ་རྣམས་དག་བཙོས་ཞུས་དེ་དུ་ལམ་པར་
 ཐངས་གཉིས་པ་པར་སྐྱེན་ཞུས་པ་ལགས། འདིས་ཀྱང་ཉིན་བོད་ཀྱི་སློབ་གཉེར་བ་
 དོན་གཉེར་ཅན་མང་དག་ལ་ཕན་ཐོགས་ཡོང་བའི་རེ་འདུན་བཙུགས། ལྷ་ཆ་དབུས་
 བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་སློབ་པ་
 བསྟན་འཛིན་གྱིས་ ༡༩༩༥ ཕྱི་ཟླ་ ༥ ཚེས་ ༣༡ ལ་བྱིས།

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय (हिन्दी)

vii-viii

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

लोचाब्र का मंगलाचरण	१
मंगलाचरण	१
१. गुरु लूहिपा का वृत्तान्त	१
२. गुरु लीलापा ,,	४
३. गुरु विरूपा ,,	६
४. गुरु डोम्बिपा ,,	१३
५. गुरु शबरपा ,,	१६
६. गुरु सरहपा ,,	२१
७. गुरु कङ्करिपा ,,	२५
८. गुरु मीनपा ,,	२७
९. गुरु गोरक्षपा ,,	३०
१०. गुरु चौरङ्गीपा ,,	३४
११. गुरु वीणापा ,,	३६
१२. गुरु शान्तिपा ,,	३८
१३. गुरु तन्तिपा ,,	४२
१४. गुरु चमरिपा ,,	४६
१५. गुरु खड्गपा ,,	४९
१६. गुरु नागार्जुन ,,	५१
१७. गुरु कण्हपा ,,	५६

१८. गुरु कर्नरिपा का वृत्तान्त	६२
१९. गुरु थकनपा	६५
२०. गुरु नरोपा	६८
२१. गुरु श्यालिपा	७१
२२. गुरु तिल्लिपा	७३
२३. गुरु चत्रपा	७४
२४. गुरु भद्रपा	७६
२५. गुरु धुखन्धि	७९
२६. गुरु अजोगी	८०
२७. गुरु कलपा	८२
२८. गुरु धोबीपा	८४
२९. गुरु कङ्कनपा	८६
३०. गुरु कम्बलपा	८८
३१. गुरु डिङ्गिपा	९३
३२. गुरु भन्धेपा	९६
३३. गुरु तन्तिपा	९७
३४. गुरु कुकुरिपा	९९
३५. गुरु कुचिपा	१०१
३६. गुरु धर्मपा	१०३
३७. गुरु महिलापा	१०४
३८. गुरु अचिन्तपा	१०६
३९. गुरु भवह (भवट्ट)	१०८
४०. गुरु नलिपा	१०९
४१. गुरु भुसुकुपा	१११
४२. गुरु इन्द्रभूति	११७
४३. गुरु मेकोपा	११९
४४. गुरु कोदलिपा	१२१

४५. गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त	१२४
४६. गुरु जालन्धरपा ,,	१२६
४७. गुरु राहुलपा ,,	१२८
४८. गुरु धर्मपा ,,	१३०
४९. गुरु धोकरिपा ,,	१३१
५०. गुरु मेधिनीपा ,,	१३३
५१. गुरु पङ्कजपा ,,	१३५
५२. गुरु घण्टापा ,,	१३७
५३. गुरु जोकिपा ,,	१४४
५४. गुरु चलुकपा ,,	१४५
५५. गुरु गोधुरिपा ,,	१४७
५६. गुरु लुचिकपा ,,	१४९
५७. गुरु नगुणपा ,,	१५०
५८. गुरु जयानन्द ,,	१५२
५९. गुरु चपरिपा ,,	१५४
६०. गुरु चम्पकपा ,,	१५६
६१. गुरु भिक्षनपा ,,	१५८
६२. गुरु घिलिपा ,,	१५९
६३. गुरु कुम्भरिपा ,,	१६१
६४. गुरु चर्बरिपा ,,	१६३
६५. गुरु मणिभद्रापा ,,	१६५
६६. गुरु मेखलापा ,,	१६८
६७. गुरु कनकखला ,,	१७०
६८. गुरु किलि-किलिपा ,,	१७१
६९. गुरु कन्तलिपा ,,	१७३
७०. गुरु बहुलिपा ,,	१७५
७१. गुरु उडिलिपा ,,	१७६

७२. गुरु कपालपा का वृत्तान्त	१७८
७३. गुरु किरपालपा ,,	१८०
७४. गुरु सागरपा ,,	१८२
७५. गुरु सर्वभक्ष ,,	१८६
७६. गुरु नागबोधि ,,	१८८
७७. गुरु दारिकपा ,,	१९१
७८. गुरु पुतलीपा ,,	१९५
७९. गुरु पनहपा ,,	१९७
८०. गुरु कोकिलपा ,,	१९८
८१. गुरु अनङ्गपा ,,	२०१
८२. गुरु लक्ष्मीकर ,,	२०३
८३. गुरु समुद्रपा ,,	२०६
८४. गुरु व्यालिपा ,,	२०८
नामावली	३२३-३३३
प्रतिमा निर्माण विधि	३३४-३५०

དཀར་ཆག

ས་བཅད།

ཤོག་གྲངས།

༡) བར་སྐྱེན་པའི་ཆེད་བཟོད།

vii- viii

སྐྱེད་གཞི།

༡) བསྐྱེན་པ།

xxiii

༢) བསྐྱེན་པ་དང་སྐྱེན་པའི་ངོ་བོ།

xxv

༣) བསྐྱེན་པའི་དབྱེ་བ།

xxvi

༤) ཐོག་ཆེན།

xxix

༥) རྩོམ་ཐོག་པ།

xxxii

༦) རྒྱལ་སྐྱེད་ཐོག་པ།

xxxiv

༧) རྒྱལ་སྐྱེད་བསྐྱེན་དར་ཚུལ།

xxxviii

༨) རྒྱལ་སྐྱེད་ཐོག་པའི་བསྐྱེན་པ་ལ་རྒྱལ་སྐྱེད་དར་ཚུལ།

xxxix

༩) རྒྱལ་སྐྱེད་ཐོག་པ།

xliv

༡༠) རྒྱལ་སྐྱེད་ཐོག་པ་རྣམས་ཀྱི་གོ་རིམ།

xlvi

༡༡) སར་ཏུ་སྐྱེད།

xlvi

༡༢) ལྷན་སྐྱེད།

liii

༡༤)	ལྷོ་རྒྱལ།	lv
༡༥)	ལྷོ་པ་ཐོབ་ཚུལ།	lviii
༡༦)	ལྷོ་ལྷོ།	lxiii
༡༧)	ལྷོ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས།	lxviii
༡༨)	ལྷོ་ཐོབ་རྣམ་ཐང་།	lxxi
༡༩)	གཞུང་མཛད་པ་པོ།	lxxii
༢༠)	དཔར་གསར་བསྐྱེད།	lxxiii
༢༡)	ལྷོ་དག	lxxiii
༢༢)	ཚིག་དང་གད།	lxxv
༢༣)	བྱུང་བའོལ།	lxxvi
༢༤)	མཚན་རིམ།	lxxvi
༢༥)	འབྲི་ཡིག	lxxvi

ལོ་རྒྱུས།

༡)	འགྲུར་ཕུག	1
༢)	མཚན་བཅོད།	1
༣)	ལྷོ་རྒྱལ།	2
༤)	གྲུ་ལྷོ་རྒྱལ།	6
༥)	གྲུ་ལྷོ་རྒྱལ།	9

୬)	ଧୈର୍ୟ୍ୟସ୍ତ୍ରୀ	19
୭)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	24
୮)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	29
୯)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	33
୧୦)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	36
୧୧)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	41
୧୨)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	46
୧୩)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	49
୧୪)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	51
୧୫)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	58
୧୬)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	63
୧୭)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	67
୧୮)	ଶୈଳୀସ୍ତ୍ରୀ	70
୧୯)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	71
୨୦)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	87
୨୧)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	92
୨୨)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	96
୨୩)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	99
୨୪)	ସ୍ତ୍ରୀସମାଧାନସ୍ତ୍ରୀ	102

३५)	सुसुठसु	104
३६)	सुसुसुसु	107
३७)	सुसुसुसुसु	110
३८)	सुसुसुसुसु	112
३९)	सुसुगुगु	114
४०)	सुसुसुसुसु	117
४१)	सुसुगुगुगु	119
४२)	सुसुगुगुगु	123
४३)	सुसुसुसुसु	130
४४)	सुसुसुसुसु	134
४५)	सुसुसुसुसु	137
४६)	सुसुगुगुगु	139
४७)	सुसुगुगुगु	142
४८)	सुसुसुसुसु	145
४९)	सुसुसुसुसु	146
५०)	सुसुसुसुसु	148
५१)	सुसुसुसुसु	151
५२)	सुसुसुसुसु	153
५३)	सुसुसुसुगु	155

୧୧)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସୂଚୀ	163
୧୫)	ସ୍ତୁତିଖିଖିଣ୍ଡା	166
୧୬)	ସ୍ତୁତିଖିଦିଲିଣ୍ଡା	168
୧୭)	ସ୍ତୁତିଖିପଦିଣ୍ଡା	173
୧୮)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	176
୧୯)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	177
୫୦)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	180
୫୧)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	182
୫୨)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	184
୫୩)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	186
୫୪)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	188
୫୫)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	198
୫୬)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	199
୫୭)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	201
୫୮)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	203
୫୯)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	205
୬୦)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	207
୬୧)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	210
୬୨)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମକ୍ରମ	213

୧୩)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	215
୧୯)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	217
୧୫)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	219
୧୬)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	221
୧୭)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	225
୧୮)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	228
୧୯)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	231
୨୦)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	232
୨୧)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	234
୨୨)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	236
୨୩)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	238
୨୪)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	240
୨୫)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	242
୨୬)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	245
୨୭)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	250
୨୮)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	252
୨୯)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	256
୩୦)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	261
୩୧)	ସ୍ତୁତିକ୍ରମସ୍ତୁତି	263

༤༢)	གུར་གོ་ཀེལ་ལྷ།	264
༤༣)	གུར་ཨ་ཉི་གལ།	267
༤༤)	གུར་ལྟ་མི་ཀ་ར།	270
༤༥)	གུར་ས་ལྷ་ལྷ།	275
༤༦)	གུར་བྱུ་ལྷ།	276

རྒྱུ་བཀོལ།

༡)	གྲུ་བ་ཐོ་བ་བརྒྱད་ཅུ་ཅ་བཞི་འི་བྲིས་ཡིག།	281- 322
----	--	----------

संकेत विवरण

१. अ० -	अमरकोष,
२. इति० -	इतिहास, छोस्-जुइ,
३. जिइमा० -	जिइमा- सम्प्रदाय के,
४. डुब्-थब्स कुनतु० -	साधना-विधि-समुच्च,
५. तन-ग्युर० -	भारतीय आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों का भोट भाषा में अनुदित ग्रन्थ-संग्रह।
६. तारा० ई० -	तारानाथ का भारत में सद्धर्म का इतिहास,
७. ता० ई० -	” ” ”
८. ति० काग्युर०-	बुद्ध-वचन तिब्बती भाषा में अनुदित,
९. द्र० -	द्रष्टव्य
१०. दिल्ली० फो० -	दिल्ली से फोटो-ऑफसाईट द्वारा मुद्रित।
११. दोहा-वृत्ति० -	आचार्य वीरप्रभ द्वारा रचित सिद्धों की दोह-वृत्ति।
१२. दुजोम० -	दुजोम रिन्पोछे कृत,
१३. दोइ-थोग्० छो० -	दोइ थोग् रिन्पोछे कृत छोस् जुइ,
१४. पुट० -	भाग, जैसे 'क' भाग, 'ख' भाग,
१५. पद्म० कर०-	कुन खेन पद्मा करपो कृत सद्धर्म- इतिहास,
१६. पद्० इति० -	” ” ”
१७. पद्० कर०-	” ” ”
१८. पद् छो०-	” ” ”
१९. बुस्तोन०-	बुस्तोन रिन्छेन डुब कृत,
२०. राहुल० -	राहुल सांकृत्यायन कृत
२१. पुरातत्त्व नि०-	पुरातत्त्व निबन्धावली,
२२. पुरातत्त्व नि०-	” ” ”
२३. पुरा० नि०-	” ” ”
२४. रा० पुरा०-	” ” ”

བད་ཉམས།

༡	ན།	མདུན།
༢	བ	བྱུང།
༣	པ། ཉི།	པེ་ཀིང་པར་མ་ལས། ཉི་ཉོང་
		ཚོག་པར་དུ་སྤར་བ།
༤	པད་ཚོས།	ཀུན་མཁྱེན་པམ་དཀར་པོའི་ཚོས་
		འབྱུང་།
༥	སྐྱབ་ཀུན།	སྐྱབ་ཐབས་ཀུན་བདུས།
༦	འཇུག་འབྲེལ།	ཞེ་བའི་འཇུག་པ་རང་འབྲེལ།
༧	བཞི་འབྲེལ།	ཞེ་བྲགས་ཀྱི་བཞི་བརྒྱ་པའི་
		འབྲེལ་པ།
༨	མེ།	མེ་དགེ་བསྐྱན་འབྱུང།
༩	འོག་	འོག་གྲངས་འོག་མ།
༡༠	ལོང་།	ལོག་གྲངས་ལོང་མ།
༡༡	ཡ།	ཀ་ཉམས་ ཡ།
༡༢	ལོག་	ལོག་གྲངས།
༡༣	རྒྱུལ།	རྒྱུལ་སྲི་ལྡུལ་མ།





མྱེང་གཞི།

༄༅། །དེ་ལ་འདིར་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱུ་གི་བསྟན་པ་ལ་གྲུབ་
པ་བརྟེན་པའི་སྐྱེས་ལུ་དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཐར་བ་དང་། དེ་དག་གི་གྲུབ་
པའི་མཐའ་དང་། རང་གི་རྫོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྗེ་ལྟ་
བའི་གནས་སྤངས་ནི་གོ་འཕང་མཚོག་གི་ས་ལ་གནས་པའི་སྐྱེས་ལུ་ཆེན་པོ་
རྣམས་ཀྱི་ནང་མཚན་ཚུན་ཁོ་ནའི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་གྱི། སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་
དཔག་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པར་སྤོང་བས་གྲུབ་ལ། འོན་ཀྱང་དམ་པ་གོང་མ་
རྣམས་ཀྱི་གཞུང་དང་། མཚང་ག་དང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་ཁྱད་སྤྲུལ་སོགས་
ལ་བརྟེན་ནས་གསལ་གསལ་རྣམ་ཐར་དུ་འཁོད་པའི་བརྗོད་བྱའི་མྱེང་གཞི་ཅུང་
ཟད་ཅིག་བཞོད་པ་ལ། དེ་ནི་བསྟན་པ་སྤྱི་དང་། བྱེ་བྱུག་དོ་རྗེ་ཐོག་པའི་ལམ་
ལས་གྲུབ་པ་བརྟེན་པའི་ཚུལ་དང་། གྲུབ་པ་བརྟེན་ནས་བསྟན་པ་ལ་བྱ་བ་
མངོད་ཚུལ་ཏེ། དོན་མདོར་བསྟུམ་ན་གསུམ་དུ་འདུས་སོ།།

བསྟན་པ — སྤྱིར་བསྟན་པ་ཞེས་པ་མིང་དང་བྱ་ཆེག་གཉིས་ལས་བྱ་
ཆེག་ཡིན་ཞིང་། བྱ་ཆེག་གང་ཡིན་ལ་བྱ་ཡུལ་དགོས་པས། བསྟན་པ་ཞེས་པའི་
ཆེག་གི་བརྗོད་བྱ་ལ་ཡང་དེ་གསུམ་ཡོད་དགོས། དེ་ཡང་ཞུ་སྤྲུལ་སྟོན་པོས་རང་
གཟུགས་བསྟན་ཞེས་པ་དང་། རང་རིག་རང་གསལ་ཞེས་པ་ལྟ་བུའི་བྱ་བྱེད་ཐ་
དད་མེད་པ་དང་། བྱ་བ་དང་བྱ་ཡུལ་ཐ་དད་ཐ་དད་མེད་པ་དང་། ཞེས་ལྟ་
གྱིས་ལམ་བསྟན་ཞེས་པ་ལྟ་བུའི་བྱ་བྱེད་སོགས་ཐ་དད་པའི་རྣམ་གཞག་སྐྱེ་རིག་
ལས་བྱུང་བ་མང་ཡང་སྐབས་མ་ཡིན་པས་འདིར་མི་སྟོས་ལ། འདིར་ནི་སྤྱིར་

སྐྱུ་འཇུག་ཚུལ་ལ། སྐྱ་ཡངས་པ་དང་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་འཇུག་ཚུལ་
གཉིས་ལས། འདིར་སྐྱའི་འཇུག་པ་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བསྐྱེད་པ་ཞེས་པ་
ནི་ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་སྤང་དོར་གྱི་གནས་གསལ་བར་བྱེད་པ་
དང་། དེ་ལ་འཇུག་པའི་འཇུག་དོགས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །ཡང་ན་རྒྱུད་འདུལ་
བྱེད་གྱི་ཐབས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་གོ །

དེ་ཡང་ལེགས་སྐྱར་དུ་བསྐྱེད་པ་ཞེས་པའི་སྤང་དོར་ལ་ཤུས་ན་ཞེས་བྱ་བ་
ཡོད་ལ། དེ་ནི་‘ཤུས་པ་ཞེས་པའི་བྱིངས་ལ་ལྷུང་ཞེས་པའི་བྱེད་རྒྱུན་སྤྱིན་པས་
བྱུང་ལ། ཤུས་ཞེས་པའི་བྱིངས་དོན་ནི་སྐྱ་སྤྱི་ཆིལ་ལས་“ཤུས་ཨུ་བེ་རྩེ་། ཤུས་
རྩེས་སུ་གདམས་པ་ལའོ།” ཞེས་པ་ལྟར་སློབ་པ། སྤྱོད་པ། བཀའ་བསློབ་པ།
ངེས་པར་སློབ་པར་བྱེད་པའམ་བྱ་བ་སྟེ། ལམ་ལ་སོགས་པ་སློབ་པ། (ཁྲིམས་)
ནང་དུ་བཅུད་པ། དབང་དུ་བྱེད་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ལས་སུ་རུང་
བར་བྱེད་པ་དང་བྱ་བ་དང་བྱས་པ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། དེ་ཡང་དགོས་པ་
དང་། མཐར་ཐུག་གི་དགོས་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་གིས། ཚོས་དང་།
སྤྱིད་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལུགས་ཀྱི་ ‘བསྐྱེད་པ་’སོགས་མང་དུ་ཡོད་པ་ལ།
འདིར་ནི་ཚོས་ཀྱི་དམ་པ་མཐར་ཐུག་གི་མུང་འདས་དང་། དེ་ཐོབ་བྱེད་གྱི་
ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། བསྐྱེད་པ་ཞེས་པའི་

1 “शासु अनुशिष्टं” - १०७५, अदादिगण. पा. ।
འདི་སྐྱ་སྤྱི་ཆིལ་ལས་ཨུ་བེ་རྩེ་ལ་སོགས་པའི་བྱིངས་ཚིག་ནང་གི་བྱིངས་གྲངས་ १०७५ ལ་གཟིགས་
དགོས། ཐུབ་མཐར་ཐུག་འོད་དུ་ལེའུ་ཚན་འཇུགས་ཡོད་པས་ལེ ९९ པར་གཟིགས་དགོས།

རྣམ་གཞག་བྱེད་པ་ཡིན་པས་དམ་པའི་ཚོས་ཀྱི་བསྟན་པའོ།། དེས་ན་འདིར་བྱེད་
 པ་པོ་ནི་སྟོན་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། བསྟན་པ་ནི་སྲང་
 དོར་དགག་རྒྱབ་ཀྱི་གཞི་ལམ་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསྟན་ལུལ་ནི་གདུལ་
 བྱའི་སྦྱིས་བུ་སྦྱིའོ།། ཡང་ན་གང་ཟག་གམ་རྒྱབ་པ་པོ་བྱེད་བྱས་པ་དང་། ལྷ་
 པར་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེའི་རྒྱུ་ཀྱི་བདག་མེད་རྟོགས་པའི་གེས་རབ་
 སོགས་སྟོན་པ་དང་། དེས་ཉོན་མོངས་དང་སྦྱིན་སོགས་ལ་དབང་བ་སོགས་ཀྱི་
 དབང་ནི་བསྟན་པ་དང་། གཞི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་ལྟ་བུ་སྦྱང་བྱའམ་
 བསྟན་པའི་བྱ་བ་འཇུག་པའི་ལུལ་ཡིན་པ་སོགས་རྒྱ་ཆེར་སྦྱར་དུ་རྒྱུང་འོ།།

བསྟན་པ་དང་སྟོན་པའི་ངོ་བོ།— བསྟན་པ་དང་དེ་སྟོན་པའི་སྟོན་

པ་ནི་དཔལ་ཚོས་ཀྱི་བྲགས་པས་—

- སྲང་དང་དོར་བྱའི་དེ་ཉིད་ནི།།
- ཐབས་དང་བཅས་པ་རིག་མཛད་པ།།
- གང་དེ་ཚད་མ་ཉིད་འདོད་ཀྱི།།
- ཐམས་ཅད་རིག་མཛད་མ་ཡིན་ཅོ།༢

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་སྲང་དོར་གྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཐབས་དང་བཅས་པ་ནི་
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་། དེ་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུའི་དོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཟིགས་

1 འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྦྱ་བྱ་ཚིག་གི་དབང་དུ་བྱས་ཀྱི་བྱ་ཚིག་མིང་དུ་འདོད་པ་ལྟར་ན་གོ་བ་
 གཞན་དུ་གེས་དགོས་སོ།།
 2 (3/ 33/ ཚད་རྣམ་)

ཤིང་། གཟིགས་པ་ལྟར་བཅེ་བས་གཞན་ལ་སྟོན་པ་ལ་དབང་ཕྱུག་པ་དེ་ནི་འདིར་
སྟོན་པའོ།།

བསྟན་པའི་དབྱི་བ། — དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་དབྱི་ན་མང་དུ་
ཡོད་ཀྱང་། མདོར་བསྟུས་ན་དེ་ནི་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་
གཉིས་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་མཁས་མཚོག་དབྱིག་གཉིན་གྱིས་—

སྟོན་པའི་དང་ཚོས་རྣམས་གཉིས་ཏེ།།

ལུང་དང་རྟོགས་པའི་བདག་ཉིད་དོ།།

དེ་འཛིན་བྱེད་པ་སྟོན་བྱེད་དང་།།

སྟོན་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།།¹

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཙུགས་ལྟར་འདས་ཀྱི་
ལྷན་པ་དམ་པའི་ཚོས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ལུང་སྟེ་སྟོན་གསུམ་ལྟ་བུ་ལུང་
གི་བསྟན་པ་དང་། བྱང་རྒྱུ་སྟོགས་ཀྱི་ཚོས་སུམ་ཅུ་ཅ་བདུན་ལྟ་བུ་རྟོགས་པའི་
ཚོས་སམ་བསྟན་པའོ།།³

1) (༥ / ༣༧ / མདོར་མཛོད་)

2) ཀྱི་ཞེས་འབྲེལ་བའི་སྟོལ་ན་ཐམས་ཅད་དུ་བཞོན་འདུག་པས་འདིར་ཡང་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན་ལ།
གོང་དུ་སྟོན་བཤད་པ་རྣམས་ནི་སྟོལ་བྱེད་ས་ལས་འབྲོས་པའི་བཤད་པ་ཡིན་ཅིང་། དེ་ཡང་བསྟན་པ་
ཞེས་པ་བྱུ་ལུ་ཅན་གྱི་བྱ་བ་ལ་བསམ་པ་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་ཚིག་མིང་རྒྱང་གི་
དབང་དུ་བྱས་སོ། །དེས་ན་འབྲེལ་སྟོལ་ཡང་འཐད་པ་ཉིད་དོ།།

3 (ཀ) तत्रागमः सूत्रविनयाभिधर्माः अधिगमो बोधिपक्ष्याः (अभि० को० वृत्ति० पृ० ११८१) ।
(ཁ) དེ་ལ་ལུང་གི་ཚོས་ནི་མདོ་སྟེ་དང་། འདུལ་བ་དང་། མདོར་པའི་སྟེ་སྟོན་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་
པ་ནས་ “མདོར་པར་རྟོགས་པའི་ཚོས་ནི་བྱང་རྒྱུ་སྟོགས་དང་མཐུན་པའི་ཚོས་སུམ་ཅུ་ཅ་”

དེ་ལྟར་སྤྱི་བསྟན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་འཛིན་པའི་ཚུལ་ལ་དང་པོ་ལྷུང་གི་བསྟན་
 པ་འཛིན་ཚུལ་ནི། ལྷུང་བཞིན་དུ་གཤམ་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་
 བསམ་པས་གཞན་ལ་སྟོན་པའོ།། །གཉིས་པ་རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་
 ནི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཚོས་སོ་བདུན་བསྟེན་པ་གསུམ་གྱིས་
 བསྟེན་པ་ནམས་རང་གི་རྒྱུད་ལ་སྐྱབ་ཅིང་ཉམས་སུ་ལེན་པར་བྱེད་པ་ནམས་སོ།།

དེ་ལྟར་སྤྱི་བསྟན་པ་དེ་ལ་ཡང་དུས་ཀྱི་རིམ་པས་དབྱེ་བ་ནི་གཤམ་རབ་ཀྱི་
 ས་རོལ་དུ་སྦྱིན་པ་འབྲུམ་པའི་འགྲེལ་ཆེན་གཞོན་འཛོམས་ལས་གསུངས་པ་ལྟར།
 རྗེ་ཆུང་བཞི་དང་། ལེའུ་བཅུ་རུ་དབྱེ་བ་ཡིན་ལ། རྗེ་ཆུང་བཞི་ནི་བྲས་སྤྱི་
 དུས་དང་། རྒྱབ་པའི་དུས་དང་། ལྷུང་གི་དུས་དང་། རྟོགས་ཅམ་འཛིན་
 པའི་དུས་ཏེ་ཡལའོ།།

ལེའུ་བཅུ་— ནི་དང་པོ་འབྲུམ་སྤྱི་དུས་དེ་དེ་ལ་ཡང་དབྱེ་བཅོམ་
 པའི་ལེའུ། སྤྱི་རིམ་འོང་གི་ལེའུ། རྒྱན་ལུགས་ཀྱི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །གཉིས་པ་
 ནི་རྒྱབ་པའི་ལེའུ་སྟེ། དེ་ལ་ཡང་གཤམ་རབ་ཀྱི་ལེའུ། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལེའུ།

བདུན་དང་། ཇིས་སུ་ནམ་གྲོལ་གྱི་ལམ་ཟད་པ་དང་བཅས་པ་སྟེ།” ཞེས་དང་། “དེ་
 ལྟར་ན་བསྟན་པ་དམ་པའི་ཚོས་ནི། ལྷུང་དང་། རྒྱབ་པ་དང་། འབྲུམ་སྤྱི་ཚོས་གསུམ་
 མོ།།” མཚིམས་མཛོད། བོག ༤༣༦ བོད་དཔལ།

- 1 ‘ལྷུང་གི་བསྟན་པ་དེ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལྷུང་སྦྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་རྒྱབ་པར་བྱེད་པ་ཁོན་ཡིན།’
 མཛོད་རྟེན་གསུམ་ལམ། བོག ༣༥༥ །
- 2 ‘ཁོང་དུ་རྒྱུད་པའི་ལེའུ། རྒྱབ་པའི་ལེའུ། ལྷུང་གི་ལེའུ། རྟོགས་ཅམ་འཛིན་པའི་ལེའུ་
 དང་བཞི།’ མཛོད་རྟེན་གསུམ་ལམ། བོག ༣༥༥.

སྐྱུ་འཇུག་ཚུལ་ལ་ སྐྱ་ཡངས་པ་དང་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་འཇུག་ཚུལ་
 གཉིས་ལས། འདིར་སྐྱའི་འཇུག་པ་དོག་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ་བསྟན་པ་ཞེས་པ་
 མི་ཐར་པ་དོན་གཉེར་གྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་སྤང་དོར་གྱི་གནས་གསལ་བར་བྱེད་པ་
 དང་། དེ་ལ་འཇུག་པའི་འཇུག་དོགས་བྱེད་པར་བ་ཞིག་གོ །ཡང་ན་རྒྱུད་འདུལ་
 བྱེད་གྱི་ཐབས་བྱེད་པར་བ་ཞིག་གོ །

དེ་ཡང་ལེགས་སྐྱར་དུ་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྤང་དོར་ལ་ཤུས་ན་ཞེས་བྱ་བ་
 ཡོད་ལ། དེ་ནི་‘ཤུས་ཞེས་པའི་བྱིངས་ལ་ལྷུང་ཞེས་པའི་བྱེད་ཀྱིན་སྐྱིན་པས་
 བྱུང་ལ། ཤུས་ཞེས་པའི་བྱིངས་དོན་ནི་སྐྱ་ཤུ་ཆིཔ་ལས་“ཤུས་ཨུ་ཤི་ལྷོ་། ཤུས་
 རྗེས་སུ་གདམས་པ་ལའོ།” ཞེས་པ་ལྟར་སློབ་པ། སྐྱོང་བ། བཀའ་བསྐྱོ་བ།
 དེས་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པའམ་བྱ་བ་སྟེ། ལམ་ལ་སོགས་པ་སྟོན་པ། (སྦྱིམས་)
 རང་དུ་བཅུད་པ། དབང་དུ་བྱེད་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ལས་སུ་རུང་
 བར་བྱེད་པ་དང་བྱ་བ་དང་བྱས་པ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། དེ་ཡང་དགོས་པ་
 དང་། མཐར་ཐུག་གི་དགོས་པ་ལ་སོགས་པའི་དབང་གིས། ཚོས་དང་།
 སྤྲིད་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལུགས་ཀྱི་ ‘བསྟན་པ་’སོགས་མང་དུ་ཡོད་པ་ལ།
 འདིར་ནི་ཚོས་ཀྱི་དམ་པ་མཐར་ཐུག་གི་སྤང་འདས་དང་། དེ་ཐོབ་བྱེད་གྱི་
 ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ཏེ། བསྟན་པ་ཞེས་པའི་

1 “शासु अनुशिष्टो” - १०७५, अदादिगण. पा. ।
 འདི་སྐྱ་ཤུ་ཆིཔ་ལའི་ཨུ་ཤི་ལྷོ་ལ་སོགས་པའི་བྱིངས་ཚིག་ནང་གི་བྱིངས་བྲངས་ १०७५ ལ་གཟིགས་
 དགོས། བྱུང་མཐའ་རྒྱའོད་དུ་ལེའུ་ཚོན་འབྲས་ཡོད་པས་ལེ ९९ པར་གཟིགས་དགོས།

ནམ་གཞག་བྱེད་པ་ཡིན་པས་དམ་པའི་ཚོས་ཀྱི་བསྟན་པའོ།། དེས་ན་འདིར་བྱེད་
 པ་པོ་ནི་སྟོན་པ་ཡང་དག་པར་རྗེས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། བསྟན་པ་ནི་སྒང་
 རྟོར་དགག་སྐྱབ་ཀྱི་གཞི་ལམ་འགྲུས་བུ་ལ་སོགས་པ་དང་། བསྟན་ཡུལ་ནི་གདུལ་
 བྱའི་སྐྱེས་བུ་སྤྱིའོ།། ཡང་ན་གང་ཟག་གམ་སྐྱབ་པ་པོ་བྱེད་བྱུག་པ་དང་། ལྷན་
 པར་བ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེའི་རྒྱུད་ཀྱི་བདག་མེད་ཉོགས་པའི་ཤེས་རབ་
 སོགས་སྟོན་པ་དང་། དེས་ཉོན་མོངས་དང་རྒྱུན་སོགས་ལ་དབང་བ་སོགས་ཀྱི་
 དབང་ནི་བསྟན་པ་དང་། གཞི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་ལྟ་བུ་སྐྱབ་བྱེད་པའམ་
 བསྟན་པའི་བྱ་བ་འཇུག་པའི་ཡུལ་ཡིན་པ་སོགས་སྐྱེ་ཆེར་སྐྱུར་དུ་རྒྱུང་འོ།།

བསྟན་པ་དང་སྟོན་པའི་ངོ་བོ།— བསྟན་པ་དང་དེ་སྟོན་པའི་སྟོན་

པ་ནི་དཔལ་ཚོས་ཀྱི་གྲགས་པས་—

- སྒང་དང་རྟོར་བྱའི་དེ་ཉིད་ནི།།
- ཐབས་དང་བཅས་པ་རིག་མཛད་པ།།
- གང་དེ་ཚད་མ་ཉིད་འདོད་ཀྱི།།
- ཐམས་ཅད་རིག་མཛད་མ་ཡིན་ནོ།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་སྒང་རྟོར་གྱི་དེ་ལོ་ན་ཉིད་ཐབས་དང་བཅས་པ་ནི་
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་། དེ་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུའི་དོན་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཟིགས་

1 འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་པའི་སྐྱབ་བྱེད་ཆེག་གི་དབང་དུ་བྱས་ཀྱི་བྱེད་ཆེག་མེད་དུ་འདོད་པ་ལྟར་ན་གོ་བ་
 གཞན་དུ་ཤེས་དགོས་སོ།།
 2 (༡/ ༣༣/ ཚད་རྣམ་)

ཤིང་། གཟིགས་པ་ལྟར་བརྟེན་གཞན་ལ་སྟོན་པ་ལ་དབང་སྤྱད་པ་དེ་ནི་འདིར་
སྟོན་པའོ།།

བསྟན་པའི་དབྱེ་བ།— དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པ་དེ་ལ་དབྱེ་ན་མང་དུ་
ཡོད་ཀྱང་། མདོར་བསྟུས་ན་དེ་ནི་ལུང་གི་བསྟན་པ་དང་། རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་
གཉིས་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྐད་དུ་མཁས་མཚོག་དབྱིག་གཉེན་གྱིས་—

- སྟོན་པའི་དང་ཚོས་རྣམས་གཉིས་ཏེ།
- ལུང་དང་རྟོགས་པའི་བདག་ཉིད་དོ།
- དེ་འཛིན་བྱེད་པ་སྟེ་བྱེད་དང་།
- སྟེ་བ་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན།།¹

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་
2བསྟན་པ་དམ་པའི་ཚོས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ལུང་སྟེ་སྟོན་གསུམ་ལྟ་བུ་ལུང་
གི་བསྟན་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་ཀྱི་ཚོས་སུམ་ཅུ་ཅ་བདུན་ལྟ་བུ་རྟོགས་པའི་
ཚོས་སམ་བསྟན་པའོ།།³

1) (༥ / ༣༧ / མདོན་མཛོད་)

2) ཀྱི་ཞེས་འབྲེལ་བའི་སྟེ་ཁོ་ན་ཐམས་ཅད་དུ་བཞོན་འདུག་པས་འདིར་ཡང་དེ་བཞིན་བྲིས་པ་ཡིན་ལ།
གོང་དུ་སྟེ་བཤད་པ་རྣམས་ནི་སྟེ་འུངས་ལས་འབྲོས་པའི་བཤད་པ་ཡིན་ཅིང་། དེ་ཡང་བསྟན་པ་
ཞེས་པ་བྱུ་ལུལ་ཅན་གྱི་བྱུ་བ་ལ་བསམ་པ་ཡིན་ལ། འདིར་ནི་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་ཚིག་མིང་རྒྱང་གི་
དབང་དུ་བྱས་སོ། །དེས་ན་འབྲེལ་སྟེ་ཡང་འཐད་པ་ཉིད་དོ།།

3 (ཀ) तत्रागमः सूत्रविनयाभिधर्माः अधिगमो बोधिपक्ष्याः (अभि० को० वृत्ति० पृ० ११८१) ।
(ཁ)དེ་ལ་ལུང་གི་ཚོས་ནི་མདོ་སྟེ་དང་། འདུལ་བ་དང་། མདོན་པའི་སྟེ་སྟོན་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་
པ་ནས་ “མདོན་པར་རྟོགས་པའི་ཚོས་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱོད་དང་མཐུན་པའི་ཚོས་སུམ་ཅུ་ཅ་”

དེ་ལྟར་སྤྱི་བསྟན་པ་དེ་འི་ལྟར་འཛིན་པའི་ཚུལ་ལ་དང་པོ་ལྷུང་གི་བསྟན་
 པ་འཛིན་ཚུལ་ནི། ལྷུང་བཞིན་དུ་གཤམ་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་མ་ཡིན་པའི་
 བསམ་པས་གཞན་ལ་སྟོན་པའོ།། །གཉིས་པ་རྟོགས་པའི་བསྟན་པ་འཛིན་ཚུལ་
 ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་དང་མཐུན་པའི་ཚོས་སོ་བདུན་བསྟོབ་པ་གསུམ་གྱིས་
 བསྟོབ་པ་ནམས་རང་གི་རྒྱུད་ལ་སྐྱབ་ཅིང་ཉམས་སུ་ལེན་པར་བྱེད་པ་ནམས་སོ།།

དེ་ལྟར་སྤྱི་བསྟན་པ་དེ་ལ་ཡང་དུས་ཀྱི་རིམ་པས་དབྱེ་བ་ནི་གཤམ་རབ་ཀྱི་
 ས་རོལ་དུ་སྦྱིན་པ་འབྲུམ་པའི་འགྲེལ་ཆེན་གཞོན་འཛོམས་ལས་གསུངས་པ་ལྟ་སྟེ།
 རྩེ་ཚན་བཞི་དང་། ལེའུ་བཅུ་རུ་དབྱེ་བ་ཡིན་ལ། རྩེ་ཚན་བཞི་ནི་སྤྱི་བསྟན་
 དུས་དང་། སྐྱབ་པའི་དུས་དང་། ལྷུང་གི་དུས་དང་། རྟགས་ཙམ་འཛིན་
 པའི་དུས་ཏེ་ཡབཞིའོ།།

ལེའུ་བཅུ་— ནི་དང་པོ་འབྲུམ་སྤྱི་བསྟན་དེ་དེ་ལ་ཡང་དགྲ་བཙམ་
 པའི་ལེའུ། སྤྱི་བསྟན་འོང་གི་ལེའུ། རྩེ་ཚན་གསུམ་གྱི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །གཉིས་པ་
 ནི་སྐྱབ་པའི་ལེའུ་སྟེ། དེ་ལ་ཡང་གཤམ་རབ་ཀྱི་ལེའུ། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ལེའུ།

བདུན་དང་། རྩེ་ཚན་སྐྱབ་པའི་ལེའུ་ཟེན་པ་དང་བཙམ་པ་སྟེ།” ཞེས་དང་། “དེ་
 ལྟར་ན་བསྟན་པ་དམ་པའི་ཚོས་ནི། ལྷུང་དང་། སྐྱབ་པ་དང་། འབྲུམ་སྤྱི་བསྟན་གསུམ་
 མོ།།” མཚམས་མཛོད། བོག ༤༣༤ བོད་དཔལ།

- 1 ‘ལྷུང་གི་བསྟན་པ་དེ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལྷུང་སྦྱིན་ཅི་མ་ལོག་པར་སྐྱབ་པར་བྱེད་པ་ཞོན་ཡིན།’
 མཛོད་རྟེན་གསུམ་ལམ། བོག ༣༥༥ །
- 2 ‘ཞོང་དུ་རྒྱུད་པའི་ལེའུ། སྐྱབ་པའི་ལེའུ། ལྷུང་གི་ལེའུ། རྟགས་ཙམ་འཛིན་པའི་ལེའུ་
 དང་བཞི།’ མཛོད་རྟེན་གསུམ་ལམ། བོག ༣༥༥.

ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །གསུམ་པ་ལུང་གི་ལེའུ་ལ་ཡང་། མངོན་
པའི་ལེའུ། མདོ་ལྷའི་ལེའུ། འདུལ་བའི་ལེའུ་དང་གསུམ་མོ། །བཞི་པ་ལ་
ཉགས་ཙམ་འཛིན་པའི་ལེའུ་སྟེ་ལེའུ་བཅུའོ། །འདི་དག་ལེའུ་རེ་རེ་ལའང་ལོ་ལྔ་
བརྒྱ་པ་སྟག་རེ་སྟེ་ལྔ་བརྒྱ་པ་སྟག་བཅུའོ།།

དེ་ལྟ་བུའི་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་བསྟན་པ་དེ་ཡང་། ལྷོན་པ་མངོན་པར་ཚོགས་
པར་སངས་རྒྱུས་ཏེ། ཉག་བདུན་སྟག་བདུན་གྱི་རྗེས་སུ་ཡུལ་ལྷ་རྒྱུ་སྤྲེལ་བྱོན་ལ།
ལྔ་སྟེ་ལ་བདེན་བཞི་ཚོས་འཁོར་གསུངས་ཏེ། ཀུན་གྱིས་རྒྱུད་ལ་བྱུང་བ་
མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་རྒྱུས་པ་ན། ལྷོན་པའི་བསྟན་པ་གདུལ་བུའི་རྒྱུད་ལ་དང་པོར་
འཕྲིན་པ་ཡིན་ལ། དེ་ནས་བརྒྱུད་ལོ་ཞི་ལྷའི་རིང་ལྷོན་པ་རང་ཉིད་ཀྱིས་བསྟན་
པ་བསྐྱེད་ན། ཚོས་འཁོར་རིམ་པ་གསུམ་དང་། ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་རིམ་པ་
ཐབས་ལམ་འབྲས་བུ་དང་བཅས་པ་ཚོགས་པར་བསྟན། དེ་ནས་བསྟན་པ་འོད་
སྤང་ཆེན་པོ་ལ་གཏད་དེ། ཡུལ་ཙུ་ཙན་དུ་སྐྱུའི་བཞོད་པ་བསྐྱེད་ཏེ་གཉིས་སུ་
མི་གནས་པའི་སྤང་ཆེན་ལས་འདས་པའི་དབྱིངས་སུ་ཞུགས་སོ།།

དེའི་རྗེས་སུ་འོད་སྤང་ཆེན་པོས་བཀའ་བསྐྱེད་པ་དང་པོ་མཛད། དེ་ནས་
བསྟན་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་གཏད་དེ་འོད་སྤང་ཆེན་པོ་ཞི་དབྱིངས་སུ་ཐིམ། ཀུན་
དགའ་བོས་ལོ་མང་དུ་ཐེག་པ་སྤྱིའི་བསྟན་པ་བསྐྱེད་ས་ཤིང་། སྤྱིས་བྱུང་གི་གནའ་
བོའི་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ལས་ཀུན་དགའ་བོས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་བསྐྱེད་ས་པའི་
ཚུལ་མི་གསལ་ཡང་། མདོ་ལྷའི་སྟེན་པ་འདས་ནས་ལོ་བཞི་བཅུའི་རིང་ཀུན་
དགའ་བོ་ལ་སོགས་པས་ཐེག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་སྐྱོང་བར་གསལ་བར་གསུངས་

ཡིད་པས། དེ་ཁྲུང་ས་སུ་བྱས་ན་སྟོན་པ་འདས་རྗེས་ཀྱང་དགའ་བོས་ཐེག་ཆེན་
 གྱི་བསྟན་པ་ཡང་སྐྱོད་བར་མཇུག་ཅིང་། དེའི་རྗེས་སུ་རེ་ཞིག་རིམ་གྱིས་ཐེག་
 ཆེན་རྒྱལ་པ་ལྟར་སོང་ཡང་། རྒྱུར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་དར་བར་
 བཞག་ཤིང་། འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་ཡང་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལྷུང་བར་ལྷུང་ལས་ཤེས་
 སོ།པ།

ཐེག་ཆེན་ — ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྒྱུད་གསུང་རབ་དགོངས་འབྲེལ་
 དང་བཅས་པ་རྣམས་སུ་ ‘ཐེག་པ་ཆེན་པོ’ ཞེས་པ་སྟོན་པ་མཚོག་གི་རྒྱལ་རྒྱས་
 དངོས་སུ་མ་གསུངས་པ་དང་། སྤྱིས་སུ་སྟོབ་དཔོན་གཞན་དང་། སྟོན་པ་
 གཞན་གྱིས་བྱས་པའི་ཚུལ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་གསལ། སྤྱིས་བྱུང་གནའ་བོའི་ལོ་
 རྒྱུས་དང་། རྗེ་པ་འགའ་ཞིག་གིས་དེ་ལྟར་འདོད་པ་ནི་རང་རང་གི་འདོད་མོས་
 ཀྱི་ཚད་མ་ཉི་ཅེ་བ་རེ་ལ་བརྟེན་པར་སྤངས་བས། ཡིད་ཆེས་པར་ཅུང་ཟད་དཀའ་
 བ་དང་། ཡང་ཐེག་ཆེན་གྱི་ལྷ་སྐུའི་ཀྱི་དངོས་འབྲེལ་གནས་སྤངས་དང་། དང་
 པའི་སྟོབས་འདྲིན་ཐབས་སུ་བཤད་པའི་བཏམ་རྒྱུད་རྣམས་ཉ་དང་ཉུང་མ་བསྐྱེ་
 བའི་དཔེ་ལྟར་དུ་སོང་ནས། ཡིད་ཆེས་པའི་གཞུང་ཁྲུང་ས་མ་མང་པོ་ཞིག་ཀྱང་ཐེ་

1 ང་བོ་ཆེའི་མདོ་དང་། མདོ་རྒྱུ་སྟོན་ཆེན་པོ་སྟོང་ཕྱག་བཅུ་གཉིས་པ་སོགས་ - བཀའ་འགྲུང་དུ་
 བསལ། འདིར་རྒྱའི་མཁན་པོ་རྗེ་ཙཱ་གི་རྒྱ་གར་གནས་སྐོར་སོགས་ཀྱི་ཡིག་དེབ་དུ་སྟོན་པ་འདས་
 རྗེས་ལོ་མ་བདུན་པའི་རི་ཕུག་དུ་བཀའ་བསྟན་པ་དང་པོའི་སྐབས་སུ་རྒྱལ་བོའི་ཁབ་ཉིད་དུ་ཐེག་ཆེན་
 གྱི་བཀའ་བསྟན་བ་དང་པོ་མཇུག་པ་དང་། ས་དེར་མཚོན་ཉིན་ཞིག་ཡིད་པར་མཐོང་ཚུལ་སོགས་
 བསལ་བར་བྲིས་འདུག “इस स्थान पर एक बड़ा भारी सभा” हेन सं० या वि० पृ० ३१३ हि०
 अनु० ।

2 ལྷུང་སྐྱོན་ཚོགས། - འདུལ་བ་ - བཀའ་འགྲུང་།

ཚོམ་གྱི་རྒྱུར་སོང་བའང་མང་མོད། དེ་དག་བསལ་དགོས་ནའང་སྐབས་མ་ཡིན་
པས་རེ་ཞིག་བཏང་སྟོམས་སུ་བཞག་པར་བྱའོ།།

དེ་ལ་འདྲིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལུང་སྟེ་སྟོན་གསུམ་དང་། དེ་དག་གི་
བརྗོད་བྱར་གྱུར་པའི་ས་བཅུ་ལམ་ལྲ་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་དང་འབྲས་བུའི་རྣམ་གཞག་
རྣམས་ནི་སྟོན་པས་ཚོས་འཁོར་རིམ་པ་གསུམ་དུ་བསྐྱོར་བའི་ཚུལ་རྣམས་གསལ་
བར་བྱེད་པའི་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོའི་གཞུང་། ཡན་ལག་དང་བཅས་པ་རྣམས་སུ་ཤིན་
དུ་གསལ་ལ། རྒྱུས་རབས་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཚུབ་སེམས་དཔའི་སྟེ་སྟོན་མང་པོ་
ཞིག་ནི་གནས་བརྟན་སྟེ་པ་སོགས་སྟེ་པ་སོ་སོའི་སྟེ་སྟོན་གསུམ་གྱི་ནང་དུ་འང་
རྒྱས་པར་བཞགས་ཡོད་ལ། མདོ་སྟེ་ཚངས་པའི་བྱ་བ་དང་། རྟེན་འབྲེལ་སྟོང་པོ་
དང་། སྟོང་པ་ཉིད་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ་སོགས་ཀྱང་དེང་སང་
དངོས་ཡོད་གནས་བརྟན་པའི་སྟེ་སྟོན་ན་བཞགས་ཡོད་པས་༢། སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་
བ་དང་། བྱང་སེམས་ཀྱི་བསྐྱབ་བྱ་ཕྱིན་དུག་གི་ཉམས་ལེན་སོགས་སྟེ་པ་ཐམས་
ཅད་ཀྱི་སྟེ་སྟོན་ལ་ཡོད་པར་སྐྱང་བས་ཐེག་ཆེན་བསྟན་པ་ཕྱི་དར་དུ་དོགས་མི་
དགོས་ཤིང་། ལུང་སྟེགས་བམ་གྱི་ཚུལ་དུ་བྱུང་བ་དང་། བསྟན་འཛིན་གྱི་
རྒྱུས་བུ་བྱངས་མང་ཉུང་འཆད་ཉན་དར་བྱུང་ཆེ་ཆུང་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་

1 ཚ་ཤེས། རིན་འཕྲེང་། མདོ་རྒྱལ། མདོ་རྒྱལ། བྱང་ངེས་ལེགས་བཤད་སོགས་།
2 (ཀ) जातक-खुद्दक-निकाय-भाग २. सुत्त पालि।
(ཁ) མདོ་སྟེ་ཚངས་བྱ། འཇམ་ཇལ་སུ་ཏྲ་-༡ །༡ །༡ ། དཱིམ་འིའི་པའི་པའི་ །
(ག) སྟོང་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོ་ -महासुव्तसुत्त'-मज्झिम, नि० २२ १२... । पृ० १७४।
(ང) རྟེན་འབྲེལ་, परितारम्पण -१३ १२ । पृ० ३५८ । पट्टान. भाग-२, अभि० पि० ।

ནི་,བདེན་ཏེ། ཐེག་ཆེན་གྱི་སྤྲེལ་ལྟར་ཐེག་དམན་གྱི་སྤྲེལ་གྱི་སྤྲེལ་ས་བཅས་
 བྱང་སྤྲེལ་བར་སྤྲེལ་སྤྲེ། ཐེག་ཆེན་གྱི་ཆོས་སྤྲེལ་ས་བཅས་གྱི་ཚུལ་དུ་འཕགས་ཡུལ་དུ་
 བྱང་བའི་དང་པོ་ནི་བརྒྱུད་...སྤྲོད་པའམ་གསང་འདུས་ཅ་རྒྱུད་ཡིན་ལ། དེ་སྤྲོན་
 པ་འདས་ནས་ལོ་བརྒྱ་སྤྲེལ་བཞི་པའི་ནང་རྒྱལ་པོ་ཟླ་བ་སྤྲུང་གི་དུས་སུ་མངོན་
 གསལ་དུ་བྱང་བར་ལོ་རྒྱུས་ཁྲུང་ས་མ་རྣམས་འལས་མཐུན་པར་བྱང་བས་སོ།།

བརྒྱན་འཛིན་གྱི་སྤྲེལ་བྱ་དང་། འཆད་ཉན་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་སོགས་གྱི་
 དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། ཐེག་ཆེན་ལས་སྤྲེལ་པ་གཞན་རྣམས་གྱི་རྗེས་འབྲངས་
 སྤྲོན་དུ་དར་ཆེ་སྤྲེ། སྤྲོན་པ་ཞལ་བཞུགས་པའི་དུས་སུ་འང་ཉན་ཐོས་གྱི་སྤྲེལ་བོའི་
 བྲངས་ཙམ་ཐེག་ཆེན་གྱི་བྲངས་མི་མངོན་ལ། སྤྲོན་པ་འདས་རྗེས་བརྒྱན་པའི་
 བཏད་རབས་རྣམས་གྱི་དུས་སུ་འང་ཐེག་ཆེན་གྱི་དགེ་བདུན་ཤིན་དུ་ཉུང་བར་
 བནས་པས། བར་སྐབས་དེར་ཐེག་ཆེན་མི་མངོན་པ་ལྟ་བུར་ཡང་སོང་བའི་དུས་
 ཤིག་བྱུང་། དེ་ནས་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་སྤྲེལ་དང་པོའི་དུས་ལས་ཅུང་ཟད་སྤྲེལ་བ་ཙམ་ནས་
 དཔལ་སར་ཉ་དང་། ལྷ་སྤྲུབ་སོགས་བྱོན་ཏེ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤྲུང་དར་བའི་དབུ་
 ཚུགས་ཤིང་། ཐེག་ཆེན་གྱི་སྤྲེལ་སྤྲེལ་ཐམས་ཅད་མངོན་གསལ་དུ་བྱང་ལ་༢། སྤྱི་
 ལོ་བརྒྱ་སྤྲེལ་བདུན་པ་བརྒྱུད་པ་ཙམ་ན་ཨི་ཤི་ཡའི་ཡུལ་སུ་ཕལ་ཆེར་ཐེག་ཆེན་

1 དུ་རྒྱུ་སྤྲེལ་ རྒྱ ཆོ ཤོག ༥༠ ལེ ༡༣།
 2 ཨོ་ཤི་ཤི་ཤི་ཤི་ཡུལ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཟླ་བ་སྤྲུང་གི་དུས་སུ་དེའི་ཕྱི་མ་དུ་ཐེག་ཆེན་གྱི་སྤྲེལ་ས་བཅས་ཞིག་བྱོན་ལ་དེ་
 ཐེག་ཆེན་སྤྲུང་དར་བའི་ཐོག་མ་ཡིན། དུ་རྒྱུ་སྤྲེལ་རྒྱ་ཆོ་ཤོག ༥༧ ལེ ༡༣ དང་། དུ་རྒྱུ་སྤྲེལ་
 ལེ ༡༣ བཞེགས།

གྱིས་ཁྱབ་པ་ལྟར་སོང་ངོ་། །འདི་དག་ནི་ཐེག་ཆེན་སྣ་ལྔ་ཇི་ལྟར་དར་བའི་ཚུལ་
ཡིན་ལ། དོགས་གཙོད་རྒྱས་པར་འདིར་མི་སྒྲོའོ། །

དེ་རྗེ་ཐེག་པ་ — སྤྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྐྱེད་པ་ལ་ཐེག་པའི་དབང་

དུ་བྱས་ཏེ་སློབ་པའི་ཚུལ་དེ་ལ་རིགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་རིགས་ཅན་གསུམ་
ལ་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་གཞག་དང་། ཐབས་ལམ་ལ་སློབ་པའི་ཅུ་བ་སེམས་
བསྐྱེད་ཡིན་ལ། དེའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གཉིས་དང་། མཐར་
ཐུག་འབྲས་བུའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཐེག་པ་གཅིག་གི་རྣམ་གཞག་རྣམས་ཐེག་
ཆེན་གྱི་བཀའ་དང་དགོངས་འབྲེལ་ཕལ་ཆེ་བ་ལས་མཐུན་པར་བྱང་བས་ན་འདི་
ཐེག་ཆེན་པ་སྤྱིའི་བཞེད་ཚུལ་ཡིན་ལ། ལམ་གྱི་ཅུ་བ་སེམས་བསྐྱེད་དང་།
རིགས་དང་། འབྲས་བུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་ཡི་ཤེས་དང་། རྒྱ་
གཉིས་རྩུང་འཇུག་སྟེ། མཐར་ཐུག་གི་ཐོབ་བྱ་སོགས་ལ་ཁྱད་པར་མེད་ཀྱང་།
ལམ་ཐབས་ཤེས་གཉིས་ལས་ཐབས་སེམས་བསྐྱེད་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ལ་འབྲས་བུ་
ལམ་འབྱེད་དང་། བསྐྱོམ་བྱ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡུལ་སྤོང་ཉིད་ལ་སྤྱིར་རགས་མེད་ཀྱང་།
ཡུལ་ཅན་ཤེས་པ་རྒྱ་ལུས་ཀྱི་ཉེར་ལེན་དུ་གྱུར་པའི་རྒྱུང་དང་ངོ་བོ་གཅིག་པའི་
སེམས་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་ལ་ལམ་གྱི་ལུས་སུ་འཛོག་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཐེག་ཆེན་ལ་
ཡང་ཕ་རོལ་དུ་སྦྱོན་པ་རྒྱུའི་ཐེག་པ་དང་། དེ་རྗེ་ཐེག་པ་སྟེ་འབྲས་བུའི་ཐེག་པ་
གཉིས་སུ་སྦྱོར་པ་ཡིན་ནོ།། སྤྱིར་ཐེག་ཆེན་གཉིས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཟབ་མོའི་ལམ་གྱི་སློ་
ནས་མི་འབྱེད་པར་རྒྱ་ཆེ་བ་ཐབས་ཀྱི་སློ་ནས་འབྱེད་དགོས་པར་རྒྱུད་དགོངས་
འབྲེལ་དང་བཅས་པ་ལས་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་། གོང་སློམ་ཤེས་རབ་ཁྱད་པར་བ་

དེའི་དབང་དུ་བྱས་ན་ཕྱགས་དང་པ་ལོ་དུ་སྤྱིན་པའི་ལམ་ལ་གྱུ་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་
ཁྱད་པར་ཡོད་པ་མ་ཟད་ཟབ་མོའི་ལམ་གྱི་སྣོན་ས་ཀྱང་ཁྱད་པར་འཛོག་དགོས་
པར་མངོན་ནོ།།

དེ་ལ་འདྲིར་‘ཐེག་པ་’ཞེས་པ་ནི་ཡུལ་གཅིག་ནས་ལམ་དུ་ཞུགས་ཏེ་
བསྐྱོད་ཡུལ་ངེས་ཅན་ཞིག་དུ་སླེབས་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་སམ་བསྐྱོད་བྱེད་ཞིག་ལ་ཟེར་
བ་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན་རྟ་དང་། ཤིང་རྟ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །དེ་བཞིན་
དུ་ནང་ས་ལམ་ལ་སོགས་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། བསྐྱོད་ཡུལ་སངས་
རྒྱལ་གྱི་ས་ལ་སོང་པར་བསྐྱོད་བྱའི་ལམ་ས་བཅུ་ལ་སོགས་པ་བསྐྱོད་བྱེད་བྱང་
ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཉོགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཚོས་
རབ་དུ་རྒྱལ་འབྱེད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ནི་འདྲིར་ཐེག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ལམ་ལ་སློབ་
པའི་ཐབས་སམ་ལུས་ལྟ་བུ་སེམས་བསྐྱེད་དང་། ཡན་ལག་པར་སྤྱིན་ལ་སོགས་
པའི་རྒྱལ་གཞག་ནི་འདྲིར་ཐེག་པ་འོ། །དེ་ནི་བསྐྱོད་པ་སྤྱིའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་
ཐེག་པའི་སྐྱེ་བཤད་ཡིན་ལ། འདྲིར་ནི་རྩོལ་ཐེག་པ་སྣེ་རྩོལ་འི་རང་བཞིན་དུ་
གྱུར་པའི་ཐེག་པ་འམ་རྩོལ་འི་གོ་འཕང་ཐོབ་བྱེད་ཀྱི་ཐེག་པ་འོ།།

དེ་ལ་འདྲིར་སྐྱེ་བཤད་པ་དང་པོའི་དབང་དུ་བྱས་ན་རྩོལ་ཡང་ཡིན་ལ་
ཐེག་པ་ཡང་ཡིན་པས་ན་རྩོལ་ཐེག་པ་སྣེ། རྩོལ་སེམས་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ནོ།།
ཇི་སྐད་དུ་སྤྱིམ་པའི་མེ་ཉོག་ལས —

“ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མ་ལུས་པ་བསྐྱུས་པ་ནི་པ་ལོ་དུ་སྤྱིན་པ་དུག་ཡིན་ལ།
དེ་རྒྱལས་བསྐྱུས་པ་ནི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཡིན། དེ་དག་ཀྱང་བསྐྱུས་པ་

རོ་གཅིག་པ་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དོ་རྗེ་སེམས་པའི་དྲིང་ངེ་
འཛིན་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་དོ་རྗེ་ཡིན་ནོ། །དོ་རྗེ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཐེག་པ་ཡང་
ཡིན་པ་ན་དོ་རྗེ་ཐེག་པ་སྟེ་སྟགས་ཀྱི་ཐེག་པ་འཕྲོ།”

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཐབས་ཤེས་གཉིས་མེད་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་
སམ་མཁོ་རྗེ་སེམས་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ནི་ལྟར་ཀྱི་སྐྱབ་པ་པོས་ལམ་མ་ལུས་པ་
བསྟོད་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་སྟེ་བསྟོད་བྱེད་ལམ་གྱི་ལུས་ལྟ་བུ་ཡིན་པས་འདྲིས་
ཐེག་པ་ཞེས་པའི་སྐྱེ་འཇུག་པའི་འཇུག་གཞིའི་གཙོ་བོའོ།

གཉིས་པ་ཡང་དོ་རྗེའི་གོ་འཕང་སྟེ་ཁ་སྐྱོར་ཡན་ལག་བདུན་ལྟར་དོ་རྗེ་
སེམས་པའི་གོ་འཕང་ནི་འབྲས་བུ་དང་། དེའི་རྒྱུའི་གཙོ་བོ་འཕྲུལ་དེའི་ཉེར་ལེན་དུ་
གྱུར་པའི་ཐབས་ཤེས་ཟུང་འཇུག་གམ་སྤང་སྟོང་ཟུང་འཇུག་གི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་
སེམས་དེ་ནི་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་པས་ན་དོ་རྗེ་ཐེག་པའོ།

སྟགས་ཀྱི་ཐེག་པ་— སྟེ་མ་པའི་མེ་ཉོག་ལས་བཤད་པ་ལྟར་སྟགས་ཀྱི་
ཐེག་པ་དང་དོ་རྗེ་ཐེག་པ་ནི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་སྟགས་ཞེས་
པའི་ལེགས་སྦྱར་ལ་ ‘མརྟ་’ ཞེས་པ་ཡོད་ཅིང་། འདྲིས་མརྟ་ཞེས་པ་ནི་‘མརྟ་
'ཞེས་པ་དང་། ‘རྟུཾ’ ཞེས་པའི་ཚིག་གཉིས་ལས་གྲུབ་པའི་ཚིག་སྦྱད་ཡིན་ལ།
དེ་ཡང་ངེས་ཚིག་གི་དབང་དུ་བྱས་ན་དབང་པོ་དང་། སྦྱིའི་ཡུལ་དང་། སེམས་
ཀྱི་གོམས་སྟོབས་ལས་བྱུང་བའི་བག་ཆགས་སད་པ་ལས་ངང་གིས་བྱུང་བའི་ནང་

1 སྟེ་མ་མེ་སྟགས་རིམ་ཆེན་མོར་བྱངས་ - ཤོག ༡༣ དེ་ལི - 25 །
2 ར་རོ་པའི་བྱས་འཁོར་དབང་མདོར་བསྟན་.....

གི་གཡོ་བ་ལྟེ། གསུམ་འདུས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡུལ་འཛིན་པའི་ཡིད་དེ་ལ་ 'མན་
 'ཞེས་བྱ་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་ཡིད་དེ་ལ་ རང་ཆས་སུ་རྗེས་སུ་འབྲེལ་ཡོད་པའི་ལས་
 དང་ཉོན་མོངས་པའི་ནད་དང་། ལྟ་བའི་འཛིན་པ་ཀུན་འཛོམས་པར་བྱེད་
 པའི་གཉིས་མེད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ལ་ 'ཏྲ' ལྟེ་སྐྱོབ་པ་ཞེས་བྱའོ། །སྐྱོབ་པ་
 དེ་ 'མན' དང་ཡོངས་སུ་འདྲིས་པར་བྱས་པས་ 'མན' རྣམ་ཡིད་དེ་འཛིན་པ་ལས་
 རྣམ་པ་ཀུན་དུ་གྲོལ་བར་འགྱུར་བས་ན་དེ་ལ་ 'མཆོ' ལྟེ་ཡིད་སྐྱོབས་ཞེས་བྱ་བ་
 ཡིན་ཅོ། ། དེ་ཡང་ལྡན་ལ་དོན་དམ་པའི་ལྡན་དང་། ས་བོན་གྱི་ལྡན་དང་།
 སྤྲིང་པོའི་ལྡན་ལ་སོགས་པ་མང་དུ་ཡོད་པ་ལས། འདིར་ནི་དང་པོ་ལྟེ། ལྡན་
 ཀྱི་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལམ་གྱི་ལུས་ཡོངས་སུ་རྗོགས་པའི་མཚན་གཞི་དེའོ། ། དེ་
 ཡང་རི་རྒྱུད་དུ་འདུས་པའི་རྒྱུད་སྤྱི་མ་ལས་—

“དབང་པོ་དང་ནི་ཡུལ་རྣམས་ཀྱི།
 རྒྱུན་གྱིས་གང་དང་གང་བྱུང་བ།
 ཡིད་དེ་ 'མན' ཞེས་བྱ་བར་བཤད།
 'ཏྲ' ལྟེ་སྐྱོབ་པར་བྱེད་པའི་དོན།” ༤༩ — ༧༠

ཅེས་གསུངས་ཏེ། དེ་ལྟར་ན་རྗོ་རྗོ་ཐེག་པ་དང་ལྡན་གྱི་ཐེག་པ་དོན་
 གཅིག་ལ། རྒྱུད་ཀྱི་ཐེག་པ་དང་། རྒྱུད་ཀྱི་ལམ་སོགས་ཀྱང་ལྡན་གྱི་ཐེག་པ་དང་
 དོན་གཅིག་པ་ཡིན་ཅོ། །

1 (འདུས་སྤྱི་ བོག་ ༥༣༦ ། ལྟེ་བཞུན་ རྒྱུད་ ༥)

དེ་ཡང་‘རྒྱུད་’ཅེས་པའི་རྣམ་དོད་ལ་ཏཱ་ (=तन्त्र) ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་
ལ། དེ་ནི་‘ཏཱ་’འཕྲུལ་བ་ལའོ། །ཞེས་པ་ལྟར། འཕྲུལ་བ་དང་རྒྱུན་ཆགས་པ་
དང་། རྒྱུན་མི་ཆད་ཅིང་རྣམ་པར་འབྲེལ་བ་སོགས་ལ་འཇུག་ཅིང་། འདིར་ནི་
རྒྱུན་ཆགས་པའི་དོན་ཅན་ཡིན་ཏེ། འདུས་པའི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལས་—

“རྒྱུད་ནི་རྒྱུན་ཞེས་བྱ་བར་བྲགས།
རྒྱུན་དེ་རྣམ་པ་གསུམ་འབྱུང་རྟོ།
གཞི་དང་དེ་བཞིན་རང་བཞིན་དང་།
མི་འཕྲོགས་པ་ཡིས་རབ་སྐྱེ་བས། ३३
གཞི་དང་རང་བཞིན་རྒྱུད་ཡིན་ཏེ།
དེ་བཞིན་མི་འཕྲོགས་འབྲས་བུའོ།
གཞི་ནི་ཐབས་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ།
གསུམ་གྱིས་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་བཟུས་པའོ།” ३८
ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རྟོ།

དེ་ལ་འདིར་རྒྱུད་ཅེས་པའི་སྤྱི་དོན་ནི། ཟག་བཅས་ཟག་མེད་གཉིས་
ཀའི་རྟེན་བྱེད་པའི་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་གསལ་ཞིང་རིག་པའི་བདག་ཉིད་རིགས་
ལ་སོགས་པའི་མཚན་གཞིར་རུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡིན་ལ། དེ་ནི་འཁོར་བའི་
གནས་སྐབས་སུ་ཟག་བཅས་ཀྱི་རྟེན་བྱེད་ལ། ལམ་དང་འབྲས་བུའི་སྐབས་སུ་

1 'तनु' विस्तारे । पा० व्या० गणपाठ-तनादि, गण. सं० १४६३ ॥
2 འདུས་ཕྱི་ཤོག་ ५३८ ན་ [སྤྱི་བཞུག་རྒྱུད་ ང་]

ཟག་མེད་གྱི་ལས་དང་ལམ་གྱི་རྟེན་བྱེད་ཅིང་། ཐོག་མ་མེད་པའི་འཁོར་བ་ནས་
 སངས་རྒྱལ་གྱི་སའི་བར་དུ་རྒྱུན་མི་ཆད་པས་རྒྱུད་དམ་རྒྱུན་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལྟ་
 བུའི་སེམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་ཀྱི་ཉི་གཞི་ལམ་འབྲས་བུ་གསུམ་ག་ལ་རྟེན་གྱི་ཚུལ་དུ་
 རྒྱབ་པར་གནས་པས་རྒྱུད་སྤྱི་ཙམ་པ་དང་། དེ་ལ་འབྲུད་པར་གྱིས་དབྱེ་ན་གཞི་
 དང་། སང་བཞིན་ཉེ་ལམ་དང་། འབྲས་བུའི་དབྱེ་བས་གསུམ་དུ་གསུངས་ཤིང་།
 དེ་ལ་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་རྒྱུད་ལྷག་པར་དུ་ལྷན་པའི་རིགས་འབྲུད་པར་པ་དེ་ནི་
 འདིར་གཞིའི་རྒྱུད་ཡིན་ཉེ། རི་སྐད་དུ་ས་ཆེན་བསོད་ནམས་ཚུ་མོའི་རྒྱུད་སྤྱི་
 རྣམ་ལས་ —

“རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སོ་སོ་རང་གི་སེམས་ཉིད་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་འདི་
 ཉིད་ལ་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་སྟེ། ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་སངས་རྒྱལ་གྱི་སའི་བར་དུ་ཟག་
 བཅས་གྱི་སེམས་རྒྱུན་མི་ཆད་པས་ན་རྒྱུད་ཅེས་བྱའོ།།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར།

དེ་ལ་ལམ་ནི་རྗེ་རྗེ་སེམས་པའི་རྟིང་ངེ་འཛིན་ཉེ་བྱང་རྒྱུ་གྱི་སེམས་
 ‘ཞེས་དུས་འཁོར་དབང་ལེ་དང་། དེའི་འབྲེལ་པ་ན་རོ་པའི་དབང་མདོར་བསྟུན་
 དང་། འདུས་པའི་རྒྱུད་སྤྱི་མ་སོགས་ལས་མཐུན་པར་བཤད་དེ་རྒྱུད་སྤྱི་མ་
 ལས་—

1 འདིར་ ‘ཚོས་ཉིད་’ ཅེས་ཚོས་ཅན་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཤིས་ལ་བྱ་ཡི། ཚོས་ཉིད་དོན་དམ་པའི་
 བདེན་པ་ནི་མ་ཡིན་ལོ།
 2 [བསོད་ནམས་ རྒྱ་སྤྱི་ ཤོག ༥༥ གསུང ག]
 3 [འདུས་སྤྱི་དེ་ཉིད་]

“ཐོག་མ་ཐ་མ་མེད་ཞི་བ།

དངོས་དང་དངོས་མེད་མི་ཟད་གཙོ།

སྒྲིང་ཉིད་སྒྲིང་རྗེ་མི་ཕྱེད་པ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་ཤིག་བྱ་བ་ཡིན།” ༣༧ །

ཅེས་སོགས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

ལྷགས་བསྟན་དར་ཚུལ་— འབྲས་བུའི་ཐོག་པ་སྟེ་གསང་ལྷགས་དོ་
རྗེ་ཐོག་པའི་དོན་དེ་ལྟར་ཡིན་ན། འོ་ན་དེ་ལྟ་བུའི་ཐོག་པ་མཚོག་གི་ལམ་དེ་
འཇིག་རྟེན་དུ་དར་བའི་ཚུལ་རི་ལྟར་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལ་གཉིས་ཏེ། སྤྱིར་
གསང་ལྷགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དར་ཚུལ་དང་། སྒྲིང་བྱུ་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་
གསང་ལྷགས་དར་བའི་ཚུལ་ལོ།

དང་པོ་ནི་སྤྱིར་ལྷགས་ཀྱི་ཐོག་པ་འཇིག་རྟེན་དུ་དར་བའི་སྒྲིང་རྣམས་
མདོ་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་རྣམས་ལ་མི་མཐུན་པ་མང་ཞིང་། ཉེ་རུ་གསྟོན་བྱུང་དང་།
ཕག་མོ་སྟོན་བྱུང་དང་། གཤེན་རྗེ་གཤེད་སྟོན་བྱུང་གི་ལོ་རྒྱུས་ལ་སོགས་པ་
རྣམས་དང་། མཁས་མཚོག་བུ་སྟོན་གྱི་བདེ་མཚོག་སྤྱི་དོན་ཡོ་ག་བྱ་གཟིངས་
སོཾ་སུ་གསང་ལྷགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དང་པོ་ལྟ་ལུ་ལུ་དུ་དཔ། སྤྱིས་མི་ལུ་ལུ་དུ་
དར་བ་སོགས་ཀྱི་བཞེད་པ་སྣ་ཚོགས་པ་བཀོད་འདུག་ཅིང་། བོད་དུ་ལྷག་པར་
དར་བའི་སྤྱི་བ་རྒྱུད་རྒྱུད་མའི་བརྒྱུད་འཇིག་རྟེན་པོ་རྣམས་དང་། དེ་དག་གིས་

1 འདིར་ “བྱང་ཆུབ་སེམས་” — ཞེས་བྱང་ཆུབ་དོན་གཉེར་གྱི་སེམས་མིན་གྱི། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱ་
མཐུན་ཡིན་ཅོ།

མཇེད་པའི་གཞུང་ལུགས་མང་པོ་ཞིག་ལ་གསང་སྤྲུལ་གྱི་བསྟན་པ་དང་པོ་སྟོན་
 པ་ཚོས་སྐྱུ་ཀུན་དུ་བཟང་པོས་འོག་མིན་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་གནས་སུ་སྟོན་མེད་ལྷན་
 འབྲུབ་གྱི་ཚུལ་དུ་སྤེལ་བ་སོགས་གྱི་བཤད་པ་མཇེད་པ་མང་ཡང་། དང་པོ་
 རྟོ། ཡུལ་སྤྲུགས་རེ་བ་དང་། དུས་ཉི་ཅེ་བའི་ལོ་རྒྱུས་དང་འབྲེལ་བ་མང་
 བས་སྤྲུགས་བསྟན་དར་ཚུལ་སྤྱིའི་རྣམ་གཞག་མིན་རྣམ་སྟུམ་པ་འདུག་ལ།
 ཕྱི་མ་ནི་ཚོགས་པ་ཆེན་པོའི་ལྷ་གྲུབ་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་ལམ་གྱི་ཆེ་བ་འདོན་ཚུལ་
 འཛིན་དུ་བཟུང་བའི་གནད་ཁྱད་པར་བ་ཞིག་ཡིན་ཡང་། དེ་ཉིད་མལ་པའི་རང་
 རྒྱན་དུ་བཤད་ན་མུ་སྟེགས་གསང་བ་པའི་གྲུབ་མཐའ་དང་ཁྱད་མེད་དུ་འགྲོ་ཉེན་
 ཆེ་བས་རེ་ཞིག་མི་སྐྱེ་བའི་བརྟུལ་ཞུགས་ལ་གནས་པ་ཉིད་མཇེས་པར་སེམས་སོ།།

དེས་ན་སྤྲུགས་གྱི་གདུལ་བྱའི་གཙོ་བོ་ནི་ཁམས་དྲུག་ལྡན་གྱི་འདོད་
 ཁམས་པ་ཡིན་པས་གསང་སྤྲུལ་དང་པོ་འདོད་ཁམས་སུ་དར་བར་མངོན་ལ།
 སྤྱིར་འཁོར་བ་ལ་ཐོག་མ་མེད་པ་ལྟར། དུས་འདི་མན་ཆད་ལ་གསང་སྤྲུལ་
 གྱི་བསྟན་པ་དར་བ་མེད་ལ་འདི་ཚུན་ལ་ཡོད་དོ་ཞེས་སྐྱེ་མི་རུས་ཤིང་། རྗོ་
 རྗོ་སེམས་དཔའི་གདུལ་བྱ་དང་བསྟན་པ་ཡང་རྗོ་རྗོ་སེམས་པའི་འབྲིན་ལས་ལྟར་
 ཐོག་མཐའ་དང་བྲལ་བར་མངོན་ནོ།།

ཤུག་ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་སྤྲུགས་དར་ཚུལ་— བསྟན་པ་

འདིའི་དབང་དུ་བྱས་ན་སྟོན་པ་མངོན་པར་ཚོགས་པར་སངས་རྒྱུས་པའི་ཆེ་སྟོན་
 ལ་བདུད་བདུལ་བའི་དུས་སུ་གཤིན་ཅེ་གཤེད་གྱི་སྐྱུར་བཞེངས་ནས་གཤིན་ཅེ་
 གཤེད་གྱི་ཚོས་སྐྱུར་གསུངས་པ་སོགས་གྱི་བཤད་པ་ཡང་འདུག་མོད།

དངོས་འབྲེལ་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་འབྲེལ་བའི་གསང་སྟགས་ཀྱི་ཚོས་སྐོར་ནི་
 སྟོན་པ་མྱེད་ལས་འདས་པའི་དུས་སྟོན་ལྟེ་བ་ལྟེ་མ་དཔའ་བོ་ལྷགས་འབྲུག་གི་
 རྟག་པའི་ཉེ་ལ་འཕགས་ཡུལ་སའི་ཆར་གདོགས་པ་དཔལ་ལྷན་འབྲས་སྤྲངས་ཀྱི་
 མཚན་རྟོག་ཆེན་པོར་གསུངས་པ་ཡིན་ལ། ། སྟགས་སྟོགས་ཀྱི་མཁས་པ་མང་
 ཆེ་བ་རྣམས་དེ་ཉིད་སྟོན་པ་སངས་རྒྱུ་བཙུག་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བསྐོར་བའི་ཚོས་
 ཀྱི་འཁོར་ལོ་བཞི་པར་ཡང་བཞེད་དོ། །

དེ་ནས་བཟུང་ལྷ་ཡུལ་ལྷ་ཡུལ་སྤྱི་ཡུལ་གཞོན་སྤྱི་ཡུལ་དང་མི་
 ཡུལ་སོགས་སུ་གསང་སྟགས་དར་བའི་རྒྱལ་མང་མོད། གང་ལྟར་ཡང་ཨུ་རྒྱན་

མཚན 1—ཀ དུས་འཁོར་ཙུ་རྒྱུ་ལས་ — “སྟོན་པས་བྱུ་ཚོད་ལུང་པོ་སྤྱ། ཤེས་རབ་མ་ལོ་ལྷན་
 རྒྱལ་བཞིན། ཚོས་བསྟན་དཔལ་ལྷན་འབྲས་སྤྲངས་སྤྱ། དེ་བཞིན་གསང་སྟགས་རྒྱལ་རབ་
 བསྟན།” — བད་ཚོས་ཤོག ༡༥ བ ༣༠, དེ་ལོ།

ཁ དེ་བཞིན་ཉི་མ་དཔལ་ཡི་ཤེས་ཀྱི་མཚན་བཞེད་འབྲེལ་པར། རྒྱུ་པ་དང་བསྟུས་པའི་དབྱེ་བས་
 གསང་སྟགས་ཀྱི་རྒྱལ་བམས་ཅད་བསྟན་དོ།—བད་ཚོས་ཤོག ༡༥ བ ༣༠ དེ་ཉིད། གཞན་
 ཡང་—དེ་བཞིན་གསེགས་པ་དགུང་ལོ་རིལ་པོ་བརྒྱད་ཅུ་ཚྲོགས་ནས་ངོ་བོ་བརྒྱད་ཅུ་ཙུ་གཅིག་བཞེས་
 ཤིང་། སངས་རྒྱུ་ནས་ལོ་བཞི་བཅུ་ཙུ་དུག་པ་གནམ་གཞོན་ལྷགས་འབྲུག་དཔྱིད་ལྟེ་འབྲིང་པོ་
 རྟག་པའི་ཆེས་བཙུག་ཉི་མ་ཕྱི་དྲོ་བདུད་འཛུམས་འཛིག་རྟོག་གསུམ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་དུས་
 སྐོར་དང་ལྷན་པའི་ཆེ། ལྷོ་སྟོགས་དཔལ་ལྷན་འབྲས་སྤྲངས་ཀྱི་མཚན་རྟོག་དུ་དཔལ་མཚོག་དང་
 པོའི་སངས་རྒྱུ་སོགས་སྤྱེད་ཀྱི་ཐེག་པ་མཐའ་ཡས་པ་གསུངས། དེའི་ལྟར་བཤུ་མ་ས་གའི་
 ཆེས་བཙུག་མཚན་མོ་ཐུན་ཐ་མའི་འགོ་ལ་བྱུད་ཀྱི་ཡུལ་ཙུ་ཙན་དུ་གཟུགས་སྤྱེ་ཚོས་ཀྱི་དཔྱིད་ས་སུ་
 ལྷག་མ་མེད་པར་གསེགས་སོ། རྟོང་ཚོས་ལྷ་དབང་གཡུལ་རྒྱལ་ཤོག ༣༥ མཚན། མཁས་
 བཅུན། དེ་བཤོག ༣༣ དེ་བ ༧།

ག རིགས་ལྷན་སྤྱི་ལོག ཤོག ༥/ན བོད་དཔར།

ང བད་དཀར་ཞལ་ལུང་། ཤོག ༥༥/བ །

གྱི་ཡུལ་དང་གསལ་སྟེ་སྤྱི་ལོ་ལྷན་པ་ནས་དངོས་སྤྱི་བྱུང་གསལ་པའི་རྒྱལ་པོ་
 ཞི་རྒྱ་རྒྱ་ཉི་དང་། ལྷོ་བ་བཟང་པོ་སོགས་ཀྱི་བརྒྱུད་པ་ད་ལྟའི་བར་དུ་མ་ཉམས་
 པར་གནས་ཡོད་ལ། བརྒྱུད་པ་འདི་རྣམས་ཀྱི་བཀའ་དང་མན་ངག་སོགས་ལ་
 བརྟེན་ནས་འབྲས་བུ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་མཛད་པའི་སྲུབ་པའི་དབང་ཕྱིན་
 ཀྱང་བསམ་བཞིན་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཞིག་ཤུང་ཡོད་པར་རྒྱུད་ལྡེའི་ལོ་རྒྱུས་
 རྣམས་ལས་ཤིས་ཐུབ།

མགུར་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་དབུས་དང་རྒྱ་གར་ལྗོ་ཤུང་དང་། བོད་
 དང་། རྒྱ་ནག་དང་། འབྲོ་ལྗིང་དང་། ལྷག་པར་རྒྱ་གར་གར་ལུ་བ་གཉིས་
 ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་སྤྱི་གསང་སྤྱད་དེ་བའི་དུས་ཚིག་སྲུབ་ཆེན་སར་ཏུ་
 དང་། འཕྲུ་པ་སྲུ་རྒྱུ་བ་ཀྱི་དུས་ཅམ་ནས་ཡིན་ལ། འདི་ནི་མ་གྱི་ཁའི་
 འདས་ལོ་མ་རྒྱུགས་གོང་གི་བརྒྱ་ཕྱག་དང་པོ་དང་། ལྷན་པ་འདས་ནས་ལོ་ངོ་
 བརྒྱ་ཕྱག་གསུམ་པའི་མཐའ་མ་ཅམ་དང་བཞི་པའི་མགོ་ཅམ་གྱི་དུས་ཡིན་ཞིང་།
 སར་ཏུ་ཆེན་པོའི་ལྷན་དུ་གོང་གསལ་ཡུལ་གྱི་རྣམས་སྤྱི་ནང་པའི་སློབ་དཔོན་
 གསང་སྤྱད་མངོན་གསལ་དུ་སློབ་པ་ཡོད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཡིག་ཐོག་ལ་ཡོད་པ་ནི་མི་
 རྒྱང་ངོ་། །རྒྱལ་པོ་ཇ་དང་ཞི་རྒྱ་རྒྱ་ཉི་སོགས་ནི་དེ་སློན་ན་ཡོད་ཀྱང་ཞུ་རྒྱུ་གྱི་
 ཡུལ་གྱི་གསང་སྤྱགས་པའོ།

དང་སང་རིག་གསར་གྱི་སློབ་གཉེར་བ་འགའ་དང་། ཤིས་ཡོན་ཅན་
 གྱི་མཁས་པ་མང་པོ་ཞིག་ལ་ནང་པའི་གསང་སྤྱགས་དེར་རྒྱལ་དང་། སྲུབ་པ་
 ཐོབ་པའི་སློབ་ཆེན་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་སློབ་ལ་བཞེད་པ་མི་མཐུན་པ་ཤིན་དུ་

མང་ལ། སལ་ཆེ་བ་ཞིག་ལྟགས་ཀྱི་བསྐྱེད་པ་དང་པའི་དུས་ནི་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྱུག་
 བདུན་པའི་མཇུག་ཙམ་དང་། སྐབས་ཐོབ་ལུ་ཉི་ཤུ་དང་སར་ཉལ་ལ་སོགས་པའི་
 དུས་ཀྱང་བརྒྱ་ཕྱུག་བརྒྱད་པའི་ནང་དང་། ལྷ་སྐྱབ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་དེ་ལ་
 གཞོན་པར་དོགས་ནས་ཅ་གེས་མཛད་པ་པོའི་ལྷ་སྐྱབ་དང་། སྐབས་པ་ཐོབ་ཅིང་
 ལྷ་སྐྱབ་ཀྱི་རྒྱུད་འབྲེལ་མཛད་པ་པོ་ལྷ་སྐྱབ་སྟེ་ལྷ་སྐྱབ་གཉིས་ཡོད་པའི་སྐབས་བྱེད་མང་
 དུ་བཞོན་པ་སོང་བྱེད་ཀྱང་། སལ་ཆེ་བ་ཞིག་ནི་བཛོད་བྱས་སྟོང་པའི་ཚོད་བྱེད་
 དང་། བསྐྱབ་བྱས་སྟོང་པའི་སྐབས་བྱེད་ཁོ་ནར་སྤང་བས། འདི་དག་ལ་དགག་
 གཞག་གི་ངལ་བའི་ཁྱར་འཁྱར་བར་མི་སློལ། ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྱུག་ལ་པ་དང་དུག་
 པའི་ནང་གི་མཁས་ཤིང་གྲུབ་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལྷ་བ་གྲགས་པས་རང་གི་
 ལྟགས་གཞུང་ཐམས་ཅད་ལྷ་སྐྱབ་ཀྱི་མན་ངག་ལ་བརྟེན་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་ལ།
 ལྷག་པར་འདུས་པའི་རྒྱུད་འབྲེལ་སྟོན་གསལ་དུ་འབྲེལ་པ་དེ་འཕགས་པ་ལྷ་སྐྱབ་
 ཀྱི་མན་ངག་ལ་བརྟེན་ནས་མཛད་པར་དངོས་སུ་བཞོན་ཡོད་ལ། དེ་ལྟ་བུའི་ལྷ་
 ལྷ་སྐྱབ་དེ་བརྒྱ་ཕྱུག་བརྒྱད་པའི་ནང་གི་ལྷ་སྐྱབ་ཡིན་མི་སྤིད་ཅིང་། བརྒྱ་ཕྱུག་གཉིས་
 པའི་ནང་གི་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ལྷ་ས་རིམ་ལུའི་དོན་འབྲེལ་ལམ་ཁ་སྟོང་གི་
 རུལ་དུ་མཛད་པའི་སྟོན་བསྐྱེད་སྟོན་མེ་ལ་ཡང་རུལ་དེ་ལྷ་སྐྱབ་ཀྱི་དགོངས་པར་
 བཞེད་པས། ཤིང་ཉ་ཆེན་པོ་ལྷ་སྐྱབ་དང་། རིག་པ་འཛིན་པ་ལྷ་སྐྱབ་སོ་སོར་
 འཛོག་པ་ལ་སྟོང་པོ་མེད་པར་གེས་རུས་སོ།། འདིའི་སྟོར་ལ་མཁས་པ་གཞན་
 ཀྱི་བཞེད་པ་དང་། འཕད་སྟོགས་ཀྱི་སྐྱབ་བྱེད་དང་། མི་འཕད་པར་གཞོན་
 བྱེད་སོགས་འཕགས་པའི་གཞུང་ཞིབ་མོ་རྣམ་འཕགས་བོད་སྐད་ནས་ལེགས་སྦྱར་

དང་ཉིན་སྐད་གཉིས་ཀར་ལྷན་དུ་བརྒྱུར་ཡོད་པའི་སྒྲིང་གཞིར་ཅུང་ཟད་སྒྲིས་དེ་
བཞོད་འཕྲོད་པས་འདིར་མི་སྒྲོའོ།

ཡུལ་ཐོབ་— རྗེ་རྗེ་ཐོག་པའི་ལམ་ལ་ཡུལ་པ་ཐོབ་པའི་ཚུལ་རྣམས་རེ་
རེ་ནས་བརྗོད་ཀྱིས་མི་ལང་ལ། བོང་སྒྲོས་ལྷར་ལྷ་རྒྱན་དང་། བརྒྱལ་སོགས་
ཡུལ་པའི་བརྗོད་གནས་རྣམས་སུ་ནི་རྗེ་རྗེ་ཐོག་པའི་བརྒྱན་པ་སངས་རྒྱས་ལལ་
བཞུགས་པ་ནས་བཟུང་མ་ཉམས་པར་ཡུན་རིང་དུ་གནས་ལ། ཡུལ་དེ་དག་
དང་། ཡུལ་དབུས་དེ། མགུ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་སུ་རྗེ་རྗེ་ཐོག་
པའི་ལམ་ལ་ཞུགས་དེ་ཡུལ་པ་ཐོབ་པའམ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་
མངོད་དེ་ཡུལ་ཐོབ་དུ་གྲགས་པ་ནི་ཡུལ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅ་བཞི་སྟེ། དེ་ཡང་
འཇིག་རྟེན་གྲགས་པ་དང་། རྒྱ་མཚན་ཁྱད་པར་བའི་དབང་དུ་བྱས་དེ་བརྒྱད་
ཅུ་ཅ་བཞིར་གྲགས་པ་ཡིན་གྱི། སྦྱིར་ཡུལ་ཐོབ་ལ་བརྒྱད་ཅུ་ཅ་བཞིར་གྲངས་
ངེས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཅོ།

ཡུལ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གོ་རིམ་— འདིར་རྣམ་ཐར་དུ་ཡུལ་ཐོབ་རྣམས་
ཀྱི་ཐོག་མར་ལྷ་ཉི་པའི་རྣམ་ཐར་བྱུང་ལ། སར་ཉལ་དང་ཨིན་འཇུག་སོགས་ཕྱིས་
སུ་བཞོད་འདུག་ཀྱང་དུས་རབས་དང་། ལྷ་སྒྲོབ་ཀྱི་གོ་རིམ་སོགས་ཀྱི་དབང་དུ་
བྱས་ན། གསང་སྤྲུལ་གྱི་ལམ་ལ་ཡུལ་པ་ཐོབ་པའི་ཐོག་མར་ལྷ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་
པོ་ཨིན་འཇུག་དང་། མདོ་སྒོ་གྲོས་བཟང་མོའམ་ལྷ་ལས་ལྷ་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་
དང་། དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་མི་སུ་ཀམ་སོགས་ཡིན་ལ། འདི་དག་ནི་ལྷ་རྒྱན་དུ་བྱུང་

1 ཉིན་སྐད། སྒྲིང་གཞི་ཤོག 22 - 30/བ གཟིགས 2000

བའི་དང་པོའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཡིན་ཞིང་། ཡུལ་དབུས་སུ་ནི་སར་ཉལ་དང་།
 ཀུཀུ་རིལ་དང་ལྷ་སྐྱབ་སོགས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་བུ་བྱུང་བའི་དང་པོ་ཡིན་ནོ།
 །ལུ་ཉི་ལུ་ནི་སར་ཉལ་དང་། རི་ཁྲོད་དབང་ཕྱུག་སྟེ་ལྷ་སྐྱབ་ཀྱི་སློབ་མ་དཔལ་
 བཤམ་རིའི་དབང་ཕྱུག་གཉིས་ཀའི་སློབ་མ་ཡིན་པས་ལྷ་སྐྱབ་ལས་སྤྱིས་ཀྱི་གྲུབ་ཐོབ་
 བོ། །མི་རུལ་ལ་སོགས་པ་ནི། དབྱིག་གཉིན་དང་། རྩོགས་སྒང་དང་དུས་
 མཚུངས་ཡིན་པ་དང་། རྒྱད་པར་ཟླ་གྲགས་ཀྱི་སྐྱ་ཆེའི་སྟོད་ཙམ་ལའང་
 བཞུགས་སྒང་བས་དུས་སྤྱིས་ཀྱི་ཡིན་པར་གསལ་བར་གོ་རུས་ལ། དེ་ལྟར་ན་
 རྣམ་ཐར་གྱི་གོ་རིམ་དང་། བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་གྲངས་དེ་རྒྱ་མཚན་གང་ལ་
 བརྟེན་ནམ། འདིར་ལུ་ཉི་པ་དང་པོར་བྱུང་ལ། བཞུག་རྣམས་ལའང་སླ་སློབ་
 དང་དུས་ཀྱི་གོ་རིམ་གཞུང་གཞུང་ནས་བཞུག་དུ་བཞུག་པ་དང་། བརྒྱད་པ་
 རིམ་བྱོན་གྱི་སླ་རྒྱུད་སོགས་དང་ཡང་མི་མཐུན་པར་གོ་རིམ་གཞུག་དུ་བྱུང་བའི་
 ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། སྤྱིར་དོ་ཚེ་ཐེག་པའི་བརྟན་པ་ལ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་དུས་ཀྱི་རིམ་
 པ་དེ་སླ་བརྒྱད་སོགས་ལས་བྱུང་བ་ལྟར་ཡིན་ནའང་། འདིར་རྣམ་ཐར་དུ་བྱུང་
 བའི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་གྲངས་ཀྱི་གོ་རིམ་ནི། ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྱག་བཅུ་
 པའི་ནང་ཙམ་ལ་སླ་མ་དོ་ཚེ་གདན་པ་ཆེན་པོས་ཚོགས་འཁོར་ཆེན་པོ་ཞེས་
 བཤམས་ཏེ་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་སྤྱན་དྲངས་པས་ཐམས་ཅད་དངོས་སུ་རིམ་གྱིས་
 བྱོན་ཏེ་གདན་བཤམས་པ་ལ་བཞུགས་པ་ལ། དེར་བྱོན་པའི་རིམ་པ་དང་།
 གདན་བཤམས་པ་ལ་བཞུགས་པའི་གོ་རིམ་དུ་ལུ་ཉི་ལུ་དང་པོར་བྱོན་ནས་གདན་

ལ་དང་པོར་བཞུགས་པས་འདི་ནི་དེའི་དབང་དུ་བྱས་པའི་གོ་རིམ་མོ།།¹ དེར་
 བྱོན་པའི་ལྷུང་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་གྲངས་ཀྱང་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞི་ཡིན་པས་འདི་བརྒྱད་
 ཅུ་ཅུ་བཞིའི་གྲངས་ཀྱང་དེའི་དབང་དུ་བྱས་པར་གསལ་ཡོ།། གཞུང་འགར་
 ནད་པ་ཞིག་གི་ནད་གསོ་བ་དང་། ཆེ་རིང་བར་བྱ་བའི་ཐབས་སུ་ལྷུང་ཐོབ་
 བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིར་ཚོགས་འཁོར་བྱས་པའི་ཚུལ་དང་།² དེ་ཡང་མཁའ་འགྲོ་
 མ་ཞིག་གིས་བསྐྱེད་བའལས་ལྷུང་ཐོབ་རྣམས་རྗེ་རྗེ་གདན་གྱི་ཚོ་ཕྱོད་སེ་བ་ཚལ་
 དང་ཉེ་བར་རིམ་པས་འདུས་པ་སོད་ཀྱི་གདམ་བཞོད་པའང་ཡོད། གང་ལྟར་
 ཡང་རྗེ་རྗེ་གདན་དུ་ལྷུང་ཐོབ་རྣམས་སློབ་དཔོན་དུ་བྱོན་པའི་གནས་ཚུལ་ཐོས་ནས་
 རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ཀྱི་སློབ་དཔོན་དཔལ་བོ་འོད་གསལ་ལྷུང་ཐོབ་རྣམས་མཇལ་
 བའི་དོན་དུ་རྗེ་རྗེ་གདན་དུ་བྱོན། སློབ་དཔོན་རྗེ་རྗེ་གདན་དུ་འབྱོར་ཆེ་ལྷུང་
 ཐོབ་རྣམས་གཤེགས་ཟིན་པས་དེར་བཞུགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཐོ་མོ་རྣམས་ལ་
 འདི་རྟོད་བྱས་ཏེ་ལྷུང་ཐོབ་རྣམས་དེར་བྱོན་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཐར་དང་། ཚོད་
 འཁོར་སྐབས་གསུངས་པའི་སོ་སོའི་རྟོད་བཞེད་‘དོ་ཉ’ལ་སོད་པ་རྣམས་ཡི་གེར་
 བཞོད། སྤྱིས་དོ་ཉ་རྗེ་རྗེ་སླུའི་འབྲེལ་པ་ཡང་མཇེད་དོ།།³

1 ལྷུང་ཀྱན་ལྷུང་ཐོབ་རྗེས་གནང་བཤད་པ - ཤོག ༡ ༣ ། དེ་ལོ་སློབ་དཔལ་
 2 ལྷུང་ཀྱན་རྗེ་ །དེ་ཉིད། དེ་བཞིན་ - དོ་ཉའི་ལོ་རྒྱུས།
 མཚན - འདིའི་སློབ་ལ་སློབ་དཔོན་དཔལ་བོ་འོད་གསལ་གྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་པ་ཞིག་ཡོད་པར་མངོན་ཏེ།
 ལྷུང་ཀྱན་ལས་ - ‘ལྷུང་ཆེན་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞི་སོ་སོའི་རྣམས་ཐར་རྒྱས་པ་སློབ་དཔོན་དཔལ་བོ་འོད་
 གསལ་གྱིས་བསྐྱེད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ལས་ཤེས་ཤིང་།’ - ལྷུང་ཀྱན་ལྷུང་ཐོབ་མཚན་གོ་རིམ་ - ཤོག ༥ མ།
 3 འབྲེལ་པ་འདི་ཐེ་དགོ་བསྐྱར་འབྱུང་རྒྱུ་ ‘ལུ’ པར་ལྷུང་། ཉི་རྟོད་ དེབ ༥༧/ཤོག ༡༧༦/ནས།

ལོ་རྒྱུས་འདི་ནི་སློབ་དཔོན་དེས་བསྐྱེད་པའི་ལོ་རྒྱུས་འབྲེལ་པ་སོགས་
 ལ་གཞིར་བྱས་ཏེ་སྐྱ་མ་ཨ་ལྷ་ཡང་རྩ་བུ་ལམ་མི་འཛིགས་སྦྱོན་པའི་དཔལ་གྱིས་
 བསུངས་པའི་དོན་རྣམས། དེའི་སློབ་མ་མི་ཉལ་ལོ་ཙ་བ་སྦྱོན་གྲུབ་ཤེས་རབ་
 གྱིས་བོད་རྒྱལ་དུ་བསྐྱེད་ཅིང་བསྐྱེད་པ་ཡིན་པས། རྣམ་ཐར་འདིའི་ལོ་རྒྱུས་
 དང་། བྲངས་དང་གོ་རིམ་སོགས་ནི་གོང་གསལ་དཔལ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་
 མཇེད་པའི་བསྐྱེད་བཅོས་དང་ལོ་རྒྱུས་ལ་བརྟེན་པའི་གོ་རིམ་དང་ལོ་རྒྱུས་སོ།།
 དེས་ན་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་གོ་རིམ་སོགས་འདི་དག་ལ་དུས་རབས་དང་། བརྒྱུད་པ་
 རིམ་བྱོན་གྱི་སློབ་ཀྱི་རིམ་པ་སོགས་སུ་འབྲུལ་བར་མི་བྱའོ།།

སར་ཉལ་ཕྱོད་ — ལུ་ཉི་ཕུ་དང་པོ་ར་འཛོག་པ་དང་། བུ་ལི་ཕུ་ཐ་མར་འཛོག་
 པའི་གོ་རིམ་དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ལ། སྦྱིར་སྐྱབས་ལམ་གྱི་གྲུབ་ཐོབ་དང་པོ་རྒྱལ་པོ་
 ཨི་རྒྱ་རྒྱུ་དང་པོ་དང་།། ཡུལ་དབུས་སུ་བྱོན་པའི་དང་པོ་ནི་སར་ཉལ་ཕྱོད་ལེན་ལེན་
 སར་ཉལ་ཕྱོད་ལོ་རྒྱུས་རྣམ་ཐར་དུ་གསལ་བ་ལས་དེའི་འབྲུངས་ཡུལ་རྒྱ་གར་གར་
 ཕྱོད་རྩ་ཉི་ཞེས་བྱ་བའི་བྱེ་བྲག་‘སོལ་པ’³ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་བཤད་ལ། རིགས་
 བཅའ་ཟེ་ཡིན་པ་དང་། དངོས་འབྲེལ་འདི་མཁའ་འགྲོའི་བྱ་ཡིན་པར་ཡང་བཞེད།

1 གསང་བའི་སྦྱོན་མ (སྦྱོལ་མ) ཞེས་བྱ་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས - “གསང་བ་ཆེན་
 པོའི་རྒྱུད་འདི་ཤིས་པ་དང་། བཤད་པ་སུས་བྱེད། བཀའ་སྐུལ་བ་ཨུ་རྒྱན་གྱི་ཡུལ་དཔལ་རྩི་
 རི་ཆེན་པོའི་གནས་སུ་ ཨུ་རྒྱན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཨི་རྒྱ་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་དེས་ ཤིས་པ་དང་། བཤད་པ་
 དང་། སེམས་ཅན་ལ་གསལ་བར་བྱེད་དོ།” སང་ཆོས་ཤོག ༤༩/125 དུ་བྲངས་འདུག

2 ས་རྒྱ་བཀའ་བུམ་ ‘པ’ ཤོག ༤༥།

3 ‘སོལ་པ’ ཉི་ཉོང་དེབ་ ༩༧ ཤོག ༡༧༧ ། ‘ཡུལ་འདི་དག་དང་སང་ངོས་མི་ཟེན་པས་མིང་སྟེ་
 ཉམས་པའམ་བོད་པས་བྱིས་ནོར་དུ་སོང་བ་གང་ཡིན་དུས།

འདི་རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་ལ་སྒྲིལ་རྒྱུ་ལྟར་ཆེན་སྐྱོད་དང་དུས་མཉམ་དང་། དོ་ཉ་སོགས་རྒྱལ་
པོ་དེ་དང་དེའི་འབངས་བཅུན་མོ་སོགས་ལ་གསུངས་པའི་རྒྱལ་ཡང་ཡིན་ཡིན་
འདྲ་བཞིན། འོན་ཀྱང་འདིར་རབ་དུ་བྱུང་བའི་ལོ་རྒྱུས་མི་འདུག

རྗེ་བཅུན་དུ་རྒྱུ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཚོས་འབྱུང་དུ་སློབ་དཔོན་འདི་རྒྱལ་པོ་
ཙམ་སྐྱོད་དང་དུས་མཉམ་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་དེ་མགུར་འི་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ལ། དེའི་
དུས་སུ་སློབ་དཔོན་འདི་རྒྱལ་ལྗོངས་ཏུ་བྱོན། བཅུན་པ་ནག་པོ་ལས་བསྐྱེན་པར་
རྗེ་གསུངས་པར་བཞིན་ཅིང་། དེ་རྒྱལ་ལྗོངས་འཁོར་པོ་མཛད་པ་དང་། བསྐྱེན་
པ་ལྟུང་བ་ལ་གཏད་པ་སོགས་ཀྱང་དུ་རྒྱུ་ཐའི་གསུང་ལས་མང་དུ་བྱུང་། སློབ་
དཔོན་ཁ་ཅིག སར་ཉ་འདི་བཅུན་པ་སྐྱ་གཙན་འཛིན་འོད་ལས་བསྐྱེན་པར་
རྗེ་གསུངས་པ་དང་། སྐྱ་གཙན་འཛིན་འོད་ཀྱི་མཁན་པོ་བཅུན་པ་ནག་པོ་ཡིན་པར་
བཞིན།² འདི་ནི་དོ་ཉ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ལས་སར་ཉ་འདི་སྐྱེན་པ་འདས་ནས་ལོ་
སྐུམ་བུ་ནས་བྱོན་པར་བཤད་པ་དང་མཐུན་པར་སྤང་ལ། དུས་རབས་ཀྱི་
དབང་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་རྒྱལ་འདི་འཐད་སྐྱོགས་སུ་སྤང་ངོ་།།

པད་དཀར་ཚོས་འབྱུང་³དུ་སློབ་དཔོན་འདིའི་འབྲུངས་ཡུལ་ཡུལ་
དབུས་ཀྱི་གར་དུ་གཏོགས་པ་ལྷ་རྒྱུ་སྤྱིའི་ནང་ཆུང་གྲོང་བྱིར་གསེར་གྱི་བྲེ་ ཞེས་
བྱ་བར་འབྲུངས་པར་བཤད་ལ། དེའི་དང་པོའི་མཚན་ཡང་ཡང་དག་རྒྱལ་བ་

1 རྒྱ་གར་ཚོས་འབྱུང་ - བོག ༤༥ - ༤༦ ལྗོངས་ དེབ ༡༩༤༤ དཔལ།
2 རྒྱ་གར་ཚོས་འབྱུང་ - བོག ༤༤ - དེ་ཉིད།
3 པད་ཚོས་ - བོག ༤༡ - 140 དི་ལི་སྐོག

ཅན་ཉི་བདེ་བྱེད་བདག་པོ་ཡིན་པར་བཞིན་པས། འདི་ནི་མཐོ་བཙུན་གྲུབ་ཇི་
 དང་། བདེ་བྱེད་བདག་པོ་སྟེ། སྐྱེ་མཆེད་གཉིས་ཀྱི་ནང་ཚན་བདེ་བྱེད་བདག་
 པོ་དང་། དེ་ཡང་ཁྱད་པར་འཕགས་བསྟོན་གྱི་འགྲེལ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་
 བཀོད་ནས་དེ་གཉིས་གཞིན་ཏུ་དོན་གྲུབ་ཀྱི་སྲས་སྐྱེ་ཅན་འཛིན་ལས་བསྟེན་པར་
 ཇོགས་པ་དང་། རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་མི་སུགས་སར་ཉའི་སྐྱེ་མ་ཡིན་པ་
 དེ་ཉིད་སྲས་སྐྱེ་གཅན་འཛིན་མིང་སྟོས་ཅམ་ཡིན་པ་དང་། མཐོ་བཙུན་སྐྱེ་
 མཆེད་དབང་ཕུག་ཆེན་པོ་ལས་ཆེ་ཉི་ཟླ་དང་མཉམ་པའི་མཚོག་ཐོབ་པ་སོགས་
 བཤད་ཀྱང་། སྤྱི་མཐུན་གྱི་ན་བར་འོས་པའི་གདམ་དུ་མི་སྤང་ལ། བསམ་
 གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་རྒྱལ་ནི་འདིར་དཔུང་པར་མི་སྟོའོ། །ཤོང་སྟོས་འདི་དག་ནི་སྐྱེ་
 མ་དོ་ཇི་གདན་པའི་གདམ་རྒྱན་ལ་བརྟེན་པར་སྤང་ལ། དེ་ཡང་མདོ་སྟེ་སྟིང་ཇི་
 པད་དཀར་ལས་—

“ང་ཡོངས་སུ་སྐྱེ་ལྷ་འདྲེན་ལས་འདས་ནས་གྲོང་ཁྱིམ་གསེས་གྱི་བྱེ་ཞེས་བྱ་
 བ་ན། བྲམ་ཟེའི་རིགས་ལས་རབ་དུ་བྱུང་བ་དག་སྟོང་མཁས་པ་ཞེས་བྱ་བ་
 དང་། ཡང་དག་རྒྱལ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་འབྱུང་སྟེ། ཇུ་འཕྲུལ་ཆེ་
 བ་མཐུ་ཆེ་བ་དབང་ཆེ་བར་གྲགས་པ། གསལ་བ་དུལ་བ་འཛིགས་པ་མེད་པ་
 མང་དུ་ཐོས་པ་མདོ་སྟེ་འཛིན་པ་འདུལ་བ་འཛིན་པ་མ་མོ་འཛིན་པ་”ཞེས་པ་
 ནས་“དེ་གཉིས་ཀྱང་ཚངས་པར་སྟོན་པ་ཇུ་འཕྲུལ་དང་བཅས་པས་ (མདོ་)
 འདི་རྒྱུས་པར་བྱེད་པའི་བར་དུ་འགྱུར་གྱི།”¹ ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་དེ།

1 ཕད་ཚོས་ ཤོག ༧༠/བ དྲངས་པ།

སར་ཉེ་ལུང་བཟུང་པའི་མདོ་ཚིག་ཏུ་བཞེད་པ་ལ་ཐུག་ལ། འོན་ཀྱང་མདོ་འདི་
ནི་སར་ཉེ་ལུང་བཟུང་ཡིན་པར་ཅུང་སྐྱབ་དཀའ་བར་སྒྲུང་དོ།།

དེས་ན་སྐ་མ་མི་འཇིགས་སྤྱིན་གྱིས་གསུངས་པ་མི་ཉམ་སྒྲོན་གྲུབ་གེས་
རབ་གྱིས་བསྐྱར་བའི་ལོ་རྒྱུས་སུ་སར་ཉེ་ལུང་རབ་ཏུ་བྱུང་བ་དང་། དེས་ན་ལྷན་
དྲའི་མཁན་པོ་མཇེད་པ་སོགས་ཀྱི་སྐོར་རྣམས་མི་བྱུང་བས། ལོ་རྒྱུས་འདི་རྒྱུད་
སངས་རྒྱུས་ཐོད་(བུར་ཀུལ་)པའི་ཟིན་བྱིས་འགའ་ཞིག་ལས་བྱུང་བའི་ལོ་
རྒྱུས་ལ་བརྟེན་པར་སྒྲུང་ལ། སློབ་དཔོན་འདིའི་མཁན་པོ་སྐ་མ་སྐྱ་གཙན་འཇིན་
ཡིན་པར་འདོད་པ་ནི་ལེགས་སྐྱར་དང་ལྡན་ལོ། [གཙོད་སྤྱིན་གྱི་སྐྱད་དམ་རྒྱ་མཚོའི་
མཐའི་སྐྱད་] སོའ་ལས་གཉིས་ཀའི་མཚན་ཏུ་རྒྱུལ་ལྟར་ཞེས་པ་དང་། ལྷན་
རྒྱུལ་ཞེས་མཐུན་པར་བྱུང་བ་ལས་སྐ་མ་སྐྱ་གཙན་འཇིན་དང་སར་ཉེ་ལུང་
པོ་སྐྱ་གཙན་འཇིན་འོད་གཉིས་ཀ་གཙམ་ཏུ་འབྱུང་ཞིང་། སར་ཉེ་བདེ་བྱེད་བཅག་
པོ་དང་། ཀུཀུར་པུ་མཐོ་བཅུན་གྲུབ་ཇི་ཡིན་པའི་གཏམ་རྒྱུད་ནི་གོང་སྐོས་ལྟར་
བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་པའི་རྒྱལ་ཙམ་ལས། སྤྱིར་བཏང་དངོས་འབྲེལ་ཡིན་པར་
ཁས་ལེན་པར་དཀའོ།། དེས་ན་གསང་འདུས་འཕམ་སྐོར་དང་། ལོ་གའི་རྒྱུད་གྱི་
ལོ་རྒྱུས་སོའ་གུང་བསྐྱེད་ན་སློབ་དཔོན་འདི་རྒྱ་གར་གར་ཕྱོད་སུ་གཏོར་པ་ 2

1 'སངས་རྒྱུས་ཐོད་པའི་ཟིན་བྱིས་རྒྱ་དཔེ་འཕྲོ་བ་ཞིག་ན་རབ་ཏུ་བྱུང་བའི་སྐོར་མེད' - དུ་རྒྱུལ་
བཀའ་བབས་དང་། མཁས་ཚོས་དེབ་ 2 ཞོག 159 - 163.
2 དཔེ་འགར་'རྒྱུལ་ལྟར་'ཞེས་བྱུང་ཡང་། དེ་རྒྱུལ་ཡིན་ནམ་མཉུ་རྒྱུལ་ཡིན་དཔྱད་དགོས། གང་
ལྟར་ཡང་དེ་ལོ་འཇིགས་འདི་ནང་ཚན་ཡིན་པར་ངེས།

ཨོཾ་མེ་ཤི་ཤི་ལུ་ལུ་འདུ་འབྲུང་ས། རིགས་བུམ་ཟེ་ཡིན་ལ་བུམ་ཟེ་འི་ལས་བུག་ལ་
 མཁས་པ་སོགས་མཁས་པའི་གྲགས་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ། ལུལ་དེར་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་
 མ་ཆང་འཚོང་མའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་དེས་ཡི་ཤེས་ཀྱི་བདུན་ཅི་ཆང་གི་ཚུལ་དུ་
 སུལ་བས་སློབ་དཔོན་གྱིས་རྣམ་རྟོག་མེད་པར་བཞེས་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་
 ཉིང་ངེ་འཇིན་མང་དུ་སྐྱེས། ཨོཾ་མེ་ཤི་ཤི་ལུ་ལུ་པོ་ཤི་སུ་ཀུམ་དང་། རྒྱལ་པོ་
 མཐོང་ན་དགའ་བའི་བུ་མོ་རོལ་པ་མོ་སྟེ་ཕྱིས་དངོས་གྲུབ་བརྟེན་པའི་མཚན་
 ‘མཉི་སྟོ་གྲོས་བཟང་མོ་’འགའ་ཞིག་དུ་‘མཉི་སྟེལ་བ་བཟང་མོ་’ཞེས་ཀྱང་བྱང་བ་
 དེ་སོགས་ལས་གདམས་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་གསུམ། ཆང་འབྲུང་བ་བུམ་ཟེ་
 རྣམས་ཀྱིས་གོ་བས་དེ་དག་གིས་སློབ་དཔོན་གནས་དབྱུང་བྱེད་ཐབས་སུ་མི་
 དམངས་དང་རྒྱལ་པོ་སོགས་ལ་དྲིལ་བསྐྱབས་བྱས་པ་སོགས་སྤྱིར་བཏང་ལྟར་ལ།
 དེ་ནས་སློབ་དཔོན་རྣུལ་ལྡན་དུ་བྱུང། གནས་བརྟན་²རྟོག་སྟེ་ (ཨ་ཤུ་ལྟོལ་) ཀྱི་
 མཁན་བུ་གནས་བརྟན་ནག་³པོ་ལས་བསྐྱེན་པར་རྫོགས། མཚན་སྐྱ་གཙན་
 འཇིན་བཟང་པོར་བཏབས། དེར་ཐོག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་གཞུང་ལུགས་སྤྱི་དང་རྗེ་
 རྗེ་ཐོག་པའི་ཚུལ་དར་བར་མཛད། རྒྱུད་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་འགྲེལ་པ་སོགས་
 ཀྱང་མཛད། ལྷ་སྐྱབ་རབ་དུ་བྱུང་ནས་མཐར་བཞུག་པ་དེ་ལ་གཏད་དེ་སྦྱོད་པ་
 ལ་གཤེར་སྐབས་ལྷོ་ཕྱོགས་མརྟུ་རྟུ་རྟུ་⁴ཞིང་གི་མཁའ་འགྲོ་མ་མདའ་མཁན་གྱི་བུ་

1 རྟུ་རྟུ་ བཀའ་བབས། མཁས་ ཚོས་དེབ་ 1 ཐོག དེ་ཉིད།
 2 རྟོག་སྟེ་འདི་ཤི་ཤི་ལུ་ལུ་བཙུན་པ་རྟོག་སྟེ་ཡིན་གྱི་དཔལ་པོ་མིན་ནོ། རྟུ་ རྟུ་ རྟུ་ ཚོས་ ༤༥-༤༦
 3 རྟུ་རྟུ་རྟུ་ཚོས་ ཐོག ༤༥ - ༤༦།
 4 ཁཅིག་དུ་‘སྐྱུ་རྟུ་སྤྱིར་ཞིང་གི་ལྷ་མོ་དེ་གཟིགས་’ཟེར་བའང་འདུག

མོས་མདའ་སྐྱོང་བའི་བྱ་བ་ལ་གཟིགས་པས་ཚོས་ཉིད་མངོན་དུ་གྱུར་༥ དེ་
 ཉིད་ཕུག་རྒྱུ་སྤྱོད་དེ་ཡུལ་ལྷ་ཚོགས་སུ་སྤྱོད་ཅིང་མདའ་བཟོ་བའི་བྱ་བ་མཛད་
 པས་སར་ཉ་ལྷོ་མདའ་བརྒྱན་ཞེས་མཚན་དུ་གྲགས་སོ།།

དགོ་འདུན་གྱི་གནས་བརྟན་ཆེན་པོ་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཡིན་པ་ལ་ཆང་
 དང་མདའ་མཁན་གྱི་བུ་མོ་བརྟན་པ་སོགས་མི་འོས་པ་ཆེན་པོར་མཐོང་ནས་
 རྒྱལ་འབངས་ཀྱི་བཟུང་འོང་བ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་མདའ་སྐྱོང་བཞིན་དུ་འདི་
 ལྟར་གསུངས་ཏེ་—

གྱེ་ལགས་ང་ནི་བྲམ་ཟེའི་རྗེ།
 སྤྱིག་མཁན་མོ་དང་ལྷན་ཅིག་སྤྱོད།།
 རིགས་དང་རིགས་མིན་ངས་མ་མཐོང་།།
 དགོ་སྐྱོང་མགོ་བྲེག་བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན།།
 རྒྱུང་མར་བཅས་ཏེ་ལྷན་ཅིག་རྒྱ།།
 ཆགས་དང་ཆགས་བྲལ་དབྱེར་མེད་ཡིན།།
 མི་གཙང་འདིར་ནི་རྣམ་རྟོག་སྣ།།
 འདི་ལྟ་གཞན་གྱིས་མི་ཤེས་སོ། 3 |

1 ཞིང་གི་མཁའ་འགྲོམ་ཟེར་བ་མང་“ཡང་སྐུལ་སྐུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་གདོལ་བའི་ཆ་བྱད་ཅན་
 གྱིས་རྗེས་སུ་བཟུང་། དེ་དང་ལྷན་ཅིག་གནས་པས་” - ཞེས་སོ།། པད་ཚོས་ བོག ༧༣ 144
 2 ཚོས་ཉིད་མངོན་དུ་གྱུར་རྒྱལ་ནི - མདའ་བྲང་པོར་བསྐྱངས་པས་གནད་འབྲིག་པ་ལྟར་སེམས་
 གྱི་ཚོས་ཉིད་བྲང་པོར་བསྐྱངས་པས་ཕུག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པར་གཟིགས་ནས་དེ་ཉིད་མངོན་དུ་མཛད་
 དོ།། བུ་སྟོན་ - འདུས་པ་བཤད་ཐབས་ - བོག 35 - 36།

སྐྱུལ་གདུག་ལྟ་བུའི་སྐྱེ་བ་འདི།།

ཞེས་སོགས་གསུངས་ཏེ་ཀུན་ལ་གདམས་པར་མཛད་དོ།།

གཞུང་དང་ཚེས་འབྲུང་ཕལ་ཆེ་བར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་དོན་
སྐོར་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་བཤད་པ་མང་ཡང་། རྒྱལ་པོ་དོན་དང་བཅུན་མོ་
དོན་གཉིས་ཕྱིས་བལ་ཡུལ་གྱི་ལྷ་བྱིས་པ་མཁས་པ་ཞིག་གིས་བཅུམས་པ་ལ་སློབ་
དཔོན་གྱི་མཚན་གཡར་བ་ཡིན་པར་བུ་སྟོན་རིན་པོ་ཆེས་གསུངས།²

སློབ་དཔོན་འདིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་གྲུབ་ཐོབ་ནི་ལྷ་སྐྱུལ་ལྷ་ཉི་ལྷ་
སོགས་ཡིན་ལ། ལྷ་སྐྱུལ་གྱི་སྐྱེ་བ་འདི་སེམས་སློབ་ཐོས་རིན་ཆེན་ཡང་སར་ཉེ་
མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་ཡིན་པ་སོགས་དཔུང་རྒྱ་མང་ཡང་། མང་བས་འཛིགས་
པས་རེ་ཞིག་འདི་ཙམ་ཞིག་གོ།

སར་ཉེ་ལྷ་སྐྱུལ་གྱི་ལྷ་ཉི་ལྷ་སྐྱུལ་རིམ་དུ་དཔུང་གཞིར་སྤང་བས་
འདིར་ཅུང་ཟད་བཤད་པ་ཡིན་ལ། ལྷ་ཉི་ལྷ་སྐྱུལ་སོགས་པའི་གྲུབ་ཐོབ་གཞན་
རྣམས་ནི་དཔུང་གཞི་དེ་ཙམ་མི་ཆེ་ཞིང་། འབྲུངས་ཡུལ་དང་དུས་རབས་ལ་
ཅུང་ཟད་མི་མཐུན་པ་དང་། ལོ་རྒྱུས་ལ་གདམ་འདྲེས་པ་འགའ་འདུག་ཀྱང་
དེ་དག་རྒྱུད་པ་སོ་སོའི་བཤད་ཚུལ་མི་མཐུན་པ་ཙམ་ལས་བསྟན་བཅོས་གྱི་
ཁངས་གསལ་བར་མི་སྤང་།

1 ཀང་པ་འདི་ནི་དུ་རྒྱུ་ཐའི་གསུང་“བཀའ་བབས་བདུན་ལྟན་གྱི་རྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར་ངོ་མཚར་མྱང་
ཕུང་ལ་བཀོད་འདུག་ཅིང་། ཕྱིས་མཁས་བཅུན་བཟང་པོས་ཀྱང་དེ་ཉིད་ཁངས་སུ་བྱས་འདུག་”
མཁས་ཚེས་༠ - དེབ་ ༡ བོག 159

2 འདུས་པ་བཤད་ཐབས - བོག ༣༤ - ༣༩ དེབ Vol. 9 དི་ལོ་དཔལ་།

བྱུང་ཆེན་ཀྱ་ཀྱ་རིལུའི་རབ་དུ་བྱུང་བའི་མཚན་མེད་ལྷན་ཡིན་པ་དང་།
 དེ་ཡང་བདེ་བྱེད་བདག་པོའི་སྐྱེན་མཚོ་བཅུན་བྱུང་ཆེ་ཡིན་པ་དང་། དེ་སྐྱེས་སྐྱེ་
 བཅུན་འཛིན་ལས་རབ་དུ་བྱུང་ཞིང་བསྐྱེན་པར་ཚོགས་པ་དང་། དེ་ལ་མཁན་
 པོས་དབང་བསྐྱུར་པ་སོགས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཀྱང་། ཤོང་སློབ་སར་ཉེའི་སྐབས་
 སུ་བཤད་པ་ལྟར་ལུང་ཁྲུང་ས་མི་གསལ་ཞིང་དུས་སོགས་ཀྱང་ཅུང་འགྲིག་དགའོ།
 །འདིའི་སྐོར་བུ་སྐྱོན་གྱི་ཡོ་ག་བྱུ་བཟེངས་སུ་གསལ་ལ། སློབ་དཔོན་འདིས་
 མདུམ་ལུའི་རྒྱུ་ལྷ་རྒྱུ་ནས་སྐྱེན་བྱུངས། དེའི་ཚོས་སྐོར་བདུན་དུ་བྲགས་པ་
 ལས་དུག་འདིས་མཛད། འདི་རྣལ་འབྱོར་པ་བརྒྱུད་ཀྱི་ཡབ་དུ་ཡང་བྲགས་སོ།
 ད་ལྟ་བུལ་འགྱུར་ནང་འདིས་མཛད་པའི་གཞུང་བཅུ་དུག་ཙམ་བཞུགས་སོ།

ལུ་ཉི་ལུ

ལུ་ཉི་ལུ་དང་། ལུ་ཨི་ལུ་དང་། ལུ་ཡི་ལུ་དང་། ལུ་ཡི་ལུ་ལ་
 སོགས་པ་བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་བྱིས་ལུ་མི་འབྲ་བ་མང་ཡང་། ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་
 རྣམས་ཞི་དབྱིངས་སུ་བྲིམ་རྗེས་བོད་སྐྱོན་གསུང་རབ་ལ་དག་ཐེར་བྱེད་པོ་རྣམས་
 ལ་ལེ་སྐྱར་སོང་གི་སྐོར་ལ་ཡིད་བརྟན་བཞག་ས་གང་ཡང་མི་འདུག་པས་འདིར་
 ལུ་ཡི་ལུ་སོང་གི་ཚིག་དོན་གང་ཡིན་བཤད་པར་དགའ་ལ། རྒྱ་དཔེ་འགར་ཡང་
 ལུ་ཉི་ལུ་ཞེས་བྱུང་བས་དེ་ནི་ཉ་ལྟོས་འཚོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པར་མངོན་མོ། སློབ་
 དཔོན་འདིའི་འཁྲུངས་ལུལ་རྣམ་ཐར་དུ་སི་རྒྱལ་དང་། དེའི་རྟེན་ཀྱང་རྒྱལ་
 རིགས་ཏེ། རྒྱལ་པོའི་བུ་བར་པ་ཡིན་པར་བཤད་ཀྱང་བུ་སྐྱོན་དང་། ལུ་དག་པ་

1 བུ་སྐྱོན་གསུང་ཆ་བོག་ ༣༧ 2

ཚོས་འབྲུང་། 1 དང་གཞན་ཚོས་འབྲུང་། 2 མང་པོར་སློབ་དཔོན་འདིའི་འབྲུང་ས་ཡུལ་
ཞུ་བྱེད་གྱི་ཡུལ་ཡིན་པ་དང་། 3 དེ་ཡང་ཚོའི་སྐྱེ་ཡིན་པར་བཤད་ལ། རིགས་ཀྱང་
ཡིག་མཁན་གྱི་རིགས་ཡིན་པར་བཤད་དོ། 4

དེ་ཡང་ཞུ་བྱེད་གྱི་བྱུང་པོའི་ཡིག་མཁན་ལྟེ་བ་རོལ་བའི་སྐྱེ་སྐྱེ་
འབྲུང་ས། ‘ཀུན་ཏུ་དགེ་ལེན་མིང་བཏགས། སྤྱི་སྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ་དང་། འཕྲུལ་སྐྱེ་
གཉིས་ཀས་རྗེས་སུ་བཟུང་བས་མཚོག་གི་དངོས་བྱུང་བོ་བོ།

འབྲུང་ས་ཡུལ་སི་ལྷུ་ལར་བཤད་པ་ནི་ཞུ་བྱེད་གྱི་ཡུལ་ལ་འཕྲུལ་གཉིས་
སྐྱེ་སྐྱེ་པ་ལས་ལྷོ་ཡི་ཆ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ལྷུ་ལྷུ་དང་། འཕྲུལ་གྱི་ཆ་དེ་ལ་
སྐྱེ་སྐྱེ་ལ་ཞེས་བྲགས་ལ། སྐྱེ་སྐྱེ་ལ་བྱུང་པོ་ཞི་རྒྱ་སྐྱེ་དབང་བྱེད་པར་བཤད་
ཅིང་། ལྷུ་ལྷུ་ལ་ལྷུ་ལྷུ་སྐྱེ་དབང་བྱེད་པ་སོགས་ཀྱི་བཤད་ཚུལ་ཡོད་ལ།
ལྷུ་ལྷུ་ལ་ཞེས་པ་སི་ལྷུ་ལའི་སྐྱེ་གི་མིང་དུ་ཡང་བྱུང་བས། དེ་གཉིས་གཅིག་ཏུ་
བསམ་ནས་སློབ་དཔོན་འདིའི་འབྲུང་ས་ཡུལ་སི་ལྷུ་ལ་ཡིན་པར་བཤད་དམ་སྐྱེ་
འབྲུང་ས་ཡུལ་མགུ་དང་། བྱུང་པོ་རྒྱ་སྐྱེ་ལའི་ཡིག་མཁན་ཡིན་པ་སོང་ནི་
དུས་ཕྱིས་ཡུལ་དབུས་སུ་ཕེབས་པའི་དུས་ཡིན་སྐྱེ་པ་ཙམ་ཡིན་གྱི། འདིའི་

1 བད་ཚོས་ འོག, བ, 148 དེ་ལྟ།
2 མཁས་བཙུན་, ཚོས དེབ 91 .
3 བད་ཚོས་ འོག བ, 148 དེ་ལྟ།
4 དེ་ཉིད།
5 ཞི་རྒྱ་སྐྱེ་རྒྱུ་ - ལ།
6 རཀུལ. རུ. རི། ༡༢༠ རཀུལ-༡༢༣ །

ལྷན་དང་། སུ་ཞེས་པའི་ཚོས་ལྷན་གཉིས་ཀ་ནང་པའི་ཇིས་འབྲང་དུ་འདུག་
ཅིང་། ད་ལྟ་ཡང་དེ་དག་གི་ཉམས་ལེན་ཚོ་ག་སོགས་རིག་བྱེད་པ་ལས་ཐ་དང་
འང་ནང་པའི་ལྷགས་གཞུང་དང་ཤིན་དུ་ཐག་ཉེ་བར་མཐོང་རྒྱུ་ཡོད།

མདོར་ན་གོང་སློམ་ལྟར་རྒྱ་ཐོབ་པའི་ལོ་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་གར་ལ་སློན་ནས་
ད་བར་མ་ཉམས་པར་ཡོད་པའི་ལྷགས་ལྷགས་དང་འབྲེལ་བའི་ཚོས་སློར་ཐམས་
ཅད་སློན་ནང་པ་ཡིན་པ་ལ་བྱིས་སུ་ནང་བསྟན་མདོ་སྤྱོད་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ངེས་
འབྲུང་བྱང་སེམས་སྣང་ཉིད་ཀྱི་ལྷ་བའི་གནད་རྣམས་ཉམས་པ་དང་། རྒྱད་པར་
རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གནས་ལྷགས་ལ་བརྟེན་པའི་རྒྱ་འབྲས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་སྤོ་རྣམས་
ལ་གོ་བ་ལེན་མ་ཐུབ་སྐབས། རྟག་པ་ལ་རྒྱ་འབྲས་ཀྱི་འགལ་འདུ་ཡོད་པ་མ་
མཐོང་བར་སྣང་ཉིད་ལ་རྒྱ་འབྲས་ཀྱི་འགལ་འདུ་ཡོད་པར་མཐོང་ནས། བདག་
དང་། དབང་ཕུག་སོགས་ཁས་ལེན་པ་ཅམ་ལས་འདི་དག་བྱི་པ་དངོས་ཡིན་
པར་མི་སྣང་། ཡིན་ནའང་དེ་དག་ལ་དཀོན་མཚོག་གསུམ་དང་། རྒྱབས་
འགྲོའི་སློར་མེད་པས་བྱི་པ་ཡིན་ཅམ་ནི་ཁས་ལེན་དགོས། འདི་དག་གི་ཉམས་
ལེན་སློར་གྱི་ནང་དུ་བྱི་རྩལ་པའི་སློན་གྱི་ཞི་བ་པའི་སློར་གྱི་རྒྱུ་རྩེད་པ་འགལ་
ཡོད་པར་སྣང་ཡང་། དེ་རྣམས་བདེ་མཚོག་འཁོར་ལོ་དང་། དབྱེས་པ་
རྩི་རྩེད་ལྷན་དང་ཆ་འབྲེལ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་དེ་དག་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་འབྲེ་
ལ། རུབ་ཞེས་པ་དྲག་པོའི་རྒྱུ་དང་ལྷ་རྣམས་ཀྱང་ཕལ་ཆེར་གཤིན་ཇི་གཤེད་
གྱི་རྒྱུ་སོགས་དང་འབྲེལ། རྒྱུ་འདི་དག་སློན་ཐོག་མ་ནས་ནང་པ་དང་སོ་
སོ་ཡིན་མིན་དབྱེ་དཀའ། མདོ་སྤྱོད་ཀྱི་སྣང་ཉིད་དང་སྣང་ཇི་སོགས་ཀྱིས་

བྱིས་ན་ནི་ལེགས་པར་བྱེད་ཐུབ། སྐྱུ་ལུས་དང་འོད་གསལ་གྱི་སྐོར་སོགས་ནི་
 རྒྱུད་ལས་མངོན་གསལ་དུ་མི་བྱུང་ཞིང་མན་ངག་ལས་རྟོགས་དགོས་པའི་གནད་
 རྣམས་ཏེ། བྱི་རྒྱུད་དང་། དེའི་ཉམས་སྲུ་ལེན་པ་རྣམས་ལ་ལྟ་མོ་ནས་ཡོད་
 པར་མི་སྤང་ངོ་། །དེས་ན་སྤྲོད་པུ་ནི་ “རྣམ་” ཞེས་པའི་ཐོག་མའི་སློབ་དཔོན་
 རོ།།

འདིར་གྲུབ་ཐོབ་གཞན་རྣམས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ལའང་གོང་སློམ་ལྟར་དུས་
 རབས་དང་བརྒྱུད་པ་སོགས་ལ་དོགས་གཙུག་ཅུང་ཟད་བྱེད་དགོས་ཀྱང་ཡིག་
 རྩོམས་ཉ་ཅང་མང་བར་འགྱུར་བས་འཇིགས་པས་མ་བྱིས་ལ། ས་སྐྱ་བཀའ་
 འབུམ་མཉམས་རྒྱ་དཔེ་དང་འབྲེལ་ཆེ་ལ། བཙུག་བསྟན་ཀྱང་ཉུང་བས་འདིའི་
 སྐོར་དེ་དག་དང་མཐུན་པར་ཁས་ལེན་པ་ལེགས།

གྲུབ་པ་ཐོབ་ཚུལ་— རྒྱལ་པོ་ཨིན་ལྷ་ལྷོ་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་བུ་
 རྣམས་ནི་དང་པོ་ནས་རྒྱུད་སྤོན་པའི་གང་ཟག་ཡིན་པས། གང་ཟག་རང་
 འགའ་བ་དང་མི་མཚུངས་ལ། ལམ་གོང་མ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་རྒྱུའི་ཆ་རྒྱུན་གང་ཡང་
 མེད་པ་ཞིག་གིས་རྩོ་རྩེ་ཐོག་པ་ལ་ཞུགས་ནས། ལམ་གོང་མ་ལོ་འགའ་ལ་
 མངོན་དུ་བྱས་པ་དང་། མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ནི་རྒྱུ་དང་འབྲས་བུའི་
 རྟོན་འབྲེལ་དང་མཐུན་པར་མི་སྤང་ངོ་། །དེས་ན་འོད་སྤངས་ཆེན་པོ་དང་

1 'नाथपन्थ' के चौरासी सिद्धों का उत्तराधिकारी सिद्ध हो जाने पर फिर कबीर से सम्बन्ध
 जोड़ने में दिक्कत नहीं रहती-राहुल. पु. नि. पृ० १३५ ।
 नाथपन्थ चौरासी सिद्धों से ही निकलता है । - राहुल. पु. नि. पृ० १३२ ।
 2 ས་སྐྱ་བཀའ་འབུམ་ 'པ' པར་གཟིགས།

ཀུན་ཤེས་ཀྱི་རྒྱ་ལ་སོགས་པའི་ཉམ་ཐོས་ཆེན་པོ་རྣམས་ལྟར། ཡང་དག་པའི་
 དོན་དོ་སྤྲོད་བྱས་པ་ཙམ་དང་། ལྷོམ་ཙམ་ལས་དོན་མངོན་དུ་སྐྱུར་པ་དང་།
 ཁ་ཅིག་གིས་ལྷོ་བ་འགའ་དང་། ཁ་ཅིག་གི་ལོ་འགའ་ལས་འབྲས་བུ་ཐོབ་པ་
 སོགས་ནི་གདུལ་བུ་སྤྲོད་དུ་རུང་མ་རུང་གི་ཁྱད་པར་ཡིན་ལ། འདོད་ཆགས་
 ལམ་བྱིས་ལ་སོགས་པ་ནི་ཕར་སྤྱོད་ཐོབ་པ་ལའང་ཡོད་མོད། ཤིང་སྤྱིན་ཤིང་
 ལས་སྐྱེས་ནས་ཤིང་ཉིད་ཟ་ཞིང་ཤིང་གི་སྤོག་འགག་པར་བྱས་ཏེ་རང་གི་སྤོག་
 འཚོ་བ་ལྷ་བུའི་ཉམ་ཐོངས་ལམ་འབྱེད་དང་། དེ་ཡང་འབྲས་དུས་ཀྱི་ཐོབ་བུ་
 ལམ་གྱི་ཚུལ་དུ་ཉམས་སུ་ལེན་པ་ནི་གསང་ལྡན་གྱི་ཁྱད་ཚོས་དང་། ལང་
 ཟག་རང་འགའ་བ་ཞིག་གིས་དེ་ལྟར་ཉམས་སུ་བྱངས་ནས་འབྲས་བུ་སྐྱུར་དུ་ཐོབ་
 པ་དང་། དེ་ཡང་ངེས་འབྱུང་རྗེ་ཙམ་གྲགས་དྲག་པ་དེ་ཙམ་ཐོབ་ཆེན་གྱི་རིགས་
 ཙམ་ལ་སྤྱིང་རྗེ་གྲགས་དྲག་པ་འོང་ལ། སྤྱིང་རྗེ་རྗེ་ཙམ་གྲགས་དྲག་པ་དེ་ཙམ་
 སེམས་བསྐྱེད་གྲགས་དྲག་ཅིང་ས་ལམ་གྱི་བསྐྱོད་པ་སྐྱུར་བ་དང་འབྲས་བུ་ཐོབ་
 པ་སྐྱུར་ལ། སྤྱིང་རྗེ་དང་སེམས་བསྐྱེད་ཀྱི་ལུས་སྒོལ་ཤིན་ཏུ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་
 རྣམས་ལ་ནི་དོ་རྗེ་ཐོབ་པ་ལྷ་བུའི་ལམ་འདི། ལུས་སྒོལ་དང་ལོ་ཁྲབ་ཤིན་ཏུ་
 བཟང་པོ་ཙམ་གྱི་དཔའ་བོ་ལ་དག་པོའི་དམག་དཔུང་གི་དབུས་སུ་གནམ་ལྷགས་
 ཀྱི་རལ་གྱི་ལག་དུ་ཐོབ་པ་ལྟར། ཉམ་ཐོངས་པའི་དག་ཚོགས་མ་ལུས་པ་
 འཛོམས་པར་བྱས་ཏེ། འཛོགས་པ་མ་ལུས་པ་ལས་རང་གཞན་གཉིས་ཀ་སྐྱོལ་
 བར་བྱེད་པ་ཞིག་འོང་ངེས་སོ།།

དེ་ཡང་མར་ཕྱིན་ཐེག་པ་ལ་ལྷ་སྤྱོད་གཉིས་ཟུང་འབྲེལ་དུ་མེད་ན་ཚོར་
 སྤྱོད་ལ་སོར་པའི་ལམ་གོང་མར་བསྐྱོད་པ་དཀའ་བའི་ཚུལ་གྱི་དུ་གསལ་ཡང་།
 ལྷ་སྤྱོད་པ་ཐོབ་པའི་སྐྱེས་མཚོག་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་ལ་དཔག་ན། དབང་པོའི་
 སྤྱོད་ལྷལ་དུ་གྱུར་པའི་སྐྱེས་བུ་དམ་པའི་ཡོན་ཏན་ངོ་མཚར་ཅན་ལ་དད་པ་དང་།
 རང་གི་དངོས་འབྲེལ་ལུས་འདིས་སྤྱོད་གྱུར་གྱི་སྐྱབ་བསྐྱེད་ལ་དམིཊ་པའི་ཡིད་
 བྱུང་བཅོས་མིན་དང་། རྒྱལ་སྤྱོད་ཀྱི་བྱ་བ་ངན་པ་ལས་ཡིད་བྱུང་བ་དང་། རྒྱ་
 འབྲུལ་དང་ཡ་མཚན་གྱི་སྤྱོད་པ་ལ་བཅོས་མིན་གྱི་དད་པ་དང་འདུན་པ་སོགས་
 གང་ཡང་རུང་བའི་སེམས་རེ་ལ་བརྟེན་ནས་བསྐྱོད་ཆོགས་ཀྱི་ལམ་ལ་ཞུགས་པས་
 ལྷ་སྤྱོད་པ་ཐོབ་པ་མང་ལ། ལྷ་མའི་བཀའ་བཞིན་སྐྱབ་པའི་དམ་བཅའ་ནི་ཐམས་
 ཅད་ལ་ཐུན་མོང་པར་སྤང་ངོ་།། དཔེར་ན་གུར་ལྷུ་ལྷ་སྤྱོད་ (ཤོག་༥) ལྷ་
 མའི་རུས་པ་དང་བཅུད་ལེན་གྱི་གདམས་པ་སོགས་ལ་ཞུགས་པར་དད་པས་སྐྱབ་པ་
 ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུར་ལྷུ་ལྷ་སྤྱོད་ (ཤོག་༣༣) ངན་སོང་གི་སྐྱབ་བསྐྱེད་
 ལ་དམིགས་པས་ཡིད་བྱུང་བས་སྐྱབ་པ་ལ་ཞུགས་པ་དང་། གུར་ལྷུ་ལྷ་སྤྱོད་
 (ཤོག་༣༡) ལྷ་སྤྱོད་རང་གི་ཚུང་མ་དང་བྲལ་བའི་སྐྱབ་བསྐྱེད་ཅམ་ཞིག་ལས་
 དམིགས་པ་སྤོས་ཏེ་སྐྱབ་པ་ལ་ཞུ་པ་དང་། གུར་ལྷུ་སྤྱོད་ (ཤོག་༣༥) ལྷ་སྤྱོད་
 ལ་སྐྱབ་ཐོབ་ཅཔ་ལྷུ་ (པཅ་ལྷུ་) དང་མ་མཇལ་གོང་ངེས་འབྱུང་སོར་དང་ལྷ་

1 འདི་དག་ནི་བསྐྱེད་པ་མང་པོའི་ལམ་དང་རྒྱ་ཚོགས་རྣམས་སྐྱ་མའི་བཀའ་སྐྱབ་པའི་ཉམས་ལེན་སྤྱོད་
 ཅིག་མ་རེས་བསྐྱོད་པར་གསུང་རབ་ལས་མང་དུ་བྱུང་བ་རྣམས་སྐྱབ་འབྲས་སུ་མངོན་པའི་དཔེ་ཡང་
 ཡིན་ཅོ།།

བའི་གོ་བ་གང་ཡང་ཡོད་པར་མི་སྒྲུང་ལ། མ་ཟད་འདིས་མུ་སྐྱེགས་ཞི་བ་པའི་
 རྒྱུད་ལས་བྱུང་བའི་བདག་དང་། ཞི་བ་པ་སྐྱེད་པར་ཕྱུག་སྒྲོས་མེད་ཀྱི་དངོས་པོ་
 སོགས་ལ་དམིགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་ཉམས་སུ་ལེན་པའི་ཚུལ་གསལ་ཞིང་།
 དེ་བཞིན་དུ་གུར་ཉམས་ལྷ་བུ་ (ཤོག་༥༥) རང་ཉིད་ཅེ་བའི་སྐྱེག་བསྐྱེད་དང་།
 བྱུང་བ་མནལ་མའི་བརྒྱས་པ་ལས་ཡིད་བྱུང་བ་ཙམ་ཞིག་རྒྱ་མཚན་དུ་བྱས་ཏེ་
 གདམས་པ་ཉམས་སུ་སྒྲུང་ས་པས་བྱབ་པ་ཐོབ་པ་དང་། གུར་བྱུང་ལྷ་བུ་ (ཤོག་
 ༥༦) ལྷ་བུ་དུར་ཚོད་ཀྱི་རྒྱུད་གི་འོ་སྐད་ལ་དམིགས་པའི་འཛིགས་པ་ཉིད་ལ་
 བརྟེན་ནས་སྐྱབ་པ་ལ་ལྷགས་པ་དང་། མཚོ་གི་ལྷ་བུ་ (ཨེ་ཀེ་ཤོག་ ༡༠༥) ལྷ་
 བུ་མ་མས་དུར་ཚོད་དུ་བསྐྱར་བ་དང་། རང་ཉིད་ཀྱིས་བྱུང་བ་གང་ཡང་སྐྱབ་མི་
 རུས་པ་ཙམ་ལ་དམིགས་པའི་ཡིད་བྱུང་ཙམ་ལ་བརྟེན་ནས་སྐྱབ་པ་ལ་ལྷགས་པ་
 དང་། གུར་བྱུང་ལྷ་བུ་ (ཤོག་༡༣༡) ལྷ་བུ་ལྷག་སྐྱེད་སྐྱེག་བསྐྱེད་ཙམ་ལ་ཡིད་
 བྱུང་བས་བྱབ་པ་ཐོབ་ཚུལ་སོགས་ཤིན་དུ་མང་ལ། འདི་དག་ལ་དཔག་ན་ཡིད་
 བྱུང་དང་། འཛིགས་པ་དང་། དད་པ་གསུམ་གྲགས་དྲག་ལ་རྒྱན་བརྟན་པ་
 ཞིག་སེམས་རྒྱུད་དང་འདྲིས་ངེས་སུ་ཡོད་ན་སྐར་ཐར་པ་མུང་འདས་དང་སྒྲོང་
 ཉིད་ཀྱི་ལྷ་བ་སོར་ལ་གོ་བ་གང་ཡང་མེད་ཅུང་། གཞན་གྱི་བསམ་པ་དང་བག་
 ལ་ཉལ་གཟེང་སྐབ་པའི་སྐྱ་མ་སྒྲིང་རྗེ་ཅན་ཞིག་དང་མཇལ་ཆེ་རྗེ་རྗེ་ཐེག་པའི་
 ལམ་གྱིས་ཆེ་བཅེག་ལ་མཚོག་གི་དངོས་བྱབ་ཐོབ་པར་ངེས་སོ།།

དེ་ཡང་ཚུལ་འདི་ནི་ཐབས་མཁས་ལ་སྐྱབས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པའི་
 སངས་རྒྱུས་ཀྱི་དགོངས་པ་རྒྱུད་སྐྱེར་གསུངས་པ་རྣམས་གཟུར་གནས་དད་ཅན་

གྱི་སློབ་མ་ཞིག་ལ་དོ་རྗེ་ཐོག་པའི་ཡོན་ཏན་བཅུ་བྱུང་ལྡན་པའི་སློབ་མ་ཞིག་གིས་
རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཡིན་གྱི། སློབ་མ་སོམ་ཉི་ཅན་དང་། སློབ་
མ་འོལ་ཚོད་ཅན་སོགས་ཀྱིས་བཤད་སྐྱབ་ལས་རྒྱུད་ནས་བཤད་པའི་བྱུ་བ་འབྲས་
ཡོད་པར་ནི་མི་སེམས་སོ།། རྒྱལ་གསུམ་སྒྲོན་མེ་ལས་ཀྱང་—

དོན་གཅིག་ན་ཡང་མ་ཚོངས་དང་།།

ཐབས་མང་དཀའ་བ་མེད་པ་དང་།།

དབང་པོ་རྣམ་པོའི་རྒྱུ་བྱས་ན།།

ལྷགས་ཀྱི་ཐོག་པ་ཁྱད་པར་འཕགས།། 1

ཞེས་ཐོབ་བྱ་དོ་རྗེ་སེམས་པའི་གོ་འཕང་ལ་ཁྱད་པར་མེད་ཀྱང་། ཐབས་མང་
བ་དང་། འདོད་ཡོན་ལམ་འབྱུང་ལ་སོགས་པའི་ཁྱད་པར་གྱིས་ལམ་ཉམས་སུ་
ལེན་པ་ཡོད་པས་མི་དཀའ་བ་དང་། གདུལ་བྱ་ཤིན་ཏུ་དབང་རྣམ་ཡིན་པས་
ཉོན་མོངས་དང་གཉེན་པོ་སྤོང་པ་ལ་མཁས་པས། ལྷགས་ཀྱི་ཐོག་པ་འདི་ཕར་
ཕྱིན་ཐོག་པ་ལས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པར་གསུངས་པའང་། ཅད་པ་ལྷ་བུའི་
གདུལ་བྱ་དང་། ལྷན་པ་ལྷ་བུའི་སློབ་མ་གཉིས་ཚོགས་ལ་རྒྱལ་ལས་དེ། དེ་
ཡང་གདུལ་བུའི་ཁྱད་ཚོས་ནི་ཅི་གསུངས་བཀའ་བཞིན་སྐྱབ་པ་ལ་ལྷུ་མ་པ་མེད་པ་

1 རྒྱལ་ཤོག་ ༡༦/རྒྱུད་ཚུ། བོད་གཞུང་རྣམས་སུ་ལུང་འདི་བྲངས་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ལ། རྗེ་
བསྟན་དཀར་ཆག་དུ་འདི་ཉིད་ “སློབ་དཔོན་མཐོ་བཙུན་གྱི་ཕྱི་རྒྱལ་ལས་མཛད་པ” ཡིན་པར་
གསུངས། — ཤོག་ ༥ ༣༧/ན། འདི་རྗེ་བསྟན་ཤོག་ ༩ — ༣༩ རྒྱུད་ རུ་ པར་བཞུགས།
རྒྱ་གར་གྱི་དཔེ་འགྲེལ་ལས་གཞུང་འདི་ སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་དོ་རྗེས་མཛད་པར་བཤད་འདུག །
— ཤོག་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱི་ཚུལ་དེ་ བོད་རྒྱལ་དམངས་ཀྱི་སྤྱི་བཞི། ཤོག་ ༣༦།

དང་། དེ་ལས་སྤྱིར་མི་བརྗོད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་སྒྲུང་ངོ་། ། རྒྱལ་ཐོབ་
 རྣམས་ཀྱི་གསང་ལྡན་གྱི་ཉམས་ལེན་ནི་ཚུལ་འདི་ལ་བརྟེན་པ་མང་ལ། ལྷ་
 བང་དང་རྒྱུད་བང་ལས་རྒྱལ་པ་རི་ལྷར་ཐོབ་པའི་ཚུལ་ནི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་ཐབས་སོ་
 སོའི་སྤྱི་རྒྱུད་སོགས་སུ་གསལ་བ་ལྷར་ཡིན་ཞིང་། རྒྱལ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུ་ཅཱ་བཞི་
 པོ་ལས་རྒྱུད་སྤེལ་མ་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་དང་། རྗོལ་མ་སོགས་ལས་རྒྱལ་པ་
 ཐོབ་པ་འགའ་འདུག་ཀྱང་། བཙོ་བོར་གསང་བདེ་གཉིས་དང་། ཀྱི་རྗོར་
 བདན་བཞི་སོགས་དང་། རོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་སྐོར་དང་གཤིན་རྗེ་གཤེད་ཀྱི་
 སྐོར་ལ་བརྟེན་ནས་རྒྱལ་པ་ཐོབ་པ་ཁོ་ནར་སྒྲུང་ཞིང་། དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་དང་།
 སྤར་བའི་སྐོར་དང་། རྒྱལ་པ་བཀའ་བརྒྱུད་ལ་སོགས་པའི་ལམ་ལ་བརྟེན་པའི་
 རྒྱལ་ཐོབ་རྣམས་མཚན་གཞན་གྱིས་ཡོད་སྤིད་ཀྱང་། དངོས་སུ་ནི་བརྒྱུད་ཅུ་ཅཱ་
 བཞི་པོ་འདིར་དེ་འདྲ་ཡོད་པར་མི་མངོན་ནོ། །

ལྷ་རྒྱལ་པ་— རྒྱལ་པ་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས་རྒྱལ་པ་ཐོབ་པ་ཙམ་ལ་ལྷ་བ་
 རྟེན་པ་མི་དགོས་ཤིང་། མཚོག་གི་དངོས་རྒྱལ་ཐོབ་པ་ལ་ནི་ལྷ་བ་ཙམ་མ་ཟད་
 བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་ཟག་མེད་ཀྱི་ཡི་ཤེས་རོ་གཅིག་ཏུ་བསྐྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་
 ཡང་ཐིམ་གསུམ་གྱི་རིམ་པ་ལས་ཐམས་ཅད་སྤོང་པའི་སྤྱང་བ་གར་ཆེ་ཆོས་ཅན་
 དེ་ཉིད་ཀྱི་སྤོང་དུ་སྤོང་ཉིད་ཀྱི་ལྷ་བའི་གནད་ངོ་སྤྱད་པའི་སྐོར་ནས་ཚོས་སྐྱེའི་དེ་
 ཉིད་སྐོར་པ་དང་། དེ་ཡང་རྒྱལ་པ་པོའི་སེམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་ལྷ་བུ་གཞི་ལྷོག་
 རྣམས་ཚོས་སྐྱེར་སྐོར་པ་ལྷ་བུ་མ་ཡིན་པར་ཐམས་ཅད་རོ་གཅིག་པའི་ཚོས་སྐྱེ་རང་
 ལྷོག་པ་དགོས་པས། འདིར་སྤོང་ཉིད་ཀྱི་ལྷ་བ་ནི་རྒྱལ་པ་ལམ་གྱི་སྤོག་ལྷ་བུར་

གནས་ལ། དེ་ལྟ་ནའང་སྐབས་ལུགས་ཀྱི་སྤོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བུ་སྟེ། བདེ་སྤོང་
 ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་ཟུང་འཇུག་གི་ཡ་རྒྱལ་སྤོང་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བུ་ལ་ནི་ཐལ་རང་གི་ལྟ་
 བས་ཀྱི་ཕ་མ་ནི་མི་བཞིན་དོ།། ཐལ་རང་གི་ལྟ་བུའི་སྤོང་ནས་བདེ་སྤོང་སྤྱོད་
 རྒྱལ་སྤོང་ནི་ལྷ་སྐྱུ་བ་ཡབ་སྐུ་སྤྱོད་དང་། མིའི་དབང་པོ་གྲུ་པ་²དང་། བད་
 དཀར་³སྐབས་ཀྱི་གཞུང་ལས་ཤིན་ཏུ་གསལ་ལ། སར་ཉེའི་དོ་ཉ་མཛོད་ཅེས་
 བུ་བའི་སྐྱེ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྣལ་དུ་མཚོན་པ་དོན་དམ་པའི་ཡི་གེ་⁴ཞེས་བུ་བའ་
 སྐབས་པ་དོན་འོ་སྤོང་རྣམས་སུའང་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡི་གེས་དང་། དེའི་ཡུལ་
 དོན་དམ་པའི་སྤོང་རྣམས་དབུ་མ་རབ་ཏུ་མི་གནས་པའི་རྒྱལ་ཁོ་ན་ར་གསལ་ལོ།
 །དེ་བཞིན་དུ་པར་བཟླས་མཛོད་པའི་གསང་བ་སྐྱུ་བ་པ་དང་། སྤོང་བ་དཔོན་ཡན་
 ལག་མེད་པའི་རྩོམ་མཛོད་པའི་ཐབས་ཤེས་སྐྱུ་བ་པ་སྐབས་སྐྱུ་བ་པ་སྤོང་བརྒྱན་
 ལ་སྐབས་པའི་སྐྱུ་བ་ཐོབ་ཀྱི་གཞུང་ཀུན་ལས་ཀྱང་རབ་ཏུ་མི་གནས་པའི་དབུ་མའི་

1 རིམ་ལྡན་སྤོང་བཞུགས་ཀྱི་དེ། བུང་རྒྱལ་སྐུ་སྤོང་འབྲེལ་ - སྤོང་ཉིད། འཕགས་
 ལྷའི་སྤོང་བཞུགས་སྤོང་མཁའ་བདག་ཕྱིན་ཀྱིས་བཟླས་པའི་རིམ་ལ། མངོན་པར་བུང་རྒྱལ་པའི་རིམ་ལ
 - སྤོང་ཉིད། ལྷའི་འབྲེལ་སྤོང་གསལ་ - སྤོང་བཞུགས་ - ལྷུང་ 'ཉ' །
 2 རང་གི་ལྟ་བུ་མདོར་བཞུགས་ - སྤོང་.....།
 3 དྲི་མེད་འོད། སྤོང་བཞུགས་ལྷུང་ 'ཐ' །
 4 'དོ་ཉ་མཛོད' ཅེས་བུ་བའི་སྤོང་པའི་སྤོང་དང་། 'མི་ཟད་པའི་གཉེར་མཛོད་མན་ངག་གི་སྐྱེ' ཞེས་
 བུ་བའི་གཉེས་ལ་རྒྱལ་པོ་དོ་ཉ་དང་། བཅུན་མོ་དོ་ཉ་ར་གསལ། སྤོང་བཞུགས་དཀར་ཆག་ཏུ
 (འདི) "བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོས་མཛོད་མ་མཛོད་ཐེ་ཚོམ་གྱི་གཞིའོ།" གསུངས། ཤོག 322/བ།
 ཚོས་རྩོམ་པའི་གཉེས་ཕྱིས་བལ་ཡུལ་གྱི་མཁས་པ་ཞིག་གིས་བྲིས་པར་བཞིན། བུའི་འདུས་
 པ་བཤད་ཐབས་ - ཤོག 32 - 36 དེབ Vol. No 9. དི་ལོ།

ལྷ་བ་ཁོ་ན་བཤད་པར་སྒྲུང་ངོ་།།

སྒྲོབ་དཔོན་དོག་ཅེ་བའི་‘བསམ་གྱིས་མི་བྱུང་པའི་རིམ་པའི་མན་ངག་དུ་

ལྷ་བ་དབུ་སེམས་གང་ཡིན་མི་གསལ་ཞིང་། འུ་རྒྱུ་པུ་སེམས་ཙམ་པ་ཡིན་པ་

ཡོངས་སུ་བྲགས་པ་ལྟར་ལ། ཞི་འཚོ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་སྒྲོབ་པའི་དབུ་མ་རང་

སྐྱུང་པ་ཡིན་པར་དེའི་གཞུང་ཉིད་དུ་གསལ། མི་རྒྱུ་པུ་སྒྲོབ་པ་ལ་མ་ཐེབས་

གོང་གི་མཚན་དཔལ་ལྡན་ཚོས་སྒྲོང་ཡིན་པ་དང་། དེ་རྒྱུ་པུ་དུའི་མཁན་པོ་

མཇེད་པ་སོགས་དངོས་འབྲེལ་ཡིན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ན་དེ་དབུ་མ་བཞི་བརྒྱ་

པའི་དགོངས་པ་སེམས་ཙམ་དུ་བཀྲལ་བའི་འབྲེལ་བྱེད་དེ་ཡིན་པར་ངེས་ལ།

དེ་ལྟར་ན་དེ་སེམས་ཙམ་གྱི་ལྷ་བ་ལ་གནས་པ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་དགོས་གིང་།

མི་རྒྱུ་པུ་མན་ངག་ནག་པོ་པའི་ངོར་བརྩམས་པའི་‘ལམ་འབྲས་དོ་རྗེ་ཚིག་རྒྱང་’

དང་། དེ་ལས་བྱུང་བའི་སྐྱུང་པའི་མན་ངག་ཐམས་ཅད་ལས་བདེན་གཉིས་

ཟུང་འཇུག་གི་ལྷ་བ་དང་། དེའི་གནད་རྣམས་གདན་ལ་འབེབས་པའི་གཞིའམ་

ཚོས་ཅན་ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ལ་འདོད་པས་སྒྲོབ་དཔོན་འདི་སེམས་ཙམ་གྱི་ལྷ་

བ་མཐར་ཐུག་དང་བདེ་སྒྲོང་སྐྱར་དེ་ཡི་ཤེས་ཆེན་པོའམ་ཕུག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མངོན་

དུ་མཇེད་པར་གསལ་ལོ།། དེ་ལྟར་ན་ཐུགས་སྒྲ་མེད་ཀྱི་སྐྱུང་ལ་ལྷ་བ་དབུ་

1 མཚོ་སྐྱེས་དོ་རྗེའི་གསང་བ་བྱུང་པ། ཡན་ལག་མེད་པའི་དོ་རྗེས་མཇེད་པ་ཐམས་ཤེས་བྱུང་པ།
 ཞི་རྒྱུ་པུ་ཡི་ཤེས་བྱུང་པ། ལྟ་སྒྲིག་པའི་ - གཉིས་མེད་བྱུང་པ། སྐྱེག་པའི་དོ་རྗེའི་དངོས་
 པོ་གསལ་བྱུང་། དུ་རི་རྒྱུ་པུ་གསང་ཆེན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མན་ངག་ (བྱུང་པ)། རྣལ་འབྱོར་
 མ་ཅི་དོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བྱུང་པ། དོ་བོ་ཉི་ཤུ་ཀའི་ - ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་བྱུང་སྒྲེ། འདི་རྣམས་ལ་
 བྱུང་པ་སྒྲེ་བརྒྱད་ཟེམ། སྒྲེ་བརྒྱན་དཀར་ བོག 356/3 - བ།

སེམས་གཉིས་ཀ་ཡོད་པ་དང་། ལྷ་བ་དེ་གཉིས་ཀ་རྗེས་རིམ་སྒྲུབ་པའི་རྟེན་

དུ་རྒྱུ་དང་མ་སྟུམ། སློབ་སློབ་དཔོན་ཞི་འཚོས་ —

“སེམས་ཅམ་ལ་ནི་བརྟེན་ནས་སུ།

ཕྱི་རོལ་དངོས་མེད་ཤེས་པར་བྱ།

ཚུལ་འདིར་བརྟེན་ནས་དེ་ལས་ཀྱང་།

ཤིན་དུ་བདག་མེད་ཤེས་པར་བྱ།།”

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གོ་རིམ་བཞིན་དང་པོ་སེམས་ཅམ་གྱི་ལྷ་བ་
བསྒྲུབས་ནས་ཕྱིས་དབུ་མ་པའི་ལྷ་བ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡང་སྲིད་
མོད། སྲུབ་ཐོབ་རང་གི་གཞུང་དུ་ནི་རིམ་པ་དེ་ལྟར་མི་གསལ་ལོ།

སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་དོ་རྗེས་ཨམ་ལྷན་ཏེ་ཡི་གསུང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་
པོ་ཆེའི་འཕྲིང་བར་མདོ་སྤེལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོར་བཞེད་པ་དང་། དེ་ཡང་ཐེག་
ཆེན་ལ་དབང་པོ་རབ་འབྲིང་ཐ་གསུམ་ལས་མདོ་སྤེལ་ཐ་མ་དང་། དེར་འཁོར་
གསུམ་མི་དམིཌ་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ལྷ་ལ་ཀུན་དུ་སྲོད་ཅིང་།
འབྲས་བུ་ལ་རེ་བ་མེད་པར་སེམས་ཅན་ཡོངས་སུ་སྤྲིན་པར་བྱེད་པ་ནི་ལྷ་བ་²འོ།
ཞེས་གསུངས་ནས་མདོ་སྤེལ་པའི་ལྷ་བ་ཡང་སྲུ་གྱི་ལམ་གྱི་དམིགས་པར་རྒྱུང་
ཚུལ་བཤད་འདུག་ཅིང་། སློབ་དཔོན་གྱི་ཚུབ་བཟང་པོས་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་སྒྲིང་

1 དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་ (3 རྩེ་བཞུན་ས།)
2 དེ་ཉིད་རིན་འཕྲིང་ - ཤོག 130 རྩེ་བཞུན་རྒྱུད་ - མི་

སོ་གུན་ལས་བདུས་ཀྱི་བཤད་སྐྱུར་དུ་མདོ་སྡེ་པ་ལ་བཟང་སྲོད་ལ་སོཾ་པ་སྐྱེ་ཁི་
 བཞིན་ཁས་ལེན་པའི་གྲུབ་མཐའ་སྡེ་བར་གསུང་འདུག་པས། མདོ་སྡེ་པའི་ལྷ་
 བ་གཞིར་བཟུང་སྡེ་བསྐྱེད་རྗོགས་སྡོམ་པ་ཡོད་སྲིད་ལ། དེ་ལྷ་ནའང་རྗོ་བཟང་
 གྲགས་པ་སོགས་སྐྱེད་ཀྱི་གནད་དོན་ལ་མཁས་པའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་རྣམས་ནི་
 དེ་ལྷ་ར་མི་བཞེད་པར་མངོན་ནོ། །འོན་ཀྱང་མདོ་སྡེ་པ་རྟོག་བཏགས་ཙམ་ལ་
 ཡོད་པ་དང་། ཚད་གྲུབ་ཀྱི་རྣམ་གཞག་བྱེད་ཤེས་པས་བསྡོམ་བྱའི་ལྷ་སྐྱེ་གཞུག་ལ་
 ཡས་ཁང་སོཾ་དང་། རྐྱུང་དབུ་མར་ཞུགས་གནས་ཐིམ་གསུམ་བྱས་པ་ལས་
 གཞིའི་སྡོང་པ་འཆར་བའི་ཆེ་ཆོས་ཙན་དེ་དག་གི་སྡོང་དུ་སྡོང་བ་ལ་བདེན་ཞེན་
 འགོག་རྣམས་པ་ལ་དགོངས་ནས་དེ་ཉིད་སྐྱབས་ཀྱི་ཐེག་པའི་སྡོང་རྐྱུང་དུ་བཤད་པ་
 ཡིན་ནམ་སྐྱེ་སྡེ། དཔུང་གཞིར་སྡོང་། མཁས་གྲུབ་འཇམ་དབྱེད་ས་བཞེད་
 པས་གྲུབ་མཐའི་རང་འགྲུལ་དུ་འདི་སྡོར་ཅུང་ཟད་བཞོད་འདུག་ཀྱང་། ཐག་
 གཅོད་གསལ་པོར་མཇེད་མི་འདུག་ཅིང་། སྡོབ་དཔོན་ཡེ་ཤེས་གྲགས་པའི་དེ་
 ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འཇུག་པ་སོགས་སྐྱེད་མདོ་སྡེ་པ་ལ་ཐེག་ཆེན་ཡོད་པ་དང་། དེ་
 སྐྱབས་ལམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་སྡོམ་པའི་སྡོང་རྐྱུང་དུ་བཞེད་པར་གསལ་བས། མདོ་སྡེ་
 པ་ཡིན་པར་གྱུར་པའི་སྐྱབས་ལམ་གྱི་ཡེ་ཤེས་སྡོམ་པ་པོ་ཞིག་ཁས་ལེན་དགོས་ལ།
 དེ་ལྷ་ན་སྐུ་ལམ་གྱི་ཆེད་དུ་བྱ་བའི་གདུལ་བྱ་ལ་མདོ་སྡེ་པ་ཡོད་པ་དང་། བདེ་
 སྡོང་གི་ཡ་གྲུལ་སྡོང་པ་ལ་མདོ་སྡེ་པའི་ལྷ་བ་ཡོད་པར་སྡོང་བས་དཔུང་དགོས།

1 ཡེ་སྡོང་བཤད་སྐྱུར་ - རྗོ་བསྐྱེད་དབུ་མ 'ཚ' ། ཉི་ཉོང་ Vol. 95. བོག ༩༠ - ༩༧
 2 གྲུབ་མཐའ་ཆེན་ རང་ 'ག' བོག ༩/བ ༥/ན སྐྱེ་སྡེ་ཐ ༥པས།

བྱུ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞི་འཛིན་མདོ་རྩེ་པའི་ལྷ་བ་ལ་གནས་པ་ནི་
 ཡོད་པར་མི་མངོན་ལ། གོང་སློམ་མདོ་རྩེ་པ་སྐབས་ལམ་ལ་འཇུག་རུང་དུ་
 བཤད་པའི་གཞུང་རྣམས་ཀྱི་དགོངས་པ་སྐབས་ལམ་ལ་འཇུག་པའི་གོ་རིམ་ཅམ་
 ཞིག་གི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཡིན་པར་ཁས་ལེན་ན་ནི་མཁས་པའི་གཞུང་ཐམས་ཅད་
 འགལ་མེད་དུ་གོ་བྱུ་ཡོད་པ་ཞིག་ཀྱང་འདུག་པས། མཁས་པའི་བཞེད་པ་དགག་
 པ་ལས་དགོངས་པ་འཚོལ་བ་ལེགས།

བྱུ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ — ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཙོ་བརྒྱད་
 པའི་མགོ་ཅམ་ནས་རིགས་སར་གྱི་མཁས་པ་མང་པོ་ཞིག་བྱོན། ཚན་རིག་གི་
 ཚ་རྒྱུན་མང་པོ་ཞིག་ལ་བརྟེན་ནས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཕྱོད་གཞུང་བོའི་ལོ་རྒྱུས་
 སོགས་ཀྱི་སློར་ལ་སླར་ཞིབ་འཇུག་བྱས་ཏེ་དངོས་འབྲེལ་གནད་དོན་མང་པོ་ཞིག་
 ལ་གསལ་བཤད་བྱེད་ཐུབ་པའང་ཡོད། རིགས་གསར་གྱིས་ཕྱོད་གཞུང་སྒྲུབ་ས་
 སོགས་ཀྱི་སློར་དང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་གཙུག་ལག་གི་འབྲུང་ཁུངས་
 སོགས་ཀྱི་སློར་ལ་ཡང་གནད་དོན་གསལ་བཤད་མང་དུ་བྱས་འདུག་ཀྱང་། མང་
 ཚེ་བ་ཞིག་ནི་འོལ་ཚོད་དང་། གཏམ་རྒྱུད་སོགས་ལའང་བརྟེན་པ་དང་། རྒྱལ་
 པོ་དང་ས་ཆའི་མིང་འདྲ་བ་རྣམས་དུས་ཕྱིའི་འབྲུལ་གཞིར་སོང་བའང་མང་།
 དེ་མཚུངས་ནང་པའི་བྱུ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཀྱང་དེང་སང་ཡོངས་
 བྲགས་ལྟར་ན་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཙོ་བརྒྱད་པ་ནས་བཅུ་གཉིས་པའི་བར་ཁོ་ནར་འདོད་
 ནོ། །འདི་དག་གི་འབྲུལ་གཞི་ནི་བྱུ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་སློབ་ཀྱི་འབྲེལ་བ་དང་།

1. रहल. पु. नि. पृ. १९९० द्र० । बौ. सिद्ध धर्मपाद, पृ. ४५, आ. पा. च. ।

རོ་མཚར་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ཏེ། དཔེར་ན་བརྒྱ་ཕྱུག་དང་པོ་གཉིས་པའི་ནང་
 གི་སྐྱུ་སྐྱུབ་དང་། ལྷ་འཕྲུལ་མོགས་བརྒྱ་ཕྱུག་བཅུ་པའི་ནང་གི་མ་རྩོམ་ཆེ་གདན་
 པའི་ཚོགས་འཁོར་ལ་ཐེབས་པ་ལྟ་བུའོ།། གང་ལྟར་ཡང་གྲུ་རྒྱུད་དང་། གསུང་
 རབ་ཀྱི་རྒྱུད་པ་མ་འོངས་པར་བརྩིས་པ་རྣམས་ཚད་མར་བཟུང་ནས་ལྷ་རྒྱུན་གྱི་
 རྒྱལ་པོ་ཨིན་ལྷོ་རྒྱུད་དང་པོ་ནི་གོང་སློམ་ལྟར་སངས་རྒྱུས་ཞལ་བཞུགས་དུས་ཀྱི་གྲུབ་
 ཐོབ་ཡིན་ལ། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ནང་དུ་མི་བརྩིས་གིང་། དེ་དང་
 རྒྱལ་པོ་མི་སྲུགས་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་མཉེནོ་གྲོས་བཟང་མོ་(མཉེན་ལ་པ་བཟང་
 མོ་)འམ་སྐུ་ལས་གྲུར་པའི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡང་བརྒྱུད་ཅུ་ཅུ་བཞིར་མི་བརྩིས་སོ།།
 སྤྱིར་ལྷ་རྒྱུན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་“ཨིན་ལྷོ་རྒྱུད་”ཞེས་པའི་མཚན་ཅན་དག་ཅམ་གྲུང་བ་
 ལས་བརྒྱུད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ནང་ཚན་བཞི་བཅུ་ཞེ་གཉིས་པ་ཨིན་ལྷོ་རྒྱུད་ནི་ཨིན་ལྷོ་རྒྱུད་
 བར་པར་གྲགས་པ་ལཱ་ལྷོ་ལྷོ་རྒྱུད་ལྟར་དེའོ།།

དེ་ནས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ཐོག་མ་ནི་གྲུབ་ཐོབ་ཆེན་པོ་འམ་
 སར་ཏུ་ཉིད་ཡིན་ལ། སར་ཏུ་སྐྱུ་སྐྱུབ་ཀྱི་སྐྱེ་མ་ཡིན་པ་ལ་རྩོམ་ཐེ་ཆེ་ཐེག་པའི་སློབ་
 དཔོན་སྐུ་ལ་ཡང་དོར་པ་མེད་པས། སར་ཏུའི་དུས་ནི་སྤྱི་ལོ་མགོ་མ་རྒྱུགས་གོང་
 བརྒྱ་ཕྱུག་དང་པོ་ཅམ་དང་། སངས་རྒྱུས་ལྷ་ངན་ལས་འདས་ཏེ་ལོ་སུམ་བརྒྱ་
 ཅམ་གྱི་མཇུག་ཡིན་ལ། སར་ཏུ་ལོ་མང་པོ་ལྷ་ངན་ལས་མ་འདས་པར་བཞུགས་
 པ་སོགས་ནི་ཐུན་མོང་མིན་པའི་བཤད་རྒྱལ་དང་འབྲེལ་བས་འདིར་མི་སློབ་ཏེ།།

སར་ཏུའི་སློབ་མ་སྐྱུ་སྐྱུབ་དང་གྲུབ་ཆེན་གསལ་ལྟ་སོར་ཡིན་ཞིང་།
 དེའི་སློབ་མ་ལྷོ་རྒྱུད་ཡིན་པ་དང་སྐྱུ་སྐྱུབ་ཀྱི་སློབ་མ་ལྷ་འཕྲུལ་འམ་ཀར་ཆ་རིལ་ཡིན་

ཞིང་། འདི་དག་གི་དུས་ནི་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྱུག་དང་པོ་ནས་གསུམ་པའི་བར་ཡིན་
 བོ། མི་རྒྱུ་དང་ཕྱོགས་སྒང་དབྱིག་གཉེན་སོགས་སྐྱེ་ཆེའི་སྣོད་སྣོད་ཙམ་ལས་
 དུས་མཉམ་དང་། ཆོས་གྲགས་ཀྱིས་ལྡན་ལམ་གྱུ་ཆེན་པོ་ལྟེན་པོ་(ཐལ་ལྡན་
)མན་ངག་ལ་བརྟེན་པར་བཤད་པས་ཡི་བརྒྱ་ཕྱུག་བདུན་པ་དང་། ཞི་འཚོ་
 བརྒྱ་ཕྱུག་བརྒྱད་པར་བཞུགས་ཡོད་པ་ཡོངས་གྲགས་ལྟར་ལ། རྣམ་པོ་སོགས་
 བརྒྱ་ཕྱུག་དགུ་པ་བཅུ་པའི་ནང་གྱུར་པ་དང་། འུ་ལྡོམ་དང་རྣམ་པོ་ལྡོམ་ཐོ་བོ་ལྟེན་པའི་
 སྐྱེ་མ་ཡིན་པ་དང་། དེར་མ་ཟད་མར་སྣོན་ཆོས་ཀྱི་སྒོ་གྲོས་རྣམ་པའི་དངོས་སྒོ་བ་
 ཡིན་པ་དང་། དེའི་དུས་རབས་བརྒྱ་ཕྱུག་བཅུ་པ་བཅུ་གཅིག་པ་ཡིན་པས་བརྒྱ་
 ཕྱུག་བཅུ་པའི་མཇུག་ཙམ་ལ་ཡང་རྣམ་པོ་བཞུགས་ཡོད་པར་མངོན་ལ། འདི་
 རི་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ཐ་མའི་དུས་ཡིན་པར་སྣང་ངོ་།།

དུས་རབས་བཅུ་པ་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་
 རྣམ་ཐར་འདི་མི་ཉལ་ལོ་རྒྱ་བས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར། དེ་དག་གི་སྒྲུབ་ཐབས་
 སོགས་དང་། དོན་ལ་སོགས་པ་འགའ་ཡང་ལོ་རྒྱ་བ་འདིས་བསྒྲུར་བར་སྣང་
 བས། གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཀྱི་ཐ་མ་བརྒྱ་ཕྱུག་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་
 ཁོ་རྣམ་ངེས་སོ། །དེ་ལྟར་ན་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་དུས་རབས་ཕྱི་ལོ་མ་ཚུགས་
 ལོང་གི་བརྒྱ་ཕྱུག་དང་པོ་ནས་ཕྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྱུག་བཅུ་གཅིག་པའི་བར་ངེས་པར་གྲུབ་
 བོ།

1 བད་ཚོས་ཤོག ༦༧ ན 133. དི་སྒྲིག
 2 བཀ་ཆེན་དཔལ་ལྷན་ཡི་ཤེས་རི་ལམ།

གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཐར་— གྲུབ་པ་ཐོབ་པའི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་

ཐར་འདི་མི་ཉག་ལོ་རྩེ་བ་སློན་གྲུབ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་གར་གྱི་སྐད་ནས་བོད་སྐད་
དུ་བསྐྱར་བར་གསལ་བར་བཤད་འདུག་ཀྱང་། འདི་དང་པོ་ནས་རྒྱ་སྐད་དུ་
བྲིས་ཡོད་པ་ཞིག་ཕྱིས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱར་བ་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། སྐ་མ་ཨལལ
དེ་ལྟ་བུ་ཞེས་བྲུ་བ་རྒྱ་གར་ཅམ་པ་རྣམས་ཀྱི་སྐད་ཀྱི་སློབ་དཔོན་ཞིག་གིས་དང་པོར་
རྒྱ་སྐད་དུ་ཞལ་ནས་གསུངས། དེ་ཉིད་ལོ་རྩེ་བས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱར་བར་སྐད་སྟེ།
རྣམ་ཐར་བྲིས་པའི་ཐོག་མར་ལོ་རྩེ་བས་སྐ་མ་ཨལལ་གྱི་སྟེ་མི་འཇིང་སྟེ་ལའི་
དཔལ་ལ་མཚོད་བཅོད་མཚོད་ནས་རྣམ་ཐར་འདི་རང་གིས་འབྲི་བར་དམ་
བཅའ་གསལ་བར་བཀོད་འདུག་པས་སོ། །

རྣམ་ཐར་འདི་རྒྱ་གར་གྱི་སྐད་གང་ལས་བསྐྱར་གསལ་ཁ་མི་འདུག་ཅིང་།
བོད་བསྐྱར་སྐར་སྟེ་དཔར་གཉིས་ཀར་རྒྱ་གར་སྐད་དུ་ཞེས་བཞུགས་བྱུང་དུ་བཀོད་
ཡོད་མེད་མ་དཔེ་ཆ་དང་འཕྲོ་མོང་སོང་བས་མ་ཐོབ་ལ། སོག་པོ་སྐལ་བཟང་གིས་
སྐར་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཐར་དང་། གཞན་ཡང་དེ་ལི་སློག་དཔར་ལས་སྐར་
བའི་མ་དཔེ་རྣམས་ཀྱི་བཞུགས་བྱུང་དུ་རྒྱ་གར་སྐད་བཀོད་མི་འདུག་ཀྱང་། དེ་
ཀིང་མ་དཔེ་ལས་སློག་དཔར་དུ་བསྐྱེན་པ་ཉི་ཉོང་མ་དཔེར། ‘རྒྱ་གར་སྐད་དུ་
ཅད་རྩེ་སི་དྲི་སི་རྩེ་པུ་བྲི་བྲི་’ཞེས་བཀོད་འདུག་པས། དེ་ལས་དཔག་ན་གཞུང་འདི་
དང་པོར་ལེགས་སྐྱར་དུ་གསུངས་པར་གསལ་ལོ། ། རྣམ་ཐར་འདི་སློབ་དཔོན་
དཔལ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་མཚོད་པའི་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པའི་དོན་འབྲེལ་ལམ་དོན་

1 རྣམ་ཐར་ཐོག་ ༣༤༩ བཞིགས།

བསྐྱུལ་ཡིན་པ་དང་། དེས་མཇེད་པའི་རྣམ་ཐར་ཞིག་ཡོད་པར་བཤད་ཀྱང་། །
རྣམ་ཐོའི་བསྐྱེད་འགྱུར་ད་ལྟ་བུའུགས་པ་འདིའི་ནང་ན་མི་འདུག་པས་དཔུང་
དགོས།

གཞུང་མཇེད་པ་པོ་— རྣམ་ཐར་འདི་སྤྱི་མ་ཨ་མུལ་དང་རྩ་བྱིས་མཇེད་པ་
ཡིན་པར་ལོ་རྒྱ་བས་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་བཞོན་པ་ཙམ་ལས་དེའི་ལོ་རྒྱུས་
སོགས་ཚོས་འགྲུང་དང་བརྒྱུད་པའི་རྣམ་ཐར་སོགས་གང་ནའང་གསལ་ཁ་ཞིག་
མ་ཐོབ་པས་འདིར་དེ་ཙམ་ཞིག་གོ།

ལོ་རྒྱ་བ་འདི་སྤྱི་ལོ་བརྒྱ་ཕྲག་བཅུ་གཅིག་པའི་འགོ་ཙམ་ལ་ཁམས་མི་
ཉག་དུ་སྐྱེ་འབྱུང་ས། རིམ་གྱིས་མཁས་པའི་ཡོན་ཏན་ལ་སྐྱུང་ས་པ་མཇེད་དེ་རྒྱ་
གར་ལ་ཐེབས། ལོ་རྒྱ་སོགས་ལེགས་པར་སྐྱུང་ས། དུས་འཁོར་རྩ་བའི་རྒྱུད་
གསུམ་སོགས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱུར། པརྒྱུ་ལྟ་ལྟ་ལྟ་བུ་བོད་དུ་གདམ་བྱངས་པ་
སོགས་བསྐྱེད་པ་ལ་བྱ་བ་མང་དུ་མཇེད་དོ། ། འདི་དང་(རྩ་མ་)རྩ་མི་སངས་
རྒྱུས་བྲགས་གཉིས་གཅིག་གམ་ཐ་དད་ཡིན་དཔུང་དགོས་ཏེ། རྩ་མ་སངས་
རྒྱུས་བྲགས་ཀྱང་ཁམས་མི་ཉག་དུ་འབྱུང་ས་ལ། འདི་མཁས་ཤིང་བྱུང་བ་ཐོབ་
པ་ཡིན་པ་དང་། རྒྱ་གར་ལ་བྱོན་ཏེ་དོ་ཇི་གདམ་དུ་སྟོན་པའི་རྒྱལ་ཚབ་མཇེད་
པར་བྲགས་ཏེ། ཚད་ལྡན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི་མ་མཐོང་དོ།

“སྐབ་ཚེན་བརྒྱུད་རྩ་རྩ་བཞིའི་སོ་སོའི་རྣམ་ཐར་རྒྱུས་པ་སྐོབ་དཔོན་དཔལ་བོ་འོད་གསལ་གྱིས་
བརྒྱུགས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ལས་ཤིས་ཤིང་།” ལྷུ་ཀྱན་.....།

དཔར་གསར་བསྐྱུན་—གོང་སློབ་རྣམ་ཐར་འདི་དེ་ལི་སོགས་ནས་

དཔར་གསར་དུ་བསྐྱུན་པ་མང་ཡང་གིས་སློབ་དང་དཔར་སློབ་ཤིན་དུ་མང་ཞིང་
གོ་བ་གསལ་པོ་སླར་མི་སྲུབ་པ་དང་། གཞན་ཡང་རྣམ་ཐར་འདི། དོན་
གཉེས་ཅན་རྣམས་ལ་མཁོ་གནད་ཆེ་བ་དང་། བྱད་པར་སྤྱི་ལོ་ ༡༩༧༥ ལོར་
ལྷ་རྩེ་སྤྱི་འོ་བོད་ཀྱི་མ་ཐོ་སློབ་ནས་མཁས་པའི་ཚོགས་འདུ་ཞིག་གོ་བསྐྱེད་སྤྱི་
སྐབས་ཚོགས་འདུ་འི་བསོ་གཞི་ལའང་“ནང་པའི་སྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ལྷ་སྤྱོད་”
“ཞེས་བཞག་དགོས་བྱུང་སྐབས་ རྣམ་ཐར་འདི་ཉིན་སྐད་དུ་བསྐྱུར་དགོས་པ་
བྱུང་ཞིང་། དེ་ཉིད་ཚོགས་འདུས་སུ་འགྲེམས་སྤེལ་ཞུས་ཟིན་ཀྱང་། སློབ་སྤྱི་
ཟམ་གདོང་མཚོག་དང་། གཞན་ཡང་མཁས་པ་མང་པོས་སླར་རྣམ་ཐར་འདི་
བོད་ཉིན་གན་སྐྱར་དང་། སྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་ངོས་འཛིན་འདྲ་དཔར་བཅས་
ལྷན་ཅིག་དེ་བ་གཟུགས་སུ་བཞོད་སྲུབ་ན་ལེ་ཆ་ཡོད་ཚུལ་དང་། སློབ་སྲུབ་ནས་
ཀྱང་འདི་འོ་སློབ་རོགས་རམ་གནད་དགོས་བཀའ་སྤྲུལ་གནང་བ་ལྟར་འདིར་རྣམ་
ཐར་དེ་བ་གཟུགས་སུ་བཞོད་སྐབས་མ་དཔེ་ལའང་ཞུ་དག་ཤིན་དུ་མང་བ་བྱེད་
དགོས་བྱུང་།

ཞུ་དག— སྲུབ་ཐོབ་རྣམ་ཐར་འདི་སླར་ཐང་སྤེ་དགེ་སོགས་བསྐྱུན་
འགྱུར་ནང་སྤྱད་‘ལུ’པར་བཞུགས་ལ། སྤྱིས་སྐྱུབ་ཐབས་ཀུན་བདུས་དང་།
རྣམ་ཐར་རྒྱང་པའི་ཡང་དཔར་མང་ཅམ་འདུག་ལ། དེ་དག་གོ་བསྐྱུར་བྱས་ཆེ་
དག་མ་དག་སླ་ཚོགས་ཤིག་འདུག་པ་རྣམས་ལས། དག་པ་གང་ཡིན་རང་
འཇགས་སུ་བཞག་ནས་མ་དག་པ་དང་སྤེ་ཚོམ་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་ཕྱར་བརྗོད་

དང་བཅས་ཏེ། གཤམ་དུ་བྱུར་མཚན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད། བོང་གི་ཚིག་
 མཚམས་དང་གཤམ་གྱི་མཚན་གཉིས་མི་ནོར་བའི་ཆེད་དུ་ཨང་རྟགས་བཀོད་
 ཡོད། གཞུང་རང་གི་ཡི་གེ་སོགས་གང་གི་སྐོར་ལ་བྱུར་བཅོལ་དགོས་རིགས་ལ་
 དེ་ཉིད་ཀྱི་མགོར་ ཨང་། བཀོད་ཡོད་ན་གཤམ་དུ་བྱུར་བཅོལ་གྱི་དང་པོར་ཨང་
 ༡/ རང་བཀོད་པས་དེ་བཞིན་ངེས་དགོས།

བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་བོད་ཡིག་ལ་རྒྱ་སྐད་ཀྱི་མིང་གྲིས་ཡོད་པ་རྣམས་ལ་
 མ་དག་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་། དཔེར་ན་དེམ་ལུ་ཞེས་པ་ལ་དེབ་མ་ལ་ཞེས་པ་
 དང་། རྒྱལ་ཁོང་ཞེས་པ་ལ་རམ་ལའི་ཞེས་པ་དང་། རྒྱལ་ལུ་ཞེས་པ་ལ་ར་
 རྒྱལ་ལ་ ཞེས་པ་དང་། མི་ཏུ་ཡོག་ཞེས་པ་ལ་མི་ཏུ་ཡོག་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ།། འདི་
 དག་གི་རིགས་ལ་ལེགས་སྦྱར་དང་ཡུལ་སྐད་སོགས་ཀྱི་རྒྱ་དཔེ་དང་ཚིག་མཛོད་
 གང་ཐོབ་ལ་གཏུགས་ནས་དག་པར་བྱེད་ཁུལ་ཡང་། ད་ལྟོར་མ་དག་པ་མང་
 ཅམ་ལུས་འདུག དཔེར་ན་ལུ་ཉི་ལུ་ཞེས་པ་ལ་ལུ་ཉི་པ་ཞེས་པ་དང་། གུ་ལུ་ལུ་
 ཞེས་པ་ལ་གུ་ལུ་ལུ་ལུ་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་སྟེ། འདིར་རྒྱ་སྐད་གང་ཡིན་ལ་བར་ཚིག་
 མི་དགོས་ཤིང་། བར་ཚིག་བརྒྱབ་ན་ལེགས་སྦྱར་ལ་མཚམས་སྦྱོར་ཉམས་འགྲོ་
 བས་སོ། །གཞན་ཡང་གྲུབ་ཐོབ་པལ་ཆེ་བའི་མཚན་གྱི་མཐར་ཕྱེས་ཞེས་པ་ཡོད་
 ལ། དེ་ནི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ ཕྱད་ཞེས་པའི་སྐྱ་བུར་ཆག་པའོ།། སྦྱིར་པ་དང་ཕྱ་
 གཉིས་ཀ་གོ་རིམ་བཞིན་ཕྱལ་དང་ཕྱད་ཞེས་པའི་བྱུར་ཆག་ཡིན་ལ། དང་པོ་ནི་
 ཀུ་ལུ་ཞེས་པའི་པ་དང་། གཉིས་པ་ནི་སར་ཉལ་ཞེས་པའི་ཕྱ་ལྟ་བུའོ། །དེ་
 ལས་དང་པོ་ནི་སྤངས་པའམ་སྤྱོད་བའི་དོན་ཅན་ཏེ། འོད་སྤངས་ཞེས་པ་ལྟ་

བྱ་དང་། གཉིས་པ་ནི་ཞབས་ཞེས་པའི་དོན་ཅན་ཏེ། དཔེར་ན་སར་ཉེ་
 ཞབས་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ། །ཚིག་འདི་དག་ནི་ད་ལྟ་ཡང་རྒྱ་གར་གྱི་ཡ་རབས་
 རྣམས་ཉིན་རེ་བཞིན་ (བྱེད་སྡོད་) བེད་སྡོད་བྱེད་བཞིན་ཡོད། དེས་ན་
 བྱུང་བོའ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་མཐུན་ཡོད་པའི་པུ་ཞེས་པ་དེ་ནི་ཞབས་ཞེས་པའི་དོན་
 ཅན་ཡིན་པས་རིང་པོའི་མཐུན་ཅན་པུ་ཁོ་ན་ཡིན་གྱི་པ་ཞེས་མ་དག་པའོ།
 །དེ་ཡང་བྱུང་ཆེན་བེད་སྡོད་ཡི་མཚན་སྤྲུལ་ཞེས་པའི་པ་ནི་མིང་མཐུན་པ་ཡིན་
 གྱི་ཞབས་ཞེས་པའི་པ་མ་ཡིན་པས་རིང་པོ་གྲིས་པ་ནོར་མོ། །དེས་ན་མ་ནོར་བར་
 དོན་གོ་དགོས་སོ།།

ཚིག་དང་ཤད་ — བོད་དཔེ་གསར་རྩེང་མང་པོར་ཡིག་བར་གྱི་ཚིག་

ལ་གྲིས་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་མེད་ཀྱང་། ཚིག་གི་གཙོད་མཚམས་སུ་ཤད་ལ་སོགས་
 པ་ཡིག་ཉགས་ཤིན་ཏུ་མང་ཞིང་། རིན་ཆེན་སྤྲུང་ཤད་ལ་ནང་གསེས་གཉིས་སུ་
 བྱས་ཏེ་ཤད་ཆ་ཚང་དང་སྤྱེད་ཤད་བྱེད་ཚུལ་ཡང་རྗེ་དགེ་འདུན་བྱུང་གྱི་འདུལ་
 བའི་སྤྱིང་འབུམ་སོགས་ལ་གསལ་བར་གྲིས་འདུག་པས། དང་པོ་ནི། ལྟ་བུ་
 དང་། གཉིས་པ་ནི། ། ལྟ་བུའོ། །དེ་ལ་འདིར་སྤྱེད་ཤད་དེ་ལ་ཅུང་
 ཟད་གཟུགས་བསྐྱར་ཏེ་དེང་སང་ལེགས་སྐྱར་ཉིན་སྐད་ཨིན་སྐད་སོགས་ལ་
 ཡོངས་སུ་གྲུར་པ་ལྟར་གྱི་ཡིག་ཉགས་‘ཀྱ་མ་’ཞེས་པ་དེ་བཞིན་འདིར་བོད་སྐད་
 ལའང་བྱེད་སྡོད་བྱས་ཡོད་པས། སློབ་གསར་སློབ་མིག་ཅན་ཀུན་ལ་དགའ་པོ་
 ཡོང་ངེས་ཀྱང་། བསྟན་འཛིན་མེས་པོའི་ཁུར་འཆང་བ་རྣམས་ལ་དབྱིངས་
 འགལ་མེད་པར་ལྷ་རྒྱ་ཡིན། འདིའི་སྐོར་ཚད་མ་རིགས་པ་ལ་འཇུག་པའི་སློབ་

འབྲེལ་པ་ལེགས་སྐྱར་ནས་བོད་སྐད་དུ་བསྐྱར་བ་དེའི་གྲིང་བཞིན་དུ་རྒྱས་པར་
བྲིས་ཟིན་པས་དེར་གཟིགས་དགོས།

ཟུར་བཀོལ་— འདིར་རྣམ་ཐར་རྒྱས་པའི་ནང་གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་འདྲ་
པར་[དཔར་འདི་དག་རྗེ་རྗེ་གདན་གྱི་རྒྱལ་བ་རིན་པོ་ཆེའི་གཟིམས་ཚུང་ནང་གི་
གསེར་ཐང་ལ་འདྲ་དཔར་ལེན་པ་ཡིན་]དང་། དེ་དག་སོ་སོའི་གཤམ་དུ་གྲུབ་
ཐོབ་གྱི་ངོ་སློན་རྣམས་ཉིན་སྐད་དུ་བྲིས་ཡོད། བོད་སྐད་དུ་བྲིས་ན་ཡིག་ཚོགས་
མང་བས་འཛིགས་ནས་མ་བྲིས།

མཚན་རིམ་— གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་མཚན་རྒྱ་བོད་ཤན་སྐྱར་དང་།
དེ་དག་གི་ཐད་ཀར་སོ་སོའི་རིགས་དང་། ཡུལ་སོགས་བཀོད་པའི་མཚན་གྱི་གོ་
རིམ་ཡང་སྐྱབ་ཐབས་ཀུན་བདུས་གྱི་གཤམ་ན་འཁོད་པ་ལ་ཞུ་དག་ཅུང་ཟད་བྱས།
ཕལྱིཏ་རྒྱལ་ལགས་གྱི་ཕུར་དུ་ཉི་ཤུ་ལྷན་ལེ་ས་ཆེན་གོང་མའི་བཀའ་འབུམ་
ལ་བཞེན་པའི་གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཡུལ་སོགས་བཀོད་འདུག་པ་དང་
བསྐྱར་དེ། ཟུར་མཚན་ཅུང་ཟད་བཅས་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་ཟུར་བཀོལ་གྱི་
ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད། འདི་སྐོར་ས་ཆེན་བསོད་ནམས་ཚེ་མོའི་རྒྱུད་སྤེལ་སྤྱི་རྣམ་
ལ་ཡང་ཞུ་གདུགས་ཅུང་ཟད་བྱས་པ་ཡིན།

འབྲི་ཡིག་— གྲུབ་ཐོབ་རྣམས་ཀྱི་བྲིས་སྐྱོང་ས་འཛིན་སྐབས་དཀའ་
ངལ་ཤིན་དུ་ཆེ་བ་བྱུང་སྐབས། ཐབས་ཤེས་མང་ཙམ་བྱས་ཤིང་གྲུབ་ཐོབ་
རྣམས་ཀྱི་འབྲི་ཡིག་དུ་རྒྱ་ཐའི་གསུང་རྒྱན་ཞིག་འབྱོར་ལ་དེ་ལ་བཞེན་ནས་གྲུབ་
ཐོབ་སོ་སོའི་ངོ་སློན་བྲིས་སྐྱོང་ཐོག་ནས་བྱེད་སྐབ་ཙམ་བྱུང་ལ། དཀའ་

ངལ་དེར་བརྟེན་འབྲི་ཡིག་ཆ་ཚང་བ་ཞིག་ལྟ་དག་ནོར་བཙེས་སོགས་ལེགས་པར་
བྱས་ཏེ། ཉིན་པོར་གན་སྐྱར་གྱི་ཚུལ་དུ་རྣམ་ཐར་གྱི་གཤམ་དུ་བྱུར་བའོལ་གཉིས་
པའི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད།

འབྲི་ཡིག་འདིའི་མ་དཔེ་ལག་པས་བྲིས་པའི་ཡི་གེ་ཚུགས་ཚུང་ལ་འདུག་
སྐབས་མ་དག་པ་ཤིན་དུ་མང་བས་མ་དག་པ་རྣམས་དྲོགས་གཙོད་ཀྱི་གཞིར་
མཁོ་ངེས་བསམ་ནས་གཤམ་དུ་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཞག་ཡོད་པས་དཔུང་པ་
ཡོད་ན་དེར་གཟིགས་དགོས་སོ།།

དཔལ་ལྷན་བདེ་ཆེན་མཚོག་གི་དབྱིངས་དང་རོ་གཅིག་ཉག་དུ་ཞི་བྱུར་ཀྱང་།།
སྤོང་ཉིད་སྤོང་རྗེའི་སྐྱུ་འཕུལ་དུ་བ་སྤྲིན་བུལ་མཁའ་ལ་འཇའ་ཚོན་བཞིན།།
འཆར་བའི་མོད་ལ་ཐུར་རྗེའི་ཚུ་ཆར་གདུལ་བུའི་རིུ་གྱི་ནོར་འཇིན་ལས།།
བྱུང་འཇུག་མཚོག་གི་ལོ་དོག་འབྲས་བུ་སྤྲིན་མཁས་སླ་མ་ལྷར་བདུད་ནས།།

ཞི་ལྷག་བཅུ་ཕྱག་བརྒྱད་དེ་བྱུབ་པའི་གཙོ།།
རྣམས་ཀྱི་རྣམ་ཐར་དབང་པོའི་སྐྱེད་ཆལ་དུ།།
དྲི་བསྐྱུང་འབུལ་བའི་སྤོང་གཞིའི་སྤོང་བ་སྤེལ།།
ལྷ་དབང་གཞོན་ལྷའི་ཚོགས་རྣམས་དབྱེས་དབྱེས་མཛོད།།

ཉ་གང་བྱུབ་པའི་ཟླ་བ་ལ་འབྲན་བཞི་ལྷག་བཅུ་ཡི་ཟླ་བ་ཡི།།
སྤྲིན་བུལ་བསིལ་སྤྲིན་ཆ་གས་ཅུང་ཟད་གཏུག་རྒྱན་དང་འགྲོུ་པ་ལས།།
དབང་ཕྱུག་ཅེ་གསུམ་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་ཀྱི་གྲི་ལྷེ་བསྐྱེ་གནས་སུ།།
རིག་གཞུང་བསྐྱབ་པའི་ཚུ་རྒྱན་ཅུང་ཟད་འབྱིལ་ལས་ལེུ་ཐོན་པསྤོ་འདི།།

ཉི་མ་མིག་དང་ལྷན་པ་གང་གི་སྐྱེའི།།

ཞབས་བྱུང་ཚེ་ཡི་མན་གཤེལ་ལས་བརྟན་ཅིང་།།

ཕྱོགས་མཐའ་ལ་འགྲན་འགྲོ་བའི་དགྲིལ་འཁོར་འདི།།

སྐྱ་གསུམ་ལྷན་འགྲུབ་ས་ལ་དབང་ཕྱིར་བཟོས།།

ཤུགས་སྐྱོ། །།

སངས་རྒྱལ་འདས་ལོ་ ༣༥༣༣ ལ་སློབ་སེམས་པས་སོ།།

ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༩ ལྷི ༤ ཚེ ༣ ལ།



१. लुहिपा

ये सिद्ध लुहिपा हैं। ये श्याम वर्ण के और शरीर से दुबले हैं। सामने मछली की आँतों का ढेर रखा हुआ है। उनमें से एक मछली लेकर खा रहे हैं। हलकी-सी जटा रखे हुए और उसकी शिखा बाँधे हुए हैं। छाती में हलके बाल निकले हुए हैं।



२. लीलापा

ये राजा के वेश में सिंहासन पर बैठे हुए हैं। ये चारों ओर से अपनी रानियों एवं मन्त्रियों से घिरे हुए हैं। सामने एक मन्त्री खड़ा है।

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

लोचावा का मंगलाचरण

सत् गुरुजनों को प्रणाम है (लोचावा स्मोन डुब शेरब गैरा)

मंगलाचरण

त्रैकालिक बुद्ध एवं गुरुपरम्परा, जो खेचर भूमि प्राप्त हैं, तथा साक्षात् गुरु परमसिद्धि प्राप्त अभय श्री के पद में कमल में (स्मोन डुब शेरब गैरा) काय, वाक् एवं प्रसाद मन से प्रणाम करता हूँ। (प्रणाम कर) लूहिपा आदि चौरासी सिद्धों के वृत्तान्त सम्यग् रूप से लिखूँगा।^१

१. गुरु लूहिपा का वृत्तान्त

नाम—मछली की आँत खाते हुए साधना करते रहने से^२ उनका नाम लूहिपा पड़ा।^३

जीवन-वृत्तान्त—किसी समय सिंहलद्वीप में एक राजा^४ राज करता था, जिसका राज्य वैश्रवण (कुबेर के राज्य) के समान वैभव-सम्पन्न था। राजभवन सब तरह के रत्नों, मोती, सोना, चाँदी आदि से अलंकृत (सुशोभित) था।

उस राजा के तीन पुत्र थे। एक समय राजा द्वारा ज्योतिषियों से यह पूछा गया कि मेरे देहान्त हो जाने पर किस पुत्र को राज भार-सौंपना अच्छा होगा?

१. यहाँ शास्त्रकार एवं अनुवादक के अलग-अलग नाम न होने के कारण इस वृत्तान्त को अभयदत्त श्री ने मौखिक रूप से कहा और उनके शिष्य भिक्षु स्मोन् डुब शेस् रब्ने उसे उसी रूप में भोट भाषा में अनुदित कर दिया है।
२. मछली की आँत खाने का वृत्तान्त बुस्तोन-चक्रसंवर सामान्य "शेस् रब्" पृ० ३७, 'छ' पुट, तारानाथ के-छोसव्युङ्, साक्या काबुम, न्याय-व्याख्या में समान रूप में मिलता है।
३. 'लूई' या 'लूहि' शब्द संस्कृत 'लोहित' शब्द से सम्बन्ध रखता है।
४. यह ओडियान के, राजा विमलचन्द्र के समकालीन थे, बुस्तोन—वही पृ० ३८।

ज्योतिषियों ने ज्योतिष देखकर कहा कि मध्यम पुत्र को यदि राजगद्दी सौंप दी जाय तो राज्य बहुत सुदृढ़ रहेगा और प्रजा सुखी होगी, यह गुण उसमें है। तदनुसार उस राजा ने अपने मध्यम पुत्र को ही अपना उत्तराधिकार और राज-काज सौंप दिया। राजा के देहान्त के बाद बड़े और छोटे दोनों भाइयों तथा जनता ने मिलकर उस (मध्यम पुत्र) को राज्याभिषेक कराकर गद्दी पर आसीन किया। पर उनको राजपद की चाह नहीं थी और राज-काज त्याग कर उन्होंने पलायन की चेष्टा की, तो उनके दोनों भाइयों और जनता ने उन्हें पकड़ कर सोने की जंजीर वाले जेल में डाल दिया। तब भी उन्होंने अपने रक्षकों (पहरेदारों) को सोना-चाँदी आदि (रत्न) देकर (अपनी बात मनवाई) रात में (दौती छोड़कर) सिले हुए वस्त्र पहने (वेश बदल दिया) और अपने को (दूर तक) पहुँचाने वाले लोगों को भी सोना आदि (रत्नों) से पुरष्कृत किया और उनसे विदा ली। राजपुत्र स्वयं रामल^१ के देश रामेश्वर^२ चले गये। वहाँ पर राजमहल के रेशमी आसन त्यागकर मिट्टी के भीतर कृष्णसार (कृष्णसारङ्ग) का (चमड़ेका) बिछौना बिछाकर सोये। वह राजपुत्र बहुत सुशील सुन्दर प्रियदर्शी थे, (जिसके कारण) लोग उन्हें खाना-पीना आदि निरन्तर पहुँचाने लगे।

तत्पश्चात् (कुछ समय के बाद) वे बुद्ध गया गये, तो वहाँ एक डाकिनी ने उन्हें अनुगृहीत किया और अववाद (महत्वपूर्ण तांत्रिक उपदेशों के मर्म का अवबोध करा) दिया। तत्पश्चात् वह राजपुत्र पाटलिपुत्र चले आये। वहाँ सब लोगों ने उन्हें जहाँ बैठे, भोजन-छाजन देना निरन्तर जारी रखा और वह लोगों द्वारा दिये हुए अन्न खाते हुए श्मशान में सोते रहे। एक दिन नगर में मेला लगा। राजपुत्र उस मेले में गये और वहाँ के मदिरालय में पहुँचे, तो वहाँ मदिरा बेचने वाले लोगों की एक प्रधान लौकिक डाकिनी थी। वह उस राजपुत्र को देखकर कहने लगी कि इनके सभी चतुष्चक्र

-
१. भोट ग्रन्थ में 'रामल' का देश लिखा है पर सम्भवतः यह 'रामल' नहीं अपितु 'राम' शब्द ही शुद्ध जान पड़ता है। राम ने लंका जाते समय एक मन्दिर बनवाया था जिसका नाम 'रामेश्वर' है। या मूल शब्द राम-लक्ष्मण हो सकता है।
 २. साधकों के शरीर में साधना करते समय के चार स्थानों (मूर्द्धा, ग्रीवा इत्यादि) में भव्य चार चक्र होते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए नागार्जुन के पंचक्रम एवं चोड़ खा पा की व्याख्याएँ देखिए।

मलरहित हो चुके हैं, पर इनके हृदय (चक्र) में मटर के बराबर जाति का विकल्प अभी भी शुद्ध नहीं हो पाया (अभी विद्यमान) है—तत्पश्चात् उसने उस (योगी) राजपुत्र को एक मिट्टी के बर्तन में सड़े हुए खाद्य-पदार्थ डालकर दिये। राजपुत्र ने उसे फेंक दिया, तो उस डाकिनि ने क्रुद्ध होकर कहा कि तुमको खाने के प्रति अच्छे-बुरे की विकल्पना बिना छोड़े, धर्म कहाँ से आयेगा? उसकी बातों के सुनने के बाद वह योगी सोचने लगे कि विकल्पना एवं निमित्त (निमित्त विषयक संज्ञाएं) बोधि प्राप्ति के लिए एक महान विघ्न है, ऐसा जानकर उन्होंने सभी प्रकार के विकल्पों एवं निमित्तों को छोड़ दिया। पटना के पास गंगा तट पर मछुआ लोग गंगा से मछली मारने के बाद तट पर मछली की आँतों को फेंक दिया करते थे और राजपुत्र उसको खाते हुए बारह वर्षों तक वहीं साधना करते रहे। जब मछुआ औरतों ने देखा कि एक योगी उन लोगों द्वारा फेंकी गयी मछली की आँतों को उठाकर रोज खा रहे हैं, तो उन लोगों ने उन्हें लूहिपा (लूई) कहना आरम्भ कर दिया। उसीसे उनका नाम 'लूहिपा' पड़ गया और सर्वत्र उनके लिए 'लूहिपा' संज्ञा व्यवहृत हुआ। इसी नाम के साथ उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई।

(इसका कुछ अंश दारिकापा एवं डिङ्गीपा के वृत्तान्त के साथ आयेगा)

सिद्ध लूहिपा का वृत्तान्त समाप्त^१ ॥

१. पद्मकर० के अनुसार लूहिपा, सरहपा एवं शबरपा दोनों के शिष्य थे और ये ओडियान के थे। (पद्म०-इति० पृ० ७४)

दुजोम के अनुसार इनका जन्म-स्थान 'षंपर' था। ओडियान में जाकर वे भिक्षु बने और तीनों पिटकों के विशेषज्ञ बने। 'आर्यमञ्जुश्री नाम संगीति तन्त्र' की साधना से सिद्धि प्राप्त हुई। इनके चार नाम हैं—श्री भागवत परमबोधि, लीलापा या लीलावज्र, भाणु सदृश, ना रूपी। दुजोम, जिङ् मा० इति० पृ० ४३

२. गुरु लीलापा का वृत्तान्त

दक्षिण भारत के एक राजा अपने सिंहासन पर बैठे ही थे, उसी समय अन्य प्रदेश से एक सुअभ्यस्त योगी उनके पास पहुँचे। राजा ने उस योगी से पूछा कि तुम्हारा इस तरह सभी राज्यों में घूमते रहना बहुत कष्टदायक है। उत्तर में योगी ने कहा— मैं तो दुःखी नहीं हूँ, पर तुम्हें कष्ट है, क्योंकि तुम्हें अपना राज्य छूट जाने का भय और प्रजा के खुश न होने का भय है। मैं तो अग्नि में कूद जाऊँ तो भी नहीं जलूँगा, विष खालूँ तो भी नहीं मरूँगा, इसी प्रकार बूढ़े होने तथा मरने का दुःख भी मुझे नहीं है क्योंकि मुझे रसायन का उपदेश है अर्थात् मैं रसायन प्रयोग की विधि जानता हूँ।

ऐसा सुनकर राजा के मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई और उन्होंने कहा— मैं आप ही की तरह राज्य-राज्य घूम तो सकता नहीं, फिर भी अपने राज्य में आसन पर बैठकर भावना (अभ्यास) तो कर सकता हूँ। अतः आप अपनी विधियों में से एक की देशना मुझे दीजिए। उस (योगी) ने उन्हें अनुमति दे दी और हेवन्न के अनुसार अभिषेक द्वारा उन्हें मण्डल में प्रवेश करा दिया तथा उसी का अववाद (दीक्षा) देकर उनसे 'एकाग्र-स्मृति' नामक समाधि का अभ्यास कराया। उस राजा ने (गुरु के कथनानुसार) अपने सिंहासन पर ही विशेष प्रकार के आसन, तकिया आदि सजाए और अपनी रानियों एवं मंत्रियों के साथ सभी प्रकार के वाद्य-यंत्रों से परिवृत्त होकर भावना की। यही कारण है कि उनका नाम लीलापा (अर्थात् नृत्य लीला आदि में लीन योगी) पड़ गया।

उनका असली अववाद (क्रिया-विधि) अपने दाहिने हाथ के अंगूठे को आलम्बन बनाकर निर्विक्रिप्त रूप से भावना करना (समाधि लगाना) ही था।

जब वह उसमें निर्विकार रूप से अभ्यस्त हो गये, (राजा ने) तो उनके गुरु ने अंगूठे के अन्दर 'हेवन्न' के समस्त देव-मण्डल की भावना करने का उपदेश दिया। राजा ने उन्हें उसमें भी निश्चित रूप से स्थित हो जाने की बात कही, तो गुरु ने उन्हें

‘उत्पत्ति’ एवं ‘निष्पन्न’^१ के युगनद्ध (सहज रूप से) भावनाओं का अभ्यास करवाया और तदनुसार सहज रूप से उनमें ज्ञान (प्रकाश) उदित होने लगा और उन्हें महामुद्रा (परम) सिद्धि प्राप्त हुई। वह अभिज्ञादि अनेक प्रकार के गुणों से सम्पन्न हो गये।

इस प्रकार गुरु के (मार्मिक) उपदेश, स्वयं अपने उद्यम और साथ ही पूर्व कर्मों के शुभ अवशेष इन तीनों का यदि योग हो जाता है, तो भोग विलास को बिना त्याग किये भी व्यक्ति मुक्त हो जाता है। उस (परम सिद्ध पुरुष) ने (सिद्धि प्राप्ति के बाद) अपरिमित जगत्-कल्याण का कार्य किया और ‘लीलापा’ नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। अन्त में वे खेचर (लोक में) चले गये।

गुरु लीलापा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. ‘उत्पत्ति’ एवं ‘निष्पन्नक्रम’ तन्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं, विस्तृत जानकारी के लिए, चोङ् खा पा के ‘ङ्-रिम् छेन् मो’ में देखिये। चोङ् खा पा ग्रन्थ संग्रह ४, ‘५०’ ‘ग’ पुट में।

३. गुरु विरूपा का वृत्तान्त

गुरु विरूपा का जन्म पूर्वी भारत त्रिपुरा, जो राजा देवफल (देवपाल) का राज्य था, में हुआ^१। उस समय दक्षिण में सोमपुरी नामक एक महाविहार था। उस धर्मपीठ में एक हजार भिक्षुओं का विशाल संघ था। उसमें विरूपा भी प्रविष्ट हो गये और भिक्षु बने। यद्यपि विरूपा भिक्षु थे, फिर भी उन्होंने अभिषेक लेकर गुह्य रूप से बारह वर्ष तक वज्रवाराही का जप एक-एक लाख का दो बार किया। पर उससे उन्हें अच्छे स्वप्न तक नहीं आये। सिद्धि की बात दूर रही। इससे मन विक्षुब्ध होकर उन्होंने अपनी 'माला' शौचालय में फेंक दी और यथेच्छ (दिन) चर्या में लग गये। उसी रात (नित्यकर्म) पूजा के समय अपनी माला का ख्याल आया, तो डाकिनी (वज्रवाराही) ने आकर उन्हें अपनी माला हाथ में दे दी और कहा कि "कुलपुत्र! तुम दुःखी न हो, मैं तुम्हें अधिष्ठित कराती हूँ और सभी प्रकार के विकल्प एवं निमित्तों का परित्याग कर ही साधना किया करो" और कहा—

'प्रकृति में स्थितचित्त ही वज्रवाराही;

अपने पास होते हुए भी अन्य से अपेक्षा करना।

यह अत्यन्त अनविज्ञ बालक का स्वभाव है;

चिन्तामणि रूपी चित्त विकल्पों से अस्पृष्ट होकर,

जो सन्तोष के साथ साधना करता है, वही उत्तम है।'

तत्पश्चात् पुनः बारह वर्ष तक वही साधना करते रहे; फलतः उन्हें महामुद्रा परम सिद्धि की प्राप्ति हुई।

उस सिद्धि लाभ के बाद उनका परिचारक मांस एवं मदिरा खरीद कर उन्हें खिलाने लगा और विहार में स्थित कबूतरों को मारकर उन्होंने खाना आरम्भकर दिया।

१. विरूपा जाति के क्षत्रिय (राजकुमार) थे। उनके भिक्षु-दीक्षा के गुरु का नाम 'जिनदेव' था। भिक्षु का नाम 'श्रीधर्मपाल' था। ये वसुबन्धु के भी शिष्य रहे। ये बहुत दिन तक नालन्दा में भी रहे। ये विज्ञानवादी दार्शनिक थे। (पद्म० इति० पृ० ६, B. D. १७१)



३. विरूपा

विरूपा सिर में पुष्प-माला सजाये हुए हैं। अन्य कोई अलङ्कार या आभूषण नहीं है। दाहिना हाथ तर्जनी मुद्रा में और बायें हाथ में कृष्णसार-मृग का सींग है।



४. डोम्बिपा

डोम्बिपा हड्डी-निर्मित अलङ्कारों, जिनकी संख्या छः मानी जाती है, से विभूषित हैं। दाहिने हाथ में विषैले सर्प का चाबुक और बायें हाथ में नर-कपाल है। पीछे सर्प का फन लहरा रहा है। बायीं ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन कर रही है। दोनों एक साथ सद्यःप्रसूता व्याघ्री पर सवार हैं।

कपोत (दिनों दिन कम होते गये और) समाप्त होने को आये, तो वहाँ के संघ ने उनसे पूछा कि हमारे पूज्य लोग (कबूतर) किसने खाए? विरूपा ने कहा हम लोग नहीं खाए। शंका होने पर सभी लोगों के कमरे की तलाशी ली गई तो विरूपा के कमरे में भी लोग देखने गये, वहाँ उस समय विरूपा मदिरा पीते हुए कबूतर का मांस खा रहे थे। इसे लोगों ने 'खिड़की' से देख लिया।^१

तदुपरान्त संघ ने घण्टी बजाकर सभा बुलाई और सभी के निर्णयानुसार उन्हें (विरूपा को) अपने स्थान से बाहर जाने को कह दिया। संघ के आदेशानुसार विरूपा ने भी अपना चीवर और पात्र बुद्ध की मूर्ति के सामने रखकर प्रणाम किया और दरवाजे^२ से बाहर चले गये।

विहार के समीप एक झील थी, विरूपा जब उसके तट पर पहुँचे तो वहाँ पर बैठे एक भिक्षु ने विरूपा से पूछा कि आप किस रास्ते से जा रहे हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि— मुझे तुम लोगों ने निकाल ही दिया है तो अच्छे रास्ते का क्या भरोसा ? यह कहकर उन्होंने उस झील के पानी के ऊपर तैरते कमल की पत्तियों पर पैर रखते हुए बिना पानी में डूबे कमल तोड़े और (विहार की ओर झुक कर) बुद्ध की पूजा की तथा झील के पार चले गये।

सोमपुरी विहार के सभी लोग पश्चात्ताप करते हुए उनके चरणों में प्रणाम करते हुए कहने लगे कि आपने हमारे कबूतरों को क्यों खाया? विरूपा ने उत्तर दिया—सब कबूतर यहीं हैं, मैंने नहीं मारा, तब तक उनके सेवक कुछ कबूतरों के पंखों के टुकड़े ले आये। आचार्य (विरूपा) ने एक चुटकी बजाई तो (सभी कबूतर जितना खाये थे उनके) पंखों के (अवशेष) टुकड़े सब कबूतर बनकर पहले की

१. पद्मकर० के अनुसार लोगों ने विरूपा को पन्द्रह देवकन्याओं से परिवृत और मदिरा पीते एवं मांस खाते देखा। तत्काल संघ ने घण्टी बजा कर संघ-सभा बुलाई और संघ-विधान के अनुसार विरूपा को संघ से बाहर किया और कहा कि तुम विरूप आचरण के हो। उन्होंने स्वयं भी अपनी विरूपता को स्वीकार किया। उनका नाम 'विरूपा' इसी से पड़ा और वहाँ से वह बाहर चले गये (द्रष्टव्य पद्म० इति पृ० ८७)

२. कहीं दीवार से बिना टकराये जाने की भी।

८ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

अपेक्षा कुछ अधिक स्वस्थ एवं ताजे होकर सामने से उड़ गये। यह दृश्य वहाँ बैठे सभी लोगों ने देखा।

उसके बाद विरूपा भिक्षु-वेश छोड़कर योगी के वेश में ही (अपनी) चर्या करते रहे। तत्पश्चात् गंगा के तट पर जाकर, उन्होंने गंगा देवी से भोजन मांगा, नहीं मिलने पर वे क्रुद्ध होकर पानी की धारा को पूर्ण रूप से विच्छिन्न कर पार चले गये। तत्पश्चात् कनसत (काञ्ची)^१ नगर गये। वहाँ के मदिरालय में जाकर उन्होंने मदिरा खरीदी। मदिरा बेचने वाली ने उन्हें एक प्याला मदिरा एवं एक तश्तरी भात दिया, तो वे बराबर मदिरा लेते रहे और उठे नहीं (खाते रहे)। जब ढाई दिन तक सूर्य अस्त नहीं हो पाया तो वहाँ के तत्कालीन राजा ने (उस घटना को देखकर) आश्चर्य चकित होकर कहा कि यह किसका चमत्कार है? पता करो। जब यह घोषणा कर डाली तब सूर्य देव ने राजा को स्वप्न में अपना रूप दिखलाकर कहा कि एक योगी ने मुझे मदिरा बेचने वाली के यहाँ रहने के रूप में रख दिया है, मैं कैसे चलूँ? तब राजा एवं प्रजा सब लोगों ने मिलकर उस (योगी) की मदिरा का दाम (हिसाब) लगाया तो कोटि तक हो गया और लोगों ने सब अदा कर दिया तो विरूपा वहीं से अन्तर्धान हो गये।

तत्पश्चात् वह 'इन्द्र'^२ नामक तैथिकों के स्थान पर पहुँचे^३। उस स्थान में महादेव की एक बहुत बड़ी मूर्ति थी^४ जिसकी ऊँचाई इक्यासी हाथ थी, वहाँ के लोगों ने विरूपा को भगवान् के उस प्रतीक को प्रणाम करने को कहा। तब विरूपा ने कहा कि मैं बड़ा भाई हूँ, बड़े भाई द्वारा छोटे भाई को प्रणाम करने की

१. पद्य० के अनुसार इस स्थान नाम 'धकिनित' है, जो 'विमोसार' के समीप है (दोनों स्थान इस समय अज्ञात हैं)।

२. सम्भवतः यह 'इन्द्र' शब्द स्थान के लिए नहीं अपितु महादेव के लिंग के लिए प्रयुक्त है।

३. उस स्थान का नाम 'चपति' था, वहाँ के तीर्थ केन्द्र के रूप में 'भीमहरि' नामक एक लिंग था, जिसकी स्थापना महाभारत के भीमसेन द्वारा मानी जाती है। (पद्य० इति, पृ० ८८)

४. मूर्ति की जगह पद्य के इति० में लिङ्ग का उल्लेख है।

प्रथा नहीं है। वहाँ के राजा आदि सब लोगों ने कहा कि फिर तुमको हम लोग यहीं मार डालेंगे।'

आचार्य (विरूपा) ने कहा—यदि मैं इसको प्रणाम कर लूँ तो पाप लगेगा। इसलिए मैंने इसे प्रणाम नहीं करने को कहा है।

राजा ने कहा— उस पाप का प्रायश्चित्त मुझसे कर लो।

तब आचार्य ने (प्रणाम करने के लिए) अञ्जलिबद्ध किया तो महादेव की मूर्ति दो टुकड़ों में विभक्त हो गयी। आकाश से यह आवाज आयी—'आचार्य! मैंने तो जैसी प्रतिज्ञा की थी, वैसा ही मानूँगा।' आचार्य ने कहा— शपथ लो? शपथ लिया तो मूर्ति के दोनों टुकड़े आपस में जुड़ गये। महादेव की मूर्ति के लिए प्रयुक्त सभी पूजा सामग्री आचार्य को अर्पित कर दी। वे सब अन्य बौद्धों की (स्थानीय संघ के) जीविका में समिलित कर दिये गये, कहा जाता है कि यह परम्परा अभी तक (आचार्य अभयदत्त श्री के समय तक) प्रचलित है।

तत्पश्चात् आचार्य पूर्वी भारत-स्थित देवीकोट नामक स्थान में पहुँचे। उस स्थान के सभी लोग तब तक डाकिनी (चुडैल) बन चुके थे। एक डाकिनी रास्ते में रहकर आने वाले सभी लोगों को डाकिनी मंत्र फूँककर छोड़ती थी। यह वहाँ की एक प्रथा-सी बन गयी थी।

जब आचार्य देवीकोट पहुँचे, तो नगर के रास्ते में उस मंत्र फूँकने वाली डाकिनी के आने से पहले ही एक विहार (जो नगर के पास में ही था) में जाकर सो गये। तत्पश्चात् एक ब्राह्मण पुत्र उस रास्ते से आ रहा था, उसे (उस मार्ग-डाकिनी ने) डाकिनी ने मंत्र फूँककर ही जाने दिया।

नगर पहुँचने पर उसको (ब्राह्मण को) भोजन सामग्री तो मिल गयी, पर सोने की जगह नहीं मिली। घूमते हुए उसकी एक आदमी से भेंट हुई, जो बौद्ध थे। उस व्यक्ति ने कहा कि यहाँ के सब नागरिक डाकिनी बन गये हैं, यहाँ कोई मनुष्य नहीं मिलेगा। डाकिनियाँ तुम्हें कुछ बाधा कर सकती हैं। अतः तुम उस पार के विहार में जा कर ठहरो। वह (यात्री ब्राह्मण) उस विहार में गया तो 'विरूपा' से भेंट हुई और आचार्य ने उसे (डाकिनी मंत्र से परिभूत देख कर पुनः अपने) मंत्र

से अधिष्ठितकर (सुरक्षित कर) दिया। जब रात में सभी डाकिनियाँ एकत्र होकर एक दूसरे से पूजा-सामग्री के बारे में प्रश्न कर रही थीं तो सब लोगों ने यही कहा कि 'आज हमें सभी प्रकार का मांस (मदिरा) मिल गया, पर 'महामांस' नहीं मिल पाया। उनमें से एक ने कहा—मुझे दो महामांस (विरूपा और एक ब्राह्मण) मिले हैं।'

तब प्रधान डाकिनी ने उसे ले आने के लिए कहा। वह (अपनी सहेलियों सहित) उसको लेने गयी, परन्तु (विरूपा के मंत्र प्रभाव से) बहुत प्रयत्न करने पर भी वे लोग उस (ब्राह्मण) के पास नहीं जा सकीं। बार-बार जाकर प्रयत्न किया तो एक बार विरूपा एक बड़े लकड़ी के खण्ड पर बैठे मिले। उन लोगों ने उसी लकड़ी खण्ड सहित उठाकर उन्हें सभा में ला रखा। वहाँ पहुँचने पर सभी डाकिनियाँ उनकी पूजा वन्दना करने लगीं। विरूपा ने उन लोगों के सभी (मांस एवं) मदिरा को (खा) पी लिया (और समाप्त कर दिया)। डाकिनियों ने उन्हें मारने के अभिप्राय से हाँस कुतूहल मचाना^१ आरम्भ किया, तो आचार्य ने भी 'द्वादश महाक्रोध परिहास'^२ हाँस दिया, जिससे सभी डाकिनियाँ बेहोश होकर गिर पड़ी। इस प्रकार सभी डाकिनियाँ (वश में कर के) प्रतिज्ञा-बद्ध (शपथ से परिबद्ध) कर दी गयी; उन्हें आज्ञा हुई —'जो व्यक्ति त्रिशरण की शरण में जाता हो और मेरे प्रति श्रद्धा रखता है, उन्हें किसी प्रकार की बाधा न पहुँचाना। जो लोग (त्रिरत्न के) शरणागत न हों, चित्तोत्पाद नहीं करते हों, उन लोगों के शरीर से बिना किसी प्रकार की बाधा पहुँचाये तुम लोग एक अञ्जलि खून पी सकती हो। तुम लोगों में से यदि कोई भी अपनी प्रतिज्ञा से

१. यह 'हाँस' कौतूहल या परिहास-गर्जन (भीषण ध्वनि) से अभिप्रेत सामान्य ध्वनि नहीं थी। यह गर्जन है, जो डाकिनियाँ किसी अन्य जीव या व्यक्ति को परिभूत करने के लिए शक्ति के रूप में प्रयोग किया करती हैं।

२. यह बारह प्रकार के 'परिहास' तन्त्र शास्त्र के विधानानुसार एक विशेष प्रकार से परिहास हैं— ह-ह, हु-हु आदि। विशेष प्रकार की सिद्धि प्राप्ति के बाद ही इस परिहास की शक्ति का लाभ होता है। विशेष जानकारी के लिए चक्रसंवर तन्त्र की व्याख्या (तनग्युर संग्रह भोट भाषा) देखें।

विमुख (अपनी शपथ से विमुख) हो जाय, तो यह चक्र उसका सिर काटे (यह कहकर एक चक्र वहाँ स्थापित किया) और उत्तरी (प्रधान) यक्ष^१ (राज) उस प्रतिज्ञाच्युत डाक-डाकिनियों का खून पीये (कहकर एक यक्षराज को अधिकृत किया)। उस यक्ष एवं चक्र की छाया आज भी (आचार्य वीरप्रकाश एवं आचार्य अभयदत्त श्री के समय में भी) उस जगह (पूर्व देवीकोट)^२ आकाश में विद्यमान है।

इस प्रकार वहाँ की सभी डाकिनियों को रक्षकों (धर्मपाल) के परिवार के रूप में प्रतिनिबद्धकर (परिवार में सम्मिलित करके) शपथ में प्रतिबद्ध किये और फिर आचार्य वहाँ से अन्यत्र चले गये।

पुनः देवीकोट लौटते समय रास्ते में महादेव और उमादेवी दोनों ने साढ़े चार लाख की संख्या वाले नगर का निर्माण (चमत्कार द्वारा) करके उनमें विरूपा का आतिथ्य ग्रहण किया और त्रयस्त्रिंशत् आदि सभी देव स्थानों से लाये गये नैवेद्ये (खाने के पदार्थ) आदि द्वारा उनकी विस्तृत पूजा की।

विरूपा का दोहा—

सोमपुरी महाविहार में परिव्राजक-उपसम्पदा-विनयशील का सम्यक् पालन किया।

पूर्व कर्मवश नैर्माणिक (व्यक्ति द्वारा), अभिषेक-अधिष्ठित अववाद का सम्प्रदान हुआ (सम्यक् रूप से मिला)।

विकल्प द्वारा बारह वर्ष तक साधना की, तो स्वप्न तक न देखा;

थके हुए मन से क्रुद्ध होकर माला का त्याग किया, तब डाकिनी की अपनी वाणी से अनुमति (आशीर्वाद) पायी।

१. आकाश में विचरण करने वाले उत्तर दिशा के यक्षराज।

२. कहीं-कहीं देवीकोटि, देवीकुट, देवीकोट भी लिखा हुआ है। यह स्थान पूर्वीभारत वारेन्द्र क्षेत्र, ग्रोमो (यडोड्) नामक जगह के दक्षिणी भाग में स्थित 'पञ्चप' नामक नगर से चार कोस की दूरी पर स्थित है। यह देवी का स्थान एवं सिद्ध पीठ है। 'श्री चक्रसंवर तन्त्र की सामान्यार्थ वृत्ति'। (बुस्तोन—पृ० २८, 'छ' पुट ॥ B.N.६)

इसी प्रत्यय (कारण) से (अपने) धातु अध्याशय (आन्तरिक सामर्थ्य) की परीक्षा हुई। सांसारिक लक्षण (स्वरूप) से सम्यक् अवगत हुआ, निर्विकल्प चर्या का मैंने आचरण किया।

विप्रतिपत्ति ज्ञान के कारण महासाङ्घिक संघों के द्वारा मुझे स्थान-च्युत किया गया।

उन सभी लोगों की विप्रतिपत्ति परिहार के हेतु (मैंने) जल पर बिना निमग्न हुए ध्यान लगाया;

गंगा को विपरीत दिशा में उलट कर, विविध (भोजन) खाया;

सूर्य को धरोहर (न्यास) (के रूप) में रखकर, (मदिरादि) भोगे।

तैर्थिक देव-प्रतिष्ठान भग्नकर (उन लोगों का) अभिमान तोड़ा; देवीकोट में डाकिनियों का दमन किया।

महाभैरव ने गुणाभिव्यक्त कर पूजार्थ नगर का निर्माण किया, और मेरी पूजा की।

इतनी चर्याएँ यदि मैंने नहीं की होती तो सनिमित्त धर्म के^१ प्रति कौन झुकता?

ऐसा कहकर वे सात सौ वर्ष बाद खेचर (लोक) चले गये।

गुरु विरूपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. 'सनिमित्त धर्म' = निमित्त से संयुक्त धर्म को 'सनिमित्त धर्म' कहा जाता है। अर्थात् परिकल्पित या विकल्पना की प्रतीति के निमित्त या प्रधान कारण ही यहाँ निमित्त शब्द का अभिप्रेत अर्थ है। यही लौकिक सहज बुद्धि का प्रवृत्ति-विषय भी है। यही 'प्रतीत्य-समुत्पाद' का व्यावहारिक पक्ष एवं सांवृत्तिक स्वरूप भी है। इसी के आधार पर कर्म-फल, मार्ग-फल आदि की अत्यन्त सूक्ष्म व्यवस्था की जाती है। यही 'सनिमित्त धर्म' का सारतत्त्व है।

(दोहावृत्ति० पृ० २०१-१९, तन-ग्युर 'लू' पुट। जापान संस्करण—Vol-870), (डुब थबस् कुन० तु-पृ० १३७-२३२, Vol-14)

४. गुरु डोम्बिपा का वृत्तान्त

गुरु डोम्बिपा जाति के क्षत्रिय थे। वे (राजा) मगध के रहने वाले थे। उनकी सिद्धि (इष्टदेव) हेवज्र से प्राप्त हुई।

इन्हें गुरु (कृष्ण) चर्यापा द्वारा अभिषिक्त कर दीक्षित किया गया था और 'तन्त्र का उपदेश (अववाद) दिया^१ गया। तदनुसार उन्होंने अनुष्ठान किया। जब अपनी प्रजाओं के प्रति एक मात्र पुत्र के समान (प्यार स्नेह के साथ) सोचने और व्यवहार करने लगे तब सभी लोग समान रूप से कहने लगे कि (हमारे) महाराज ने धर्म की दीक्षा ली है, यह तो नहीं सुना, पर स्वभावतः प्रजा के प्रति मैत्री भाव रखने वाला, यह राजा एक धार्मिक ही प्रतीत होता है।

उस समय राजा ने अपने मंत्री से कहा कि 'हमारे देश में चोरी करने वाले और भय दिखाकर सभी लोगों को लूटमारकर धन प्राप्त करने वाले भरे हुए हैं। मेरी अपनी पुण्य कर्म (शक्ति) भी बहुत मन्द है। गरीबी बहुत है, इन सभी प्रकार के भय-आतंक और दरिद्रता के त्राण हेतु, हमारी उस काष्ठ-घण्टी (लकड़ी की घण्टी) को बजा कर वहाँ के बड़े वृक्ष में बाँध आओ। जहाँ-कहीं बाधा एवं दरिद्रता दिखलाई पड़े, जब भय-आतङ्क और अतिदरिद्रता उपस्थित हो तो उस घण्टी को बजाओ, अन्यथा उसे न बजाओ।

जैसा राजा ने आदेश दिया, मंत्री ने भी तत्काल वही काम किया और मगध में इस प्रकार दरिद्रता एवं सभी प्रकार के भय-आतंक समाप्त कर दिये।

किसी समय उस राजा के राज्य में कुछ नीच जाति की गाना गानेवाली एक मण्डली पहुँची। राजा के लिए गाना-बजाना आदि का आयोजन किया गया। जब राजा ने देखा कि उस गायक की सुपुत्री, जो बारह वर्ष की थी, लौकिक धर्मों से अस्पृष्ट

१. लामा तारानाथ के अनुसार यह महासिद्ध नड्या (नारोपा) के शिष्य थे। नड्या के साक्षात् शिष्य श्रीवर डोम्बिपा कहे गये हैं—(भा० इ० पृ० २४५, अध्या ३३)

मनोहारी, बहुत सुन्दर चेहरे, अच्छे रंग-रूप, एवं पद्मिनी के सभी गुणों से सुसम्पन्न थी। राजा ने उस हीन जाति के गायक से कहा—अपनी यह सुपुत्री हमें दे दो।

तब उस गायक ने कहा—आप मगध के राजा, आठ लाख नगरों के अधिपति हैं। निर्बाध राजसम्पत्ति वाले महान् राजा हैं। हम जाति के हीन, जन समुदाय से पददलित त्यागे हुए हैं। अतः हम आपकी इस तरह की आज्ञा के योग्य नहीं हैं।

ऐसा निवेदन करने पर राजा ने जोर देकर उसे समझाया और लड़की के शरीर के वजन के बराबर सोना उसके माता-पिता को प्रदान कर उस लक्षण सम्पन्न कन्या को अपने लिये ले लिया।

उस राजयोगी ने बारह वर्षों तक उसे अपनी कर्म-मुद्रा के रूप में सेवन किया तो यह किसी को पता नहीं लगा। पर बारह वर्ष के बाद लोगों को उक्त घटना का पता लगा तो 'मगध' वालों ने सर्वत्र यह घोषित कर दिया कि राजा ने एक डोमिनी (डोम की लड़की) ग्रहण की है। यह सुनकर राजा अपने राजपुत्र और मंत्री आदि को राज्य सौंपकर उस डोमिनी कन्या के साथ वन में चले गये और वन में ही (तान्त्रिक) साधना करते हुए बारह वर्ष बिताए।

राजपुत्र एवं मंत्रियों द्वारा राज-काज अच्छी तरह नहीं चला पाने के कारण जब देश बरबाद होता गया तब सब लोगों ने मंत्रणा करके यह तय किया कि पहले के राजा को ही खोज कर राज करने दिया जाय। सब लोगों ने यह तय कर कुछ लोगों को उसे खोजने भेजा। लोग उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ वह राजा उस लड़की के साथ साधना में लीन थे। लोगों ने देखा—राजा एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं। लड़की पानी लेने जा रही थी। उसने (एक झील के पास जा कर) झील के ऊपर कमल के पत्तों पर पैर रखते हुए बिना पानी में डूबे (झील के बीच तक जा कर) झील के पन्द्रह हाथ नीचे की सतह से शुद्ध पानी भरकर राजा को पिलाया। इस दृश्य को देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित हो गये और उन राजयोगी से कुछ कहे बिना वे लोग नगर में लौट आये और उन्होंने सब वृत्तान्त लोगों को सुनाया।

उसके बाद राजपुत्र और मंत्री सहित सब नगर के लोगों ने राजा के पास जाकर उनसे राजभवन आने की प्रार्थना की। (प्रार्थना स्वीकार हुई)। एक दिन दम्पति चीता

पर सवार होकर विषैले सर्पों का चाबुक हाथ में लटकाए नगर पहुँचे। सब नगरवासी अत्यन्त आश्चर्यपूर्वक उन्हें देखते रहे; निवेदन किया कि आप यदि राज्य ग्रहण करें तो बहुत सुचारुरूप से गृहीत हो सकते हैं, अतः आप वैसा करें।

(उस योगी के रूप में) राजा ने उत्तर दिया—मैं तो शूद्र जाति का हूँ, राजकार्य करने के योग्य कहाँ रह गया, फिर भी आदमी के मर जाने के बाद उसकी ऊँच-नीच जाति की कल्पना का विच्छेद हो जाता है। अतः (तुम लोग) मुझे अग्नि में जला दो, उसके बाद जब जन्म होगा, फिर राज-कार्य करूँगा।

तदनुसार—नागरिकों ने गोशीर्ष (नामक) चन्दन की लकड़ी (भारी मात्रा में एकत्र कर) के बीच में उन्हें (सपत्नीक) रखकर जला दिया। ईंधन अधिक हो जाने से सात दिन तक आग जलती रही और बुझी नहीं। अग्नि शांत हो जाने के बाद जब लोगों ने देखा तो (एक बहुत बड़े) कमल (सदण्ड विकसित पुष्प) के अन्दर दम्पति हेवन्न (देव) के रूप में सजल (पुष्प के समान) दिखलाई पड़े।

मगध नगर के सभी लोगों को यह देख कर उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी और वे 'डोम्बिपा' के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

राजा (जो अग्नि में जलाये जाने के बाद बचे) मंत्री आदि लोगों से बोले—

'तुम सब लोग मेरी तरह यह (साधना चमत्कार आदि) कर सकोगे तो मैं राज्य करूँगा, अन्यथा नहीं कर सकूँगा।

लोग आश्चर्य चकित होकर बोले—'इस प्रकार (हम लोगों में से) कौन कर सकता है? यह कहकर वे बैठ गये।

पुनः राजा ने कहा—राजसत्ता बहुत ही लचीली एवं दोषों से भरी हुई है। मैं तो धार्मिक राज-सत्ता ही चला सकूँगा। यह कहकर वे वहीं से जगत्-कल्याण के लिए 'खेचर' लोक को चले गये।

गुरु डोम्बिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

५. गुरु शबरपा का वृत्तान्त

१शबरपा मंत्र-विक्रम^२ नामक पर्वत में श्री शबरपी (शबरपा) नामक एक शिकारी रहता था।^३ उसका काम अनेक विध प्राणियों को मारकर उनका माँस खाना (जीविका चलाना) और सब समय जीविका के लिए प्राणि-वध एवं अनेक प्रकार की हिंसा आदि पाप-कर्म करना था। आर्य लोकेश्वर (बोधिसत्त्व) ने उसे इस प्रकार के कार्य करते हुए देखा तो (उनके मन में उस शिकारी के प्रति अगाध) करुणा उत्पन्न हो गयी।

आर्य ने उस (शिकारी) की प्रचण्ड मनोवृत्ति के दमन हेतु अपने को श्री शबरपा के ही समान एक शिकारी का रूप धारण किया (चमत्कार शक्ति द्वारा) जो उस (असली शबरपा) के पास जा मिला। श्री शबरपा ने पूछा कि तुम कौन हो, (नैर्माणिक) शबरपा ने उत्तर दिया कि—मैं भी शबरपा हूँ।

शबरपा ने पूछा कि तुम्हारा देश कहाँ है?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—बहुत दूर प्रदेश में है।

शबरपा ने कहा—तुम एक शर (बाण) द्वारा कितने हिरण मार सकते हो?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—तीन सौ मार सकता हूँ।

शबरपा ने कहा—उस प्रकार की धनुष विद्या और बाण चलाना मुझको भी सिखाओ।

-
१. कुछ लोग 'शबरपा' को और 'सरहपा' को एक ही व्यक्ति मानते हैं, पर ये, दोनों अलग-अलग व्यक्ति थे। 'चतुरशीति सिद्ध गीतिका क्रम' में भी इन दोनों का अलग-अलग स्थान है। गुरु गयाधर के चौरासी सिद्धों की 'स्तुति' में भी इन दोनों के अलग-अलग नाम एवं स्तुतियाँ हैं, (तिब्बती-तनग्युर)। बुस्तोन ने भी इन दोनों को एक मानना गलत बतलाया है—चक्रसंवर तन्त्र का सामान्यार्थ भाष्य—पृ० ३६-३७, 'छ' पुट। (बुस्तोन ग्रन्थ संग्रह Vol.I.N.6)
 २. 'मंत्र विक्रम' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। बुस्तोन ने इस जगह का नामार्थ 'मन-विश्राम' दिया है—(वही. पृ० ३६, B.P. 72, Vol. 6)
 ३. अन्यत्र-ये जाति से 'नर्तक' =नाचने वाले कहे गए हैं—वही।



५. शबरपा

शबरपा रंग के कृष्ण हैं। उनके दक्षिण हाथ में बाण और बायें हाथ में बाँस का धनुष है। धनुष के दोनों छोर की नोक पर सुअर के शव का ऊपरी हिस्सा और निचला हिस्सा अलग-अलग करके टाँगे हुए हैं। फल और फूल से बने आभूषण तथा मोर के पंखों से बने अधोवस्त्र पहने हुए हैं। दोनों ओर उनकी दोनों पत्नियाँ बाण की तूणीर या तरकश लिए हुए खड़ी हैं।



६. सरहपा

सरहपा गोरे रंग के हैं। जनेऊ धारण किये हुए हैं। एक बाण लेकर उसे सीधा कर रहे हैं। वे यौवन अवस्था में हैं।

दूसरे दिन (बाण-विद्या को सिखाने हेतु) श्री शबरपा उस (नैर्माणिक) शबरपा को लेकर एक बड़े मैदान में पहुँचे। वहाँ (नैर्माणिक शबरपा ने पहले से) पाँच सौ निर्मित हिरण बनाकर छोड़ रखे थे। जब शबरपा ने उन्हें देखा तो (अपने मित्र) उस नैर्माणिक शबरपा से पूछा—तुम्हारे शर द्वारा कितने हिरण मरेंगे?

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—सभी पाँच सौ हिरण मर सकते हैं।

शबरपा ने कहा—चार सौ छोड़, दो सौ मारो।

आर्य द्वारा निर्मित शबरपा ने एक सौ हिरण एक ही बाण द्वारा धराशायी कर दिये। एक हिरण कीलाश शबरपा से उठाने को कहा और उन्होंने उठाने की चेष्टा की तो, नहीं उठा सके। शबरपा का सारा अभिमान (घमण्ड) समाप्त हो गया और घर लौट गये। उस (नैर्माणिक) शबरपा से कहने लगे—उस प्रकार की (मैदान में दिखायी) अपनी शक्तिशाली बाण विद्या मुझे (अवश्य) सिखा दीजिए।

नैर्माणिक शबरपा ने उत्तर दिया—उस प्रकार की बाण-विद्या को सीखने के लिए एक महीने तक माँस खाना छोड़ना होगा, यह आवश्यक है।

शबरपा ने उसे मान लिया और उसी दिन से प्राणि-वध और हिंसा बन्दकर दी। एक सप्ताह के बाद जब उस (नैर्माणिक शबरपा) ने उनके पास जाकर पूछा—आप लोगों ने क्या खाया है?

शबरपा ने उत्तर दिया—हम लोगों ने फल आदि खाया है।

नैर्माणिक शबरपा ने कहा—अब आप लोग प्राणि मात्र के लिए मैत्री-भावना एवं दयाभावना करें (यह कहकर वे वहाँ से चले गये)। एक महीना पूरा होने के उपरान्त (वह नैर्माणिक शबरपा) वहाँ आये, तो शबरपा ने कहा—अब हमें हिरण के आखेट का उपदेश दें।

उस नैर्माणिक (शबरपा) ने वहाँ एक मण्डल बनाया और उसे पुष्प आदि से सजाकर शबरपा दम्पति को कहा कि आप लोग इस मण्डल की ओर देखो। (तत्काल बाद) उन्हें फिर पूछा कि क्या देखा? दोनों को उस मण्डल के अन्दर

आठ नरक सपरिवार दिखलाई पड़े और साथ ही उन दोनों (दम्पत्ति) ने स्वयं को वहाँ (नरकपालों द्वारा) अग्नि में पकाये जाते देखा। इससे अत्यन्त भयभीत, विकम्पित होकर वे दोनों (उस प्रश्न का, जो नैर्माणिक शबरपा ने पूछा था कि^१— इस मण्डल के अन्दर तुम्हें क्या दिखलाई पड़ा) उत्तर नहीं दे सके।

उस (नैर्माणिक शबरपा) के बार-बार पूछने पर कहने लगे कि इस प्रकार के नारकीय प्राणी दिखलाई पड़े हैं।

नैर्माणिक ने कहा—आप लोगों को वहाँ जन्म ग्रहण करने में डर नहीं लगता?

शबरपा ने उत्तर में कहा कि हम तो इससे अति भयभीत हैं पर आपके पास इससे मुक्त होने का कोई उपाय है?

पुनः नैर्माणिक शबरपा ने पूछा—उस उपाय की साधना आप लोग कर सकेंगे?

शबरपा ने उत्तर दिया— हाँ, अवश्य कर सकेंगे।

तब उस नैर्माणिक (शबरपा) ने उन्हें धर्मोपदेश दिया। वह इस प्रकार है :

प्राणि-वध का विपाक परिणाम नरक में पैदा होना है। कारित्र^२ एवं निःष्यन्द हेतु के सदृश फल को निःष्यन्द फल कहा जाता है। फल के रूप में प्राणि-वध करने की इच्छा निरन्तर आती रहती है।

१. इस विवरण में जो नैर्माणिक शबरपा के साथ शबरपा का जो संवाद हो रहा है, बुस्तोन चक्रसंवर सामान्य भाष्य में यह दूसरे प्रकार से है। वहाँ शबर के साथ बोधिसत्व रत्नमति का संवाद होने का वृत्तान्त दिया है। यह सम्भव है कि रत्नमति ही उस निर्मित 'शबर' का नाम हो। (वही, पृ० ३६)
२. 'कारित्र' फल और 'निष्यन्द' फल,—कारित्र = क्रियाशीलता या कारकत्व अर्थात् कर्म के कर्ता में निहित कर्तृत्व शक्ति को कारित्र कहा जाता है। 'निष्यन्द' वह फल है, जो हेतु के समान स्वरूप का हो (निःष्यन्दो हेतुसदृशः' अभि० को भा० ५७, २, इन्द्रिय निर्देश पृ० ३३०, बौद्ध भा० सं० १९७०)

अधिपति फल आयुक्षीण (अल्प आयु मात्रा वाला) होता है और पुरुषकार फल रूप व्यक्तित्व प्रभाव हीन होता है।

प्राणि-वध (प्राणातिपात) कर्म को त्यागने से बोधि की प्राप्ति होती है। उस से कारित्र निःष्यन्द फलतः प्राणातिपात करने की इच्छा (प्रवृत्ति) नहीं होती है। अधिपतिफल दीर्घायु होता है और पुरुषकार फल प्रभाव (एवं सुन्दरता आदि) से युक्त होता है।

इत्यादि दश अकुशल धर्मों के दोष एवं कुशल धर्मों की अनुशंसा (गुण) (सम्बन्धी, उपदेश दिया, तो शबरपा में सांसारिक धर्मों के प्रति घृणा एवं निरर्थकता बुद्धि उत्पन्न हो गई।) और उन्हें धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा प्राप्त हो गई।

तत्पश्चात् आर्य-अवलोकेश्वर उन्हें अनेक मार्मिक उपदेश देकर दन्तीर (दन्तिर) पर्वत के लिए प्रस्थान कर गये।

शबरपा बारह वर्षों तक निर्विकल्प महाकरुणा की भावना एवं साधना करते रहे, जिसके फलस्वरूप उन्हें परम सिद्धि की प्राप्ति हुई। जब उन्हें महामुद्रा परम सिद्धि का लाभ हो गया तो वह एक दिन महाकरुणा की धर्मता (समाधि) से व्युत्थित होकर (उठकर) आर्य अवलोकेश्वर के चरणों में गये। आर्य ने शबरपा के गुणों की भूरिशः प्रशंसा की और कहा—कुलपुत्र तृण अग्नि-शमन (बुझने) के समान एक पक्षीय निर्वाण उत्तम (पर्याप्त) नहीं है। तुम सत्त्वार्थ (जगत् कल्याणार्थ) संसार में रहकर अचिन्त्य सत्त्वों (अपरमित प्राणियों) का अर्थ (कल्याण) करो।

तत्पश्चात् शबरपा अपने गुरु की आज्ञा पाकर अपने देश लौट गये और वहीं रहने लगे।

इनके तीन नाम प्रसिद्ध हैं—शबरपा, मयूरपक्ष (पंख) ओढ़कर रहने के कारण मयूरवसन, सदा पर्वतों में रहने के कारण 'गिरिनाथ' भी कहे जाते हैं।

२० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

ये मैत्रेयनाथ नामक बुद्ध के शासन के उदय होने तक उसी शरीर के साथ इस जम्बु-द्वीप में ही रहेंगे।^१

गुरु शबरपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

-
१. बुस्तोन के अनुसार उनके रहने का स्थान दक्षिणी श्रीपर्वत है। 'शबरपा' रहने वाले पूर्व भारत बंगाल (भंगल) के थे। 'भंगल' के 'गोन्पा' (गिरिगोन्-विहार) नामक विहार में आचार्य नागार्जुन से उनकी भेंट हुई। सर्वप्रथम उन्होंने नागार्जुन से ही श्री चक्रसंवर (के मण्डल में) दीक्षा ग्रहण की। उसके बाद बोधिसत्त्व रत्नमति से उनका साक्षात्कार हुआ। (चक्रसंवर सामान्य भाष्य—पृ० ३६-३७, बुस्तोन) पद्यकरपो के अनुसार शबरपा 'नागार्जुन' और 'सरह' दोनों के शिष्य थे।

६. गुरु सरहपा का वृत्तान्त

गुरु सरहपा^१ जाति के ब्राह्मण थे। उनका जन्मस्थान पूर्वीभारत के 'राजी'^२ (राँची) नामक नगर के अन्तर्गत सरोली (पेकिंग सं०, जापान से प्रकाशित वाल्युम ८७ लू पृ० १७७) नामक स्थान (गाँव) है। यह डाकिनी के पुत्र थे और वास्तव में यह डाकि ही थे।^३ यह गुरु ब्राह्मण होते हुए भी बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे। बहुत से बौद्ध (तान्त्रिक) आचार्यों से धर्मोपदेश सुनते थे। फलतः गुह्य धर्म (तन्त्र नय) के प्रति उन्हें विश्वास हो गया। ब्राह्मण और बौद्ध दोनों (धर्मों) के विधानानुसार वे (तांत्रिक विधान के अनुसार) संवर और दीक्षा के नियमों का पालन करने लगे। दिन में ब्राह्मण धर्म के अनुसार कार्य करते थे और रात में बौद्धों के। कुछ दिन बाद मदिरा का सेवन किया, तो ब्राह्मण लोग यह जानकर उनको अपने समाज और देश से निकाल बाहर करने के हेतु एकत्र हो गये और तत्कालीन महाराज रत्नफल (संभवतः रत्नपाल) से उन लोगों ने निवेदन किया—आप राजा हैं, तो देश में विधर्मियों को पनपने देना क्या उचित है? यह 'सरह' रोलि नगर का पन्द्रह हजार आबादी वाले गाँव का प्रधान ब्राह्मण होते हुए भी मदिरा पान करके जाति (धर्म) से च्युत हो गया है। अतः इसे (इस देश से) निकाल देना चाहिए।

राजा ने कहा कि पन्द्रह हजार आबादी के इस अधिपति को मैं इस देश से निकालना नहीं चाहता हूँ। यह कहकर; स्वयं राजा ने 'सरहपा' के पास जाकर उनसे कहा—आप ने ब्राह्मण होते हुए भी मदिरा पानकर यह उचित कर्म नहीं किया।

-
१. सरहपा वज्रपाणि के शिष्य थे। 'अनुत्तर तन्त्र' का अधिकांश भाग वज्रपाणि ने उन्हें दिया। उन्होंने आचार्य नागार्जुन को दिया (चक्रसंवर सामान्य भाष्य पृ० ३६)
 २. राजी की जगह पर—राज़ी, राज्जि, राज्ज और राज्जी आदि शब्द विभिन्न ग्रन्थों में मिलते हैं।
 ३. डाकि होने की बात अन्यत्र भी है। करुणा पुण्डरीक में भी इनकी भविष्यवाणी की बात है— पद्-दकर् छोस् ब्युङ्=पद् कर इति० पृ० ७१।

‘सरहपा’ ने उत्तर दिया — मैंने मदिरापान नहीं किया, फिर भी शपथ (कसम) खाना हो तो सभी ब्राह्मणों एवं जनता की सभा एकत्रित कीजिये।

जब सब लोग एकत्र हो गये, तो सरहपा ने कहा कि ‘मैंने यदि मदिरा पान किया हो, तो मेरा हाथ जल जाय और नहीं पिया हो, ^१तो हमारा हाथ न जले, यह कहकर उन्होंने उबलते हुए तेल के अन्दर अपना हाथ डाल दिया, पर हाथ नहीं जला। राजा ने लोगों से पुनः पूछा कि क्या इनका मदिरापान सत्य है?

सभी ब्राह्मणों ने एक साथ कहा कि सत्य है, इसने मदिरापान किया है। सरहपा ने पहले के वचन दोहराते हुए उबलते ताँबे का पान किया, तो भी वह नहीं जले। उसके बाद पुनः राजा ने लोगों से कहा कि विश्वास हो गया कि इन्होंने मदिरा नहीं पी, ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि नहीं, इन्होंने पी है।

(पूरी परीक्षा) राजा ने कहा कि आप लोगों में से एक सरह के साथ पानी के ऊपर बैठे, जो डूबेगा उसने पी और जो नहीं डूबेगा उसने नहीं पी ‘वैसा ही हो’ कहकर अन्य एक ब्राह्मण के साथ सरह गहरे पानी में प्रविष्ट हुए तो ‘सरह’ नहीं डूबे और अन्य ब्राह्मण डूब गये। सरहपा ने कहा कि (देखा) मैंने नहीं पी है। फिर भी लोगों ने स्वीकार नहीं किया कि सरह ने मदिरा नहीं पी। (पुनः तुला पर परीक्षा हुई) यह कहकर कि तुला पर रखो, जो भारी होगा उसने नहीं पी और जो हलका पड़ेगा उसने पी। वैसा ही किया तो सरहपा भारी निकले, तो उन्होंने कहा कि मैंने मदिरा नहीं पी। उसके बाद तीन आदमी के बराबर लोहखंड के साथ तौलने पर भी सरह अधिक भारी निकले। उसके बाद छः आदमी के बराबर लोहे के खंड के साथ तौलने पर भी सरह भारी निकले। राजा ने यह कहकर घोषणा की कि—इनके समान यदि सामर्थ्य (शक्ति) हो, तो मदिरा पी सकते हैं।

१. मदिरापान नहीं करने का तात्पर्य—मदिरा को उस रूप में नहीं पीने से है, जो साधारण लोग पीते हैं। अर्थात् उन्होंने मदिरा को अलौकिक शक्तिवर्द्धक के रूप में परिणत कर दिया (पंच मकारों के सेवन की एक विशेष अवस्था में विशेष स्थिति होती है।)

तत् पश्चात् सभी ब्राह्मणों एवं राजा ने उनके (सरह के) चरणों में प्रणाम किया और उपदेश की याचना की। (सरहपा ने) राजा, रानी और प्रजा (तीनों) के लिए अलग-अलग दोहों का गायन किया, जो बाद में गायन दोहा "दोहत्रयी" के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

सरह के प्रभाव में आकर (वहाँ के) सभी ब्राह्मणों ने अपने धर्म का त्याग करते हुए सुगत के शासन में प्रवेश किया। (सरह के उपदेश के आधार पर) राजा ने सपरिवार सिद्धि लाभ किया।

उसके बाद सरहपा पन्द्रह वर्षीया एक लड़की^१ को जो पहले से ही उनके पास खाना बनाने वाली नौकरानी के रूप में रहती थी, लेकर अन्यत्र चले गये। एक विहार में रहकर पति साधना करते रहे और पत्नी भोजन आदि की व्यवस्था करती रही। एक बार सरहपा ने कहा कि मैं मूली का शाक खाना चाहता हूँ। पत्नी ने भैंस के दही के साथ मूली की सब्जी बनाकर पहुँचाया। तो उस समय (सरह) समाधि में बैठे हुए थे। पत्नी ने उन्हें नहीं जगाया, और वापस चली आयी। सरहपा बारह वर्ष तक उस समाधि से नहीं उठे, जब उठे तो अपनी पत्नी से पूछा— मूली की सब्जी कहाँ है? पत्नी ने उत्तर दिया—आप बारह वर्ष तक समाधि से नहीं उठे, अब वह सब्जी कहाँ मिलेगी। इस समय शीतकाल चल रहा है, नहीं मिलेगी।

सरहपा ने अपनी पत्नी से कहा—मैं पर्वतों और वनों में साधना करने जाऊँगा।

पत्नी ने उत्तर दिया— काय विवक्ति कोई विवक्ति नहीं है। चित्तगत निमित्त एवं विकल्पना विवक्ति ही परम विवक्ति है। आप बारह वर्षों तक समाधि में (लीन) रहने के बाद भी सूक्ष्म (बहुत छोटी सी) मूली (की सब्जी) का निमित्त भी नहीं तोड़ सके, तो पर्वतों के बीच जाने से क्या लाभ?

१. महान साधक 'श्री पद्म करपो' के अनुसार यह 'लड़की' एक नाग जाति 'डोम' या चण्डाल की लड़की थी, जो 'शर' बाण बनाती थी। (पद्म० इति० पृ० ७२)

सरहपा को (उसकी बातों की) सच्चाई की अनुभूति होने लगी। उन्होंने निमित्त एवं विकल्पना को (सदा के लिए) परित्याग कर, प्राकृतिक स्वभावगत अर्थ का अनुष्ठान (निदिध्यासन) किया; फलतः उन्हें 'महामुद्रा-परम सिद्धि' का लाभ हुआ। उन्होंने अपरिमित जगत् कल्याण का कार्य किया। अन्त में वे दम्पति खेचर भूमि चले गये।

गुरु सरहपा^१ का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. सरहपा-के अन्य नाम रत्नमति, रत्नबुद्धि, देवपुत्र रत्नमति, बोधिसत्व रत्नमति भी थे। (पद्म० इति० पृ० ७४, B. 148)

७. गुरु कङ्करिपा (कङ्करिपा) का वृत्तान्त

गुरु कङ्करिपा जाति के शूद्र थे। उनका जन्मस्थान मघाहुर था।

वह मघाहुर नगर के एक गृहपति स्वसमान जाति से विवाह कर के गृहस्थ काम-भोग के गुणों का रस-आस्वादन करते हुए रह रहे थे। उनका धर्म और मोक्ष पथों के प्रति थोड़ा भी मन नहीं लग रहा था। (सदा) लौकिक सुख-सुविधा का ही अर्जन करते रहते थे।

ऐसी ही अवस्था में एक दिन कर्म संस्कार को प्राप्त हो जाने से उनकी पत्नी की इह लीला समाप्त हो गयी। जब वह (गृहपति) अपनी पत्नी का शव श्मशान में पहुँचाने गये, तो वे उस शव को त्यागने में असमर्थ हो गये और शव (पकड़े उस) के पास बैठ कर रोते रहे। उस समय एक सुविज्ञ योगी वहाँ आ गये और उस गृहपति के पास जाकर उस से कहा—तुम इस श्मशान में क्या कर रहे हो? गृहपति ने उत्तर में कहा— हे योगी (महाराज) (आप) मेरी इस दुर्दशा (दुःख की दशा) को नहीं देख रहे हैं? आँख निकले हुए अन्धे के समान, गृहस्वामिनी से छूटा हुआ श्रीहीन, इस लोक में मुझसे अधिक दुःखी और क्लेश भरा दूसरा कौन हो सकता है?

योगी ने उस गृहपति से कहा— जन्म का अन्त मरण, संयोग का अन्त वियोग है और सभी संस्कार (धर्म) अनित्य हैं। संसारगत सभी (धर्म) दुःखमय हैं। अतः दुःखमय सांसारिक (धर्म) से क्या तुम्हें दुःख नहीं होगा? (अवश्य ही होगा)। तुम मरे हुए आदमी का शव, जो पत्थर और मिट्टी के समान है, पकड़ कर बैठे रहोगे, तो क्या होगा? इससे (अच्छा हो कि) तुम धर्म का सहारा लेकर दुःख का (समूल) प्रहाण कर लो।

(दुःखी) गृहपति ने कहा— हे महायोगी! सांसारिक जन्म-मरण के दुःख से मुक्त होने का कोई उपाय हो तो मुझे अवश्य बता दें।

योगी ने कहा— उन (दुःखों) से मुक्त होने का उपाय (मेरे) गुरु के उपदेश में है।

गृहपति ने कहा— वही मुझे प्रदान करें।

उस योगी ने उसे (गृहपति को) अभिषिक्त कर दिया; नैरात्म-विन्दु (नैरात्म्य के रहस्य) का उपदेश दिया।

(पुनः) गृहपति ने पूछा— (महागुरु) इसकी भावना मैं कैसे करूँ?

मरी हुई पत्नी का विकल्प त्याग दो और नैरात्म्य पत्नी— सुख एवं शून्यता का अद्वैत भाव (चित्त में संनिवेश कर उस युगनद्ध स्थिति) की भावना करो। यह कहकर उन्हें भावना करने दिया।

(निरन्तर उस भावना के अभ्यास में उन्होंने छः वर्ष लगाये) छः वर्ष के बाद साधारण पत्नी की कल्पना “सुख एवं शून्यता” के (युगनद्ध) रस में खो गई। उनका चित्त, मल से विशुद्ध हो गया। उस के चित्त में महासुख-प्रभास्वरता का रस उत्पन्न होने लगा। फलतः वह गृहपति जैसे धतूरा (नामक) विष के उड़ जाने से भ्रांतियाँ दूर होकर मस्तिष्क स्वच्छ हो जाता है, उसी प्रकार अविद्या (जो) भ्रांति का मूल कारण है, नष्ट हो जाने से उन्हें परम सिद्धि का लाभ हुआ। उनका नाम भी ‘योगी कंकरिपा’ (कंकाल वाले) प्रसिद्ध हुआ।

अपने प्रदेश (अथवा गांव) मघाहुर में अनेक लोगों को धर्मोपदेश देकर उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये।

गुरु कङ्करिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



७. कंकारिपा

कंकारिपा (कंकरिपा) श्मशान में बैठे हुए हैं। उनके सामने विविध प्रकार के कंकाल बिछे हुए हैं। सिर के बाल मुड़े (घुँघराले) हुए हैं। साँवले रंग के हैं। भावना 'सूत्र' जो विशेष प्रकार की अवस्था में योगी लोग धारण करते हैं, पहने हुए हैं।



८. मीनपा

मीनपा रंग के साँवले हैं। वह मछली का पेट फाड़कर निकल रहे हैं और दोनों पैर उसके पेट के अन्दर प्रविष्ट हैं। उनके दोनों हाथ नृत्य मुद्रा में हैं।

८. गुरु मीनपा का वृत्तान्त

गुरु मीनपा का जन्म स्थान पूर्वी भारत (बंगलादेश) है। जाति के वे धीवर (मछुआरे) थे। उनके प्रथम गुरु महादेव थे, जिनसे उन्होंने लौकिक सिद्धियों का लाभ प्राप्त किया था।

पूर्वी भारत के कामरूप नामक स्थान से कुछ ही दूरी पर 'ईता' नामक 'सागर' था (यानी समुद्र के उस भाग को 'ईता' कहा जाता था)। वहाँ के (उस समुद्र के तट पर स्थित गाँव के) लोग मछुआरे थे। वे सभी मछुआरे मछली मारकर सब समय बाजार में बेचते थे। (उसी से वे अपनी जीविका चलाते थे) एक दिन जब एक मछुए ने सूती जाल में अड्डुश बाँधकर उसकी नोक में माँस लगाकर पानी में छोड़ा, तो एक बहुत बड़ी मछली उस जाल के अन्दर आ गई। उसने जाल बाहर खींचा, तो खींच नहीं पाया, उलटा मछली ने मछुआरे को ही पानी की ओर खींच लिया। फलतः वह मछुआरा पानी में डूब गया। (पानी में डूबते ही) तत्काल उस मछुए को एक बड़ी मछली अपने मुँह में डालकर निगल गयी। फिर भी कर्मवश (संयोग से) वह मछुआरा मरा नहीं (जीवित रहा)।

उस समय कैलाश पर्वत पर बैठी उमादेवी ने महादेव से कुछ धर्मोपदेश की याचना की थी, तो महादेव ने उमा से कहा—मेरा यह धर्म हर किसी को नहीं बताया जा सकता, यह अत्यन्त गुह्य है। अतः तुम समुद्र के अन्दर एक मकान बनाओ, वहीं बताऊँगा। उमादेवी ने वैसा ही किया। वहीं जाकर महादेव ने उमादेवी को अपना उपदेश देना आरम्भ कर दिया। महादेव, उमादेवी को उपदेश दे ही रहे थे उसी समय उस (सामुद्रिक) मकान के नीचे वह मछली भी आ गई जिसने मछुआरे को खाया था और जिसके पेट के अन्दर अब भी वह (मछुआरा) जीवित था। धर्मोपदेश अभी महादेव बोल ही रहे थे और समाप्त भी नहीं हो पाया था कि उमादेवी को नींद आ गई। महादेव बोलते रहे और बीच-बीच में पूछने लगते कि समझ गई हो कि नहीं? उमा सोई हुई थी पर मकान के नीचे मछली के पेट में रहने वाले मछुआरे ने जी हाँ, कहते हुए उपदेश पूरा सुन लिया। जब धर्मोपदेश

समाप्त हो गया, उमादेवी की नींद टूटी और कहने लगीं कि अब उपदेश दीजिए। उत्तर में महादेव ने कहा— सब धर्मोपदेश मैं दे चुका हूँ। उमादेवी ने कहा मैं तो आपके उपदेश, कुछ अंश तक ही सुन पायी हूँ, उसके बाद नींद लग जाने से नहीं सुना।

महादेव ने कहा — फिर जी हाँ, समझ गई, कहने वाला कौन था?

उमा— ऐसा कहने वाली मैं नहीं हूँ।

महादेव ने अपनी अभिज्ञा से देखा तो (उस प्रकार के उत्तर देने वाला) मकान के नीचे मछली के पेट में स्थित आदमी था, जिसने उनका धर्मोपदेश पूरा सुन लिया। उन्होंने सोचा कि यह तो हमारा शिष्य बन गया है। अब इसे समय-प्रतिबद्ध (प्रतिज्ञा से प्रतिबद्ध) करना होगा। उन्होंने उस मछुआरे को (मछली के पेट से बाहर किये बिना) अभिषेक (देकर साधना करने का आदेश) दिया।

मछुए ने बारह वर्ष तक मछली के पेट में ही रह कर साधना की।

एक बार श्रीतपरी (श्रीतपरि) नामक स्थान के एक मछुए ने पुनः उस बड़ी मछली (जिसके पेट में मछुआ साधना कर रहा था) को पकड़ा और उसे बाहर निकाल लाया। उसके भारीपन को देखने से लगा कि सम्भवतः उसके पेट से सोना-चाँदी आदि (कोई) चीज निकल सकती है, ऐसा सोचते हुए उसने मछली का पेट चीर कर देखा तो अन्दर एक आदमी बैठा हुआ था। उससे पूछा कि तुम कौन हो?

(मछली के पेट से) उत्तर दिया—मैं मछुआ हूँ। अमुक राजा के समय (जब मैं मछली पकड़ने समुद्र के तट पर गया, तो) इस मछली ने मुझे पकड़ लिया और निगल गई। (उसके कथनानुसार) लोगों ने हिसाब लगाया, तो ठीक बारह वर्ष बीते थे। इस घटना से सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। उनका नाम 'योगी मीनपा' प्रसिद्ध हो गया (तब तक वे सिद्धि लाभ कर चुके थे)।

सब लोगों ने उनकी पूजा की। जब 'मीनपा' ने धरती पर नाचा, तो उनके पैर धरती के नीचे धँसने लगे। पत्थर पर नाचा, तो पत्थर में भी कीचड़ के समान उनके

पैर नीचे धँसने लगे। सब लोग इससे बहुत अचम्भित हुए। इस पर मीनपा ने (निम्न) उदान कहा—

‘पूर्व सञ्चित कर्म से सम्बद्धता और इस (जीवन) समय के धार्मिक छन्द (= धर्म के प्रति प्रबल श्रद्धा) के बल पर,

मैं इस प्रकार के गुण सम्पन्न हुआ, ‘अहो स्वचित्त रत्न।’

उसके बाद पाँच सौ वर्ष तक वे सत्त्वार्थ (जगत् कल्याण) का कार्य करते रहे।

मीनपा, वज्रपाद और अचिन्तपा, ये तीन उनके नाम पर्याय के रूप में विख्यात हैं।

उन्हें प्रथमतया लौकिक सिद्धि प्राप्त हुई और बाद में अन्य सिद्ध गुरुओं के सम्पर्क में आने से^१ क्रमशः भूमि, मार्ग आदि प्राप्त करके उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु मीनपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. उन्होंने बाद में जालन्धरपा के चरणों में उपदेश सुने। वही उनके परम सिद्धि के गुरु रहे।

९. गुरु गोरक्ष का वृत्तान्त

पूर्वी भारत में (एक समय) जब महाराज देवपाल राज कर रहे थे, उन्हें एक पुत्र हुआ। जब राजपुत्र बारह वर्ष की अवस्था का हुआ तो उसकी माँ महारानी बहुत बीमार हुई और मरणासन्न पर पड़ गयी। माँ ने अपने पुत्र से अन्तिम वचन के रूप में कहा—प्राणी-मात्र के सुख-दुःख तो उनके स्वयं किये गये पाप एवं पुण्य कर्मों से होते हैं। अतः तुम, चाहे प्राण छूट जाय, पर पाप कर्म न करना। यह कहकर उन्होंने अपनी अन्तिम साँस लेकर आँखें बन्द कर ली।

तत्पश्चात् उनके पिता महाराज से सब लोगों ने (जनता ने) यह निवेदन किया कि आप अन्य प्रदेश से दूसरी रानी ग्रहण करें। राजा, दूसरी रानी ले आये। कुछ ही दिन बीते, एक दिन जब राजा वन में सैर करने गये थे तो रानी ने राजभवन के ऊपरी छत पर जाकर देखा, तो वहाँ राजपुत्र बैठे हुए दिखाई दिये और वह उनके प्रति (अत्यन्त) आसक्त हो गई। उन्हें दूत भेजकर कहा कि आप इधर आयें। जब दूत ने रानी का सन्देश राजकुमार तक पहुँचाया तो उन्होंने अनिच्छा प्रकट की। इससे रानी बड़ी लज्जित हो गई और सोचने लगी कि 'इसने मेरा अपमान किया, इससे अधिक मन को कष्ट देनेवाला कौन हो सकता है? नाना उपाय के द्वारा अब इसे मार ही देना चाहिए'।

तब उस रानी ने सभी जनता (अपने राजपुरुषों) से कहा और आज्ञा दी कि इस (नीच व्यक्ति) को मार दो, पर लोगों ने कहा—यह महाराजा का एक मात्र पुत्र है, इसको मारना सम्भव नहीं।

तब उस (रानी) ने छल-कपट का सहारा लिया और अपने पूरे शरीर को खुरच-खुरच कर जगह-जगह खून निकलवा दिया, शरीर पर पहने सभी वस्त्र फाड़-फाड़कर छिन्न-भिन्नकर बिस्तर में सो गई, जब राजा अपने महल वापस लौटे तो उन्होंने रानी की हालत देखकर, उससे पूछा— तुम्हारी यह दशा किसने की है?



९. गोरक्ष

गोरक्ष गोरे रंग के हैं और उनके बाल मुड़े (घुँघरैले) हुए हैं। हाथ समाहित-मुद्रा में हैं और कान में सींग और कण्ठ में शंख से निर्मित आभूषण धारण किये हुए तथा निर्वसन हैं। गुरुदर्शन की प्रतीक्षा में आकाश की ओर देख रहे हैं।



१०. चौरङ्गीपा

चौरङ्गीपा के दोनों हाथ समाहित-मुद्रा में हैं और वे सिर में हलकी जटा की शिखा बाँधे हुए हैं। एक वृक्ष के मूल में बैठे हुए हैं। उनके समीप बगल के रास्ते से कुछ व्यापारी जा रहे हैं। ये भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं।

तो रानी ने उत्तर दिया—आपके राजकुमार ने मेरे शरीर की यह दुर्दशा की है जिसके कारण मेरे शरीर की ऐसी हालत हो गयी है। यह सुनकर, राजा को बड़ा क्रोध आया और कहने लगे कि तुम्हारी ऐसी दशा कर दी, उसे मार डालो। राजा ने दो व्याध बुलाये और उन्हें आज्ञा आज्ञा दी कि 'इस राजपुत्र को जंगल में ले जाकर सभी हाथ-पैर काट डालो।'

दोनों यम-पुरुषों (व्याधों) ने सोचा कि इसे मारना उचित नहीं है। (किसी लड़के को मारना तो आवश्यक हो गया, अन्यथा राजा हमें प्राणदण्ड दे सकते हैं) अतः हम अपने पुत्रों को मारकर इसको जीवित रहने देंगे। यह तय कर उन दोनों ने राजकुमार से कहा— आप को मारना हमारे लिए असम्भव हो रहा है (हृदय नहीं चाह रहा है) अतः हम अपने पुत्र को आपके लिए मार देंगे।

राजकुमार ने उत्तर दिया—यह सर्वथा अनुचित है, आप मुझको ही मारिये। मेरी (दिवंगत) माँ ने अन्तिम वचन के रूप में मुझे कहा था कि 'शरीर और प्राण के लिए (अर्थात् शरीर छूट जाय, प्राण तक भी छूट जाय तो) भी 'पाप कर्म न करें।' अतः आप लोग जैसा मेरे पिता ने आज्ञा दी है, वैसा ही करें।

तब वे दोनों (व्याध) उन्हें जंगल में ले गये और उनको एक 'पादप' (वृक्ष) के मूल में लेटा दिया और उनके सभी हाथ-पैर काट डाले। उसके बाद दोनों व्याध अपने घर लौट गये।

राजकुमार सभी हाथ-पैर कट जाने पर भी जीवित रह गया। तब तक उस स्थान में महायोगी अचिन्तपा आ पहुँचे। राजपुत्र की दशा एवं उसकी पात्रता देखकर महायोगी अचिन्त (अचिन्त्य) ने उन्हें अभिषेक देकर (सम्बन्धित) अववाद (धर्मोपदेश) प्रदान किया। वहाँ से आगे एक कोस की दूरी पर कुछ गो चरानेवाले लोग दिखलाई पड़े, तो योगी ने उन लोगों के बीच जाकर कहा—तुम लोग वहाँ जाओ जहाँ गीध आकाश में घूम रहे हैं, उसके निकट एक वृक्ष के मूल में सभी अंग-प्रत्यङ्ग विच्छिन्न एक आदमी रह रहा है। तुम लोगों में से कौन उसके पास जा सकता है? उनमें से धूप बेचनेवाली जाति का एक लड़का था उसने स्वीकार

किया कि मैं जा सकता हूँ, पर मेरी यह शर्त है कि मैं आपका कार्य पूरा करूँगा और आप मेरा कार्य पूरा करें।

उसने अपनी सभी गायें योगी को सौंपकर गीध के उड़ान को लक्ष्य कर चला, जब वह एक दण्डवाले वृक्ष के पास पहुँचा, तो वहाँ उस (अंग-प्रत्यङ्ग कटे व्यक्ति) को देखकर पुनः अपनी जगह लौट आया। योगी अचिन्त से कहा— वह वहाँ वैसा ही है। योगी ने उस गोपालक से कहा— तुम्हारे पास खाने-पीने के लिए क्या-क्या है? उसने उत्तर दिया मुझे एक गोपालक स्वामी सांझ-सबरे खाने के लिए कुछ टुकड़े दे देते हैं। उसमें से आधा मैं, उस (अंगहीन व्यक्ति को जो एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में स्थित है) को पहुँचा दूँगा। (योगी ने कहा) यह उचित है। तुम उस चौराङ्ग का पालन करो। यह कह कर वे योगी चले गये।

तत्पश्चात् उस (बालक) ने वहाँ (जहाँ अंगरहित व्यक्ति था) वृक्ष के साथ ही एक झोपड़ी बनाई और उसके अन्दर उसे बैठाया, भोजन आदि देता रहा और उसका मल-मूत्र आदि सभी गन्दगी अपने हाथ से उठाकर साफ करता रहा। ऐसा करते उसे बारह वर्ष बीत गये। उसके बाद किसी समय वह (बालक) वहाँ झोपड़ी में गया, तो उस (निरङ्ग व्यक्ति) को उठ खड़े हुए देखा। अचम्भित होकर पूछा, तो उसने (निम्न दोहा) कहा—

उपाय कौशल्य परम गुरु द्वारा, धातु संवित्ति परिचय करा देने से।

मैं सर्वधर्म एक स्वभावेन अधिगत हुआ हूँ और अद्भूत है यह सुख-दुःख का अभाव।

मुझे इस प्रकार हाथ-पैर भी पैदा हो गये— कहकर वे आकाश में उठे, आकाश में ही बैठ कर गोपालक के उस बालक से कहा— मैं तुम्हें उपदेश दूँ? गोपालक ने कहा— मैं उपदेश नहीं चाहता हूँ। मेरा एक आचार्य था। उसने मुझे आपकी सेवा करने को कहा था, इसलिए मैंने आपका इस प्रकार आदर-सत्कार किया। यह कहकर गोपालक लड़का वापस चला गया और पूर्ववत् गो का पालन करता रहा।

पुनः एक दिन महायोगी अचिन्त गोपालक के पास आये। गो चरानेवाले बालक ने अपना पूर्व वृत्तान्त उन्हें सुनाया, तो योगी बहुत प्रसन्न हुए। पुनः अचिन्त योगी ने उस गो चरानेवाले बालक को अभिषेक एवं दीक्षा (उपदेश) देकर वे अन्यत्र चले गये। गोपालक अपने गुरु के उपदेश के अनुसार साधना (भावना) करता रहा। फलतः उसे 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ। एक दिन वह बैठा ही था कि अचिन्त उसके पास आ पहुँचे और उसे आदेश दिया—तुम्हारे द्वारा जब तक शतलक्ष (एक सौ लाख) प्राणियों का अर्थ (कल्याण) न हो जाय, तब तक तुम बुद्धत्व लाभ न करो।

अपने गुरु का आदेश पाकर, उसने सभी प्राणी, जो भी मिले, उसे अभिषेक कराकर उपदेश देना आरम्भ कर दिया। एक दिन महादेव ने उनके पास आकर कहा कि तुम्हें जो मिले, उसे अभिषेक मत करो। जो प्रार्थना करेंगे, केवल उनको ही अभिषेक दो, जो सत्त्व प्रज्ञाहीन हैं और जिनके अन्दर कोई श्रद्धा नहीं है, उनके लिए ऐसा करना उचित नहीं है। उसके बाद उसने यथा व्याकृत वैसा ही किया।

अनेक विनेय लोगों को मुक्त कराते और गोपालन कार्य करते रहने से उनका नाम भी 'गोरक्ष' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया।

आज भी (अभयदत्तश्री के काल में भी) जिस सत्त्व का उन गोरक्ष के साथ कर्म सम्बन्ध रहा हो (या भाग्यवान हो) उसे (उनके द्वारा) अभिषेक प्राप्त होता है। कर्म विपाक से जिसकी सन्तति विशुद्ध हो, उसे उनके डमरू की आवाज सुनाई पड़ती है और अन्य लोगों को सुनाई नहीं पड़ती और दिखलाई नहीं देती। वह अदृश्य रूप से आज भी रह रहे हैं।

गुरु गोरक्ष का वृत्तान्त समाप्त ॥

१०. गुरु चौरङ्गीपा का वृत्तान्त

गुरु चौरङ्गीपा, वही राजकुमार हैं जो अंग-प्रत्यङ्ग काटकर एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में रह रहे थे। उन्हें (गुरु) अचिन्त्य ने अभिषेक देकर दीक्षित किया और कुम्भक-वायु की साधना-विधि आदि द्वारा उसको साधना करने दिया। गुरु जी ने कहा कि 'जब तुम्हारी साधना से साध्य की सिद्धि हो जायगी तब तुम्हारा शरीर भी पूर्ववत हो जायेगा।' यह भविष्यवाणी कहकर अचिन्त्य अन्यत्र चले गये थे।

उन्होंने (तदनुसार) भावना की और बारह वर्ष के बाद जब उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई उसी समय (जहाँ राजकुमार के पिता रहते थे, वहाँ से) राजा के व्यापारी लोग बहुत से सोना, चाँदी, स्फटिक, मणि आदि अनेक रत्न लेकर उस ओर आ रहे थे। वे लोग चोर आदि के डर से रात को उस वृक्ष के समीप से गुजर रहे थे (जहाँ राजकुमार के हाथ पैर कटे थे), तो राजपुत्र ने उन व्यापारियों के पद-आहत के शब्द सुनकर कहा—तुम कौन?

व्यापारियों को शंका हो गई कि वहाँ कोई चोर है। वे कहने लगे कि हम लोग कोयला बनाने वाले हैं। राजपुत्र ने कहा कि वैसे ही हो। जब व्यापारी लोग अपने-अपने स्थान पर पहुँचे तो जिन बर्तनों में सोना आदि रखे हुए थे, वे सभी सोना-चाँदी; कोयला हो गये थे। इसे देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और सब लोग यह सोचने लगे कि ऐसा किसलिए हुआ और क्यों हुआ? उन व्यापारियों में से एक बुद्धिमान व्यक्ति ने (यह समझकर) बताया कि हम लोगों को रात में आते समय जिस व्यक्ति ने पूछा था कि तुम कौन हो? वह निश्चय ही एक सत्य-वचन-सिद्ध व्यक्ति होगा। अन्यथा ऐसा कौन कर सकता है?

उसके बाद वे (व्यापारी लोग) पुनः उस स्थान पर गये, जहाँ से वे रात को गुजरे थे और एक व्यक्ति के साथ प्रश्न-उत्तर हुआ था। उन्होंने वहाँ एक दण्ड वाले वृक्ष के मूल में हाथ-पैर कटे एक आदमी को बैठे हुए देखा। उसे (व्यापारियों ने) अपना पूरा पूर्व वृत्तान्त सुनाया और पुनः उनको सत्यवचन का प्रयोग करने के लिए कहा। उस राजकुमार ने कहा कि यह मेरा दोष नहीं है। यदि है, तो तुम लोगों का

माल (सम्पत्ति) पूर्ववत् हो जाये। जब व्यापारी लौटकर अपने-अपने स्थान पर पहुँचे; अपने माल-सम्पत्ति को देखा, तो वह पूर्ववत् सोना, चाँदी के रूप में देखा गया। तब वे सब आश्चर्य चकित होकर पूजा-सामग्री आदि लेकर पुनः उस राजकुमार के पास लौटकर आये और उनसे सभी वृत्तान्त सुनाया। सब सुनने के बाद राजपुत्र को उनके गुरु के द्वारा कथित भविष्यवाणी की याद आ गयी और वह कहने लगे कि ऐसा हो, तो मेरा शरीर भी पूर्ववत् हो जाये। ऐसा कहने के (तत्काल) बाद उनका शरीर पूर्ववत् हो गया।

तब उन्हें सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी और अनेक प्रकार के चमत्कार भी उन्होंने दिखाए।

दीक्षा आदि उपदेश के प्रति उनका रूख बहुत कड़ा होने से किसी को उन्होंने कुछ कहा नहीं, पर उस वृक्ष को जिसकी छाया में उन्होंने सिद्धि लाभ की थी, उसे उन्होंने अधिष्ठित किया था, तो वह वृक्ष अमर होकर अब भी विद्यमान है (ऐसा माना जाता है)।

अमरत्व प्राप्त गुरु चौरङ्गीपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

११. गुरु वीणापा का वृत्तान्त

वीणापा 'धहुर' (गौड़ देश) के रहनेवाले और जाति के क्षत्रिय थे। उनके गुरु 'बुद्धपा' थे और सिद्धि उन्हें इष्टदेव 'हेवज्र' से प्राप्त हुई।

घहुर (धहुर) देश के राजा को एक ही पुत्र हुआ था। माता-पिता एवं प्रजा सभी के लिए वह राजकुमार अत्यन्त प्रिय था। उनके पालन-पोषण आदि के लिए उन्हें अठधात्री को सौंप दिया गया। राजपुत्र के बड़े होने पर उनके लिए मनोविनोद करनेवाले बहुत से बाजा बजानेवाले भी लाये गये, वे सदा उनके साथ रहते थे। चित्त-संस्कार-वश तम्बूरा की आवाज के प्रति उनका मन एकाग्र रूप में स्थित हो जाता था और वे वीणा बजाने में सदा ही लीन होकर अन्य लौकिक कार्यों के प्रमत्त कुछ ख्याल तक नहीं रखते थे।

तब उनके माता-पिता, मंत्री और सभी प्रजा उनकी निन्दा करने लगे और कहने लगे कि इस राजकुमार का पालन-पोषण राजा के उत्तराधिकारी के लिए किया गया था। पर यह राज-कार्य न कर केवल वीणा की झंकार ध्वनि में ही तल्लीन होकर रह जाता है, अब इससे क्या होगा?

जब लोग ये सब चर्चा कर ही रहे थे, उस समय एक सुअभ्यस्त योगी 'बुद्धपा' उस राजकुमार के पास आ पहुँचे; तो योगी के प्रति उन्हें बड़ी श्रद्धा हो गयी। उन्होंने योगी को प्रणाम किया और प्रदक्षिणा करके उन्हें अपनी विविध बातों से अवगत कराया। योगी उस राजपुत्र के पास कुछ देर बैठे रहे और देखा कि यह उसके उस राजकुमार को सुविनीत करने का अवसर है।

योगी ने उस राजकुमार से कहा कि क्या तुम धर्म (कुछ धार्मिक अनुष्ठान) नहीं करोगे? राजकुमार ने उत्तर में कहा—हे योगी! 'धर्म ग्रहण करने में तो मैं बहुत तत्पर हूँ। पर मैं इस वाद्य-यंत्र तम्बूरे (वीणा) को त्याग नहीं सकता। यदि इसे बिना छोड़े कोई धार्मिक साधना करने का उपाय हो, तो मैं अवश्य ही आपका धर्म ग्रहण करूँगा।'



११. वीणापा

वीणापा, राजा के वेश में हैं। ये वीणा बजाने की मुद्रा में बैठे हुए हैं।



१२. शान्तिपा

शान्तिपा भिक्षु एवं पण्डित के वेश में हैं । सिर में पण्डितों के लिए निर्धारित टोपी है । गोरे रंग के हैं तथा शरीर में कुछ बुढ़ापा झलक रहा है ।

योगी ने कहा धर्म के लिए आवश्यक श्रद्धा और उद्यम हो, तो वीणा के बिना त्याग किये भी धार्मिक अनुष्ठान करने की विधि (उपाय) मेरे पास है। तब राजपुत्र ने कहा महाराज! मुझे, वही दें।

तब उस योगी ने उनकी अपरिपाक सन्तति के परिपाक के लिए अभिषेक दिया। उनके द्वारा दी गयी भावना (साधना- अभ्यास) की विधि इस प्रकार है—

“हे राजपुत्र! तम्बूरा (वीणा) के शब्द, कान में सुनाई पड़नेवाले विकल्प त्याग दो और चित्त-आलम्बन और शब्द-विकल्प दोनों को एक करके (उसी की) भावना करो”

उन्होंने वैसा ही किया, तो नौ वर्ष बाद उनके चित्त का मल विशुद्ध होकर दीपक के समान प्रभास्वरता का उन्हें अनुभव होने लगा और ‘महामुद्रा परम सिद्धि’ की प्राप्ति हुई। वह अभिज्ञा आदि अनेक गुण धर्मों से सम्पन्न होकर और वीणापा के नाम से सर्वत्र विख्यात हो गये।

उसके बाद ‘धहुर’^१ नगर के जनसमुदाय के सब लोगों को उन्होंने अनेक-अनेक (अपरमित) धर्म उपदेश दिये; अन्त में अपना अवदान आदि प्रवचन देकर उसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि को चले गये।

गुरु वीणापा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. ‘धहुर’ शब्द “गौड़” शब्द के अपभ्रंश तिब्बती उच्चारण का रूप है, ऐसा प्रतीत होता है।

१२. गुरु शान्तिपा का वृत्तान्त

गुरु शान्तिपा—जब मगध में राजा देवपाल (फल) राज कर रहे थे, उस समय विक्रमशिला में एक ब्राह्मण जाति से प्रव्रजित होकर आचार्य 'रत्नाकर शान्ति' नामक एक बड़े विद्वान् हुए थे। यह आचार्य सभी पञ्च महाविद्या स्थानों के सुविज्ञ विशेषज्ञ थे। उनकी विद्वता एवं सदाचार का यश दिग्-दिगन्तर तक व्याप्त हो गया था।

उस समय सिंहल द्वीप में 'कपिन' नामक राजा, जिसके पास अपने पुण्य कर्म-वश किसी भी प्रकार से काम-गुणों (भोग-विलास) का अभाव नहीं था, रहते थे। सिंहल द्वीप में पहले बुद्ध-शासन^१ नहीं था। जम्बूद्वीप से जो लोग आते थे, उनसे बुद्ध-शासन के गुणों के बारे में उन्होंने सुना रखा था, पर धर्मोपदेश देने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिल पाया था। एक समय उन्होंने सुना कि मगध में एक महान विद्वान् आचार्य रत्नाकर शान्ति विद्यमान हैं। महाराज कपिन एवं सिंहल द्वीप के सभी लोगों ने विविध भेंट के साथ निमन्त्रण के लिए दूत भेजे। वे लोग सीधे (विक्रमशिला) पहुँचे। दूसरे दिन वे लोग आचार्य से मिले और उन्हें प्रणाम अभिवादन किया। सिंहल राजा एवं वहाँ की जनता द्वारा प्रेषित भेंट में सोना, चाँदी, मौक्तिक, रेशमी वस्त्र आदि जो भी थे, आचार्य के चरणों में चढ़ा दिये। तब उन लोगों ने कहा कि हमारे राजा आदि लोगों का आपसे यह निवेदन है कि 'हम लोग छोटे द्वीप प्रत्यन्त जनपद में पैदा हुए हैं, अविद्या के अन्धकार से आवृत्त हैं, काम-अग्नि से जल रहे हैं, द्वेष-अग्नि से आतङ्कित हैं, विपरीत तिमिरादि से प्रज्ञा का प्रकाश आच्छादित है। महायान धर्म का मुक्ति मार्ग खो चुके हैं। अतः हमें महाकृपा करके सिंहल द्वीप के जगत् कल्याण के हेतु, आप वहाँ न पधारें तो अनुचित होगा (अर्थात् किसी भी दशा में आप वहाँ दर्शन दें) यही वहाँ के लोगों की प्रार्थना है। आचार्य ने अपने आशय को सम्मुख रखकर (समाधि के द्वारा परीक्षा करके) उन लोगों को अपने वहाँ जाने की स्वीकृति प्रदान की।

१. 'यहाँ मूल पाठ में सिंहल देश में पहले बुद्धशासन नहीं था।' यह पाठ है। पर शान्तिपा १० वीं सदी के आदमी थे। उस समय सिंहल देश में स्थविरवादी धर्म प्रचलित था। अतः उक्त पाठ का अभिप्राय वहाँ महायान धर्म में न होना ही है।

तत्पश्चात् आचार्य शान्तिपा दो हजार शिष्य-परिवार के साथ अनेक पिटकों से सम्बन्धित ग्रन्थों से घोड़े, हाथी लाद कर सिंहल देश की ओर रवाना हुए। नालन्दा, ओदन्तपुरी, राजगिरि और बुद्ध गया आदि क्रमशः पारकर सिंहल (जाने के मार्ग से) समुद्र के तट पहुँचे। वहाँ से उन लोगों को, जो दूत के रूप में आये थे, आगे भेज कर स्वयं अपने शिष्यों के साथ नाव पर बैठकर चले।

दूत लोगों ने आगे जाकर राजा को आचार्य के आने की सूचना दी, तो राजा मंत्री एवं जनपद के लोगों के साथ प्रथम भूमि प्राप्त योगी के समान आनन्दित हुआ और सब अपने लौकिक सभी कार्यों को त्यागकर समुद्र की ओर चल दिये और एक सप्ताह के उपरान्त (जब आचार्य सपरिवार समुद्र के समीप पहुँचे तो) लोगों को हाथी और छाता (जो लोगों ने आचार्य के लिए उठा रखे थे) आदि दिखलाई पड़े, तो लोगों ने सहर्ष रास्ते की सफाई की और समुद्र तट से अपने जनपद तक के रास्ते को चारों ओर से सजाया; नीचे रेशमी वस्त्र बिछा दिये। उसी पर पैर रखते हुए सशिष्य आचार्य पाद चले। राजभवन पहुँचने के बाद कपिन महाराज सहित सभी लोगों ने गन्ध-पुष्प आदि सब प्रकार की पूजा सामग्रियों से (सशिष्य आचार्य परिवार की) व्यापक पूजा की। उनके लिए शयन-आसन आदि की यथोचित व्यवस्था की। तीन आचार्य वर्ष तक वहीं त्रिपिटक सम्बन्धी उपदेश देते रहे।

जब आचार्य शान्तिपा के सशिष्य परिवार मध्य देश (मगध) (लौट) जाने के लिए तैयारियाँ करने लगे तो राजा कपिन तथा वहाँ के प्रमुख लोगों ने घोड़ा, हाथी, सोना, चाँदी, मौक्तिक आदि अपरिमित (धन की) दक्षिणा दी। उसके बाद आचार्य अपने शिष्यों के साथ मध्य देश लौटे। लौटते समय दो रास्ते में से वे लोग दीर्घतम (सबसे लम्बे) रास्ते से चले। क्रमशः रामेश्वर, जहाँ राजा राम ने अपनी पत्नी (सीता) को खोजते हुए लङ्कापुरी जाते समय महेश्वर का एक मन्दिर बनवाया था और जिसका नाम रामेश्वर पड़ा, जनपद में पहुँचे। वहाँ से (मगध आने के लिए) सात दिन बिना मानव बस्ती के रास्ता पार करना पड़ता था। आचार्य ने अपने साथियों से सात दिन तक की खाद्य-सामग्री ले जाने के लिए कहा और वैसा करके वे लोग चार दिन चले, तो (एक जगह पर) भाग्यशाली (व्यक्ति) 'कोदलिपा'

से मिले। उनके वृत्तान्त का उन्हीं के प्रसङ्ग में उल्लेख है। तत्पश्चात् आचार्य अपने शिष्य-परिवार के साथ क्रमशः विक्रमशिला पहुँचे।

तत्पश्चात् समय के बीतते आचार्य बहुत वृद्ध हो गये, जिसके कारण उन्हें आँखों से दिखलाई नहीं पड़ता था। शरीर के जोड़ भी काफी ढीले पड़ गये थे और शिष्यवर्ग उनका सेवा-सत्कार कर रहे थे। उन्हें स्थूल भोजन भी नहीं पचता था। वे केवल भैंस के दूध के दही में शक्कर (चीनी) मिलाकर सेवन किया करते थे। कुल मिलाकर जब आचार्य सौ वर्ष के समीप हो रहे थे, उस समय सिंहल द्वीप से लौटे, आचार्य को बारह वर्ष बीत रहे थे, तब तक वे विकल्प (प्रपञ्चों) के साथ ही चल रहे थे। उस समय तक कोदलिपा ने निर्विकल्प भावना द्वारा उस बारह वर्ष की अवधि में 'महामुद्रा' नामक परम सिद्धि प्राप्त कर ली और वे सहज समाधि में स्थित हो गये।

जब वे उस (समाधि) से उठे, तो सभी डाकिनियों एवं देवेन्द्रशक्र ने मूर्धन्य मार्ग से अमृत डालकर उन्हें संतृप्त कर दिया, जबकि आचार्य शान्तिपा अपने शिष्यों द्वारा ही पूजित थे। सभी डाकिनियों-देवताओं ने एक साथ यह वचन कहा— 'यह (कोदलिपा) तो साक्षात् वज्रसत्त्व ही हैं। इनके प्रभाव से देवताओं के सभी काम-गुण वहाँ आ गये हैं।'

कुलदिपा ने कहा— गुरु के उपदेश मिलने से पहले मैंने बाहर के पहाड़ खोदे थे और जब से गुरु के उपदेश मिले, मैंने चित्त का (आध्यात्मिक) पहाड़ खोदा इसलिए सिद्धि का लाभ हुआ।

उसके बाद देवेन्द्रशक्र आदि ने (कुलदिपा को) उन्हें, (त्रयस्त्रिंशत्) लोक देवस्थान आने के लिए निवेदन किया, तो 'कुदलिपा' ने अनिच्छा प्रकट की और कहा—मैं तो गुरु के चरणों में प्रणाम करने जाऊँगा। बुद्ध से भी अधिक (मेरे लिये) कृतज्ञता के भाजन गुरु हैं। क्योंकि मेरे लिए गुरु ही बुद्ध है, गुरु ही धर्म हैं तथा गुरु ही संघ है। मैं इन तीनों परम शरणों की शरण में जाता हूँ और परमत्रिशरण मुझे अधिष्ठित करें।

यह कहकर उन्होंने ज्ञान-चक्षु से अपने गुरु को देखा और वहाँ से मगध के बीच छः माह का रास्ता होता था, पर वह एक ही क्षण में वहाँ से विक्रमशिला आ

पहुँचे। उन्होंने ज्ञानकाय (योगीकाय) द्वारा अपने गुरु की प्रदक्षिणा कर उन्हें प्रणाम किया। गुरु और उनके समीप बैठे शिष्यों ने उन्हें नहीं पहचाना। 'कुदलिपा' ने (अपने पुराने) विपाककाय को साक्षात् दिखाकर पुनः प्रणाम किया और अनेक प्रणाम एवं प्रदक्षिणा करके आचार्य के चरण में सिर से स्पर्श किया, तो (आचार्य) शान्तिपा ने पूछा कि आप कौन हैं? (कुदलिपा ने कहा) मैं गुरुजी का शिष्य हूँ। (आचार्य ने कहा कि) मेरे अनेक शिष्य हैं, आपको मैं पहचान नहीं सका हूँ। पुनः (उन्होंने) कहा—मैं कुदलिपा हूँ।

जब एक दूसरे को पहचान लिया तो दोनों ने शान्त वातावरण में आपस में एक दूसरे से अनेक प्रासङ्गिक बातें की। गुरु ने शिष्य से पूछा कि आपने क्या-क्या गुण और विशेषता पायी है? कुदलिपा ने उत्तर दिया मेरे साक्षात् गुरु, आपके उपदेश के अनुसार साधनानुष्ठान करने से मुझे 'महामुद्रा धर्मकाय' की प्राप्ति हुई है। गुरुजी (शान्तिपा) ने कहा—मैंने तो प्रधानतः बोलने का ही काम किया है, साधना को प्रधानता नहीं दी। अभी तक तात्त्विक अर्थ की प्राप्ति नहीं हो पायी है। पर तुमने प्रधान रूप से साधना की, बोलने को प्रधानता नहीं दी, फलतः तुमको तात्त्विक अर्थ का साक्षात्कार हो गया।

मैंने तुम्हें जो उपदेश दिया है, वह भी भूल गया हूँ। अब उपदेश भी दो और गुण-विशेषताओं की जो प्राप्ति हुई है, उन सभी धर्म को मुझे प्रदान करो।

'कुदलिपा' ने अपने गुरु को धर्म के अनेक गुण सुनाये और जो उपदेश पहले गुरु ने उन्हें दिये थे (जिनके कारण वह सिद्ध बने) वह भी पुनः उन्हें प्रत्यर्पित कर दिया।

गुरु (शान्तिपा) ने भी पुनः बारह वर्षों तक उपदेशों का अनुशरण कर साधना अनुष्ठान किए। तदुपरान्त रत्नाकर शान्ति को भी 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ और अनेक प्रकार के जगत् कल्याण करने के बाद वह भी खेचर भूमि के लिए रवाना हो गये।

गुरु रत्नाकर शान्तिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१३. गुरु तन्तिपा (तनापा, तन्त्रीपा) का वृत्तान्त

गुरु तन्तिपा, सेन्धोनगर (सिन्धुनगर) नामक स्थान^१ के एक जुलाहा थे। उनके अनेक पुत्र (सन्तान) थे। उन लोगों ने बुनाई का कार्य चलाया, परन्तु अन्त में वे बहुत धनी हो गये। उन्होंने अपने सभी पुत्रों को जाति-अनुकूल विवाह कराकर अलग-अलग व्यवस्था कर बसा दिया। फलतः उस जनपद में जुलाहा जाति का अपरिमित विस्तार हो गया।

जब उस जुलाहे की अपनी पत्नी मर गयी और स्वयं भी नवासी वर्ष का वृद्ध हो गया तो अधिक वृद्ध हो जाने के कारण शरीर चलाने (हिलाने-डुलाने) में भी वह असमर्थ हो गया था। उसका पालन-पोषण क्रमशः बारी-बारी से उसकी पुत्र-वधुओं द्वारा ही हो रहा था। उसका बुढ़ापा एवं बुढ़ापे के आचरण को देखकर सब लोग उसकी हँसी-मजाक उड़ा रहे थे और उसका अपमान किया करते थे। इस दशा को देखकर उसकी पुत्र-वधुओं ने एक-दूसरे से विचार-विमर्श करके यह तय किया कि हमारे यह श्वसुरजी बहुत वृद्ध हो गये हैं, लोगों को इन्हें देखकर घृणा आने लगती है, हम सब लोगों से भी इनको बुरा-भला कहकर बहुत पाप हो जाता है। अतः इन्हें कहीं उद्यान में घास की झोपड़ी बनाकर बैठाया जाय और भोजन पानी आदि हम लोग बारी-बारी से पहुँचा दिया करेंगी। अन्त में सब इस बात के लिए सहमत हुए और उस बुढ़े को अपने उद्यान में घास की झोपड़ी बनाकर वहाँ पहुँचा दिया गया।

बुढ़ा उस झोपड़ी में अपने भाग्य के सहारे दिन बिता रहा था एक समय गुरु जालन्धरपा उस जनपद में पहुँचे और उस जुलाहे के सबसे ज्येष्ठ पुत्र के पास पहुँचकर उससे कहा—‘मुझे भोजन दो’। (जुलाहा पुत्र भी सादर) ‘आप यहीं

१. तारानाथ के अनुसार—‘तन्तिपा’ मालव जनपद के आवन्ति (अवन्ति) नामक नगर के रहने वाले थे। यह धर्मकीर्ति के जीवन के अन्तिम काल में हुए थे, इन्हें सिद्धि प्राप्ति धर्मकीर्ति के देहान्त के बाद हुई। इनके गुरु सिद्ध जालन्धरपा थे। (तारा इ, पृ० १८२-८३)



१३. तन्दीपा (तन्तीपा)

तन्तीपा या तन्दीपा अर्थात् तन्तु से कपड़ा बुनने वाले, सिर पर जटा बाँधे हुए हैं। कपड़ा बुनने के उपकरण से कपड़ा बुन रहे हैं। ये अत्यन्त वृद्धावस्था में हैं।



१४. चमरीपा

ये जूता बनाने के काम को बीच में छोड़कर उसी जगह पर समाधि लगाये हुए हैं। उनके हाथ समाहित-मुद्रा में हैं। कन्धे के ऊपर भावना-सूत्र लगा हुआ है। आँखें सामने की ओर स्थिर हैं।

विराजिये'—कहकर स्वयं कमरे के अन्दर चला गया। अपनी पत्नी से कहकर उसने अनेक प्रकार के भोज्य-पदार्थ बनवाये। उसकी पत्नी ने उससे कहा— आप उन (महानुभाव) को अन्दर बुलाएँ। पति ने वैसा ही किया और गुरु अन्दर पधारे। जब भोजन कार्य समाप्त हो गया और जालन्धरपा अन्यत्र जाने के लिए तैयारी कर रहे थे, तो जुलाहा-पत्नी (गृहस्वामिनी) ने (नम्रता से) कहा— गुरुजी, आप अन्यत्र न जाकर यही सोयें (हम लोग व्यवस्था करेंगे)। 'जलन्धरपा' ने उत्तर दिया—मैं गृहस्थ मनुष्य के मकान में नहीं सोऊँगा। इस पर उस (गृहस्वामिनी) ने कहा—ऐसा हो तो आप हमारे उद्यान में सोयें। यह कहकर वे उन्हें अपने उद्यान में ले गये और वहाँ दीपक, शयन आदि की व्यवस्था किये।

जब जालन्धरपा, उद्यान में पहुँचे तो वृद्ध जुलाहे ने वहाँ कुछ लोगों के आने के शब्द सुने, पर उनको यह पता नहीं था कि कौन आया है, क्योंकि आँख से दिखलाई नहीं देता था। वह वृद्ध पूछने लगा—यहाँ शब्द करने वाला कौन है? आचार्य (जालन्धरपा) ने कहा कि मैं एक अतिथि हूँ। आप कौन हैं? (बुड्ढे ने उत्तर दिया) मैं उन सभी जुलाहों का बाप हूँ। जब मैं जवान था, उनकी सब चल-अचल सम्पत्ति का स्वामी था, पर अब (मैं बुड्ढा हो गया हूँ तो) मेरे सभी पुत्र एवं पुत्रवधुएँ मेरा मजाक उड़ाते हैं और मुझसे घृणा करते हैं तथा अन्य लोगों के देख लेने के डर से मुझे इस उद्यान में छिपाकर रखा है। यही सांसारिक धर्मों की निस्सारता है।

तत्पश्चात् जालन्धरपा ने (वृद्ध) जुलाहे से कहा— सभी संस्कृत धर्म अनित्य हैं। भगवत (सांसारिक) सभी (धर्म) दुःखमय हैं। समस्त धर्म निरात्म है, शान्त एवं सुख निर्वाण है। अतः मरने के लिए पथ्य-धर्म तुम नहीं चाहोगे?

वृद्ध जुलाहे ने उत्तर दिया— जी हाँ, अवश्य चाहिए।

जालन्धरपा ने उस वृद्ध जुलाहे को 'हेवज्र' के मण्डल में अभिषेक देकर भावना-अभ्यास में लगा दिया। सुबह गुरु जालन्धरपा वहाँ से अन्यत्र चले गये।

उस (वृद्ध) ने भी अपने गुरु की दीक्षा को मन में रखकर पहले की तरह अपनी पुत्रवधुओं का अपलाप करना बन्दकर दिया और अपनी जबान को संयम में

रखते हुए बारह वर्षों तक अपनी साधना करता रहा। इससे उसे अनेक प्रकार के गुण (सिद्धियाँ) प्राप्त हुए, पर यह बात कोई और आदमी नहीं जानता था।

एक दिन एक विशेष घटना घटी उस (वृद्ध) के बड़े लड़के को एक उच्चकोटि का रेशमी वस्त्र बुनाना था। बुन कर उसे सँवारने के कार्य में व्यस्तता के कारण पिता को खाना पहुँचाना भूल गया। रात में उसकी पत्नी को इसकी याद आयी कि आज उस बुढ़े के लिए खाना नहीं पहुँचाया है। उससे वह मन से दुःखी और लज्जित होकर यह हाल अपने पति आदि अन्य लोग न जानें, इस ख्याल से खाना लेकर वहाँ पहुँच गयी। पर वहाँ तो उस झोपड़ी में जहाँ वृद्ध को रखा था, अन्दर से अग्नि की तेज रोशनी निकल रही थी। वृद्ध पन्द्रह के लगभग देवकन्याओं से घिरा हुआ था और विशेष उत्तम खाद्य-सामग्री चारों ओर रखी हुई थी वे देवकन्याएँ मनुष्य लोक में नहीं मिलने वाले अनेक प्रकार के आभूषणों से सजी हुई दिखाई दीं। वह जुलाही आश्चर्यचकित होकर जल्दी से लौट गई और अपने पति से कहने लगी कि अपने वृद्ध पिता को देख आओ।

उसने सोचा कि मेरे पिता मर गये होंगे—रोने लगा। फिर अन्य बहुत से लोग आ पहुँचे और सब लोग उद्यान में उन्हें देखने चले। जैसे पहले उसकी पत्नी ने देखा था, वैसा ही सब लोगों ने देखा और सब लोग आश्चर्य में होकर घर लौटे। उस वृत्तान्त को लोगों को सुनाया तो सब लोग यह कहकर बैठे कि वह कोई अमानुषिक होगा।

दूसरे दिन सैन्धवनगर के सब लोग उन्हें देखने गये और सब ने उन्हें प्रणाम किया, तो वह बाहर निकल आये। लोगों ने देखा कि उनका शरीर परिवर्तित होकर एक षोडशवर्षीय के समान हो गया था। उनके काय से अपरिमित रश्मियाँ निकल रही थीं और सब लोग, उसे सहन नहीं कर पा रहे थे। उनका शरीर विमल दर्पण के समान होकर सभी दृश्य स्वच्छ और प्रभास्वर के रूप में प्रतिभासित हो रहा था।

उस समय उनका नाम तन्तिपा (तन्तुपा, तन्त्रीपा, तन्त्रिपा आदि) विख्यात हो गया। अनेक जनकल्याण कार्य करने के बाद सैन्धवनगर (सिन्धुनगर) के अपरिमित लोगों के साथ उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

अतः जो अपनी श्रद्धा द्वारा गुरु की दीक्षा (उपदेश) का एकाग्रचित्त से अभ्यास करे, तो अति वयस्क वृद्ध होने पर भी इसी जन्म में 'महामुद्रा परमसिद्धि' को पा सकता है। (अर्थात् परमसिद्धि लाभ करने में आयु बाधक नहीं होती)

गुरु तन्तिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१४. गुरु चमरिपा का वृत्तान्त

‘चमरि’ से तात्पर्य (चमड़े के काम करने वाले) जूता बनाने वाले से है। इनका वृत्तान्त इस प्रकार है—पूर्वी भारत के जनपद विष्णुनगर नामक स्थान में एक समय सभी अट्टारह प्रकार के कलाकार पूर्ण रूप से भरे रहते थे। उनमें इस जाति से जूता बनाने वाले चमरिपा स्वयं भी विष्णुनगर में सभी नये-पुराने जूते बनाने का काम करते थे। इसी प्रकार वह अपना समय बिता रहे थे। एक समय एक (बौद्ध) भिक्षु^१ उनके यहाँ पधारे। उन्होंने अपना जूता बनाने का काम छोड़कर उन भिक्षु के चरणों में प्रणाम किया और उनसे अनेक प्रकार के योगक्षेम सम्बन्धी बातें की। उन्होंने कहा कि मैं सांसारिक दुःखों से बहुत दुःखी हूँ। कुछ धार्मिक कार्य करना चाहता हूँ, पर अभी तक कल्याण मित्र (गुरु) के न मिलने से मैं धर्म में प्रवेश नहीं कर पाया हूँ। अब आप मुझे इह लोक और परलोक दोनों के लिए उपकारी धर्म (की दीक्षा) दें।

भिक्षु ने कहा कि यदि आप धर्म की साधना करने में समर्थ हों तो मैं आपको दीक्षा दे सकता हूँ।

चर्मकार ने उस भिक्षु से कहा— मैं तो नीच जाति का हूँ, मेरे घर में आप भोजन करने की अनुमति देंगे?

भिक्षु ने उत्तर दिया— आज रात को आकर खाऊँगा।

उसने अपनी पत्नी आदि अपने घर के सभी लोगों को (रात में) भिक्षु के आने की सूचना दे दी। जब उस रात्रि में वह भिक्षु वहाँ आये, तो चर्मकार ने उन्हें आसन (आदि) लगाकर बैठाया और पैर धोना, आदि (सेवा) करके उन्हें उत्तम भोजन खिलाये, अपनी पत्नी, पुत्री आदि सब लोगों को उस महात्मा की सेवा में लगाकर उनका सत्कार किया।

१. यहाँ “बौद्ध भिक्षु” से तात्पर्य चीवरधारी भिक्षु नहीं है; अपितु भिक्षा माँगने वाले योगी हैं।

उनकी सेवा से प्रसन्न होकर भिक्षु ने सपत्नीक चर्मकार एवं उसके परिवार को अभिषेक एवं दीक्षा देकर (अनुगृहीत किया और) कहा—

‘क्लेशादि ही चर्म’ हैं, मैत्री करुणा की गोद में,
गुरु-दीक्षा की सूई एवं अष्ट धर्मों के त्याग रूपी तन्तु द्वारा
सम्यक् रूप से मिला देने पर, अनाभोगिक
फल रूपी जूता बनता है।

‘अद्भुत धर्मकाय जूता, मिथ्यादृष्टि से नहीं ज्ञात होगा। हर्ष एवं हर्ष-हीन दोनों के हेयोपादेयता से रहित तन्तु (सुतली) बनाओ। सभी प्रकार के विकल्प एवं निमित्त को चम्बरा (चर्म) बना दो। (वे सब) करुणा के अञ्चल में त्याग दो। गुरु के उपदेश एवं अपना अनुभव रूप सुतली के द्वारा (उसे) मिलाकर अनाभोगिक धर्मकाय का जूता बनाने की भावना करो।’

इस तरह की दीक्षा एवं शिक्षा दी जाने पर उसने पूछा कि इस प्रकार से भावना करने से सिद्धि के क्या-क्या लक्षण होंगे?

गुरु जी ने उत्तर दिया—सर्वप्रथम संसार के प्रति घृणा का लक्षण पैदा होगा, उसके बाद सभी भूत (भौतिक) क्रमशः धर्मता में विलीन होने का लक्षण आने लगेगा। यह कहकर भिक्षु वहाँ से अन्तर्धान हो गये।

चर्मकार ने अपना पुराना मकान त्याग दिया और एक निर्जन स्थान में रहने का प्रबन्ध किया और भावना द्वारा घोर साधना आरम्भ कर दी। उन्होंने गुरु के वचनानुसार क्रमशः सभी लक्षण (अपने अन्दर) उत्पन्न होते देखे।

उन्हें इस प्रकार का ज्ञान होने लगा कि अविद्या सहित मूल षट् क्लेशों (की स्थिति) को उपमा के माध्यम से (जो गुरु ने उन्हें बतलाए हैं) उनके यथास्वरूप का अवबोध उन्हें हो गया है। गुरु के उपदेशरूपी जूता पहना और सभी अविद्या भूमि पर व्याप्त होकर (हावी होकर) बारह वर्ष तक उन्होंने साधना की। फलतः उनके चित्त, अविद्या आदि समस्त मलों से विशुद्ध होकर उन्हें ‘महामुद्रा परमसिद्धि’ की प्राप्ति हो गई।

बारह वर्षों तक रात-दिन जूता बनाने का काम और गुरु के उपदेश दोनों को अद्वैतभाव से (चित्त में) भावना करने पर, उनके सभी जूता बनाने के कार्य आदि विश्वकर्मा आदि देवताओं ने कर दिया। विष्णुनगर के लोगों को यह पता नहीं लगा कि उक्त चर्मकार साधना एवं भावना कर रहे हैं। उन्हें विशेष गुणों के लाभ होने का भी किसी को पता नहीं चला। एक दिन उनका काम करनेवाला एक आदमी उन्हें देखने उनके निवास स्थान पर आया, तो देखा कि—चर्मकार तो समाधि में लीन बैठे हैं, पर जूता बनाने का उनका कार्य 'कारीगर (देव कारीगरों) विश्वकर्मा' कर रहे थे। इस दृश्य को देखकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। (वह लौट गया) एक दूसरे से कहते-सुनाते यह बात अन्त में सब लोगों में फैल गयी और सभी ने उनका दर्शन किया। सबने उनसे उपदेश (दीक्षा आदि) देने के लिए निवेदन किया।

तब उन्होंने लोगों को गुरु-चरण की सेवा अनुशंसा (प्रशंसा एवं महिमा) आदि अनेक प्रकार के उपदेश दिये। उन्होंने विष्णुनगर के सभी लोगों को अनेक प्रकार से धर्म-उपदेश भी दिये और अपरिमित जगत्-कल्याण के कार्य किये। उनका नाम 'योगी चमरिपा' विख्यात हो गया। अन्त में उसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु चरमरिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१५. गुरु खड्गपा का वृत्तान्त

खड्गपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह मगध के रहनेवाले तथा जाति के शूद्र थे। इनको गुरु जोगिचपत्रि (योगी चरपटि) से सामान्य (लौकिक) खड्ग सिद्धि की प्राप्ति हुई थी।

मगध नगर का एक किसान-कर्म से अपनी जीविका चलानेवाला गृहस्थ अपने पैतृक कार्य को त्यागकर सब समय चौर कर्म (चोरी) करता था। रात दिन चोरी में ही लगे रहने से (उस काम में) उसे चित्त-एकाग्रता प्राप्त हो गयी। एक दिन वह चोर मगध के एक नगर में चोरी करने के लिए गया, पर उस दिन उसको कुछ नहीं हाथ लगा। लौटते समय वह एक श्मशान से गुजर रहा था। उस श्मशान में चरपटिपा नामक योगी से उसकी भेंट हो गयी। चोर ने उससे पूछा— आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

योगी ने उत्तर में कहा— सांसारिक जन्म-मरण से भयभीत होकर मैं यहाँ (कुछ) भावना (साधना) कर रहा हूँ।

चोर ने कहा—भावना करने से क्या फल मिलेगा?

योगी ने कहा—भावना का फल अभ्युदय और निःश्रेयस् सुख की प्राप्ति होती हैं। क्या तुम भी इस धर्म को ग्रहण नहीं करोगे?

चोर ने कहा—मेरे अन्दर धर्म के प्रति छन्द (झुकाव या श्रद्धा) तो है, पर श्मशान में भावना (साधना) करते रहने की मुझे फुरसत नहीं है। मैं तो सब समय चोरी का ही काम करता हूँ; राजा, मंत्री या गृहस्थ स्वामी आदि किसी से चोरी के द्वारा कुछ द्रव्य मिल जाता है, पर उस द्रव्य के पीछे उन लोगों से लड़ना भी होता है। अतः उन सब लोगों द्वारा मेरा दमन न हो सके; ऐसी एक सिद्धि मुझे चाहिए।

योगी ने उस चोर को अभिषेक दिया, दीक्षा दी और उससे कहा—तुम यहाँ से जाओ मगध में 'गोरसमकर' (गौरीशंकर) नामक स्तूप के अन्दर देवालय है,

उसके अन्दर आर्य अवलोकेश्वर की एक प्रभावशाली मूर्ति रखी हुई है। तुम तीन सप्ताह अर्थात् इक्कीस दिन तक रात-दिन बिना भूमि पर नीचे बैठे उसकी परिक्रमा करो, खाना भी खड़े-खड़े ही खाओ। मूर्ति के पैर के नीचे यदि एक सर्प आते देखोगे तो बिना डरे उसे सिर से पकड़ लो। इसी से तुम्हें सिद्धि का लाभ हो जायगा।

इस प्रकार की दीक्षा देकर योगी ने उसे साधना में लगाया।

वह चोर भी योगी के दिये हुए उपदेश एवं वचन के अनुसार उस स्थान पर जाकर विधिवत अनुष्ठान करता रहा और साधना करने में लग गया। इक्कीस दिन के बाद सच में सर्प निकल आया। उसने सर्प को सिर से पकड़ा, तो सर्प एक तलवार (खड्ग) बन गया। उस प्रकाशमान ज्ञान की तलवार हाथ में मिलते ही चोर का चित्त मलों से विशुद्ध हो गया और उसे खड्गसिद्धि का लाभ हो गया। उस समय से उनका नाम योगी खड्गपा प्रसिद्ध हो गया।

इस प्रकार उन्हें आठ सामान्य सिद्धियों में से 'खड्ग सिद्धि' का लाभ हुआ। इसके बल से काय, वाक् और चित्त के सभी भ्रान्तिमूलक मल विशुद्ध हो गये। उन्होंने मगध के सभी प्रकार के सत्त्वों (सभी लोगों) के लिए इक्कीस दिन तक धर्मोपदेश दिया। अन्त में कुछ (अपने) अवदान भी कहे। उसके बाद वे उसी शरीर के साथ वहाँ से खेचर भूमि चले गये।

गुरु खड्गपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



१५. खड्गपा

खड्गपा हाथ में तलवार लेकर आकाश में उड़ रहे हैं। उनके नीचे की ओर छाये हुए बादल, उनकी उड़ने की क्रिया को परिलक्षित कर रहे हैं। नीचे की धरती पर एक स्तूप है, जिसके नीचे सर्प निकल रहे हैं और स्तूप के अन्दर आर्यलोकेश्वर की मूर्ति विद्यमान है।



१६. नागार्जुन

नागार्जुन भिक्षु वेश में हैं। ये अत्यन्त सुन्दर और साँवले रंग के हैं। उनके सिर के मध्य भाग से बुद्ध की भाँति छोटी-सी उष्णीष उभरी है। सिर के पीछे की ओर सर्पों के फन लहरा रहे हैं। हाथ प्रवचन या उपदेश-मुद्रा में हैं।

१६. नागार्जुन का वृत्तान्त

गुरु नागार्जुन या आचार्य नागार्जुन^१ का वृत्तान्त इस प्रकार है—इनका जन्मस्थान पूर्वी भारत के अन्तर्गत काञ्ची^२ नामक जनपद का अंग 'कहोर' था और जाति के यह ब्राह्मण थे। सिद्धि की प्राप्ति इन्हें आर्या तारा से हुई।

कहोर (नामक जनपद) नगर की आबादी संख्या पन्द्रह हजार थी। नागार्जुन ने सब लोगों का सामान छीनना और सब लोगों का दमन करना आरम्भ कर दिया, तो (एक समय) वहाँ के ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर (विचार विमर्श करने के बाद, यह) तय किया कि इसने हम सब लोगों से बहुत अनुचित व्यवहार किया अब इससे लड़ने की अपेक्षा, इस नगर को त्यागकर हमारा आन्ध्रप्रदेश में चला जाना ही अच्छा होगा।

जब यह बात आचार्य ने सुनी तो सभी ब्राह्मणों के पास आदमी भेजकर उन्हें यह सूचित कर दिया कि आप लोग अन्यत्र प्रदेशों में न जायँ। अन्यत्र बहुत दुःख भोगना पड़ेगा। हमारी सारी द्रव्य-सम्पत्ति आप लोग ले लें। यह कहकर उन्होंने सभी अपनी सम्पत्ति उन्हें दान कर दी और आचार्य 'कहोर' से पलायन कर शीतवन (सिलवाई छल) पार करके नालन्दा पहुँचे। वहाँ परिव्राजक (भिक्षु) की दीक्षा ग्रहण करके उन्होंने सभी पाँच विद्या संस्थानों में अध्ययन किया। अन्त में वे सर्वोत्कृष्ट सुविज्ञ विद्वान् बन गये।

तत्पश्चात् भाषण से ऊब कर वे मुख्य रूप से साधना में लग गये। फलतः उन्हें आर्या तारा का दर्शन प्राप्त हुआ। वह धर्मपीठ नालन्दा का संघ एवं जीविका

१. ये सरह के शिष्य, श्री शबरपा के गुरु थे। चक्रसंवर सामान्यार्थ वृत्ति० पृ० ३६, बुस्तोन ग्रन्थ० ६ ('छ' पुट)।

२. पूर्व भारत में 'काञ्ची' नामक स्थान होने की कहीं कोई सूचना नहीं मिलती। 'काञ्ची' दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर है। अतः यहाँ 'पूर्व' शब्द विचारणीय है। दूसरा नागार्जुन के पूर्व भारत में जन्म होने का वृत्तान्त, इसके अतिरिक्त कहीं नहीं मिलता। सम्भवतः यह केरल प्रदेश के पूर्व है।

छोड़कर अन्यत्र चले गये। परन्तु एक दिन नगर में भिक्षाटन करके पुनः अपने पुराने स्थान में लौट आये। सोचने लगे कि मेरे इस तरह के विचार से सत्त्वार्थ (लोक कल्याण का कार्य) सम्पादन नहीं हो सकेगा। विशेष गुण प्राप्त करके मुझे लोक कल्याण करना होगा। तत्पश्चात् वह राजगिरि चले गये। वृषभभूत (वृषभ नामक भूत) की बारह भूतनियों का जप किया, तो पहले दिन भूकम्प हुआ, दूसरे दिन (धरती से) पानी (निकला), तीसरे दिन अग्नि का प्रज्वलन हुआ, चौथे दिन आँधी उठी, पाँचवें दिन शस्त्र (तलवार, छुरा आदि) की वृष्टि हुई, छठे दिन वज्रपात होने लगा, सातवें दिन सभी भूतनियों ने एकत्र होकर (उनकी साधना में) विघ्न आरम्भ कर दिया। पर आचार्य की अचल समाधि के कारण उनका कुछ नहीं बिगड़ा। उन्हें विचलित करने में वे असमर्थ हो गयीं। सभी भूतनियाँ आचार्य के सम्मुख आकर पूछने लगीं कि तुम्हें क्या चाहिए? हम लोग क्या दे सकती हैं?

आचार्य ने आदेश दिया कि मुझे कुछ नहीं चाहिए केवल मेरे लिए जीविका का प्रबन्ध करो। वे लोग उन्हें चार अञ्जलि (कुछ माप) चावल (भात) और पाँच प्रकार के शाक नित्य देने लगीं। इस भोजन को ग्रहण करते हुए आचार्य ने बारह वर्ष तक साधना की। सोचने लगे कि यदि एक सौ आठ भूतनियाँ (विद्यायें) वश में हो जायँ, तो जगत् का कल्याण हो सकता है। तत्पश्चात् घन्दशिला नामक गिरि^१ में चले गये और वहाँ उन्होंने यह सोचा कि 'इस पहाड़ को सोने का बना दिया जाय, तो जगत्-कल्याण कर सकूँगा। उन्होंने पहले उस पहाड़ को लोहे के रूप में परिवर्तित किया। उसके बाद उसे ताम्र (ताँबे) के रूप में बदल दिया। तब आर्य मञ्जुश्री ने अपने मुख से कहा—यदि तुम इस पहाड़ को सोना बना दोगे तो लोगों में अनेक विवाद खड़े हो जायेंगे और पाप का ही अर्जन होगा।' उसके बाद उस कार्य को उन्होंने स्थगित कर दिया। कहा जाता है कि वह पहाड़ आज भी नील-ताम्र के रंग में ही है।^२

१. घन्यशील पर्वत।

२. पहाड़ को सोना बनाने के इतिवृत्ति में कुछ पौराणिकता झलकती है।

उसके बाद वे दक्षिण भारत के श्रीपर्वत की ओर चले गये। जाते समय रास्ते में वे एक नदी के तट पर पहुँचे। गो चराने वाले बहुत से लड़के उन्हें मिले और उन्होंने उनसे पानी से पार निकले का रास्ता पूछा कि कहाँ से पार करना है? उन लड़को ने खराब रास्ता, जहाँ से कीचड़ और जल-जन्तुओं का खतरा है, दिखाया। एक दूसरे ग्वाले के लड़के ने कहा कि भन्ते! यह रास्ता बहुत खराब है। आप यहाँ से चलें, कहकर वह लड़का आचार्य को (साथ) लेकर चल दिया। जब दोनों पानी के बीच में पहुँचे, तो आचार्य ने अनेक जल-जन्तु के खतरे आदि का चमत्कार से भय दिखलाया। गो चरानेवाला लड़का कहने लगा—जब तक मैं न मर जाऊँ, आप डरें मत। आचार्य ने निर्मित भय समाप्त कर दिया। नदी के पार जाने के बाद आचार्य ने गो चरानेवाले उस लड़के से कहा— मैं 'आर्य नागार्जुन हूँ' तुमने पहचाना? उसने उत्तर दिया बात तो सुनी है, पर मैं आपको पहचान नहीं सका।

आचार्य ने गो चरानेवाले से कहा—तुमने मुझे इस नदी से पार करा दिया, अब तुमको मैं जो चाहो इनाम दूँगा। गो चरानेवाले (लड़के) ने कहा— आप मुझे राजा हो जाने का उपाय दें। आचार्य ने उस स्थान में एक शालवृक्ष पर कुछ पानी छिड़क दिया और तत्काल वह वृक्ष एक बहुत बड़ा हाथी बन गया। उस लड़के को राजा बनाकर, उस हाथी पर आर्य नागार्जुन ने सवार करवा दिया। लड़के ने कहा— राजा के लिए सेना की भी आवश्यकता होगी। आचार्य ने कहा— जब यह हाथी खुंखार आवाज करेगा, तत्काल सेना भी आ जायगी, वैसा ही हुआ। राजा का नाम सालभन्ध (शालवाहन) प्रसिद्ध हो गया^१ और रानी का नाम हुआ सिन्धी। राजा के राज्य का नाम था अहितन जनपद। यह अति सुन्दर एवं विशेष नगर था। इस राजा के राज्य में कर देने वाले लोग चौरासी लाख थे। इतनी जनसंख्या के वे राजा थे।

आचार्य वहाँ से दक्षिण श्रीपर्वत चले गये। वहाँ भावना एवं साधना-अनुष्ठान करते बहुत समय बीत गया। सालभन्ध (शालवाहन) राजा बार-बार अपने गुरु का स्मरण आने से रह नहीं सके और श्रीपर्वत पर जाकर आचार्य को प्रदक्षिणापूर्वक

१. लामा तारानाथ के अनुसार आचार्य ने अपने जीवन के उत्तरकाल में दक्षिण में जाकर सातवाहन राजा (भद्रसातवाहन) को अपना विनीत शिष्य बनाया।

प्रणाम एवं अभिवादन करके उनसे कहा— यह राजश्री तो बहुत क्षीण प्रयोजन वाली और अनेक दोषों से भरी हुई है। अतः यह हमको नहीं चाहिए। मैं आचार्यजी के पास ही बैठूँगा।

आचार्य ने उनसे कहा— राजश्री मत छोड़ो, रत्नावली को अपना गुरु बनाकर राजकाज करो, राज्य का पालन करो। अकाल मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिए तुम रसायन का प्रयोग करो।

राजा ने कहा— मुझे आचार्यजी के साथ रहने का अवसर हो, तो राज्य और रसायन चाहूँगा, अन्यथा नहीं। यह कहकर राजा ने वहाँ से जाना नहीं चाहा। वहीं रहने लगे। आचार्य ने राजा को अनेक उपदेश एवं दीक्षा दी और उन्होंने अपने स्थान में जाकर रसायन सिद्ध किया। वह एक सौ वर्ष तक राज करते रहे। उस अवधि में उनके राज्य के सभी लोग धन-धान्य से समृद्ध हो गये और पशु-पक्षी तक सुख से जीवन बिताने लगे। आचार्य ने भी बुद्ध-शासन के विस्तार के अनेक कार्य किये। इस शुभ कार्य का भार सुरतीश्वर कामदेव सहन नहीं कर सके। उन्होंने अनेक प्रकार के विघ्न एवं अमङ्गलकारी विनाशलीलाएं आरम्भ कर दीं। सूर्य-चन्द्र का प्रकाश मन्द कर दिया, फल-पुष्प, पत्ती अपने आप असमय से गिरने लगे। अनावृष्टि, अकाल, महामारी, शस्त्र-अस्त्र का प्रयोग और वन, उद्यान आदि का सूखना आदि अनेक अशुभ घटनाएं घटने लगीं। इस दृश्य को देखकर शालवाहन राजा बहुत चिन्तित हो उठे और सोचने लगे कि यह सब और कुछ नहीं मेरे गुरु के सम्बन्ध में कुछ विघ्न-बाधा आने के ही लक्षण हैं। यह सोचकर अपने पुत्र सिद्धि कुमार (सिन्धि कुमार) को अपना राज्य सौंपकर कुछ थोड़े सेवकगण लेकर वह श्रीपर्वत पर पहुँचे।

आचार्य ने पूछा कि हे पुत्र! तुम किसलिए यहाँ पधारे हो? राजा ने उत्तर दिया— मेरा और सत्त्वों (अन्य प्राणियों) का भाग्य क्षीण हो गया है, क्या?

जिन-शासन का क्षय हो गया है क्या?

कृष्णपक्ष (पापपक्ष) का क्या विजय हो गया है?

महाकरुणा जो चन्द्रमा सदृश प्रकाशमान है,

क्या काली घटा और मेघ द्वारा आवृत्त हो रहा है?

वज्रवत् मेरे सत् गुरु में, संस्कार स्वभाव पाप लक्षण हो रहा है?

यह होते देखकर मैं यहाँ आया हूँ। महाकृपा दृष्टि से मुझे अधिष्ठित करें।
आचार्य ने उत्तर में कहा—सभी जातिधर्म मरणशील हैं।

सभी संयोग का वियोग होता है। सभी सञ्चित सम्पत्ति का क्षय हो जाता है। सभी संस्कार का अन्त अनित्य होता है। अतः इसमें अरति (दुःख) की क्या बात है। तुम रसायन (दवाई) लेकर अपने स्थान पर जाओ। पुनः उस राजा ने कहा—यदि गुरुजी के पास रसायन का सेवन करते रहने की अनुमति हो, तो उचित है, अन्यथा मुझे रसायन नहीं चाहिए। यह कहकर वह बैठ गया। आचार्य ने (बोधिसत्त्वदान अनुष्ठान के अनुसार) सभी भोग्य सम्पत्ति का दान करना आरम्भ कर दिया, तो ब्रह्मदेव ने एक साधारण ब्राह्मण का रूप धारणकर आचार्य से 'सिर' का दान माँगा। आचार्य ने भी उसे अपना 'सिर' देना स्वीकार किया। सालवाहन राजा ने आचार्य की मृत्यु के शोक-भय से पीड़ित होकर आचार्य के निधन से पहले ही उनके चरण में अपना 'सिर' रखा और मर गया। सब लोगों ने उस ब्राह्मण की निन्दा की।

जब आचार्य ने 'सिर' दान देने के लिए काटा तो किसी भी प्रकार से 'सिर' का छेदन नहीं हो पाया, बाद में एक कुश के तृण से काटकर 'सिर' (ब्रह्म के छद्म रूप) ब्राह्मण को दे दिया। उस समय सभी वन वृक्ष सूख गये और लोगों के पुण्य का भी बहुत क्षय हो गया।

उसके बाद पहले की आठ यक्षिणियों के द्वारा आचार्य के शरीर को सुरक्षित कर देने से उनका शरीर अब भी विद्यमान माना जाता है।

आचार्य के धार्मिक कुल के रूप में आचार्य नागबोधि बैठे (श्रीपर्वत में) उनका काय प्रकाशमान चन्द्रमा के समान अब भी रात को दिखलाई पड़ता है। आचार्य का शरीर जो आठ यक्षिणियों द्वारा सुरक्षित है, जिन मैत्रेयबुद्ध के शासन काल में पुनः उत्थित होकर जगत् कल्याण करेगा ऐसा कहा जाता है।

गुरु नागार्जुन का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. आचार्य के 'सिर' को दान के रूप में माँगने वाले खुद शातवाहन राजा के राजकुमार होने के वृत्तान्त भी मिलते हैं।

१७. गुरु कणहपा का वृत्तान्त

गुरु 'कणहपा'^१ का वृत्तान्त इस प्रकार है। इन्हें आचार्य कणहपा अर्थात् इनका नाम आचार्य कृष्णाचार्य पाद कहा जाता है। इनका जन्म-स्थान सोमपुरी था^२। उनके गुरु जालन्धरपा और वह स्वयं जाति से लेखक कायस्थ (सम्भवतः ब्राह्मण) थे^३।

वह राजा देवपाल द्वारा निर्मित सोमपुरी विहार के एक भिक्षु थे। पर गुरु जालन्धरपा से मिलने के बाद उन्होंने उन्हें अभिषेक देकर हेवज्र के मण्डल में दीक्षित किया और उपदेश देकर साधना में लगाया। बारह वर्ष तक (निरन्तर) साधना करने के बाद, एक समय भू-कम्पन के साथ हेवज्र के देवमण्डल का दर्शन हुआ, तो उन्हें बड़ा हर्ष और आनन्द हुआ। उस समय डाकिनियों ने (प्रकट होकर) उनसे कहा— 'कुलपुत्र! यह (हेवज्र मण्डल का दर्शन) कोई विशेष लक्षण नहीं है। इससे तुम्हें घमण्ड उत्पन्न न हो। क्योंकि (इसमें) सत्य-तत्त्व का साक्षात्कार नहीं है।

एकबार (अपने समीप के) एक बहुत बड़े पत्थर के शिलाखण्ड पर उन्होंने पैर रखा, तो पैर नीचे धँस गया। उनके मन में (बहुत) अभिमान हो गया कि अब मुझे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो गयी हैं। उस समय भी डाकिनियों ने उन्हें रोका। जब वह अपने साधना आसन से बाहर आये, तो उनके पैर धरती से बिना स्पर्श किये एक हाथ की ऊँचाई में आकाश पर चलने लगे। उस समय भी उन्हें वही अभिमान हुआ, पर डाकिनियों ने उन्हें पुनः पूर्ववत् रोका।

अपने ऊपर के आकाश में सात छत्रों का घूमते चलना, सात डमरुओं का आकाश से स्वतः शब्द करते हुए निकलते देखकर उन्होंने कहा—मुझे सिद्धि प्राप्त

-
१. 'कृष्ण' नाम के बहुत बड़े पण्डित और सिद्ध हुए थे, पर यह जालन्धर पाद के शिष्य कृष्णपा ही थे।
 २. पद्म० इति० के अनुसार इनका जन्म-स्थान भंगाल के विशेष भाग ओडिविषय (ओडियान) था।
 ३. जाति के यह वैश्य थे। (पद्म० इति०—पृ० ८१) इस प्रकार इनके वर्ण के सम्बन्ध में सर्वत्र मतैक्य नहीं है।



१७. कृष्णपा

कृष्णपा (कृष्णाचार्य) साँवले रंग के हैं। हाथ में डमरू और कपाल (नरकपाल) धारण किये हुए हैं। अस्थि (हड्डी) निर्मित छः प्रकार के आभूषणों से आभूषित हैं और व्याघ्र-चर्म अधोवस्त्र के रूप में पहने हुए हैं। वैताली या राक्षसी पर सवार हैं।



१८. आर्यदेव

आर्यदेव भिक्षु एवं पण्डित के वेश में हैं। सामने की ओर एकटक देखते हुए हाथ में 'करना' नामक वृक्ष की एक बहुत बड़ी पत्ती लिए हुए हैं।

हो गई है, अब जगत् कल्याण के लिए राक्षस देश लंकापुरी जाना है। तुम लोगों को भी जाना होगा। तत्पश्चात् तीन हजार अपने शिष्य परिवार के साथ वे लंका की ओर प्रस्थान किये। जब वे समुद्र तट पर पहुँचे तो आचार्य ने शिष्यों को समुद्र तट पर रोक दिया और स्वयं पानी में बिना डूबे समुद्र के ऊपर से चलने लगे। उस बीच उनके मन में पुनः यह अभिमान होने लगा कि 'मेरे गुरु को भी इतनी शक्ति नहीं थी, पर मुझे इतनी शक्ति प्राप्त हो गयी है।' मन में इस तरह के विचार आते ही वह पानी में डूब गये। जब पानी की तरंगों द्वारा उन्हें समुद्र के तट पर फेंका गया, उन्होंने आकाश में देखा, तो उनके गुरु जालन्धरपा आकाश में विराजमान दिखाई पड़े। गुरु ने उनसे कहा कि 'कण्हपा तुम कहाँ गये हो, क्या हो गया तुम्हें?'

कण्हपा ने बड़ी लज्जा के साथ कहा—मैं जगत् कल्याणार्थ लंकापुरी जा रहा था, पर मन में गुरु से भी मैं अधिक गुण वाला हूँ, यह अभिमान पैदा होने से मेरी शक्ति क्षीण हो गयी और मैं पानी में डूब गया हूँ।

गुरु ने कहा—'अब तुम्हारी इस साधना से कुछ उपकार नहीं होगा। मेरे देश के 'सालिपुत्र' नामक स्थान में धर्मराज धर्मपाल बैठे हैं। वहीं पर मेरा एक जुलाहा शिष्य है। तुम वहीं जाकर वह जो कहे, वही करते रहना।

तब वहीं उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि गुरुजी ने जो कहा है, वही करूँगा। साथ ही उनके पूर्व उपदेशों को भी मन में रखा, तो तत्काल पूर्ववत् पैर का पृथ्वी से ऊपर जाना, अपने ऊपर के आकाश में सात छत्र का घूमना, आकाश में डमरू की आवाज सुनाई देना, पत्थर पर पैर रखने से नीचे धँसना आदि प्रारम्भ हो गये। इन सभी शक्तियों के प्राप्त हो जाने के बाद वे वहाँ से अपने तीन हजार^१ शिष्य परिवार के साथ सालिपुत्र जनपद में पहुँचे। वहाँ उन्होंने शिष्यों को एक ओर रखा और स्वयं उस जुलाहे (जो गुरु जालन्धरपा ने बताया था) को खोजने गए। रास्ते में उन्हें बहुत से जुलाहे मिले। उन लोगों को जब आचार्य ने देखा, तो उन लोगों की तन्तु

१. शिष्यों की संख्या तीन हजार की जगह पद्म० के इति० में ७२ मिलती है। (पद्म० इति० पृ० ८२)

टूटती थी और वे लोग स्वयं उन्हें जोड़ते थे। उन्होंने सोचा कि यह सब वह नहीं है, जो गुरुजी ने उन्हें बतलाया था। उसके बाद नगर के अन्त में एक जुलाहा बसा हुआ था, वहाँ जाकर उन्होंने देखा, तो वह जब कपड़ा बुन रहा था तो तन्तु टूटने पर पुनः उसे स्वयं नहीं जोड़ना पड़ता था। सभी टूटी हुई तन्तुएं स्वयं जुड़ रही थीं। आचार्य ने निश्चय किया कि यही है, जो गुरुजी ने बताया था। उन्होंने उस जुलाहे के चरणों में प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम किया।

जुलाहे ने उनसे कहा जो मैं कहूँगा, उसे तुम वैसा ही मानोगे? आचार्य कृष्णाचार्य ने कहा— हाँ, वैसा ही मानूँगा। जुलाहे ने उन्हें साथ लिया और दोनों एक श्मशान में पहुँचे। वहाँ, एक आदमी का शव पड़ा मिला। जुलाहे ने कहा 'तुम इसका मांस खा सकोगे? यदि खा सकते हो, तो इसे खाओ? कण्ठपा छुरा निकालकर खाने के लिए बड़े और काटना आरम्भ किया, तो जुलाहे ने कहा— 'अभी ठहरो? अर्थात् अभी तुम्हें मांस खाने की अवस्था प्राप्त नहीं है, रुक जाओ'। उसने स्वयं सियार का रूप धारण किया और उस आदमी के शव का मांस खा डाला। तत्पश्चात् वह जुलाहा फिर आदमी बन गया और कृष्णाचार्य से कहने लगा कि इस प्रकार का निर्माण कार्य (चमत्कार द्वारा) करने की स्थिति (क्षमता) जब प्राप्त हो जाती है, तब मांस खाना होता है।

उसके बाद जुलाहे ने टट्टी की और उसमें तीन टिकिया (गोलियाँ) निकलीं। उनमें से एक कृष्णपा को दी और कहा कि इसको खाओ। 'लोग इसकी निन्दा करेंगे' यह कहकर कृष्णपा ने खाने की अनिच्छा व्यक्त की। एक गोली जुलाहे ने खुद खा ली; एक आकाश के देवताओं ने ले ली और एक धरती के नीचे नाग लोगों ने ले ली।

वहाँ से दोनों आचार्य नगर वापस लौट आये। जुलाहे ने पाँच गण (माषक) की मदिरा ली और खाने की चीज भी। उसने कृष्णपा से कहा—अब अपने शिष्य परिवार को भी बुलाओ, हम सब एक गण-चक्र की व्यवस्था करेंगे। कण्ठपा ने सोचा कि यह तो एक आदमी के खाने के लिए भी भर पेट नहीं है, इससे हमारा, आचार्य और तीन हजार शिष्यों का क्या होगा? यह सोचते वे सब यहाँ

आ गये। योगी के प्रभाव से लड्डू, भात, आदि इष्ट-भोग्य वस्तु से सब प्रकार के बर्तन भर गए। इस गण-चक्र को खाते-पीते सात दिन बीत गये, पर भोग्य-सामग्री फिर भी समाप्त नहीं हुई। कण्हपा ने कहा कि आपके खाने-पीने की सामग्री समुद्र के समान है, हम लोगों से इतना नहीं खाया जायगा, कहकर शेष भोजन की विधि द्वारा 'शेष गण भोज्य'^१ बाहर करके कण्हपा सपरिवार जाने के लिए तैयार हो गये, तो जुलाहे ने कहा— 'अहो, जैसे बाल पृथग् जन, स्वतः स्वयं का विनाश किया करते हैं, उसी प्रकार प्रज्ञा एवं उपाय से रहित योगी की भी दशा होती है। अब अन्यत्र जाने पर भी कुछ नहीं होगा। छत्र-डमरू आदि अल्प सिद्धियाँ हैं। अब भी धर्मता का ज्ञान नहीं हुआ, साधना ही करो।' पर कण्हपा इन बातों के प्रति अनिच्छा व्यक्त करते हुए 'भधोकर' नामक स्थान पर चले गये।

पूर्वी सोमपुरी से लगभग सौ योजन के पार एक नगर था, उसके पास वन था, वहाँ गए। वहाँ—जम्बिर^२ नामक फल का एक वृक्ष था। उस वृक्ष के समीप एक लड़की (कुमारी) बैठी हुई थी। कण्हपा ने उससे कहा— मुझे फल दो। पर उस लड़की ने उन्हें फल देना नहीं चाहा। आचार्य ने उस फल-वृक्ष पर एक दृष्टि डाली तो वृक्ष पर लगे सभी फल भूमि पर गिर गये। लड़की ने पुनः उन फलों पर एक दृष्टिपात किया तो सभी फल वृक्ष में अपनी-अपनी जगह पर ऊपर चिपक गये। इससे कण्हपा बड़े कुपित हुए और लड़की पर मन्त्र फूँक दिया और लड़की के सभी अंग-प्रत्यङ्ग से खून गिरने लगा और वह धरती पर गिर पड़ी।

१. 'गण-अवशेष भोज्य' या 'शेष-गण' यह तांत्रिकों के पारिभाषिक शब्द हैं। भोजन विशेष नाम 'गणचक्र' है। इसमें केवल वही लोग सम्मिलित हो सकते हैं, जिन्होंने पञ्चमकारों के सेवन करने में विशेषता पाई हो। इसका उपक्रम एक सीमा विशेष या अवस्था विशेष के अन्दर ही होता है। इसके बाद जो बची खाद्य-सामग्री होती है, वह भी हर किसी को नहीं दी जा सकती। अतः इसे विशेष आज्ञाकारी धर्मपालों एवं दिग्पालों को ही दिया जाता है। (मूल पतित भाष्य, चोड्खापा- 'क' पुट)

२. मूल ग्रंथ में इसका नाम 'लिखि' लिखा है। पर कुन खेन पद्य करपो के इतिहास में 'जम्बि' लिखा है। यह अन्दर से खट्टा पानी निकलनेवाला फल था। (पद्० इति० पृ० ८३)

वहाँ आस-पास के सभी लोगों ने कण्हपा की निन्दा करते हुए कहा— बौद्ध लोग बड़े कृपालु होते हैं, पर यह योगी आदमी को मारने जा रहा है। यह सुनकर कण्हपा ने चिन्तित होकर लड़की के प्रति दयापूर्वक अपने मंत्र (की शक्ति) का दमन कर दिया और साथ ही अपनी रक्षा के लिए जो उपाय किया जाता है, वह भी छोड़ दिया। जब लड़की उठी तो उसने भी कण्हपा को मंत्र फूँक दिया^१ फलतः कण्हपा को भी ऊपर (मुँह) और नीचे दोनों से खून स्रवित होने लगा और वह बीमार पड़ गये। कण्हपा ने 'मन्धे' नामक एक डाकिनी, जो उनके साथ थी, से कहा—मेरे इस खून उलटी होने वाली बीमारी की दवा दक्षिण के श्रीपर्वत पर मिलती है, उसे लाकर मुझे दो। 'वहाँ से दक्षिण श्रीपर्वत के बीच की दूरी छः मास का रास्ता था, पर मन्धे उसे एक दिन में पार करके दवा ले आई और सातवें दिन जब वह अपने नगर पहुँच रही थी, उस लड़की ने, जिसने कण्हपा पर मन्त्रपात कर दिया था, एक बुढ़िया का रूप धारण किया और रास्ते में जाकर रोती हुई बैठ गई^२। मन्धे ने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो? बुढ़िया ने कहा—'क्यों न रोयें, योगी कण्हपा मर गये हैं अब वह नहीं हैं, मन्धे ने दवा भूमि पर फेंक दी। बुढ़िया उस दवाई को लेकर चल दी। डाकिनी मन्धे घर पहुँची, तो कण्हपा को जीवित देखकर (बड़ी दुःखी हुई) कण्हपा ने कहा—दवा कहाँ है? मन्धे ने अपना वृत्तान्त सुनाकर कहा—अब दवा नहीं है।

कण्हपा ने अब जीवित रहने के उपाय न देखकर सात दिन तक अपने शिष्यों की सभा में धर्म-प्रवचन किया और अन्त में (वज्र) वाराही सिरच्छेदा (छिन्न

१. कुन ख्येन पद्म कारपो के अनुसार—कण्हपा को मंत्र फूँकने वाली लड़की जम्बिका फल की रक्षक नहीं थी। वह देवीकोट की एक धान कूटने वाली लड़की थी। (पद्म इति० पृ० ८५)

२. बुढ़िया के वृत्तान्त की जगह अन्यत्र रास्ते में बहुत सी लड़कियों के एक झील में स्नान करने की बात कही गई है। उन लड़कियों ने कण्हपा के शिष्यों को जो दवाई लेकर लौट रहे थे, यह कहकर कि कण्हपा अच्छे हो गए हैं, स्नान के लिए रोककर दवा छिपा दी। (पद्मकर०-इति० पृ० ८५)

मस्तका) से सम्बन्धित उपदेश दे दिया। अपने कर्म-विपाक वाले शरीर को वहीं छोड़कर कण्हपा खेचर भूमि चले गये^१।

इस घटना से डाकिनी मन्धे ने अत्यंत क्रुद्ध होकर (बदला लेने की इच्छा से) उस लड़की (जिसने आचार्य को मंत्र द्वारा मार डाला) को तीनों लोक में ढूँढा, किन्तु वह नहीं मिली। अन्त में वह 'शम्मिल' नामक एक वृक्ष के खोखले के अन्दर बैठी मिली और वहीं उसे मंत्र फूँककर मार डाला।

इस प्रकार परम योगियों को भी अभिमान एवं ईर्ष्या परम सिद्धि प्राप्त करने में बहुत बड़े बाधक बनते हैं, यह जानना चाहिए।

गुरु कण्हपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. वह उक्त घटना को डाकिनी का विघ्न या व्यवधान समझ गये और इस शरीर के साथ परम सिद्धि की प्राप्ति न देखकर अन्तराभव की अवस्था में परमसिद्धि की आशा करते हुए परिनिर्वृत्त हो गये। (पद० कर० इति पृ० ८५-८६)

१८. गुरु कर्नरिपा (कनापा) का वृत्तान्त.

कर्नरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। चार योनियों में से इनका जन्म उपपादुक योनि में हुआ। उन्होंने श्री. नालन्दा में आकर परिव्राजकत्व ग्रहण करने वालों का उपाध्यायत्व किया। इनके शिष्यों की संख्या एक लाख के लगभग हो गई। पर स्वयं अनेक आचार्यों के शिक्षा-दीक्षा, अववाद करने पर भी विशेष ज्ञान नहीं प्राप्त कर सके। दक्षिण भारत में आचार्य नागार्जुन के रहने का समाचार सुनकर उन्हें उनके प्रति श्रद्धा हुई, इच्छा हुई कि उनके चरणों में जाकर कुछ सीखें। इससे प्रेरित होकर वे नालन्दा से चले। एक दिन वह समुद्र के तट पर पहुँचे जहाँ आर्य मञ्जुश्री एक मछुआ का रूप धारणकरके बैठे हुए थे। कर्नरिपा ने उन्हें देखा और (वह समझ गये कि यह मछुआ विशेष व्यक्ति है) उन्हें प्रणाम पूर्वक मण्डल आदि अर्पित करके उनसे निवेदन किया—मुझे दक्षिण देश के तन्त्र और पीठ में, जहाँ आचार्य नागार्जुन हैं, वहाँ जाना है, आप हमें रास्ता दिखा दें जिससे हम वहाँ जा सकें। उस मछुआ ने कहा— वहाँ जाओ, जहाँ गहन वन दिखलाई पड़ रहा है, वहाँ आचार्य रसायन सिद्ध करने में बैठे हैं।

उस (मछुआ) के निर्देशानुसार वह वहाँ गये, तो वहाँ आचार्य रसायन की बहुत-सी द्रव्य-सामग्री इकट्ठी कर उसका प्रयोग कर रहे थे। यह देखकर, प्रणामकर अभिवादन पूर्वक अनुग्रह करने के लिए उनसे प्रार्थना की। आचार्य ने भी उन्हें अनुगृहीत करने की अनुमति दे दी।

आचार्य ने उनको गुह्य-समाज (तन्त्र के मण्डल में) अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा अववाद देकर अपने पास में ही रहकर भावना (साधना) करने दी। वैसा ही कर, कर्नरिपा वहीं बैठ कर साधना करते रहे।

उस वन से थोड़ी दूरी पर एक नगर बसा हुआ था। एक दिन दोनों आचार्य वहाँ भिक्षाटन करने गये। कर्नरिपा को बहुत अच्छा और स्वादिष्ट भोजन मिला और आचार्य को उतना अच्छा स्वादिष्ट नहीं मिला। इसको देखकर आचार्य ने कहा— तुम्हारा यह स्वादिष्ट भोजन, जो लोग दे रही हैं, वे स्त्रियाँ तुम पर आसक्त होकर दे

रही हैं, यह अच्छा नहीं है। इसे तुम वृक्ष के पत्ते पर मत लो, सुई से लेकर, सुई की नोक से जितना ले सको, उतना ही लो। दूसरे दिन उन्होंने वैसा ही किया, तो भात का एक ही दाना सुई पर लगा और वही खाकर (कर्नरिपा) रह गये।

दूसरे दिन स्त्रियों ने गेंहू के आटे से बहुत अच्छी पूड़ियाँ बनाई और उन पर अनेक स्वादिष्ट शाक रखकर उसे सुई की नोक पर चढ़ा कर आचार्य (कर्नरिपा) को दिया। कर्नरिपा ने उसे ग्रहण किया और अपने आचार्य को खिलाया। साथ ही स्वयं भी खाये। आचार्य ने पूछा—यह तुमने कैसे ग्रहण किया? कर्नरिपा ने उत्तर दिया—जैसा गुरुजी ने निर्देश दिया है, मैंने वैसा ही करके ग्रहण किया है। तब आचार्य ने कहा, 'तुम नगर में मत जाओ, इस मकान में ही रहो। उन्होंने भी वैसा ही किया। उस मकान के समीप एक वृक्ष पर रहने वाली वृक्षदेवी प्रकट होकर मकान के अन्दर आई और उसने उन्हें अनेक स्वादिष्ट भोजन खिलाया तथा प्रणाम अभिवादन पूर्वक बातें भी की।

कर्नरिपा ने उसका भी भोजन (दान) ग्रहण करके अपने गुरु को खिलाया। गुरु ने पुनः पूछा कि तुमको इस तरह का भोजन कहाँ से मिला? उन्होंने कहा कि यह वृक्षदेवी ने दिया है। आचार्य ने इस बात की परीक्षा की और वृक्षदेवी के पास जाकर देखा, तो देवी का शरीर दिखलाई न पड़ा, पर उसके बाजू सहित हाथ दिखलाई पड़े। आचार्य ने उससे पूछा कि मेरे शिष्य को तुम साक्षात् शरीर दिखाती हो, पर मुझे नहीं दिखाती, यह क्यों?

वृक्षदेवी ने उत्तर दिया (वृक्ष से यह वाणी निकली) कि आप के अन्दर सभी प्रहातव्य क्लेश विद्यमान हैं, पर आपके शिष्य समस्त ग्रहणीय क्लेशों से विशुद्ध हो चुके हैं, उन्होंने मुझे पूर्ण रूप से देख लिया है।

तत्पश्चात् आचार्य शिष्य दोनों में विचार-विमर्श करके यह तय हुआ कि रसायन खाना चाहिए। आचार्य ने कर्नरिपा अर्थात् आर्यदेव को रसायन औषधि दिया और स्वयं भी खाये। कर्नरिपा ने उस दवा को एक सूखे वृक्ष पर लेप दिया, फलतः वृक्ष से छाल-पत्तियाँ निकलने लगी। आचार्य ने जब इसे देखा तो थोड़ा-सा हँस कर कर्नरिपा से कहा—तुमने मेरी रसायन औषधि लकड़ी पर लगा दी, अब हमारा रसायन ले आओ। कर्नरिपा ने कहा कि यदि गुरुजी चाहें, तो अवश्य ले आऊँगा।

यह कहकर उन्होंने एक सुराही पानी से भर दी और उसमें थोड़ा-सा अपना मूत्र छोड़ दिया। उस पानी को फिर सूखी लकड़ी पर लगाया, तो पूर्ववत् उसमें छाल और पत्तियाँ उगने लगी। मालूम हो गया कि यह भी रसायन बन गया है। उसे लेकर आचार्य के पास गये और वह रसायन आचार्य को दे दिया। आचार्य ने कहा—यह इतना अधिक बन गया, कहकर उसे सूखे वृक्ष पर लगाया तो छाल और पत्तियाँ निकल आयी। यह तो आचार्य का अपने शिष्य के अन्दर ज्ञान उत्पन्न हुआ या नहीं, इसकी परीक्षा थी।

जब उनको यह मालूम हो गया कि शिष्य के अन्दर ज्ञान उत्पन्न हो चुका है तब उन्होंने कहा कि अब तुम संसार में मत बैठो। यह सुनते ही वह आकाश मार्ग से जाने के लिए भूमि से उड़े। कर्नरिपा के साथ जो पहले से ही (वृक्षदेवी) थी, उस लड़की को उन्होंने कहा कि आपने किस आशय से मेरी सेवा की है? लड़की ने उत्तर दिया मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैंने केवल आपकी आँख के प्रति आसक्त होकर आपकी सेवा की है, अतः मुझे आपकी आँख चाहिए। आचार्य ने अपनी एक आँख निकालकर उसे दे दी। फलतः सर्वत्र यह प्रसिद्ध हो गया कि—आर्यदेव 'एकाक्ष' (काने) हैं, इसीसे उनका नाम 'कानपा' प्रसिद्ध हो गया।

आर्यदेव अथवा कर्नरिपा के नागार्जुन के, उपदेश के अनुसार साधना-अभ्यास करने से चित्त के सभी मल विशुद्ध हो गये। सन्तति अति विशुद्ध एवं विमुक्त हो जाने से गुरु की वाणी सुनते ही आकाश में सात ताल के वृक्ष की बराबर ऊँचाई पर बैठकर, अपने अनेक लोगों को धर्म का उपदेश दिया और आशय और अध्याशय परिपाक कराया। जब अपने नीचे, अपने गुरु को रहते देखा, तो आकाश से ही नीचे सिर करके आचार्य को प्रणाम किया। जब ऊपर के आकाश में उड़े तो ऊपरी देवताओं ने पुष्प वृष्टि की। वहीं से वह अदृश्य हो गये।

आचार्य आर्यदेव अथवा कर्नरिपा, दो नाम वाले का वृत्तान्त समाप्त ॥

१९. थकनपा का वृत्तान्त

गुरु थकनपा (ठगने वाला) का वृत्तान्त इस प्रकार है। इनका जन्म-स्थान पूर्वी भारत था। ये जाति के शूद्र थे, कर्म से अन्त (सबसे नीचे) क्रम में जीविका चलाने वाले थे।

वह एक दिन किसी वृक्ष की शाखा पर बैठकर यह सोच रहे थे कि लोगों से कैसे झूठ बोला जाय। इस तरह की कल्पना में लीन थे, तब तक उनके पास सुनिपुण एक भिक्षु पधारे और उन्होंने कहा— तुम यहाँ क्या करने बैठे हो? उसने उत्तर दिया— आर्य मैं यह नहीं कह सकता। भिक्षु ने कहा— तुम झूठ न कहो और बोलो। यदि तुम झूठ बोलोगे, तो उसके परिणाम स्वरूप तुम नरक योनि में पैदा होगे। कर्म-निष्यन्द फल झूठ बोलने की इच्छा तुम्हारे अन्दर बराबर चलती रहेगी और तुम लोगों के अविश्वास के पात्र बनोगे। उसका अधिपति फल परलोक में अपने जीव पर खेत में हल की तरह चलेगा। भोग्य निष्यन्द-फल, मुख से दुर्गन्ध आना, वचन का असत्य आदि होना और उसका पौरुष-फल, लावणिक-भूमि में पैदा होना, फल अन्नादि के रस हीन स्थान में पैदा होना आदि कहा गया है।

वह व्यक्ति झूठ बोलने के विपाक परिणाम, जो पहले नहीं सुने थे सुनकर बहुत भयभीत हो गया। सच बोलने लगा— आर्य! मैं तो थकनपा (ठगने वाला) नाम का आदमी हूँ। सदा झूठ ही बोला करता हूँ। सच तो एक बाल के शतांश (सौवें भाग) भी नहीं बोलता हूँ। अभी भी किस को क्या और कैसे झूठ बोलूँ, यही सोच रहा हूँ।

भिक्षु ने उससे कहा तुम कुछ धर्म-कार्य नहीं कर सकते हो?

थकनपा ने कहा धर्म तो अवश्य करना चाहता हूँ, किन्तु आरम्भ से झूठ बोलने की आदत बन चुकी है, अतः इसको छोड़ नहीं पाऊँगा।

भिक्षु ने पुनः कहा— झूठ बोलने पर भी धर्म चल सकता है। ऐसा उपदेश (उपाय) मेरे पास है। थकनपा इससे बहुत प्रसन्न हो गया और कहने लगा कि (वही) धर्म हमें चाहिए, आप दें।

उस समय भिक्षु ने उसके (थकनपा के) विचार, आशा और अध्याशय के अनुसार कान से पानी निकालने की विधि नामक (जैसे कान में पानी घुस जाने पर निकाला जाता है ऐसे) शिक्षा दी और झूठ ही झूठ का प्रतिपक्ष हो, ऐसी भावना के लिए उसे तैयार किया। इस सिलसिले में उन्होंने प्रथमतया (साधना) सन्तति परिपाक के हेतु उसे (थकनपा को) अभिषेक प्रदान किया। उनके द्वारा दिये, साक्षात् उपदेश इस प्रकार हैं—

‘समस्त ज्ञेय धर्म आदि काल से ही झूठ मात्र हैं। देखे, सुने जानेवाले आदि छः विषयों के छः इन्द्रियों के द्वारा तुमने जो कुछ भी अनुभव किये हों, वे सब के सब झूठ हैं।

“इस प्रकार (उन) सबों की झूठेपन की भावना करो (=ये सब मात्र झूठ हैं ऐसी भावना करो) तथाहि—

यह प्रतिभासित भव धर्म के,

झूठेपन को न समझने से, (तुम) कहते हो मैं (मैंने) झूठ बोला वास्तव में ज्ञान-ज्ञेय सब के सब झूठ होते हैं। इस तरह छः इन्द्रिय समूह और छहों विषय ॥ १ ॥

झूठ है इन में सत्य कहाँ हैं?

झूठ में सत्य का अध्यास होता है।

उस अध्यवसित सत्ता के कारण ही,

जीव सांसारिक दुःख को भोगते हैं ॥ २ ॥

अहो! बाल (जन) झूठ को न जानने से,

उसे सत्य के रूप में ग्रहण करते हैं।

इसी कारण वे “गराड़ी-चरखे” के तरह, बराबर संसार में भटकते हैं ॥ ३ ॥

अतः सभी धर्मों के झूठेपन की भावना करो, जैसे शब्द झूठ है, उसी प्रकार रूप भी झूठ है।



१९. थकनपा

थकनपा दो नगरों के बीच में एक वृक्ष के मूल में बैठे हैं। उनके दोनों ओर नगर का दृश्य है। एक सिद्ध-ज्ञानी भिक्षु उनके सामने आकर कुछ पूछ रहे हैं। उनका चेहरा कुछ परेशानी की मुद्रा में है।



३०. नरोपा

नरोपा (नडपा) गहरे साँवले रंग के अर्थात् नील एवं लाल रंग मिश्रित काले रंग के हैं। सिर में जटा बाँधे हुए हैं। अस्थि से निर्मित आभूषण धारण किये हुए हैं तथा सहस्तपाद नरचर्म अधोवस्त्र के रूप में पहने हुए हैं और समाधिसूत्र या भावनासूत्र लगाकर कुछ हलके से क्रुद्ध भाव में भावना करते हुए बैठे हैं।

तद् विषयक चित्तादि की भी झूठेपन की भावना करो ॥ ४ ॥

गुरु के यह कहने के बाद उन्होंने (थकनपा ने) समस्त ज्ञेय (ज्ञान धर्मों) के मिथ्यात्व या झूठेपन को समझा और उसकी भावना की। सात वर्ष की घोर भावना (साधना) के बाद उनमें समस्त दृश्य-जगत के झूठेपन (मिथ्यात्व) का ज्ञान उत्पन्न हो गया। समस्त धर्मों के मिथ्यात्व के ज्ञान से सत्याभिनिवेश का व्यावर्तन (मूल उच्छिन्न) हो गया।

तत्पश्चात् एक दिन उनके गुरु (वही भिक्षु, जिन्होंने उनको यह उपदेश दिये थे) आ गये। उन्होंने पुनः कहा—ये सभी धर्म झूठ के रूप में सिद्ध नहीं हैं, मिथ्यात्व में भी इनका अस्तित्व नहीं है। ये सब अनुत्पन्न, अनिरुद्ध स्वभाव शून्य हैं। तुम इस तरह की भावना करो (साधना करो)।

उन्होंने (थकनपा ने) भी यही किया और वैसा ज्ञान पाकर सभी तरह के विकल्प (बोधि) मार्ग के रूप में पाकर उन्हें परम सिद्धि की प्राप्ति हो गयी।

उनका नाम भी सर्वत्र गुरु थकनपा विख्यात हो गया। उस भाग्यशाली विनेय को उस परम गुरु ने 'कर्णे-पाताञ्जलि निःसरण अववाद' (कानों में घुसे पानी निकालने वाले उपदेश) नामक उपदेश देकर उसी शरीर के साथ उन्हें खेचर भूमि के लिए प्रस्थान करा दिया।

गुरु थकनपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

२०. गुरु नरोपा (नडपा) का वृत्तान्त

गुरु नडपा (नरोपा) जाति के मदिरा बेचनेवाले थे^१। पर जाति (धर्म) से भ्रष्ट होकर वे पूर्वी भारत में सालिपुत्र नामक स्थान में (जीविका के लिए जंगल में) लकड़ी इकट्ठी करके बेचते थे। लकड़ी बेचते समय एक दिन उनको यह समाचार मिला कि विष्णुनगर नामक महानगर में एक बहुत बड़े विद्वान् तिल्लीपा रहते हैं। विष्णुनगर में पहुँचने पर लोगों से पूछा, तो लोगों ने कहा कि आचार्य यहाँ से भागकर चले गये हैं। यहाँ नहीं हैं। नरोपा ने सभी नगर और जगहों पर उन्हें खोजा, पर नहीं मिले। बहुत दिन के बाद अन्त में एक रास्ते में उन्हें वे मिले।

नडपा ने उन्हें प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम अभिवादन करके आचार्य से योगक्षेम पूछा तो तिल्लीपा ने कहा कि तुम्हारा गुरु, मैं नहीं हूँ, तुम मेरे शिष्य भी नहीं हो। यह कह कर वे क्रुद्ध होकर उन्हें मारने लगे। पर नडपा इससे विचलित नहीं हुए। मिट्टी के बर्तन में भिक्षा लेते रहे और गुरु को खिलाते रहे। पर गुरु ने भोजन को लेने के बाद अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन्हें पीटा तो भी नडपा उनके प्रति अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ उनसे बचा हुआ भोजन खाते और उसके बाद प्रदक्षिणा एवं प्रणाम करते रहे।

इस तरह वह रात होते ही वहाँ (गुरु के पास) आकर सोते और सबेरे दिन निकलते ही भिक्षाटन करने चले जाते थे, भिक्षा पाकर गुरु को खिलाते। इस प्रकार बारह वर्षों तक अथक सेवा की, तो भी गुरु ने उनके प्रति क्रोध के (कटुवचन) के अलावा एक शब्द भी सामान्य (शब्द या वाक्य) नहीं कहा।

१. टिप्पणी— “नडपा” को यहाँ मदिरा बेचनेवाली जाति का माना है। पर अन्यत्र प्राप्त नडपा के वृत्तान्तों में इन्हें “क्षत्रिय” कुल का माना गया है। पद्मकर इतिहास के अनुसार यह मूलतः काश्मीर के ब्राह्मण थे। वहाँ के ब्राह्मणों में आठ प्रकार के अलग-अलग कुल होते हैं। उनमें से नडपा राजशासन चलाने वाले राजकुल के ब्राह्मण थे। नडपा=नरोपा, शब्द “नरोत्तमपाद” शब्द का अपभ्रंश है। इनके पिता काश्मीर के राजा “शुभवर्मा” (या कल्याण वर्मा) थे। इनकी माता का नाम “श्री-मति” था। नडपा का मूल नाम “समन्तभद्र” था।

एक दिन एक गृहपति के यहाँ विवाहोत्सव था। वहाँ जाकर भिक्षा माँगी तो बहुत से अच्छे-अच्छे भोज्य-पदार्थ विशेष रूप से चौरासी प्रकार के विभिन्न व्यञ्जन वहाँ बने हुए थे उनमें से 'पात' (पालक) की स्वादिष्ट एक सब्जी मिली। सब लेकर गुरुजी को खिलाया, तो गुरुजी ने उस दिन यह सब बड़े चाव से लिया और विशेषतया उस शाक को खाकर तिल्लिपा ने कहा—हे बेटा! इस प्रकार का खाना तुम्हें कहाँ से मिला?

इस कथन से नडपा इतने प्रसन्न हुए मानो, उन्हें प्रथम भूमि (प्रमुदित भूमि) प्राप्त हो गई हो। सोचने लगे कि मैंने बारह वर्षों तक इनकी सेवा की, पर इन्होंने मुझे तुम कौन हो? तक नहीं कहा। आज मुझे 'बेटा' कहकर सम्बोधन कर रहे हैं।

तिल्लिपा ने पुनः कहा— 'यह स्वादिष्ट सब्जी और भी ले आओ' ऐसा कहने पर चार बार वह उस सब्जी को लेने उस घर में गये। लोग भी सहर्ष उन्हें वह सब्जी देते रहे। जब पाँचवीं बार गुरु ने उस सब्जी को लेने भेजा तो नडपा ने सोचा कि उसे माँगने जायें, तो अब शर्म भी आ रही है, न जायें तो गुरुजी नाराज हो जायेंगे फिर भी वह माँगने गये, तो उस समय घर के सभी लोग अन्य कामों में व्यस्त थे। अतः सब्जी नहीं मिलने पर नडपा ने उस सब्जी को बर्तन सहित उठाकर चुरा लिया और ले आकर गुरुजी को खिलाया, तो गुरुजी ने प्रसन्न होकर सब खा लिया।

इससे खुश होकर तिल्लिपा ने कहा हे बेटा! तुम उद्यमी बेटे हो, तुमने तो अच्छा उद्यम किया और मेरी परीक्षा की। यह कहकर प्रसाद एवं अभिषेक देकर (इन्हें परिपक्व किया और वज्रवाराही की दीक्षा (अववाद) दी। तदनुसार भावना(के माध्यम से साधना) करने पर छः महीने की अवधि में ही इन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया। उस समय से उनका नाम नडपा सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया।^१

१. 'नडपा' के इस वृत्तान्त को किस स्रोत से ग्रहण किया गया, यह सही पता नहीं चला। नडपा की बहुत-सी जीवनियाँ पाई जाती हैं। उन सभी में प्रायः नडपा को क्षत्रिय कुल का कहा गया है। यहाँ 'नड' एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम है। 'नड' शब्द की व्युत्पत्ति (नल + अच्,

सभी दिशाओं से लोग इनके पूजन के लिए आने लगे और सब आने वालों को इनके हृदय-प्रदेश से विशेष प्रकाश निकलता दिखलाई पड़ता था, कुछ लोगों को तो एक मास के दूर रास्ते से यह दिखलाई पड़ता था।

इन्होंने अपरिमित विनेय लोगों का (कल्याण) अर्थ पूरा किया और अन्त में इसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु नडपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

लस्य डत्वम् = नड) है; भारत में इस कुल के लोगों को चूड़ी बनाने का पेशा करनेवाली जाति माना जाता है। ये मदिरा बेचनेवाली जाति के नहीं थे।

दूसरा ये तिल्लिपा दर्शन से पहले नालन्दा महाविहार के महान् पण्डित थे और भिक्षु थे; यह निर्विवाद है। ये आचार्य दीपङ्कर श्रीज्ञान के भी गुरु थे। भोटदेशीय मारपा लोचावा के मूल गुरु थे। ये दसवीं-ग्यारहवीं सदी के महान् आचार्य थे। तिल्लिपा से भेंट होने के पहले की उनकी बहुत सी रचनाएँ भी हैं। तब इसे कैसे कहा जा सकता है कि तिल्लिपा से भेंट करते समय यह एक लकड़हारा थे? यह सब कुछ विचारणीय है।

२१. गुरु श्यालिपा का वृत्तान्त

श्यालिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— यहाँ श्यालिपा से तात्पर्य 'सियारवाला' है। इनका जन्मस्थान बल्हपुर (विघपुर) था। यह जाति के शूद्र एवं मजदूरी से जीविका चलानेवाले थे।

विघपुर (बल्हपुर) नामक नगर के समीप एक श्मशान था। उसके निकट रहनेवाले निवासियों में से एक व्यक्ति सियार की आवाज से अत्यन्त भयभीत हुआ करता था। सियार वहाँ रोज इकट्ठे होकर रात को आवाज करते थे, इससे रात-दिन वह व्यक्ति सियार के भय की ही चिन्ता में पड़ा रहता था।

एक दिन उसके पास एक भिक्षु आये और उससे भिक्षा देने के लिए कहा। उसने भिक्षु के चरणों में प्रणाम किया। सच्चे हृदय से वार्ता की, पानी पिलाया। भिक्षु ने दान की अनुशंसा (उपादेयता एवं पुण्य अर्जन की बात) का प्रवचन दिया।

उसके बाद उस आदमी ने कहा— हे आर्य! आपकी दान सम्बन्धी अनुशंसा एवं देशना बहुत अद्भुत है, पर इसके अतिरिक्त यदि कोई निर्भय होने का धर्म हो, तो वह मुझे अवश्य प्रदान करें। भिक्षु ने उससे पूछा कि तुम संसार के दुःख से डर रहे हो या किसी दूसरे से? उस व्यक्ति ने कहा— संसार के दुःख का भय तो सर्वसाधारण है पर मैं दुर्भाग्यवश श्मशान के निकट रहनेवाला होने से निरन्तर रात-दिन सदा सियार की आवाज से डरता हूँ। यदि इस डर की दवा कोई धर्म हो, तो मैं उसे अवश्य ही ग्रहण करूँगा।

भिक्षु ने कहा— उस भय की दवा, मंत्र एवं दीक्षा, तो मेरे पास है पर उसके लिए पहले अभिषेक करना होगा। तब उस व्यक्ति ने भिक्षु के चरणों में सोना, चाँदी आदि अनेक द्रव्य-दक्षिणा के रूप में समर्पित किया और उनसे अभिषेक ग्रहण किया।

उनका अववाद (दीक्षा) भय से भय प्रहाण का अववाद था। वह इस प्रकार है—

'तुम शत्रु आदि के भय से भयभीत नहीं हो, पर सियार के शब्द से भयभीत हो। अतः तुम इस लोक में जो भी शब्द-ध्वनि होती हो, सब की सब सियार

की आवाज से अभिन्न रूप में निरन्तर, रात-दिन, सदा यही भावना करते रहो। श्मशान में ही एक कुटिया बनाकर रहो। भिक्षु ने उसे यही उपदेश दिया।

उस व्यक्ति ने भी जैसा गुरुजी ने कहा, वैसा ही किया और भावना करते रहे। फलतः सभी शब्द शून्य-ध्वनि के गर्भ में सियार की आवाज से अभिन्न होकर खो गये, इस ज्ञान के अन्दर सियार की आवाज भी खो गयी। इस प्रकार उनमें स्वतः भय से मुक्त अभय महासुख की अनुभूति उत्पन्न होने लगी और इसी ज्ञान की नौ वर्ष तक भावना करते रहे। उनके काय एवं चित्त के सभी मल विशुद्ध होकर उन्हें महामुद्रा परमसिद्धि की प्राप्ति हो गई।

तत्पश्चात् एक सियार का शव कन्धे पर लेते हुए चर्या-विहार (चारिका) किया, तो दिग्-दिगन्त में उनका नाम योगी 'श्यालिपा' प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने विनेय जनों को अभिन्न शून्यता एवं प्रभास्वरता के अद्वैतभाव की अनेक देशनाएँ दी। अन्त में वह उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये।

गुरु श्यालिपा (श्यलिपा) का वृत्तान्त समाप्त ॥



२१. श्यालीपा

श्यालीपा नृत्य अथवा बहुत प्रसन्न-मुद्रा में हैं। उनके सामने कपाल आदि श्मशान का दृश्य है। सियार का शव कन्धे पर रखा है, उसका सिर सामने की ओर लटक रहा है।



२२. तिल्लीपा

तिल्लीपा साँवले रंग के अर्थात् गहरे नील रंग के हैं। तिल कूट रहे हैं। उनकी पत्नी एक पात्र लेकर सामने से ओखली में तिल डाल रही हैं। वे पत्नी को ओर देखते हुए बड़ी प्रसन्न-मुद्रा में हैं।

२२. गुरु तिल्लिपा^१ का वृत्तान्त

गुरु तिल्लिपा का जन्म स्थान विष्णुनगर (सम्भवतः पूर्वी भारत) था। विष्णुनगर नामक स्थान में आचार्य तिल्लिपा नामक एक महान् विद्वान् रहते थे। वह राजपुरोहित थे। एक दिन में पाँच सौ माषक उनका खर्च था। वह अपरिमित शिष्य-समुदाय के बीच धर्म-उपदेश किया करते थे। इस व्यस्तता में एक दिन उन्हें यह विचार आया कि मेरे जन्म के इस तरह की व्यर्थता में बिताने से क्या होगा? यह सोचकर वे कई बार घर से भाग गये, पर परिवार के लोग उन्हें पकड़-पकड़कर ले आये और उन्हें जाने नहीं दिया। एक दिन आचार्य ने अपना चीवर वहीं छोड़ दिया और एक सिला हुआ वस्त्र धारण किया। घर में एक पत्र लिखकर रख दिया कि अब मैं लौटकर नहीं आऊँगा। लौटानेवाले न आयें। वह रातों-रात भागकर काञ्ची नगर में पहुँचे। उस नगर के श्मशान में अपने रहने की जगह बनाई और रहने लगे। भिक्षाटन करते हुए उन्होंने जीविका चलाई और साधना करते रहे।

एक दिन नारोपा(नडपा) से उनकी भेंट हुई। नडपा ने उनकी जीविका जुटाई और नडपा के लाभ-सत्कार ग्रहण करते हुए दश वर्षों तक वह साधना करते रहे। दस वर्ष में उनके सभी मल विशुद्ध होकर महामुद्रा परम सिद्धि का लाभ हुआ। देवलोक में गये, तो सभी देवताओं ने देव - नैवेद्य से उनका लाभ-सत्कार किया। काय-वाक्-चित्त सभी सिद्धियाँ प्राप्त होने के कारण सर्वत्र उनका नाम तिल्लिपा प्रसिद्ध हो गया।

अनेक विनेय जनों को (बोधि) पथ में आरूढ करके अन्त में उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु तिल्लिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. 'तेलोपा',—नामावली—डुवथब कुनतु पृ० ६१; बी० एन० ४० दिल्ली संस्करण।

२३. गुरु चत्रपा का वृत्तान्त

‘चत्रपा’ का अर्थ-धर्म की पोथी उठाकर भिक्षाटन करनेवाला है। उनका जन्म-स्थान सेन्धोनगर था। उस नगर में व्याकरण की पोथी हाथ में उठाकर वह सदा लोगों से भिक्षा माँगने जाते थे।

एक समय एक सुअभ्यस्त योगी से उनकी भेंट हुई। उस योगी ने कहा—
तुम क्या कर रहे हो?

उस ने कहा— मैं जीविका के लिये भिक्षा माँग रहा हूँ।

उस योगी ने फिर कहा— तुम्हें परलोक का पथ्य नहीं चाहिए?

उसने कहा उस मार्ग को हम कैसे सोचें?

योगी ने उसको हेवज्र के मण्डल में अभिषिक्त कर दीक्षा दी। उनका दीक्षा प्रवचन इस प्रकार है—

सभी पापों की प्रतिदेशना करो,

अहोरात्र नित्य महासुख की भावना करो

पूर्व जन्मों में जो कुछ किया है,

उसे इस जन्म के शरीर में देखो,

अपर (जन्म) में जो कुछ होना है, वह अब इस

जन्म के चित्त पर निर्भर करता है ॥ १ ॥

इस प्रकार की देर तक भावना करो तो,

(तुम्हें) इसी जन्म में बुद्धत्व की प्राप्ति होगी,

उसके लक्षण भी क्रमशः (प्रकट) होंगे ॥ २ ॥

‘चत्रपा’ इन वचनों का अर्थ नहीं समझ पाये और उन्होंने अपने गुरु से कहा— ‘यह मैं नहीं समझ पाया हूँ’।



२३. चत्रपा

चत्रपा भिक्षु वेश में और चलने की मुद्रा में हैं। पीठ में पोथियाँ उठाये हुए हैं और हाथ में भी एक छोटी-सी पोथी लिये हुए हैं।



२४. भद्रपा

भद्रपा गम्भीर स्वभाव के हैं। वे भावनासूत्र तथा जनेऊ धारण किये हुए बैठे हैं। सँवरे बाल और हलके आभूषण से विभूषित हैं। एक ओर कुछ ऊँचे स्थान पर उनके गुरुजी शिखा बाँधे हुए बैठे हैं। सामने मदिरा से भरा कलश और उस पर सुअर का मांस रखा हुआ है।

पुनः गुरु ने कहा— पाप से तात्पर्य अविद्या से है और उससे नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं। भवलोक को 'महामुद्रा' के रूप में जाननेवाली दृष्टि से पाप की शुद्धि होती है। अहोरात्र सुख की भावना से अभिप्राय सदा करुणा क्री भावना करने से है। इससे स्वयं के अन्दर सुखोदय होना एक स्वाभाविक धर्मता है। पूर्व-अपर जन्म के कर्मों को अभिनिवेश पूर्वक ग्रहण न करें, तो तत्बलेन चर्या पूर्ण हो जाती है।

'आगे क्या हो' से तात्पर्य—सुख-दुःख सबका सब चित्त से ही उत्पन्न होता है, चित्त में अब भी (उनका कारणभूत) अभिनिवेश है या नहीं, देख लेना।

इस प्रकार दीर्घकाल तक—से तात्पर्य—उद्यम को बढ़ाकर (प्रयत्न को बढ़ाकर) अविक्षिप्त रूप से अपने चित्त में देखना है।

इस प्रकार सदा भावना करने से चित्त-गत भ्रान्तियाँ परिनिवृत्त होकर इसी जन्म में फूल रूपी बुद्धत्व की प्राप्ति हो जाती है।

गुरु ने इस प्रकार की देशना दी। तदनुसार चत्रपा अपने स्थान सेन्धोनगर में भावना करते रहे।

छः वर्ष के बाद उन्हें महामुद्रा परमसिद्धि का लाभ हुआ। उनका नाम सर्वत्र 'चत्रपा' प्रसिद्ध हुआ। सातवें वर्ष पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु चत्रपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

२४. गुरु भद्रपा का वृत्तान्त

गुरु भद्रपा जाति के ब्राह्मण थे। वे “मणिधर^१” प्रदेश के रहनेवाले थे।

उस स्थान में एक ब्राह्मण अपने परिवार के साथ एवं धन-धान्य से परिपूर्ण जीवन बिता रहे थे। वे सदा उद्यत-चित्त के साथ रहते थे। एक समय परिवार के सब लोग बाहर स्नान के लिए गए हुए थे और वह अकेले घर में थे, उनके पास तभी एक सुअभ्यस्त शिक्षित योगी आ पहुँचे। उन्होंने उनसे खाना माँगा। ब्राह्मण ने कहा—तुम गन्दे हो। हमारे परिवार के अन्य लोग मेरी निन्दा करेंगे। तुम यहाँ से शीघ्र जाओ। योगी ने कहा— हे ब्राह्मण! गन्दा किसको कहते हैं?

ब्राह्मण ने उत्तर दिया— शरीर से स्नान न किया हो, वस्त्र न हो, कपाल का बर्तन लिया हो, खाना गन्दा खाता हो, नीच जाति का हो, उसे गन्दा कहते हैं, तुम यहाँ से शीघ्र जाओ। योगी ने कहा— ये सब गन्दे नहीं हो सकते (अर्थात् तुम्हारी ‘गन्दे’ की परिभाषा गलत है)। काय, वाक् और मन से अकुशल ही गन्दा है, अशुचि है। शरीर धोने से चित्त का मल साफ नहीं हो सकता। जिसने गुरु के वचन (दीक्षा) द्वारा चित्त का मल धोया हो, वही शुद्ध होता है।

और भी—

महायाण गोत्रीय उत्तम होता है,

जैन ब्राह्मण ऐसा नहीं है।

काय आदि का अकुशल मल,

परम्परागत गुरु उपदेश से ॥ १ ॥

धोये हो तो (वही) अनुत्तर शुद्धि है,

पानी से धोयी शुद्धि ऐसी नहीं है।

निरासक्त पात्र और भोजन उत्तम है,

१. सम्भवतः— मणिपुर।

शुक्ल त्रयादि^१ (भोजन) ऐसा नहीं है ॥ २ ॥

यह (दोहा) कहने पर ब्राह्मण के मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई और उसने कहा— आप इस तरह की मुझे दीक्षा दो।

योगी ने कहा— पहले मुझे खाना दो। फिर वैसा करूँगा।

ब्राह्मण ने कहा— यदि मैं यहीं बैठकर आप से धर्मोपदेश सुनूँ तो परिवार के लोग और अन्य लोगों को अच्छा नहीं लगेगा उन्हें श्रद्धा नहीं है।

जहाँ आप रहते हैं (धर्मोपदेश सुनने के लिए) मैं वहाँ आऊँगा। आप कहाँ रहते हैं?

योगी ने कहा— मैं श्मशान में रहता हूँ। सुअर का मांस एवं मदिरा लेकर तुम वहीं आओ।

ब्राह्मण ने कहा— हम ब्राह्मण लोगों के लिए मदिरा एवं शूकर के मांस का नाम तक का उच्चारण करना अनुचित है, तो वहाँ कैसे ले आ सकते हैं?

योगी ने कहा— यदि तुम्हें दीक्षा चाहिए तो ले आना।

ब्राह्मण ने कहा— दिन में तो मैं वहाँ नहीं आ सकूँगा। रात को वैसा करके आऊँगा।

तत्पश्चात् रात में ब्राह्मण ने अपनी वेश-भूषा बदली और बाजार में जाकर मदिरा एवं शूकर का मांस खरीदा। उसे लेकर श्मशान गया। योगी को उसे खिलाया।

योगी ने उसको स्वयं तो खाया ही, ब्राह्मण को भी खिलाया। उसके बाद “अधिष्ठान-उत्क्रान्ति” नामक अभिषेक देकर (उसे दीक्षित किया) ब्राह्मण को अभिषेक के लिए मण्डल अर्पण करने को कहा और उसने वैसा ही किया। ब्राह्मण के मन में निहित जाति-विकल्प को तोड़ने के लिए वहाँ उनसे झाड़ू देकर सफाई

१. शुक्लत्रय तीन प्रकार की सफेदी वाला भोजन = दूध, दही और नवनीत की मक्खन = से निर्मित नैवेद्य खाना।

कराई और इसके द्वारा दृष्टि (विशुद्धि) का संकेत दिया। उसके बाद उनसे वहाँ लिपाई भी करवाई। इसके द्वारा 'चर्या' विशुद्धि का संकेत दिया, लिपाई के रंग द्वारा भावना का संकेत दिया गया। इन तीनों (दृष्टि, चर्या और भावना) के एकत्व (अर्थात् अद्वैत भाव) से फल का संकेत दिया गया है। उसके बाद, ब्राह्मण ने उपर्युक्त सभी संकेतों का अभिप्राय समझ लिया। फलतः उन्हें भवलोक की भ्रान्तिओं (के अस्तित्व) की विवर्त-मात्रता का अवबोध हो गया। उसने सभी प्रकार के जाति विकल्पों का परित्याग कर दिया और योग में प्रवेश लेकर भावना की। छः वर्ष की अवधि में उसे 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हो गया। सर्वत्र योगी भद्रपा के नाम से वह प्रसिद्ध हो गये।

अनेक जगत् कल्याण करने के बाद पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ वह उसी शरीर से खेचर भूमि चले गये।

गुरु भद्रपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



२५. धुखन्तिपा

धुखन्तिपा श्मशान में बैठे हुए हैं। श्मशान के बहुत से चिथड़े (कफन) इकट्ठे करके हाथ से सिल रहे हैं। वे प्रसन्न-मुद्रा में हैं।



२६. गुरु योगिपा

योगिपा (या अयोगिपा) श्मशान में सो रहे हैं अर्थात् लम्बे होकर लेटे हैं। वे लम्बी जटा की शिखा बाँधे हुए हैं।

२५. गुरु धुखन्धि का वृत्तान्त

गुरु धुखन्धि, धुखन्धि का अर्थ दो का एक करनेवाला है। इनका जन्म-स्थान गन्धापुर (सम्भवतः गन्धार) था। वह जाति से भिखारी कूड़ा-कर्कट उठाने वाले, (संभवतः जमादार) थे। एक दिन एक निपुण योगी उनके निकट आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा—तुम व्यर्थ इस तरह के दुःख क्यों भोग रहे हो? क्या कोई धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उसने कहा— मुझे धर्म उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा— मैं दूँगा, यह कहकर उन्होंने उस (व्यक्ति) को श्रीचक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया और उत्पत्ति तथा सम्पन्न-क्रम दोनों की युगल भावना की देशना दी। जब वह भावना करता तो कपड़ा (चिथड़े) सिलाने के विकल्प ने उसे भावना करने में अनिच्छा पैदा कर दी।

पुनः उन्होंने योगी से कहा कि हे योगी महाराज! मेरे चित्त-विकल्प से विक्षिप्त होकर मन में भावना करने में अनिच्छा पैदा हो रही है। इस पर योगी ने कल्पना को मार्ग में बदलने की देशना दी। वह इस प्रकार है—

‘धर्मों के तात्त्विक रस में सीना, सिलाई कुछ नहीं होती इष्टदेव और मंत्र भी वैसे ही हैं, तीनों (के प्रकार इस) का ज्ञान ही धर्मधातु है^१।’

उस (जमादार) ने भी वैसी भावना की, तो कपड़े सिलाने की कल्पना देवता और मंत्र तीनों धर्मता के रस में खो गये। उसे उत्पत्ति और सम्पन्न-क्रम का युगनद्ध ज्ञान उत्पन्न हो गया। बारह वर्षों तक साधना करने पर उसे ‘महामुद्रा परमसिद्धि’ की प्राप्ति हो गई। तत्पश्चात् अपरिमित जगत्-कल्याण के बाद वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु धुखन्धि का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. अर्थात्- तात्त्विक अर्थों में सीना और सिलाई का कोई अपना स्वभाव नहीं होता है, ठीक वैसे ही इष्टदेव और उसके मंत्रों का स्वभाव है। इन तीनों की निःस्वभावता का यथार्थ ज्ञात हो जाता है, वही धर्मधातु के स्वभाव का साक्षात्कार है।

२६. गुरु अजोगी का वृत्तान्त

गुरु अजोकि (अजोगी-अयोगी) का अर्थ है, आलस्यवाले, आलसी। इनका जन्म-स्थान पाटलिपुत्र था। वहाँ एक गृहपति का पुत्र बहुत अधिक मोटा हो जाने से चारों चर्या (खाना, शौच करना आदि) सोकर ही किया करता था। उसके माता-पिता एवं सभी सम्बन्धियों ने यह कहकर कि इस तरह के पुत्र से क्या हो सकता है, अपशब्द कहते हुए उसे श्मशान पहुँचा दिया।

वह श्मशान में ही सोता रहा, एक दिन वहाँ एक योगी आये और उस सोये हुए लड़के को देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। योगी ने नगर से खाना आदि ले आकर उसे खिलाया, पर उसे खाना खाते समय भी नहीं उठते देखकर योगी ने कहा— तुम खाना खाते समय भी नहीं उठ पाते, तो लौकिक कार्यों में कौन-सा काम कर पाओगे?

उस व्यक्ति ने कहा— मेरे कुछ भी करने में असमर्थ होने के कारण मेरे माता-पिता ने मुझे यहाँ त्याग दिया है।

योगी ने कहा— क्या तुम सोते हुए कुछ धर्म-कार्य कर सकोगे?

उसने उत्तर दिया— कर तो सकता हूँ, परन्तु मेरे जैसे को धर्म-उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा— मैं देता हूँ। यह कहकर योगी ने उसको 'हेवज्र' के मण्डल में प्रवेश कराया और अभिषेक दिया तथा अगम्भीर^१ सम्पन्नक्रम का उपदेश दिया और कहा कि ऊर्ध्व द्वार के, नासिका के अग्रभाग में सरसों के बराबर बिन्दु के अन्दर त्रिसहस्र लोक धातु (पूर्ण रूप से) समाविष्ट कर भावना करो।

उस व्यक्ति ने पूछा— ऐसा करने पर क्या-क्या लक्षण प्रकट होंगे?

१. यहाँ अगम्भीर से तात्पर्य सप्रपञ्च सम्पन्न-क्रम से है।

योगी ने कहा— अभ्यस्त हो जाने पर समझ में आयेगा। उसने वैसी ही भावना की, तो सरसों के बराबर बिन्दु एवं त्रिसहस्र लोक, दोनों शून्यता के रस में खो गये और उन्हें शून्यता, महामुद्रा का ज्ञान प्राप्त हो गया। नौ वर्षों तक इसी की भावना करने पर उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हुई।

अनेक जगत्-कल्याण के बाद उसी शरीर के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु अजोगी का वृत्तान्त समाप्त ॥

२७. गुरु कलपा का वृत्तान्त

कलपा का अर्थ है विक्षुब्ध। इनका जन्म-स्थान राजपुर था। इनके गुरु एक सुअभ्यस्त सन्ततिवाले योगी थे।

कलपा पूर्व जन्म में की गई क्षान्ति भावना के फलस्वरूप अत्यन्त सुडौल और सुन्दर शरीर के थे। राजपुरी के सभी लोग इन्हें देखने के लिए इनके पीछे पड़ते थे। वह इस घटना से अत्यन्त उद्विग्न और क्षुब्ध होकर एक दिन श्मशान में जा बैठे, तब तक एक बड़े निपुण योगी वहाँ आ पहुँचे।

योगी ने कहा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उन्होंने कहा—मुझे नगर के सभी लोगों ने चैन से रहने नहीं दिया, इसलिए यहाँ आकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा— तुम्हें कोई धर्मोपदेश तो नहीं चाहिए?

उन्होंने कहा— धर्मोपदेश तो अवश्य ही चाहता हूँ, पर मुझे यह कौन देगा?

योगी ने कहा— यदि तुम्हें धर्म की आवश्यकता हो, तो मैं देता हूँ, यह कहकर इन्हें 'चक्रसंवर' के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया। दीक्षा देकर इन्हें 'उत्पत्ति' एवं 'सम्पन्न-क्रम' की भावना करने दिया। फलतः इन्हें उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम का युगान्तर ज्ञान हो गया और इनके अन्दर स्व और पर के द्वैतभाव का आलम्बन खो गया। उस के बल से उत्पन्न मुक्त चर्या का आचरण किया तो राजपुरी के सभी उन्हें पागल कहने लगे।

तब इन्होंने निम्न दोहा कहा—

आत्म-ग्रहण से पर को देखता है, द्वैतभाव से दुःख पैदा होता है,
प्रबुद्ध ऐसा जानने से, विकल्प देव-मण्डल।

(एवं) 'अ' अक्षर के अन्दर में ही, जैसे इन्द्रधनुष आकाश में तिरोहित होता है; उसी प्रकार उत्पन्न, निरोध, स्थिति तीनों, चर्या पागल मैंने नहीं किया।



२७. गुरु कणकणपा

कणकणपा श्मशान में बैठे हुए हैं। रूप-रंग के बहुत सुन्दर हैं। हलकी-सी जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। भावना-सूत्र धारणकर समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। सामने एक स्त्री खड़ी है।



२८. धोबीपा

धोबीपा नदी के समीप बैठे हुए हैं। बहुत से पुराने कपड़े लेकर नदी में धो रहे हैं। बहुत दूर देख रहे हैं तथा अन्दर से गम्भीर चिन्तन का भाव झलक रहा है।

सुखी है, अद्वैत बल से सम्भूत चर्या,

सुखी है अनिरोध प्रभास्वर ज्ञान;

अनिरुद्ध छः विज्ञान-समूह की भावना सुखी है, सुखी है निराभोग फल की प्राप्ति ।

यह कहकर वह आकाश में सात ताड़ वृक्षों की ऊँचाई तक ऊपर उड़ गये और अनेक प्रतिहारियाँ (चमत्कार) दिखाये ।

उनका नाम सर्वत्र 'गुरु कलपा' प्रसिद्ध हो गया । अन्त में वह खेचर भूमि चले गये ।

गुरु कलपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

२८. गुरु धोबीपा का वृत्तान्त

गुरु धोबीपा जाति के धोबी थे और उनका जन्म-स्थान सालिपुत्रनगर (शारिपुत्रनगर) था। उस नगर में वह और उनका पुत्र, दोनों सदा कपड़ा धोने का कार्य करते थे, इसी से वे अपनी जीविका चलाते थे।

एक दिन एक बड़े योगी उनके यहाँ आये और उन दोनों पिता-पुत्र से खाना माँगा। उन दोनों ने योगी को खाना खिलाया और पूछा कि 'भन्ते' आपके कोई कपड़ा धोना तो नहीं है? यदि हो तो, हम लोग धो देंगे। योगी ने एक कोयले का टुकड़ा हाथ में उठाकर कहा— इसको धोने पर मल से शुद्ध हो सकता है?

धोबी के बेटे ने उत्तर दिया—कोयला तो स्वभाव से ही काला है, इसे धोकर सफेद नहीं किया जा सकता।

योगी ने कहा—तुम लोगों ने बाहर के मल तो साफ किए, पर इसके अन्दर के तीनों क्लेशों का मल शुद्ध नहीं होता और बाहर के स्नान से आदमी शुद्ध होता हो, ऐसा मैं नहीं देखता। अतः सदा स्नान करने की आवश्यकता न हो, एक ही स्नान से शुद्ध हो जाने की दीक्षा मेरे पास है। वह तुम्हें नहीं चाहिए?

धोबी (पिता-पुत्र) ने कहा— महाराज! यदि ऐसा हो तो हमें अवश्य चाहिए। योगी ने धोबी के पुत्र को वहीं श्रीचक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक, दिया। मंत्र, मुद्रा और समाधि के द्वारा अधिष्ठित किया तथा उपदेश दिया। (तदनुसार उन्हें साधना में लगाया) साधना करने पर बारह वर्ष के बाद मुद्रा के द्वारा शारीरिक मल की शुद्धि हो गई। मंत्र से वाक्-मल की शुद्धि हो गयी और समाधि के द्वारा चित्त सम्बन्धी मल की विशुद्धि हो गई।

उनका उपदेश इस प्रकार है—

प्रच्वलित मुद्रा-जल के द्वारा, शारीरिक मल धोया जाता है

अलि-कलि जल द्वारा, वाक्-मल धोया जाता है,

वीर-माता-पिता के योग से, चित्त-मल का समुच्छेद किया जाता है।

इस प्रकार उन्होंने, 'काय मुद्रा' 'वाक् जप' और चित्त-उत्पत्ति एवं 'सम्पन्न-क्रम' की अविरल भावना की। फलस्वरूप उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हो गई। उस समय पानी में गन्दे कपड़े छोड़ देने पर बिना धोये विशुद्ध होते सब लोगों ने देखा। लोगों को यह मालूम हुआ कि इन्होंने विशेषता प्राप्त की है।

इनका नाम भी सर्वत्र धोबीपा प्रसिद्ध हो गया। बहुजन-हितार्थ साधने के बाद सौ वर्ष की अवस्था में वे उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि गये।

गुरु धोबीपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

२९. गुरु कङ्कनपा का वृत्तान्त

गुरु कङ्कनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—इनका जन्म-स्थान (सिन्ध) विष्णुनगर था। जाति के यह क्षत्रिय थे। उक्त नगर में एक राजा रहता था, जिसकी अपार सम्पत्ति थी और उसका राज्य बहुत सम्पन्न था। काम-गुणों के भोग में कोई कमी नहीं थी। जैसे दिन बिताते समय एक दिन एक सुनिपुण योगी उस (राजा) के पास आ पहुँचा और उससे भिक्षा माँगी। राजा ने उसे बहुत उत्तम भोजन कराया।

(भोजन समाप्ति के बाद) उस योगी ने राजा से कहा— हे राजन्! राजश्री निःसार है, भवगतश्री से सब कुछ दुःख ही हुआ करते हैं। जन्म-मरण, पानी की चरखी (गराड़ी) के समान घूमते हैं; विभिन्न दुःखों का कोई अन्त नहीं है। स्वर्ग-सुख का भी एक परिणाम दुःख है। त्रिसहस्र का चक्रवर्ती राजा भी दुर्गति में उत्पन्न होता देखा जाता है। अतः इस प्रकार के आडम्बरपूर्ण काम-गुण, जो तृणों पर जमे ओस-बिन्दु के समान हैं, के प्रति आसक्ति छोड़कर महाराज आप धर्म ग्रहण करें।

राजा ने उत्तर दिया—योगी महाराज! यदि काम-गुणों को बिलकुल न त्यागे कोई धर्म साधना होती हो, तो अवश्य ही करूँगा, अन्यथा सिले वस्त्र एवं भिक्षा से भोजन पूरा करके, मैं जीवित नहीं रह सकूँगा।

योगी ने कहा— सिले गये वस्त्र (चिथड़े) और भोजन भिक्षा पर निर्भर हो तो बहुत उत्तम है। अतः आपको भी इसका सेवन करना होगा।

राजा ने कहा—सिलाए गये वस्त्र, खाने का बर्तन, कपाल और (लोगों के द्वारा प्रदत्त) बासी खाने से मुझे बहुत घृणा आती है। यह हम से सम्भव नहीं है।

योगी ने कहा—तुम इस तरह का अभिमानपूर्वक राज-कार्य करोगे तो अन्त में दुर्गति का दुःख भोगना (ही) पड़ेगा। मुझे सिले वस्त्र (चिथड़े), बासी खाने और कपाल का पात्र ग्रहणकर घूमने पर भी फल अनास्रव-सुख की प्राप्ति होगी। अतः हम दोनों का राज्य बहुत भिन्न है। फिर भी काम-भोग बिना त्यागे धर्म की साधना करने का उपाय (मेरे पास) अवश्य है।



२९. गुरु कङ्कनपा

कङ्कनपा अपने हाथ के कङ्कण-प्रभा को देख रहे हैं। इसी पर उनकी समाधि लगी है। हलके अलङ्कार एवं भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं। सामने आकाश की ओर से कुछ देवी-देवता उनकी पूजा कर रहे हैं।



३०. कम्बलपा

कम्बलपा भिक्षु के वेश में हैं। ये पत्थर की चट्टान के बीच गुफा के अन्दर समाहित-मुद्रा में बैठे हुए हैं।

राजा ने कहा—तब तो मैं अवश्य ही धर्म ग्रहण करूँगा, आप दें।

तत्पश्चात् योगी ने राजा से कहा— हे राजन्! तुम अपने हाथ के प्रज्वलित रत्न कङ्कण के प्रति आसक्ति और अभिमान त्याग दो। उस कङ्कण में जटिल प्रज्वलित रत्न-प्रभा एवं निरासक्त-चित्त दोनों को एक करके (अद्वयभाव से) भावना करो।

(इस सम्बन्ध में कहे दोहे निम्न प्रकार हैं)—

कङ्कण के सुप्रज्वलित प्रभा को देख अपना चित्त भी सुखी,
बाह्य नाना प्रत्ययों से अनेक वर्ण आ भी जाय।
परिवर्तन नहीं आता उसके स्वभाव में तत्सदृश नाना आभासों से,
विविध विकल्प-स्मृतियाँ आ भी जाय चित्त प्रज्वलित रत्नवत्।

इस देशना के बाद, राजा ने दाहिने हाथ के कङ्कण (जो प्रज्वलित रत्न-जटिल सुवर्ण का बना हुआ था) को आलम्बन बनाकर उसी में चित्त लगा कर भावना की। छः महीने में ही उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गयी।

एक दिन उनके नौकरों ने बन्द दरवाजे के छिद्र से देखा, तो उन्हें (अन्दर) अनेक देवनारियों से परिवृत देखकर सब लोग अचम्भित हो गये। अन्दर जाकर उनसे उपदेश के लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने (राजा ने) अपने मुख से कहा—

निम्न दोहा—

चित्त ज्ञान ही राजा है, राज्य है महासुख,
(दोनों की) युगनद्ध (स्थिति) है परम भोग, राजा चाहो, तो वैसा ही करो।

उसके बाद वे अपने परिवार और विष्णुनगर के (बहुत से) नागरिकों को साथ लेकर पाँच सौ वर्ष की अवस्था में उसी शरीर के साथ खेचर भूमि चले गये। उनका नाम सर्वत्र कङ्कणपा प्रसिद्ध हो गया।

गुरु कङ्कणपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

३०. गुरु कम्बलपा का वृत्तान्त

कम्बलपा का जन्म-स्थान 'ककरम' (सम्भवतः कांगड़ा या कंगढ़) था।

वे जाति के राजपूत थे। उनकी गुरु उनकी जन्मदाता माँ ही थी और इष्टदेव श्रीमहासुख अथवा चक्रसंवर थे।

एक समय ककरम प्रदेश में एक राजा अस्सी लाख जनसंख्या के जनपद पर राज करते थे। उनके दो पुत्र थे। पिता के देहान्त होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र को वहाँ की जनता ने राजगद्दी पर बैठाकर राज्याभिषेक कराया, क्योंकि वे बहुत भद्र स्वभाव के थे।

उनके पुण्य (सौभाग्य) से जनता बड़ी सुखी और धन-धान्य से परिपूर्ण थी। वह सोने, चाँदी आदि के बर्तनों को खाने-पीने के लिए उपयोग किया करते थे।

राजपुत्र को राजगद्दी पर बैठे छः महीने बीत गये पर उनकी माँ से उनकी भेंट नहीं हुई। एक दिन उन्होंने पूछा— मेरी माँ कहाँ गई? यहाँ क्यों नहीं आती? लोगों ने उत्तर दिया— माँ, पिताजी के देहावसान से दुःखी होकर बैठी हैं, इसलिए वह यहाँ नहीं आती।

एक वर्ष के बाद माँ उनके पास आई और रोने लगी।

राजा ने पूछा कि हे माँ! आप क्यों रो रही हैं?

माँ ने कहा—तुम रत्न-जटित सिंहासन पर बैठकर राज कर रहे हो? यह देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ इसलिए रो रही हूँ?

राजा ने कहा—यदि माँ इससे अप्रसन्न हो, तो छोटे भाई को राज सौंपकर मैं परिव्राजक बन जाऊँ?

माँ ने उत्तर दिया—यह तो उचित ही है।

उन्होंने तत्काल छोटे भाई को राज सौंप दिया और स्वयं घर छोड़ परिव्राजक हो गये। वे तीन सौ भिक्षु शिष्यों के साथ एक विहार में रहने लगे। पुनः उनकी माँ

वहीं आकर रोने लगी, फिर पुत्र ने माँ के चरणों में प्रणामकर, कारण पूछा— हे माँ! आप फिर क्यों रो रही हैं?

माँ ने उत्तर दिया— तुम परिव्राजक भिक्षु होकर भी राजा की तरह से परिवार और सभा-संघ के अन्दर विराजमान हो, यह देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ इसलिए रो रही हूँ।

पुत्र ने फिर माँ से पूछा— फिर क्या करूँ?

माँ ने कहा— संघ-सभा त्यागकर, विरक्ति की जगह में बैठो।

राजकुमार विहार त्यागकर, शून्य जगह पर एक वृक्ष के मूल में बैठे, पर पुण्य से सम्बन्धित खाना-पीना आदि बहुत मात्रा में प्राप्त होता रहा।

पुनः उनकी माँ वहाँ आई, उन्हें देखकर रोने लगी।

पुत्र ने माँ के चरण में प्रणाम किया और पूछा— अब माँ क्या करूँ?

माँ ने कहा— परिव्राजक भिक्षु के लिए अतिरिक्त व्यर्थ जीविका-सामग्री रखकर क्या करोगे?

उन्होंने चीवर-पात्र सब वहीं छोड़कर योगी का रूप धारण किया और अन्य प्रदेश चले गये।

वास्तव में उनकी माँ एक डाकिनी थी, उनको (राजकुमार) जाते समय एक रास्ते में पुनः माँ आ मिली। वह रास्ते में ही अपने पुत्र को श्रीसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक और धर्म-उपदेश दिया। बारह वर्ष के उपरान्त वह 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त होकर उड़ते हुए वहाँ से निकले, तो पुनः उनकी माँ अनेक डाकिनियों के साथ आकर अपने पुत्र से बोली—तुम्हारे सत्त्वार्थ (जगत् कल्याण) छोड़कर आकाश मार्ग से जाने में कौन-सी आश्चर्य की बात है? ऐसा पक्षी भी कर सकते हैं। जगत् कल्याण का काम करो।

तब वह पश्चिमी (भारत) ओग्यन (ओडियान) के मालापुर (मालपुर)^१ नामक प्रदेश में ढाई लाख अवधि के नगर में गये। (उस नगर के एक कोने में) 'करवीर'

नामक गाँव के फनशीला नामक आरण्यक-वन में 'तलचि गुफा' नामक एक गुफा थी, वहीं बैठकर उन्होंने साधना करना आरम्भ किया। यह बात वहाँ की बहुत-सी चुड़ैल, जो वहाँ रहती थी उन लोगों ने जान लिया। एक चुड़ैल पद्मदेवी नामक चुड़ैलों की प्रधान थी। उसे इस घटना की जानकारी दी गई, वह आचार्य को विघ्न डालने के लिए अनेक सहेलियों के साथ उस स्थान में आई।

उस समय आचार्य एक काला कम्बल ओढ़कर नगर में भिक्षाटन करने जा रहे थे। उनकी रास्ते में चुड़ैल-लड़कियों के एक झुण्ड से भेंट हुई।

उन लोगों ने आचार्य से कहा— आपको हम लोग भोजन दान करेंगी, अतः आप हमारे घर पधारें।

आचार्य ने उत्तर दिया— 'मैं एक ही घर से भोजन नहीं ग्रहण करता। अतः भिक्षाटन करूँगा। यह कहकर पद्मदेवी आदि उस झुण्ड के पास अपना कम्बल रखकर भिक्षाटन करने चले गये, तो चुड़ैलों ने एक दूसरे से परामर्श करके यह तय किया कि इस वस्तु में कुछ शक्ति होगी अतः इसे खा लिया जाय। सब लोगों ने उस (कम्बल) को खाया और जो बचा वह आग में जला दिया।

जब आचार्य लौटकर आये, चुड़ैलों से कहा कि 'मेरा कम्बल कहाँ है? दो।' तब पद्मदेवी ने एक अन्य कम्बल दिया। आचार्य ने कहा— 'मुझे तो मेरा अपना कम्बल चाहिए।' यह कहकर उसको नहीं लिया। चुड़ैल ने सोना आदि (द्रव्य) उसके दाम के रूप में दिया तो उन्होंने उसे भी लेने से इनकार किया।

आचार्य ने वहाँ के राजा के पास जाकर शिकायत की कि तुम राजा हो, यहाँ चोरों की यह भरमार क्यों है?

राजा ने पूछा— 'चोरों ने किसका क्या लूटा?'

आचार्य ने कहा 'तुम्हारी चुड़ैलों ने मेरा कम्बल चुरा के ले लिया।'

राजा ने सभी चुड़ैलों को बुलाकर कहा 'तुम लोग, इस योगी का कम्बल

१. "मालपुर" सम्भवतः आज का 'मक्का' है, जो मुसलमानों का प्रधान तीर्थ है। करवीर= काबा-नामक स्थान भी वहीं है। यह लामा तक्छड़ रस्या जी की यात्रा विवरण से पता चलता है।

लौटाओ' चुड़ैलों में एक-एक कर सब लोगों ने मेरे पास नहीं है, कहकर, कम्बल नहीं लौटाया।

आचार्य वहाँ से चले और 'तलचि' गुफा में लौटकर साधना करते रहे। उन्होंने 'दश महाक्रोध' को बलि दी, तो चुड़ैलों के एक दल ने उस गुफा का पानी सूखा दिया। आचार्य ने पृथ्वी देवी को आदेश दिया कि पानी निकालो।' तो भूमि से पानी निकला। वहाँ की सभी चुड़ैलों ने एकत्र होकर चारों द्वीप (समुद्र पर्वत) सुमेरू पर्वत आदि में रहने वाली सभी चुड़ैलों को भी वहाँ आने की सूचना दी। वे सब आई और आचार्य को विघ्न डालने की चेष्टा की तो आचार्य ने उन सब लोगों को 'भेड़' बनाकर रख दिया। रानी आदि सब लड़की भेड़ बन गई और सब लोग आश्चर्यचकित हो गये। आचार्य से ऐसा न करने के लिए लोगों ने प्रार्थना की। आचार्य ने सभी भेड़ों के सिर से बाल छील कर छोड़े तो सब स्त्रियाँ (जो चुड़ैल थीं) नंगे सिर (अपने सिर में बाल न देखकर) रोने लगीं।

आचार्य उसी तलचि गुफा में बैठे रहे। एक बार काम-धातु के देवों ने गुफा की चट्टान गिरा कर आचार्य को मारने की चेष्टा की। आचार्य ने गिर रहे चट्टान को तर्जनी से निर्देश किया तो चट्टान ऊपर लौटकर आकाश में लटक गई जो अभी विद्यमान है^१।

वहाँ के राजा ने कहा— (अपनी रानी प्रमुख) इतनी चुड़ैल एकत्र होकर भी एक आदमी का सामना नहीं कर पाई; यह क्या हो गया? अब सब लोग उनसे क्षमा याचना करो और उनसे प्रतिज्ञा लेकर उसका पालन करो? पर लोगों ने इनकी बात नहीं सुनी। तब आचार्य ने उन लोगों को एक पंक्ति में निबद्धकर कहा कि तुम लोग मेरे शासन में प्रवेश लेकर प्रतिज्ञाबद्ध रूप से नहीं रहोगी तो सब लोगों को या तो यमराज को सौंप दूँगा या घोड़ा बनाकर ले जाऊँगा। आचार्य की शक्ति से भयभीत होकर सभी चुड़ैलों ने 'त्रिशरण' की दीक्षा ली और आचार्य का वह कम्बल (जो उन लोगों ने पहले खा लिया था) उलटी कर निकाला। आचार्य ने

१. यह भी 'मक्का' में ही है।

१२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

सभी (कम्बल के) टुकड़ों को जोड़ा, तो पहले की अपेक्षा कुछ छोटा हुआ (क्योंकि कम्बल का कुछ अंश उन लोगों ने आग में जला दिया था)। पुनः उसी कम्बल को ओढ़कर वह चल दिये, तो सब लोगों ने 'कम्बलपा' कहना आरम्भ कर दिया। तब उनका नाम 'कम्बलपा' प्रसिद्ध हो गया। उनका दूसरा नाम 'श्रीप्रभात' भी कहा जाता है।

अनेक वर्षों तक जगदर्थ कर अन्त में उसी शरीर के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु कम्बलपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



३१. गुरु डोम्बीपा

डोम्बीपा मूसल लेकर ओखली में धान कूट रहे हैं। उनके शरीर पर हलके वस्त्र एवं सिर पर जटा बँधी हुई है। उनके बगल में एक मदिरा बेचनेवाली स्त्री बैठी हुई है।



३२. गुरु भन्देपा

भन्देपा राजकुमार या राजपुत्र के वेश में अपने आसन पर बैठे हुए हैं। एक हाथ में मणिमय-चक्र धारण किये हुए हैं। दूसरा हाथ आकाश मार्ग से उड़ते हुए एक भिक्षु, जो भिक्षापात्र हाथ में लिए हुए है, की ओर संकेत करते हुए उसे देख रहे हैं। बगल में देवताओं के शिल्प-विशेषज्ञ राजपुत्र से कुछ कह रहे हैं।

३१. गुरु डिङ्गिपा का वृत्तान्त

गुरु डिङ्गिपा जाति के ब्राह्मण थे, जन्मस्थान शालिपुत्र^१ था। वह शालिपुत्र के राजा 'इन्द्रपाल'^२ के मंत्री थे। एक बार राजा के मन में सांसारिक धर्मों के प्रति संवेग उत्पन्न हुआ^३। अपने मंत्री को साथ लेकर वह उस श्मशान में गये, जहाँ लूहिपा विराजमान थे। उस स्थान पर पहुँचने पर लूहिपा के कुटी में जाकर उनका दरवाजा खटखटाया। आचार्य ने पूछा— कौन हो?

उन लोगों ने कहा— मैं राजा और यह मंत्री है।

आचार्य ने कहा— अन्दर आओ। (अन्दर गये) आचार्य ने उन लोगों की प्रार्थनानुसार दोनों को श्री चक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश करा के अभिषेक दिया^४। अभिषेक की दक्षिणा^५ के रूप में उन लोगों ने अपने-अपने शरीर अर्पित कर दिये। तीनों लोग वहाँ से अन्य प्रदेश 'ओदोश' (नामक स्थान) चले गये। वहाँ तीनों आचार्य भिक्षाटन करते रहे, उसके बाद उन लोगों ने राजा को बेच दिया (इसका वृत्तान्त दारिकपा के प्रसङ्ग में है)।

-
१. कुन खेन पद् कर के अनुसार इस जगह का नाम या उनके जन्मस्थान का नाम कुमारक्षेत्र (तिब्बती अनुवाद में कुमारी क्षेत्र) था, जो दक्षिण भारत के समीपतम ओडिविषय (ओडिविष्टि का विशेष नगर) है। (पद् ई०, पृ० ७५)
 २. यह राजा विमलचन्द्र का मंत्री था। (पद्० वही)
 ३. राजा के मन में संवेग उत्पन्न होने से पहले एक विशेष घटना घटी—वह यह कि राजा के राजधानी में 'कुमुद-पुष्प-उत्सव' होता था उस समय राजा बड़े सज-धज के साथ अपने उद्यान में जाया करता था। इस उपक्रम में राजा के लिए राजगद्दी सजा रखी थी, आचार्य लूहिपा जाकर उस गद्दी पर बैठ गये। इत्यादि। (प० कर० इ० पृ० ७५-७८)
 ४. कुन खेन पद् कर के अनुसार यह वही राजमहल में ही दिया (३० पद्-ई० पृ० ७६-७७)
 ५. दीक्षा के समय उनसे यह पूछा गया कि तुम ब्राह्मण हो, ब्राह्मण शुद्धता एवं जाति के बड़े प्रेमी होते हैं। हम योगी लोग मांस खाते हैं, मदिरा पीते हैं, तो मेरे प्रति श्रद्धा हो सकती है? मंत्री ने श्रद्धावान् होने का प्रमाण दिया—फिर दीक्षा हुई। (पद्० ई०, पृ० ६७-७७)

आचार्य लूहिपा और मंत्री ब्राह्मण जयन्तपुर में जाकर एक बौद्ध राजा के पास एक सप्ताह तक बैठे। उसके बाद आचार्य ने उस मंत्री को तौलकर बेच दिया इसका वृत्तान्त इस प्रकार है—

आचार्य और मंत्री दोनों (वहाँ से) एक मदिरा बेचनेवाली के पास गये। मदिरा बेचनेवाली प्रधान का दरवाजा खोलकर दोनों वहाँ पहुँचे और कहा कि तुम्हारी प्रधान कोई आदमी नहीं खरीदना चाहेगी? उस (द्वारपालिका) ने अन्दर जाकर अपनी स्वामिनी से पूछा, तो उसने उत्तर दिया— हाँ, साथ ही उनसे यह भी पूछो कि दाम क्या लगे? बाहर आकर सब स्थिति सुनी, तो आचार्य ने कहा कि तीन सौ तोला सोना चाहिए। उसने भी उतना ही देकर उस मंत्री को खरीद लिया। पर आचार्य ने उस ब्राह्मण को देते समय एक शर्त लगाई कि इनको उद्यान में अकेला सोने दो और तुम्हारे सोने का दाम पूरा हो जाने पर इनको वापस भेज देना। यह कहकर आचार्य वहाँ से चले गये।

उस ब्राह्मण (मंत्री) ने मदिरा बेचनेवाली के यहाँ बहुत अच्छा काम किया और सब लोग उसको स्वामीजी कहने लगे। एक दिन, दिन भर काम किया और सन्ध्याकाल में खाने की प्रतीक्षा न कर रात को उद्यान में चले गये। मदिरा बेचनेवाली प्रधान को रात में स्मरण आया कि आज उनको खाना नहीं दिया गया, उसने, उनका खाना वहीं पहुँचाने के लिए भेजा। भोजन लेकर एक नौकरानी उद्यान में पहुँची तो वहाँ क्या देखती हैं कि पन्द्रह देवपुत्रियाँ ब्राह्मण पुत्र का लाभ-सत्कार कर रही हैं और वे अपने शरीर के प्रकाश में बैठे हुए हैं। यह दृश्य देखकर वह नौकरानी वहाँ से लौट गई और इस घटना को जाकर अपनी स्वामिनी से कह सुनाया। उससे उनको बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने आचार्य (ब्राह्मण) से निवेदन किया कि आपसे हम लोगों ने बारह वर्षों तक अपने नौकर के रूप में रखकर काम लिया। हमें इसका पाप है। इसके प्रायश्चित्त के लिए अब बारह वर्ष तक आप हमारा पूज्यपद (गुरु का रूप) स्वीकार करें, हम आपकी सेवा करेंगी। पर आचार्य ने उसे स्वीकार नहीं किया।

मदिरा बेचनेवाली प्रमुख सहित जयन्तीपुरी के सभी प्रकार के लोगों को उन्होंने बहुत से धर्मोपदेश और दीक्षा दिए। अन्त में सात सौ शिष्य-परिवार के साथ वह खेचर भूमि चले गये।

जब वह मदिराशाला में काम करते थे, उस समय मुख्य रूप से वे धान कूटने का काम करते थे, इसलिए उनका नाम 'डिङ्गिपा' पड़ा। उनका दोहा निम्न प्रकार है—

वेद पाठक डिङ्गिपा धान कूटक ध्यानी हो,
ओखरी में खूब धान कूटते हैं, झाड़ू से बिखरे को संगृहीत करते हैं।
गुरु उपदेश से धान कूटता हूँ, दूसरा काम न कर, काले धानों को कूटता हूँ।
प्रथमतः कुशलों के द्वारा पाप कूटता हूँ।
प्रतिसंविद बज्र हथौड़ा है, उसका^१ प्रकाश सूर्य-चन्द्र है।
शून्य धर्मता की ओखरी में, हेय-उपादेयता को अद्वैतभाव से कूटता हूँ।
'हूँ' कार शब्द से विकल्पों के दधि मथने पर, महासुख नवनीत का सर्जन हुआ है,
और (उससे) अद्वैत रस की अनुभूति हुई है।

यहाँ डिङ्गिपा के मदिराशाला में बेचे जाने का प्रयोजन ब्राह्मण होने के नाते उनमें जाति-अभिमान-विकल्प की प्रबलता थी। जाति महत्ता का विकल्प मदिराबेचने (के कार्य) से क्षीण हो जाता है। अतः जाति अभिमान त्यागने के लिए उनको वहाँ बेचा गया।

गुरु डिङ्गिपा^२ का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. भोट भाषा में (ओद् सेर्०) शब्द हैं, उसका हिन्दी रूप प्रकाश, प्रभाव, प्रयास होता है; यहाँ 'प्रभाव' अर्थ है, पर शब्द प्रकाश ही है।
२. इनके लिए 'डिङ्गिपा' का नामकरण इसलिए हुआ कि जब राजा और मंत्री दोनों अभिषेक एवं दीक्षा लेकर आचार्य के पास उपदेश के लिए बैठे थे, तो आचार्य ने मंत्री से प्रश्न किया कि इस समय तुम्हारे मन में सब से अधिक स्पष्ट प्रतीति किस विषय की है? ब्राह्मणमंत्री ने उत्तर दिया—'डिङ्ग' (मूसल, जिसके द्वारा धान कूटा जाता है) के शब्द का; आचार्य ने उस डिङ्ग (मूसल) के शब्द को ही आधार बतला कर शून्य-धर्मता की देशना दी। तदनुसार उन्हें सिद्धि का लाभ हुआ। इसलिए उन्हें डिङ्गि कहा गया, पा शब्द आदर सूचक है (द्र० पद० इ० पृ० ७७)।

३२. गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त

गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—भन्धे का अर्थ है—‘धनदेवधर’। इनका जन्मस्थान श्रावस्ती था और जाति के यह देवयोनि थे। उनके गुरु आचार्य कृष्णाचार्य थे।

भन्धेपा आकाश में रहते थे। एक समय एक ‘आर्य-अर्हत’ चीवर-पात्र और दण्ड लेकर सप्रकाश आकाशमार्ग से जा रहे थे। यह देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने देव-कारीगर विश्वकर्मा से पूछा—हे स्वामी-सुत! इस प्रकार का अद्भुत व्यक्ति आकाश में उड़कर जानेवाला, यह कौन है?

विश्वकर्मा ने कहा—यह क्लेशों को प्रहीण किये हुए आर्य-अर्हत कहे जाते हैं। इसे सुनकर भन्धेपा को इसकी (अर्हत्त्व) प्राप्ति की बड़ी इच्छा हुई।

भन्धेपा ने पुनः जम्बूद्वीप की धरती पर आकर आचार्य कृष्णपा से धर्मोपदेश एवं दीक्षा के लिए प्रार्थना की। कृष्णपा ने उन्हें गुह्य-समाज मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया। योग-रक्षण के उपाय के रूप में चार अप्रमाणों के उपदेश दिए।

तदनुसार उन्होंने करुणा दृष्टि (दर्शन), मुदिता-भावना, मैत्रीचर्या और उपेक्षा के फल के रूप में भावना की। फलतः विपरीत भ्रान्तियों का सारा विष (सभी मल) विशुद्ध हो गया और उन्हें ‘महामुद्रा परमसिद्धि’ का लाभ हो गया। उनका नाम सर्वत्र भन्धेपा प्रसिद्ध होने लगा।

जब विश्वकर्मा ने उनसे पूछा कि आपने क्या कर लिया है? तब उन्होंने निम्न दोहा कहे—

निरालम्बन दर्शन, भावना के, नैरन्तर्य

माता-पिता के सदृश चर्या, आकाश के समान फल। ये चारों के
अद्वैतभाव का साक्षात् दर्शन हुआ है, अब अभिनिवेशों की सिद्धि कहाँ
से होगी?

अहो गुरु! अद्भुत हैं, ये पण्डितों के सदा सेव्य हैं।

श्रावस्ती आदि छः जनपदों में चार सौ वर्ष तक अपरिमित जगदार्थ करने के बाद चार सौ शिष्य-परिवार के साथ उसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये।

गुरु भन्धेपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



३३. गुरु तन्देपा

तन्देपा या तन्देपा अलङ्कार एवं जटा-मुकुट तथा भावना-सूत्र धारण किये हुए हैं। वे प्रसन्न मुद्रा में 'जुआ' खेल रहे हैं (नोट—यहाँ दिखाई पड़नेवाले जुए का खेल प्राचीनतम परम्परा का लगता है, इसका स्वरूप आज भी तिब्बत, मंगोल, चीन के पश्चिमी क्षेत्रों में देखा जाता है)।



३४. गुरु कुक्कुरीपा

कुक्कुरीपा या कुकुरिपा षड् अलङ्कार जो तान्त्रिक विधि के आधार पर हड्डी से बने होते हैं, धारण किये हुए हैं और सिर पर जटा शिखा मुकुट सहित सजी हुई है। प्रेम-विह्वल मुद्रा में एक कुतिया को गोद में लिए हुए हैं।

३३. गुरु तन्तिपा का वृत्तान्त

‘तन्तिपा’ का अर्थ जुआ खेलनेवाला है। इनका जन्म-स्थान कोशम्भि था और जाति के यह शूद्र थे।

कोशम्भि जनपद में शूद्र जाति के व्यक्ति सदा जुआ खेलते रहते थे। इसी खेल से तन्तिपा का भी अन्त में सभी धन समाप्त हो गया, फिर भी आदत हो जाने से पुनः जुआ खेलने लगे। बाजी हार जाने के बाद उनके पास देने के लिए कुछ नहीं रह गया, तो लोगों ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया। इससे बड़े दुःखी होकर वह एक श्मशान में जा बैठे। एक योगी वहाँ आये और उनसे मिले। पूछा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उन्होंने उत्तर दिया—जुआ खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता था और जुआ खेलने की आदत बन गयी; जिसके कारण मेरी सभी सम्पत्ति उसी में चली गई। अतः अब मैं काय और चित्त दोनों दुःखों से पीड़ित होकर यहाँ आ बैठा हूँ।

योगी ने कहा कि तुम धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उसने उत्तर दिया— मैं जुआ खेलना नहीं छोड़ सकता, यदि बिना जुआ छोड़े कोई धर्म होता हो, तो अवश्य करूँगा, और वही हमें दें।

योगी ने कहा—हाँ मेरे पास वैसा धर्म है। यह कहकर उन्होंने उसे अभिषेक दिया और यह उपदेश दिया—

जैसे जुआ से तुम्हारे धन द्रव्य क्षीण होकर अन्त में समाप्त हो गये, वैसे ही समस्त त्रिधातु की शून्यता की भावना करो। जैसे त्रिधातुक शून्य है, वैसा ही चित्त (अपने चित्त) की भी शून्यता की भावना करो।

दोहा—

जैसे जुआ से सभी प्रकार के धन का क्षय हो गया, ज्ञान जुआ से त्रिधातुक के समस्त विकल्प का क्षय कर दो, जैसे उसने अपने को पिटवा दिया।

वैसा ही विकल्पों को धर्मकाय के द्वारा पीट दो, जैसा विरक्त हो श्मशान में सोये थे।
वैसे ही महासुख के गर्भ में सो जाओ।

इस प्रकार जैसे निर्देश दिया वैसे ही उसने भावना की। फलतः त्रिधातुक विकल्प धर्मता में लीन हो गये। इस तरह के ज्ञान से निःस्वभावता में लीन होकर उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त हुई।

उन्होंने (अपना अनुभव) कहा—

प्रथमतया संवेग^१ का उत्पाद न हुआ हो तो मोक्षमार्ग में प्रवेश कहाँ होता?
श्रद्धा से गुरु का सेवन न किया, तो (मुझ में) परमसिद्धि का प्रवेश कहाँ से होता?

यह कहकर आकाश में ऊपर उड़े और उसी शरीर के द्वारा वह खेचर भूमि चले गये ।

गुरु तन्त्रिणा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. 'संवेग' 'विराग' का प्रथम चरण माना जाता है।

३४. गुरु कुकुरिपा का वृत्तान्त

गुरु कुकुरिपा का^१ जन्म-स्थान कपिलवस्तु (कविल-स-कुन) था, जाति के आप ब्राह्मण थे^२।

कपिलवस्तु के एक ब्राह्मण को तन्त्र के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। वह योगी की चर्या करते हुए क्रमशः लुम्बिनी नगर जा रहे थे, रास्ते में एक कुतिया अपने से उठ पाने में असमर्थ थी। उसे देखकर उसके प्रति उनके मन में अपार मैत्री पैदा हो गई। उस कुतिया को लेकर वह नगर में पहुँचे और चारों ओर देखा, तो एक ओर एक खाली गुफा दिखाई दी। उसीमें उसे रखा। भिक्षाटन कर जीविका चलाकर वह उसी गुफा में अपनी साधना करते रहे। बारह वर्ष के बाद कुछ लौकिक सिद्धि 'अभिज्ञा' आदि की उन्हें प्राप्ति हुई।

उसके बाद त्रयस्त्रिंशत् देवताओं के निमन्त्रण पर वे त्रयस्त्रिंशत् गंगे पर कुतिया वहीं रह गई। आदमी के अभाव में कुतिया ने भूमि खोदी और वहाँ से जब पानी कीचड़ आदि निकला तो वह उसी को खाती रही। देवताओं ने योगी की विस्तृत भाव्य पूजा की। पर योगी को कुतिया की याद आई और वे वहाँ से लौटने की तैयारी करने लगे।

देवताओं ने उनसे कहा— आपको इतने गुण प्राप्त हो गये पर कुतिया का विकल्प? क्या इतना भी नहीं छूट सका? यह अच्छा नहीं हुआ। आप यहीं बैठें।

१. कुकुराजा, कुत्ताराजा, आदि नाम भी हैं (दुजोम-जिडमा ३० पृ० ८९)।

२. कुन खेन पद्मकर के अनुसार—इनका जन्मस्थान वाराणसी के पूर्व भाग में सुवर्णकुंड (भोट भाषा में 'श्रे' शब्द है) है। ये सरह के छोटे भाई थे। इनका बचपन का नाम उद्धटस्वामी था, राहुल नामक उपाध्याय से उपसम्पदा लेकर भिक्षु बने, भिक्षु का नाम वीर्यभद्र था। उसी उपाध्याय से मन्त्रयान-साधना की दीक्षा लेकर बुद्ध गया में साधना करते रहे। वहाँ उनका नाम 'त्यायिपा' प्रसिद्ध हो गया। वहाँ वे दिन में एक सौ कुतियों के बीच में रहते थे और रात में उन डाकिनियों के साथ गण-चक्र का उपक्रम किया करते थे। इस कारण उनका नाम 'कुकुरिपा' पड़ा (पद्मकर—३०, पृ० ७२-७३)।

इस प्रकार उनको रोक दिया गया। एक समय देवताओं के मना करने पर भी उन्होंने नहीं सुना और उस गुफा में वापस लौट आये। कूकरी को देखकर उस पर हाथ फेरा, तो वह एक डाकिनी के रूप में परिणत हो गई। उसके मुख से ये शब्द निकले—

साधु-साधु कुल-पुत्र विघ्न के वशवर्ति न होकर तुम,
परमसिद्धि लेने आये, पूर्वसिद्धि मिथ्या है।
वह परमसिद्धि विपरीत दृष्टिवालों में भी होती है,
वह कोई अद्भुत नहीं परिवर्तनशील है,
अनास्रव महासुख परमसिद्धि (तुम्हारी) मा (मैं) देती हूँ।

यह कहकर प्रज्ञोपाय-युगल का संकेत दिखलाया, फलतः अपरिवर्तनीय और अविपरीत दृष्टि प्राप्त होकर परमसिद्धि का लाभ हुआ।^१ उसके बाद लुम्बिनी^२ आदि सर्वत्र उनका नाम गुरु कुकुरिपा प्रसिद्ध हो गया।

अन्त में अनेक जगतार्थ के बाद कपिल कु (कपिलवस्तु) के बहुत से जन समुदाय को लेकर उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कुकुरिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

-
१. बहुत से वृत्तान्तों के अनुसार कुकुरिपा ने 'सर्वबुद्ध समायोग तत्त्व' एवं 'गुह्यचन्द्रबिन्दु' नामक योग-तन्त्रों की साधना से परमसिद्धि का लाभ किया (दुजोम् ई० पृ० ४२, कलिमपोड् संस्करण)।
 २. तारानाथ बुस्तोन एवं दुजोम की कृतियों में 'लुम्बिनी' की जगह गया (बुद्धगया) या 'वज्रासन' ही लिखा है। (दुजोम इ० पृ० ४१-४२)। बुस्तोन ने उनका कार्य-क्षेत्र मध्यदेश का मालव (मालवा) कहा है (योगावतार—पृ० १६। 'द' पुट, B.N. ६७)।



३५. गुरु कुचिपा

गुरुकुचिपा अर्थात् कुबड़ा, उनके गले के पीछे बहुत बड़ी कूबड़ या गण्ड निकला हुआ है। जिसकी वजह से वे सामने की ओर झुके हुए हैं। भावनासूत्र लगाकर बैठे हैं। सामने आचार्य नागार्जुन कुछ उपदेश दे रहे हैं। दोनों एक वीरान स्थल पर बैठे हैं।



३६. गुरु धर्मपा

गुरुधर्मपा ब्राह्मण पण्डित के वेश में हैं। हलकी जटा शिखा, जनेऊ, गले एवं कान में हल्के आभूषण पहने हैं। एक पैर पर दूसरा पैर रखकर अध्यापन की मुद्रा में हैं। उनके आस-पास बहुत-सी पोथियाँ रखी हुई हैं।

३५. गुरु कुचिपा का वृत्तान्त

कुचिपा का अर्थ कुबड़ा है। इनका जन्म-स्थान 'कहरि' (कहिरार) नामक स्थान था। वह जाति के शूद्र थे।

कहरि नामक स्थान में शूद्र जाति का एक व्यक्ति कृषि से अपनी जीविका चला रहा था। एक समय अपने पूर्व कर्मवश उसकी गर्दन के पीछे एक मांस का टुकड़ा 'कुचि' सूज कर उभर आया। उसके बहुत बढ़ जाने के कारण उनके लिए चलना-फिरना भी कठिन हो गया। कूबड़ से दुःखी होकर वह विशेष एकान्त जगह में जाकर बैठा।

एक समय वहाँ आचार्य नागार्जुन आ पहुँचे। आचार्य को देखकर उस आदमी के मन में अपार श्रद्धा उत्पन्न हुई और अञ्जलिबद्ध करके उनके सामने बैठकर उसने कहा— 'अहो आर्य! आप कहाँ से आये हैं? मैं तो कुकर्म से पीड़ित हूँ। इस प्रकार के असह्य दुःख में हूँ। इससे मुक्त होने का उपाय आप मुझे बता दें।'

आचार्य ने उत्तर दिया—इससे मुक्त होने का उपाय तो है, पर आप उद्यमपूर्वक उसकी साधना कर पाएंगे? यदि सक्षम हों, तो समस्त दुःखों का मूल उच्छिन्न करके सुख की स्थिति प्राप्त करने का उपाय तो अवश्य है।

उसने कहा—आर्य, उद्यम से साधना क्यों नहीं कर सकेंगे, अवश्य कर सकेंगे।

तब आचार्य ने उसे गुह्य-समाज मण्डल में अभिषेक दिया। दुःख को मार्ग के रूप में परिणत करने के उपाय, उत्पत्ति एवं सम्पन्न (क्रम) की देशना दी। वह इस प्रकार है—

'उत्पत्ति-क्रम के अनुसार आलम्बन का निर्देश देते हुए आचार्य ने उनसे कहा— 'तुम अपनी गर्दन के पीछे के कुचि (मांस का टुकड़ा) को क्रमशः बढ़ते हुए भावना करो।' उसने वैसा ही किया। फलतः कुचि बहुत बढ़ गयी और दुःख पीड़ा भी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। पुनः एक दिन आचार्य ने वहाँ आकर उनसे पूछा कि 'क्या अच्छा हुआ?'

उसने उत्तर दिया कि नहीं, इसमें तो अत्यधिक पीड़ा बढ़ रही है।

आचार्य ने सम्पन्न-क्रम के आलम्बन अनुसार उससे कहा कि समस्त धर्म (ज्ञेय-वस्तु) उसी के अन्दर संगृहीत हो रहा है; ऐसी भावना करो। उस व्यक्ति ने वैसा ही किया। फलतः उसकी वह (भयंकर) कुचि समाप्त हो गई। वह सुख से विहार करने लगा। पुनः आचार्य वहाँ आ पहुँचे और उससे पूर्ववत् अच्छा हो रहा है? यह पूछा। उसने उत्तर दिया— 'जी हाँ, बहुत अच्छा हो गया।

आचार्य ने उन्हें उपदेश दिया—

“सत्-असत् से सुखी-दुःखी हुआ करता है, जो अन्त-द्वय से विरत हो जाता है, उसमें सुख एवं दुःख कहाँ से होता है, सभी धर्म स्व-स्व स्वभाव से शून्य हैं।”

उस व्यक्ति को इसका सम्यक् अवबोध हो गया। कुचिपा को निरालम्बन 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हो गया। वह 'कहरि' जनपद आदि [अनेक स्थानों] में सौ वर्ष तक जगतार्थ करते रहे। उनका नाम भी 'कुचिपा' प्रसिद्ध हुआ। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु कुचिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

३६. गुरु धर्मपा का वृत्तान्त

गुरु धर्मपा-का वृत्तान्त इस प्रकार है। धर्मपा [धम्बा?] का अर्थ है, 'श्रुत-मयी प्रज्ञा'

उनका जन्म-स्थान विक्रमसुर [पुर] नामक जनपद था और वह जाति के ब्राह्मण थे।

विक्रमसुर में एक ब्राह्मण सदा श्रवण [शास्त्र सुनने] में लगे रहते थे; परन्तु चिन्तामयी एवं भावनामयी प्रज्ञा से वह शून्य थे। एक समय उनके पास एक योगी आ पहुँचे और योगी ने उनसे कहा— बहुश्रुत बुद्धि में बहुत धर्म होगा?

उस ब्राह्मण ने योगी से कहा—हे आर्य! मैंने धर्म का श्रवण तो बहुत किया, पर सुनने के तुरन्त बाद भूल जाता हूँ। [मेरे पास कुछ नहीं है, अतः] आप मुझे न भूलने की [कोई] दीक्षा [हो, तो] दें।

योगी ने उचित है, कहकर ये उपदेश दिये—

जिस प्रकार अनेक रत्नचूर्णों को सोनार सम्यक् रूप से एकत्रित कर देते हैं, उसी प्रकार नाना प्रकार के श्रवणों को भी, चित्त-धातु के अन्दर पिघला दो।

इस [उक्ति] का अर्थ अवबोध होकर उस व्यक्ति को समस्त श्रुत-धर्मों एवं अनेक चित्त-वृत्तियों की [नाना] समरसता का ज्ञान हो गया। फलतः उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ और उनका नाम धर्मपा प्रसिद्ध हो गया।

अनेक विनेय लोगों को मार्ग में आरूढ़ करके उसी शरीर के साथ वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

३७. गुरु महिलपा का वृत्तान्त

गुरु महिलपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—महिलपा का अर्थ है, घमण्डी। उनका जन्म-स्थान मगध था और वे जाति के शूद्र थे।

मगध जनपद में रहनेवाला शूद्र जाति का एक व्यक्ति शरीर से बहुत बलवान एवं स्वस्थ था। वह सदा यह सोचकर कि मेरे द्वारा अभिभूत न किया जा सकनेवाला आदमी या कोई प्राणी नहीं है, इस प्रकार के अभिमान से वह सदा अभिभूत होकर रह रहा था। ऐसे में एक दिन एक योगी उसके पास आये और उसको देखकर कहने लगे कि तुम क्या सोच रहे हो?

उसने उत्तर दिया कुछ नहीं सोच रहा हूँ? योगी ने कहा — मेरे द्वारा दबाया नहीं जा सकता हो, ऐसा (दुनियाँ में) कोई प्राणी नहीं है। यह विचार क्या है?

यह सुनकर वह [बलवान आदमी] उस योगी के प्रति बहुत श्रद्धालु हो गया। उसने योगी को 'नमः' कहकर प्रणाम किया।

योगी ने उसके उत्तर में कहा— 'अभिमान का मल विशुद्ध हो'।

उस [बलवान] ने योगी से निवेदन किया कि आप मुझे कुछ धर्म का उपदेश दें।

योगी ने हो सकता है [औचित्यम्] कहकर उन्हें अधिष्ठान-उत्क्रान्ति नामक अभिषेक दिया और कहा—

“लोक [प्रतीतियों को] चित्त के रूप में ही जान लेना चित्त शून्य अनिरोध और अनुत्पाद है। उसी में निर्विक्षेप रहना भावना है, (सब कुछ) धर्मता में लीन होना फल है।”

उसने योगी से कहा— मैं नहीं समझ पाया।

पुनः योगी ने कहा—



३७. गुरु महिषा

गुरु महिषा (महिलषा) पहलवान के रूप में हैं। ये बल-प्रतियोगिता दिखाने की मुद्रा में हैं। इनके बाहु, जंघा आदि अङ्ग-प्रत्यङ्ग बहुत स्थूल एवं मोटे हैं। गले में हलके गण्ड (गाँठ) उभरे हुए हैं। उस पर कुछ मोटी झुर्रियाँ या रेखाएँ भी पड़ी हुई हैं।



३८. गुरु अचिन्तपा

गुरु अचिन्तपा निर्जन वन में आधा लेटे हुए हैं। अपने को आकाश के मध्य में सितारे के रूप में रखकर भावना कर रहे हैं। यहाँ जो उनकी चित्र-प्रतिमा दिखाई पड़ रही है, वह उनकी समाधि की अवस्था का परिचायक है अर्थात् यह मन का चित्र है।

“तुम भी बहुत बलवान हो,

तुम्हारे द्वारा नहीं हो सकता ऐसा कुछ नहीं है।

आलोक [विषय], वायु एवं चित्त, तीनों को तुम आकाश के मध्य में ही ग्रहण कर लो”

इस प्रकार उन्होंने विरोध को मार्ग के रूप में उपयोग करने का उपदेश दिया।

उस [बलवान] ने भी यह तो क्या कठिन है, सोचकर ग्रहण किया, तो ग्राह्य विषय नहीं मिल सका, जिसके कारण ग्राहक-चित्त भी खो गया। सर्वत्र ‘आकाश’ के मध्य-बिन्दु के समान देखकर, उन्हें ‘परमसिद्धि’ की प्राप्ति हो गई।

मगध अदि अनेक जगहों में तीन सौ वर्षों तक अपरिमित विनेय जनों के लिए निःस्वभाव धर्मता की बलवत्तर देशना करते रहे। अन्त में ढाई सौ शिष्य परिवार के साथ उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु महिलपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

३८. गुरु अचिन्तपा का वृत्तान्त

गुरु अचिन्त का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'अचिन्त' का अर्थ स्मृति-रहित है। इनका जन्म-स्थान 'मानिरूप' था और वे जाति के काष्ठहारी (लकड़ी बेचनेवाले) थे।

वे अत्यन्त गरीब एवं दरिद्रता के कारण रात-दिन धन-द्रव्य की तृष्णा में लगे रहते थे। अन्य कोई भी लौकिक विकल्प (लोक व्यवहार की बातों के विचार) उनके मन में कभी उठते ही नहीं थे। सब समय धन-द्रव्य के विकल्प से पीड़ित होकर एक दिन एकान्त जगह में बैठे थे कि योगी कम्बलपा उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने कहा—तुम एकान्त में काय-वाक् एकान्त होकर बैठे क्या सोच रहे हो?

उस (गरीब) ने उत्तर दिया—हे योगी! मुझे तो लौकिक धन-द्रव्य की चिन्ता के अलावा और कुछ नहीं सूझता। धन की चिन्ता करने पर भी कुछ नहीं मिलता।

आचार्य (कम्बलपा) ने कहा—मेरे पास धन-द्रव्य प्राप्त करने के उपदेश हैं। तुम इसकी साधना कर सकोगे?

उस (गरीब) ने कहा—उसकी साधना न कर पाने का प्रश्न ही नहीं है, वह मुझे अवश्य दें।

आचार्य ने उसे श्री चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक दिया और गम्भीर सम्पन्न-क्रम की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है—(दोहा में)

कामना मात्र से प्राप्ति कहाँ होती है? जैसे वन्ध्या का पुत्र,

अतः काम चिन्ता को त्यागकर, अपने काय के आकाश मध्य में।

अपने चित्त को नक्षत्र के रूप में स्पष्ट भावना करो, वही धन देवता है,

साक्षात्कार होने पर समस्त इष्ट काम आ जायगा।

उसने भी इस दोहे के अर्थ अवबोध के साथ वैसी ही भावना की। फलतः

उसका धन-द्रव्य का विकल्प नक्षत्र के रस में खो गया। नक्षत्र भी आकाश के बीच में विलीन हो गये और वह निर्विकल्प की अवस्था में पहुँच गया।

तब पुनः एक दिन आचार्य ने स्वयं उसके पास आकर पूछा— क्या हुआ और क्या देखा?

उसने उत्तर दिया — कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ ऐसा कहकर वह निर्विकल्प की स्थिति पर पहुँच गया।

आचार्य ने उसकी निर्विकल्प (भावना) की अवस्था को देखकर, पुनः उससे कहा—(दोहा)

आकाश स्वभाव को यथावत्, तुमने विषय के रूप में ग्रहण किया है क्या?

जो वर्ण-संस्थान से रहित है, उसके प्रति कैसी आसक्ति और कैसी भावना?

शिष्य ने इसका अभिप्राय समझ लिया और उसे 'महामुद्रा' (परमसिद्धि) का लाभ हो गया। उसका नाम गुरु 'अचिन्त' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अचिन्त ने तत्त्व-धर्मता की देशना द्वारा तीन शताब्दियों तक सत्त्वार्थ सम्पादन किया; अन्त में अपरिमित शिष्य परिवारों के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु अचिन्तपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

३९. गुरु भवह (भवहि) का वृत्तान्त

गुरु भवह का वृत्तान्त इस प्रकार है। भवह का अर्थ है, जल से क्षीर (दूध) लेनेवाला। उनका जन्म-स्थान 'घञ्जुर' था। जाति के वह क्षत्रिय थे। घञ्जुर नामक प्रदेश (जनपद) में क्षत्रिय जाति के एक व्यक्ति काम-भोगों से उन्मद होकर राज कर रहे थे। एक दिन उनके पास एक सु-अभ्यस्त योगी आ पहुँचे, उन्होंने भोजन के लिए उनसे भिक्षा की याचना की। उन्हें उत्तम भोजन कराया गया और राजा उनके श्रद्धालु हो गये। राजा ने उन योगी से कहा— 'आप कुछ धर्मोपदेश दें।'

योगी ने 'समस्त धर्मों का मूल समय^१ है, सभी सिद्धियों का मूल गुरु है।' कहकर उन्हें अधिष्ठाता उत्क्रान्ति का अभिषेक दिया और 'नाड़ी', वायु और बिन्दु की देशना दी। वह इस प्रकार है—(दोहा)—

“उपाय युक्त परदेह विशेष के,
भग रूपी मण्डल के मध्य स्थित,
रक्त के महासमुद्र में,
बोधिचित्त का दूध मिलाकर लिया करो ॥ १ ॥
(वह) अन्तिम स्थान में पहुँचने पर भीतर खींचो,
यह विछिन्न प्रवाहवाली उस सुख की तरह नहीं है।
सुख से सुख का प्रहाण होने पर,
उसकी भावना शून्यता से अभेदभाव में करो।” ॥ २ ॥

उन्होंने भी इन (दोहों के अर्थ साक्षात्कार) की भावना का अनुष्ठान किया। बारह वर्ष बाद दर्शन-प्रहातव्य मल-विशुद्ध होकर परम सिद्धि को प्राप्त हो गये। उन्होंने अनेक विनेय-जनों के अर्थ साधन के बाद सशरीर खेचर भूमि की ओर प्रस्थान किया।

गुरु वभह (वभहि) का वृत्तान्त समाप्त ॥

-
१. वभट्टि की जगह ववहि, वभह आदि रूप मिलते हैं। कदाचित् इन शब्दों का अर्थ 'वतख' हो।
 २. 'समय' से तात्पर्य आज्ञा का शब्दशः पालन करना है।



३९. गुरु भवहिपा

गुरु भवहि या भवह राजा के वेश में हैं। वे दोनों पैर की अंगुलियों के बल पर खड़े हुए हैं। हाथ में अमृत-भरा कपाल है। एक ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन कर रही है।



४०. गुरु नलिपा

गुरु नलिपा कमल से पूर्ण झील या सरोवर के तट पर बैठे हुए हैं। कमल या पद्म के समूहों से कुछ पद्म मूल सहित तोड़कर दूसरे हाथ में थामे हुए हैं। वे बहुत प्रसन्न मुद्रा में हैं।

४०. गुरु नलिनपा का वृत्तान्त

गुरु नलिनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘नलिनपा’ का अर्थ है, पद्ममूलवाला। इनका जन्म-स्थान शालिपुत्र था और वह क्षत्रिय जाति के थे।

शालिपुत्र जनपद में एक क्षत्रिय व्यक्ति अत्यन्त गरीब होने के कारण झील के अन्दर से पद्ममूल लेकर अपनी जीविका चला रहे थे। एक समय एक योगी से उनकी भेंट हुई। उन्होंने योगी को भी उस पद्ममूल का भोजन कराया। उस योगी ने भी उन्हें संसार के दोष एवं निर्वाण के गुणों की देशना दी।

उसने संसार के प्रति विरक्त होकर गुरु से कहा—गुरुजी! मुझे उस निर्वाण को प्राप्त करने के लिए कुछ उपाय की देशना दें। योगी ने उचिततम् कहकर उन्हें गुह्य-समाज के मण्डल में प्रवेश कराया और अभिषेक दिया। योगी का उपाययुक्त स्वकाय आश्रित उपदेश इस प्रकार था—(दोहा)

मूर्ध में स्थित महासुख (रूपी),

शुक्ल हँकार की सम्यग् भावना करनी चाहिए।

नाभि (प्रदेश) में स्थित निर्मितक अक्षर वँकार के,

प्रज्वलित प्रकाश से हँकार स्रवित होने पर।

नन्द, आनन्द, परमानन्द,

और सहज-आनन्द के क्रमशः

उदय होने पर, सांसारिक दोषों और,

मोक्ष (रूपी) महासुख को छोड़ते हुए लेना है ॥

उसने भी (इन दोहों की यथा अभिप्राय) वैसी ही भावना की।

फलतः जैसे पद्म ‘पंक’ से उत्पन्न होने पर भी पंक से अस्पृष्ट होता है, वैसे ही भव्याचार-आनन्द को चार चक्रों के आधार पर भावना करने से भी आलम्बन एवं संसार के दोषों से अस्पृष्ट ही रहा जाता है।

११० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

नौ वर्ष के बाद (उस भाव्य) अर्थ का अवबोध होकर सभी प्रकार के भ्रांति मलों से उनका चित्त विशुद्ध हो गया। फलतः 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उन्हें लाभ हुआ।

उन्होंने शालिपुत्र में अनेक जगदार्थ सम्पादन किए। वह चार शताब्दी के बाद साढ़े पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ सशरीर खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु नलिनपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



४१. भुसुकुपा

गुरु भुसुकुपा (शान्तिदेव) भिक्षु वेश में हैं। वे भिक्षुओं के बहुत बड़े संघ के बीच, बहुत ऊँची गद्दी पर बैठे हुए उपदेश-मुद्रा में हैं।



४२. गुरु इन्द्रभूति

गुरु इन्द्रभूति राजा के वेश में हैं। उनके हाथ धर्म-उपदेश एवं जलदान-मुद्रा में हैं। वे नाना प्रकार के वाद्य-संगीत के साथ नृत्य करने वाली स्त्रियों से परिवृत्त हैं।

४१. 'गुरु भुसुकु' पा का वृत्तान्त

गुरु भुसुकुपा^१ का वृत्तान्त इस प्रकार है। ये नालन्दा^२ के थे। जाति के क्षत्रिय और बड़े भद्र स्वभाव के थे। ये परिव्राजक ग्रहण करके भिक्षु बने।

उस समय नालन्दा में राजा देवपाल राज करते थे। उनके धर्मपीठ में सात सौ भिक्षुओं के संघ का भोजन-पानी आदि भव्य लाभ-सत्कार हुआ करता था। चारों निकायों के भिक्षु लोग वहाँ विद्यमान थे। उनमें से महासांघिक निकाय के एक उपाध्याय के पास तीन सौ शिष्य थे। अन्य सब लोग बड़े उद्यमी थे और सभी पाँच विद्या स्थानों के वे लोग विशेषज्ञ थे। एक क्षत्रिय भिक्षु थे। वह सब समय सोते रहते थे और उनकी पाचन शक्ति भी बहुत प्रबल थी। प्रतिदिन पाँच सेर (पका) चावल खाते थे। उसे देखकर राजा देवपाल कहने लगे— यह तो भुसुकु है। इससे उनका नाम भुसुकु प्रसिद्ध हो गया। 'भुसुकु' से तात्पर्य— खाना, सोना और शौच जाना। भुक्ता, सुप्ता और कुकता का संक्षिप रूप भुसुकु है।

उस समय नालन्दा विद्यापीठ में यह प्रथा प्रचलित थी कि वहाँ के सभी विद्वान् बारी-बारी से सभा में सूत्रों का पाठ करें। वहाँ के सभी लोग भुसुकु की बड़ी निन्दा किया करते थे। उनके उपाध्याय ने भी उनसे कहा कि 'तुमसे सूत्र-पाठ आदि कार्य नहीं हो पायेगा। अतः यहाँ से चले जाओ।'

१. 'भुसुकु' का अर्थ है—भुक्ता, सुप्ता और कुकता अर्थात् खाना, सोना और पचाना (पेट में पचा कर—मलमूत्र के रूप में फेंकना) समास— 'भुसुकु' है।

२. 'नालन्दा' उनका अध्ययन स्थान ही था। इनका जन्मस्थान 'भद्रनगर' या सौराष्ट्र था। ये जाति के क्षत्रिय थे। इनके पिता का नाम महाराज कल्याणवर्मा था। इनका नाम शान्तवर्मा था। बचपन से ही ये बड़े तीव्र बुद्धि के थे। एक 'भुसुकु' योगी से इन्होंने 'तीक्ष्ण मञ्जुश्री' की साधना ग्रहण की और फलतः इष्टदेव का साक्षात्कार हुआ। जब इनके पिता का देहान्त हुआ इन्हें राजगद्दी पर बैठना था। उसी समय राजमहल छोड़कर, वे नालन्दा आये थे।

(इ० बुस्तो० इ० पृ० ११३ B. vol, No 240, P. 858 .। तारा, इ०, के अनुसार इनका नाम मञ्जुवर्मा था।)

भुसुकु ने उत्तर दिया—भिक्षु नियम के शील के बिना भ्रष्ट हुए मुझे स्थानच्युत करना उचित नहीं है। विद्या अध्ययन का मुझे सौभाग्य प्राप्त नहीं है। यह कहकर उन्होंने वहाँ से जाने में अनिच्छा व्यक्त की और बैठे रहे। एक दिन सभा में सूत्र-पाठ की उनकी बारी आ गयी। संघ ने उन्हें सूचना दी कि कल सभा में तुम्हारी सूत्र-पाठ की बारी है, पाठ करें। उन्होंने स्वीकार किया। नालन्दा के सभी भिक्षु एवं विद्वान् परिहास कर रहे थे कि कल भुसुकु का सूत्र-पाठ देखना है।

इससे उनके उपाध्याय^१ बहुत चिन्तित हो गये और उनसे कहा कि तुम विद्या-अध्ययन के समय तो खाते और सोते रहे। अब नालन्दा के विद्वानों के बीच में सूत्र का पाठ नहीं कर पाओगे। भुसुकु ने उत्तर दिया— 'हम सूत्र-पाठ करेंगे।' यह कहकर उन्होंने उपाध्याय की बात अनसुनी कर दी।

फिर उपाध्याय ने कहा—तुम्हारे द्वारा यदि सूत्र का पाठ ठीक से न हुआ, तो तुम्हें स्थान-च्युत किया जायगा। अतः तुम्हें यह काम छोड़ बैठना ही उचित होगा।

फिर भी भुसुकु ने कहा— 'मैं खुद जानता हूँ', उपाध्याय की बात सुना नहीं। उपाध्याय बड़ी विपत्ति में पड़ गये और उन्होंने भुसुकु को आर्य मञ्जुश्री का मन्त्र— 'ओं अर-पचन धीः' देकर कहा कि इसको रात भर बिना सोये जप करो। उन्होंने इस मन्त्र की दीक्षा ली और रातभर बिना सोये गले में रस्सी बाँधकर मन्त्र का जप किया।

फलतः आर्य मञ्जुश्री प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि भुसुकु तुम क्या कर रहे हो?

उन्होंने कहा—मुझे कल (सभा में) सूत्र-पाठ के लिए उपस्थित होना है। अतः आर्य मञ्जुश्री से प्रार्थना कर रहा हूँ।

आर्य ने कहा— तुमने हमको पहचाना?

भुसुकु— मैं नहीं पहचान पाया हूँ।

१. इनके उपाध्याय का नाम 'जिनदेव' था। ये नालन्दा के पाँच सौ बड़े पण्डितों के अग्रगण्य थे। जब शान्तवर्मा अपने राजमहल छोड़कर नालन्दा आये थे, तो इन्हीं के उपाध्यायत्व में उन्होंने भिक्षु संवर ग्रहण किया था। बुस्तोन ३० पृ० ११३। B. vol. No. 240, P. 858।

आर्य— मैं मञ्जुश्री हूँ।

भुसुकु— फिर मुझे प्रज्ञा-सम्पन्नता की सिद्धि प्रदान करें।

आर्य—तुम्हें मैं प्रज्ञा दूँगा, कल तुम सूत्र-पाठ करो।

यह कहकर वह अन्तर्धान हो गये।

दूसरे दिन सूत्रपाठ के समय संघाराम में राजा आदि सभी जैनसमूह यह कहते हुए कि भुसुकु का सूत्र-पाठ देखेंगे, एकत्र हो गये। पुष्पादि पूजा के उपक्रम सहित भव्य व्यवस्था करके सब लोग वहाँ गये।

भुसुकुपा, संघ के दिन का भोजन विधिवत करके, निर्बाध होकर विहार में आये और गद्दी पर बैठ गये^१। उनके विशेष प्रभाव को देखकर सब लोगों को कुछ संदेह हुआ। सामने से पर्दा लगाकर उन्होंने कहा— अब मैं पहले से ही विद्यमान सूत्र का पाठ करूँ या जो पहले नहीं है, ऐसे सूत्र का पाठ करूँ? इनके इस कथन को सुनकर पण्डित लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे और राजा एवं अन्य जन-समुदाय इसे सुनकर हँस पड़े। राजा ने कहा— तुम्हारे खाने का ढंग भी अपूर्व है, सोना और शौच की चर्या भी अपूर्व ही है, अब धर्म भी अपूर्व ही, बतलाओ।

उन्होंने दस परिच्छेदात्मक 'बोधिचर्यावतार' का पाठ आरम्भ किया और (अन्त में) आकाश में उड़ गये। नालन्दा के पाँच सौ पण्डित, राजा देवपाल और जन-समुदाय में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी। उन लोगों को पुष्प आदि चढ़ाने से (सभा के चारों ओर) पुष्प की राशि धरती में घुटने भर इकट्ठी हो गई।

सब लोगों ने कहना आरम्भ कर दिया कि यह भुसुकु कहाँ है, यह तो बहुत प्रकाण्ड पण्डित है। राजा सहित सब लोगों ने इनको 'शान्तिदेव'^२ कहा। अर्थात् राजा

१. बहुत ऊँची गद्दी को हाथ के स्पर्श मात्र से नीचा कर देने का वृत्तान्त भी है। सामने पर्दा लगाने की बात अन्यत्र नहीं मिलती।

२. बुस्तोन के अनुसार—'शान्तिदेव' नाम उनके उपाध्याय महापण्डित जिनदेव ने उस समय रखा था जिस समय उन्होंने परिव्राजक भिक्षु संवर ग्रहण किया था। इससे पूर्व उनका नाम शान्तवर्मा था।

और सभी पण्डितों का अभिमान उन्होंने शान्त किया, अतः यह शान्ति^१देव है। वहाँ इकट्ठे पण्डितों एवं सभी लोगों ने उनसे निवेदन किया कि इसकी (बोधिचर्यावतार की) एक टीका की रचना करें। वह बाद में की^२ गई। सब लोगों ने उपाध्याय के रूप में वहाँ रहने के लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया।

तत्पश्चात् उन्होंने चीवर-पात्र आदि भिक्षु की उपयोगी सामग्री विहार में त्रिरत्न के समक्ष अर्पित कर दी और वहाँ के उपाध्याय एवं संघ के न सुनी में वे वहाँ से चुप-चाप चले गये। वे क्रमशः वहाँ से धोकरि नगर जिसकी जनसंख्या ढाई लाख थी, पहुँचे उनके पास सोने से रंगी एक काष्ठ की तलवार थी। वहाँ के राजा से उन्होंने निवेदन किया—मुझे आप तलवार धारियों में सम्मिलित करें। राजा ने स्वीकार किया। वेतन के रूप में प्रतिदिन दस तोला सोना दिया गया। इसी को जीविका बना कर बारह वर्षों तक तलवार का काम करते रहे। और साथ ही रहस्यार्थ (रहस्यात्मक) की (अविच्छिन्न रूप से) साधना करते रहे।

एक समय-शरत् काल में तलवारवाले (राज-सेवक) इकट्ठे होकर उमादेवी की पूजा करने की प्रथा के अनुसार पूजा में बैठे तो शान्तिदेव ने भी वैसा ही किया। उसके बाद एक दिन सब लोगों को अपनी तलवार धोनी होती थी उस दिन सब लोगों ने अपनी तलवार धोई तो उन लोगों में से एक ने यह देख लिया की शान्तिदेव की तलवार लकड़ी की है। उसने राजा से इसकी शिकायत की।

राजा ने शान्तिदेव से कहा— हमें अपनी तलवार दिखाओ।

शान्तिदेव ने कहा—दिखायेंगे, तो आप लोगों का अनिष्ट होगा, अतः दिखाना उचित नहीं होगा।

राजा ने कहा— अनिष्ट हो, तो क्या होगा, अवश्य दिखाओ।

१. सम्भवतः लोगों ने उनके नाम की सार्थकता की व्याख्या की।

२. यहाँ 'टीका' की बात कुछ अस्पष्ट है। बोधिचर्यावतार की स्ववृत्ति की चर्चा कहीं भी नहीं है। नालन्दा के पण्डितों ने बाद में आचार्य शान्तिदेव के पास जाकर उक्त ग्रन्थ पर व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की और उन्होंने दिए भी, यह टीका की बात हो सकती है (बुस्तोन इ० पृ० ११३, B. २५ P. ८६०)।

शान्तिदेव ने कहा— आप सब लोग अपनी एक आँख (हाथ से) ढक दें। सब लोगों ने वैसा ही किया। शान्तिदेव ने अपनी तलवार, म्यान (कोष) से निकाली, तो उसकी चमक से अक्षम होकर सभी लोगों की आँखे जो खुली थीं, अन्धी हो गईं।

राजप्रमुख आदि सब लोगों ने क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि उन लोगों की आँखों की रोशनी लौट आए। उन्होंने सब लोगों की आँख पर जो अन्धी हो गई थीं, अपने मुँह का पानी (थूक) लगा दिया। तत्काल सब आँखे पूर्ववत् हो गईं। इस घटना से सब लोगों ने अचम्भित होकर अपने यहाँ पूज्य स्थविर के रूप में रहने के लिए निवेदन किया, तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे वहाँ से चले गये^१।

उसके बाद वे एक पहाड़ के बीच में रहकर निर्मित वन-प्राणियों को मारते और उनका मांस खाते हुए रहने लगे। लोगों ने इसे देखा और उनका वृत्तान्त राजा को सुनाया। राजा ने अपने सैन्य-परिवार के साथ वहाँ जाकर उनसे कहा—हे योगी! आपने पहले नालन्दा के राजा आदि का (अभिमान) दमन करके धर्म में आरूढ किया। यहाँ (मेरे राज्य में) भी सब लोगों की आँखों का पुनरुद्धार आदि कार्य किया। इतनी शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी प्राणी-वध करना क्या उचित है?

शान्तिदेव ने उत्तर दिया— मैंने, नहीं मारा, देख लो, कहकर अपनी झोपड़ी का दरवाजा खोला, तो वहाँ उनके द्वारा मारे गये वन के प्राणी पहले की अपेक्षा दुगने स्वस्थ और ताजे बैठे थे और वहाँ से निकलकर वे चारों ओर छा गये। राजा आदि को उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी और मृगादि वनप्राणी कहाँ गये? सब वहीं खो गये। इस दृश्य को देखकर राजा आदि सौभाग्यशाली लोगों को समस्त धर्म (रूपादि धर्म) माया—स्वप्नवत् आद्यानुत्पन्न असिद्ध, निःस्वभावता का ज्ञान हो गया और वे सब बोधि मार्गारूढ हुए।

१. तलवार वाली घटना बुस्तोन और तारानाथ के वृत्तान्तों में कुछ भिन्न प्रकार से है, (बुस्तोन इ० B. vol. No. २५ P. ८५८-६१)।

तारानाथ इ० पृ० १५३-५४, अध्याय २५ तारानाथ के समान ही खनपोजन् दन् स्नड् वा के शान्तिदेव वृत्तान्त में भी उल्लिखित है (प्र० १-६ यावत्)।

शान्तिदेव ने कहा—(दोहा)—

मैंने जिन मृगों को मारा, वे आदितः कहीं से भी नहीं आये,
मध्य में कहीं भी स्थित नहीं हैं, अन्त में कहीं निरुद्ध भी नहीं होंगे।
आदितः असिद्ध धर्मों में, बाध्य-बाधक कहाँ सिद्ध होगा?
अहो जीव करुणा के योग्य हैं,
यही कहता हूँ भुसुकु मैं।

इस प्रकार वहाँ के राजा आदि के सभी तरह के मान-अभिमान का दमनकर सब लोगों को बोधि मार्ग में आरूढ़ किया। श्रद्धालुओं को धर्मरूढ़ करने के बाद भुसुकु ने एक ही रात की साधना से 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया। काय, वाक् एवं चित्त, तीनों के अभिन्न एकता का ज्ञान पाकर क्षण-धर्म^१ से निकल और अन्त में सौ वर्ष की अवस्था में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु भुसुकुपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. क्षण धर्म से निकल-यहाँ 'क्षण' से अभिप्राय : आयु की अनित्यता से है। जिसका 'क्षण' जन्म-मरण धर्म के पराधीन है; उस पराधीनता से मुक्त होकर परमसिद्धि अर्थात् अमरत्व का लाभ ही क्षण-धर्म से निकलना है।

४२. गुरु इन्द्रभूति का वृत्तान्त

उग्यन या औडियाण (उज्जैन)^१ देश के महानगर में एक समय पाँच लाख घराने (घर के) के लोग रहते थे और उन पर दो राजा राज करते थे। उक्त देश से 'सम्भोल' नामक ढाई लाख की जनसंख्यावाले जनपद के राजा इन्द्रभूति थे। लंकापुरी की ढाई लाख की आबादी पर महाराज जालन्धर शासन किया करते थे।

सम्भोल के राजा इन्द्रभूति की एक बहिन थी, जिसका नाम लक्षिंकर (लक्ष्मीकर) था। वह सात वर्ष की अवस्था में ही थी, तो लंकापुरी के राजा जालन्धर ने अपने पुत्र के लिए उस राजकुमारी लक्षिंकर की मांग के लिए इन्द्रभूति के पास दूत भेजा था। महाराज इन्द्रभूति ने अपने मन्त्रि-परिषद् की बैठक बुलाई और अन्त में यह तय हुआ कि राजा जालन्धर धर्मकार्य नहीं करते, इसके अलावा वे सब तरह से हम लोगों से समानता रखते हैं। अतः लक्षिंकर उनको दे दी जाय। दूत से यह सन्देश भेजा गया कि 'धर्म' ग्रहण करने न करने मात्र का अन्तर है, पर सम्बन्ध बन सकता है।

दूसरे वर्ष जालन्धर के राजकुमार सम्भोल राजा के यहाँ आये और लक्षिंकर से उनकी भेंट हुई। उन्हें देखकर वह फिर अपनी राजधानी लौट रहे थे, तो इन्द्रभूति ने उन्हें बहुत-सा अश्व, हाथी, सोना, चाँदी आदि धन-सम्पत्ति भेंट में देकर लौटाया। राजकुमार के अपने महल पहुँचने पर उनके पिता ने पूछा कि वधू कहाँ हैं? राजकुमार ने कहा— अभी वह बहुत छोटी है, इसलिए उनके भाई ने उन्हें मेरे साथ नहीं भेजा। राजा ने कहा— 'साधु'।

इधर राजा इन्द्रभूति की कई रानियाँ थीं। वे सब धर्म के प्रति बहुत श्रद्धा रखने वाली थीं। उनकी बहिन और रानियों ने गुरु कम्बलपा से अभिषेक एवं दीक्षा ग्रहण की और सब के सब साधना में लग गई।

१. "औडियान" के दो तरह के उल्लेख मिलते हैं, पश्चिमी औडियान और औडियान (सम्भवतः यह पूर्वी औडियान)।

लक्षिंकर जब सोलह वर्ष की हुई तो महाराज जालन्धर ने उन्हें ले आने के लिए दूत भेजा।

[यहाँ उनको कैसे दिया गया, बहिन ने सांसारिक धर्म से विरत होकर साधना कैसे की, साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त करके एक 'जमादार' को कैसे अनुगृहीत किया, उसके बाद वे खेचर भूमि कैसे गई। ये सब आगे उन्हीं के (लक्ष्मीकर के) वृत्तान्त में दिखाया जायगा।]

जब महाराज जालन्धर ने इन्द्रभूति को, उनकी बहिन ने जो-जो किया, उसका विवरण-पत्र एवं दूत भेजा तो इन्द्रभूति ने कहा— मेरी बहिन ने सिद्धि प्राप्त कर ली; यह बहुत सुखद बात है, पर मैं स्वयं शान्त सुखी होकर यों ही बैठ गया, यह अच्छा नहीं हुआ।

इन्द्रभूति ने यह सोचा कि मेरी बहिन ने अपना जन्म सार्थक कर लिया। मैं भी अल्पार्थ और अनेक दोषों से भरे इस राज-काज को छोड़कर क्यों नहीं धर्म की ओर चलूँ। यह सोचकर वे अपने पुत्र को राज-काज सौंपकर एक गृह में बैठे साधना करते रहे। बारह वर्ष में उन्होंने 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया। परन्तु राज-परिवार के लोगों को इसका पता नहीं चला। एक दिन उनके पुत्र प्रमुख परिवार के लोग और जनता के लोग उनको देखने गये तो दरवाजा बन्द था। लोगों ने उसे खोलने की चेष्टा की, तो आकाश से यह आवाज सुनाई पड़ी कि—दरवाजा मत खोलो, मैं यहीं हूँ। लोगों ने ऊपर देखा, तो इन्द्रभूति आकाश में ही विराजमान थे। सब लोगों को प्रथम भूमि प्राप्ति जैसा आनन्द हुआ और सब लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ उन्हें प्रणाम किया। वे सब एक ओर बैठ गये। राजा (इन्द्रभूति) ने आकाश में ही विराजमान होकर सात दिन तक अपने राजकुमार प्रमुख सभी राज-परिवार के लोगों और जनता को बड़े विस्तृत एवं गम्भीर धर्मों के अपरिमित उपदेश दिये। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वह उसी शरीर से खेचर भूमि गये ॥

गुरु इन्द्रभूति का वृत्तान्त समाप्त ॥



४३. गुरु मैकोपा

गुरु मैकोपा विविध प्रकार की खाद्य-सामग्री से भरे बहुत बड़े पात्र उठा रहे हैं। ये पूड़ी और सब्जी बेच रहे हैं। हलके अलङ्कार और जटा-मुकुट आदि धारण किये हुए हैं।



४४. गुरु कुदालिपा

गुरु कुदालिपा (कोदलिपा) एक पहाड़ की तलहटी में कुदाल लेकर पहाड़ की जमीन खोद रहे हैं। सिर पर पगड़ी बाँधे हुए हैं। वे गरीबी की द्योतक सस्ती धोती पहने हुए हैं।

४३. गुरु मेकोपा का वृत्तान्त

गुरु 'मेकोपा' का वृत्तान्त इस प्रकार है—बंगाल जनपद में भोजन बेचनेवाली जाति का एक व्यक्ति, एक योगी को सब समय भोजन आदि देकर सेवा करता रहा। एक दिन योगीने उससे पूछा— हे आयुष्मान! तुम मेरा इतना सत्कार क्यों कर रहे हो?

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—हे योगीश्वर!—मुझे परलोक जाते समय मार्ग-पथ्य की आवश्यकता है।

योगी ने (पुनः) पूछा — तुम परलोक के 'मार्ग-पथ्य' की साधना कर सकोगे?

उसने उत्तर दिया—अवश्य मैं उसमें समर्थ होऊँगा।

योगी ने उन्हें "प्रभाव उत्क्रान्ति" का अभिषेक प्रदान किया और चित्त परिचायक (चित्त की तत्त्व ज्ञापक) दीक्षा इस प्रकार दी। दोहा—

स्वचित्त चिन्तामणि (के दर्पण) में, लोकालोक के भेद का अवभास होता है,

ज्ञात-अज्ञात दो ही (धर्म) हैं, उन्हें अपरिवर्तनशील चित्त-रस में ही देखो।

द्वैत ग्राहक विकल्प (वहाँ) कैसे आयेगा? उस निःस्वभाव रस में,

कोई भी धर्म किसी (भी प्रकार) में सिद्ध नहीं है, (इस स्थिति) के

अनविज्ञ भ्रान्त (जीव) राग (आदि) से आबद्ध होते हैं।

इन वचनों के अनुसार उस व्यक्ति ने भी समस्त लोक में (प्रतीयमान) सभी धर्म अपने ही चित्त के अन्दर देखे और चित्त को गतागत धर्मों से रहित तत्त्व के रूप में जान गया। अपरिणामित-स्वचित्तगत अर्थों (के रस) में छः मास तक स्थित रहने के बाद उन्हें चित्त की प्राकृतिक (तात्त्विक धर्मता) भूतार्थता का ज्ञान प्राप्त हो गया। वे चमूमृग (हिंसक जन्तु) की तरह श्मशानों में घूमते रहे। कभी पागल का आचरण करते हुए गाँव एवं नगरों में आकर बहुत बड़ी आँख खोलकर

१२० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

(लोगों को) देखते रहते थे। लोगों ने उन्हें 'गुरु भयंकर द्रष्टा' कहना आरम्भ कर दिया। (सम्भवतः मेकोपा का यही अर्थ हो) सर्वत्र उनका नाम मेकोपा प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने गम्भीर धर्मोपदेश के द्वारा बहुत से विनेय लोगों का कल्याण किया तथा अवदान (के रूप में बहुत से दोहे भी) कहे। अन्त में वे उसी शरीर के द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु मेकोपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

४४. कोडलिपा का वृत्तान्त

गुरु कोडलिपा (कोदलिपा) का वृत्तान्त इस प्रकार है। रामेश्वर नामक स्थान से चार दिन का मार्ग पार करने के बाद (एक जगह में एक व्यक्ति जिसका नाम) कोदलिपा [था] रहने की जगह एवं क्षेम के लिए पहाड़ खोद रहे थे। उस समय आचार्य रत्नाकरशान्तिपा सिंहल द्वीप के राजा के निमंत्रण पर लंका जाकर उस रास्ते से लौट रहे थे। उपर्युक्त जगह में कोदलिपा से उनकी भेंट हुई।

आचार्य ने उनसे कहा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

कोदलिपा ने आचार्य का अभिवादन किया और उनका योगक्षेम पूछा। अन्त में कहा— मैं यहाँ पहाड़ खोद रहा हूँ।

आचार्य ने पूछा— पहाड़ खोदकर आप क्या कीजिएगा?

कोदलिपा ने उत्तर दिया—दुष्ट राजाओं ने देश को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। सभी जनता दुःखी पीड़ित है। अब हमारा कोई देश नहीं है। यहाँ मैं पहाड़ की तलहटी को खोदकर अपने रहने की जगह बनाऊँगा और यहीं हम लोग अपना देश बनायेंगे।

आचार्य शान्तिपा ने कहा—पहाड़ खोदने की शिक्षा (अववाद) मेरे पास है। यह तुम सुनना नहीं चाहोगे?

उन्होंने (कोदलिपा ने) कहा—भन्ते अवश्य सुनना चाहूँगा।

आचार्य ने कहा—(उपदेश-दोहा)

तुम्हारे इस प्रकार का काम,

(मात्र) शरीर को थका देनेवाला है।

अतः यह बहुत तुच्छ काम है,

(यह तो) छः प्रकार के विपरीत कामों में से एक है ॥ १ ॥

(दूसरी ओर) दान ही भूमि खोदना है,

दूसरों की हिंसा न करना ही शील है।

(तप में) दुःख को सहना क्षमा है,

उस में उद्यम करना वीर्य है ॥ २ ॥

उसमें अविक्षेप होकर स्थित होना ध्यान है,

उन्हें ठीक से जान लेना ही प्रज्ञा है।

विपरीत छः तरह के कर्मों को त्यागकर,

छः प्रकार के सम्यक् कर्मों को किया करें ॥ ३ ॥

गुरु के प्रति नम्रता दान है,

अपने (चित्त) सन्तति की रक्षा करना शील है।

चित्त की(धर्मता को जनने की) क्षमता क्षमा है,

उसी की भावना वीर्य है ॥ ४ ॥

उस में निर्विक्षेपता ध्यान है,

इसी का सही ज्ञान प्रज्ञ है।

सदा सब समय (इन्हीं की) भावना करो ॥ ५ ॥

यह कहने पर कोदलिपा ने पुनः आचार्य से कहा—यह बहुत विस्तृत है, अतः इसका एक संक्षेप हमें बतलायें।

पुनः आचार्य ने कहा—गुरु के प्रति नम्रता रखो।

सभी सुख-दुःख अपने से ही उत्पन्न होते हैं। अतः स्वचित्त की प्राकृतिक (धर्मता) भूतार्थ के ज्ञान के लिए अभ्यास करो। यह भी जैसे—स्वचित्त के प्राकृतिक स्वरूप पहाड़ के समान है।

अनिरुद्ध प्रकाशमान संवित्ति (= ज्ञान प्रभास्वर) है, वह कोदली के समान है। उसी के द्वारा खोदा करो। दो प्रकार के उद्यम (वीर्य) हैं, वे दोनों दांये-बांये बाहु के समान हैं। दोनों को अविरल लगन से खोदना चाहिए।

इसका भाव दोहा द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

सभी सुख और दुःख, चित्त से उदित होते हैं;

दीक्षा के द्वारा चित्त के पहाड़ को खोदो।

मिट्टी के पहाड़ खोदने पर भी,

प्राकृतिक महासुख का ज्ञान नहीं होता है ॥ ६ ॥

इस प्रवचनानुसार भावना करने से बारह वर्ष में उनको(कोदलिपा को) परम सिद्धि का लाभ हुआ। तत्पश्चात् अनेक जगत् कल्याण करके अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गए ॥

गुरु कोदलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

४५. गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त

गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। कम्परि का अर्थ है—‘लोहार’। उनका जन्म-स्थान शालिपुत्र था। वे जाति के लोहार थे। वे (जातिगत जीविका कर्म) सदा लोहार का काम ही किया करते थे। एक समय उनके लोहे की कर्मशाला में एक योगी आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा— तुम क्या करते रहते हो?

लोहार ने उत्तर दिया—मैं जातिगत कर्म-लोहार का कार्य करता रहता हूँ।

योगी ने पूछा— तुम इस काम के द्वारा सुखी हो?

लोहार ने कहा—सुखी की तो बात ही कहाँ? अंगार-चिनगारी पिघले लोहा और अग्नि से सदा हाथ-पैर, शरीर जलते रहते हैं, फिर भी जीविका के लिए विवश होकर दुःख का भी स्वागत करना पड़ता है।

योगी ने—उससे खाना माँगा। लोहार दम्पति ने यह सोचकर कि हम नीच लोगों के हाथ से योगी को भोजन कराना बहुत आश्चर्य की बात है, यह सोचकर वे बहुत आनन्दित हुए। भोजन-दान किया।

योगी ने (भोजन समाप्त होने पर) कहा— तुम लोग कोई धर्म नहीं ग्रहण करोगे?

उन लोगों ने कहा—हम नीच लोगों को कौन आदमी धर्म-उपदेश देगा?

योगी ने कहा—यदि धर्म के प्रति श्रद्धा हो, साधना करने में समर्थ हो तो उपदेश मैं दूँगा।

यह सुनकर वे लोग बड़े प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार की पूजा-प्रणाम और सत्कार करके, योगी से उपदेश की याचना की।

योगी ने प्रभाव-उत्क्रान्ति का अभिषेक देकर उन्हें तीन मूल आलम्बन की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है— भाथी, अंगार, अग्नि के द्वारा लोहा गलाने का यह आलम्बन आध्यात्मिक रूप में परिवर्तित कर भावना करो। ललना और रसना (दोनों नाडी) को भाथी बनाओ। अवधूती को अंगारशयन बनाओ। विज्ञान को लोहार बनाओ, ज्ञान



४५. कमरिपा

गुरु कमरिपा (कम्पारिपा) लोहार के वेश में हैं। लोहारी के कुछ औजार आस-पास बिखरे हुए हैं। खुद जलता लोहा पीटकर उससे कुछ बना रहे हैं। गले और कान में कुछ आभूषण भी हैं।



४६. गुरु जालन्धरपा

गुरु जालन्धरपा पूर्ण योगी वेश में हैं। जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। हड्डी-निर्मित आभूषणों से विभूषित हैं। एक पैर पीछे की ओर मोड़कर कन्धे पर रखे हुए हैं और दूसरा पैर फैलाकर जमीन पर घुटने के बल पर बैठे हैं। दोनों हाथों की तर्जनी की नोक मिलाकर और शेष अँगुलियाँ परस्पर आलिङ्गित मुद्रा में अपने सिर के ऊपर उलटकर रखे हुए हैं। उनको सामने की ओर से उनकी कर्म-मुद्रा (पत्नी) उन्हें दण्डवत् प्रणाम कर रही हैं।

की अग्नि जलाओ। विकल्पों को अंगार बनाओ। त्रिकाल को लोहा बनाकर, पिटाओ। अद्वैत धर्मकाय महासुख के शिल्पकार का फल परिपाक होता जायगा।

(उक्त कथन का दोहा)—

जैसे तुम बाह्य कामों में,

अभ्यस्त हो, उसी प्रकार आभ्यन्तर में भी।

ललना और रसना (नामक दोनों नाडियों को),

दायनाँ और वायनाँ दो भाथी (बनाया) करो ॥ १ ॥

अवधूती की भट्टी में, विज्ञान (रूपी) लोहार के द्वारा।

विकल्पों के अंगार में,

संवित्ति ज्ञान की अग्नि जलाओ ॥ २ ॥

तीनों क्लेशों के लोहे को गलाकर,

अनास्रव धर्मकाय (रूपी) फल का निर्माण करो ॥ ३ ॥

इस वचनानुसार उन्होंने अपने (दैनिक) कर्मों के अनुरूप भावना करना आरम्भ किया, छः वर्ष में उनको परमसिद्धि का लाभ हुआ। आस-पास के किसी को भी यह ज्ञात नहीं हुआ कि उन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया।

उसके बाद उनके अंगाराशय (जहाँ लोहा आदि गरम करके विभिन्न औजार बनाया जाता है) में सभी प्रकार के शिल्प (बिना कुछ किये) स्वतः सब कुछ तैयार होते गये। इस घटना को देखकर 'शालिपुत्र' को सभी लोगों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि हम लोगों के यह लोहार सभी प्रकार के गुण-धर्मों से सम्पन्न हो गये हैं। सब लोग इस घटना से अचम्भित हुए, उनका नाम सर्वत्र 'गुरु कम्परिपा' प्रसिद्ध होने लगा।

विनेय लोगों के अनेक अर्थ साधन के बाद उन्होंने कुछ अपने 'अवदान' भी कहे। अन्त में उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कम्परिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

४६. गुरु जालन्धरपा का वृत्तान्त

जालन्धरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। जालन्धर का अर्थ है, जाल धारण करने-वाला। इनका देश नगर थोड़था (नगर कोटा) था और जाति के ये ब्राह्मण थे।

सांसारिक धर्म के प्रति घृणा उत्पन्न होते ही वे एक दिन श्मशान में जाकर एक वृक्ष के मूल में जाकर बैठे। वहाँ उन्हें अपने चित्त में कुछ शान्ति एवं सुख की अनुभूति होने लगी। उसी समय उन्हें आकाश से डाकिनी की वाणी सुनाई पड़ी— हे कुलपुत्र ! तुम भूतार्थ के मनस्कार (योनिशोमनसिकार) करो। यह सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द और हर्ष हुआ। वह पुनः उस डाकिनी से प्रार्थना करते रहे कि क्या करना है? फलतः एक ज्ञानी डाकिनी ने साक्षात् रूप दिखाया और उन्हें हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया। उन्हें सम्पन्न-क्रम की दीक्षा इस प्रकार दी।—

बाह्य-आध्यात्मिक-त्रैधातुक, भाजन-लोक और सत्त्व-लोक समग्र अपने ही काय-वाक् और चित्त में समाविष्ट हैं। इन तीनों के विकल्प तीन प्रकार की नाडियों में समाविष्ट हैं। दो नाडी अवधूती में मिली हुई हैं। वहाँ (अवधूती के अन्दर) नाना प्रकार की स्मृति-संवित्तियाँ एवं विकल्पना होती रहती हैं उन सब को मूर्धन्य ब्रह्म-द्वार से ऊपर निकाल दो और प्रतिभास (प्रतीयमान) और शून्यता दोनों की (अभिन्नता) भावना करो।

(तदर्थक दोहा)—

बाह्य-अभ्यन्तर के अशेष धर्म,

(अपने ही) काय-वाक्-चित्त में समाविष्ट हैं।

दक्षिण-वाम (नाडियाँ) अवधूती में संगृहीत हैं,

वही (अवधूती) ब्रह्मद्वार है ॥ १ ॥

(वही) शून्यता परम महासुख है,

(उसका) उदय योगी की विशुद्ध रस-भाव से होता है।

(इस तरह चित्त का) सुख-शून्य की युगलता में पहुँचाया करो ॥ २ ॥

इस प्रकार सम्पन्न का उपदेश दिया, तो उन्होंने भी तदनुसार भावना (घोर साधना) की। उन्होंने सात वर्ष में 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ किया।

अपने अवदान (दोहे) भी कहे। अपरिमित जगतार्थ साधन के पश्चात् तीन सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु जालन्धरपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

४७. गुरु राहुल का वृत्तान्त

राहुल का वृत्तान्त इस प्रकार है—राहुल का अर्थ 'राहु' को धारण करनेवाला है। ये काम-रूप देश के थे और जाति के शूद्र थे। ये बहुत वृद्ध होने से अपने शरीर का संचालन भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे थे। सभी बन्धु एवं पुत्रादि परिवार के लोग भी इनसे घृणा करते और गालियाँ देते थे। इससे इन्हें बहुत दुःख हुआ और परलोक का स्मरण हो आया तथा ये एक श्मशान में चले गये।

(वे श्मशान में बैठे ही थे) एक योगी उनके पास आया। योगी ने कहा—तुम इस श्मशान में क्या करने बैठे हो?

इन्होंने कहा—(दोहा)

मेरे यौवन चाँद को, वृद्धपन के राहु ने विनष्टकर दिया,
पुत्र-पौत्रादि भी डाँटने लगे, अच्छा है मरना सोच बैठा हूँ यहाँ।

योगी ने पुनः उनसे कहा—(दोहा)

तुम्हारे विपाक भूत (शरीर तत्त्व) को,
तीन नदी (धाराओं) ने बिखेर दिया है,
अब तो मरण नदी (बहा) आने वाली है,
मरण पथ्य का धर्म ग्रहण नहीं करोगे?

उन्होंने कहा—हे गुरु! धर्म का ग्रहण तो अवश्य करूँगा। परन्तु वृद्ध, धन से रहित मेरे जैसे को धर्म-उपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा—

प्रकृति चित्त में जरा नहीं होती, श्रद्धादि धन का क्षय नहीं होता,
नम्रता से सद्धर्म साध सको, तो तुम्हें अनुगृहीत करूँगा मैं।

योगी ने इन्हें प्रभाव-उत्क्रान्ति का अभिषेक प्रदान किया। विन्दु की दीक्षा इस प्रकार दी—तुम अपने मूर्धन्य प्रदेश में “ॐ” कार से सम्भूत चन्द्र-मण्डल और



४७. गुरु राहुलपा

गुरु राहुलपा श्मशान में बैठे हुए हैं। वे साँवले रंग के हैं। सिर के बाल मुड़े (घुँघराले) हुए हैं। अवस्था में कुछ बुढ़ापा झलक रहा है। दोनों हाथ समाहित-मुद्रा में हैं। श्मशान के शव की ओर देख रहे हैं।



४८. गुरु धर्मपा

गुरु धर्मपा भिक्षु वेश में हैं। हाथ में पोथी लिये हुए अध्ययन की मुद्रा में हैं। अवस्था में बहुत अधिक वार्धक्य झलक रहा है।

उसी के अन्दर समस्त भवलोक (प्रतीयमान भव) की कल्पना समाविष्ट (सम्पन्न) कर भावना करो।

(तदर्थ दोहा) —

अद्वैत ज्ञान राहु द्वारा, ग्राह्य-ग्राहक विकल्पों का प्रहाण करके,
मूर्धन्य महासुख (मण्डल) में, गम्भीर बिन्दु रस में ही।
सुख-शून्य के युगनद्ध प्रवाह द्वारा, स्कन्धादि अरि के प्रहाण से,
बुद्ध गुणों का उदय होता है, अहो, यह अनिरोध अद्भुत है।

इस वचन के अनुसार वे भावना (साधना) करते रहे। जब समस्त द्वैत चाँद, अद्वैत राहु द्वारा खा लिया गया और अद्वैत अमृत मूर्धन्य ब्रह्म-द्वार के नीचे प्रविष्ट होने लगा, समस्त काय (शरीर मण्डल) अमृत से भर गया और शरीर (आनन्द) प्रफुल्ल होकर सोलह वर्ष की अवस्था में परिणत हो गया तथा 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उनको लाभ हुआ। कामरूपादि के अनेक विनेय लोगों को विनीत करके अवदान (दोहे) भी उन्होंने कहे।

अन्त में उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु राहुल का वृत्तान्त समाप्त ॥

४८. गुरु धर्मपा का वृत्तान्त

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त इस प्रकार है। धर्मपा का अर्थ धर्म ग्रहण करनेवाला या धार्मिक है। उनका देश बोधिनगर था। सम्भवतः जाति के वे ब्राह्मण थे। धर्मपा बहुत बड़े पण्डित थे। पर वे प्रधानतः भाषण ही किया करते थे, साधना नहीं। जब बाद में बहुत वृद्ध हो गये और अन्धे हो गये। उनको यह चिन्ता हुई कि 'एक गुरु से मेरी भेंट क्यों न हो जाय?'

एक दिन स्वप्न में एक डाकिनी ने उन्हें निर्देश दिया — 'तुम्हारा गुरु मैं ही हूँ।' उन्होंने (वृद्ध ने) उसी को ध्यान में रखकर प्रार्थना की। फलतः डाकिनी ने साक्षात् रूप से प्रकट होकर उन्हें अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी।

उनका उपदेश इस प्रकार है—समस्त ज्ञेय धर्मों को पात्र के रूप में और समस्त विकल्पों को तेल के रूप में तथा अपने विज्ञान को (चित्त को) बत्ती के रूप में एवं उसी से ज्ञान-अग्नि जलती हुई भावना करो।

तदर्थक दोहा—

अशेष धर्म-पात्र के अन्दर, विकल्पों का तैल भरकर,

संवित्ति की बत्ती में आग जलाने से चित्त की चिन्तामणि का दर्शन होगा।

ऐसा कहा है— विकल्प को ज्ञान (परमज्ञान) के रूप में उपस्थित करनेवाली देशना की साधना करते पाँच वर्ष में ही जैसे विष में मन्त्र फूँक दिया गया हो, उसी प्रकार (सभी) विकल्प-ज्ञान के रूप में परिणत हो गये। उनका शरीर आठ वर्ष के बालक के समान हो गया। इस घटना से सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उन्होंने कहा—

जैसे हेतु प्रत्ययों की समाग्रता,

फल से शून्य कहाँ हो सकता है,

अतः प्रसाद बुद्धिवाले को, उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए।

(वे बहुत दिन तक) एक पाठक (ग्रन्थादि पढ़नेवाला) के रूप में जगत् का कल्याण करते रहे। कुछ अपने अवदान (दोहे) भी कहे। अन्त में वे खेचर भूमि को चले गये ॥

गुरु धर्मपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

४९. गुरु धोकरिपा का वृत्तान्त

‘धोकरि’ का अर्थ है, पात्र लेकर चलनेवाला। ये शालिपुत्र के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे। उक्त देश में एक शूद्र व्यक्ति सदा एक पात्र उठाकर भिक्षा माँगता रहता था और जो मिले वही उस पात्र में डालता जाता था। एक दिन उसे उस पात्र में डालने के लिए कुछ भी नहीं मिल पाया, तो वह एक वृक्ष के मूल के समीप जा बैठा। एक योगी उसके पास आ पहुँचे और उससे खाना माँगा। उस भिक्षु ने कहा— ‘हे योगी! आज मुझे तुम्हें देने के लिए कोई भी द्रव्य नहीं मिला।’

योगी ने कहा—तुम्हें कोई धर्म की आवश्यकता नहीं है क्या?

उस (भिक्षु) ने कहा— ‘चाहिए तो अवश्य ही, पर कल्याण मित्र से अभी तक भेंट ही नहीं हो पाई।’

योगी ने कहा—तुमको यदि धर्मोपदेश मिल जाय, तो उसकी साधना कर सकोगे?

उस (भिक्षुक) ने कहा—अवश्य करेंगे।

उस योगी ने उसको हेवज्र मण्डल में अभिषेक दिया और साधना के लिए उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम का उपदेश इस प्रकार दिया—

हे धोकरिपा तुम, धर्मधातु के पात्र में

संवित्ति द्रव्यों को डालकर, उनमें अद्वैतता की भावना करो।

उन्होंने भी इस वचन का यथार्थ ग्रहण करते हुए तदनुसार भावना की। अर्थ का साक्षात्कार होकर तीन वर्ष में ही उन्हें परमसिद्धि प्राप्त हो गई। पुनः उन्होंने (पूर्ववत्) पात्र उठाकर माँगना प्रारम्भ किया तो सामान्य लोगों ने उनसे कहा— गुरुजी आप का ग्रहण किया हुआ यह क्या चीज है?

उन्होंने उत्तर दिया—(दोहा)—

“महाशून्यता का पात्र उठाकर,

महासुख फल की माँग कर रहा है।

१३२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

(इस) कामना के साथ है धोकरि,

सौभाग्यवान (आप) लोगों को (यह) नहीं ज्ञात है?''

इस प्रकार उन्होंने अनेक जगत् कल्याण किये और अपने अवदान भी कहे ।
उनका नाम सर्वत्र धोकरिपा प्रसिद्ध हुआ ।

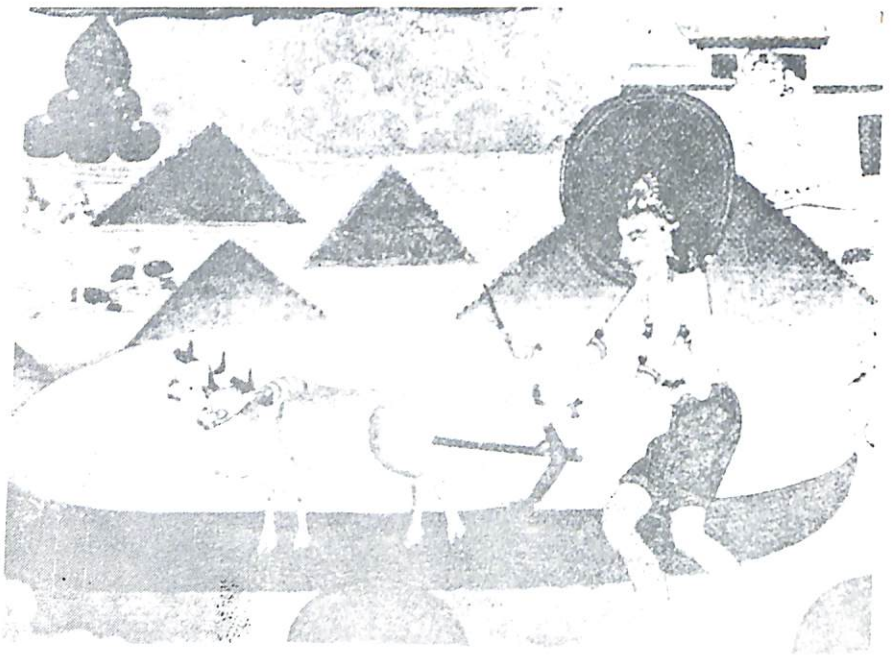
अन्त में वे उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु धोकरिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



४९. गुरु धोकरिपा

गुरु धोकरिपा एक भिखारी के वेश में हैं। हाथ में एक कपड़े का थैला (झोला) लिये हुए हैं, उसके अन्दर एक बड़ा-सा पात्र रखा हुआ है। सस्ता चादर ओढ़े हुए हैं और खड़े होकर भिक्षाटन करने की मुद्रा में हैं।



५०. गुरु मेधिनपा

गुरु मेधिनपा (मेधिपा) एक कृषक के वेश में हैं। वे पहाड़ की तलहटी की जमीन में दो बैलों पर धूरी रखकर हल जोत रहे हैं। सामने पहाड़ का दृश्य है। उसके निकट एक झील के ऊपर से हंस आदि पक्षी उड़ रहे हैं। पीछे एक मन्दिर के अन्दर से एक मूर्ति दिखाई पड़ रही है। ये सब उनकी साधना का दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

५०. गुरु मेधिनीपा का वृत्तान्त

गुरु मेधिनी का वृत्तान्त इस प्रकार है—मेधिनी का अर्थ है, कृषक। वह जाति के शूद्र थे और शालिपुत्र देश के रहने वाले थे।

एक दिन वे खेत में काम करने से बहुत थक गये और आराम के लिए किनारे बैठे थे तो उनके पास उस समय एक योगी आ पहुँचे। उस योगी ने उनसे कहा कि तुम क्या कर रहे हो?

कृषक ने कहा—मैं तो कृषि काम से थक गया हूँ और आराम के लिए यहाँ बैठा हूँ।

योगीने कहा— इस तरह के दुःख से तुम्हें बुरा नहीं लगता? कुछ धर्म ग्रहण करो।

“कृषक ने उत्तर दिया—मुझे धर्मोपदेश कौन देगा?

योगी ने कहा—यदि तुम साधना कर सकोगे, तो धर्मोपदेश मैं दूँगा।

कृषक—साधना करने में मैं अवश्य ही समर्थ हो सकूँगा।”

उस योगी ने उन्हें अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा देकर उन्हें भावना (साधना) में प्रयुक्त किया। परन्तु पूर्व संस्कार के कारण कृषि-विकल्प (अर्थात् कृषि काम से सम्बन्धित विचारों से उनका मन आक्रान्त हो रहा था, इसलिए भावना में उन्हें अरुचि पैदा हो रही थी। इस स्थिति को उन्होंने गुरु से कह सुनाया। गुरु ने उन्हें अपने विकल्पों के आलम्बन के अनुरूप दीक्षा, इस प्रकार दी—

तुम अपने चित्त को हलके रूप में समझो, सुख-दुःखादि अनुभव को बैल बना लो, शरीर को क्षेत्र (खेत) मानकर (वहीं से) सदा धर्मता महासुख का फल होता हुआ-भावना करो।

(तदर्थ दोहा)—

“अपने विकल्प को हल (के रूप में),

और सुख-दुःख की अनुभूति को बैल बनाओ,

१३४ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

विपाक पञ्च-स्कन्धों की भूमि में, (धर्म) धातु बीज का आरोपण करो।
महासुख का फल निरविच्छिन्न (रूप से) होता रहेगा,
(अतः) इसी तरह के कृषि-कर्म में तुम उद्योग करो।''

उसने इस (वचन) के अनुसार भावना की। बारह वर्ष में सांसारिक नाना विकल्प अवरुद्ध हो गये, महामुद्रा परमसिद्धि का उन्हें लाभ हो गया। फिर उन्होंने सात ताल वृक्ष की ऊँचाई तक के आकाश में बैठकर अपना अवदान कहा। शालिपुत्र नगर में अनेक जन-कल्याण करने के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु मेधिनीपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



५१. गुरु पङ्कजपा

गुरु पङ्कजपा ब्राह्मण-कुमार के वेश में हैं। हलके आभूषण, दरी और धोती पहने हुए हैं। ये पद्मयुक्त झील के तट पर बैठकर उस झील के समीपस्थ आर्यलोकेश्वर के मन्दिर में एक आर्य भिक्षु की पूजा कर रहे हैं। दृश्य को आश्चर्य-भाव से देख रहे हैं। कन्धे पर दुशाला है।



५२. गुरु घण्टापा

गुरु घण्टापा वज्र और घण्टा लिए कर्ममुद्रा वज्रयोगिनी से आलिङ्गन-मुद्रा में हैं। वज्रयोगिनी खुडखुनी (शस्त्रविशेष) एवं अमृत-भरा कपाल हाथ में लिए हुए हैं। आचार्य "सहजचक्रसंवर" के रूप में खड़े हैं, अधोवस्त्र के रूप में व्याघ्र-चर्म पहने हुए हैं। एक पैर पसारे हुए और दूसरा पैर समेटकर एड़ी बस्ती स्थान पर सटाए हुए हैं। वे दो बादल के बीच आकाश मार्ग से उड़ते हुए जा रहे हैं।

५१. गुरु पङ्कजपा का वृत्तान्त

गुरु पंकज का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये जाति के ब्राह्मण थे और उन्हें सिद्धि अवलोकितेश्वर से प्राप्त हुई।

‘पंकज’ नामक एक ब्राह्मण पुत्र यानी ब्रह्मण पुत्र के रूप में विविक्त (निर्जन) स्थान में कमल-पंखुड़ी के समान कमल से उत्पन्न हुए। उस स्थान के समीप एक ‘कमल की झील’ थी। उस झील के किनारे एक आर्य अवलोकितेश्वर की मूर्ति थी। ‘पंकज’ स्वयं महादेव को माननेवाले थे। उस मूर्ति को महादेव की मूर्ति मानकर उन्होंने बारह वर्षों तक उसकी पूजा की, पुष्पादि चढ़ाते रहे। उस जनपद की संस्कृति के अनुसार उस मूर्ति की तीनों समय में पूजा करके, उस पर चढ़े फूलों को लोग अपने सिर पर रखा करते थे।

उस बीच आचार्य नागार्जुन वहाँ पहुँचे और उन्होंने भी उस मूर्ति की पूजा की, उस पर फूल चढ़ाये तो उस मूर्ति ने उनका (नागार्जुन का) फूल हाथ में ले लिया और उनके (नागार्जुन के) सिर पर रख दिया। इस घटना से पंकज को बड़ा क्रोध आया कि मैंने बारह वर्षों तक इसकी पूजा की, आज तक इन्होंने (मूर्ति ने) मेरे फूल को अपने हाथ से ग्रहण नहीं किया। पर इसने (नागार्जुन ने) एक बार इन पर फूल चढ़ाये तो हाथ फैलाकर ले लिया। इस पर उस मूर्ति के मुख से यह कहते सुनाई पड़ा कि ‘तुम्हारा मन अशुद्ध है, यह मेरा दोष नहीं है।’ यह शब्द सुनकर पंकज को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उन्होंने आचार्य नागार्जुन का चरण शिरोधार्य करके उनसे निवेदन किया कि मुझ पर अनुग्रह करें। उन्होंने (नागार्जुन ने) भी वैसा ही किया। आचार्य ने उनको अभिषेक प्रदान किया तथा दर्शन एवं चर्या की युगनद्ध दीक्षा दी वह इस प्रकार है—

कृपामय रागात्मक सुख,

अद्यनुत्पन्न (तत्त्व) एक ही है।

(इस) अद्वैतता का सम्यग् दर्शन करो,

(यही) आर्य (लोकेश्वर) की अनुसंधि (= आशय^१) है।

यह कहने पर उन्होंने (पंकज) सुचारु रूप से इसे समझ लिया। वे साधना में लगे, तो सात दिन में ही उन्हें परमसिद्धि का लाभ हो गया; तत्पश्चात् जगत्-अनुग्रह दृष्टि से चर्या करते हुए अनेक उपदेश दिये और कल्याण-कार्य सम्पादन किये। अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु पंकजपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. कृपारूपी अनुराग अर्थात् कृपारूपी जगत् अनुराग एवं प्रपञ्च उपशमन शिव-स्वरूप निर्वाण आद्यतः असिद्ध शून्यता एवं निःस्वभाव रस में एक ही है। यही तत्त्व आर्य (लोकेश्वर) के आशय और चिन्त्य का विषय है।

५२. गुरु घण्टापा का वृत्तान्त

गुरु घण्टापा का वृत्तान्त इस प्रकार है— वे श्री नालन्दा जनपद के (महा-विहार स्थित एक) निकाय के थे।^१ वे अक्षुण्ण भिक्षु संवर से युक्त थे। सभी पंच-विद्या स्थानों में पारङ्गत विद्वान् होने के नाते उनका सुयश सर्वत्र फैल रहा था। आचार्य सभी प्रदेशों में जन कल्याण के लिए जाया करते थे।

उस समय राजा देवपाल नामक शासक अपने पुण्य-बल से प्राप्त अपरिमित राज्य-सम्पत्ति का भोग, भोग रहा था। वह अपने अट्टारह लाख नगर (१८ लाख की आबादीवाले जनपद), कामरूप के नौ लाख नगर (९ लाख की आबादी सम्भवतः) और बंगाल के चार लाख आबादीवाले नगर, कुल मिलाकर इकतीस लाख आबादीवाले नगरों पर राज किया करता था। एक समय आचार्य उसके नगर शालिपुत्र^२ पहुँचे। वे भिक्षाटन करके एक वृक्ष के मूल में अपना स्थान जमाकर बैठे थे।

यों, महाराज देवपाल के अनेक पूज्य गुरु थे। एक समय रात में राजा ने अपनी रानी से परामर्श किया और कहा कि सभी संस्कार अनित्य हैं, भवगत सभी धर्म दुःख हैं। सांसारिक धर्मों में कोई तत्त्व नहीं है। मैं तो इहलोक और परलोक दोनों में राज करूँगा। हम दम्पत्ति को परलोक के पथ्य के लिए अनेक पूज्य स्थानों (गुरुओं) से सम्भार (पुण्य) का सञ्चय करना क्या उचित नहीं होगा?

रानी ने उत्तर दिया— 'आप के लिए बहुत से पूज्य स्थान (भदन्त) पहले से ही थे। अब भी अन्य पूज्य लोगों से विशिष्ट एक महान् विनयधर इस नगर के बाहर

१. घण्टापा का जन्मस्थान पूर्व भारत था; वे वारेन्द्र जनपद के राजकुमार थे। पिता के देहावसान के बाद राजगद्दी पर आसीन हुए, तो उन्होंने उसे छोड़कर नालन्दा की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने नालन्दा में जिनदेव नामक उपाध्याय से उपसम्पदा ग्रहण की। नाम 'मत्तिसार' रखा गया। उनका दूसरा नाम 'जितारि' भी था। (पद्मकर० इति०, पृ० ७९-८०)

२. कुनख्येन पद्मकर के अनुसार 'ओडिविष'। (सम्भवतः पाटलिपुत्र)

एक वृक्ष के मूल में जीविका भिक्षा, चीवर आदि अल्पमात्र सामग्री से जीनेवाले हैं। उनकी सेवा में चौरासी प्रकार के व्यंजन, दाँत से काटकर खाने वाले चौदह प्रकार के चर्व्य, अंगूर के रस आदि पाँच प्रकार के पेय पदार्थ, दीप-प्रकाश के अतिरिक्त रत्नादि प्रकाश आदि-आदि राजा के सभी काम-गुण उन्हीं को अर्पित किया जाय तो अच्छा होगा, राजा ने भी कहा कि 'यह उचित है।'

दूसरे दिन राजपुरुषों के एक दल को आचार्य को निमन्त्रण के लिए भेजा, पर आचार्य नहीं ले आये जा सके। फिर राजा स्वयं बहुत से राज-परिवार के लोगों को साथ लेकर आचार्य के पास गये।^१ वहाँ यथायोग्य प्रणाम, अभिवादन किया और योगक्षेम पूछा। साथ ही बहुत-सी सहज बातें हुई।

(आचार्य ने कहा) आप इधर क्यों पधारे हैं?

(राजा ने उत्तर दिया) हे महाचार्य! श्रद्धा से आपको अपने पूज्य स्थान (पुरोहित) के लिए निमन्त्रण अनुनय लेकर आया हूँ।

आचार्य ने कहा— राजा का राज-भक्त पाप से युक्त होता है। मैं वहाँ नहीं आऊँगा।

राजा— आप सदा के लिए (हमारे यहाँ) नहीं रहें, तो एक वर्ष तक तो अवश्य बैठने के लिए आयें। वह भी आचार्य ने स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार क्रमशः छः मास, तीन मास, एक मास, आधा मास और अन्त में एक दिन के लिए कम से कम आने को कहा तो आचार्य ने क्रमशः सब स्वीकार नहीं किया और कहा कि पापी व्यक्ति चार प्रकार की चारिकाओं में से कोई भी करे, सब पाप मात्र ही होता है। अतः मैं वहाँ नहीं आऊँगा। इस प्रकार राजा के चौदह दिन तक पुनः निवेदन करने पर भी आचार्य ने जाना स्वीकार नहीं किया।

१. कुनख्येन पद्यकर के अनुसार राजा आखेट खेलते-खेलते उनके पास पहुँचे। आचार्य की दयनीय शारीरिक अवस्था को देखकर राजा को बड़ी दया आ गई। राजा ने उन्हें नगर (राजधानी) आने के लिए निमन्त्रण दिया। (पद्यकर० इति, पृ० ७९-८०)

राजा तथा उनके सभी राजपरिवार^१ के लोग बड़े क्रुद्ध हो गये। द्वेष की आग जलने लगी। राजा ने घोषणा की कि इस भिक्षु से ब्रह्मचारित्व जो छीन सकेगा, उसे मैं आधा राज्य पुरस्कार में दूँगा, बीस सेर सोना दूँगा। यह घोषणा सर्वत्र पहुँचाई गई। उस समय, उस नगर में एक छल-कपट से परिपूर्ण प्रधान नर्तकी रहती थी, उसने राजा से कहा—वह काम मैं कर सकूँगी।

राजा ने कहा— 'तुम प्रयत्न एवं उद्यम से इस कार्य को अवश्य सिद्ध करो।'

नर्तकी ने सोचा कि उसके पास एक बारह वर्षीय लड़की थी जो लौकिक धर्म से अस्पृष्ट, सुन्दर चेहरा, सुन्दर चाल, बोलने में अति मधुर स्वरवाली शरीर मांस से भरी, गहन स्तन, यदि उसे सूर्य भी देख ले तो विचलित हो जाय, ऐसी विशेषताओं से युक्त थी। मैं उसे भेजकर उस योगी को संसार में वापस ले आकर ब्रह्मचारित्व से च्युत कर सकूँगी। इस उद्देश्य से उस लड़की की माँ (नर्तकी प्रधान) आचार्य के पास गई और प्रणाम एवं प्रदक्षिणा करके लौट आई। इस प्रकार उसने इस कार्य को दस दिन तक जारी रखा। अन्त में उसने आचार्य से निवेदन किया—

मैं तीन मास के वर्षावास में तीनों मास के भोजन की व्यवस्था करनेवाली दायक बनना चाहती हूँ। आप स्वीकार करें। आचार्य ने इसको भी स्वीकार नहीं किया। वह एक महिने तक इस बात को लगातार दोहराकर आचार्य से निवेदन करती रही। अन्त में आचार्य ने उसे स्वीकार कर लिया। नर्तकी ने प्रसन्न होकर बहुत से उत्सव का आयोजन किया^२ और कहा—

नारी का छल इक्यासी तरह का होता है, काम^३ भी उससे सौ गुना है।

यदि मैं हिलाना चाहूँ तो चारों द्वीप हिला सकती हूँ और ठग सकती हूँ, फिर यह एक भिक्षु को भ्रष्ट करना कौन-सी बड़ी बात है। उसने यह सोचा और बोलती भी गई।

१. परिवार से अभिप्राय—सेना, पुलिस और राजपुरुष से है।

२. सारा खर्चा राजभवन से पाती थी। (पद्-इति द्र० व्या०-पृ० ७८)

३. 'प्रेमराग' को ही यहाँ काम शब्द से कहा गया है।

(आचार्य वर्षावास के लिए उस वन में ही रह रहे थे) उससे आचार्य ने कहा— मेरा भोजन आदि पहुँचाने में लड़के ही भेजो, लड़कियों को मत भेजो। उसने उत्तर दिया—वैसा ही करूँगी।

उसने आधे मास तक चीनी का शर्बत एवं भात आदि आचार्य के पास पुरुष द्वारा ही पहुँचाया। तत्पश्चात् अपनी लड़की को नाना प्रकार के अलंकारों से सुसज्जित किया और अनेक प्रकार के खाद्य, पेय-पदार्थ, उत्तमकोटि के भोजन की व्यवस्था करके पाँच सौ सेवकों के साथ उस लड़की को आचार्य के पास भोजन पहुँचाने के लिए भेजा^१। सेवकों को यह आदेश दिया गया कि वन के बाहर से लौट आये लड़की को वहाँ अकेली छोड़ दें।

सब लोगों ने वैसा ही किया और लड़की भी अपनी माँ द्वारा सिखाये गये सभी छल-हाव-भाव को स्मरण करती हुई अन्दर पहुँची। भिक्षु ने भी (आचार्य ने भी) पहले के भोजन पहुँचानेवाले समझकर कमरे के अन्दर प्रवेश किया, तो वहाँ एक कुमारी को सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित देखकर कहा कि 'सब पुरुष लोग कहाँ गये?'

लड़की ने उत्तर दिया—वे लोग अन्य काम में व्यस्त हैं, इसलिए मैं आई हूँ। लड़की (आचार्य के भोजन कर लेने के बाद भी) बहुत देर तक बैठी रही। आचार्य ने कहा—'अब तुम जाओ।' लड़की ने कहा 'अभी आकाश में पाँच प्रकार के रंग वाले आच्छन्न-मेघों से वर्षा हो रही है।' यह बन्द हो जाय तो जाऊँगी। यह कहकर बहुत देर तक बैठी रही, जब तक सूर्य अस्त न हो गये।

लड़की ने कहा—मेरे साथ रास्ते में चलनेवाले साथी नहीं हैं, वस्त्र एवं आभूषण को देखकर मेरे मन में प्राण जाने का डर है। आचार्य ने भी यह सच मान लिया और उसको वहीं पर सोने की व्यवस्था की गई। लड़की रात को भयभीत होने

१. पदकर के अनुसार लड़की को सेविका के रूप में स्वीकार करने के लिए उसकी माँ ने पहले से ही आचार्य से अनुमति माँगी थी। आचार्य ने भी उसे स्वीकृति दे दी थी।
(पद० इ० पृ० ८०)

के बहाने चिल्लाई। फिर उसे कुछ समीप सोना पड़ा। विषय की समीपता से उन दोनों का शरीर मिल गया^१।

उन्होंने (आचार्य ने) यौगिक प्रयोग किया। चार प्रकार के महासुख उत्पन्न करके सभी मार्ग क्रमशः आरूढ़ हो गये। दूसरे दिन से लड़की अपनी माँ के पास जाना छोड़कर वहीं रहने लगी। दोनों का भोजन साथ आने लगा। इस प्रकार उन दोनों को वहाँ रहते एक वर्ष पूरा हो गया और एक बच्चा भी हो गया।

उधर राजा उस नर्तकी से पूछ-ताछ करते रहे, पर उसने साफ-साफ नहीं बतलाया। इस प्रकार तीन साल बीत गये तब नर्तकी ने राजा से कहा—

‘हे राजन्! आपकी आज्ञा पूर्ण हो गयी है। आप खुश रहें। राजा ने कहा—यदि ऐसा है तो तीन दिन के बाद उस भिक्षु को मेरे पास ले आने का कार्य करो, ऐसा तुम अपनी पुत्री से कहो। राजा सालिपुत्र नगर के सभी लोगों को साथ लेकर उस भिक्षु की ओर चला। उधर भिक्षु (आचार्य) ने लड़की से पूछा कि अब हम लोगों को यहीं रहना चाहिए या और जगह जाना चाहिए?

लड़की ने उत्तर दिया—हम दोनों के इस खराब काम की सब निन्दा कर रहे हैं, यहाँ से अन्यत्र चला जाय तो अच्छा होगा।

(दोनों जाने के लिए तैयार हुए) लड़की ने अपने बच्चे को उठाया और मदिरा का तुम्बा (पात्र विशेष) लिये दोनों चल दिये। रास्ते में राजा (सालिपुत्र के नागरिकों सहित) से भेंट हो गई। राजा ने हाथी के ऊपर से उतरकर (भिक्षु से) कहा—भिक्षु जी! आपके चीवर के अन्दर क्या है? यह लड़की आपकी क्या है?

भिक्षु ने उत्तर दिया—चीवर के अन्दर छोटे बच्चे हैं और यह मदिरा का तुम्बा है। यह लड़की हमारी पत्नी है।

१. कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि वहाँ उस लड़की को आचार्य ने अपनी कर्म-मुद्रा के रूप में योग्य बनाने के लिए सामान्य दीक्षा भी दी। क्रमशः अभिषेक एवं तन्त्र की दीक्षा देकर सन्तति परिपाक कर्म-मुद्रा के रूप में सेवन किया। (पदकर ३० पृ० ८०)

राजा—जब मैंने आपको निमंत्रण दिया तो आप ने कहा था कि तुम पापी के पास मैं नहीं आऊँगा। अब तुम पुत्र एवं पत्नी से क्या करोगे? तुम स्वयं एक पापी हो।

आचार्य ने कहा—मुझे कोई दोष नहीं है, तुम (व्यर्थ) अपवाद मत करो।

पुनः राजा आदि पूर्ववत् कहने लगे, तो आचार्य ने छोटे बच्चे और^१ मदिरा के पात्र तुम्बा—जो चीवर में बाँधकर रखे थे, भूमि पर पटके। पृथ्वीदेवी भयभीत हो गई और भूमि फट गई; वहाँ से पानी उभर आया^२। उस पानी के अन्दर बच्चे और पात्र (तुम्बा) वज्र और घण्टा बन गये^३। वे स्वयं श्री चक्रसंवर के रूप में परिणत हो गये और लड़की वज्रवाराही के रूप में। सपरिवार राजा (एवं सालिपुत्र की जनता जो वहाँ एकत्र थे) के ऊपर आकाश में चक्रसंवर मातृ-पितृ युगनद्ध रूप, वज्र और घण्टा धारणकर बैठे।

सब लोग आकाश की ओर देखकर आचार्य की शरण में जाकर, उनसे प्रार्थना करने लगे। पर उनके वज्र-क्रोध-समाधि से व्युत्थित न होने के कारण राजा और अन्य नागरिक भूमि फटकर निकले पानी में डूब-डूबकर मरने लगे। उसी समय आर्यावलोकितेश्वर वहाँ आ पहुँचे और फटी भूमि पर पैर रखकर पानी उभरने से रोकने लगे। राजा और प्रजा को राहत मिली।

पुनः लोगों ने गुरुजी (घण्टापा-आचार्य) से प्रार्थना की तो उन्होंने (समाधि से उठकर) 'हूँ' शब्द को ध्वनित किया। इससे सभी (भयंकर पृथ्वी पर) पानी (की बाढ़) अदृश्य हो गया। राजादि सभी लोगों ने उनसे क्षमा याचना की। आर्यावलोकितेश्वर की मूर्ति भी पत्थर की मूर्ति होकर वहीं स्थिर हो गई। कहा जाता है कि आज भी (अभयदत्त श्री के समय में भी) उस मूर्ति के पैर के नीचे से पानी बहता है। उसके बाद आचार्य ने राजा आदि को अनेक प्रकार के उपदेश दिये। उपदेश इस प्रकार हैं—

१. इन्हें दो बच्चे हो चुके थे—एक बच्चा और एक बच्ची।

२. कहीं मदिरा उभर आने की बात लिखी थी—पद्कर, पृ० ८०।

३. कहीं-कहीं—तुम्बा वाराही, लड़की घण्टी और लड़का वज्र बने।(पद्कर-३०, पृ० ८०-८१)

जैसे औषधि और विष,

अपना स्वभाव एक होने पर भी।

(उनसे) दो भिन्न तरह के फल निकलते हैं,

उसी प्रकार प्रहेय और प्रतिपक्ष भी ॥१॥

एक ही स्वभाव के होते हैं, न कि भिन्न,

पण्डितजन (इसे) जानकर (किसी को) नहीं त्यागते।

बाल अज्ञानी अज्ञान (वश) पंच विषों^१ के कारण संसार में भटकते हैं ॥२॥

यह कहने पर, राजादि जन-समुदाय के लोगों में जो आचार्य के प्रति सर्वथा के लिए श्रद्धा निवृत्त हो गई थी सब लोग समान रूप से श्रद्धालु हो गये। इस घटना से अपरिमित सत्त्व मार्ग आरूढ़ हो गये। सब लोगों ने उन्हें 'घण्टापा' कहना आरम्भकर दिया।

कहा जाता है कि उस लड़की ने इनको इससे पूर्व के छः जन्मों में शील से भ्रष्ट किया। इस जन्म में भी उसने यही करने की चेष्टा की थी, परन्तु तब तक आचार्य धर्मधातु के रस में सभी द्वैत-विकल्प खो चुके थे और जिसके कारण उनकी सन्तति (तन्त्र) बहुत परिशुद्ध हो चुकी थी। इसलिए बाधा की जगह उनके लिए ये परम सहायक सिद्ध हुए। पुत्र वज्रपाणि थे। वह लड़की भी पूर्व जन्मों में जब-जब इन आचार्य के सम्पर्क में आयी, इनको लाभ-सत्कार से पूजती रही, जिसके कारण उसने भी मलविशुद्ध होकर साथ ही फल की प्राप्ति की।

इस प्रकार गुणसम्पन्न आचार्य घण्टापा (सपत्नीक) इसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु घण्टापा (घण्टीपा) का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. पंच विष— राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, मत्सर्य, ये पाँच विष हैं।

५३. गुरु जोकिपा (योगीपा) का वृत्तान्त

गुरु जोगिपा (जोकिपा=योगीपा) ओदन्तपुरी के रहनेवाले थे और जाति के चाण्डाल थे। उनके गुरु शबरपा थे।

ये बड़े उद्यमी थे, पर प्रज्ञा की इनमें बड़ी कमी थी। एक समय गुरु शबरपा उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने हेवज्र के मण्डल में जोगीपा को अभिषेक प्रदान करके उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा दी और तदनुसार उन्हें भावना करने को कहा। पर गुरु के उपदेश का अर्थ वे नहीं समझ पाये। उन्होंने गुरु से प्रार्थना की कि 'हे गुरु जी! मेरे द्वारा भावना सम्भव नहीं हो रही है। अतः इसके अतिरिक्त मुझे शरीर एवं वाणी के द्वारा कुछ पुण्य करने का उपाय बतलायें।'

गुरु ने उन्हें 'वज्र हेरुक' का जप सिखाया और कहा कि जाओ तुम चौबीस महान तीर्थ स्थानों में जाकर इसकी साधना करो। उन्होंने भी वैसा ही किया। बारह वर्ष में (चित्तादि) मल-विशुद्ध होकर 'महामुद्रा परमसिद्धि' का उन्हें लाभ हो गया।

अन्त में उन्होंने कुछ अवदान भी कहे और पाँच वर्षों तक जगत् कल्याण करने के बाद उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु जोगिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



५३. गुरु योगिपा

गुरु योगिपा या जोगिपा चक्रमण-मुद्रा में हैं। सिर में जटा बाँधे हुए हैं। लंगोटी के अलावा लगभग निर्वसन हैं। हाथ में डण्डा है तथा सभी सामान कपड़े में बाँधकर उसे डण्डे के एक छोर में लटकाकर कन्धे पर रखे हुए बहुत दूर नजर गाड़े चल रहे हैं।



५४. गुरु चलुकिपा

गुरु चलुकिपा (चलुकपा) हलके वस्त्र पहने हुए और जटा बाँधे हुए हैं। मृग-चर्म बिछाकर पहाड़ के समान एक बहुत बड़े शिला-खण्ड को तकिया के रूप में रखकर सोये हुए हैं। ठीक सामने एक बड़ा-सा ध्यान-स्तम्भ गड़ा हुआ है।

५४. गुरु चलुकपा का वृत्तान्त

गुरु चलुक या चलुकिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— इनका देश भङ्गलपुर (बंगालपुर) था और जाति के वह शूद्र थे। उनके गुरु मैत्रीपा थे।

ये अत्यन्त निद्रा प्रिय थे। सब समय नींद के वशीभूत होकर कोई भी उद्यम नहीं कर पाते थे। तब उनके पास एक योगी आ पहुँचे। योगी ने उनसे कहा—तुम यहाँ क्या करने बैठे हो?

चलुक ने उत्तर दिया—मैं संसार से मुक्ति पाने के लिए एक धर्म-साधना करने के लिए सोच रहा हूँ। परन्तु किसी धर्मोपदेशक आचार्य से मेरी भेंट नहीं हो पाई। आवरण (मल के बाहुल्य) स्वभाव के कारण नींद के वशीभूत होकर उद्यम नहीं कर पाता; अतः आप मुझे धर्मोपदेश तो दें, साथ ही यदि नींद कम होने का उपाय न दें, तो मुझे कोई लाभ नहीं हो पायेगा।

योगी मैत्रीपा ने उनसे कहा—तुम्हें अभिषेक दिया जायगा, जिससे तुम्हारी नींद भी कम हो जायगी और संसार से भी मुक्ति पाओगे। उन्होंने चलुकि को चक्रसंवर के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक दिया तथा गम्भीर 'सम्पन्न-क्रम', नाडी एवं वायु की दीक्षा इस प्रकार दी—

समग्र दृश्यभाव (दृश्य-जगत्) को अपने काय, वाक् एवं चित्त इन तीनों में समाविष्ट करो। ललना एवं रसना को मध्य अवधूती में प्रवेश कराओ। अपने काय एवं अवधूती को झील के रूप में और चित्त को हंस के रूप में मानकर उस झील के अन्दर तैरते हंस की भावना करो। इससे तुम्हारी निद्रा भी कम हो जायेगी और वायु-अवधूती में प्रवेश हो जाने से निर्विकल्प ज्ञान स्वतः उत्पन्न होने लगेगा। इस प्रकार (मैत्रीपा ने) उनको अभिषेक एवं दीक्षा प्रदान की।

वह (चलुकि) भी तदनुसार भावना करते रहे। नौ वर्ष में उनका समस्त चित्त मल (आवरण) विशुद्ध हो गया उन्हें 'महामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ हुआ। उनका अवदान—

१४६ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

‘सभी दृश्य जागतिक धर्म अपने ही काय-वाक्-चित्त में समाविष्ट हैं,
वह भी ग्राह्यग्राहक अकल्प तीन नाड़ियों में समाविष्ट हैं।

दोनों को अवधूती में प्रविष्ट कराकर झील के रूप में भावना की, तो
विज्ञान का हंस उसी के रस से जीने लगे हैं।

इस प्रकार अवदान-उक्ति के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि
चले गये ॥

गुरु चलुक का वृत्तान्त समाप्त ॥



५५. गुरु गोधुरिपा

गुरु गोधुरिपा जाल बिछाकर चिड़िया का शिकार करने की मुद्रा में हैं तथा लता एवं पत्तियों से बने अधोवस्त्र पहने हुए हैं। बाल कटे-बने हुए हैं। अंगुलियाँ उठाकर आकाश के पक्षियों की ओर संकेत कर रहे हैं।



५६. गुरु लुचिकपा

गुरु लुचिकपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में हैं। दुशाला, हलके आभूषण एवं धोती धारण किये हैं। दाढ़ी और सिर के बाल उखाड़ने से कुछ विकृत अवस्था में हैं।

५५. गुरु गोधुरिपा का वृत्तान्त

गुरु गुण्डरिपा गोंडरि या गोधुरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—गोधुर या गोंडर का अर्थ है, चिड़ीमार (व्याध)। वे सदा दोल (चिड़िया मारने का एक औजार) लेकर पक्षी मारने जाते थे। एक समय (वे पक्षी मारने जा रहे थे) उनके पास एक योगी आ पहुँचे। योगी बोले—हे कुलपुत्र! तुम क्या कर रहे हो?

व्याध ने कहा—हे आर्य! पूर्व के अर्जित दुष्कर्मों के कारण मेरा गोंड जाति में जन्म हो गया। जीविका के लिए सदा पक्षियों की हिंसा करनी पड़ती है। इसी से जीना पड़ता है। इससे दुःखी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा—

(कृत) कर्म और कर्मों से इस जन्म में दुःखी,

परलोक इससे भी अधिक दुःखी; तो,

सदा सुखी सद्धर्म, अहो क्यों नहीं साधते?

गोंडरि ने कहा—

हे गुरु! मेरे जैसे पापी व्यक्ति के लिए कृपादृष्टि हो, यदि आप मुझे दीक्षा दें, तो साधना क्यों नहीं कर सकता। इस पर योगी ने उन्हें “प्रभाव-उत्क्रांति” का अभिषेक दिया और उनको उनके (संस्कार में मौजूद) आलम्बनों के अनुरूप “एकालम्बन” की दीक्षा दी। वह इस प्रकार है—

“लोक में जितना भी शब्द हो, वह सब पक्षी की आवाज के रूप में समझो तथा पक्षी की आवाज और अपने चित्त का आलम्बन दोनों को मिलाकर एक करके भावना करो।”

पुनः आचार्य ने उसे दोहे के रूप में कहा—

पुनः उस शब्द की ओर चित्त भागता हो, तो,

जैसे कोयल की मीठी ध्वनियाँ (एक ही रस में) ध्वनित होती हैं।

(उसी तरह) सभी शब्द शब्दमात्र में एक ही होते हैं;

वैसा ही शब्द और शब्दग्राहक (बुद्धि) में।

व्याप्त धर्मता के स्वरूप की भावना करो ॥”

(अर्थात् शब्दगत ग्राह्य-ग्राहक शून्यता की भावना करो)

इस वचन के अनुसार भावना की, तो सभी शब्दों की ध्वनि एवं (उनकी) शून्यता के अभेदत्व का उन्हें ज्ञान होने लगा।

नौ वर्ष में उनके चित्त का सभी मल (आवरण) विशुद्ध हो गया और ‘महामुद्रा परमसिद्धि’ प्राप्त हो गई। अपनी अवदान की उक्तियाँ भी बहुत-सी उन्होंने कह डाली। एक सौ वर्षों तक इसी लोक में बैठे अपरिमित सत्त्वार्थ किये। अन्त में तीन सौ शिष्य-परिवार के साथ इसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु गोधुरि का वृत्तान्त समाप्त ॥

५६. गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त

गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘लुचिक’ का अर्थ है—खरगोश की तरह नीचे बैठने-उठनेवाला। ये पूर्वी बंगाल के रहनेवाले, जाति के ब्राह्मण थे।

पूर्वी बंगाल के एक ब्राह्मण का अपने परिवार-जनों में से बहुत से आदमी के मर जाने के दुःख से संसार से लगाव नहीं रहा। एक निर्जन स्थान में जाकर कुछ धर्म-साधना करने को सोचा तो दीक्षा आदि न रहने से वे सोचने लगे कि मुझे एक धर्मोपदेश देनेवाले गुरु कब मिलेंगे, ऐसे गुरु से भेंट हो जाय इत्यादि।

एक दिन एक योगी वहाँ आये, तो वह बड़े प्रसन्न हुए और योगी के चरणों में प्रणाम किया।

योगी ने पूछा कि ‘मुझे प्रणाम करके तुम क्या चाहते हो?’

लुचिकपा—मैं संसार (के धर्मों) से मन विरक्त (हो) कर कुछ करने को सोच रहा था, पर दीक्षा (उपदेश) देनेवाले गुरु से अभी भेंट नहीं हो पायी। आज आप जैसे गुरु से मेरी भेंट हो गई—अब दीक्षा ग्रहण करूँगा।

योगी ने (उनकी पात्रता देखी और) उन्हें चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक दिया, उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम की दीक्षा भी दी। तदनुसार उन्होंने भी बड़े प्रयत्न के साथ भावना (साधना) की। बारह वर्ष में उत्पत्ति एवं सम्पन्न-क्रम के युगान्ध साक्षात्कार से परमसिद्धि की प्राप्ति हुई। इनका नाम ‘लुचिक’ उसी समय से प्रसिद्ध हुआ।

उनका उदान (दोहा)—

“संसार और निर्वाण दोनों, भिन्न रूप से स्थित नहीं देखता,

यही महासुख और मुक्ति है, क्षुद्रत्वेन ग्रहण से(यहाँ)पहुँचना दुष्कर है।”

यह कहकर उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये। (जाते समय) आकाश में स्थित होकर अनेक अवदान कहे और वहीं से अन्त में वह अन्तरधान हो गये॥

गुरु लुचिकपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

५७. गुरु नगुणपा का वृत्तान्त

गुरु नगुणपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘नगुण’ का अर्थ, बिना गुणवाला। ये पूर्वी भारत के रहने वाले थे और जाति के शूद्र।

पूर्वी देश में एक शूद्र परिवार में एक बच्चा पैदा हुआ। जन्म-उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। लालन-पालन के बाद जब वह बड़ा हुआ तो वह बड़ा आलसी और निद्राप्रेमी रहा। लोक-कर्म करने का उसको ख्याल में भी नहीं आता था। सब परिवार के लोग समान रूप से यह कहने लगे कि इस तरह के आलसी व्यक्ति, अच्छा या बुरा कोई भी काम नहीं कर सकते, इस तरह के बेटे की अपेक्षा कोई फल ही पैदा होता, तो कम से कम खाया तो जा सकता था। इस तरह से सब लोग उसकी निन्दा किया करते थे। इससे वह बड़े दुःखी हो गये। एक दिन वह एक निर्जन जगह में जा बैठे, तो उनके पास एक योगी आ गये। योगी ने उनसे कहा—तुम नगर से भिक्षा माँगकर मुझे खिलाओ।

आलसी व्यक्ति ने कहा—‘यह मुझसे पूरा नहीं हो पायेगा।’ यह कहते हुए वह भूमि से उठ भी नहीं पाया।

योगी को इसे देखकर बड़ी दया आ गयी। स्वयं उसने उस आलसी को खाना खिलाया और कहा—तुम्हारे पास कौन-सा गुण है?

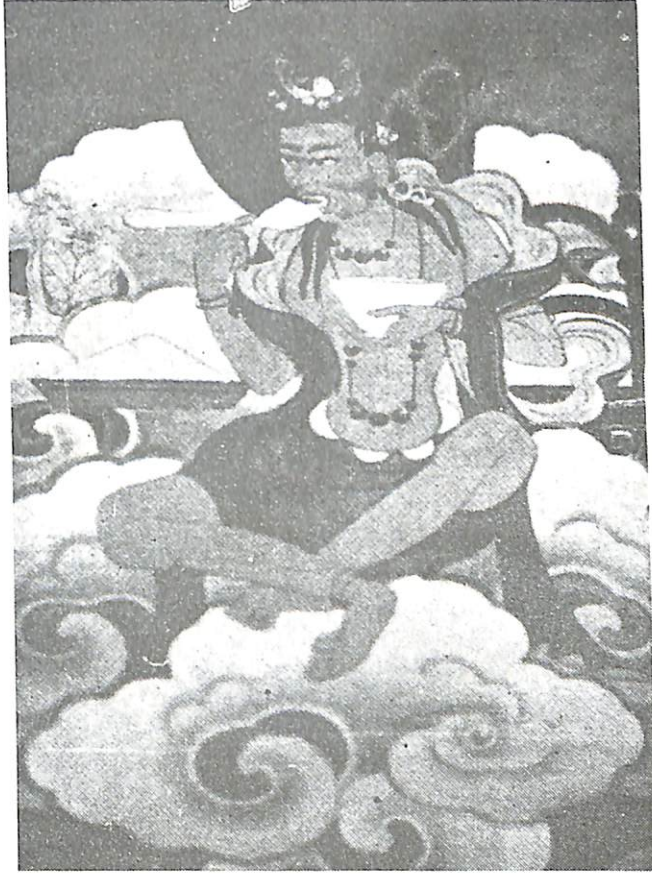
आलसी—‘आर्यवर! मेरा नाम ही नगुण है, मेरे पास कोई गुण नहीं है।’ यह कहकर उनका दिया हुआ खाना भी भूमि पर लेटकर खाने लगे। यह देखकर योगी ने उनसे कहा—तुम मरने से नहीं डर रहे हो?

आलसी—डर तो लगता है, पर कोई उपाय नहीं है।

योगी—यदि साधना कर सकते हो, तो उपाय मैं देता हूँ।

आलसी—यदि सोकर (लेटकर) कोई काम होता हो, तो कर सकता हूँ।

योगी ने उन्हें अभिषेक प्रदान किया और प्रतीयमानता और शून्यता दोनों के युगनद्ध भावना की दीक्षा इस प्रकार दी—



५७. गुरु नगुणपा

गुरु नगुणपा सामान्य वस्त्र और आभूषण पहने पर्यङ्क के सहारे पीठ लगाकर बैसे हैं और खाना खाने की मुद्रा में हैं। उनके ठीक सामने कुछ उच्च स्थान पर एक योगी बैसे हुए हैं।



५८. गुरु जयानन्द

गुरु जयानन्द एक राजा के मन्त्री के वेश में हैं। वह विविध प्रकार से भोजन अन्न आदि सामग्री जुटाकर और हाथ में विशेष वाद्ययन्त्र लेकर 'बलिदान' (पूजा विशेष) करने की मुद्रा में हैं। सामने एक बुद्ध की प्रतिमा है।

(दोहा)

ग्राह्य-ग्राहक कोई भी सिद्ध नहीं है,
इसे न जानने से सभी जीव।
दुःख से पीड़ित होते हैं बेचारा,
है यह भी अद्यनुत्पन्न ही ॥ १ ॥
प्रतीयमान और शून्य के अभिन्न रूप,
प्रभास्वरता (चित्त) सन्तति में उत्पन्नकर।
पागल के समान चारिका से,
नगरों में दौड़ा करो (सर्वत्र) ॥ २ ॥

इस वचन के अनुसार उसने भी भिक्षा माँगते हुए साधना की। फलतः उसे युगनद्ध प्रभास्वरता का ज्ञान प्राप्त हो गया और सिद्धि का लाभ हुआ। फिर वह सर्वत्र घूमते रहे, लोग उनसे पूछते कि आप कौन हैं? वह बिना कुछ कहे उन्हें देखते रहते थे। लोग उनकी दशा को दयनीय कहते। वह योग्य पात्रों को प्रतीयमान धर्म एवं शून्यता की अभिन्नता का मार्ग दिखलाते रहे।

अन्त में जैसे समुद्र में नाव टूट जाती है, उसी प्रकार उसका भ्रांति-जाल विच्छिन्न हो गया। उन्होंने 'महामुद्रा परमसिद्धि' प्राप्त की और उसी शरीर के द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु नगुणपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

५८. गुरु जयानन्द का वृत्तान्त

गुरु जयानन्द (जयानन्दि) का वृत्तान्त इस प्रकार है—वह बंगाल के रहनेवाले और जाति के ब्राह्मण थे।

बंगाल के एक राजा के ब्राह्मण मन्त्री थे। एक समय उस ब्राह्मण ने तांत्रिक धर्म ग्रहण किया (दीक्षा ग्रहण की)। गुह्य रूप से वे मंत्र साधना करते रहे। उनको मन्त्र प्रभाव प्राप्त होते किसी ने नहीं जाना। वह सदा (सामान्य अत्रनिर्मित) बहुत-सी बलि दिया करते थे। इस घटना को अन्य मन्त्री सहन नहीं कर सके और वे जाकर राजा से कह आये। राजा ने भी उस (साधक मन्त्री) को पकड़कर लोहे के जंजीर में बाँध कर कारागृह में डाल दिया। मन्त्री ने कहा—मैंने महाराज के मुट्ठी-भर द्रव्य का भी नुकसान नहीं किया। अतः मुझको इस जंजीर से मुक्त करो। पर राजा ने उनकी कुछ नहीं सुनी।

उसके बाद वहाँ बलि के समय आने पर उसे खाने के लिए बहुत से कौआ आ गये। पर वहाँ (उस दिन बलि देनेवाले) वह (मन्त्री) नहीं थे और बलि का कोई प्रबन्ध नहीं था। इससे कौआ लोग बड़े क्रुद्ध हुए और अपनी पूरी सेना के साथ राजमहल गये, सभी लोगों के शरीर और सिर नोचने लगे और चोंच मारने लगे। राजा आदि सब लोग आश्चर्य चकित होकर रह गये। उनमें से एक चिड़ियों की भाषा जाननेवाले थे; उन्होंने देखा कि कौवे लोग कह रहे हैं कि हम सबके माता-पिता के समान ब्राह्मण को इस राजा ने बन्दकर दिया है। राजा ने यह वृत्तान्त सुना तो बोला कि यदि ऐसा है, तो वह (मन्त्री) सच्चा है, उस मन्त्री से क्षमा माँगो और उससे कह दो कि पक्षियों को लौटाओ। उन्होंने (मन्त्री ने) पक्षियों से वैसा कहा, तो सब कौवे लौट गए।

इस घटना से राजा के मन में उस मन्त्री के प्रति बड़ा विश्वास जम गया और प्रतिदिन पाँच सौ सेर चावल बलि की सामग्री के रूप में उसको दिया जाने लगा। मन्त्री का नाम भी सर्वत्र 'जयानन्द' विख्यात हो गया।

उनकी मुखोक्ति उदान (दोहा)—

“इस सहज ज्ञान का,

गुरु कृपा से सम्यगवबोध हुआ।

मन्त्री बनना है, परम महासुख के,

सांसारिक परिवार में (अब) मैं नहीं रहूँगा ॥ १ ॥

स्वतः प्रकाशमान उस (तात्त्विक) राजा ने,

ग्राह्य-ग्राहक के द्वैत अरियों को मार ही दिया है।

(अतः) सांसारिक सुखों से (कोई) आसक्ति नहीं है,

अहो! अज्ञानी जीव।

अहो! जय (मैं) यही कहा हूँगा” ॥ २ ॥

अन्त में अनेक जगत् कल्याण साधकर सौ वर्ष बाद वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु जयानन्द का वृत्तान्त समाप्त ॥

५९. गुरु चपरिपा का वृत्तान्त

गुरु चपरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये जाति के कहार (खुरपा, छोड़वा-पूड़ी बेचनेवाले) चम्पक के रहनेवाले थे।

अत्यन्त दरिद्रता के कारण उनके पास पहनने के लिए कपड़े कटुल (सम्भवतः लङ्गोटी) ही था। एक धनी घराने से पूड़ी की बहँगी (भार) लेकर बेचते थे। उसमें से जो मुनाफा मिलता उसी से जीविका चलाते थे। एक दिन जो बहँगी तेल से पकी पूड़ी की ले आए थे, उसे न बेचकर स्वयं खाना आरम्भ कर दिया। आधा पूड़ी खा ही चुके थे कि तब तक आर्य अवलोकितेश्वर एक भिक्षु का रूप धारण करके उनके पास आये। उनको देखते ही चपरिपा को बड़ी श्रद्धा हुई और प्रणाम कर आधा खाए हुए टुकड़े को उन्हें दे दिया। भिक्षु ने उसको ग्रहण करते हुए कहा— तुमने यह कहाँ से पाया?

उसने (चपरिपा ने) सभी वृत्तान्त सही सुना दिया।

भिक्षु ने कहा—हम दोनों दायक एवं ग्राहक के रूप में हैं। मैं अपने दायक को एक धर्मोपदेश करना चाहूँगा। उस व्यक्ति ने भी (धर्मोपदेश सुनने के हेतु) मण्डल पुष्प आदि अर्पित करके सुनना आरम्भ किया।

निर्माणिक (भिक्षु) ने—त्रिशरण, चित्तोत्पाद आदि से उन्हें अधिष्ठित किया, षड्-अक्षर (मन्त्र)की दीक्षा दी। उसने भी बड़ी नम्रता के साथ उसे ग्रहण किया और भिक्षाजीवी होकर साधना आरम्भ कर दी।

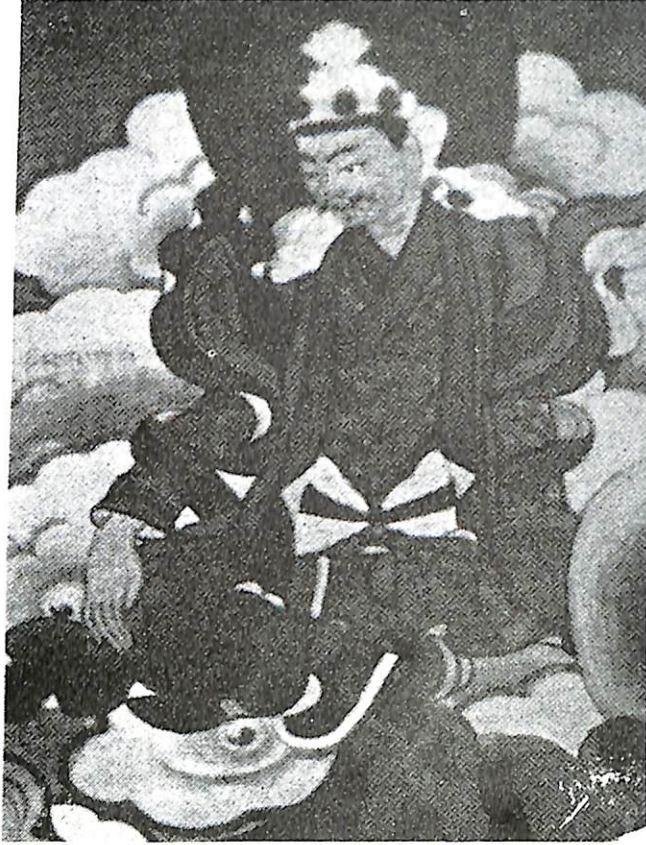
एक समय, पहले के पूड़ी दिलानेवाले स्वामी उनके पास आये और कहने लगे—मेरी उस बहँगी या भार का दाम चुकाओ।

उस (चपरिपा) ने कहा—मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। उस पूड़ी के “भार स्वामी” ने उसे पकड़ कर मारना आरम्भ किया, तो उसने कहा कि पूड़ी केवल मैंने अकेले नहीं खाई। हम गुरु-शिष्य दोनों ने खाई है। ऐसी दशा में आप मुझ अकेले को क्यों मार रहे हो? फिर भी वे मारते गये और चपरि उक्त शब्द बोलते गये, तो



५९. गुरु पचरिपा

गुरु पचरिपा योगी वेश में किसी वृक्ष की छाया में बैठे हैं। केवल लंगोटी मात्र कपड़ा पहने हुए और सिर के बाल मुंडे हुए हैं। एक बड़ी आकार की कचौड़ी का आधा भाग उठाकर खा रहे हैं। उनके सामने एक भिक्षु खड़े हैं और ये भिक्षु आर्य अवलोकेश्वर का प्रछन्न रूप है।



६०. गुरु चम्पकपा

गुरु चम्पकपा अपने उपवन में राजा के वेश में गद्दी पर बैठे हैं। उनके चारों ओर सुगन्धित पुष्प-युक्त चम्पक वृक्ष लगे हैं।

उस तरह के शब्द दीवार (वृक्ष) आदि से भी निकलने लगे। इससे बहंगी का स्वामी बहुत अचम्भित हुआ और यह कहकर कि मेरी बहंगी तो तुम ही लेकर गये। कहकर उन्हें वहीं छोड़ दिया तो चपरिपा एक विहार में गये और (वहाँ स्थित) अपने इष्टदेव की मूर्ति से बहंगी का दाम माँगा, तो उस मूर्ति ने सौ तोला सोना उनको दे दिया। उस सोने को लेकर उन्होंने उस गृहपति के पास जाकर उसकी बहंगी का दाम चुका दिया। मार खाने से उनके जो पूर्वसंस्कार के कुछ आवरण थे वह भी परिशुद्ध हो गये। वह सोचने लगे कि मेरा गुरु आर्य ही है।

पोतल गिरि (जहाँ आर्य लोकेश्वर निवास करते हैं) जाने की तैयारी करके वह चले। रास्ते-में जहाँ काँटों का वन था, वहीं उनके पैर में एक काँटा चुभ गया। इससे बड़ी पीड़ा होने लगी। उन्होंने आर्य को स्मरण कर विलाप किया। आर्य ने साक्षात् प्रकट होकर उनसे कहा—‘तुम्हारा गुरु मैं हूँ। अब तुम स्वतंत्र होकर यहाँ से वापस जाओ। विनेय लोगों को (सम्यक् मार्ग में) आनीत करो।

इससे वह अत्यानन्दित हुए और आकाश में ऊपर उड़ गए तथा चम्पक लौट गये। चम्पक के सब लोगों ने इसे देखा तथा आश्चर्यचकित होकर रह गये। बाद में इनसे उपदेश के लिए प्रार्थना की गई तो इन्होंने सब लोगों को प्रतीयमान धर्म एवं शून्यता की अभिन्नता की दीक्षा दी। इसके बाद सर्वत्र इनका नाम गुरु चपरिपा विख्यात हो गया।

अन्त में इसी शरीर द्वारा वह खेचरभूमि चले गये ॥

गुरु चपरिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६०. गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त

गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है, यह चम्पक बिहार में भागलपुर के रहनेवाले थे। 'चम्पक' एक फूल का नाम है, यही नाम नगर का भी पड़ गया। जाति के यह क्षत्रिय थे।

चम्पक के एक राजा, जो राज्य-सम्पत्ति से परिपूर्ण थे। वह सुन्दरता के अभिमान एवं राजसुख के बाहुल्य से उन्मद होकर परलोक आदि का विचार तक नहीं करते थे। वे चम्पक-पुष्प के उद्यान में पुष्पनिर्मित महल में बैठते थे और उनके रहने का आसन (गद्दी) एवं तकिया आदि भी अति सुगन्धित पीले रंग के चम्पक-पुष्प से बने हुए होते हैं। राजा के इस तरह के महल में रहते समय एक दिन एक योगी वहाँ आये और उनसे भोजन की याचना की तो राजा ने भी नम्रता से उनका पैर धोया और उन्हें आसन पर बैठाया, जलपान अर्पित किया।

योगी ने कुछ धर्मोपदेश दिया। सभी राजपरिवार ने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ उन्हें वहाँ के राजगुरु के रूप में बैठने के लिए प्रार्थना की।

योगी ने भी इसे स्वीकार किया और वहाँ बैठे।

एक दिन राजा ने कहा—हे योगी! आप बहुत से देश-देशान्तर घूमे हैं। इस प्रकार के पुष्प एवं हमारे जैसे अन्य राजा देखे हैं?

योगी ने उत्तर दिया—

चम्पक-पुष्प उत्तम गन्ध से, युक्त होने पर भी,

अपने शरीर से वैसे नाना सुगन्ध नहीं निकलते।

राजा का राज्य अन्य राज्य से विशिष्ट होने पर भी,

मृत्यु आते समय वह कुछ न लिए खाली (हाथ ही) जायगा।

इस कथन के अनुसार राजा ने अपने शरीर की परीक्षा की, तो स्वतः उसे घृणा उत्पन्न हो गई और वह विरक्त हो गये। पुनः उस (योगी) से उपदेश के लिए प्रार्थना की।

योगी ने उन्हें प्रथमतः कर्म-फल की देशना दी, उसके बाद अभिषेक दिया। उत्पत्तिक्रम एवं सम्पन्नक्रम मार्ग की दीक्षा दी। परन्तु राजा के सभी विकल्प पुष्पादि की ओर चले जाने से उन्हें भावना में अरुचि हुई। तब आचार्य ने विकल्प को मार्ग के रूप में उपनीत (उपयोग) करने का उपदेश इस प्रकार दिया—

आभास होते ही शून्य हो जाने पर,
गुरु के उपदेश (रूपी) पुष्प में।
अपने चित्त का मधुकर बैठ जाता है;
अनास्रव अमृत मधु तीनों की।
एक ही रूप में भावना करने से,
फल (के रूप में) महासुख का उदय होगा।
(यह) छठे वज्रधर की आज्ञा है,
विना सन्देह (इस) की भावना करो ॥२॥

इस कथन के बाद उसने भी तदनुसार बारह वर्षों तक भावना की, तो उन्हें (गुरु) उपदेश, स्वचित्त की धर्मता और अनुभव इन तीनों की अभिन्न एकरसता की ज्ञानरूपी सिद्धि प्राप्त हो गयी। उस समय से उनका नाम सर्वत्र 'चम्पक' विख्यात हो गया।

अपनी रानी सहित अपरिमित परिवार को उन्होंने धर्मोपदेश दिये, अन्त में उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु चम्पकपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६१. गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त

गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'भिक्षन' का अर्थ है, भिक्षा माँगनेवाला। यह सालिपुत्र देश के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

सालिपुत्र नगर में एक शूद्र जाति के व्यक्ति सारे धन-द्रव्य क्षीण होकर गाँवों और नगरों में भिक्षा माँगकर अपनी जीविका चला रहे थे। एक समय भिक्षा न मिलने से वह बड़ी क्षीणता के साथ एक निर्जन जगह में जा बैठे। उस समय एक डाकिनी (साधारण नारी के रूप में) उनके पास आकर कहने लगी— 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

उसने भी अपना सब सत्य वर्णन कर दिया।

डाकिनी ने कहा—मेरे पास इष्ट प्राप्ति का उपाय है।

(सप्रसन्न) शूद्र—वही आप हमें दें।

डाकिनी—तुम्हारे पास दक्षिणा के लिए क्या है?

शूद्र ने (अपने पास कुछ न देखकर) मुँह में एक ऊपर और एक नीचे के दाँत रखकर शेष सब निकालकर डाकिनी को अर्पितकर दिये।

डाकिनी ने उसके अध्याशय एवं निष्कपट पात्रता देखकर अभिषेक प्रदान किया और प्रज्ञोपाय की युगल दीक्षा दी।

भिक्षनपा ने भी तदनुसार भावना की, तो सात वर्ष में उन्हें सत्य का साक्षात्कार हुआ। वे अनेक अनास्रव गुण प्राप्तकर जीव-उद्धार अर्थ घूमते रहे। उनका नाम 'भिक्षनपा' प्रसिद्ध हो गया। अनेक वर्ष बाद इसी शरीर द्वारा वह खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु भिक्षनपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



६१. गुरु भिखनपा

गुरु भिखनपा हाथ में कमण्डल लिए हुए हैं। उनके सामने एक डाकिनी, जो बिना सँवरे बाल और शान्त स्वभाव की हैं, उपदेश देने की मुद्रा में बैठी हुई हैं। भिखनपा अपने मुँह से अपने दाँत निकालकर उन्हें समर्पित कर रहे हैं। उपदेश सुनने की व्यग्रता के भाव में हैं।



६२. गुरु धिलिपा

गुरु धिलिपा विविध प्रकार के तेलों के पात्र लेकर, तेल बेच रहे हैं। एक पैर चलती मुद्रा में और एक पैर का घुटना जमीन पर रखकर कुछ चञ्चलता दिखा रहे हैं।

६२. गुरु धिलिपा का वृत्तान्त

गुरु धिलिपा का वृत्तान्त- इस प्रकार है— यह सतपुरी के रहनेवाले, जाति के तेली थे।

सतपुरी नामक नगर में एक व्यक्ति तेल बेचकर अपनी जीविका चला रहा था। उसने तेल बेचने का नाटक किया, तो व्यापार बहुत अच्छा हुआ और उसे 'कुबेर' के समान धन-धान्य की प्राप्ति हुई। वे काम-भोगों को भोगते हुए दिन बिता रहे थे। वे चौरासी प्रकार के व्यंजन, बारह प्रकार के खाद्य-पदार्थ, पाँच प्रकार के पेय आदि (जो उस समय इन पदार्थों का सेवन केवल राजा लोग ही किया करते थे) राजा की दृष्टि से बचकर भोग रहे थे।

एक समय 'भहन' नाम के एक पण्डित उनके यहाँ पहुँचे। पण्डित ने उनसे बहुत से सांसारिक धर्मों के दोष और मुक्ति के गुण कहे। व्यापारी ने श्रद्धापूर्वक उनसे धर्मोपदेश की याचना की और पूज्य गुरु के रूप में उन्हें वहीं बैठाया। एक दिन उस पण्डित ने उन्हें तेल निकालने की प्रयोगशाला में देखा तो उसने व्यापारी से कहा— कल्पों से कल्पान्तर तक तेल पेरते रहो, किन्तु मुक्ति नहीं आने-वाली है।

व्यापारी ने उत्तर में कहा—हे गुरुजी! यदि ऐसा है, तो हमें मुक्ति पाने के उपाय बतलायें।

गुरु ने उन्हें अभिषेक दिया और "स्वतः प्रकाशात्कनिमित्त" की दीक्षा इस प्रकार दी। (दोहा)—

स्वकाय रूपी तिल-पिण्ड से, विकल्प रूपी तेल पेटा कर;

चित्त रूपी पात्र में डालें, प्रतीति और शून्यता के अभेद बत्ती से।

संवित्ति रूपी अग्नि जलायें, अविद्या अन्धकार के प्रहाण से,

अनुत्तर मुक्ति के सुख में अनास्रव सुख स्थिर हो जायगा।

उन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ उक्त वचनों के अनुसार भावना की, तो छः वर्षों की अवधि में उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम के युगनद्ध तत्त्व का अवबोध पाकर उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई। फलतः उनके शरीर से चारों ओर प्रकाश फूटने लगा और यह सब लोगों ने देखा। लोगों ने यह घटना राजा को सुनाई। राजा ने भी इसका पता लगाने के लिए एक दूत भेजा, उस दूत ने भी वैसा ही देखा। राजा भी कहने लगे— 'अनास्रव सुख भोगने वाले राजा के समान अन्य कोई नहीं हो सकता।'

इस प्रकार सब लोगों में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी। घिलिपा ने भी उन लोगों के आशा-अध्याशय के अनुसार उपदेश दिया। अन्त में बहुत से शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु घिलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



६३. गुरु कुम्भरिपा

गुरु कुम्भरिपा कुम्भ अथवा कलश आदि मिट्टी के बर्तन बना रहे हैं। कुछ बने हुए बर्तन आस-पास रखे हुए हैं। बहुत प्रसन्न-मुद्रा में बैठे अपनी कृति को योगी की दृष्टि से देख रहे हैं।



६४. गुरु चपरिपा

गुरु चपरिपा मेखली वस्त्र पहने हुए हैं। ये एक वृक्ष के मूल में बैठे हैं। उनके सामने रसायन से भरा एक बड़ा-सा पात्र रखा हुआ है। खुद एक बड़े से वृक्ष की पत्ती लेकर उस रसायन-द्रव्य में डुबोकर लोगों पर छिड़क रहे हैं। सामने एक स्त्री बच्चे को गोद में लिए हाथ जोड़कर खड़ी है। उनसे कुछ ऊँचे स्थान पर बैठे एक देवता गुफा के अन्दर से दिखाई पड़ रहे हैं। ये रासायनिक प्रयोग में लगे हुए हैं।

६३. गुरु कुम्भरिपा का वृत्तान्त

गुरु कुम्भरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'कुम्भरि' का अर्थ है, कुम्भकार या मिट्टी के बर्तन बनानेवाला। ये 'जोमनश्री' नामक प्रदेश के रहनेवाले थे। जाति के कुम्भकार थे। जोमनश्री नामक जनपद में एक कुम्भकार व्यक्ति सदा कुम्भ बनाकर जीविका चला रहा था। एक समय वह अपने काम से दुःखी होकर बैठा था। उस समय एक योगी उसके पास आ पहुँचे। योगी ने भिक्षा माँगी। कुम्भकार ने भी सादर भोजन प्रदान किया और कहा—

हे गुरु! मैंने इस प्रकार के काम को बड़े लगन से किया, पर इससे कोई लाभ नहीं हुआ। इस काम का अन्त कभी नहीं आया, इससे मैं दुःखी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा— हे दायक! तुमने नहीं समझा कि इस संसार में रहनेवाले जीव दुःखी के अलावा सुखी कभी भी नहीं होते। अनादिकाल से अनन्तकाल यावत् मात्र दुःख से अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होता। इससे दुःखी कौन नहीं होगा?

कुम्भकार ने निवेदन किया—हे गुरुजी! आप हमें इस (दुःख) से मुक्ति के उपाय दें।

योगी ने उनको अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्न क्रम की दीक्षा इस प्रकार दी—(दोहा)—

“अविद्या की मिट्टी से,
क्लेश-विकल्पों का पङ्क बनाओ।
तृष्णा-उपादान के चक्र द्वारा षड् योनियों के,
कुम्भ बनाकर ज्ञान अग्नि से जलाया करो।”

ऐसा कहने पर उन्होंने विकल्प-ज्ञापन की (परिचर्या की) दीक्षा का अर्थ समझ लिया। छः महिने की भावना से ही उसकी सांसारिक भ्रांति का मल (आवरण) विशुद्ध

१६२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

हो गया और सिद्धि का लाभ मिला। वे समाहित होकर बैठे, तो कुम्भ-चक्र स्वतः घूमने लगा और जैसा चाहे वेसा कुम्भ बनता गया। इस घटना को देखकर नगर के सभी लोग यह जान गये कि उन्होंने विशेष गुण प्राप्त किये हैं। सब लोगों ने उन्हें 'गुरु कुम्भकार' कहना आरम्भ कर दिया। वही नाम प्रसिद्ध हो गया।

अपने अवदान (दोहे) कहकर अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कुम्भरिषा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६४. गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त

गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह मगध देश के एक विशेष स्थान के रहनेवाले थे। जाति के वे चरग या चर्वाक थे।

मगध देश के किनारे निर्जन स्थान में एक चरग (पशुपालक या शिकारी जाति) परिवार का व्यक्ति बहुत सम्पन्न और धन-धान्य से जीवन बिता रहा था। उसके पास एक हजार भैंस, घोड़े और भेड़ आदि अपार सम्पत्ति थी। एक दिन उसके घर वृद्ध पिता मर गये। तदर्थ बहुत से दान-दक्षिणा के साथ संस्कार किया गया। स्थानीय रिवाज के अनुसार किसी भी व्यक्ति की मृत्यु होती, तो उसके लिए बहुत-से लोग इकट्ठे होकर दान किया करते थे। तदनुसार उस अवसर पर एक समय उस जगह के आस-पास के सभी लोगों को बुलाकर बहुत दिनों तक खाना-पीना आदि देना था।

तब वहाँ एकत्र सभी लोग स्नान के लिए गंगा की ओर चले गये। घर में चौकीदारी के लिए घर की स्वामिनी (पुत्रवधू) को रखा गया। उसके साथ एक तीन साल का बच्चा भी था। वह बैठी थी कि गुरु चर्बरिपा कहीं से वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने गृहिणी से भोजन माँगा। लड़की सीधी-सादी थी, योगी से सही बातें बता दी।

चर्बरिपा ने कहा—यदि मुझे भोजन देने से तुम्हारे पति आदि क्रुद्ध हों (कर तुम्हें कुछ कहें) तो मेरे पास आ जाना, मैं उस पार के वन में आग जलाकर रहूँगा। यदि वे लोग कोप न करें तो मुझे खाना-पीना देना पड़ेगा।

लड़की ने गुरु की बात मान ली और भोजन आदि खिला दिया। योगी अपने स्थान लौट गये और लड़की वहीं आराम से बैठ गई।

स्नान करने वाले लोग क्रमशः वहीं लौटकर आये और 'सास' भी आ गई। उसने देखा कि खाने की सामग्री से कुछ निकाला हुआ था। वह अपनी पुत्रवधू को डाँटने लगी। वधू अपने पुत्र को लेकर उस योगी के पास चली गई। जब वह योगी के पास पहुँची तो चर्बरिपा ने साधु कहकर अपने मंत्र फूँके जल उन पर छिड़क दिये। फलतः दोनों माँ बेटा तत्काल 'स्वयंभू वज्रकाय' बन गये। उन्हें खाद्य आदि किसी की आवश्यकता न रह गई।

जब उसके पति अपने घर पहुँचे तो पत्नी को न देखकर पूछा तो लोगों ने कहा कि वह चली गई; पता नहीं कहाँ गई? सब लोगों से पूछते हुए उसकी खोज में वह क्रमशः योगी के पास पहुँचे। वहाँ पूर्व विवरण कहने लगे। उनको भी (पूर्ववत्) मंत्र जल छिड़का गया, तो वह भी पत्नी, बच्चे की तरह (स्वयंभू वज्रकायवाला) हो गये। तीनों एक ही आसन पर बैठ गये। खोए हुए भैंस के समान उनके बहुत से भाई-बन्धु एक के पीछे एक करके वहाँ आने लगे और इनकी संख्या तीन सौ तक पहुँच गई। सब लोगों को अर्थ की सिद्धि हुई।

लड़की-पुत्र को विशेष गुण इस प्रकार प्राप्त हो गये थे—वीर्य (शुक्र) से 'खेचर-सिद्धि', वज्र से (लिङ्ग से) 'सुवर्ण परिणामी औषधि, मल स्थान से रसायन औषधि, आँख से आकाश-गमन आदि आठ सिद्धियाँ। उनका यश चारों ओर फैलने लगा तो चम्पक के राजा महिल (महिपाल) आदि बहुत से जन-समाज उन्हें देखने आये। देखा, तो राजा के मन में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई। उन्होंने उन तीनों पुत्र सहित दम्पति के लिए एक विहार और अन्य तीन सौ लोगों के लिए एक विहार बनवाये और उनका नाम 'दुमपा' प्रसिद्ध हो गया। वहीं पर लोगों को बैठाये। विहार के अन्दर दुर्बुद्धि लोग नहीं जा सकते थे और ऐसे लोगों को वहाँ के पत्थर की मूर्ति मार-पीट भी किया करते थे। वह स्थान बाद में एक (बहुत बड़ा) सिद्ध पीठ बन गया। वहाँ अभयदत्तश्री के काल में बहुत से योगी विद्यमान थे। वहाँ साधना करें तो बहुत शीघ्र सिद्धि पाई जाती है।

यह लौकिक सिद्ध थे। वे लोग मैत्रेय बुद्ध के आने तक वहीं रहेंगे और तत्पश्चात् जीव कल्याण करेंगे।

गुरु चर्बरिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



६५. योगिनी मणिभद्रा

योगिनी मणिभद्रा सभी प्रकार के आभूषणों से सजी गृहिणी के वेश में है। वे जमीन से उड़कर आकाश मार्ग में हैं। बादलों के बीच से नीचे की ओर देख रही हैं। नीचे जमीन पर पानी का बड़ा-सा घड़ा टूटकर बिखरा हुआ है। यही उनके ज्ञान का प्रमुख निमित्त रहा है।



६६. योगिनी मेखला

योगिनी मेखलीपा पूर्ण योगिनी के वेश में है। सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित, बिना सँवरे बाल, बाहु के अन्दर से त्रिशूल धारण की हुई एक हाथ में नर-कपाल और दूसरे हाथ में अपने मुँह से निकली चमकती तलवार धारण की हुई हैं।

६५. गुरु मणिभद्रापा का वृत्तान्त

गुरु मणिभद्रा अथवा योगिनी भहुरि का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'अगर्च' नामक नगर के एक सेठ की तेरह वर्षीया एक लड़की थी। उसका सवर्ण कुल में विवाह हुआ। पुनः अपने मायके में आई थी कि एक दिन उसके पास गुरु कुकुरिपा ने आकर भोजन माँगा। लड़की ने उनसे कहा—

इतने सुन्दर सुडौल व्यक्ति होते हुए भी आपकी जीविका भिक्षाटन एवं वस्त्र सिले चिथड़े (जो फट-फटकर बिखरा गए हों) क्यों हैं? आप अपने वर्ण की एक साथी लेते, तो अच्छा होता।

(उत्तर के रूप में) योगी ने कहा—(दोहा)

मैं तो संसार से भयभीत होकर,

महासुख संवर मुक्ति की साधना कर रहा हूँ,

वह भी इस पुण्य आश्रय (शरीर) के होते न करे,

तो पश्चात् ऐसा कहाँ मिलेगा।

अतः इस पुण्य—आश्रय मणिरत्न को,

गृहिणी की अशुद्धि में छिपाये तो,

इष्ट प्रयोजन का विनाश नाना प्रकार के दुःखों का उदय होगा,

यही जानकर मैंने गृह साथी का त्याग किया है।

इस कथन से लड़की में बड़ी श्रद्धा आ गयी। उसने उत्तम भोज्य प्रदान किया और कहा—

'मुझे भी मोक्ष प्राप्ति का एक उपाय बतलायें।'

योगी ने कहा—मेरा घर तो श्मशान है। यदि उपदेश चाहती हो, तो वहीं आना।

उस (लड़की) को कोई भी काम समझ में न आता; तो वह रात को भाग कर श्मशान में गई। गुरु ने उस लड़की की पात्रता एवं परिपक्वता देखकर उसे श्रीचक्रसंवर (के मण्डल में) अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी। उसने भी सात दिन तक वहीं भावना की। उसके बाद वह अपने पिता के घर गई; तो लोगों ने बहुत से अपशब्द कहे और उसे मारना प्रारम्भ किया। लड़की ने कहा—तीनों धातुओं में मेरे माँ-बाप न हुए हों, ऐसा कोई जीव नहीं है। जाति-कुल के बड़ा होने पर भी वह संसार के मूल धर्म से अलग नहीं हो सकती। मैं तो गुरु की शरण लेकर मोक्ष की साधना करनेवाली हूँ। तुम लोग जो भी और जैसे भी मारना हो, मारो। मैं इन सबको मार्ग उपाय के रूप में प्रयोग करूँगी। उसके इस कथन से मारनेवाले लोगों को भी कुछ श्रद्धा हो आई। थोड़ी देर के लिए उसे मारना-पीटना छोड़ दिया। लड़की ने भी सभी प्रकार के काम-काज त्यागकर गुरु के उपदेश का अनुसरण कर भावना करते एक साल बिताया, फिर उसके पति आ गये और उसे अपने घर ले गये।

। वहाँ वह सभी लौकिक कार्य समान रूप से करती रही और शरीर व वचन की पक्की और पवित्र रही। बहुत मीठी बातें करती रहती थी। क्रमशः एक पुत्र और पुत्री, दो सन्तानें भी हो गई। वे दोनों भी माँ के समान सुन्दर सुबुद्धि और सदाचारी थे। सब लोग उस कुल-सन्तान की प्रशंसा करते थे।

उस समय तक उनको गुरु से भेंट हुए बारह वर्ष हो गये थे। एक दिन पानी लेने गई थी, लौटते समय लकड़ी के एक खण्ड में पैर फँसकर गिरी और 'घट' टूट गया। वह वहीं बैठी रही, आधा दिन हो गया, लौटकर नहीं आयी। लोग उसको देखने गये, तो वह टूटे हुए 'घट' को बैठे हुए देख रही थी। लोगों ने उसे कुछ कहा, तो उसने किसी की नहीं सुना और उसी टूटे घट अवशेष को देखती रही। सबने कहा कि यह किसी भूत-प्रेत से ग्रस्त है क्या?

ऐसी दशा में जब सूर्य अस्त होने को आ गया तो कहा। (दोहा)—

अनादि काल से जीव शरीर का घट टूट जाने पर,
घर लौटकर कहाँ आते, मेरा घट आज टूट गया।

अब मैं सांसारिक घर में, न लौटकर महासुख के घर जाती हूँ,
अहो गुरु अद्भुत है, इष्ट सुख उन्हीं पर निर्भर है।

यह कहकर वह आकाश में ऊपर उड़ गई। इक्कीस दिन तक 'अगर्च' नगर
के लोगों को उपदेश देकर अन्त में (उसी शरीर द्वारा) वह खेचर भूमि चली गई ॥

गुरु मणिभद्रापा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६६. गुरु मेखलापा का वृत्तान्त

गुरु मेखलापा का वृत्तान्त इस प्रकार है—यह देवीकोट की रहने वाली थी। देवीकोट (पूर्वी भारत) के एक नगर में एक गृहस्वामी की दो पुत्रियाँ थीं। एक नौ-वाहक के घर में दो पुत्र थे, उनके साथ उनका सम्बन्ध बना। उन दोनों लड़कियों ने कुछ भी अपकर्म नहीं किये, पर लोग उन दोनों की निन्दा करने लगे। इस घटना से ऊब कर छोटी बहन कहने लगी कि बिना कारण निन्दा सुनते रहने की अपेक्षा अन्यत्र चला जाना ही अच्छा होगा। बड़ी बहन कहने लगी कि नहीं, जहाँ भी जायँ, अभागे लोगों को इससे कोई अन्तर नहीं आयेगा। इससे यहीं रहना अच्छा होगा।

उस समय गुरु कण्हापा वहाँ आ पहुँचे। वे सात सौ योगी और योगिनियों के परिवार के साथ थे। बिना किसी के द्वारा पकड़े छत्र उनके सिर के ऊपर घूम रहा था। बिना बजाये डमरू आदि स्वतः शब्दायमान हो रहे थे। इस प्रकार वे अनेक (चमत्कारी) गुणों से सम्पन्न थे। दोनों लड़कियों ने आपस में परामर्श किया कि नगर के लोग और स्वयं उनके पति भी उन दोनों की कुछ निन्दा करते रहते हैं। अतः वे भी उन गुरु से कुछ उपदेश दीक्षा लेकर साधना क्यों न करें?

यह सोचकर दोनों बहिनें गुरु के पास गईं। वहाँ जाकर उन्होंने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया और दीक्षा की प्रार्थना की।

कण्हापा ने अनुमति दे दी और अभिषेक प्रदान करके दर्शन, भावना, चर्या, फल और 'युगनद्ध वज्रवाराही' की दीक्षा प्रदान की। उन दोनों ने भी बड़े उद्यम के साथ उसकी साधना की। बारह वर्ष में सिद्धि प्राप्त हो गई। उन्होंने अपने गुरु के पास जाकर प्रणाम, अभिवादन, प्रदक्षिणा की तथा कृतज्ञता ज्ञापित की।

तब गुरु ने कहा—मुझे पहचान में नहीं आया कि तुम दोनों कौन हो? इस पर दोनों ने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया।

योगी ने कहा—यदि ऐसा है, तो मुझे दक्षिणा देनी होगी।

दोनों लड़की—गुरुजी जो चाहें, वही दक्षिणा होगी।

गुरु—तुम दोनों मुझे अपने सिर दो।

लड़कियाँ—यदि गुरुजी चाहते हैं तो अवश्य सिर देने को हम तैयार हैं। उन दोनों ने अपने-अपने मुख से ज्ञानरूपी तलवारें बड़ी तेज धारवाली निकालीं। परम अंग सिर को काटकर उसे गुरु के चरणों में अर्पित किया और (निम्न दोहा) कहा—

हम दोनों ने गुरु की कृपा से ही—उत्पत्ति-सम्पन्न युगल द्वारा

संसार निर्वाण के प्रपञ्च को काटा।

युगनद्ध दृष्टि एवं चर्या के द्वारा हेयोपादेयता के प्रपञ्च का छेदन किया,

धर्मता एवं संवित्ति की युगलता द्वारा स्व-पर के प्रपञ्च को हमने तोड़ा।

निष्प्रपञ्च के संकेत के रूप में यह (सिर) आपके चरणों में समर्पित करते हैं।

इस प्रकार सिर को दक्षिणा के रूप में रखकर सहजानन्द का नृत्य करने लगी, तो कण्हपा ने कहा—(दोहा)

अहो! महायोगिनियाँ,

परमगुणों की प्राप्ति शुभ है।

(केवल) अपनी ही सुख-शान्ति (की चाह बहुत) तुच्छ है,

जगतार्थ (उद्यम करते) रहना ॥

इस कथन के साथ उन दोनों के सिर पुनः पूर्ववत् हो गये। इस घटना से सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। वे सर्वत्र 'छिन्नाबन्धु' नाम से प्रसिद्ध हुई।

वे कण्हपा की सेवा करती और 'मेहामुद्रा परमसिद्धि' का लाभ कर अनेक वर्षों तक जगतार्थ करती हुई अवदान उक्तियाँ कहकर खेचर भूमि चली गई।

गुरु मेखलीपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६७. गुरु कनखला का वृत्तान्त

गुरु कनखला (कनखल) का वृत्तान्त इस प्रकार है— कनखल का अर्थ- 'कणक' वाला^१ प्रदेश है। यह सिद्ध कण्हपा अर्थात् कृष्णाचार्य द्वारा अनुगृहीत उपर्युक्त दो कन्या-बन्धु जिनको सिरछिन्ना-बन्धु कहा जाता है, वही हैं। उन दोनों में से यह छोटी बहिन है। इनकी विमुक्ति का इतिवृत्त ऊपर कहे विवरण से ज्ञात हो जाता है। इनका नाम सर्वत्र कनखला ही प्रसिद्ध है।

गुरु कनखला (पा) का वृत्तान्त समाप्त ॥

१. यहाँ "कनखला" अर्थ कणकवाला प्रदेश है, जो उल्लेख है। यह कुछ किंवदन्ती-सा लगता है। यह नाम "कनखला" जो है, वह "कनक मेखला" है। इसका अपभ्रंश "कनखला" हो गया, लगता है।



६७. योगिनी कनखला

योगिनी कनखला (कनकखला) का आकार प्रकार मेखली के सदृश है। एक हाथ में खुँखरी (कटार) और दूसरे हाथ में सजीव नारी का मुंडा हुआ सिर जो वस्तुतः उनका अपना सिर है, ली हुई है। ये आकाश प्रदेश में बादलों के बीच नृत्य करते हुए अपने गुरु की पूजा कर रही हैं।



६८. गुरु कल-कलपा

गुरु कल-कलपा श्मशान में बंटे हुए हैं। ये गहरे नील रंग के हैं। सामने मिट्टी की मञ्जूषा जिसके अन्दर कुछ विशेष सामान रखे जाते हैं, भावनासूत्र से दोनों जँघा बाँधे हुए हैं।

६८. गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त

गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— किलि का अर्थ है— चिल्लाने वाला। ये 'भिरिलिङ्ग' नामक जगह के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

भिरिलिङ्ग नगर का शूद्र जाति का एक व्यक्ति अपने पूर्व कर्मवश बहुत जोर से चिल्लानेवाला हो गया। नगर के लोग इससे तंग हो गये और उसको नगर से बाहर कर दिया। इससे वह बड़े दुःखी हो गये और एक श्मशान में जाकर बड़े कष्ट के साथ बैठे थे। वहाँ एक योगी आ पहुँचे। उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा— तुम इस श्मशान में किसलिए बैठे हो?

उस व्यक्ति ने अपना सभी पूर्व वृत्तान्त कह सुनाया।

योगी ने कहा—तुमको इस तरह के व्यवहार से बुरा न लगे और संसार के दुःखों से मुक्त होने का उपाय क्या, तुम नहीं चाहोगे?

व्यक्ति—यदि ऐसा हो, तो अवश्य चाहेंगे।

योगी ने उन्हें प्रणाम-पूजा आदि की व्यवस्था दी और उन्हें गुह्य-समाज मण्डल में अभिषेक प्रदान किया। 'प्रतीयभाण स्वतः विमुक्ति' की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

शब्द मात्रता में स्व-पर के सभी शब्द अभिन्न-

एक ही स्वभाव की भावना करो,

तत्पश्चात् स्वशब्द आकाश धातु के मध्य से,

मेघ गर्जन समान गरजते हुए पुष्प वृष्टि होती भावना करो।

उस (व्यक्ति) ने भी बड़े उद्यम के साथ (गुरु के वचनानुसार) वैसी ही भावना की। फलतः पर व्यक्ति के क्रोध आदि शब्द स्वतः अपने शब्द में खो गये। अपने शब्द भी पुष्टवृष्टि के रूप में समाप्त हो गये। पुष्प की कल्पना आकाश के रस में

१७२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

(आकाश धातु के रूप में) खो गई। समस्त इष्ट-दर्शन महामुद्रा के रूप में प्रतीत होने लगे और दृष्टिप्रतीति स्वतः विमुक्त होकर परमसिद्धि का लाभ हुआ। सर्वत्र उनका नाम गुरु चिल्लानेवाले (किल-किलापा) प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने बहुत से जगत् कल्याण कार्य किये। बाद में अपने अवदान भी कहे। अन्त में तीन सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु किलि-किलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

६९. गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त

गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘कन्तलि’ का अर्थ है सिलाई करने-वाला। मणिधर नामक नगर के एक शूद्र जाति के व्यक्ति धन-सम्पत्ति से अत्यन्त दरिद्र होकर दर्जी का काम करते हुए घूमता रहा। एक समय सिलाई की सुई उसके हाथ में चुभ गई। बहुत-सा खून गिरा और उसकी पीड़ा से बहुत पीड़ित हो गया। इससे असह्य होकर घर के एक किनारे बैठा छटपटा रहा था। उसी समय ‘वैताली’ नामक डाकिनी एक स्त्री का रूप धारण करके उसके पास आई और उससे पूछा—तुम क्या कर रहे हो?

उस (दर्जी) ने—अपने सभी पूर्व वृत्तान्त कह दिये।

डाकिनी ने कहा—इससे भी अधिक दुःख पूर्व जन्मों में भोग चुके हो, अब भी, अगले जन्म में भी, पुनः-पुनः इससे कई अधिक दुःख भोगना पड़ेगा। क्योंकि (तुम) स्वयं दुःख के स्वभाव से अतीत नहीं हो।

उसने कहा—इन दुःखों से मुक्ति पाने का कोई उपाय आप हमें दें।

डाकिनी—उसकी तुम साधना कर सकोगे?

उस व्यक्ति ने कहा—क्यों नहीं, अवश्य कर सकूँगा।

डाकिनी ने उन्हें—हेवज्र के मण्डल में अभिषेक दिया और अप्रमेय (योग) गुरुयोग, उत्पत्तिक्रम योग आदि की दीक्षा दी। परन्तु उनकी (पूर्व संस्कार के कारण) कल्पना सिलाई की ओर ही जाती रही।

इसके बारे में गुरुजी को कहा, तो गुरुजी ने पुनः “विकल्प को मार्ग के रूप में उपयोग” करानेवाला उपदेश इस प्रकार दिया—

(दोहा)—

शून्य आकाश चिथड़े को, स्मृति एवं ज्ञान की,

सुई-सुतली द्वारा।

वस्त्र सिलाते हुए करुणा रूपी सुई को,

त्रिभाविक जीव में व्याप्त रूप में भावना करो ॥

ऐसा कहने पर, उसने भी वैसी ही भावना की। फलतः समस्त धर्मों की शून्यता का ज्ञान प्राप्त हो गया और इस तरह के ज्ञान से रहित जीव के प्रति उन्हें अपार करुणा उत्पन्न हुई। परिणाम स्वरूप उन्हें सर्वधर्म शून्यता एवं जीव मात्र के प्रति करुणा इन दोनों की युगल स्थिति— 'महामुद्रा परमसिद्धि' की प्राप्ति हुई। सर्वत्र उनका नाम कन्तलिपा प्रसिद्ध हो गया। उन्होंने अनेक जगत् कल्याण करने के बाद अपने अवदान भी कहे और अन्त में उसी शरीर द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कन्तलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



६९. गुरु कन्तलिपा

गुरु कन्तलिपा हलके वस्त्र पहने हुए और जटा-शिखा बाँधे हैं। वे कपड़ा सिलने की मुद्रा में हैं। उनके ठीक सामने एक डाकिनी उन्हें उपदेश दे रही है।



७०. गुरु धगुलिपा

धगुलिपा साधारण धोती, कुछ कण्ठाभूषण पहने हुए और सिर के बाल सँवारे हुए हैं। उनका प्रमुख व्यवसाय पहले तिनके से रस्सी बनाना था। अतः तिनके लेकर रस्सी बनाने की मुद्रा में बैठे हैं।

७०. गुरु बहुलिपा का वृत्तान्त

गुरु बहुलिपा (धगुलिपा, धहुरिपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये धोकर (थोकर) देश के रहनेवाले और जाति के शूद्र थे।

धोकर (थोकर) देश में शूद्र जाति का एक व्यक्ति घास की रस्सी बनाकर जीविका के लिए बेचता था। एक समय बहुत-सी रस्सियाँ बनाने से उसके हाथ में बहुत उग्र छाले पड़ गये। उससे बहुत पीड़ा होने लगी। वह रोते हुए घर के एक किनारे जा बैठा। एक योगी ने उसके पास आकर पूछा—तुम्हारा क्या खराब हो गया?

उन्होंने अपना वृत्तान्त सच-सच बता दिया।

योगी ने कहा— तुम इस समय इतने मात्र दुःख से असह्य हो जाते हो? परलोक में दुर्गतिमय योनि में पैदा होओगे तो फिर कैसे क्या करोगे?

उन्होंने कहा—हे गुरुजी! हमें इस तरह के दुःख से मुक्ति पाने का उपाय दें।

योगी ने उन्हें प्रथमतः 'प्रभाव उत्क्रान्ति' का अभिषेक प्रदान किया, तत्पश्चात् विकल्पों को मार्ग के रूप में उपयोग कराने की दीक्षा इस प्रकार दी—(दोहा)—

“संस्कारगत प्रतीतियों का कुश,

और अन्तरिक्ष में स्थित परिकल्पना दोनों के।

आदितः असिद्ध स्वभाव में,

(यथा) शक्ति निरन्तर भावना करो।”

ऐसा करने पर, उन्होंने बड़े उद्यम के साथ बारह वर्ष तक साधना की। फलतः परिकल्पित की निराश्रयता, परतन्त्र का प्रतीत्यसमुत्पन्नत्व और परिनिष्पन्न की धर्मता के अभिन्न स्वरूप का साक्षात् ज्ञान प्राप्त हो गया। परमसिद्धि का लाभ कर सर्वत्र उनका नाम गुरु धगुलिपा (धहुलिपा) प्रसिद्ध हुआ। सात सौ वर्ष तक भारत के कोने-कोने में घूमते जगत् कल्याण का कार्य सम्पादन किये, अन्त में स्व-अवदान कहकर पाँच सौ शिष्य परिवार के साथ खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु धगुलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७१. गुरु ओडिलिपा का वृत्तान्त

गुरु ओडिलिपा (धलिपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है—ओडलि या उडलि-उडलिपा, का अर्थ 'उड़नेवाला' है। ये देवीकोट नगर के रहने वाले थे और जाति के वैश्य थे।

देवीकोट नामक नगर में वैश्य जाति के एक व्यक्ति पूर्वदान (पुण्य) के परिणाम स्वरूप धन^१-सम्पत्ति से परिपूर्ण थे। अपने महल के अन्दर बैठे पाँच प्रकार की भोग्य-सामग्री (पञ्च काम-गुणों) का भोग कर रहे थे।

एक समय आकाश में पाँच रंग के मेघ छाये हुए थे और मेघों में नाना प्रकार के जीव (पशु-पक्षियों) के आकार दिखलाई पड़े रहे थे। वे उन्हें देखते रहे, तो उनकी दृष्टि के सामने कुछ 'हंस' (पक्षी) उड़ते जा रहे थे। उनके मन में यह विचार आया कि मैं भी इन (हंस पक्षी) की तरह उड़ सकूँ, तो कितना अच्छा हो। यह सोचते अन्य कोई काम उनको नहीं सूझता था।

उसी समय उनके यहाँ गुरु कर्णरिपा आ पहुँचे। उन्होंने उससे भोजन के लिए भिक्षा माँगी।

उस व्यक्ति ने कहा—हे योगी! आपको भोजन अवश्य दूँगा। यदि आपके पास आकाश में उड़ने का कोई उपाय हो, तो मुझे अवश्य ही प्रदान करें। यह कहकर उन्होंने योगी की सेवा में उत्तम कोटि के पेय-भोज्य आदि की व्यवस्था की और प्रणाम-पूर्वक दक्षिणा भी चढ़ाई। फिर वही प्रार्थना की।

कर्णरिपा ने कहा—यह तो मेरे पास है, कहकर 'चतुरवज्रासन' मण्डल में उन्हें अभिषेक और दीक्षा दी तथा निम्न बातें कहीं—

चौबीस महासिद्ध पीठों में जाकर (वहाँ की पीठ अधिष्ठातृ) डाकिनी मन्त्र का जप दस-दस हजार करो और वहीं से एक-एक औषधि भी लेते आना। यह कहकर उसे भेज दिया।

१. पाँच कामगुणों।



७१. गुरु उडलिपा

गुरु उडलिपा सिर पर पगड़ी बाँधे हुए और शरीर पर चोंगा पहने हैं। रत्ननिर्मित हलके आभूषण पहने, सँवरी दाढ़ी और आकाश की तरफ नजर गड़ाये हुए हैं। सामने एक योगी वृक्ष की कुछ पत्ती लिए उडलिपा से कुछ कहने जा रहे हैं।



७२. गुरु कपालिपा

गुरु कपालिपा काले रंग के हैं। श्मशान में पड़े एक स्त्री के शव का कपाल निकालकर एक हाथ में लिए और दूसरा हाथ प्रवचन-मुद्रा में हैं। वे सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित हैं।

उस व्यक्ति ने पूछा—यदि वे सब पूर्ण हो जायँ, तो क्या-क्या करना होगा?

योगी ने उत्तर दिया—उन सब औषधियों को प्रमथतः एक ताँबे के पात्र में डालो। उसके बाद चाँदी के पात्र में और तत्पश्चात् सोने के पात्र में डाल दो। उसके बाद तुम आकाश में उड़कर जा सकोगे। तदनुसार साधना करने पर उन्होंने बारह वर्ष में सब शर्ते पूर्ण कर लीं और सभी औषधि पूर्ण हो गई।

उसने गुरु के निर्देशानुसार औषधियों को ताम्र आदि के पात्र में डाला, तो वे आकाश में उड़ सके। उनका नाम भी सर्वत्र गुरु ओडिलिपा प्रसिद्ध हो गया।

अन्त में स्व-अवदान कहकर इसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु ओडिलिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७२. गुरु कपालपा का वृत्तान्त

गुरु कपालपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘कपालपा’ का अर्थ—कपाल धारण करनेवाला है। ये राजपुर जनपद के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

राजपुर नगर में एक शूद्र जाति के व्यक्ति, मजदूरी से अपनी जीविका चला रहे थे। उनके पाँच पुत्र थे। पूर्व कर्मवश एक दिन उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। उसकी लाश श्मशान पर पहुँचाने गये तो वह लाश को छोड़ने में असमर्थ होकर वहीं रोते रहे। क्रमशः उनके सभी पुत्र भी मर गये, लोगों ने उन्हें बुलाया, तो पुत्रों की लाश भी श्मशान में पहुँचाये और सब लाश वहीं रखकर उनके पास वे रोते रहे। तब महायोगी कृष्णाचार्य वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उसने उत्तर दिया—हे योगी! मेरा अपनी गृहस्वामिनी एवं सभी पुत्रों से सदा के लिए वियोग हो गया, शोक में सन्तप्त होकर यहीं बैठा हूँ। इन लाशों को त्यागने में असमर्थ होकर यहीं रह रहा हूँ।

आचार्य कृष्णाचार्य ने कहा—त्रिधातु के सभी प्राणी इसी स्वभाव के ही हैं। यह तुम्हारे अकेले का नहीं है। इसके लिए शोक नहीं करना है। यदि किया भी जाय, तो इससे कोई लाभ नहीं होनेवाला है। अतः धर्म ग्रहण करो। तुम संसार के जन्म-मरण आदि अन्य दुःखों से नहीं डरते हो?

उसने उत्तर दिया— जन्म-मरण से डर रहा हूँ, यदि इससे मुक्त होने का उपाय हो तो मुझे अवश्य प्रदान करें।

आचार्य ने उन्हें हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और उत्पत्ति और सम्पन्नक्रम की दीक्षा देकर चारिका में लगाया। वह इस प्रकार है—

पुत्र की हड्डियों के छः प्रकार के आभूषण बनवाये और उसे पहनवाये। पत्नी का सिर कटवाकर (कपाल निकलवाये और उसी को) खाने का पात्र बनवाये। साथ ही कपाल को ‘उत्पत्तिक्रम’ के रूप में तथा कपाल के अन्दर जो खालीपन है, उसको ‘सम्पन्नक्रम’ के रूप में सङ्केतित किया।

वह (व्यक्ति) भी चारिका के साथ भावना करते रहे। नौ वर्ष में ही (दृष्ट-दर्शन एवं चर्या) युगल की अभिन्नता का ज्ञान होकर उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई।

तत्पश्चात् उन्होंने अपने विनेय लोगों से कहा—

(दोहा)—

मैं तो योगी कपालिका हूँ, सभी धर्मों का स्वभाव मैं,

कपाल के समान जानता हूँ, तत् बलेन प्राप्त चर्या में स्थित हूँ।

यह कहकर उन्होंने आकाश में स्थित होकर नृत्य किया। लोगों में बड़ी श्रद्धा हुई। सर्वत्र उनका नाम गुरु कपालिपा प्रसिद्ध हो गया। पाँच सौ वर्षों तक जगत् का अर्थ साधने के बाद अपना अवदान भी उन्होंने कहा। अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कपालिपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७३. गुरु किरपलपा का वृत्तान्त

गुरु किरपलपा (किरपालपा?) का वृत्तान्त इस प्रकार है— किरपालपा या किरपल का अर्थ है 'नाना-मन्त्र'। ये जाति के क्षत्रिय थे और ग्रहर जनपद के रहनेवाले थे।

'ग्रहर' नामक जनपद के एक क्षत्रिय राजा विस्तृत राज्य का उपभोग कर रहे थे और वे कुबेर की तरह धन-धान्य से सम्पन्न थे। परन्तु वे उससे तृप्त नहीं हो पाये। वह अन्यत्र स्थित राजाओं के राज्यों को भी छीन-छीन कर भोगा करते थे। इस सिलसिले में एक राज्य पर उन्होंने एक बार सैनिक आक्रमण किया। वहाँ स्थित सभी पुरुष जो भाग निकलने में समर्थ थे, सब भाग गये। स्त्री आदि जो भाग नहीं सकीं, रोती-पीटती बेहोश हो गईं। ऐसे अनेक प्रकार के दृश्य उस राजा ने स्वयं देखे। इस सम्बन्ध में राजा ने अपने एक मन्त्री से पूछा। मन्त्री ने भी सभी वृत्तान्त सही-सही बतलाया। इस घटना से वह राजा बड़े दुःखी हुए और कहने लगे कि यह तो बड़ी दयनीय स्थिति है। इन लोगों के पति, पिता आदि सबको बुलाओ; अपने-अपने राज्य उन्हें सौंप दो। ऐसी आज्ञा देने पर मन्त्री ने भी वैसा ही किया। राजा-मन्त्री सब पुनः अपनी जगह पर लौट गये और वहाँ दान के लिए बहुत बड़ी घण्टी बजाई। सब लोगों को अपरिमित दान देकर वे सोचने लगे कि अब मुझे कुछ धर्म (विहित साधना) करना चाहिए। उसी समय एक योगी उनके यहाँ आ पहुँचे और भोजन की याचना की। उसे (राजा ने) उत्तम भोज्य प्रदान किया। उस (योगी) ने भी बदले में चार अप्रमाण आदि धर्म का उपदेश दिया, तो राजा ने कहा— नहीं हमें इसी जन्म में ही बुद्धत्व प्राप्त हो, ऐसे धर्म दो। योगी ने उन्हें श्रीचक्रसंवर (के मण्डल) में अभिषेक दिया और उत्पत्तिक्रम एवं सम्पन्नक्रम की भावना करने के लिए कहा तो पूर्व संस्कार के वशीभूत होकर राज्य एवं युद्धादि के विकल्प से उनके सारे मार्ग अवरुद्ध हो गये।

इस वृत्तान्त को उसने गुरु से कहा उन्होंने गुरुजी ने भी स्वतः विकल्प-मुक्ति की दीक्षा इस प्रकार दी—



७३. गुरु किरपालपा

गुरु किरपालपा सुन्दर रूप के हैं। पर कुछ क्रोध के भाव चेहरे पर उभरे हुए हैं। रत्ननिर्मित चोटी एवं पञ्चशिखा वाले मुकुट, उसके नीचे की ओर से वीरशिरोबन्धन, जिसके दोनों छोर बाल पर बँधे सोने के जंजीर (रिंग) के अन्दर से निकलकर नीचे लटके हुए हैं। भावनासूत्र धारण किये हुए और हाथ में तलवार एवं ढाल लिये गद्दी पर बैठे हैं। सामने गुह्य-द्रव्यों का पात्र मञ्जुषा रखा हुआ है।



७४. गुरु सागरपा

गुरु सागरपा गोरे रंग के और भिक्षु वेश में हैं। वे समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। उनके सामने आर्य अवलोकेश्वर खड़े होकर उन्हें कुछ कह रहे हैं। वे उन्हें वरदान देने की मुद्रा में हैं।

(दोहा) —

तीनों धातुओं के सभी प्राणी (जगत्),
 वीर सेनाओं से व्याप्त समझो (=भावना करो)।
 अशेष आकाश धातु अपने ही चित्त से,
 निकले अपरिमित वीरों (से व्याप्त समझो) ॥ १ ॥
 दोनों (तरह के वीर) अभिन्न होकर (एक साथ मिलकर) सभी
 शत्रुओं का प्रहाण करो,
 स्वयं महाराजा हो।
 राज्य आदि सुख सम्पन्न होकर,
 भवाग्र में (पहुँचा हो, ऐसी) भावना करो ॥ २ ॥

ऐसा कहने पर उसने भी तदनुसार बारह वर्षों तक भावना की और अन्त में दर्शन (तत्त्व) का ज्ञान होकर सिद्धि लाभ किया। तब सभी राजमहल प्रकाश से भर गये, तो रानी आदि (राजमहल के) लोगों को पता चल गया कि इनको सिद्धि प्राप्त हो गई। रानी आदि ने उनकी पूजा की। उन्होंने कहा—

(दोहा) —

“चार अप्रमाणों के द्वारा सत्त्वों के प्रति,
 आसक्त होकर काम भोगें।
 वीर-महाद्वेष के द्वारा,
 अशेष अरियों का विनाश करें ॥ ३ ॥”

वह गुरु 'किरपल' नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। उन्होंने अपने अवदान भी कहे और सात सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना किये। अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु किरपलपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७४. गुरु सागरपा का वृत्तान्त

गुरु सागरपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— काँची नगर में इन्द्रभूति नामक एक राजा थे। वह चौदह लाख के नगरादि पर राज करते थे। पर उनकी कोई सन्तान नहीं थी। वे लौकिक एवं अलौकिक सभी देवी-देवताओं से सन्तान के लिए प्रार्थना किया करते थे। एक समय उनकी रानी गर्भवती हो गई। रानी का सहज चिन्तन भी कुछ कुशल की ओर होने लगा। रानी को छः मास के बाद (एक दिन) ऐसा स्वप्न दिखाई दिया कि उनके दोनों स्कन्धों से सूर्य-चन्द्र उदित हो रहे हैं। इस स्वप्न वृत्तान्त को उन्होंने राजा से कह सुनाया। राजा ने कहा कि मैं क्या जानता हूँ? पुरोहित पण्डित एवं ब्राह्मणों से पूछूँगा। यह कहकर उन्होंने पुरोहितों एवं ब्राह्मणों से भोजन, दक्षिणा आदि देकर उक्त स्वप्न के विषय में पूछा। लोगों के द्वारा परीक्षण करने पर देखा गया कि यह धर्म से राज्य-ग्रहण करनेवाले एक बोधिसत्त्व राजा के होने के ही लक्षण थे। पर इन बातों को लौकिक जन कुछ पसन्द नहीं करते; इसलिए उन लोगों ने (पुरोहित आदि लोगों ने) राजादि को प्रसन्न रखने के लिए कहा कि यह सभी लौकिक सम्पदा के आधार स्रोताकर एक राजकुमार के जन्म का लक्षण है। इस कथन से राजा आदि सब लोग बड़े प्रसन्न हुए।

तत्पश्चात् नौ मास पूरे होकर दसवें मास में पुत्र-जन्म का समय आ गया। तब कर्म एवं पुण्य के बल से सिद्ध एक समीपवर्ती झील के अन्दर बहुत बड़ा कमल निकल आया और उसी के अन्दर आधी रात को एक पुत्र का जन्म हुआ। उस समय उस प्रदेश में इष्ट वस्तुओं की वृष्टि हुई। इस घटना से वहाँ के सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। लोग सन्देह में पड़ गये कि यह किसकी शक्ति थी। आधे दिन के बाद लोगों को पता चला कि ये सब उस नवजात बालक की शक्ति थी। तब उनका नाम भी सरोजकुमार रखा गया। उस बालक के पुण्य-बल पर वहाँ की जनता उत्तम काम गुणों का भोग, भोग ही रही थी, फिर रानी से दूसरे और एक बालक का जन्म हुआ। इस प्रकार वे दो भाई हो गये।

जब राजा का स्वर्गवास हुआ, राज्य बड़े भाई को दिया गया। पर उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया तथा उसे छोटे भाई को सौंपकर वे भिक्षु बन गये और वे वहाँ से श्रीधान (कोष) चले गये। जाते समय आर्य लोकेश्वर ने एक भिक्षु का रूप धारण किया। मार्ग में उनसे भेंट हुई, सरोज ने उन (भिक्षु) को नहीं पहचाना। उसने भिक्षु सागर (सरोज) से अपना वृत्तान्त पूछा। भिक्षु सरोज ने अपना वृत्तान्त सही बतला दिया।

उस (निर्मित भिक्षु) ने पूछा कि आप सम्भोगकाय से मिलना चाहते हैं?

(सरोज) भिक्षु ने कहा—चाहता वही हूँ, पर मेरे पास कोई उपाय नहीं है।

उस (निर्मित) भिक्षु ने कहा—तुम मुझे गुरु के रूप में मानो और भक्ति पूर्वक चाहो, तो वह उपाय मिल सकता है। उस (भिक्षु सरोज) ने वहीं प्रणाम-अभिवादन पूर्व की प्रार्थना की। निर्मित भिक्षु ने हेवज्र के मण्डल को साक्षात् दिखलाकर अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी। आर्य (लोकेश्वर के निर्मित भिक्षु) वहीं अन्तरधान हो गये। वह (सरोज) भिक्षु 'श्रीधान' चले गये। वहाँ वे साधना करते रहे। उस समय वहाँ एक दिन योगी जैसा एक आदमी आया और 'सरोज' से पूछा कि आप यहाँ क्या कर रहे हैं? सरोज ने अपना वृत्तान्त बतला दिया। उस आदमी ने पुनः कहा—यदि ऐसा है तो आपके सभी लाभ-सत्कार सेवा मैं कर दूँगा, परन्तु सिद्धि प्राप्ति के बाद हमें दीक्षा देनी होगी। सरोज ने उसे स्वीकार किया और वे एक खाली गुफा में बैठ गये।

उस आदमी की सेवा के साथ बारह वर्षों तक वे (सरोज) उसी गुफा में साधना करते रहे। उस अवधि में वहाँ के प्रदेश में अकाल पड़ा। बहुत लोग मरे। उस आदमी ने यह सोचकर कि यदि यह वृत्तान्त गुरुजी को सुनायें, तो उन्हें विघ्न पड़ेगा, इस वृत्तान्त को छिपाकर वह उनकी सेवा करता रहा। वह स्वयं गुरुजी के खाए हुए बासी छोड़ा खाना खाकर जीवन चलाता रहा। एक दिन उसे कहीं से भी खाना नहीं मिल पाया। वह एक राजा के महल में चला गया। वहाँ उसको भिक्षापात्र भर भात मिला। उसी को लेकर वह बिना खाये-पीये गुरुजी की गुफा में पहुँचा। वह कमजोरी की वजह से वात रोग से ग्रस्त होकर वहीं गिर पड़ा। भात भूमि पर बिखर गया। उसे देखकर गुरुजी ने कहा—क्या तुमने मदिरा तो नहीं पी ली?

उसने उत्तर दिया— मदिरा कहाँ से मिलती, भूख से कमजोर होकर गिर रहा हूँ।

गुरु—भोजन क्यों नहीं मिलता?

सेवक—गुरुजी को साधना में विघ्न होने के डर से नहीं कह सका। यहाँ बारह वर्ष तक बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। बहुत से प्राणी मर भी गये और बहुत से लोग अब भी भूख से दुःखी और पीड़ित हैं।

आचार्य सरोज—ऐसा था तो उस समय तुमने मुझे क्यों नहीं कहा। ऐसा कोई नियम है? जबकि अकाल रोकने का उपाय मेरे पास था। अब उठो। यह कहकर भूमि पर बिखरा हुआ भात सब उठाया और उन्होंने एक नदी के पास (तट) जाकर, उस भात को बलि के रूप में चढ़ाया। आठ नाग राजाओं को मन्त्र, मुद्रा और समाधि के द्वारा प्रभावित किया। वे लोग (नाग लोग) बड़े भयभीत होकर मस्तिष्क निकल जाने के डर से आचार्य के पास आकर कहने लगे—क्या काम करना है?

आचार्य ने आज्ञा दी—जम्बूद्वीप में अवर्षण के कारण बहुत से प्राणी मर गये, यह तुम लोगों का अपराध है। अब तुम लोग यहाँ के जीवित लोगों के लिए प्रथम दिन खाद्य-वस्तुओं की वर्षा कराओ। उसी प्रकार दूसरे दिन अन्न की वर्षा और तीसरे दिन वस्त्र-शयन (बिस्तर) आदि की वर्षा कराओ। उसके बाद तीन दिन तक रत्न (आदि) की वर्षा करानी होगी। यह सब हो जाने के बाद जल-वृष्टि कराओ।

नाग लोगों ने भी आज्ञा का पालन किया। सभी (तत्कालीन दुःखी) प्राणी दुःख से मुक्त हो गये। इस घटना का सुयश चारों ओर फैल गया। यह आचार्य सरोज की शक्ति है, यह सब लोगों की चर्चा का विषय हो गया। सभी लोगों में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई।

उसके बाद आचार्य ने अपने सेवक, जिसका नाम 'राम' था और बारह वर्षों तक जिसने उनकी सेवा की थी, को हेवज्र के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया

और हेवन्न की उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी। तत्काल उन्हें लौकिक सिद्धि प्राप्त हुई। उसके बाद दीक्षा देकर उसको यह आज्ञा दी—बिना जगत् कल्याणार्थ किये तुम खेचर भूमि मत जाओ। अब तुम (दक्षिण) श्रीपर्वत जाकर इस प्रकार (उक्त दीक्षा के अनुसार) साधना करो। तुम्हें (परम) सिद्धि का लाभ हो जायगा। यह कहकर गुरु खेचर भूमि चले गये।

‘राम’ ने श्रीपर्वत पर जाकर तत्समीप एक राजकुमारी को वश में किया। दोनों ने वहाँ साधना करते हुए विहार आदि बनवाये और अन्त में ये दोनों भी खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु सागरपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७५. गुरु सर्वभक्ष का वृत्तान्त

गुरु सर्वभक्ष का वृत्तान्त इस प्रकार है—सर्वभक्ष का अर्थ सब कुछ खानेवाला है। ये 'अभीर' नामक नगर के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

अभीर नामक नगर में महाराज हरिश्चन्द्र का राज्य था। एक शूद्र जाति के व्यक्ति का पेट बहुत बड़ा होने के कारण वह सब कुछ खाता रहता था। एक समय उसे खाने के लिए कुछ भी नहीं मिल पाया। एक ओर जाकर खाने की कल्पना में मग्न होकर बैठा। सहसा श्री सरहपा वहाँ पहुँचे और उससे पूछ पड़े— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उस आदमी ने उत्तर दिया—हे योगी! मेरी तो पाचन-अग्नि के अत्यन्त प्रबल होने के कारण जो भी खाया, उससे पेट भरता नहीं, विशेष रूप से आज मुझे खाने के लिए कुछ न मिलने के कारण यहाँ दुःखी होकर बैठा हूँ।

योगी ने कहा—तुम मात्र आज की क्षुधा नहीं सह सकते हो, तो तुम जब प्रेत योनि में उत्पन्न हो जाओगे तो कैसे क्या करोगे?

उस व्यक्ति ने पूछा—वैसी प्रेत-योनि कहाँ होती है?

योगी—यहीं देख लो, कहकर उनको एक (भयंकर) प्रेत दिखला दिया।

वह बहुत डर गया और कहने लगा कि इस तरह की योनि में पैदा होने का हेतु क्या है? योगी ने सब कारण बतलाया।

फिर उसने प्रार्थना की— हे गुरुजी! हमें इस तरह के दुःख से मुक्त होने का उपाय दें।

उसकी प्रार्थना पर सरहपा ने उसे सर्वप्रथम अभिषेक दिया।

उसके बाद उन्हें भुसुकु वृत्त इस प्रकार दिया—

(दोहा)—

पेट (रूपी) शून्य आकाश में,

पाचन-अग्नि, काल-अग्नि (की तरह) प्रज्वलित।



७५. गुरु सर्वभक्षपा

गुरु सर्वभक्षपा सामान्य आभूषण पहने जटा-शिखा बाँधे हुए हैं। भावनासूत्र कन्धे की ओर से सामने लटक रहा है। बहुत-सी खाद्य-सामग्री सामने रखकर भोजन करने की मुद्रा में हैं।



७६. गुरु नागबोधि

गुरु नागबोधि भिक्षु के वेश में हैं। पर्यङ्कबद्ध एवं हाथ धर्मोपदेश-मुद्रा में हैं। अत्यन्त सुन्दर शान्त स्वभाव में देख रहे हैं। उनके सामने गुफा के अन्दर एक भिक्षु बैठे हैं, जिनके सिर पर मृग का सींग निकला हुआ है।

प्रतीति और भव (ये) दो (को) खाद्य और पेय (बनाकर),
खजाने से सब समाप्त हो गये हैं, (ऐसी) भावना करो ।

उसने भी तदनुसार भावना की, तो सूर्य-चन्द्र भी भयभीत होकर सुमेरु के मध्य में जा छिपे । फलतः लोग एक साथ चिल्लाये कि अहो ! आलोक (सर्वदा के लिए) अस्त हो गया । परिणामस्वरूप डाकिनियों ने ब्राह्मणोत्तम (सरहपा) से जाकर शिकायत की, तो उन्होंने आकर उस (सर्वभक्षक) से कहा— 'अब तुम सब कुछ खा चुके हो । अतः अब इन सबके अभाव की भावना करो ।'

उसने भी वैसा ही किया । प्रतीति और शून्यता की युगल स्थिति का उन्हें ज्ञान हो गया । परमसिद्धि का लाभ हुआ और सूर्य-चन्द्र भी निकल आये जिससे सब लोग प्रसन्न हो गये । पन्द्रह वर्ष की अवधि में उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई और उन्होंने स्व-अवदान भी कहे । उसके बाद छः सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना करने के बाद अन्त में हजारों शिष्य परिवारों के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु सर्वभक्षणा का वृत्तान्त समाप्त ॥

७६. गुरु नागबोधि का^१ वृत्तान्त

गुरु नागबोधि का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये पश्चिमी भारत के रहनेवाले और जाति के ब्राह्मण^२ थे।

आचार्य नागार्जुन एक समय सुवर्ण विहार में रह रहे थे^३। पश्चिमी भारत का एक ब्राह्मण चोरी करता हुआ क्रमशः वहीं (सुवर्ण विहार) पहुँचा। उसने विहार के द्वार से अन्दर देखा तो अन्दर आचार्य नागार्जुन सुवर्ण पात्र में उत्तम भोजन कर रहे थे। उसने सोचा कि उस पात्र को चुराना चाहिए। आचार्य उसकी चोरी करने की इच्छा जान गये। आचार्य ने उस पात्र को वहीं फेंक दिया (जहाँ वे थे)। इस घटना से उस चोर को बड़ा विचित्र लगा और वह सोचने लगा कि ये ऐसा क्यों करते हैं? उसने आचार्य के कमरे में प्रवेश किया और कहा—मैं इस सोने के पात्र को चुराने के लिए सोच रहा था, पर चुराने से पहले आपने इसको मेरे पास क्यों फेंक दिया?

गुरु ने कहा—मैं तो आर्य नागार्जुन नामक व्यक्ति हूँ। मेरे पास जो धन है, वह सब परार्थ के लिए है। तुमको यह सब चुराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी यह सब खाने-पीने की चीजों को खा-पीकर यहीं बैठो, जाते समय जो धन चाहो, देकर भेजूँगा। गुरु के इस कृत्य से उसको बड़ी श्रद्धा आ गयी। धर्मोपदेश के लिए आचार्य से उसने प्रार्थना की^४।

१. इनके दो नाम नागबोधि, नागबुद्धि। (तारानाथ—भ०ई०, पृ० ८५, अध्याय ७)
२. साक्या सम्प्रदाय की कुछ परम्पराओं में इन्हें पशु चरानेवाली जाति का कहा जाता है। दोङ्, थोग साक्या छो जुङ्-पृ० २३, दिल्ली संस्करण।
३. सुवर्ण विहार से तात्पर्य— एक जगह जहाँ वे सोना बनाने के कार्य में लगे थे। उस स्थान से है।
४. इस घटना को दूसरी जगह और ढंग से तथा नागबोधि को जहाँ पश्चिम भारत का कहा गया है, तारानाथ के अनुसार ये पूर्व भारत के और जाति के ब्राह्मण वृद्ध दम्पति के सन्तान थे। माँ-बाप तथा बेटा तीनों आचार्य नागार्जुन के शिष्य बने। बाद में लड़के को आचार्य के सेवक के रूप में दे दिया गया। वह भिक्षु बना। प्रथमतः उन्हें रसायन सिद्धि का लाभ हुआ। परमसिद्धि का लाभ उन्हें आचार्य नागार्जुन के देहान्त के बाद बारह वर्ष तक साधना करने पर हुआ। (ता० इ० पृ० ८४) ॥

आचार्य ने उसे गुह्य-समाज के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया एवं स्वतः अभिनिवेश विमुक्ति की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

सभी कार्यो को बुद्धि से त्यागकर,

मूर्धन प्रदेश में परम परिकल्पित सिंग।

मगद रत्नमयी (नील),

स्वच्छ प्रकाशमान हो, ऐसी भावना करो ॥ १ ॥

यह कहकर उसके निवास के चारों ओर रत्नों से भर दिया। उसी के बीच उसको बैठाया। वे बहुत प्रसन्न हो गये और (आचार्य के कथनानुसार) उपदेश के अनुसार भावना करते रहे। बारह वर्ष होते ही उनके सिर में जो भावना के आलम्बन के रूप में सींग थी, वह बहुत बड़ी होकर प्रत्यक्षतः हिलने-डुलने लगी और उसे गुफा के ऊपरी प्रदेश से टकरा जाने पर दुःख की वेदना आने लगी^१।

एक दिन आचार्य ने वहाँ जाकर उससे अपना योगक्षेम पूछा, तो उसने (सींग के कारण) अपने कष्ट के बारे में कुछ कहा। आचार्य ने उसकी भावना करने की क्षमता को जानकर पुनः कहा—

(दोहा)—

परिकल्पित (रूप से) भावना की गई महासींग द्वारा,

जैसे सभी सुखों का विनाश हो गया है।

उसी प्रकार भावाभिनिवेश से,

सभी जीव दुःखी होते हैं ॥ २ ॥

१. नागबोधि के सिर पर सींग होने का वृत्तान्त अन्यत्र भी मिलता है, पर लामा तारानाथ के अनुसार यह सींगवाला वृत्तान्त नागबोधि से सम्बन्धित नहीं है। इससे सम्बन्ध सिद्ध (श्रृङ्गीपा) से है, जो आ० नागार्जुन के 'उशिर' (उशीनर) में रहते समय उनके शिष्य बने थे। (लामा तारा० इ०पृ० ८५, अध्याय ७, सारनाथ संस्करण)।

धर्मों की तात्त्विक सत्ता नहीं होती,
जैसे आकाश में छाये बादल ।
उत्पाद स्थिति भङ्ग (इन) तीन में,
किस को किस के उपकार और बाधा ॥ ३ ॥
उसी तरह विशुद्ध चित्त के लिए,
कौन से उपकार और कौन-सी बाधा ।
आदितः असिद्ध ग्राह्य-ग्राहक,
अपने-अपने स्वभाव से शून्य हैं ॥ ४ ॥

यह कहने पर, उनको (चोर को) शून्य धर्मतार्थ का साक्षात् ज्ञान हो गया और उसी में छः मास तक समाहित होकर बैठे, तो संसार-निर्वाण की अभिन्नता का साक्षात्कार होकर उन्हें सिद्धि मिली । उनका नाम भी नागबोधि प्रसिद्ध हो गया ।

बाद में आचार्य के शासनकुल के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें नियुक्त किया गया और उन्हें आचार्य ने यह आदेश दिया कि जीव मात्र के कल्याण के लिए आठ लौकिक सिद्धियों में से जिसको जो चाहे दिया करो और तुम इस श्रीपर्वत में ही रहो । अष्ट सिद्धि-भूमि गमन, तलवार, निग्रह, अनुग्रह, लघुता, चक्षु ओपध (काजल), निधि, जङ्ग सिद्धि रसायन ये आठ हैं ।

‘ इस प्रकार से मैत्रेय बुद्ध का शासन आने तक तुम श्रीपर्वत में जगत् कल्याणार्थ रहो ’ यह कहकर वहीं रख दिया । बीस हजार वर्ष तक उनके वहीं रहने की बात कही जाती है ॥

गुरु नागबोधि का वृत्तान्त समाप्त ॥

७७. गुरु दारिकपा का वृत्तान्त

गुरु दारिकपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये सालिपुत्र^२ नामक नगर के रहने वाले थे और जाति के क्षत्रिय थे।

सालिपुत्र नामक जनपद में इन्द्रपाल^३ नामक एक राजा शिकार खेलने गये और दिन के पूर्वार्ध में लौटकर सभा^४ में आये, तो सभी लोगों ने उनको प्रणाम किया। उस जन-समुदाय के बीच में उन्होंने लूहिपा को देखा। राजा ने उनसे कहा—

आप इस प्रकार के सुन्दर चेहरे, मनोहर व्यक्तित्ववाले, इस तरह से गन्दी मछली की आँत मत खाएँ। आपको कौन-सा खाना चाहिए, सब कुछ मैं दे दूँगा और दूसरा क्या चाहेंगे? सब देय होगा। यदि राज्य चाहते हों, तो वह भी मिलेगा।

लूहिपा ने कहा— अगर अमर होने का कहीं कोई उपाय हो, तो वह सब मुझे चाहिए।

राजा ने कहा—मेरा राज्य और राजकुमारी ले लें।

लूहिपा—ये सब मुझे नहीं चाहिए।

राजा—क्यों नहीं चाहेंगे ?

-
१. दारिका शब्द का अर्थ भोटदेशीय मूल पाण्डुलिपि में 'पत्नीवाला' लिखा है—(डुब थब्स् कुत् तु— पृ० ६१, बी० एन० १४, साक्य ग्रन्थावली) पर इसकी व्याख्याओं एवं वृत्तान्तों में 'दारिका' शब्द वेश्यावृत्ति स्त्री के लिए है, यह बुरे भाव में प्रयुक्त है। 'दारिकापा का अर्थ 'वेश्यावाला' ही होगा न कि पत्नीवाला।' इसका शाब्दिक अर्थ लड़कीवाला है।
 २. कुनख्येन पद्म कर के अनुसार इस नगर का नाम कुमार (कुमारी) क्षेत्र था और यह ओडि विषय (औडिविषयम्) में था। (पद्म कर० ई० पृ० ७५, बी०एन० १५०) हो सकता है, दोनों नाम एक ही जगह के हो।
 ३. पद्म कर के बौद्धशासन इतिहास में इस राजा का नाम विमलचन्द्र लिखा है। (पृ० ७५)
 ४. यह वही सभा थी, जिसका उपक्रम वार्षिक कुमुद पुष्प उत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है—पद्म० पृ० ७५-७६। पद्म० के अनुसार लुईपा एवं राजा की भेंट दूसरी प्रकार से हुई। (वही)

लूहिपा—राज्य बहुत ही अल्प हित एवं बहुत अधिक दोषों से भरा होता है। इसलिए मैंने भी इसको त्याग दिया है।

इस कथन से राजा इन्द्रपाल को भी राज्य के प्रति कुछ घृणा-सी आ गयी। उनके एक ब्राह्मण जाति के मंत्री थे, उनसे उन्होंने कहा—मैं भी इस लोक में जैसा भी करें, बीत जाता है, खाना और कपड़ा (स्त्र) किसी तरह से भी (हर जगह) इच्छा की, आधा से भी अधिक पूरे नहीं हो पाते हैं। इसकी अपेक्षा मैं धर्म की ओर जाऊँगा। अतः राज्य, पुत्र को सौंप देना अच्छा नहीं होगा?

मन्त्री—यह, तो उचित ही होगा।

उसके बाद राजकुमार को राजगद्दी पर बैठाकर राज्याभिषेक किया और राज-काज उन्हें सौंपकर राजा और उनके वह मन्त्री दोनों लूहिपा^१ के पास श्मशान गये। श्मशान में जाकर उन दोनों ने लूहिपा की कुटी का दरवाजा खटखटाया। आचार्य ने अन्दर से पूछा कि कौन हो?

उन दोनों ने कहा— हम लोग राजा इन्द्रपाल और उनके मन्त्री हैं। 'अन्दर आओ' कहकर (उन दोनों को दरवाजा खोलकर), अन्दर बुलाए। दोनों को चक्रसंवर में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया। उन दोनों ने दक्षिणा के रूप में खुद को आचार्य के लिए अर्पित कर दिया। उसके बाद तीनों आचार्य अन्य देश औदेश (उड़ीसा?) चले गये। वहाँ तीनों भिक्षाटन से जीविका चलाते रहे। उसके बाद तीनों भीरपुर नामक जनपद चले गये। वहाँ जन्तिपु (सम्भवतः जयन्तिपुर या जौनपुर) नगर जो तीन लाख घराने का नगर था, में पहुँचे। वहाँ एक देवालय की पूजा करने वाली सात सौ नर्तकियाँ रहती थीं। उन लोगों की प्रधान नटी के पास गये, तो उनकी द्वारपाल के रूप में तीन सौ लड़कियाँ तैनात थीं। उन लोगों ने कहा— तुम्हारी स्वामिनी कोई आदमी तो नहीं खरीदेगी? उन लोगों ने अन्दर जाकर स्वामिनी से उस वृत्तान्त को सुनाया।

१. पद्म कर के इतिहास के अनुसार लुहिपा ने अभिषेक एवं दीक्षा वहीं दी जहाँ उन्हें सम्मानपूर्वक राजमहल में बैठाया गया।

मालकिन ने कहा—हाँ खरीद लूँगी, पर देखने आती हूँ, कहकर दरवाजे में आकर देखा, तो वहाँ एक मनोहर लड़का उनके सामने मौजूद था। उसने पूछा—दाम क्या लोगे ?

आचार्य ने कहा— एक सौ तोला सोना चाहिए।

राजा को वहीं (सौ तोले सोने में) बेच दिया। आचार्य ने शर्त यह रखी कि इन्हें रात को किसी के साथ मत सोने दो और अकेला ही रखो। जब इनका दाम पूरा हो जाये, तो वापस लौटा दो। यह कहकर आचार्य और ब्राह्मण के पुत्र, जो मन्त्री थे, वहाँ से चले गये। राजा (इन्द्रपाल) दारिका के पास बारह वर्ष तक पैर धोना, तेल मालिश करना, लेप लगाना आदि सेवा करते रहे। सब समय गुरु की दीक्षा को स्मरण में रखते हुए, काम किया^१। उस दारिका ने सभी प्रकार के कामों से पहले उस (राजपुत्र) को (सबके) मालिश^२ का काम करने दिया, तो वहाँ की श्रमजीवी सभी नौकरानियों के वे हार्दिक प्रिय बन गये। उस समय एक दिन उस दारिका के पास महाराजा धारक या उसे 'कुंचि' भी कहते हैं, नाम के एक अन्य राजा पाँच सौ तोला सोना लेकर आये। वह लोक धर्म के अर्थी थे (स्त्रीभोगी)। आचार्य से राजा इन्द्रपाल ने बीच के संयोजक, अर्थात् उन दोनों को मिलानेवाले का काम लिया। वह राजा (कुंचि) प्रतिदिन सात तोला सोना दिया करते थे। कुछ दिन बाद कुंचि की पाचन-अग्नि कम हो जाने से भारी भोजन के कारण पेट में दर्द होने लगा (दस्त होने

१. गुरु की दीक्षा स्मरण में रखने का तात्पर्य—जब ये राजा थे, अपने मन्त्री सहित लुहिपा से दीक्षा ली, उस समय (उपदेश देते समय) आचार्य ने दोनों से प्रश्न किया कि इस तरह तुम्हारे में सबसे अधिक स्पष्ट प्रतीति किस विषय की है? राजा ने उत्तर दिया—दारिका की। आचार्य ने दारिका को ही उपमा बनाकर उपदेश दिया था और तदनुसार उन्हें (राजा को) संसार के प्रति संवेग एवं यथार्थ (महामुद्रा) का अवबोध हुआ था। उस अवबोध को स्मरण में रखते हुए नारी के शरीर को छूना था—

पद्० ई० पृ० ७५-७८।

२. मालिश का काम इनको इसलिए दिया गया कि—यह नारी के शरीर का सर्वांगीण जानकारी पा सकें।

लगे) जब एक दिन आधी रात के समय वह बाहर गए तो उनको दारिका के उद्यान के अन्दर से बहुत सुगन्ध आने लगी और कुछ वहाँ से प्रकाश निकल रहा था। वह, उसने देख लिया। उसने वहाँ जाकर देखा तो वहाँ वही नौकर जो दिन में दारिका के यहाँ काम करते थे, वह पन्द्रह देवकन्याओं से परिवृत थे और उन लोगों द्वारा उनका सत्कार हो रहा था। वे नौकर स्वयं गद्दी पर विराजमान थे।

इस घटना से कुंचि आश्चर्यचकित होकर दौड़कर घर लौट आये, इस वृत्तान्त को उस दारिका से कह सुनाया। पुनः दोनों वहाँ देखने गये, तो दोनों ने पूर्ववत् देखा (वेश्या प्रधान, जिसके पास वे थे), तब उस वेश्या को बड़ी ग्लानि और पश्चात्ताप हुआ उसने प्रदक्षिणा पूर्वक उन (राजा, जो आज तक उनके नौकर थे) के चरणों में गिरकर प्रणाम किया और उनसे कहा कि हम अज्ञान जीव हैं। भ्रांतिवश आपको (इस तरह के) गुणों से युक्त नहीं समझ पाए। इससे हमें बहुत से पाप लगे हैं। मेरे इस अपराध को आप क्षमा करें। प्रार्थना करती हूँ कि बारह वर्ष तक मैं आपकी सेवा करना चाहती हूँ। मेरा पूज्य स्थानत्व आप स्वीकार करें। आचार्य इन्द्रपाल राजा ने इसे स्वीकार नहीं किया।

उस दारिका एवं कुंचि ने पुनः प्रार्थना की कि हमें भी अनुगृहीत करें।

आचार्य आकाश में ऊपर उड़कर वहीं बैठे— 'शून्य नगरावतरण' नामक उपदेश इस प्रकार दिया—

साधारण राजा के ध्वज हाथी गद्दी से

मेरा राज्य अत्युत्तम है, मोक्ष-ध्वज महायान वाहण।

त्रिभुव आसन गद्दी का, दारिकापा उपभोग कर रहे हैं।

यह उनका अवदान उपदेश था।

'दारिका' के दास के रूप में रहने के कारण उनका नाम भी 'दारिकापा' सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अन्त में सात सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु दारिकापा का वृत्तान्त समाप्त ॥



७७. दारिकपा

गुरु दारिकपा, दाढ़ी धारण किये तथा सिर पर जटा बाँधे हुए हैं। अस्थि-अलङ्कारों से सुसज्जित हैं। कन्धे के सामने की ओर से जाते हुए भावनासूत्र से एक घुटना बाँधे हुए हैं। हाथ में वज्र और घण्टा लिये अनेक स्त्री-परिवारों के साथ आकाश मार्ग से उड़ते हुए बादलों के बीच से जा रहे हैं। नीचे की जमीन पर बड़े शिला-स्तम्भ के ऊपर एक हाथी की मूर्ति बनी हुई है।



७८. गुरु पुतलिपा

गुरु पुतलिपा राजा के वेश में हैं। सामने इष्टदेव 'हेवन्न' का एक चित्र (थड्का) रखकर उसकी ओर देख रहे हैं और अपनी गद्दी पर बैठकर किसी से कुछ बोल रहे हैं। नीचे जमीन पर एक मन्त्री हाथ जोड़कर खड़ा है।

७८. गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त

गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— 'पुतली' का अर्थ चित्रवाला है। ये बंगाल के रहने वाले थे। जाति के ये शूद्र थे।

बंगाल जनपद के एक शूद्र जाति के व्यक्ति सवर्ण कुल से विवाह करके दिन बिता रहे थे। उस समय एक दिन एक योगी उनके यहाँ आये। भिक्षा माँगे, उसने भी खाद्य-चाव्य पेय आदि उत्तम भोजन से उनको तृप्त किया। उनके प्रति बड़ी श्रद्धा हो गयी, तो उन्होंने योगी से धर्म-उपदेश के लिए प्रार्थना की। गुरु ने भी उसे स्वीकार किया और उसको हेवज्र के मण्डल में प्रवेश कराकर अभिषेक प्रदान किया और दीक्षा दी। उन्हें हेवज्र का एक थड्का (पटचित्र) देकर यह आदेश दिया कि इस थड्का को उठाते हुए नगर से नगर एवं ग्राम से ग्राम सब जगह भिक्षाटन करते-साधना करो।

उस व्यक्ति ने भी वैसा ही किया। निरन्तर बारह वर्ष तक की साधना से उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई। पर इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। एक दिन वे राजमहल में भिक्षाटन के लिए पहुँचे। राजा ने उनके थड्का को देखा तो उसमें उनका देवता (उस योगी के देवता के पैर के नीचे) आसन के रूप में लिखा हुआ दिखाई दिया। राजा बिगड़ गये और योगी को मारने के लिए तैयार हो गये। योगी ने कहा—यह मैंने नहीं लिखा है, यह तो चित्रकार ने लिखा है। यदि इसके लिए कोई दण्ड देना हो, तो मेरे देवता को आप ही के देवता के नीचे आसन के रूप में हेवज्र को रखकर लिखवाओ। योगी से उस चित्रकार ने पूछा कि इससे क्या होगा? योगी ने कहा— मेरे देवता-देवताओं के भी देवता हैं। चित्रकार ने कहा इसका क्या प्रमाण है? योगी—राजा के देवता को ऊपर लिख भी दिया जाय तो भी दूसरे दिन वह आसन के रूप में नीचे ही आ बैठेगा।

राजा ने कहा यदि ऐसा है, तो मैं भी तुम्हारे शासन में रहूँगा। यह शर्त लगाकर चित्र को रात में वैसा लिखा गया। योगी भावना करते रहे। सुबह देखा, तो राजा के देवता पुनः योगी के देवता के आसन के रूप में नीचे दबे हुए हैं। इस घटना

१९६ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

से राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने योगी के शासन में प्रवेश लेकर, उस योगी को अपना गुरु बनाया। राजा के साथ उनके राज्य के और बहुत सारे लोगों ने उसके धर्म में प्रवेश ले लिया। सब लोगों में उस योगी का नाम गुरु पुतलीपा (अर्थात् गुरु पटचित्र लेकर घूमनेवाला) प्रसिद्ध हो गया।

पाँच सौ वर्षों तक जगतार्थ साधना के बाद अपने अवदान भी कहे और अन्त में छः सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु पुतलीपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



७९. गुरु पनहपा

गुरु पनहपा (अपनहपा) चलते हुए अवस्था में हैं। एक हाथ में विशेष मणि लिए हुए हैं तथा दूसरा हाथ जलदान-मुद्रा में है। पैर में विविध प्रकार के घुँघरू एवं आभूषण से सजे उपानह अर्थात् जूता पहने हुए हैं। इस विशेषता के कारण ही उनका नाम पनहपा पड़ गया है।



८०. कोकिलपा

गुरु कोकिलपा, राजा के वेश में फल-फूलों से लदे वृक्षों के उपवन में बैठे हुए हैं। उपवन के वृक्षों पर बहुत-सी कोयल बैठी गा रही हैं। आस-पास अनेक युवतियाँ संगीत, वाद्य-यन्त्रों के साथ नृत्य में रत हैं। कुछ युवतियाँ स्नान कर रही हैं। सामने एक भिक्षु उनसे बात कर रहा है।

७९. गुरु पनहपा का वृत्तान्त

गुरु पनहपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—‘पनहपा’ का अर्थ है जूतावाले अर्थात् उपानहवाले। यह ‘पनह’ शब्द उपानह का अपभ्रंश है। ये सेन्धो नगर के रहने वाले जाति के शूद्र थे।

सेन्धो नगर का एक व्यक्ति (विशेष) जूता पहनकर रह रहा था। एक दिन उसने गुरु शक्तिमान नामक योगी को भिक्षाटन करके क्रमशः विहार में (निर्जन स्थान वन) जाते देखा। इसे देखकर उस (पनह) को बहुत श्रद्धा हो गयी और उस योगी के पास जा पहुँचा।

योगी ने पूछा— तुम यहाँ क्यों आये हो?

पनह ने उत्तर दिया—धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना करने आया हूँ।

योगी ने—उसे संसार के दोष और मोक्ष की अनुशंसा का उपदेश दिया।

इससे उसके (पनह के) मन में संसार के प्रति घृणा पैदा हो गयी। उसने कहा—गुरुजी! मुझे संसार से मुक्ति पानेवाले धर्म का उपदेश दें।

योगी ने उसे प्रभाव उत्क्रांति का अभिषेक प्रदान किया और अभिनिवेश मार्ग के रूप में उपयोग की जानेवाली दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा)—

“आभूषण वाले उपानह पहनकर चलने और,

दौड़ने आदि से मधुर शब्द आने लगता है।

शब्द मात्र (=सभी शब्द) उसी में लीन होने हैं,

तब उसकी ध्वनि एवं शून्य के अभेद रूप की भावना करो ॥”

ऐसा कहने पर उसने (पनह ने) इसका अर्थ अवबोध कर लिया। तदनुसार उन्होंने भावना की। नौ वर्ष में ही उनके “दर्शन-प्रहणीय” मल विशुद्ध हो गये और सिद्धि प्राप्त हो गयी। उनका नाम गुरु पनहपा सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। अपने अवदान भी कहे। आठ सौ वर्षों तक जगताथ साधना के बाद अन्त में आठ सौ शिष्य परिवार के साथ त्रे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु पनहपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

८०. गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त

गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— कोकिल का अर्थ है— कोयल की वाणी वाले। ये जाति के क्षत्रिय थे और चम्पार्णव (सम्भवतः चम्पारण) के रहने वाले थे।

चम्पारण नगर में एक राजा रहते थे। ग्रीष्म के दिनों में राजधानी में बहुत जोर की गर्मी पड़ती थी। एक बार उससे असह्य होकर उनकी रहने की व्यवस्था राज-उद्यान आम्रवन में की गयी। वहाँ के आम्र वृक्ष की छाया, शीतल पानी, विभिन्न पुष्प-फल आदि के मधुर सुगन्ध, सुन्दर दृश्य से राजा बहुत प्रसन्न होकर वहीं पर रेशम के बिछौने एवं तकिया में विराजमान थे। राजकुमार आदि के द्वारा उनके लाभ-सत्कार हो रहे थे। अनेक कुमारियों द्वारा सेवा जैसे— किसी के द्वारा मालिश हो रही थी, किसी के द्वारा पंखा चल रहा था, किसी के द्वारा संगीत, किसी के द्वारा नृत्य, किसी के द्वारा पुष्पवर्षण आदि हो रहा था। इस प्रकार वे पूर्ण रूप से राजसुख भोग रहे थे। उनके मनुष्य का (दुर्लभ) जीवन बेकार ही समाप्त हो रहा था। उस समय एक विद्वान् भिक्षु उनकी ओर आ रहे थे, पर राजा के द्वारपाल के रूप में तैनात तीन सौ राजपुरुषों ने उन्हें अन्दर जाने नहीं दिया। इसे राजा ने खुद देखा और कुद्ध होकर आज्ञा दी कि उन (भिक्षु) को अन्दर भेजो! जब भिक्षु अन्दर आये, तो उनकी जलपान, भोजन आदि से सेवा की।

राजा ने कहा—आपके धर्म और मेरे धर्म, इनमें से कौन अच्छा है?

भिक्षु— (दोहा)—

“बाल देखे, तो आप का (धर्म) अच्छा है।

पण्डित देखे, यह विषमय है।”

कहने पर—

राजा—विष किसको कहते हैं?

उत्तर में भिक्षु ने तीनों विषों का विस्तृत वर्णन किया। उन विषों से आपका राज-भोग (सर्वथा) मिला हुआ है। परिणाम दुर्गति में जायगा और वहाँ दुःख भोगना पड़ेगा। जैसे विष मिला हुआ उत्तम खाद्य-पेय के सेवन से अन्त में प्राण तक छूट जाता है। वह राजा 'गोत्रभू' (अर्थात् मोक्ष मार्ग के गोत्र से युक्त व्यक्ति) थे। जिसके कारण तत्काल उन्होंने उस भिक्षु को अपना गुरु मान लिया और उनसे धर्मोपदेश के लिए प्रार्थना की।

भिक्षु ने उसको (राजा को) श्रीचक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और मार्ग दर्शन किया।

राजा ने अपना राज्य, अपने पुत्र को सौंप दिया। मूल रूप से राजकाज त्यागने में समर्थ हो गये। परन्तु उस आम्रवन की कोयल की मीठी आवाज के प्रति मन आसक्त होकर गुरु के द्वारा उपदिष्ट मार्ग की भावना करने में वे असमर्थ हो रहे थे, तो भिक्षु ने पुनः उन्हें 'सर्वविकल्प सकृत् विमुक्ति' की देशना इस प्रकार दी—

जैसे शून्य आकाश में,
मेघ का गर्जन और बादल इकट्ठे होते हैं।
उसी से वर्षा की धारा निकलती है,
वृक्ष औषधियों का फसल विकसित होता है ॥ १ ॥
उसी प्रकार कान की शून्य (जगह) में,
कोयल की मेघ ध्वनियाँ।
और कल्पित विज्ञान का मेघ (इकट्ठे) होते हैं,
क्लेश विषों की वर्षा से ॥ २ ॥
राग-द्वेष की शाखा-पत्तियाँ विकसित हुआ करती हैं,
अनभिज्ञ बालों का (यही) स्वभाव है।
चित्त के शून्य-भाव में ही,
शून्य से अभेद मेघ ध्वनियों का गर्जन ॥ ३ ॥

और अनास्रव महासुखों के बादल इकट्ठे होकर,

स्वतः प्रकाशमान (=वास्तविक) वर्षा से।

पञ्च-ज्ञानों की फसल विकसित होती है,

अहो! बुद्धिमान महा-अद्भुत है? ॥ ४ ॥

इस प्रकार देशना देने से उसने भी इसके अनुरूप भावना की, छः मास की अवधि में ही उन्हें सिद्धि लाभ हो गई। उनका नाम भी 'कोकिलपा' प्रसिद्ध हो गया। बहुत से जगत् कल्याण (जनकल्याण) के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु कोकिलपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

८१. गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त

गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त इस प्रकार है— ये गौड़ देश के रहनेवाले थे और जाति के शूद्र थे।

गौड़ (घहर?) देश का एक शूद्र जाति का व्यक्ति पूर्व जन्मों में क्षान्ति-भावना के कारण अत्यन्त सुन्दर और सुडौल शरीर का था। लोगों को देखकर उसमें कुछ अभिमान आ गया। उस समय उसके पास एक सुविनीत बहुत ही सुन्दर आचरण वाले एक भिक्षु आये। उस भिक्षु ने उससे भिक्षा माँगी, उसने भिक्षु से कहा कि आप अन्दर आये, मैं आपकी सेवा में एक दिन का सम्पूर्ण भोजन आदि की व्यवस्था करूँगा। यह कहकर उन्हें अन्दर ले गया। पैर धोना, आसन देना आदि सत्कार के बाद उत्तम भोजन कराया।

उस आदमी ने भिक्षु से पूछा—हे आर्य! आप खाने के लिए भिक्षा और साथ ही इस तरह की तपस्या करते हैं तो यह किसके लिये?

भिक्षु—मैं संसार से भयभीत होकर मोक्ष पाने के लिए यह सब करता हूँ।

शूद्र— हे आर्य! हम दोनों के (इस देह) आश्रय में क्या और कितना अन्तर है?

भिक्षु—आपके अभिमान-युक्त (देह) आश्रय में कोई गुण प्राप्त नहीं हो पाएगा और मेरे श्रद्धा से युक्त (देह) आश्रय में अपरिमित गुण आ सकते हैं।

शूद्र—आर्य! गुण से तात्पर्य क्या है, यह किसको कहते हैं?

भिक्षु ने इसके उत्तर में कहा—इस जन्म में धार्मिक व्यक्तियों के ऊपर मनुष्य, अमनुष्य आदि किसी की भी विघ्न-बाधा नहीं आ सकती है।

शूद्र—यदि ऐसा हो, तो हमको भी उस तरह के गुणों को पाने के लिए उपाय दें।

भिक्षु—तुम जमीन खोदना, व्यापार करना आदि कुछ लौकिक काम कर सकते हो?

२०२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

शूद्र—ऐसा मैं एक भी नहीं कर पाऊँगा।

भिक्षु—एक ही आसन पर बैठकर भावना कर सकोगे?

शूद्र—यह तो अवश्य ही कर पाऊँगा।

उस भिक्षु ने उसको चक्रसंवर के मण्डल में अभिषेक प्रदान किया और षड्-समुदाय (छः विज्ञान काय की स्वप्रभास्वरता) की दीक्षा इस प्रकार दी—

नाना प्रतीतियाँ चित्त के स्वभाव से,

(भिन्न) कोई भी नहीं है अन्यत्र।

अतः छः विज्ञान कायों के विषयों के प्रति सहजतः स्थित होकर,

अनासक्त अनिरुद्ध उसी रस में (चित्त) समाहित रखो ॥

ऐसा कहने पर उन्होंने भी तदनुसार भावना की तो छः मास में ही उन्हें परम-सिद्धि का लाभ हो गया। उनका नाम भी गुरु अनङ्गपा प्रसिद्ध हो गया। अनेक जनकल्याण के बाद उसी शरीर के द्वारा वे खेचर भूमि चले गये।

गुरु अनङ्गपा का वृत्तान्त समाप्त ॥



८१. अनङ्गपा

गुरु अनङ्गपा रूप रंग के अत्यन्त सुन्दर और मनोहारी हैं। वे भिक्षु के वेश में एक घास की झोपड़ी में समाहित-मुद्रा में बैठे हैं। उनके सामने एक अन्य भिक्षु जो बहुत सुन्दर रूपवान है, भिक्षा माँग रहे हैं।



८२. योगिनी लक्ष्मी

योगिनी लक्ष्मी श्मशान में बैठी हुई हैं। बिना सँवरे बाल हैं, जो आगे पीछे दोनों ओर बिखरे हुए हैं। त्रिशूल के साथ हाथ में नर-कपाल एवं खूँखरी (कटार) ली हुई हैं। शरीर पर कोयले की भस्म का लेप लगाई हुई हैं और योगिनी के योग्य सभी प्रकार के अस्थि-आभूषण पहने हुई पगली के रूप में हैं।

८२. गुरु लक्ष्मी (लक्षिंकर) का वृत्तान्त

गुरु लक्ष्मी का वृत्तान्त इस प्रकार है— यह उज्जैन (ओडिया) देश (उग्यन?) की रहनेवाली और जाति की क्षत्रिय थी। यह उज्जैन के अन्तर्गत सम्भल देश के राजा इन्द्रभूति, जो ढाई लाख संख्या के नगर के राजा थे, की बहिन थी। बचपन से ही वे गोत्र भू-गुणों से परिपूर्ण थी। महासिद्ध कम्बलपा आदि से बहुत धर्म-उपदेश भी सुन चुकी थी। बहुत से तन्त्रों का भी उन्हें ज्ञान था। उनको लङ्का के राजा जालन्धर के पुत्र समबोल (सम्भोल) के लिए माँगा, तो उनके भाई इन्द्रभूति ने भी राजपुत्र के लिए दे दिया। जब उनको लेने के लिए वे आये, तो महाराज इन्द्रभूति ने अनेक धर्मविशेषज्ञ लोगों के साथ अपार धन-सम्पत्ति देकर उन्हें भेजा। लङ्कापुरी नगर में पहुँचे, तो मुहूर्त (नक्षत्र) न होने के कारण कुछ दिन उन्हें राजमहल के बाहर रखा गया। उस समय लक्ष्मी ने लोगों को (तैर्थिक) वैधर्मिक होते देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसी समय उस राजकुमार के बहुत से नौकर, जो शिकार खेलने गये थे, बहुत-सा माँस लेकर उनके (लक्ष्मी के) सामने से लौट रहे थे। उनको उन्होंने देखा। लक्ष्मी ने (अपनी सहेलियों से) पूछा—ये सब कौन हैं? बारात कहाँ से आई? कहाँ के लोग हैं? सहेलियों ने उत्तर दिया— इनको तुम्हारे पति ने शिकार खेलने भेजा है, ये सब शिकारी हैं, और शिकार खेलकर लौट रहे हैं।

जैसे 'उलटी' बीमारी वाले को खाने की बात से ही उलटी आने लगती है, उसी प्रकार शिकारियों की चर्चा से उनको बहुत बुरा लगा। मेरे भाई एक धर्मराज थे, पर मुझे इस तरह के व्यक्ति को सौंपा, यह सोचकर वह वहीं बेहोश हो गयी। उसके बाद जब वह होश में आई, तो उन्होंने (आसपास के) नगर के लोगों को अपनी सारी धन-सम्पत्ति दान कर दी। अपने सभी आभूषण एवं वस्त्र नौकरों के साथ भेज दिये। वे स्वयं अपने शयन-गृह लौट गईं। उसके बाद उन्होंने यह कहा कि मुझे बुलाने के लिए यहाँ कोई आदमी नहीं भेजना। उसने एक मकान के अन्दर बैठकर तेल और कोयला मिलाकर शरीर पर लेप लगाया। नग्न होकर बाल बिखराकर बैठी और पागलपन का नाटक करती रही। वास्तव में, वह रहस्यमयी अर्थ की साधना

करती रही। इससे राजा आदि दुःखी हो गये। दवाई की व्यवस्था की और वैद्य आदि वहाँ जिस कमरे में लक्ष्मी रह रही थी, गये तो उन लोगों को उसने मारना-पीटना आरम्भ कर दिया। ससुराल वालों ने उनके भाई (इन्द्रभूति) के पास दूत भेजा कि लक्ष्मी की हालत ऐसी हो गयी है और क्या किया जाय? महाराज इन्द्रभूति इससे विचलित नहीं हुए। सोचने लगे कि उसको संसार के प्रति विरक्ति हो गयी होगी।

बहिन लक्ष्मीकर उसके बाद से लङ्कापुरी में ही सदा परम रहस्य की साधना में लीन रही। उच्छिष्ट भोजन खाती और श्मशान में सोती रही। सात वर्ष में ही उन्होंने परमसिद्धि प्राप्त कर ली। उस राजा (उनके श्वसुर) के एक जमादार ने उनकी सेवा की, तो उसको उन्होंने दीक्षा दी और उसको भी बहुत-से गुण प्राप्त (क्षमता) हो गये। वह जमादार ही उसकी (लक्ष्मीकर की) स्थिति को जानते थे और कोई नहीं।

एक समय महाराज जालन्धर अपने सैनिकों के साथ शिकार खेलने गये हुए थे। समय का बोध न रहने से राजा बहुत देर तक सो गये। जब वह उठे, तो जल्दी चलने लगे। वे सब रास्ता भटक गये (उस दिन वे रात को लौटकर आने में असमर्थ हो गये) कहीं सोने की जगह नहीं मिली। चलते हुए लक्ष्मीकर की गुफा में पहुँचे; अन्दर देखा तो, देखने में यही आया कि वे लक्ष्मी स्वयं अपने शरीर से प्रकाश निकलते हुए देदीप्यमान होकर बैठी हुई हैं और उनके चारों ओर असंख्य देवकन्याएँ उसकी पूजा कर रही हैं। इस घटना से उनमें बड़ी श्रद्धा आ गयी। राजा रात भर वहीं बैठकर दूसरे दिन अपने घर लौटे, पुनः राजा वहाँ (उस गुफा में) आकर अभिवादन-प्रणाम आदि किया, तो लक्ष्मीकर ने कहा—

मेरी जैसी स्त्री को तुम प्रणाम क्यों कर रहे हो?

राजा—आपको अपार गुण प्राप्त हैं, अतः मुझे भी दीक्षा दें, यही मेरी प्रार्थना है।

लक्ष्मीकर ने कहा— (दोहा)

संसार के सभी जीव दुःख के साथ ही हैं,

सुख कहीं भी नहीं होता है।

जन्म-जरा-मरण आदि से,

जगत के प्रमुख देव-मनुष्य भी पीड़ित हैं ॥ १ ॥

तीनों दुर्गतियों में तो मात्र दुःख ही होते हैं,

(वे) एक-दूसरे को खाते और भूख से सदा पीड़ित रहते हैं।

शीतोष्ण आदि अपार पीड़ा से वे सदा पीड़ित हैं,

अतः हे राजन्! आप मोक्ष के सुख की खोज करें ॥ २ ॥

अन्त में उन्होंने कहा—आप मेरे द्वारा विनेय नहीं हैं, आपके जमादारों में से एक, जो मेरा शिष्य था, सिद्धि प्राप्तकर काम कर रहा है, वही आपका गुरु होगा।

राजा ने कहा—वैसे तो जमादार बहुत हैं, उनमें से मैं उसको कैसे पहचानूँगा?

लक्ष्मीकर—वह सफाई करने के बाद प्राप्त भोजन अन्य लोगों को देता रहता है, उसी को निमित्त मानकर देखो।

राजा (अपने घर लौट गये) अपने जमादारों के बीच जाकर गौर से देखा, तो उनमें से एक वैसा ही कर रहा था। राजा ने उसको महल के अन्दर आमन्त्रित करके गद्दी पर आसीन किया और विधिवत् प्रणाम प्रदक्षिणा पूर्वक उनसे दीक्षा के लिए प्रार्थना की।

उस (जमादार योगी) ने राजा के लिए अधिष्ठान उत्क्रान्ति का अभिषेक प्रदान किया और वज्रवाराही की उत्पत्ति एवं सम्पन्नक्रम की दीक्षा दी।

अन्त में लक्ष्मीकर एवं उनके शिष्य जमादार दोनों ने लङ्कापुरी नगर में अनेक प्रतिहारी दिखाये और दोनों उसी शरीर द्वारा खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु लक्ष्मीकर का वृत्तान्त समाप्त ॥

८३. गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त

गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये सर्वडी जनपद के रहनेवाले और जाति के सम्भवतः चाण्डाल थे। जवाहरात (रत्न) बेचकर ये जीविका चलाते थे।

सर्वडी नामक जनपद के एक नीच जाति के व्यक्ति समुद्र से रत्न ले आकर बेचा करते थे और इसी से वे अपनी जीविका चलाते थे। एक समय यह (रत्न) न मिलने से उनकी जीविका समाप्त हो गई। इससे दुःखी होकर वे एक श्मशान में जा बैठे। उसी समय अचिन्त योगी उनके पास आये और उनसे पूछा— तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

उस आदमी ने—अपना पूर्व वृत्तान्त सही बतलाया।

योगी—सांसारिक जीव अपरिमित दुःख में ही रहते हैं।

तुमने आज से पहले (पूर्वजन्म में) भी बहुत उग्र असह्य एवं अधिक दुःख भोगे हैं। अब भी दुःख के अलावा सुख आदि और कुछ नहीं आने वाले हैं।

व्यक्ति—हे योगी! आपसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन दुःखों से मुक्त होने का एक उपाय अवश्य दें।

योगी ने उनको अभिषेक प्रदान किया और बाह्य रूप से चार अप्रमाण एवं आन्तरिक रूप से चार आनन्दों की दीक्षा इस प्रकार दी—

(दोहा) —

मैत्री-करुणा मुदिता और उपेक्षा ये चार अप्रमाणों से,

अष्ट लौकिक धर्मों में समता स्थापित कर,

मध्य (बिन्दु) से आनन्द स्रोत का अवतारण करो।

चार चक्रों में निहित चारानन्द, सुख-शून्यता के अभिन्न आकार वाले हैं।

उनकी सम्यक् रूप से भावना करने पर, मात्र अनास्रव सुख ही होगा।

एक क्षण भी दुःख सम्भव नहीं होगा।



८३. समुद्रपा

गुरु समुद्रपा, समुद्र और नगर के बीच के रास्ते में बैठे हुए हैं। अर्थात् समुद्र में चलती नाव में बैठे हैं। हलके आभूषण पहने हुए और सिर पर पगड़ी बाँधे हुए हैं। उनके ठीक सामने योगी अचिन्तपा निर्वसन (नगना) अवस्था में आकर उन्हें उपदेश दे रहे हैं।



८४. व्यालिपा

गुरु व्यालिपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में हैं। हलके आभूषण एवं सिर में पुष्प-मुकुट पहने हुए हैं। एक हाथ में कलश है और दूसरे हाथ से रसायन के प्रयोग हेतु सामने बड़ा-सा पात्र रखकर उसमें कुछ प्रयोग कर रहे हैं। वे आस-पास स्थित अपनी पत्नी, बाल-बच्चों और एक घोड़ी को देख रहे हैं। दूसरी ओर समुद्र के अन्दर से एक चौकोर पहाड़ निकला हुआ है तथा उस पहाड़ के ऊपर सुन्दर-सी कुटी बनी हुई है। (यह श्रीलङ्का के एक द्वीप का दृश्य है, जहाँ पर व्यालिपा ने अपना अन्तिम समय बिताया था)।

ऐसा कहने पर उन्होंने भी तदनुसार अर्थ अवबोध के साथ भावना की। फलतः तीन वर्षों में ही उनको परमसिद्धि की प्राप्ति हुई। उनका नाम सर्वत्र 'समुद्रपा' प्रसिद्ध हो गया।

उन्होंने अपने अवदान भी कहे। अनेक जगतार्थ के बाद आठ सौ शिष्य परिवार के साथ वे खेचर भूमि चले गये ॥

गुरु समुद्रपा का वृत्तान्त समाप्त ॥

८४. गुरु व्यालिपा का वृत्तान्त

गुरु व्यालिपा का वृत्तान्त इस प्रकार है—ये 'अपत्र' देश के रहनेवाले थे और जाति के ब्राह्मण थे। सिद्धि लौकिक-रसायन की थी।^१

अपत्र (उवत्र, स्पेत्र भी) नामक जनपद में एक ब्राह्मण जाति के व्यक्ति बहुत धन-धान्य से समृद्ध थे। वह अमृत-साधना में लग गये। बहुत-सा पारा खरीदकर उसे सिद्ध किया करते थे और अन्य औषधियों में उसे मिलाने थे। एक औषधि की जानकारी न रहने से वह (अमृत) सिद्ध नहीं हो पाया जो वे चाहते थे। इस तरह निरन्तर तेरह वर्षों तक साधना करने पर भी उन्हें सफलता न मिली। अपनी पूर्व सम्पत्ति भी उसके खर्च में समाप्त हो गई। उसने क्रुद्ध होकर अपनी साधना-विधिवाली पोथी को गंगा में फेंक दिया। स्वयं नगर में भिक्षा माँगने चले गये।

वे क्रमशः जहाँ राजा राम का मन्दिर था (रामेश्वर सम्भवतः), वहीं चले गये। उस समय एक दारिका गंगा^२ में स्नान कर रही थी। वहाँ पानी से बहती एक पोथी उसको मिली। उसने उसे उठाकर बाहर निकाला। तब तक वह ब्राह्मण भी वहीं पहुँचे। उस पोथी को उसने ब्राह्मण को दिखलाया। ब्राह्मण ने देखा कि यह वही पोथी थी जिसको उसने खुद गंगा में फेंक दिया था। इसे देखकर उसने हँस दिया। दारिका ने कारण पूछा, तो उन्होंने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया। दारिका ने कहा— अब भी इसकी साधना करनी चाहिए, मेरे पास बीस सेर से भी अधिक सोना है।

१. व्यालिपा के रसायन विशेषज्ञ होने का वृत्तान्त अन्यत्र भी बहुत जगह मिलता है, वह रसायन शास्त्र के भी विशेषज्ञ थे—

गोविन्दभगवत्पादाचार्यो गोविन्दनायकः,

चर्वटिः कपिलो व्यालिः कपालिः कन्दलायनः।

एतेऽन्ये बहवः सिद्धा जीवन्मुक्ताश्चरन्ति हि।

तनुं रसमयीं प्राप्य तदात्मक काञ्चनाः ॥

(श्लोक—८,९ अध्याय ९, सर्वदर्शन संग्रह माधवाचार्य कृत)

२. यहाँ गंगा से तात्पर्य दक्षिण की कोई नदी है।

ब्राह्मण ने कहा—पहले भी इसे सिद्ध करने से यह दशा हो गयी, क्या अब कुछ होगा? दारिका ने ब्राह्मण को इस काम के लिए विवश किया, बहुत-सा पारा खरीदकर वे एक वर्ष तक साधना (अमृत-साधना) करते रहे। 'रक्त-अम्लक' नामक औषधि के न जानने से फिर उन्हें असफलता ही हो रही थी। एक दिन दारिका स्नान कर रही थी, प्रकृति पुष्प जो उसकी उँगली पर लगे थे, उन्हें गिराया तो कुछ कण-उछल कर उस रसायन औषधि में जा गिरे। तत्काल रसायन औषधि सिद्ध होने के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे। ब्राह्मण ने दारिका से यह कहकर कि तुमने इस रसायन-पात्र में क्या डाल दिया? पूछा, तो उसने उत्तर दिया— यह कुंछ कण प्राकृतिक पुष्प के कण हैं, यही होगा, अन्य मैंने कुछ नहीं गिराया। इससे दोनों प्रसन्न हुए।

उस दारिका ने (उस साधक) ब्राह्मण के भोजन में तीता (औषधि विशेष जिसका रस बहुत तीता होता है) लगाकर दिया, तो रोज उसको (ब्राह्मण को) उसके तीतापन का अनुभव नहीं होता था। उस दिन (भोजन में तीता पड़ा हुआ, यह) उनको ज्ञात हो गया। दारिका ने उनसे पूछा—क्या सिद्ध हो गया है?

ब्राह्मण—क्यों, आपके पूछने का क्या कारण है?

दारिका—पहले भोजन में तीता लगने पर आपको उसका तीतापन ज्ञात नहीं होता था, पर आज होने लगा है।

ब्राह्मण—हाँ, सिद्ध हो गया है, इसका लक्षण (रसायन औषधि स्वतः) दक्षिणतः चक्र काटना और उसमें अष्ट-मंगल चिह्न परिलक्षित होना आदि होता है।^१ यही

१. रसायन जब पूर्ण रूप से सिद्ध होने लगता है, उस समय उस द्रव्य में विशेष प्रकार के लक्षण परिलक्षित होने लगते हैं। वह स्वयं उबलने लगता है और उबलते समय दक्षिण की ओर चक्र काटते हुए घूमता है, उसमें भी श्रीवत्स आदि का आकार उभरता है। रसायन की सिद्धि तीन तरह से होती है। पुण्य आदि सम्भार पूर्ण होने से जैसे सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करने ही वाले थे, उनके पेय क्षीर में उक्त लक्षण दिखलाई पड़ा था। दूसरा मन्त्र शक्ति से सिद्ध शृङ्गीपा ने अपना मूत्र डालकर बहुत से पानी रसायन-द्रव्य बना डाले। तीसरा विभिन्न द्रव्यों के योग से आचार्य नागार्जुन ने बनाया (नागार्जुन रसायन-शास्त्र, तन्मयुर संग्रह)।

इसमें दिखलाई पड़ रहे हैं। दारिका ने उस रसायन-द्रव्य को स्वयं ब्राह्मण, दारिका और उनकी एक सेविका, इन तीनों ने खाये। तीनों को 'आयु की अमरत्व सिद्धि का लाभ हो गया।'

ज्ञान के प्रति कंजूसी एवं पर-ईर्ष्या की मात्रा अधिक होने से उसने अपनी उक्त विधि को किसी को नहीं बताया। यह कोई न जाने, इस उद्देश्य से वे तीनों देवलोक चले गये। पर वहाँ किसी भी देवता ने उसका सेवन (उपासना और दीक्षा ग्रहण) नहीं किया, तो वे वहाँ से वापस (मर्त्यलोक) आये और महाराज क्लिम्बर^१ के राज्य में चले गये। वहाँ एक विशेष स्थान पर रहने लगे। वह स्थान, एक विशाल चट्टान, जिसकी ऊँचाई आठ योजन है, चौड़ाई दस कोस है, उस क्षेत्र के चारों ओर पंक (कीचड़) से घिरा हुआ है। उस चट्टान के मध्य में एक वृक्ष था, उसी की छाया में वे लोग रहने लगे।

इस प्रकार उस विधि की दीक्षा-परम्परा विच्छिन्न हो गयी और जम्बूद्वीप में इसकी परम्परा नहीं रही।

बाद में आचार्य नागार्जुन 'खेचर' (आकाश गमन) की सिद्धि प्राप्त करके एक विशेष उपानह (जूता) की सहायता से वहाँ पहुँचे। जाते समय एक उपानह वहाँ पहुँचने से पहले कहीं छिपा दिया और एक लेकर वहाँ पहुँचे। प्रणामपूर्वक उस (ब्राह्मण) से दीक्षा के लिए प्रार्थना की। उस (ब्राह्मण) ने पूछा—तुम यहाँ कैसे आये हो?

नागार्जुन ने कहा—इस उपानह (जूता) की सहायता से आया हूँ।

उस ब्राह्मण ने उन्हें अपने ज्ञान एवं उस रसायन-विधि की दीक्षा दी। अन्त में उसने कहा कि दीक्षा की दक्षिणा के रूप में, तुम अपने इस उपानह, जिसकी सहायता से यहाँ आये हो, मुझे दे दो। नागार्जुन ने उस उपानह को उन्हें अर्पित कर दिया। उन्होंने एक उपानह जो अपने पास रखा था, उसको पहनकर

१. कोलम्बर, क्लम्बर, कुलम्बर।

उसकी सहायता से वहाँ से जम्बूद्वीप लौट आये। (दक्षिण) श्रीपर्वत में रहकर उसी की साधना की और उस विधि को जगत्-कल्याणार्थ सबके लिये सुलभकर दिया।

यह कहा जाता है कि मात्सर्य आदि क्लेश से युक्त लोगों के गुण(ज्ञान) प्राप्त करना बहुत कठिन है। साथ ही सम्यक् गुण की प्राप्ति, गुरु की आज्ञा उपदेश के बिना सम्भव नहीं हैं। अतः गुरु का उपदेश और उसकी अनुमति सब विद्या के लिए अत्यावश्यक हो जाती है ॥

गुरु व्यालिया का वृत्तान्त समाप्त ॥

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त आचार्य अभयदत्तश्री कृत समाप्त ॥

भोट भाषा में अनुवादक-भिक्षु-स्मोन्-ग्रुप-शेस् रब (मोन-डुब शेरब) ने किये हैं।

परिणामना(श्लोक-) जैसे लोक प्रसिद्ध लूईपा आदि चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त, उत्तम कुल और मगध देश में जन्में सम्यग्गुणालङ्कृत अभयश्री के मुख कलश से सम्भूत अन्यत्र (भाषान्तर में) मैंने सम्यक् अनुवाद कार्य किये हैं, जिससे जो पुण्य प्राप्त हैं, उससे विष से पीडित लोग (जगत्) सञ्जीवक गुरु के द्वारा अनुगृहीत होकर विष ही औषधि के रूप में प्रतीत हो।

चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त, भारत के चम्पारण देश के महागुरु अभयदत्तश्री के मुख-कमल से जैसे कहा है, वैसा ही भिक्षु-स्मोन्-ग्रुप् शेस् रब् द्वारा सम्यक् रूप से अनूदित किया गया है ॥

शुभमस्तु ॥

༡) ལུ་ཉི་ཡུ་ལོ་རྒྱུ་

དེ་ལ་གུ་རུ་ལུ་ཉི་ཡུ་ལོ་རྒྱུ་ནི། (འདིར) ལུ་ཉི་ཞེས་བྱ་བ་
 ཉི་ཉི་རྒྱ་ལྟོ་གསོལ་པ་ལས་མཚན་དུ་བཏགས་ (པ) ལྟེ། དེ་ཡང་སྤྲིང་
 ལའི་སྤྲིང་གི་རྒྱལ་པོ་གཅིག་ལ་རྒྱལ་སྤྲིང་ཀྱང་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་བྱ་དང་མཉམ་པ།
 རྒྱལ་པོའི་ཁང་བཟང་ཐམས་ཅད་ནི་རིན་པོ་ཆེ་དང་། ལུ་ཉི་ག་དང་། གསེར་
 དངུལ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པ་ཡོད་ལ། སྤྲིང་ཀྱང་གསུམ་མངའ་བ་ལས།
 ཡབ་རྒྱལ་པོ་གྲོང་ས་ནས་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཆེ། རྩིས་མཁན་རྣམས་ལ་སྤྲིང་གང་
 གིས་རྒྱལ་སྤྲིང་ཟིན་ཟིན་པ་རྩིས་བྱས་པས། དེ་ན་རེ། སྤྲིང་བར་པས་རྒྱལ་སྤྲིང་
 བཟུང་ན་ཆབ་སྤྲིང་བརྟན་པ་དང་། འཁོར་འབངས་སྤྲིང་པ་ལ་སོགས་པའི་
 ཡོན་ཏན་ཡོད་དོ་ཟེར་བ་དང་། ཡབ་ཀྱིས་རྒྱལ་སྤྲིང་དེ་ལ་གཏད་། (དེ་ནས་)
 གཅེན་དང་། གཅུང་དང་། འབངས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་རྒྱལ་ཆབ་དུ་
 དབང་བསྐྱར་བ་དང་། དེས་ (རྒྱལ་སྤྲིང་) མ་འདོད་ནས་སྤོས་པར་བརྟམས་
 པ་ལས། གཅེན་དང་། གཅུང་དང་། འབངས་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཟུང་

1 - 'ཉི' - ལྷུ་ལྷུ་གུ་གྲག་ ཤོག་ ༡༠ 14.
 2 པེ་ཉི་ - 'སྤྲིང་ལའི་སྤྲིང་' ཞེས་མི་འདུག་ - ཤོག་ ༡ ཤོང་, དེ་ཉིད།
 3 འདིར་ - 'ཡབ་ཀྱིས་རྒྱལ་སྤྲིང་དེ་ལ་གཏད་' - ཅེས་དང་། - 'ཡབ་རྒྱལ་པོ་གྲོང་ས་ནས་དུས་རེ་ཞིག་
 གི་ཆེ' ཞེས་པའི་ཆོག་གཉིས་ལྟེ་ལགལ་བས་བརྟག་དགོས། དོན་ནི་ - ཡབ་རྒྱལ་པོས་དུས་
 རེ་ཞིག་གི་ཆེ ང་གྲོང་ས་ནས་སྤྲིང་གང་གིས་རྒྱལ་སྤྲིང་ཟིན་ཟིན་ཞེས་རྩིས་མཁན་རྣམས་ལ་རྩིས་བྱས་
 དུ་བརྟམས་པས། དེ་ན་རེ། ཞེས་པར་མངོན་ལ། རྒྱ་སྤྲིང་གི་དབང་གིས་ཆོག་གོང་འོག་འདྲིས་
 པར་ལྷང་དོ།

ནས་གསེར་གྱི་སྒྲོག་གི་ལྷགས་སུ་བཅུག་པ་དང། རྒྱལ་ལྷ་དེས་འཁོར་དང་བཙོན་
 བསྐྱེད་ཀྱི་ལ་གསེར་དང་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་བྱ་དགའ་བྱིན་ནས། མཚན་
 ལ་གོས་ཚེམ་བུ་ཅན་བྱོན་དེ། རྒྱལ་མ་ལ་ཡང་གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་
 བརྒྱུད་པ་བྱིན་ནས། རྒྱལ་པོ་རྣམས་ལའི་ཡུལ་རྣམས་ལྷ་སྐྱེས་པ་དང། ལྷན་
 དར་ཟབ་ལས་བྱས་པ་པོར་ནས་གྲིལ་སྐྱེས་པའི་ལྷན་ལ་འདུག་ཅིག་ནས་རྒྱལ་ས་སྤངས་
 ནས་ཐལ་བའི་ནང་དུ་ཉལ་ལོ། །

རྒྱལ་ལྷ་དེ་གཟུགས་བཟང་ཞིང་བལྟ་ན་སྐྱུག་པས། ཀུན་གྱི་བཟའ་བ་
 དང་བཅའ་བ་ལ་སོགས་པ་མི་བྲལ་བ་ཉིད་དུ་སྦྱིན་མོ། །

དེ་ནས་དོ་རྗེ་གདན་དུ་བྱོན་པས་ (དེར་) མཁའ་འགྲོ་མས་རྗེས་སུ་
 བཟུང་སྟེ། བདམས་པ་བསྟན་དེ།⁶ རྒྱལ་ལྷ་རང་གི་བཞུགས་ས་སྐྱུལ་ལྷ་
 དུར་བྱོན་པ་དང། མི་ཀུན་གྱིས་ཟས་བྱིན་པ་ཟ་ཞིང་།⁷ དུར་ཁོད་དུ་ཉལ་

1 ལྷ་མ་ - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག - 3/ན. 14
 2 “རམ་ལའི་ཡུལ་”-ལྷུབ་ཀུན་ཤོག - 3/ན.། དེ་ཉི་བསྟན་འགྱུར་དང། ལྷུབ་ཐབས་ཀུན་
 བདུས་དཔེ་གཉིས་སུ་-རྣམ་ལའི་ཡུལ་-ཞེས་པ་འདུག་ཀྱང། “རྣམ་འོ་གནས་” ཞེས་དག་
 པར་མངོན་མོ།
 3 “བཏོངས་ནས་” ལྷུབ་ཀུན་ཤོག་-3 དེ་ཉིད།
 4 ཉིད་དུ་-པེ་ཉི་ལ་མེད། ཤོག་ 3, ཤོང་
 5 ‘བཟུང་’ ལྷུབ་ཀུན་ཤོག་ 3, 14.
 6 ‘དེ་ནས་’, རྒྱལ་པོ་གཞུགས་ས་པ་ལྷ་ལྷུབ་ལྷ་དུར་བྱོན་ནས།-ལྷུབ་ཀུན་ཤོག་ 3 ན 14.འདི་དག་གོ།
 7) ཟ་བཞིན་ - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག་ 3/ན. 14.

གི་མེད་ལྟུང་པ་ལས། (ཉི་མེད་ལྟུང་པ་) ཚོགས་འདུས་སུ་བྱོན་ནས་ཆང་འཚོང་²
 མའི་གནས་སུ་སྤྱིན་པ་དང། ཆང་འཚོང་མའི་གཙོ་མོ་དེ་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་
 མཁའ་འགྲོ་མ་ཞིག་ཡིན་པས། དེས་རྒྱལ་བུ་ལ་³བལྟས་ནས་འདིའི་འཁོར་ལོ་
 བཞིའི་དྲི་མ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ནི་དག་ནས་འདུག་པ་ལ། ལྷིང་ག་⁴ན་
 སྤྱན་མ་ཙམ་ཞིག་⁵འགྲུབ་ཀྱི་རྟོག་པ་མ་དག་པར་འདུག་གོ་ཞེས་ཟེར་རོ། དེ་
 གནས་བུད་མེད་⁷དེས་རྒྱ་མའི་ནང་དུ་ཟས་རུལ་བ་སྤྲུགས་ནས་བྱིན་པ་དང།
 རྒྱལ་བུས་དེ་བསྐྱུར་བས་མཁའ་འགྲོ་མ་དེ་ཁྲོས་⁸ནས། ཁྲོད་ཀྱིས་ཟས་བཟང་
 འན་⁹གྱི་རྒྱམ་རྟོག་¹⁰མ་སྤངས་ན་ཚོས་ག་ལ་འོང་ཞེས་སྐྱུས་པས།¹¹ རྒྱལ་བུ་
 དེས་རྒྱམ་རྟོག་དང་མཚན་མ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་གོགས་¹²སུ་འདུག་སྐྱམ་ནས།

1 ཀྱིན་རྒྱལ་ཀུན་གྲོག་ ༣ དེ་ནས་, 14.
 2 'ཆང་ཚོང་མའི་' ་ཤེ་ཉི་, གོག་ ༣, གོང་ དེ་ཉི་ད།
 3 'རྒྱལ་བུ་ལ་ལྟས་ནས་' ་ཤེ་ཉི་, དེ་ཉི་ད།
 4 'ལྷིང་ག་' ་ཤེ་ཉི་, དེ་ཉི་ད།
 5 'སྤྱན་མ་ཙམ་གཅིག་' ་ཤེ་ཉི་, དེ་ཉི་ད།
 6 'རྟོག་པ་' ་ཤེ་ཉི་, དེ་ཉི་ད།
 7 'དེ་ནས་མེས་' རྒྱལ་ཀུན་, གོག་ ༣, པ-14
 8 དེ་ནས་འཁྲོས་ནས་ ་ཤེ་ཉི་, གོག་ ༣, གོང་ དེ་ཉི་ད།
 9 གུལ་པ་ཐོབ་པ་ལ་ལྟ་སྤྱོད་ རོ་གཅིག་པ་དགོས་པ་ལས་སྤྱོད་ལམ་གྱི་དམིགས་པ་ལ་མཚན་འཇིག་མ་
 འགག་ན་གུལ་པ་མི་ཐོབ་ཅེས་པ་འོ།
 10 'རྟོག་པ་' ་ཤེ་ཉི་ དེ་ཉི་ད།
 11 'སྐྱུས་པ་' ་ཤེ་ཉི་ དེ་ཉི་ད།
 12 'འགོགས་སུ་' ་ཤེ་ཉི་, དེ་ཉི་ད།

རྣམ་ཉོག་དང་མཚན་མ་སྤངས་ཏེ། ཉ་པས་གཞུག་ནས་ཉ་བསད་པའི་རྒྱ་མ་ས་ལ་
བསྐྱུར་ལ་རྣམས་སྤངས་ནས། དེ་བཞིང་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་བསྐྱུབས་སོ།²

ཉའི་རྒྱ་མ་བ་བ་ཉ་འཚོང་³བའི་བུད་མེད་ཀུན་གྱིས་མཐོང་ནས།
ཐམས་ཅད་ཀྱིས་‘ལུ་ཉི’⁴ལུ་ཞེས་སྐྱབས་པ་དང་། རྩོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་
དུ་‘ལུ་ཉི་པ’ ཞེས་བྲགས་ཏེ། དེའི་མིང་དང་(ལ)དངོས་བུལ་ཐོབ་པོ།
འདིའི་འཕྲོས་དུ་རི་ཀུལ་དང་། རི་རྗེ་⁵ལུ་སྐབས་སུ་ཡང་འབྱུང་འོ།⁶

ཡུལ་ཚེན་ལུ་ཉི་ལུ་རི་རྣམ་པར་ཐར་པ་རྩོགས་སོ།

1 རྒྱུར་བ་རྣམས་པེ་ཉི་, དེ་ཉིད།
2 ‘བསྐྱུབས་ཏེ’-རྒྱུབ་ཀུན་ འོག་ ༡/བ. 14 པེ་ཉི འོག་ ༩,གང་དེ་ཉིད།
3 ‘ཉ་ཚོང་མའི་བུད་མེད’ - པེ་ཉི ༩,གང་ 175 Vol 87 ཉ་ཚོང་མའི་བུད་མེད་ - རྒྱུབ་ཀུན་
འོག་ ༩ བ 14.
4 ‘ལུ་ཡི-པེ་ཉི འོག་ དེ་ཉིད།
5 ‘རི་རྗེཔ-པེ་ཉི’, རྒྱུབ་ཀུན་གཉིས་ཀར་,འོག་ དེ་ཉིད།
6 ‘བུད་འོ-པེ་ཉི’, དེ་ཉིད།
† དུ་རྒྱ་རྒྱ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཚོས་འབྱུང་དུ་རྒྱལ་པོ་འདིའི་ལུལ་—ལོ་པར་ཞེས་པ་ཡིན་གསུངས།—འོག་
༡༧༧ ལྷ་ར་རྒྱ་ཐའི་དཔལ།

3) གུ་རུ་ལྷོ་ལྷོ་སྤྲོ་

གུ་རུ་ལྷོ་ལྷོ་སྤྲོ་ལོ་རྒྱུ་ནི། རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་†གཅིག་
 སེའུ་ཁྱིའི་བཞུགས་པའི་ཆེ། ཡུལ་གཞན་ཞིག་ནས་རྒྱལ་འབྲུལ་པ་ཞིག་ཡིན་པའི་
 བྱང་དུ་བྱོན་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་ཅེ། རྒྱུང་རྒྱལ་ཁམས་ཐམས་ཅད་དུ་འབྱུངས་
 ལ་ཉོན་ཅི་མོངས། གསུངས་པས། (རྒྱལ་འབྲུལ་པ་ན་ཅེ།) “བདག་མི་
 རླུག་སྤྱོ། རྒྱུང་རང་ཉོན་མོངས་སོ།། དེ་ཅི་དེ་ན་? ཉིད་རྒྱལ་སྤྱིད་ཤོར་
 གྱིས་དོགས། འབངས་རྣམས་མ་མགུའི་དོགས་པས་ཉིད་རང་རླུག་བསྐྱེད་ལོ།།
 བདག་ནི་མེད་ཅང་དུ་འཚོངས་ཀྱང་མི་ཆིག་དུག་ཟོས་ཀྱང་མི་འཆི། བས་
 པ་དང་། འཆི་བའི་རླུག་བསྐྱེད་མེད་དེ། བཅུད་ལེན་གྱི་གདམས་ཅད་ག་
 ཡོད་” གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་དང་ནས་“དངོས་ཀྱིས་ཉིད་བཞིན་དུ་རྒྱལ་

1 ‘རྒྱལ་འབྲུལ་ཞིག་-ཅེས་པ་འདི་ སློབ་དཔོན་འཇམ་དཔལ་བཤེས་གཉེན་’ ཡིན་པར་ཤད་དཀར་
 རྩེ་འབྲུང་ལས་གསུངས་དེ། དེ་ལས། འཇམ་དཔལ་བཤེས་གཉེན་གྱིས་འཇམ་དཔལ་གྱི་རྩེ་
 དེའི་སྣོད་དུ་གྱུར་པ་སུ་འདུག་གཟིགས་པས། རྣམ་སུའི་སྤྱིང་ནས་ (དེ་) ཉིད་དེ། འཇམ་
 དཔལ་ཞི་ཁྱོད་དེ་གྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐྱུར་བའི་མཚན་ “སྤྱིག་པའི་རྩོ་ཇེ།” / ཞེས་སོགས་
 ལུང་། པད་ཚོས་ ‘ཤོག་ ༤༧ (ཀལ་)’

2 “ལེགས་པར་སྐྱུངས་པའི་རྒྱལ་འབྲུལ་པ་ཅིག་” རླུབ་ཀྱན་ ཤོག་ 3/བ. 14.

3 ‘འབྱུངས་པ་ - ཤེ་ཉི ཤོག་ -3, ཤོང་, 175 Vol 87

4 ‘ཡུལ་རང་ཉོན་མོངས།’ -ཤེ་ཉི ཤོག་ -3, དེ་ཉིད།

5 ‘མཚོངས་ཀྱང་’ རླུབ་ཀྱན་ཤོག་ 3 - དེ་ཉིད།

6 ‘གདམས་ཅད་ཡོད་’ -ཤེ་ཉི ཤོག་ -3, 14.

7) ‘དངོས་ཀྱི་ཉིད་བཞིན་’ - ཤེ་ཉི ཤོག་དེ་ཉིད།

ཁམས་འགྲིམ་པར་ནི་མི་རྣམས་མོད། འོན་ཀྱང་རང་གི་རྒྱལ་སར་སྣན་ལ་འདུག་
ནས་སློམ་པར་རྣམས་ན། དངོས་ལ་ཉིད་ཀྱི་གདམས་ངག་ཅིག་ལྟ། བྱས་ནས་
ཕུག་བྱས་པས།† སློབ་དཔོན་གྱིས་གནང་སྟེ། ཀྱིའི་དོ་རྗེའི་དབང་བསྐྱུར།
གདམས་ངག་བྱིན་ཅན་དུ་པ་གཅིག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་བསློམ་དུ་བཅུག་གོ།

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་རང་ཉིད་ཀྱི་སོངླའི་ཁྲི་ལ་ཟ་འོག་གིས་སྤྲོས་པའི་སྣན་
ནང་ཚངས་ཅན་དང་། སྤྲས་ལ་སོགས་པའི་སྣང་དུ་བཅུན་མོ་དང་སློན་པོའི་
ཚོག་དང་། རོལ་མོའི་བྱི་བྲག་སྣ་ཚོགས་པས་བསྐྱོར་ནས་བསློམས་པས་མཚན་
ཡང་འོངས་སྤྱོད་པའམ། སྤྲོག་པ་ལ་སོགས་པས་ལྷོ་ལྷོ་པ་ཞེས་བྲགས་སོ།

གདམས་ངག་དངོས་ནི་ཕུག་གཡས་པའི་སོར་གདུབ་ལ་མ་ཡིངས་པར་
བསློམ་པའོ། །དེ་མི་འགྱུར་བར་འདུག་བྱས་པས། དེའི་ནང་དུ་དབྱེས་པ་དོ་
རྗེའི་ལྷ་ཚོགས་བསློམ་པའི་གདམས་ངག་བྱིན་པ་དང་། དེ་ཡང་མི་འགྱུར་བར་
འདུག་གོ་ཟེར་ (བ) ཅ། བསྐྱེད་རྗེས་ཟུང་འཇུག་དུ་བསློམས་པས་རྟོགས་པ་

1 'མི་རྣམས་' - དེ་ཉི - བོག་ དེ་ཉིད།
2 'སློམས་པར་རྣམས་ན།' - དེ་ཉི - བོག་ དེ་ཉིད།
† 'གདམས་ངག་ཅིག་ལྟ།, བྱས་ནས་འོངས་པས།' - སྐབས་ཀྱི་བོག་ 3/བ 14.
3 'བྱིན་ནས' - དེ་ཉི བོག་ - 3, འོག, དེ་ཉིད།
4 'ཟ་འོག་ལ་སོགས་པའི་སྣན་' - དེ་ཉི - བོག་ དེ་ཉིད།
5 'རྒྱས་ལ་སོགས་པ' - དེ་ཉི - བོག་དེ་ཉིད།
6 'བར་སློམ་པའོ' - དེ་ཉི བོག་དེ་ཉིད།

རང་བྱུགས་སུ་བར་ནས་¹ །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། མངོན་པར་
ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་དུ་མ་དང་ལྷན་ནོ།།

དེས་ན་སླ་མའི་གདམས་² ཡང་གི་བརྩོན་པ། སྤྲ་མའི་ལས་
འཕྲོ་དང་གསུམ་འཇོམས་ན་འདོད་ཡོན་མ་སྤངས་ཀྱང་གྲོལ་ལོ།།.

དེས་ཀྱང་འགྲོ་དོན་དཔག་དུ་མེད་པ་མཛད་ལ། མིང་དུ་ལྷི་ལ་ཕྲ་
ཞེས་སྟོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲུ་བྱེད་ཤིང་། མཐར་མཁའ་སྐྱོད་དུ་
གཤེགས་སོ།།

གྲུ་ཏུ་ལྷི་ལ་ཕྲའི་ལོ་རྒྱུས་ཇོགས་སོ།།

1 ‘བར་པས’ -སྤྲུབ་ཀྱི་ཤོག་ ༩/ན. 14

2 ‘གདམས་ཡང་གི’ -པ་ཉི -ཤོག་ དེ་ཉིད།

3) གུ་ཐོ་མི་རྒྱུས།

གུ་ཐོ་མི་རྒྱུས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། བར་ཕྱོད་རྒྱ་རྒྱ་དེ་བ་སྤུལ་འི་²ཡུལ་གྱི་ཕུར་ར་
³སྐྱེ་འབྱུང་ས།། སོ་མ་ཕུརྱེ་⁵ཞེས་ཕྱ་བའི་གཙུག་ལག་ཁང་དགོ་འདུན་སྒོང་གི་སྐྱེ་
 འཚོ་⁶ཡོད་པའི་ཚོས་འཁོར་ཆེན་པོ་ཅིག་⁷ཡོད་པ་ལ། མི་རྒྱུས་དེ་དག་སྒོང་
 ཡིན་ཡང་། དབང་བསྐྱར་ཞུས་ནས་དོ་རྗེ་མག་མོའི་བཞུས་པ་ལོ་བཅུ་
 བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་འབུམ་ཕྱག་བརྒྱ་ལན་གཉིས་བཞུས་པས། མི་ལམ་གྱི་
 རྟགས་ཅམ་ཡང་མ་བྱུང་བས། ཐུགས་མུག་སྒྲིལ་བྱེད་བ་ཆབ་⁹ཁང་དུ་

- 1 བོད་འགྲུར་སྐད་པར་ལྷོ་དཔར་པེ་ཅིང་དཔར་མ་རྒྱལ་སྐད་སྐད་ལོ་རྒྱུས་ལྷན་ཁག་གི་
 'བོ་ཞེས་པ་ཡོད་ལ། དེའི་ཚབ་བོད་ཡིག་ 'མ་ ཡིན་གྱི་ 'བ་ མིན་མོ། །སྤྱིར་བོད་
 རྒྱུ་ལ་ཆིག་བར་གྱི་ 'བ་ ལ་ 'མ་ རྒྱ་ཐོབ་ཀྱང་། རྒྱ་བས་འདིར་ 'མ་ རྗེ་ཡིག་དོད་ཡིན་
 གྱི་ཆིག་དོད་མིན་མོ། དེས་ན་ 'མ་ ཉིད་ཡིགས་གྱི་ 'བ་ འཕད་པར་མི་སེམས་སོ།
- 2 པེ་ཉི་ཤོག་ 3 འོག་) རྒྱུ་ལུ་ཤོག་ 3/ན.དཔེ་གཉིས་དེ་, དཔེ་གསུམ་དུ་མཐུན་པར་,
 'རྒྱ་དེ་ལྷོ་ལ་' ཞེས་འདུག་ཀྱང་། དོན་ནི་ 'རྒྱ་དེ་ལྷོ་ལ་' ཞེས་ཕྱ་བ་ཉིད་དུ་སྐྱེད་བས་ཡི་
 བོ་ཚོར་བ་ཡིན་ནམ་དཔུང་།
- 3 རྒྱུ་ལུ་ཤོག་ 3/ན. 14 པེ་ཉི་ཤོག་3, འོག་175 Vol 87 -གཉིས་ཀར་ -'ཉི་ལུ་རར་'
 ཞེས་འདུག་ཀྱང་། ཡིག་ཚོར་ཡིན་ལ། དོན་གནས་ 'ཉི་ལུ་རར་' ཞེས་པའོ།
- 4 བོད་རྒྱལ་དཔེ་གཉིས་ཀར་-'འབྱུང་ས་པ', ཞེས་བྱུང་། ཤོག་, སོགས་དེ་ཉིད།
- 5 'སོ་མ་རྒྱ་བའི་བོད་, ཕུར་ཞེས་ཕྱ་བའི་' པེ་ཉི་ ཤོག་ 3 འོག་ དེ་ཉིད།
- 6 'སྐྱེ་མཚོ་' -པེ་ཉི་ ཤོག་ 3, འོག་ དེ་ཉིད།
- 7 'ཆེན་མོ་གཙུག་' -པེ་ཉི་ ཤོག་ 3 བོད་, དེ་ཉིད།
- 8 'ཡོད་པ་ལས་' - རྒྱུ་ལུ་ཤོག་ 3/ན. 15 14 -དོན་ནི་, 'ཡོད་པ་དེར་' -ཞེས་པའོ།
- 9 'འཆགས་པར་' -པེ་ཉི་ ཤོག་ 3, འོག་ དེ་ཉིད།

བསྐྱུར་འཛམ་ཅི་བདེར་བཞུར་༢། དགོང་༣ཁ་མཚོད་པའི་དུས་སུ་འཕྲིང་བ་མེད་
 པའི་རྟོག་པ་བྱུང་བ་དང་། རྒྱ་གྲུ་མས་མེད་བ་ལག་པར་བྱིན་ནས་གསུང་གི་
 ལྷང་བ་འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ། †

“རིགས་ཀྱི་བྱུང་ས་འབྱུང་གིས་བསྐྱུར་གྱི་ཁྱོད་ཡི་མ་ཚུགས་པར་རྣམ་
 རྟོག་དང་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་སྤོངས་ལ་སྐྱབ་པ་བྱིས་ཤིག།”

སེམས་ཉིད་གཉུག་མར་གནས་པ་དེ།
 རྩོམ་མེད་མེད་པོ་ཡིན།
 རང་ལ་ཡོད་ཀྱང་གཞན་ལ་རེ།
 ཤིན་དུ་མི་མཁས་བྱིས་པའི་ངང་།
 སེམས་ཉིད་ཡིད་བཞིན་མོར་བྱུང་།
 རྣམ་པར་རྟོག་པས་མ་གོས་པར།

1 ལྷུར་ནས་པེ་ཉི་དེ་ཉིད།
 2 ‘བཞུགས་པའི།’ - པེ་ཉི་ ཤོག་ - དེ་ཉིད་ ལྷུབ་ཀྱན་ ༣/ན. - 14
 3 ‘དགོངས་ཁ’ པེ་ཉི་...དེ་ཉིད།
 4 ‘རྒྱ་གྲུ་མས་’- ལྷུབ་ཀྱན་-ཤོག་ དེ་ཉིད།
 † བྱིན་སྐྱེ པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 5 ཀ-”རིགས་ཀྱི་བྱུང་ས་འབྱུང་གིས་བསྐྱུར་གྱིས་” - ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག་, དེ་
 ཉིད། ཁ-”རིག་ཀྱི་བྱུང་ས་འབྱུང་གིས་བསྐྱུར་གྱིས་” - པེ་ཉི་ ཤོག་, ར རྟོང་།
 དེ་ཉིད།

ཚོག་གིས་སྐྱབ་པ་དམ་པ་ཡིན།། ༩ ཞེས་ཟེར་རོ།།

དེ་ནས་ཡང་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྐྱབས་པས། ལུག་གྲུ་ཚེན་པོ་མཚོག་གི་
དངོས་ཡུལ་ཐོབ་པ་ནས་གཡོག་པོས་ག་དང་ཆང་ཉོས་གིང་བྲངས། དེ་ནས་
གཙུག་ལག་ཁང་གི་ལུག་རོན་ཡོད་པ་བསད་ནས་ག་བྱས་ཏེ་ཐོས་པ་³དང་།
ལུག་རོན་རྣམས་ཟད་ནས། དགེ་འདུན་གྱིས་ངེད་ཀྱི་མཚོན་གནས་སྐྱུ་ཐོས་
བྱས་པས། དེ་ན་ཡོད་པའི་བཅུན་པ་ཀུན་གྱིས་ངེད་ཀྱིས་མ་ཐོས་ཟེར་གྱི་
ཁང་ཀུན་བཟོས་པས་མྱི་རྒྱུ་པའི་བྲང་ཁང་བཟོས་པ་བྲང་བ་དང་། ལྷ་ར་ཁང་
ནས་བཟོས་པས། དེ་ཆང་འབྲུང་ཞིང་ལུག་རོན་གྱི་ག་ཟ་བ་མཐོང་ནས།
དགེ་འདུན་གྱིས་གཞི་བརྟུངས་ཏེ་གནས་ནས་དབྱུང་བར་བྱས་པ་དང་། མྱི་རྒྱུ་
པས་ཚོས་གོས་དང་ལྷུང་བཟེད་སྐྱུ་གཟུགས་ཀྱི་སྐྱུ་རྣམས་སུལ། ལུག་བྱས་ཏེ་སྐོ་
ལ་མ་⁸ཕྱིན་པ་དང་། གཙུག་ལག་ཁང་དེའི་རྩ་ན་མཚོ་ཚེན་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ།

1 'བསྐྱབ་པ' དེ་གི་ གོག་ 'དེ་གི་སྤྱི'།
2 'བསྐྱབས་པས་དངོས་ཡུལ་ཐོབ་ནས།' - དེ་གི་ - གོག་ དེ་གི་དང་།
3 'བསད་ནས་ཐོས་པ་དང་།' - དེ་གི་ གོག་ དེ་གི་དང་།
4 ཀ་དེ་རྣམས་ཀུན་གྱིས་ ངེད་ཀྱིས་མ་ཐོས་ཟེར་གྱི་སྐྱབ་ཀུན་ གོག་ ༩/བ. ཁ-བཅུན་པ་ཀུན་གྱིས་
མ་ཐོས་ཟེར་པ་དང་། དེ་གི་, གོག་ ༩, དེ་གི་དང་།
5 'ལུས་' དེ་གི་ དེ་གི་དང་།
6 'ནས་' དེ་གི་ དེ་གི་དང་།
7 'ལྷ་ར་བྲང་' དེ་གི་- དེ་གི་དང་།
8 'ལུག་བྱས་ཏེ་སྐྱུ་' | དེ་གི་ -དེ་གི་དང་།

དག་སྐྱོང་གཅིག་གིས་ཁྱོད་ལམ་གང་ལ་འགྲོ་བུས་པས། ང་ཁྱིད་ཀྱིས་བསྐྱོད་
 ཡལ་ལ་ལམ་ལ་བཟའ་གཏད་ཅི་ཡོད། གསུངས་ནས་ཚུ་དེའི་ཐོག་ན་ཕར་པ་ལྡེའི་
 འདབ་མ་ལ་ཞབས་བཞག་ནས་པ་ལྡེའི་མེ་དོག་ཚུར་མ་རུབ་པར་བཅད་དེ་³
 སངས་རྒྱས་ལ་མཚོན་པ་བུས་ནས་ཕ་མཐར་སོང་ངོ།།†

སྐྱོ་པུ་རྒྱུ་མི་ཀུན་འགྲོད་པ་སྐྱིད་(སྐྱིས་)དེ།⁵ ཞབས་ལ་འཇུས་དེ་ཕུག་
 བུས་ནས། ཁྱིད་ཀྱིས་ཕུག་རྩོམ་ཅི་ལ་བསད་བུས་པས། ངས་མ་བསད་པ་
 ཡོད་ཟེས། གཞོག་པོས་ཕུག་རྩོམ་གྱི་གཞོག་པའི་དུམ་བུ་རྒྱུ་སྐྱིད་ཀྱི་འོངས་པ་
 དང་། སྐྱོབ་དཔོན་གྱིས་སེ་གོལ་ཅིག་དོག་པའི་མཚན་པས་ (གཞོག་དུམ་དེ་

1 'བུས་པལ' - ལྷུ་ཀུན་ ཐོག་ 3/བ. 6 14 པེ་ཉི་ - ཐོག་ ལ, དེ་ཉིད།
 2 'བཟང་པལ' - པེ་ཉི་ ཐོག་ དེ་ཉིད།
 3 'སྐྱོད་དེ' - ལྷུ་ཀུན་ ཐོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཉི་ - ཐོག་ དེ་ཉིད།
 4 'བུས་དེ' ལྷུ་ཀུན་ ཐོག་ - དེ་ཉིད། པེ་ཉི་, ཐོག་, དེ་ཉིད།
 † ཚིག་འདི་དག་རྒྱ་སྐད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལ་འགྲིག་ཀྱང་། ཐོད་སྐྱོད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལ་ལྟོས་པའི་གོ་
 རིམ་གྱི་དབང་དུ་བུས་ནས་ - "ཕུག་བུས་དེ་སྐྱོལ་ (མ) ཕྱིན་པ་དང་། དག་སྐྱོང་གཅིག་གིས་
 ཁྱོད་ལམ་གང་ལ་འགྲོ་བུས་པལ། ང་ཁྱིད་ཀྱིས་བསྐྱོད་པལ་ལམ་བཟའ་གཏད་ཅི་ཡོད། གསུངས་ནས་གཏུག་ལག་ཁང་དེའི་ཙུ་ན་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡོད་པལ་ཚུ་དེའི་ཐོག་ན་ཕར་པ་ལྡེའི་
 འདབ་མ་ལ་ཞབས་བཞག་ནས་ ཚུར་མ་རུབ་པར་པ་ལྡེའི་མེ་དོག་བཅད་དེ་ སངས་རྒྱས་ལ་
 མཚོན་པ་བུས་ནས་ ཕ་མཐར་སོང་ངོ།།" ཞེས་འགྲུའ་ལེགས།
 5 'ནས་ ལྷུ་ཀུན་ ཐོག་ - དེ་ཉིད། པེ་ཉི་, ཐོག་ དེ་ཉིད།
 6 'སེ་གོལ་ཅིག་མཚན' - ལྷུ་ཀུན་ ཐོག་ 3 བ 6 14.

དག) ལྷན་པོ་ཉིད་དུ་སོང་ནས། དེ་ཡང་སྐར་བས་ཀྱང་ཆེ་བ་དང་བཟང་
བར་བྱས་ཏེ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕྱར་ནས་སོང་བ་ཀྱང་གྱིས་མཐོང་ངོ་།

དེ་ནས་མི་རྒྱུ་པས་དགོ་སྤོང་གི་ཉམས་བསྐྱར་ནས་རྣལ་འབྱོར་པའི་སྤོང་
པ་མངོན་དེ། གཞུང་འབྲུམ་དུ་སྦྱོར་ནས་གཞུང་ལྷ་མོ་ལ་བཟའ་བཏུང་སྤངས་
པས་མ་སྦྱར་བས། སྤོང་དཔོན་ཁྲོས་ནས་ཚུ་ཡར་མར་དུ་བྱོན་གྱིས་བཅད་
ནས་པ་མཐར་གཤེགས་སོ།

དེ་ནས་ 'ཀམས་ཏ' འི་ཐོང་བྱིར་དུ་ཆང་འཚོང་མ་ལས་ཆང་ཉོས་པ་
དང་། དེས་ཆང་ཐོར་བ་གང་དང་འབྲས་སྦྱར་མ་གང་བྱིན་ཡལ་ལོངས་སྤོང་³
ངོ། དེ་ནས་ཞག་སྤེད་གསུམ་གྱི་བར་དུ་ཉི་མ་འགྲོར་མ་འདོད་པ་དང་⁴(ཡུལ་)
དེའི་རྒྱལ་པོ་ཉལ་ནས། འདི་འདྲ་བ་སུའི་རྒྱུ་འཕྱུལ་ཡིན་ཞེས་ཡོངས་སུ་
བསྐྱབས་པར་བྱས་པ་དང་། ཉི་མའི་ལྷ་མོས་རྒྱལ་པོའི་རྒྱུ་ལམ་དུ་-རྣལ་
འབྱོར་པ་ཅིག་གིས་བདག་ཆང་འཚོང་མ་ལ་གཏའ་མར་བཅུག་ནས་ཡོད་ཅེས་
ལུང་བསྟན་པས། རྒྱལ་པོ་དང་སྤོང་བོའི་ཚོགས་གྱིས་ཆང་རིན་བརྩིས་པས་བྱི་
བར་སོང་བ་སོ་སོར་བཅའ་ནས་མི་རྒྱུ་པ་དེ་ཉིད་དུ་མི་སྤང་བར་གྱུར་ངོ།

1 'བསྤངས་པས' - ལྷན་པོ་གྱི་ བོག་ 3 བ
2 'སྤོང་པ་ལ' བེ་ཉི་ བོང་ ༥, འོག་ 176 Vol 87.
3 'ཡོངས་སྤོང་ངོ།' བེ་ཉི་, བོག་ དེ་ཉིད།
4 'མ་འདོད་པས།' བོག་ ༥/ན 7 14.
5 'སྤོངས་པ་བྱས་པ་དང་།' - བེ་ཉི་, བོག་ དེ་ཉིད།
6 'གདམ་ར་བཅུག' - བེ་ཉི་, བོག་ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་ཨིན་ཞེས་བྱ་བའི་མུ་སྒྲིག་གི་ཡུལ་དུ་སྦྱོར་པ་དང་། དེའི་
 ཡུལ་ན་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་སྐུ་ཁྲུ་བརྒྱན་ཅུ་ཙུ་གཅིག་པ་ཞིག་འདུག་པ་ (དེ)
 ལ་ཕྱག་གྱིས་ཟེར་བ་ལ།-ང་མོ་པོ་ཡིན་པས་ལུ་པོ་ལ་ཕྱག་བྱེད་ཡལ་ལྷགས་མེད་
 བྱས་པས། དེའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་གྱིས་འོ་ན་ཁྱོད་གསོད་པ་ཡིན་ཞེས་
 ཟེར་བ་དང་།³ སློབ་དཔོན་ན་ཟེ། ངས་འདི་ལ་ཕྱག་བྱས་ན་སྤྲིག་པ་འོང་
 བས་ཕྱག་མི་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་སྒྲིག་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་དེའི་སྤྲིག་པ་ང་ལ་ཤོག་
 ཅིག་ཟེར་བ་དང་།⁴ སློབ་དཔོན་གྱིས་ཕྱག་ཐལ་མོ་བྱས་པས། མཚུ་དེམའི་
 རྟེན་དེ། བྱེད་ཚལ་དུ་གསུམ་པ་དང་། བར་སྤང་ནས་སྐྱ་ཞིག་བྱུང་ནས།
 སློབ་དཔོན་ལ། ང་ནི་དམ་བཅས་པ་བཞིན་ཉན་ནོ་ཟེ། (སློབ་དཔོན་གྱིས་)
 འོ་ན་མཚུ་པོར་བྱས་པས། གནས་པོར་བས་ལྷགས་པ་ཡང་སྐྱར་འབྱོར་རོ།།
 དེ་ནས་མཚུ་དེམའི་རྟེན་མཚུ་མཚོད་པའི་ཡོ་བྱེད་རྣམས་སློབ་དཔོན་ལ་ཕྱུལ་ནས།

1 'ཨིན་བྱའི' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 2 'ཕྱག་འཚལ་བའི' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད་, པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 3 'འོ་ན་ཁྱོད་གསོད་པ་ཡིན་ཞེས་དེའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ཟེར་བ་དང་།' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ -
 རྟེན་ པེ་ཉི་, ཤོག་ རྟེན་, འོག་ དེ་ཉིད།
 4 'ཟེར་ནས་' - པེ་ཉི་, ཤོག་ དེ་ཉིད།
 5 'རྟེན་དེ' - ལྷུ་ཀུན་ཤོག་ རྟེན་ 7 14
 6 'སློབ་དཔོན' ཅེས་པའི་ཆིག་ པེ་ཉི་ན་མེད་ ཤོག་ རྟེན་ 176 Vol 87
 7 'སྐྱར་འབྱོར' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ རྟེན་, དེ་ཉིད།
 8 'རྟེན' - ལྷུ་ཀུན་ - དེ་ཉིད།

དེ་ནང་པ་སངས་རྒྱལ་པ་གཞན་གྱི་འཚོ་བ་བྱས་ནས་ད་དུང་ཡང་འཕྲོད་ཟེར་རོ།།
 དེ་ནས་སློབ་དཔོན་ལྷ་གར་གསུམ་གྱི་ཞུ་གཞི་ལྟར་འབྲེན་པ་ ཡུལ་དེའི་མི་ཐམས་
 ཅད་སྤྱི་མེད་མཚན་སྤང་ནས། སྤྱི་མེད་མ་གཅིག་ (སྤོང་བྱི་བྱི་རོལ་) ལམ་
 ཁར་བཟང་ནས་ (ལམ་དེ་ནས་ཡོང་ཚད་ལ།) སྤྱི་མེད་གྱི་སྐྱེས་ཀྱིས་བཏབ་པ་
 གྱིན་གཏོང་བ་ཚོས་ལུགས་ཡིན་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་སྤོང་ལ་བྱོན་ནས་གཟུག་
 ལག་ཁང་ཞིག་དུ་ཉལ་བར་བྱས་ནས་འདུག་པ་དང་། སྤམ་ཟེའི་སྤུ་གུ་ཞིག་བྱི་
 རས་ཡོང་བ་ལ་སྐྱེས་བཏབ་ནས་བཏང་བས། སྤོང་དེར་ཟམ་ནི་རྙེད་ལ་ཉལ་
 ས་ནི་མ་རྙེད་པ་དང་། དེ་ནང་པ་སངས་རྒྱལ་པ་ (ཞིག་) དང་འཕྲད་ནས།
 དེས་སྤམ་ཟེའི་སྤུ་གུ་ལ་སྐྱེས་པ། ཡུལ་འདི་ན་ཐམས་ཅད་སྤྱི་མེད་མཚན་
 རས་མི་མེད་ཅིང་། དེ་ཀུན་གྱིས་བར་ཆད་བྱེད་པ་ཡིན་པས་གཟུག་ལག་ཁང་
 བ་གིས་སྤོང་ལ་འདུག་ཟེར་ནས་དེར་བྱིན་པ་དང་། (དེར་) སློབ་དཔོན་གྱི་སྤུ་
 དང་མཇལ་དེ་དེས་སྤམ་ཟེའི་སྤུ་གུ་དང་བྱིན་ལྷུགས་བྱས་དེ་པོར།

1 'ད་དུང་ཡང་' - ལྷ་གུན་ དེ་ཉིད།
 2 'སློབ་དཔོན་གྱིས་' 1' ལྷ་གུན་, སྐོག་ དེ་ཉིད། 'སློབ་དཔོན་གྱི་' བེ་ཉི་ སྐོག་
 ལ དེ་ཉིད།
 3 'དེའི་སྤུ་གུ་མཚན་མཚན་', ཞུ་གཞི་ - བེ་ཉི་ - སྐོག་ དེ་ཉིད།
 4 'བྱོན་པས།' - བེ་ཉི་ སྐོག་ ཡ - སྤོང་ དེ་ཉིད།
 5 'སྐྱེས་ཀྱིན་' - བེ་ཉི་, སྐོག་ ཡ - དེ་ཉིད།
 6 'དེར་ནང་པ་' - བེ་ཉི་ སྐོག་ དེ་ཉིད།
 7 'བེ་སྤུ་གུ་སྤམ་ཟེའི་ལ་' - ལྷ་གུན་ བེ་ཉི་ བེ་ཉི་ དེ་ཉིད།

(མཚན་ལ) ལྷ་མེན་མ་ཀུན་འཚོགས་ནས་མཚོན་པའི་ཡོ་བྱད་ཅི་
 ཡོད། ཟེར་བ་ལ། (ཐམས་ཅད་ཀྱིས) འགྲུའི་ཚོགས་གཞན་ཀུན་ཡོད་དེ་
 འགྲུ་མེན་ལྟེན་ཟེར་བ་དང་། དེའི་ནང་ནས་གཅིག་ན་ལེ། ངས་འགྲུ་
 གཉིས་ཁག་ནས་ཡོད་ཟེར་བ་ལ། (གཙོ་མོས་) བྱིར་ལ་ཤོག་ཟེར་ནས་།
 ལེན་པར་བརྒྱུམས་པ་ན། ལྷ་མེན་ལྷ་གྲུ་ལ་(མི་རྒྱུ་པས) ལྷིན་རྒྱུ་མཚོན་
 (ཡོད་)པས་དེས་འཁོར་མ་རུས། ལེན་པར་ཡང་ཡང་བཏང་བས་ (མཐར་
 མི་རྒྱུ་པ་ཤིང་མགལ་ལྷོག་གི་སྤོང་ན་ཡོད་པ་ (མཐོང་ནས་) ཤིང་དང་བཅས་
 པ་འབྱུར་ནས་འོངས་པ་ལ། ལྷ་མེན་ཀུན་གྱིས་ལྷ་གྲུ་ཚང་ལྷིང་དུ་བྱུང་བ་
 དང་། ལྷི་རྒྱུ་པས་ཁོ་པའི་ཚང་ཀུན་འཐུང་། ལྷ་མེན་ཀུན་གྱིས་ལྷི་རྒྱུ་པ་
 བསད་པར་བྱ་སྐྱུ་མ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གད་རྒྱུངས་ཀྱི་སྐྱ་བསྐྱུགས་པ་དང་།
 ལྷོ་བ་དཔོན་གྱིས་ཁོ་བོའི་གད་མོ་བཏུ་གཉིས་བགད་པས་ལྷ་མེན་མ་ཐམས་
 ཅད་བརྒྱལ་བར་བྱས། ལྷིས་ལྷ་མེན་ཐམས་ཅད་དམ་ལ་བཏགས་ནས་
 ལྷིན་ཚད་སྐྱབས་འགྲོ་བྱེད་པ་དང་། ང་ལ་དད་པའི་སེམས་ཅན་ལ་གཞོན་

1 'ཟེར་བས་' - བེ་ཉི། ། ཤོག་ དེ་ཉིད།
 2 'ཤིང་འགལ་' བེ་ཉི། ཤོག་ ༥, ཤོང་། 176 Vol 87.
 3 'ལྷ་གྲུ་ཚང་' = ཐབ་གཡོག་ ལེས་པ་སྤེ་བརྟེན་ལྟེང་།
 4 'ཐམས་ཅད་ཀྱིས་' ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༥/བ་ 8 14.
 5 'སྐྱ་སྐྱུགས་པ་' །' - བེ་ཉི། ཤོག་ ༥ ཤོང་ 176 Vol 87.
 6 'གད་པས་' - བེ་ཉི། ཤོག་ དེ་ཉིད།
 7 'ལྷིས་ལེན་ཐམས་ཅད་' - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༥/བ་ 8 14.

འཆེ་མ་བྱེད་པར་འདུག་ཅིག་ རྒྱལ་མ་འགྲོ་དང་། སེམས་བརྒྱུད་མི་བྱེད་
པའི་རིགས་ཀྱི་ལྷན་ལ་མི་གཞོན་པའི་ཁྲིམ་ཁྲིམ་བ་རེ་ཙམ་འཕུངས་ཤིག་ བརྒྱ་
ལ་དམ་ལས་འདས་ན་འཁོར་ལོ་འདིས་ཀྱི་ཚོད་ཅིག་ བྱང་གི་གཞོན་སྦྱིན་
འདིས་ཁྲིམ་འཕུངས་ཤིག་གསུངས།

ད་ལྟ་ཡང་ལྔ་གཞོན་སྦྱིན་དང་། འཁོར་ལོའི་གཟུགས་ནམ་མཁའ་
ལ་ཡོད་དོ།། སྤྱང་མའི་འཁོར་དུ་བྱས་ནས་དམ་ལ་བཏགས་ཏེ་སློབ་དཔོན་
གཞན་དུ་གཤེགས་སོ། །

སྤྱང་ཡང་ཕྱིར་ལོག་ནས་དེ་མྱོང་གོཌར་ར་བྱོན་པ་དང་། ལམ་ཁར་
མདུད་ལྷ་དང་། ལྷ་མོ་ལྷ་མ་གཉིས་ཀྱིས་སྤྱུལ་པའི་གྲོང་ཁྱིམ་འབྲུམ་ཚོ་བྱེད་དང་
ལྷ་ལེགས་པར་སྤྱུལ་ནས་མི་རྒྱུལ་ལ་སྤུམ་ཅུ་ཅེ་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལྷའི་གནས་
ཐམས་ཅད་ནས་ཞལ་ཟས་སྤངས་ཏེ་མཚོན་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་བྱས་སོ།།

དེ་ནས་ཆེགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་པ།
སོ་མ་ཕུ་རིའི་གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་དུ།།
རབ་བྱུང་བརྗེན་རྗེས་འདུལ་བྱིས་ལེགས་པར་བརྒྱུངས།།

1 'གཞོན་པ་མ་བྱེད' - རྒྱུབ་ཀྱི་གྲུབ་ཐོབ་ དེ་ཉིད།
2 'སེམས་བརྒྱུད་མི་བྱེད་པའི་ལྷན་ལ' - ཤེ་ཉི་ - ཤེགས་ ཡ བོང་ དེ་ཉིད།
3 'འཕུངས་ཤིག' - ཤེ་ཉི་ - ཤེགས་ ཡ འོག་ དེ་ཉིད།
4 འདིར་ - 'ད་ལྟ་' ཞེས་པ་སྤྲོད་མ་མི་འཇིགས་སྦྱིན་པའི་དཔལ་གྱི་དུས་དེའི་ཆེ་ཡང་ ཞེས་པའོ།།
5 'བསྤྱང་མའི་འཁོར' , ཤེ་ཉི་ ཤེགས་ ཡ བོང་ དེ་ཉིད།

སྲ་མའི་ལས་འབྲེལ་དབང་གིས་སྤྱལ་པ་ཡི།།

དབང་བསྐྱར་བྱིན་ལྷབས་གདམས་པ་ཡང་དག་གནང་།། ༡

རྣམ་པར་རྟོག་པས་ལོ་ནི་བཅུ་གཉིས་སུ།།

བསྐྱབས་ཡལས་མི་ལྷས་ཙམ་ཡང་མ་བྱུང་ནས།།

ངལ་བའི་སེམས་ཀྱིས་འག་ཤེ་ཞིང་སྤང་བ་བསྐྱར།།

དེ་ནས་མཁའ་འགྲོས་གསུང་གི་གནང་བ་བྱིན།། ༢

དེ་ཡི་རྒྱུན་གྱིས་ཁམས་ཀྱི་རྣམ་པ་བརྟེན།།

འཁོར་བའི་མཚན་ཉིད་ཡང་དག་ལེགས་རྟོགས་ཏེ།།

རྟོག་མེད་སྤྱོད་པ་བདག་གིས་སྤྱད་བྱས་ནས།།

ཕལ་ཚེན་སྤེལ་བའི་དགེ་འདུན་ཀུན་གྱིས་ཀྱང།། ༣

འཕྲུལ་བཅས་དག་ཏུ་རྟོགས་ནས་གནས་ནས་ཕྱང་།།

དེ་དག་ཀུན་གྱི་རྟོག་པ་འཇོམས་སྤང་དུ།།

1 'ཡང་དག་སྤང་' - པེ་ཉི, ཤོག་ དེ་ཉིད།

2 'སྐྱབས་པས' - པེ་ཉི, - ཤོག་ ཡ འོག་ དེ་ཉིད།

3 'ཀྱི་ག་ཤེ' པེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད།

4 'རྒྱུན' པེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད།

5 'འདིར་རྟོག་པ' ཞེས་པ གསང་ཐུགས་ཀྱི་རྒྱལ་ལ་ལོག་རྟོག་ཅེས་པའོ།

+ བོད་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པ། རོ་མཐེ་པ་ ཞེས་བྱུང་ཡང་། རྒྱ་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པ་ རོ་བིཏུ ཞེས་འབྱུང་།

ཆུ་ལ་བྱིང་བ་མེད་པར་བསམ་གཏན་བྱས།

གཞུ་བྱེན་ལ་བསྐྱར་ནས་སྣ་ཚོགས་ཟེས། ར

ཉི་མ་གཉེ་བར་བཅུག་ནས་འདོད་ཡོན་སྤྱད།

ཕྱི་པའི་ལྷ་དེན་བཀའ་ནས་ང་རྒྱལ་བཅག།

དེ་མི་ཀེར་ར་སྤ་མེན་ཚོགས་རྣམས་བདུལ།

མཉུ་དེམས་ཡོན་ཏན་མངོན་སྤྱང་ནས། ལ

གྲོང་བྱིར་སྤྱུལ་ནས་བདག་ལ་བསྟེན་བཀུར་བྱས།

དེ་ཙམ་སྤྱོད་པ་བདག་གི་མ་སྤྱད་ན།

མཚན་བཅས་ཚོས་ལ་མོས་པར་ག་ལ་འགྱུར། ཧ ཞེས་གསུངས་དེ།

ལོ་བདུན་བརྒྱ་ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གུ་རུ་འོ་མ་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་

༤) འོ་མ་སྤྱི་སྤྱོད་

གུ་རུ་འོ་མ་སྤྱི་སྤྱོད་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་ ཡུལ་མ་གྲ་ལྷ་ (མགལ་ལྷ)

རིགས་རྒྱལ་རིགས། དངོས་གྲུབ་དབྱེས་པ་དོ་ཇི་ལས་བརྟེས་སོ།

དེ་ཡང་སྤྱི་མ་ནག་པོ་སྤྱོད་པས་འདབ་བསྐྱར། གདམས་ངག་གནང་ནས་དོན་

ཉམས་སྤྱོད་སྤངས་པ་དང་། འདབས་རྣམས་ལ་བྱ་གཅིག་པའི་བསམ་པ་བཞིན་

1 “སྤྱི་མ་སྤྱི་སྤྱོད་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་ གདམས་ངག་གནང་” - བེ་ཉི་ - འོ་མ་ ༤ ཞོང་176. Vol 87. ༢༠ ཕུའ། འི༠- ‘ལུའྲྀཤཾ་ ཀེ་ ཤིཡྲི་’ - རྫ༠- ཕུ༠ ༡༢༠.

དུ་དགོངས་པས། མི་རྣམས་ཀྱིས་སྐྱེ་བའི་ཚེས་ཀྱི་སློབ་ཞུགས་པ་ནི་མ་ཚོར།
 རང་གཞན་གྱིས་འབངས་རྣམས་ལ་བྱམས་པར་འདུག་པས། སྐྱེ་བའི་འདི་ནི་
 ཚེས་པ་འདྲ་བ་ཞིག་འདུག་གོ་ཞེས་འབངས་རྣམས་མཐུན་པར་སྒྲུབ།

དེའི་དུས་སྐྱེ་བའི་སློབ་པོ་ལ་སྒྲུས་པ། འོ་སློབ་གྱི་ཡུལ་འདིར་ཀུན་²མོ་
 དང་འཇིགས་པས་མི་ཀུན་ལ་འཕྲོག་འཇོམས་བྱེད་པ་དང་། རང་གི་བསོད་ནམས་
 ཀྱི་ལས་འཕྲོས་དབུལ་བ་དང་། ཐོངས་པ་³ཤིན་ཏུ་མང་བས། འདི་ཀུན་འཇིག་
 པ་དང་། ཐོངས་པ་ལས་བསྐྱབས་པའི་ཕྱིར་འཁོར་(མཁར་)⁴པའི་ཙོང་ཆེན་པོ་
 བརྟུངས་ལ་ཤིང་གི་སྒོང་པོ་ཆེན་པོ་ལ་ཐོར་ལ་ཞོག་ཅིག གཞོད་པ་དང་ཐོངས་⁵
 པ་མཐོང་ན་ཙོང་དེ་རྟུངས་ཤིག དེ་མ་ཡིན་པར་མ་རྟུངས་⁶ཤིག ཅེས་སྐྱེ་བའི་
 པོས་སློབ་པོ་ལ་སྒྲུས་ན། སློབ་པོས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ། མ་གཞན་⁷ཐོངས་
 པ་དང་འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་རྒྱན་ཆད་པར་བྱས་སོ།

དུས་རེ་ཞིག་ན་སྐྱེ་བའི་སྐྱེ་བའི་རྒྱ་སྐྱེ་སྐྱེ་མཁན་ཆེན་ཅིག་འོངས་ནས་
 སྐྱེ་བའི་ལ་སྐྱེ་དང་འོ་མོ་འབུལ་ཙོང་འདུག་པ་དང་། སྐྱེ་མཁན་དེ་ལ་བུ་མོ་

1 'ཐམས་ཅད་' - བེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 2 'ཡུལ་འདི་ནི་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ - ཤོག་ ༥/བ དེ་ཉིད།
 3 'འཕོངས་པ་' - བེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 4 'མཁར་པའི་ཙོང་ཆེན་པོ་' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༤ ཤོང་, དེ་ཉིད། འདི་དག །
 5 'འཕོངས་པ་' བེ་ཉི་, དེ་ཉིད།
 6 'མ་རྟུང་ཞིག་' བེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
 7 བོད་དཔེ་ཀུན་ལས་ - 'མཐུན་' ཞེས་འདུག་ཀྱང་, སྐྱེ་བའི་ཀུན་ལས་ མཐུན་ - སྐྱེ་བའི་ ཞེས་
 མཐུན་པར་འདུག་ རྩོ- ར༡༠ པུ༡༠ རི༠ པུ༠ ༡༢༠ །

ལོ་བཅུ་གཉིས་། ལོན་པ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚོས་ཀྱིས་མ་གོས་པ་བཞིན་སྐྱབ་ཅིང་།
 མདོག་ལེགས་པ་ལྟ་ན་སྐྱབ་ཅིང་ཡིད་དུ་འོང་བ་པར་ཅན་གྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་
 ཅད་ཚང་བ་ཞིག་འདུག་པ་ལ། རྒྱལ་པོས་རིགས་ངན་སྐྱུ་མཁན་དེ་ལ་གསུངས་
 པ་ - ༡ཉོད་ཀྱི་ཤུ་མོ་དེ་ང་ལ་བྱིན་ཅིག དེ་ན་རེ། ཉིད་མ་གཞུང་གི་རྒྱལ་པོ་
 གྲོང་ཁྱིམ་འབུམ་ཚོ་བརྒྱད་ལ་དབང་བྱེད་ཅིང་། རྒྱལ་པོའི་འབྲོར་པས་བྲེལ་བ་
 མེད་པའི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ལགས་ན། དངོས་ཅག་རིགས་དམན་ཆེད་སྐྱེ་བའི་
 ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྦྱང་ཅིང་སྤང་བར་བྱ་བ་ལགས་ན། དེ་འདྲའི་བཀའ་
 སྐྱུལ་གྱི་གནས་མ་ལགས་སོ།། ཞེས་ཞུས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་གལ་གྱིས་བཅུན་
 རྒྱས་རྒྱལ་པོས་ཤུ་མོ་དང་མཉམ་པའི་གསེར་བགར་ནས་པ་མ་ལའ་བྱིན་ཏེ་ཤུ་མོ་
 རྒྱལ་པོས་ཁྱིམ་རོ།།

དེ་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་ཕྱག་རྒྱུ་བསྐྱེན་པ་མིས་མ་ཚོར་བ་ལ་ལོ་⁷
 “བཅུ་གཉིས་ནས་ཚོར་ཏེ། རྒྱལ་པོས་རིགས་ངན་མ་སྤངས་སོ།།” ཞེས་མ་

1 ‘ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོ་རྒྱུས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚོས་ཀྱིས་མ་གོས་པ་’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༥/བ. དེ་ཉིད།
 2 ‘ཚང་བ་ཅིག’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༥/བ 10 14 ‘ཚང་བ་གཅིག’ - དེ་ཉི་, འོག་ ༥ བོང་།
 176 Vol 87
 3 ‘དེ་ལ་སྐྱས་པ’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༥/བ དེ་ཉིད།
 4 ‘རིགས་དམན་ཅིང་’ - རྒྱལ་ཀུན་, འོག་ དེ་ཉིད།
 5 ‘རྒྱལ་པོའི’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ དེ་ཉིད།
 6 ‘པ་མ་ལ་བྱིན་ཞེ’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 7 ‘བཅུ་གཉིས་ནས་ཚོར་’ - དེ་ཉི་, དེ་ཉིད།

གཞུང་གི་སྤྱི་གསལ་ཐམས་ཅད་དུ་བསྐྱབས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་སྲུང་ལ་སོགས་པ་ལ་
 རྒྱལ་སྲིད་གཏང་ནས་རིགས་ངན་མ་དང་གཉིས་ནགས་གསེབ་དུ་བསྐྱབས་པ་ལ་
 ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་དང་། སྲུང་དང་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་རྒྱལ་སྲིད་མ་ཟེན་
 པར་ཡུལ་ཁམས་སྤར་བས་ཡོས་དུ་ལྷན་འགྲིལ་པ་ལ། མི་ཀུན་གྱིས་གྲོས་
 བྱས་ཏེ་སྤར་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཉིད་བཅའ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་བྱིད་དགོས་ཟེར་ནས། མི་འགའ་
 བཟུང་བཟང་བས་དེའི་བཞུགས་སར་ཕྱིན་ནས་བཟུང་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ནི་
 ཤིང་སྤོང་གཅིག་གི་དུང་ན་བཞུགས་པ། ལུ་མོ་ཚུ་ལེན་དུ་སོང་བ་ན་མཚོའི་ཁ་ལ་
 པ་རྒྱའི་འདབ་མའི་སྤོང་ན་ཚུ་ལ་མི་རྒྱལ་པར་ཕྱིན་ནས། རྒྱ་འདོམ་བཅོ་ལྔ་ཅམ་
 གྱི་འོག་ནས་རྒྱ་སྤངས་ཏེ་རྒྱལ་པོ་ལ་དྲངས་པ་དང་། མི་དེ་ཀུན་ངོ་མཚར་སྐྱེས་
 རྣམས་ཡུལ་དུ་ལོག་མེད་དེའི་གཏམ་བྱས་སོ།།⁶

(དེ་ནས་) རྒྱལ་འབངས་ཀུན་གྱིས་ (རྒྱལ་པོ) སྤྱན་འདྲན་པར་
 བཏང་ནས་སྤྱན་དྲངས་པས། རྣམས་ནས་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་སྟག་མོ་གྲུས་མ་ལ་
 ཞོན། དུག་སྐྱུལ་ལ་ལྷག་བྱས་ཏེ་འདས་པས་མི་ཀུན་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ནས་ཉིད་

1 'ནགས་གསེབ་དུ་བསྐྱབས་' - བོ་ཉི་, འོག་དེ་ཉིད། 'ནགས་གསེབ་དུ་སྐྱབ་པ' - སྐྱབ་ཀུན་
 འོག་དེ་ཉིད།
 2 'སྤར་ལས་' - སྐྱབ་ཀུན་, འོག་ དེ་ཉིད།
 3 'མི་འགའ་ལྟར་བཏང་ནས་' - བོ་ཉི་, འོག་ ༥ འོག་དེ་ཉིད།
 4 'ལྷས་པ' - བོ་ཉི་, འོག་ དེ་ཉིད།
 5 'བཞུགས་པ་ལ།' - སྐྱབ་ཀུན་ འོག་ ༥/ན། བོ་ཉི་, འོག་ ༥ དེ་ཉིད།
 6 'གཏམ་བྱས་པ་དང་།' - སྐྱབ་ཀུན་ འོག་ ༥/ན དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ - འོག་ ༥ འོག

ན་མི་བྱེད་གསུངས་པས། བམས་ཅད་ཉ་ལས་ནས་འདི་འདྲ་བ་ག་ལ་འུ་སྐྱུ་
ཟེར་ནས་འདུག་གོ།

སྐྱུ་ལང་སྐྱུ་ལོ་སྐྱུ་གསུངས་པ། སྐྱུ་སྐྱུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་ལྷ་སྐྱུ་
དམིགས་ཆེ་བར་འདུག་པས་ང་ནི་ཚོས་ཀྱི་སྐྱུ་སྐྱུ་བྱེད་པ་ཡིན། གསུངས་
ནས་དེ་ཉིད་ནས་མཁའ་སྐྱུ་ཀྱི་གནས་སུ་འགྲོ་བའི་དོན་ལ་གཤེགས་སོ།

གུ་རུ་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་ །།

4) གུ་རུ་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་

གུ་རུ་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་ རི་མཚུ་ལྷི་ལྷ་མ་³ ཞེས་བྱ་བའི་རི་
ལ་དཔལ་⁴འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ཞེས་པའི་དོན་པ་ཞིག་⁵ཡོད་པ་ལ། དེའི་ལས་སུ་སྐྱུ་ག་
ཆགས་མང་པོ་བསད་ཅིང་ཟས་སུ་ག་ཟ། དུས་དྲུག་ཏུ་འཚོ་བའི་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་

1 'འདི་འདྲ་བ་གསུངས་' - སྐྱུ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་ ༤/ན དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, ལ ལོང་ དེ་ཉིད།
2 [༧] གུ་རུ་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་ - སྐྱུ་ལྷ་སྐྱུ་ - ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ༤/ན། [༨] གུ་རུ་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་
ལོ་ལྷ་སྐྱུ་, ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ལ ལོང་ 177. vol. 87. འདིར་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་
པར་མངོན་ཏེ། སྐྱུ་དཔེ་དང་, - ཚིག་མཚོ་དུ་ལྷ་སྐྱུ་ལས་མཐུན་པར་འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་
3 “རི་མཚུ་ - ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་སྐྱུ་དུ་ - ལྷི་ལྷ་སྐྱུ་ - ཞེས་བྱ་བུ་” - བེ་ཉི་, - ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ལ ལོང་ དེ་ཉིད།
བདེ་མཚོ་སྐྱུ་དོན་དུ་འདིའི་མིང་ ‘སྐྱུ་སྐྱུ་ཉིད་ལ་གསོ་’ = ‘ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་’ ཞེས་བྱུང་།
བདེ་མཚོ་སྐྱུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ༣༤-༣༧ ལྷ་སྐྱུ་སྐྱུ་གསུང་ ཀ) B. P. 72. Vol. 6.
4 ‘དཔལ་ལྷ་སྐྱུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་’ - སྐྱུ་ལྷ་སྐྱུ་ - ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ ལ/ན ‘འཕྲུ་ལོ་ལྷ་སྐྱུ་’ - བེ་ཉི་, ལོ་ལྷ་སྐྱུ་ དེ་ཉིད།
5 དོན་པ་གཅིག་, བེ་ཉི་ - དེ་ཉིད།

ཅན་མང་པོ་ལ་གནོད་ཅིང་འཆེ་བའི་སྤྲིག་པ་འབའ་ཞིག་བྱེད་པ་དེ་ལ། འཕགས་
 པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱིས་གཟིགས་ནས་སྤྲིང་ཇི་སྤྲིས་དེ། དེ་འདྲུལ་བའི་དོན་དུ་
 བཤམས་པུ་འདྲུ་བའི་དོན་པ་ཞིག་དུ་སྤྱུལ་ནས་དེའི་གན་དུ་སྤྱིན་པ་དང་། བཤམས་
 པུས་དྲིས་པ་བྱོད་སྲུ་ཡིན། དེས་སྤྲས་པ་ང་ཡང་བཤམས་པུ་ཡིན་ཡུས་པས། བྱོད་
 ཀྱི་ཡུལ་གང་ནས་ཡིན། ཟེར་བ་ལ། ཐག་རིང་པོ་ན་ཡོད་ཅེས་སྤྲས་སོ།།

བཤམས་པུས་སྤྲས་པ། བྱོད་ཀྱི་མདའ་གཅིག་གིས་བཤམ་པུ་ལྟ་སོད་དྲིས་
 པས། སྤྱུལ་པས་སྤྲས་པ། སུམ་བརྒྱ་གསོད་བྱས་པས། བཤམས་པུ་ན་དེ།
 འོ་ན་མདའ་དེ་འདྲུ་བ་ང་ལ་ཡང་སློབས་གིག་ཟེར་བ་ལ། རངས་པར་སྤྱུལ་པ་
 དེས་⁶ བཤམས་པུ་བྱོད་དེ་ཐང་ཆེན་པོ་ཞིག་ལ་སྤྱིན་ནས་སྤྱུལ་པའི་བཤམ་ལྟ་བརྒྱ་
 ཅམ་བསྟན་ནས། དེ་བཤམས་པུས་མཐོང་བ་དང་། སྤྱུལ་པ་ལ་དྲིས་པ། བྱོད་ཀྱི་
 མདས་བཤམ་དུ་སོད། དེས་སྤྲས་པ། ལྟ་བརྒྱ་པོ་ཐམས་ཅད་སོད། བཤམས་པུ་
 ན་དེ། བཞི་བརྒྱ་པོར་ལ་བརྒྱ་སོད་བྱས་པས། འཕགས་པའི་སྤྱུལ་པས་བཤམ་

1 བཤམས་པ་ - བེ་ཉི་, འོག་ ལ འོག་ དེ་ཉིད།
 2 'ང་ཡང་བཤམས་པུ་བྱེད་པས་' - ལྷུ་ལྷུ་ འོག་ ༤/བ་ དེ་ཉིད།
 3 'ཡོད་བྱས་པས་' - ལྷུ་ལྷུ་ འོག་དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ འོག་ ལ འོག་ དེ་ཉིད།
 4 'བཤམ་དུ་སོད་' - ལྷུ་ལྷུ་ འོག་དེ་ཉིད།
 5 'རང་པར་' - བེ་ཉི་, - དེ་ཉིད།
 6 'སྤྱུལ་པས་' - ལྷུ་ལྷུ་ དེ་ཉིད།
 7 'གཅིག་ལ་' - ལྷུ་ལྷུ་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད།
 8 'འཕགས་པའི་' - ཞེས་ བེ་ཉི་ ལ་མེད་, - འོག་ ལ, འོག་ དེ་ཉིད།

བརྒྱ་མདའ་གཅིག་གིས་བསང་ནས། །གསའི་རོ་གཅིག་འཕྲར་ཕུ་ལ་བསྐྱར་བས།
 དེ་མ་ཐག་པར་འཕྲར་ཕུ་ང་རྒྱལ་ཆག་སྟེ། །ཁྱིམ་དུ་འོང་ནས་སྐྱུལ་པ་ལ་སྐྱེས་པ།
 དེ་འདྲ་བའི་འཕྲོང་གི་སྟོབས་དེ་བདག་ལ་སྟོབས་འབྲས་པ་དང་། །སྐྱུལ་པས་སྐྱེས་
 པ། དེ་སྟོབ་པ་ལ་ལྷ་བ་གཅིག་³འ་མི་ཟ་བ་ཞིག་⁴དགོས་བྱས་པས། དེ་ནས་
 འཕྲར་ཕུས་སེམས་ཅན་ལ་གཞོན་འཆི་སྤངས་སོ།།

སྐྱུལ་པས་ཞག་བདུན་ནས་⁶དེའི་གམ་དུ་ཕྱིན་ནས་སྐྱེས་པ། །ཁྱིམ་ཅི་ཟོས། དེ་ན་རེ། །འིང་ཐོག་ཟོས་ཟེར་པོ། །དེ་ནས་སྐྱུལ་པས་སྐྱེས་
 པ། །དེ་ཁྱིམ་ཅིག་གིས་སེམས་ཅན་ལ་བྱམས་པ་དང་སྤྱིང་རྗེ་⁷སྟོམས་ཤིག་བྱས་
 ནས་ (སྐྱུལ་པ་ཕྱིན་ཏེ)། །ལྷ་བ་གཅིག་ལོན་པ་ན་དེར་གཤེགས་པ་དང་།
 འཕྲར་ཕུ་ན་རེ། །དེ་ག་བ་གཞོར་བའི་ཚོས་ཤོད་⁸ཟེར་བ་ལ། །སྐྱུལ་པས་དེར་
 མཇུག་ཞིག་མཛད་ནས་མི་ཏོག་བཀམ་སྟེ། །འཕྲར་ཕུ་བཟའ་མི་གཉིས་ལ་ལྟོས་
 ཤིག་དང་(གསུངས།)། །དེ་གཉིས་ཀྱིས་བཟུངས་པ་དང་། །སྐྱུལ་པས་དེ་གཉིས་

1 'བདག་ལ་ཡང་སྟོབས' - བེ་ཉི་ཤོག་ ལ འོག 177. vol. 87,
 2 'བྱས་པ་དང་།' - ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག་ - ༦/བ དེ་ཉིད།
 3 'ལྷ་བ་གཅིག་ལ་འ་མི་ཟ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ - དེ་ཉིད།
 4 'པ་གཅིག' བེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
 5 'སྤངས་པ་དང་།' - ལྷུ་བ་ཀུན་, དེ་ཉིད། - བེ་ཉི།
 6 'བདུན་ན' - ལྷུ་བ་ཀུན་, - དེ་ཉིད།
 7 "བྱམས་དང་, སྤྱིང་རྗེ་བསྟོམས་ཤིག" - བེ་ཉི་, ཤོག་, ལ འོག་ དེ་ཉིད།
 8 'ཚོས་བཤད་ཏེ་, ཟེར་བ་ལ' - བེ་ཉི་ - དེ་ཉིད།

ལ་ཅི་མ་ཐོང་དྲིས་པས། (དེ་གཉིས་ཀྱིས་) མཚུལ་གྱི་ནང་དུ་དམུལ་བ་ཚེན་པོ་
 བརྒྱན་དང་། ཁོ་རང་གཉིས་ཀྱང་དེ་ར་འཚེད་པ་མ་ཐོང་བས། འཛིགས་ཤིང་
 རྒྱལ་ལ་དངངས་ཤིང་འདར་ནས་སྐད་མ་ཐོན་པ་ན། རྒྱལ་པས་ཡང་དང་ཡང་དུ་
 དྲིས་པས། སེམས་ཅན་དམུལ་བ་འདི་འདྲ་བ་གདའ་ལྷུས་པས། རྒྱལ་པས་ཕྱིད་
 དེར་སྐྱེ་བ་ལ་མི་འཛིགས་སམ་གསུངས་པས། དེ་དག་ན་རེ། འཛིགས་
 ལགས་ཏེ། དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་མཚིས་ལགས་སམ་ལྷུས་པས། དེ་ཡོད་
 དེ་ཕྱིད་ཀྱིས་རྒྱལ་ལྷུས་སམ་གསུངས་པས། ལུས་ཟེམ།

(དེ་) ལས་རྒྱལ་པས་གཞུང་ལྷོ་བཟའ་མི་གཉིས་ལ་ཚོས་བཤད་ཏེ། རྒྱལ་
 བཅད་པའི་རྣམ་པར་སྐྱོན་པས་ནི་སེམས་ཅན་དམུལ་བར་སྐྱེ་བ་ཡིན་ལ། (དེའི་)
 བྱེད་པ་རྒྱུ་མཐུན་ནི་རྒྱལ་གཅོད་སྤྱིང་འདོད་པ་ཡིན་ཅིང་། དབང་གི་འབྲས་ལུ་ནི་
 ཚེ་སྲུང་བ་ཡིན་ལ། རྒྱུས་ལུ་བྱེད་པའི་འབྲས་ལུ་ནི་གཟི་བཞིན་ངན་པ་ཡིན་ལོ།
 རྒྱལ་གཅོད་པའི་ལས་སྤངས་པས་བྱང་རྒྱལ་ཐོབ་པ་ཡིན་ལ། བྱེད་པ་རྒྱུ་མཐུན་ནི་
 རྒྱལ་གཅོད་སྤྱིང་མི་འདོད་པ་དང་། དབང་གི་འབྲས་ལུ་ཚེ་རིང་བ་ཡིན་ལ།
 རྒྱུས་ལུ་བྱེད་པའི་འབྲས་ལུ་ནི་གཟི་བཞིན་དང་ལྷན་པ་ཡིན་ལོ། །ཞེས་སོང་མི་དགེ་
 བ་བཅུའི་ཉེས་དམིཌ་དང་། དགེ་བ་བཅུའི་མན་ཡོན་བཤད་པས་གཞུང་ལྷོ་འཁོར་
 བ་ལ་སྐྱེ་བ་སྐྱེས་ནས་ཚོས་ལ་མི་བྱེད་པའི་དད་པ་བརྟན་པོ་ཐོབ་པར་གྱུར་ཏེ།

1 'འཚེད་པར་མ་ཐོང་ནས' - དེ་ཉི, - ཐོག་ ༧ ཐོང་, དེ་ཉིད།
 2 'དེ་ན་རེ' - རྒྱལ་ཀྱན་ ༧/ན དེ་ཉིད།
 3 'དེ་ཡོད་ན' - རྒྱལ་ཀྱན་ - དེ་ཉིད། དེ་ཉི, ཐོག་ ༥ ཐོང་, དེ་ཉིད།

དེ་ནས་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱིས་¹གདམས་²འགྲུབ་གནང་ནས་
 རི་བོ་དཀྱིལ་གཤེགས་པ་དང་། འཕྲུལ་པས་³ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་
 པའི་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྐྱོམས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས།
 སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་⁴ཆོས་ཉིད་ལས་ལངས་དེ། འཕགས་པའི་སྤྱན་ལམ་དུ་ཕྱིན་པ་
 དང་། འཕགས་པས་འཕྲུལ་པུ་ལ་⁵ཡོན་ཏན་གྱི་སྤྲེལ་པ་དུ་མ་བཟོད་ནས།

“རིགས་ཀྱི་བྱ། ཅུའི་མི་གི་བ་དང་འདྲ་བའི་ཕྱོགས་གཅིག་པའི་སྤྱིང་རྗེ་
 ལས་འདས་པ་ནི་མཚོག་མ་ཡིན་ལ། རྟོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་འཁོར་
 བར་འདུག་ལ་སེམས་ཅན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་དོན་གྱིས་གིག” ཅེས་
 གསུངས་པས་འཕྲུལ་པུ་རང་གི་ཡུལ་དུ་བྱོན་ནས་བཞུགས་སོ།།

མཚན་དུ་ — ‘དཔལ་འཕྲུལ་པུ’ ཞེས་པའམ། མ་ཕྱུའི་གཤོག་པ་
 ཕྱོན་ནས་འདུག་པས་—‘མ་ཕྱུའི་གོས་ཅན་ཞེས་པའམ། དུས་ཉམས་དུ་རི་ལ་
 བཞུགས་པས་‘རི་རྟོད་མགོན་པོ’ ཞེས་ཀྱང་བེད་དེ་མཚན་གསུམ་དུ་གྲགས་སོ།།
 སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་རྣམས་ལ་བཟོད་དང་། མགུར་ལ་སོར་པས་དོན་མཚན་དེ།

1 ‘གཟིགས་དབང་ཕྱག་གིས་’ - སྤྱན་རས་གཟིགས་ - བོག་ ༧/ན 14.
 2 ‘གདམས་འགྲུབ་’ - བེ་ཉི་, བོག་ ༥ བོང་། དེ་ཉིད།
 3 ‘འཕྲུལ་པས་’ - བེ་ཉི་ - བོག་ དེ་ཉིད། འབརིས — སྤྱན་རས་གཟིགས་ བོག་ ༧/ན།
 4 ‘ཆེན་པོའི་’ - བེ་ཉི་, - བོག་ - དེ་ཉིད།
 5 ‘འཕྲུལ་པུ་’ - སྤྱན་རས་གཟིགས་ བོག་ - དེ་ཉིད། ‘འཕྲུལ་པུ་’-བེ་ཉི་ བོག་ ༥ བོང་, དེ་ཉིད།
 6 བྱ་སྐྱོན་བདེ་མཚོག་གྱི་དོན་དུ་—‘འཕྲུལ་པུ་དང་པོར་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་གི་སྤྱིང་རྗེ་གྱིས་བདེ་མཚོག་
 དབང་ཞུས། དེའི་རྗེས་ཕྱང་སེམས་རིན་ཆེན་སྐོབ་ཐོབ་མཇུག།’-དེ་ཉིད་བོག་ ༣༦ - ༣༧ ཆ པ།

བྱམས་པའི་བསྟན་པ་མ་གཤམ་གྱི་བར་དུ་སྐྱེ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མཛེས་བུའི་གླིང་འདིར་
བཞུགས་སོ།།

གྲུ་ཏུ་བཞུར་པུའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ།།

༦) གྲུ་སྐྱེ་སྐྱེ་བ།

གྲུ་སྐྱེ་སྐྱེ་བུ་²ཡི་ལོ་རྒྱུས་ནི། རིགས་བུམ་ཟེ། ཡུལ་རྒྱ་གར་གར་
ཕྱོགས་ཀྱི་གྲོང་ཁྱེར་རྒྱ་ལྷོ་ཞེས་བྱ་བའི་བྱེ་བྲག་ 'སའའི'³ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ།
མཁའ་འགྲོ་མའི་སྐྱེས་ཡིན་པས་ མཁའ་འགྲོ་ཉིད་ཡིན་ལོ།།

འདི་⁵བུམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་སངས་རྒྱུས་པའི་ཚོས་ལ་དད་ནས་སློབ་དཔོན་
དཔག་དུ་མེད་པ་ལ་ཚོས་མཉམ་པས་གསང་སྟེ་ཀྱི་ཚོས་ལ་ཡིད་ཆེས་ནས།

-
- 1 ལྷན་པ་ལ་ རྒྱུབ་ཀྱུན་ འོག་ ༧/བ 14 པེ་ཉི ༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 2 མཚན་ངོ་མ་ 'སའའུ' དང་ 'པུ' - 'པུད' ཞེས་པའི་རྒྱུར་ཆག་ཡིན་མོད། བོད་འགྲུར་
རྣམས་སུ་ 'པུ' ཞེས་པའི་དོན་བདག་རྒྱུའི་ 'པ' དོན་དུ་བསམ་ནས། ཐམས་ཅད་དུ་ 'པ'
ཉིད་བྲིས་འདུག་ཀྱང་ལོགས་པར་མི་སྤང་།
 - 3 'སའའི' - རྒྱུབ་ཀྱུན་ འོག་ ༧ བ-14 འདིར་དཔེ་ཕལ་ཆེ་བར་ 'སའའི' ཞེས་པ་ཉིད་
བྲིས་འདུག་ཅིང་། པེ་ཉི་ བསྟན་འགྲུར་དུ་ཡང་གོང་འོག་མང་པོར་ 'སའའི' བྲིས་འདུག་ཀྱང་།
འོག་ ༧ འོག་དུ་ 'སའའི' བྲིས་འདུག་པ་དེ་ཉིད་དག་པར་སྤང་།
 - 4 "མཁའ་འགྲོ་མའི་སྐྱེས་ཡིན་ལོ།" - པེ་ཉི་ འོག་ ༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 5 "བུམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་" - པེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད། "གྲུ་ཏུ་འདི་བུམ་ཟེ་ཡིན་ཡང་" - རྒྱུབ་ཀྱུན་
འོག་ དེ་ཉིད།

བྲམ་ཟེ་དང་སངས་རྒྱས་པ་གཉིས་ཀའི་སྒྲོམ་པ་བསྐྱེད་པ་ལ། ཉིན་བྲམ་ཟེའི་
 ཚོས་ལུགས་བྱེད། མཚན་སངས་རྒྱས་པའི་ཚོས་ལུགས་སུ་བྱེད་ཅིང་། ཆང་
 ཡང་གསོལ་བས་³ན་བྲམ་ཟེ་ཀུན་གྱིས་ཚོར་ནས། དེ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་བྲམ་ཟེ་
 བམས་ཅད་འདུ་ནས། རྒྱལ་པོ་རྣམས་ལ་⁴ལ་ལྟས་པ། “ཁྱིད་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ན་
 ཡུལ་དུ་ཚོས་ལུགས་འཚོལ་བ་བྱེད་དུ་འཇུག་པ་རིགས་སམ། སར་ཉ་འདི་ཡུལ་
 ས་རོལ་འི་⁵གོང་ཁྱིད་ཁྱི་ཚོ་ཕྱིད་གཉིས་ཀྱི་གཙོ་བོ་ཡིན་པ་ལ། ཆང་འཕྱུངས་ནས་
 རིགས་ཉམས་པར་བྱས་པ་ཡིན་པས་⁶སྐྱོད་ཅིག་བྱས་པས།” རྒྱལ་པོས་སྐྱས་པ།
 “ཁྱི་ཚོ་ཕྱིད་དང་གཉིས་ལ་དབང་བྱེད་པ་འདི་སྐྱོད་དུ་མི་འདོད་ཟེར་ནས།”
 རྒྱལ་པོས་སར་ཉའི་གན་དུ་བྱོན་ནས་སྐྱས་པ།

“ཁྱིད་བྲམ་ཟེ་ཡིན་པ་ལ་ཆང་འཕྱུངས་པ་འདི་མ་ལེགས་སོ།” བྱས་པས།
 སར་ཉ་ན་ཤེ། “ངས་ཆང་འཕྱུངས་བ་མེད། འོན་ཀྱང་མཚན་འདོར་བ་ཡིན་པས།
 བྲམ་ཟེ་ཀུན་དང་། མི་བམས་ཅད་བསྐྱུས་ཤིག་” ཟེར་ (དེ) ནས་མཐམས་

-
- 1 ‘སྐྱེད་པ་ལ’ - བེ་ཉི་ འོག་, དེ་ཉིད།
 - 2 ‘ཚོས་ལུགས་བྱེད་ཅིང’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༧ པ་-14.
 - 3 ‘གསོལ་བ་ན’ - བེ་ཉི་, - འོག་ ༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 4 ‘རྣམས་ལ’ - རྒྱལ་ཀུན་, དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, དེ་ཉིད།
 - 5 ‘རོལ་འི’ - རྒྱལ་ཀུན་, དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, དེ་ཉིད།
 - 6 ‘ཉམས་པར་བྱས་པས’ བེ་ཉི་, - འོག་ ༧ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 7 ‘སྐྱས་ཤིག’ - རྒྱལ་ཀུན་, འོག་ ༧ པ་-14.
 - 8 ‘ཟེར་ནས།’ - རྒྱལ་ཀུན་, འོག་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, འོག་ དེ་ཉིད།

ཅད་བསྐྱུས་པ་དང་། “སར་ཉལ་པ་” ངས་ཆང་འཕྲངས་ན་ལག་པ་ཚིག་ལ། མ་
 འཕྲངས་ན་མ་ཚིག་། ཅེས་ཟེར་ནས་མར་ཁྲུ་ཁོ་ལ་མའི་ནང་དུ་ལག་པ་བརྒྱུ་པས་
 མ་ཚིག་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་ཆང་འཕྲངས་པ་དེ་བདེན་ནམ་ལྟས་པས། བྲམ་ཟེ་
 ཀུན་ན་དེ། བདེན་ཏེ་འཕྲངས་ཟེར། ཡང་ལྟར་བཞིན་སྐྱུས་ནས་ཟངས་ལུན་
 འཕྲངས་པས་མ་ཚིག་པ་དང་། ཡང་འཕྲངས་ཟེར། འོ་ན་ཆུའི་ནང་དུ་ལྷགས་
 དང་། བང་རུབ་ནས་འདུག་པ་དེས་འཕྲངས་པ་ཡིན་ལ། མ་རུབ་པ་དེས་
 འཕྲངས་པ་མ་ཡིན་མོ་ཞེས་སྐྱུས་ནས། བྲམ་ཟེ་གཞན་ལྷིག་དང་གཉིས་ཆུའི་
 རང་དུ་ལྷགས་པ་ན་སར་ཉལ་མ་རུབ། བཞིག་ཤོས་རུབ་པ་དང་། སར་ཉལ་
 ངས་མ་འཕྲངས་ཟེར་མོ། །ཡང་སྲང་ལ་བསྐྱོར་མ། བང་ལྷི་བས་མ་འཕྲངས་
 པ་ཡིན་ལ། ཡང་བ་དེས་འཕྲང་བ་ཡིན་མོ། །ཞེས་སྐྱུས་ནས། དེ་བཞིན་
 ལྷགས་པས་སར་ཉལ་ལྷི་ནས་ངས་མ་འཕྲང་ཟེར་མོ། །དེ་བཞིན་དུ་མི་དང་ལྷི་
 མཉམ་པའི་ལྷགས་ཀྱི་རྟོག་གསུམ་དང་བཀའ་ས་ཀྱང་སར་ཉལ་ལྷི་བ་དང་། དུག་
 ལས་ཀྱང་སར་ཉལ་ལྷི་ན། རྒྱལ་པོས་སྐྱུས་པ། ཁོ་འདྲ་བའི་རུས་པ་ཡོད་ན་ཆང་

1 ‘ཚིག་ཅིག་ པེ་ཉི་, དེ་ཉི་།
 2 ‘གཞན་གཅིག་དང་’ - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ ༥/ན 14. པེ་ཉི་, ཤོག་ ༩, བོང་ དེ་ཉི་།
 3 ‘ལྷགས་པས་ན་’ - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ ༥ 14. པེ་ཉི་, ཤོག་ དེ་ཉི་།
 4 ‘སྲང་ལ་སྐྱོར་’ - པེ་ཉི་, - ཤོག་ དེ་ཉི་།
 5 ‘ཡིན་མོ་སྐྱུས་ནས་’ - པེ་ཉི་, དེ་ཉི་། ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ ༥/ན 14.
 6 ‘སར་ཉལ་ལྷི་ནས་’ - ལྷུ་ཀུན་ - ཤོག་ དེ་ཉི་། སར་ཉལ་ལྷི་ནས་ - པེ་ཉི་ དེ་ཉི་།
 7 ‘ལྷི་ནས་’, - པེ་ཉི་, ཤོག་ དེ་ཉི་། ‘ལྷི་ན་’ - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉི་།

འཕྲུང་ན་ཡང་འཕྲུང་གིག་འཕེས་སྐྱེས་པས། བྲམ་ཟེ་ཐམས་ཅད་དང་། རྒྱལ་
 པོས་ཀྱང་ཕྱག་བྱས་གདམས་ངག་ཞུས་པས། རྒྱལ་པོ་དང་བཅུན་མོ་དང་།
 འབངས་ཐམས་ཅད་ལ་མགུར་གསུངས་པས་དོན་སྐོར་གསུམ་དུ་གྲགས་སོ།།

བྲམ་ཟེ་རྣམས་ཀྱིས་རང་གི་ཚོས་ལུགས་སྤངས་དེ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བརྟན་
 པ་ལ་ཞུགས་ཤིང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པས་ཀྱང་གྲུབ་པ་ཐོབ་པོ།།

དེ་ནས་སར་ཉམ་བུན་མོ་ལོ་བཙོ་ལོན་པ་ཞིག་ཡོད་པ་ཁྲིད་ནས་ཡུལ་
 གཞན་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། དམོན་པ་ཞིག་དུ་འདུག་ནས་ཁྲོས་སྐྱབ་པ་བྱེད། རྒྱུང་
 མས་བུན་སྤངས་ཀྱིན་བསྐྱལ་ལོ།།

ཐེངས་གཅིག་ལ་ཕུག་གི་ཚོད་མ་བཟེ་མ་རྣམས་མཉེན་ལོ་ཞེ་དང་
 ལ་ཕུག་སྐྱར་ནས་འབྲིན་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། (སློབ་དཔོན་) ཉིང་ངེ་འཇིན་ལ་
 བཞུགས་འདུག་པས་མ་སྤངས་པར་ལོག་ དེ་ནས་ 'སར་ཉ' པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་
 ཀྱི་བར་དུ་ཉིང་ངེ་འཇིན་ལས་མ་བཞེངས། དེ་ནས་བཞེངས་པ་དང་། (རྒྱུང་མ་
 ལ) ལ་ཕུག་གི་ཚོད་བ་ག་ལེ། བྲམ་པས། བུན་མོ་ན་ལེ། ཁྲོད་ལོ་བཅུ་
 གཉིས་སུ་ཉིང་ངེ་འཇིན་ལས་མ་བཞེངས་པས་ད་ལྟ་ག་ཙོད། ད་ནི་དབྱིད་ཀྱི་

1 'འཕྲུངས་གིག' - རྒྱུབ་ཀྱན་ འོག་ 14. འཕྲུང་ཅིག - པེ་ཉི་ འོག་ 10 ལོང་, དེ་ཉིད།
 2 'བཅས་པས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པོ' - པེ་ཉི་, འོག་ 10 འོག་ 178. vol. 87.
 'བཅས་པས་ཀྱང་སྤྲི་ཐོབ་པོ' - རྒྱུབ་ཀྱན་, འོག་ 15. 14.
 3 'རྒྱལ་བ་དང་།' - རྒྱུབ་ཀྱན་ འོག་དེ་ཉིད། པེ་ཉི་, འོག་ 10 འོག་, དེ་ཉིད།
 4 'བཟེ་མ་པས' - རྒྱུབ་ཀྱན་ འོག་ དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་ཡུལ་མུ་མུ་རྒྱ་རྒྱ་རྒྱ་རྒྱ་བྱིམ་བདག་(ཞིག)གིས་རང་གི་རིགས་དང་
 མཉམ་པའི་ཚུང་མ་སྤངས་ནས། བྱིམ་དུ་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་རོ་ཉམས་སུ་
 མྱོང་བར་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ལ། ཐར་པའི་ལམ་དགེ་བའི་ཚོས་ལ་ནི་སློབ་གཙུག་ཅམ་
 ཡང་མ་ཞུགས་པར་འཇིག་རྟེན་འདི་འབའ་ཞིག་དོན་དུ་གཉེར་ཞིང་འདུག་པའི་ཚེ།
 དེའི་ཚུང་མ་ལ་འདུས་བྱས་ཀྱི་ལས་ཀྱིས་སློབས་ནས་གི་བར་གྱུར་པ་དང་། དེས་
 ཚུང་མའི་རོ་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱལ་ནས་རོ་སློབ་གཏོང་མ་རྒྱུས་པར་རོའི་རྩར་དུ་
 ཡིན་འདུག་གོ།

དེའི་གམ་དུ་ལེགས་པར་རྟོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས།
 བྱིམ་བདག་དེ་ལ། “ཁྱོད་དུར་ཁྲོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ཅེས་སྐྱེས་པ་དང་།
 བྱིམ་བདག་ན་རེ། རྣལ་འབྱོར་པ། བདག་གི་སྐྱིད་སྐྱུག་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མ་
 གཟེགས་སམ། མིག་བདོན་པའི་ལོང་བ་བྱིམ་ཐབ་དང་བྲལ་བའི་དཔལ་ཟད་པ་
 འཇིག་རྟེན་ན་བདག་ལས་སྐྱུག་པ་དང་། ཉོན་མོངས་པ་སུ་མཚིས་ ཞེས་ཞུས་
 པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པས་བྱིམ་བདག་ལ་སྐྱེས་པ།

“སྐྱེས་པའི་མཐའ་འཛི་བ། འདུས་པའི་མཐའ་འབྲལ་བ། འདུས་བྱས་
 ཐམས་ཅད་ནི་མི་རྟག་པ་ཡིན། འཁོར་བར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་སྐྱུག་བསྐྱལ་
 བ་ཡིན་པས། འཁོར་བ་སྐྱུག་བསྐྱལ་གྱི་རང་བཞིན་ལ་ཁྱོད་མི་སྐྱོ་འམ་ཁྱོད་མི་རོ་

1 ‘སློབ་གཏོང་མ་རྒྱུས་པར’ - ལྷུ་ཀུན་ - འོག་ ༤ དེ་ཉིད།
 2 ‘འདུག་པ་ལ།’ ལྷུ་ཀུན་ འོག་ ༤/བ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, འོག་ ༤ འོག་ དེ་ཉིད།
 3 ‘ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པ་ཡིན’ བེ་ཉི་, འོག་ ༡༠ བོང་ དེ་ཉིད།

ས་རྩོམ་འབྲུ་བ་ཞིག་ལ་བསྐྱེད་ས་ནས་ཅི་བྱེད་དེ་བས་ཁྱོད་རང་ཚོས་གྱིས་ལ་ལྷག་
བསྐྱེད་སྤོངས་བྱས་པས།”

“རྒྱལ་འབྲོར་པ། འཁོར་བ་སྐྱེ་འཆིའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་
ཡོད་ན་སྐྱེལ་འཕྲིན་ཟེར་བ་ལ།”

(རྒྱལ་འབྲོར་པས་) – དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་སྐྱེ་མའི་མན་ངག་ཡོད་
བྱས་པས། (བྱིས་བདག་གིས) – དེ་བདག་ལ་གནང་བར་ལུས། ཟེར་ནས།

རྒྱལ་འབྲོར་པས་དེ་ལ་དབང་བསྐྱེད་ཏེ།⁴ བདག་མེད་ཐིག་ལའི་
གདམས་ངག་བྱིན་པ་དང་། བྱིས་བདག་ན་ཤེ། ཇི་ལྟར་ལྷོ་མ་ ཟེར་བ་
ལ། (རྒྱལ་འབྲོར་པས) – སྤི་བའི་རྒྱུང་མའི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤོངས་ལ།
བདག་མེད་པའི་རྒྱུང་མ་བདེ་བ་དང་སྤོང་པ་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྐྱོམས་ཤིག་
བྱས་ནས་སྐྱོམ་དུ་བཅུག་པས། ལོ་དྲུག་ན་ཐ་མལ་པའི་རྒྱུང་མའི་རྣམ་རྟོག་བདེ་
བ་དང་སྤོང་པའི་ངང་དུ་སྐྱོར་ནས། དེའི་སེམས་ཀྱི་རྒྱི་མ་དག་སྐྱེ། བདེ་ཆེན་
འོད་གསལ་གྱི་རྟོག་པའི་ཉམས་སྐྱེས་པ་དང་། བྱིས་བདག་དེས་དཔེར་ན་ལང་

1 ‘འབྲུ་བ་གཅིག་པེ་ཉི་ཤོག་ ༡༠ བོང་ དེ་ཉིད། འབྲུ་བ་ཅིག་ ལྷག་ཀྱང་ ཤོག་༡༠/བ དེ་ཉིད།
2 ‘འཚོལ་ཅིག་ - པེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ བོང་ དེ་ཉིད།
3 ‘གསུངས་པས་’ - པེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
4 ‘སྐྱུར་སྐྱེ’ - པེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
5 ‘གདམ་ངག་ པེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
6 ‘ཇི་ལྟར་སྐྱོམ་...’ - པེ་ཉི་ དེ་ཉིད།

དང་གི་དུག་དྲངས་པས་འབྲུལ་བ་སངས་པ་ལྟར། མ་རིག་འབྲུལ་པའི་དུག་
 དྲངས་པས་སྤྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་བདེན་པའི་དོན་མཐོང་སྣེ་དངོས་གྲུབ་ཐོབཔ།
 མིང་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཀློག་རི་པུ་ (ཀློག་ལུ) ཞེས་བྲུ་བར་སྤྱོད་ས་མཚམས་
 ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ།།

རང་གི་ཡུལ་ལྷན་རྒྱུ་རར་ལྷེ་འབྲོ་དུ་མ་ལ་ཚོས་བཟུན་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་
 ཀྲིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀློག་རི་ (ཀློག་ལུ)པུའི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ།།

༤) ལྷན་པུ།

གུ་རུ་ལྷན་པུའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་གར་སྤྱོད་ས། རིགས་ཉ་
 པ། ལྷ་མ་མརྒྱ་དེས། དངོས་གྲུབ་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་བོ།།

-
- 1 'ལྷ་བྱར' - བེ་ཉི་, འོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 2 'ཐོབ་ནས་' - བེ་ཉི་, དེ་ཉིད།
 - 3 'གྲགས་ལ།' - བེ་ཉི་, འོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 4 'ལྷན་རི' - བེ་ཉི་, འོག་ ༡༠ འོག་ 178. vol. 87. 'མགམ' (पूर्व में राजी नगर) रा०
 पु० नि० पृ० १२०. ལྷན་རི་དང་, 'ལྷན་རི' ཟེར་བ་གཉིས་ཀ་གོགས་, ཞེས་པའི་སྐྱ་བོད་སྐད་
 ཀྲིས་རྒྱུར་ཆག་པར་སེམས།
 - 5 'ཐོབ་པའོ།' བེ་ཉི་, འོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད། ལྷན་པུ་གྲུ་གྲུ་གྲུ་ འོག་ ༧ 17

དེ་ཡང་ (རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས) ཀླུ་ལྷ་པའི་ཕ་ཚད་ན་རྒྱ་མཚོ་ཡི་དྲ་
 (སྤྲིད) བྱ་བ་ན། ཉ་པ་ཀུན་ཉ་གཤོར་ནས་འདུས་དྲུག་དུ་ཚོང་འདུས་སུ་འཚོང་
 ག་ཡིན་ལ། (ཉིན་གཅིག) ཉ་པ་གཅིག་གིས་རས་བལ་གྱི་སྲད་བུ་ལ་ལྷགས་ཀྱི་
 བདགས་ནས་དེའི་རྩེ་མོར་གདང་བཅས་དེ་རྒྱར་བསྐྱར་པ་དང་། ཉ་ཆེན་པོ་
 ཞིག་ཟིན་པས་འཐེན་པ་དང་། ཉ་ས་པར་དུད་དེ་ཉ་པ་རྒྱ་མཚོར་རུབ། དེར་ཉ་
 པ་དེ་ཉ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཤིས་མིད་པ་ལ་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་མ་གྱི་བར་ཡོད་པ་ན།
 དེའི་དུས་སུ་དབང་ཕུག་ཆེན་པོ་ལ་ལྷ་མོ་ཟུ་མས་ཚོས་ལྷས་པས། དབང་ཕུག་
 ཆེན་པོ་ན་ཤེ། ངའི་ཚོས་འདི་གང་རུང་རུང་ལ་བཤད་པ་མ་ཡིན་གྱི་འཕྱིན་དུ་
 གསང་བ་ཡིན་པས། རྒྱ་མཚོའི་ནང་དུ་ཁྲམ་པ་བཅུགས་ཤིག་ དེར་བཤད་པོ་
 ཟེར་ནས་དེ་བཞིན་བྱས་སོ།¹⁰

1 'གཤོར་པས' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/ན 17.
 2 'ཚོང་དུས་སུ་ཉ་འཚོང་བ་ཡིན' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/ན.
 3 'ཉ་ས་པར་དུད' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 4 'རུབ་ནས།' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད་ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/ན.
 5 'པོ་ཅིག་གིས་' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ དེ་ཉིད། 'པོ་གཅིག་གིས་' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/ན.
 6 'ཡོད་པ' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ དེ་ཉིད། 'ཡོད་པ་ལས་' ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/ན.
 7 'མ་ཡིན་གྱིས་' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/བ
 8 'ནང་ན་ཁང་པ' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/བ དེ་ཉིད།
 9 'དེར་བཤད' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ འོག་ དེ་ཉིད། 'དེར་བཤད' ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/བ
 10 'དེ་བཞིན་དུ་བྱས་པ་དང་' - ལྷོ་ཕོ་བཟང་ ཤོག་ ༡/བ ༡ བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༠ འོག།

དེའི་ནང་དུ་ལྷ་མོ་ཟུ་མ་ལ་ཚོས་བཤད་པ་ན། དེའི་དུས་སུ་ཁང་པའི་
 འོག་དུ་ཉ་དེ་འོངས་པ་ལ། ཚོས་ཀྱི་འཕྲོ་ལ་ལྷ་མོ་གཉིད་འོག་པ་དང་³དུས་
 མཚུངས་ནས། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོས་ལྷ་མོ་ཟུ་མ་ལ་གོའམ་བྱས་པས། ཉ་པས་
 གོ་ལགས་བྱས་ཀྱིན་ཚོས་ཉན་པ་དང་། ཚོས་ཐོན་པ་དང་ལྷ་མོ་གཉིད་སད་དེ།
 ཚོས་ཤོད་བྱས་པས། དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ན་ཟེ། ངས་ཚོས་བཤད་ཟིན་བྱས་པས།
 ལྷ་མོ་ན་ཟེ། དངོས་ཀྱིས་⁴ཚོས་འདི་ཙམ་བར་དུ་ཐོས། དེ་ནས་གཉིད་ཀྱིས་སྡོམ་
 ནས་མ་ཐོས་བྱས་པ་ལ། (དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོས) འོ་ན་ཐོས་ལགས་ཟེར་བ་དེ་
 སུ་ཡིན་ཟེར་བ་ལ། ལྷ་མོས་དེ་སྐད་ཟེར་བ་དེ་བདག་མིན་སྐྱེས་པས། དབང་
 ཕྱུག་ཆེན་པོས་མངོན་ཤེས་ཀྱིས་གཟེགས་པས། ཁང་པའི་འོག་གི་ཉའི་ལྷོ་བ་ན་
 མི་ཞིག་⁷འདུག་པ་དེས་ཚོས་ཉན་པར་མཐོང་ནས། དེའི་⁸བསམ་པ་ལ་འདི་
 ངའི་སློབ་མར་སོང་བས་དམ་ཚིག་གཅིག་པ་ཡིན་སྐྱེས་དུ་དགོངས་ནས། དེར་ཉ་
 པ་ལ་དབང་བསྐྱར་(ཚོས་བཤད)ནས། ཉ་པ་དེས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཉའི་ལྷོ་བར་

1 'བཤད་པས' - དེ་ཉི་མོག་ ༡༠ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༩/བ.
 2 'འོངས་པ་དང་།' - དེ་ཉི་མོག་ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༩/བ. དེ་ཉིད།
 3 'གཉིད་འོག་དང་' - དེ་ཉི་མོག་ དེ་ཉིད།
 4 'དངོས་ཀྱི་ཚོས་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༩/བ.
 5 'ཟེར་ནས་' - དེ་ཉི་མོག་ ༡༡ ཤོང་, ལྷུབ་ཀྱན་, ཤོག་ ༩/བ.
 6 'ཟེར་བ་བདག་གིས་མ་སྐྱེས་ཟེར།' - དེ་ཉི་མོག་ ༡༡ ཤོང་ དེ་ཉིད།
 7 'མི་གཅིག་' - དེ་ཉི་མོག་ ༡༡ ཤོང་, མི་ཅིག་ - ལྷུབ་ཀྱན་, ཤོག་ ༩/བ.
 8 'དེར་བསམ་པ་ལ' - དེ་ཉི་མོག་ ༡༡ ཤོང་ 'དེ་བསམ་པ་ལ' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༩/བ.

ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས།
ཞིག་གིས་ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།

ཉ་པས་བསམ་པ་ལ²ཉ་ཆེན་པོ་འདི་ལྷིད་ལུགས་ལ་བལྟས་ན³འདི་ཁོག་
པ་ན་གསེར་དང་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་འགའ་བྱང་ཡང་སྲིད་སྟུང་སྟེ། ཉའི་
ལྷོ་བ་བཞགས་པས་(དེ་ན་)མི་ཞིག་འདུག་པ་ལག། ཁྱོད་སུ་ཡིན། བྱས་པས་ག
དེ་ན་དེ། བདག་ཀྱང་ཉ་པ་ཡིན་པ་ལ་རྒྱལ་པོ་འདི་ཞེས་བྱ་བའི་དུས་སུ⁷ཉ་
འདིས་བྱིར་དེ་མིང་པ་ཡིན་ཟེར་བ་ལག། མི་ཀུན་གྱིས་རྩིས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་
ལོན་པར་འདུག་པས་ག། མི་ཐམས་ཅད་ངོ་མཚར་སྐྱེས་དེ། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་
འབྱོར་པ་སྲིན་པུ་ཞེས་བྱ་བར་བྲགས་སོ།

1 'བཏོན་པ་དང་།' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡/བ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
2 'ཉ་པས་བསམ་པ་ལ' - ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བསམ་པ་ལ་བཞགས་པས་
3 'ལུགས་ཀྱིས་' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡/བ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
4 'གསེར་དང་དངུལ་ལ' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ 18. 14.
5 'འདུག་ནས་' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡/བ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
6 'བྱས་པས་' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡ དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
7 'དུས་སུ' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡/བ ཉ་ཆེན་པོ་དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
8 'ཟེར་ནས་' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་ ༡ དེ་བཟུང་ནས་བཏོན་ཏེ།
9 'ཉའི་ལྷོ་བ་བཞགས་པས་'ཞེས་པའི་

དེ་ནས་མི་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཚོན་པ་དང་། མྱོན་པུས་ས་ལ་གར་བྱས་
པས་རྐང་པ་ས་ལ་རུབ། རྗེ་ལོ་སྤོང་དུ་གར་བྱས་པས་ཀྱང་དེ་ལ་འདམ་ལྟར་བྱིང་
བས་ཀྱན་ངོ་མཚར་སྤྱིས་སོ།།

དེ་ནས་མྱོན་པུའི་ཞལ་ནས་ -

སྒར་བསགས་ལས་ཀྱི་འབྲེལ་བ་དང་།།
དུས་འདིར་ཚས་ལ་མོས་པ་ཡིས།།
ཡོན་ཏན་སུན་ཚོགས་འདི་ལྟར་བྱུང་།།
ཞེ་མ་རང་སེམས་རིན་པོ་ཆེ།། ༡

ཞེས་གསུངས། (དེ) ནས་ལོ་ལྔ་བརྒྱར་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་དོ།།
མཚན་ཡང་མྱོན་པུ་དང་། རྗེ་ལོ་ཞབས། ཞུ་ཅི་རྣམས་སྤོང་ (བསམ་གྱིས་མི་
འབྲེལ་བ) གསུམ་དུ་གྲགས་ཤིང་། དང་པོར་འཇིག་རྟེན་གྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་
རིམ་གྱིས་ས་ལ་མ་བཞོན་དེ། (མཐར་)ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་
སོ།།

གྲུབ་ཐོབ་པུའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ།།

1 'རུབ་པ་དང་།' - རྒྱལ་ཀྱན་ ཤོག་ ༩/བ. པེ་ཉི དེ་ཉིད།
2 'ཅས་གསུངས།' - པེ་ཉི ཤོག་ ༡༡ འོག་ དེ་ཉིད།
3 'མིན་པུ' - པེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད།

༧) ལོ་རྒྱུས།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱུད་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་¹ རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ན་
 རྒྱལ་པོ་ལྷ་སྐྱོང་ཞེས་བྱ་²པ་ལ་སྲས་ཤིག་³བལྟམས་པ་ལས། དེ་⁴ལོ་བཙུ་གཉིས་
 ལོ་ན་པ་ན་⁵ (དེའི་) ཡུམ་སྤྱང་ནས་འགྲུམ་པ་ལ་ཐུག་པའི་ཆེ། ཡུམ་གྱིས་
 སྲས་ལ་ཞལ་ཆེམས་གསུངས་པ། — ‘སེམས་ཅན་གྱི་བདེ་སྤྱད་ཐམས་ཅད་ནི་
 ལས་དགོ་རྒྱུ་ལས་འདུང་བས་ན། (ཁྱོད) སྲོག་ལ་བབ་ཀྱང་རྒྱུག་པའི་ལས་མ་
 བྱེད་ཅིག་ ཅེས་གསུངས་ནས་ (ཡུམ) བྱོངས་སོ། །

དེ་ནས་ཡབ་རྒྱལ་པོ་ལ་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་ཞུས་པ། ཡུལ་གཞན་གྱི་
 བཙུན་མོ་ཞིག་⁶བཞེས་དགོས་ཟེར་ནས། དེས་ཀྱང་བཙུན་མོ་བཞེས་ནས་ཞག་
 འགའ་ལོ་ན་པ་ན། རྒྱལ་པོ་ནགས་གསེབ་ཅིག་⁷དུ་སྐྱོད་གསང་ལ་གཤེགས་པའི་
 སུལ་དུ། རྒྱལ་མོས་ཁང་བཟང་གི་⁸སྤྱང་དུ་ཡོངས་ཉན་ས་བལྟས་པས། དེ་ན་

1 ‘རྒྱ་གར་གར’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན. ཡུལ་ ཞེས་པ་འདྲིར་མེད།
 2 ‘ཞེས་པ་ལ’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༡ འོག་
 3 ‘སྲས་གཅིག’ - ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༡
 4 ‘དེས་ལོ་བཙུ’ - ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༡ འོག་ ༣
 5 ‘ལོ་ན་པ་ལ’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན.
 6 ‘བཙུན་མོ་ཅིག’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན. ‘བཙུན་མོ་གཅིག’ ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༡ འོག་
 7 ‘ནགས་གསེབ་དུ་སྐྱོད’ - ཤོག་ ༡༡ འོག་
 8 ‘ཁང་བཟངས’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡ དེ་ཉིད།
 9 ‘སྤྱང་ནས’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༠/ན.

རྒྱལ་བུ་བཞུགས་པ་མཐོང་ནས་ཆགས་པ་སྐྱེས་ཏེ། དེར་ཕོ་ཉ་བཏང་ནས་འདིར་
 གཤེགས་པར་ལུ་བྱས་པས། རྒྱལ་བུས་དེ་མ་འདོད་པ་དང་། རྒྱལ་མོ་སྐྱེངས་
 རས་བསམ་པ། འདིས་ང་ལ་བརྟམ་པ་འདི་འདྲ་བུས། འདི་ལས་དག་སྤོང་
 ར་བ་མི་ཡོང་བས། འདི་ཐབས་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསད་པར་བྱ་དགོས་སྐྱེས་
 རས།

རང་གི་འཁོར་ཀུན་ལ་འདི་གསོད་ཅིག་ 'སྐྱེས་པས། དེ་རྣམས་ན་ལེ
 འདི་བསད་པས་མི་ཡོང་སྟེ། རྒྱལ་པོའི་སྲས་ཀྱི་དམ་པ་ཡིན་ཟེར་བས། མོས་
 རྒྱ་བྱས་ཏེ། རང་གི་ལུས་ཐམས་ཅད་བྲད་ནས་ཁྲག་ཤུང་། གོས་ཐམས་ཅད་
 བྲལ་ཏེ་མལ་དུ་ཞུགས་ནས་འདུག་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་བྱོན་ནས་བཙུན་མོ་ལ་
 ཅིས་³ཉེས་དྲིས་པས།

མོ་ན་ལེ། ཉིད་ཀྱི་སྲས་ཀྱིས་⁴བདག་གི་ལུས་མ་ལེགས་པ་བྱས་
 པས་འདི་ལྟར་དུ་གྱུར་ཏེ་ཟེར་ནས། རྒྱལ་པོ་ན་ལེ། རྒྱུད་ལ་འདི་འདྲ་བ་
 བྱས་ན་རྒྱལ་བུ་འདི་གསོད་ཟེར་ཏེ། གཤེད་མ་གཉིས་བསྐྱོས་ནས་འདི་
 རགས་གསེབ་ཏུ་ཁྲིད་ལ་རྒྱང་ལག་རྣམས་ཚོད་ལ་བོག་གསུངས་པས། གཤེད་
 མ་གཉིས་ཀྱིས་བསམ་པ། འདི་གསོད་པ་ནི་མ་ལེགས་ན་རང་གི་བུ་བསད་

1 'བསམ་པ་ལ' - དེ་ཉི་ བོག་ ༡༡ དེ་ཉིད།
 2 'སྐྱེས་སྟེ།' - དེ་ཉི་ བོག་ ༡༡ འོག་ དེ་ཉིད།
 3 'རྒྱུད་ཅེ་ཉེས' - དེ་ཉི་ བོག་ ༡༢ བོང་ 'ཅེ་ཉེས' རྒྱལ་ཀུན་ ༡༠/བ.
 4 'མིའི་ལུགས་མ་ལེགས་པ་བྱས་པས', དེ་ཉི་ དེ་ཉིད།

ནས་། འདི་གསོ་དགོས་སྐྱེ་ནས། རྒྱལ་བུ་ལ་སྐྱས་པ། ཉིད་གསོད་པ་ནི་
 བདག་གིས་²མི་ཐོད་ལ།³ རང་གི་བུ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དུ་གསོད་⁴དོ་ཞེས་བྱས་པས།
 (རྒྱལ་བུ) དེ་ན་མེ། དེ་ནི་མི་རུང་སྟེ། བདག་རང་ཐོད་ཅིག བདག་གི་མ་ཡི་
 ཞལ་ཆེ་མས་སུ་“ལུས་དང་སྲོག་གི་ཕྱིར་ཡང་སྲིག་པའི་ལས་མ་བྱེད་” གསུངས་
 པས། ཡབ་ཀྱི་རི་ལྗར་བཀའ་སླུལ་པ་ལྗར་གྱིས་ཤིག་གསུངས་⁵སོ།།

དེ་ནས་ཤིང་རྐང་པ་གཅིག་པའི་ཙམ་བསྐྱལ་ནས། གཤེད་མས་རྐང་
 ལག་བཅད་དེ་དེ་དག་རང་གི་བྱིས་དུ་ཐོང་ངོ་།།

དེ་ནས་ཕྱོགས་དེར་རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོ་ ‘ཨཅིན་’⁷ བྱ་བ་ཞིག་གིས་
 རྒྱལ་བུ་དེ་ལ་དབང་བསྐྱར་གདམས་ཅང་ག་བྱིན་ནས། (དེ་ནས) རྒྱང་བྲགས་
 གཅིག་ཙམ་ན་(ཡོད་པའི)བ་རི་རྒྱམས་ཀྱི་ནང་དུ་རྒྱལ་འབྱོར་པ་དེས་བྱོན་ཏེ།
 དེ་རྒྱམས་ལ་“ཕ་གི་འོ་བུ་མོ་དེ་ལྷིང་བའི་འོ་ག་ན་ཤིང་རྐང་པ་གཅིག་པའི་རུང་ན་

1 ‘བསད་ལ’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༡༠/བ ‘བསད་པ’ བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་
 2 ‘བདག་གི་མི་ཐོད་ན’ - བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་
 3 ‘བདག་གི་མི་ཐོད་ལ’ - བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་
 4 ‘བསད་ལ’ - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༡༠/བ བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་ དེ་ཉིད།
 5 ‘གསུངས་པ་དང་། - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༡༠/བ གསུང་བ་དང་, བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་
 6 ‘རྩར་རོལ་པས’ - བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་
 7 ‘བསམ་མི་བྱུང་’ - བེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
 8 ‘གདམ་ངག་’ - བེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ བོང་།

མི་ཡན་ལག་བཅད་པ་ཞིག་འཕྲོད་པས། དེའི་གན་དུ་སུ་འགྲོ་རྒྱུ་སྟེ། གསུངས་
 པས། དེ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་སློམ་འཚོང་གི་རིགས་ཀྱི་ཁྱེད་ལྟེ་ཞིག་ན་ཟེ། བདག་
 གིས་རུས་ཟེར་རོ།། འོན་ཀྱང་བདག་གིས་ཉིད་ཀྱི་བྱ་བ་བསྐྱུབ་ཀྱིས་དངོས་ཀྱི་བྱ་
 བ་ཉིད་ཀྱིས་སྐྱབས་ཤིག་ཟེར་ནས། བ་ལང་རྣམས་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་གཏད་དེ།
 བྱ་ཚོད་ལྡིང་བ་མཚན་མར་བྱས་ནས་སྤྱིན་པས། ཤིང་རྒྱང་གཅིག་པའི་དྲུང་ན་དེ་
 འདུག་པ་མཐོང་ནས་ལོག་སྤྱིན་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཨུའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་འདུག་གོ་
 བྱས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་བ་ལང་རྒྱུ་ལ་“ཁོང་ལ་བཟའ་བརྟུང་ཅི་ཡོད་བྱས་
 པས།” “བདག་ལ་ལང་ལང་འཚོ་བའི་དེད་དཔོན་ཞིག་ཤིས་ནང་རུབ་ཁོལ་གྱི་
 བཟའ་བཅའ་དུ་མ་རེ་སྟེར་བས་དེའི་སྤྱིད་དེ་ཁོང་ལ་སྐྱེལ་ལོ་”ཞུས་པས། “དེ་
 རུང་། ཅོ་རྒྱུ་སྟོལ་ཅིག” གསུངས།

ཁོས་ཤིང་(དེ་རང)གི་འཁོར་དུ་ལོ་མའི་ཁང་པ་ཐུབ། ཟས་སྤྱིན་ཞིང་
 མི་གཅང་བའི་ལྷན་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་ལག་གིས་སྤང་ཞིང་བསལ་ཏེ། ལོ་བཅུ་

1 ‘གཅད་པ་གཅིག’ - བེ་ཉི་ བོག་ ༡༢ དེ་ཉིད། སྐྱབ་ཀྱན་ བོག་ ༡༠/བ.
 2 ‘ཁྱེད་ཅིག་ན་ཟེ’ - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག་ དེ་ཉིད། ‘གཅིག་ན་ཟེ’ བེ་ཉི་ བོག་ ༡༢ བོང
 3 ‘འདི་བཞིན་དུ་……’ - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག་ ༡༠/བ བེ་ཉི་ བོག་ ༡༢ འོག
 4 ‘བདག་བ་ལང་འཚོ་བའི’ - བེ་ཉི་ བོག་ ༡༠ འོག
 5 ‘གཅིག་གིས’ - སྐྱབ་ཀྱན་བོག་ ༡༠/བ. བེ་ཉི་ བོག་ ༡༡ འོག་ དེ་ཉིད།
 6 ‘ཁོལ་བཟའ་བཅའ’ - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག་ ༡༠/བ. ‘ནང་རུབ་བཟའ་བཅའས’ བེ་ཉི་ བོག་ ༡༢
 7 ‘ཅོ་རྒྱུ་སྟོལ’ - སྐྱབ་ཀྱན་ ༡༠ བོག་ དེ་ཉིད། ‘ཅོ་རྒྱུ་པ་བསྐྱེལ་གཅིག’ བེ་ཉི་
 བོག་ ༡༢ བོང།

གཉིས་སུ་དེ་ལྟར་བྱས་སོ།། དེ་ནས་ (དེ) དུས་གཅིག་གི་ཚེ་དེར་སྤྱོད་པས།
དེ་ལངས་ནས་འདུག་པ་མཐོང་བས། རོ་མཚར་ནས་དྲིས་པས། དེའི་ཞལ་ནས

ཐབས་མཁས་སླ་མ་དམ་པ་ཡིས། །
དབྱིངས་དང་རིག་པ་རོ་སྤྱད་པས། །
ཚོས་རྣམས་རོ་བོ་གཅིག་དུ་ཉོགས། །
བདེ་སྤྱུག་མེད་པ་རོ་མཚར་ཆེ། །

ཞེས་གསུངས་ནས་ “དངོས་འདི་བཞིན་དུ་རྐང་པ་ལལ་པ་གསར་དུ་
སྐྱེས་སོ”ཞེས་གསུངས་ཏེ་བར་སྐྱང་ལ་འཕགས་ནས་འབ་ལང་ཇི་ལ་ “ངས་
གདམས་ངག་སྐྱོན་ནམ།” བྱས་པས། བ་ལང་ཇི་ན་ཤེ། གདམས་ངག་
མི་འདོད། བདག་གི་སློབ་དཔོན་ཞིག་ཡོད་པ་དེས་བྱིད་ལ་བསྐྱེན་བཀུར་གྱིས་
གསུངས་ནས་ཉིད་ལ་འདི་ཅུག་བསྐྱེན་བཀུར་བྱས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱས་ཏེ། བ་
ལང་ཇི་དེ་སླར་ལོག་ནས་བ་ལང་སྐྱོང་གིན་འདུག་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་
ཨཅིནྟས་བ་ལང་སྐྱོང་གི་གན་དུ་འོངས་པ་དང་། བ་ལང་ཇིས་སྤར་གྱི་གཏམ་
བྱས་པས་ཤིན་དུ་དབྱེས་པར་གྱུར་དོ།།

ཨཅིནྟས་བ་ལང་ཇི་ལ་དབང་བསྐྱར་གདམས་ངག་བྱིན་ནས་ཡུལ་གཞན་
དུ་གཤེགས་སོ། །བ་ལང་ཇིས་ཀྱང་བསྐྱོམས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་

1 ‘འཕགས་ཏེ’ - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༡༡/ན.
2 ‘གདམ་ངག’ - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༡༣ འོག

དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པའི་ཚེ། ལྷ་མ་དེར་བྱོན་ནས། “ཁྱོད་སེམས་ཅན་
 འབྲུམ་ཕྲག་བརྒྱ་མ་གྲོལ་གྱི་བར་དུ་སངས་མ་རྒྱ་ཞིག་”² གསུངས་པས། དེས་
 ཀྱང་སེམས་ཅན་གྱི་ཚད་ལ་དབང་བསྐྱར་བྱས་པས། མདུ་དེལ་ས། ཁྱོད་སེམས་
 ཅན་གྱི་ཚད་ལ་དབང་བསྐྱར་མ་བྱེད་པར་གང་གསོལ་བ་འདེབས་པ་དེ་ལ་གྱིས།
 སེམས་ཅན་མ་དད་པ་དང་། ཤེས་རབ་མེད་པ་ལ་མི་རུང་བ་ཡིན་བྱས་པས།
 དེ་མཚན་ཚད་ལུང་བསྐྱར་པ་ལྟར་མཛད་དོ།

གདུལ་བྱ་མང་དུ་སྒྲོལ་ཞིང་བ་ལང་སྒྲོང་བར་⁴བྱེད་པ་ཡིན་པས་
 (མཚན་ལ་) ‘གོ་རྒྱུ’ ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། ད་ལྟ་⁵ཡང་
 ལས་འཕྲོ་ཡོད་པ་ལ་དབང་བསྐྱར་ལ། ལས་དག་པས་དུས་བཟང་ལ་ཇམ་རུའི་སྐྱ་
 ཙམ་ཐོས་ཤིང་། གཞན་གྱིས་ནི་མི་ཐོས་ཤིང་མི་སྤང་བའི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་སོ།

གུ་རུ་ཐོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་རྗེས་སོ།

༡༠) རྩོམ་རྒྱུ།

གུ་རུ་ཐོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་ནི། མོང་དུ་བཞེད་མ་ཐག་པའི་རྒྱལ་བུ་
 ཡན་ལག་བཅད་ཅིང་ཤིང་རྐང་གཅིག་པའི་དྲུང་དུ་གནས་པ་དེ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་

-
- 1 ‘དེར་བྱོན་ཁྱོད’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/ན.
 - 2 ‘མ་རྒྱ་ཅིག’ - པེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ བོང་།
 - 3 ‘མི་རུང་བ་ཡིན་ཟེར་ནས་’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/ན. པེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ བོང་ ༡
 - 4 ‘སྒྲོང་བྱེད་པ་ཡིན་པས་’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༡/ན. པེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ བོང་ ༣
 - 5 ‘ད་ལྟ་’ - ཞེས་པ་ ཨ་ལྷ་ཡང་རྩོམ་ལོ་རྒྱུས་སུ་འོ།

ཨ་ཅི་རྩ་པ་ས། དབང་དང་རྒྱུ་ལུ་མ་པ་ཅན་ལ་སོགས་པ་གནང། “གྲུབ་པའི་དུས་
ན་ལུས་ཀྱང་ཕྱིན་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ” ཞེས་ལུང་བསྟན་ནས་གསེགས་སོ།

དེས་ཀྱང་བསྐྱོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་ན། རྒྱལ་པོའི་ཚོང་པ་
མང་པོས་གསེར་དངུལ་མན་གཤེད་ལ་ཕོགས་པ་རེན་པོ་ཆེ་མང་དུ་བྱིར་ནས་
འོངས་ཏེ། (རྒྱལ་བུ་ཡོད་) ས་དེར་ཚོམ་རྒྱུ་སོགས་ཕྱུང་དོགས་ཀྱིས་⁴
མཚན་མོ་འོངས་ནས་གིང་དེའི་ཅ་ནས་མར་སྦྱིན་པ་ན། རྒྱལ་བུ་དེས་ (ཚོང་
པ་རྒྱམས་ཀྱི) ཀྱང་པའི་སྐྱེ་ཐོས་ནས་སྐྱས་པ། ‘དེ་སྲུ་ཞིག’ ཚོང་པ་དེ་དག་གིས་
(འདི་) ཚོམ་རྒྱུ་ཡིན་སྟུང་ནས་ [དེས་ནོར་བཙོམ་ཡོང་བའི་འཇིགས་པས་
གཡོ་བུས་ཏེ] “ངེད་རྒྱམས་སོལ་བྱེད་མཁན་ཡིན་ནོ” སྐྱས་པ་དང་། རྒྱལ་
བུ་དེས་ “དེ་བཞིན་དུ་གྱུར་ཅིག” ཅེས་སྐྱས་སོ། དེ་ནས་ཚོང་པ་དེ་རྒྱམས་
རང་གི་གནས་སུ་སྦྱིན་པ་དང་། གསེར་སོགས་དངོས་པོ་རྒྱམས་སོལ་བར་གྱུར་
པ་མཐོང་ནས། ཀྱུན་ཏེ་ལས་ཏེ། འདི་ལྟ་བུར་གྱུར་པ་ནི་ཅི་ཡིན། ལྷམ་དུ་
སེམས་པར་བྱེད་དོ། དེ་ནས་དེ་རྒྱམས་ཀྱི་ནང་ནས་སློང་དང་ལྷན་པ་ཞིག་གིས་
སྐྱས་པ། ལུ་མོ་འོང་དུས་ ལམ་དུ་སྲུ་ཡིན་འདྲི་མཁན་ཅེ་བདེན་ཚིག་གྲུབ་

1 ‘ཨ་ཅི་རྩ་པ་’ - རྒྱལ་ཀུན་ བོག་ ༡༡/ན. པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩ བོང་ 179. Vol. 87.
2 ‘མན་གཤེད་སོགས་’ - རྒྱལ་ཀུན་ བོག་ ༡༡/བ. པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩ བོང་།
3 ‘འོངས་སྐྱེ།’ - པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩ བོང་།
4 ‘ཕྱུང་དོགས་མཚན་མོ་’ རྒྱལ་ཀུན་ བོག་ ༡༡/བ སོགས་ཕྱུང་ངོ། མཚན་ - པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩
5 ‘སོལ་བ་བྱེད་མཁན་ཡིན་ནོ།’ - རྒྱལ་ཀུན་ བོག་ ༡༡/བ པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩ བོང་།
6 ‘འདྲི་བ་དེ་’ - རྒྱལ་ཀུན་ བོག་ ༡༡/བ. པེ་ཉི་ བོག་ ༡༩ བོང་།

པ་ཞིག་ཡིན་པ་། ཤོར་མ་ཆག་ དེ་འབྲེ་བ་དེ་²སྲུ་ཞིག་ཡིན་³ལྟར་འདིང་ཟེར་ནས།
 སྐར་དེ་རྣམས་ཀྱིས་དེར་སྦྱིན་པ་ན། ཤིང་གཅིག་གི་དྲུང་ན་ཡན་ལག་བཅད་པའི་
 མི་དེ་འདུག་པ་མཐོང་ནས། དེ་ལ་སྐར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་བྱས་ཏེ་སྐར་བདེན་
 ཚིག་⁴འདྲོར་དུ་བཅུག་པས།

རྒྱལ་བུ་ན་ཤེ། ངས་ལན་པ་མིན་ནམ། ཡིན་ན་བྱིང་རྣམས་ཀྱི་ཚོར་
 རྣམས་⁵སྐྲ་མ་ཁོ་ན་ལྟར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བཞོད་ནས། ཚོང་པ་རྣམས་ལོག་སྟེ་
 སང་གི་ཚོར་རྣམས་སྐྲ་མ་ཁོ་ན་ལྟར་གྱུར་པར་མཐོང་སྟེ། ཡ་མཚན་སྦྱེས་ནས་
 རྒྱལ་བུ་དེ་ལ་མཚོད་པའི་སྦྱིར་(དེ་ཡོད་སར་)སྦྱིན་ནས་ལོ་རྒྱུས་བྱས་པས། རྒྱལ་
 བུ་དེས་སྐར་གྱི་སྐྲ་མས་ལུང་བསྟན་པ་དེ་བྲན་ཏེ། དེ་ལྟ་ན་བདག་གི་ལུས་ཀྱང་
 སྐྲ་མ་ལྟར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བཞོད་པས། དེ་ལྟར་གྱུར་ཏོག།

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་ནས་རྒྱ་འབྲུལ་བསྟན་ལ་⁷། ལང་མས་ངག་
 ལ་གནག་པས་འགྲོ་བ་ལ་ (ལང་མས་ངག) ཅི་མ་བསྟན། འོན་ཀྱང་ཤིང་ལ་

1 'ཡིན་པར' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ. ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ བོང་།
 2 'དེ་འབྲེ་བ་སྲུ་ཞིག་ལྟར་འདིང་' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ.
 3 'དེ་འབྲེ་བ་སྲུ་ཞིག་ལྟར་འདིང་' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ.
 4 'སྐར་བདེན་པའི་ཚིག་' - ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ འོག
 5 'ཚོར་སྐྲ་མ་ཁོ་ནར' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ.
 6 'གྱུར་ཏེ།' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ.
 7 'བསྟན་ཏེ།' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ. ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ འོག
 8 'མ་བསྟན་ལ།' - རྒྱལ་གྱུན་ ཤོག་ ༡༡/བ. ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣ འོག

བསྟན་པས་ཤིང་འཆི་མེད་དུ་གྱུར་པས་ད་ལྟ་ཡང་འཕྲོད་ཟེར་རོ།
འཆི་མེད་བརྟེན་པའི་ཙོ་རྒྱའི་ལོ་རྒྱུས་ཇོགས་སོ། །

༡༡) ལྷོན་པ།

གུ་རུ་ལྷོན་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ལྷོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་བསྐྱུར་ན་པི་མང་

ཞབས་བྱ་བའོ། །འདྲིའི་ཡུལ་གླུ་ར་ (གའི་ཅ)། རིགས་རྒྱལ་རིགས། སྤ་མ་
ནི་བུ་རྒྱུ། དངོས་གྲུབ་ནི་དབྱེས་པ་དོ་རྗེ་ལས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ཡང་ཡུལ་གླུ་རའི་(གྲོ་འའི་)རྒྱལ་པོ་ལ་སྤྲུམ་གཅིག་ཡོད་པ་ལ། བ་
མ་དང་། འབངས་རྣམས་ཤིན་ཏུ་གཅིས་པར་གྱུར་ནས། མ་མ་བརྒྱན་ལ་
སོགས་པ་ལ་གཏད་དེ་སྦྱིད་བསྐྱིད་ས་པ་དང་། རྒྱལ་བུ་དེ་སྦྱོར་སྦྱོར་འབྲུལ་བའི་
རོལ་མོ་མཁན་དུ་མ་དང་ཉལ་དུ་ལྷན་ཅིག་དུ་བསྐྱུར་པས། ཤེས་པ་གོ་མས་པའི་
སྦྱོབས་ཀྱིས། ཉི་བུ་རའི་སྤྱོད་ལ་སློ་ཅེ་གཅིག་དུ་ཞུགས་ཤིང་པི་མང་སྦྱིང་བ་ལས།
འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་གཞན་ལ་སློ་སྦྱང་ཡེ་མི་འཇུག་པས། དེའི་ཡབ་ཡུམ་དང་
སློན་པོའི་ཚོགས་དང་འབངས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་ལ་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད། རྒྱལ་བུ་
འདི་ནི་ཡབ་རྒྱལ་པོའི་རྒྱལ་ཚབ་གྱི་ཆེད་དུ་སྦྱིད་བསྐྱིད་ས་པ་ཡིན་ལ། རྒྱལ་སྦྱིད་
གྱི་བྱ་བ་མི་བྱེད་པར་པི་མང་གི་སྤྱོད་ལ་ཆགས་པས་ཅི་བྱེད་ཅེས་སྦྱིང་བ་ན། རྒྱལ་

1 'ད་ལྟ་ཡོད་.....' - ལྷོན་ཀྱན་ ཤོག་ དེ་ཉིད
2 'ཡོད་པ་ལས་' - ཤོ་ཉི་ ཤོག་ ༡༩ འོག

བུ་དེའི་གན་དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་བུ་རྒྱ་ཤུ་བྱོན་པས་རྒྱལ་བུ་
 དང་པར་གྱུར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ལ་ཕྱག་དང་བསྐྱོར་བ་བྱས་ནས་གསོང་པོར་
 ལྷ་བའི་གདམ་སྒྲ་ཚོགས་བྱས་སོ།།

རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་རྒྱལ་བུ་དེའི་ཐང་དུ་ཅུང་ཞིག་གཞུགས་ནས། རྒྱལ་
 བུ་དེ་འདུལ་བའི་དུས་ལ་བབ་པར་གཟེགས་ནས། རྣལ་འབྱོར་པས་རྒྱལ་བུ་ལ་
 རྒྱལ་བུ་ཁྱོད་ཚོས་མི་བྱེད་དམ། བྱས་པ་ལ། རྒྱལ་བུ་དེ་ན་ཤེ། རྣལ་འབྱོར་
 པ་བདག་ཚོས་བྱེད་པ་ལགས་ཅེ། བདག་གིས་རོལ་མོ་དྲི་བུ་ལྷ་འདི་སྦྱང་བར་
 མི་རྒྱས་པར་འདུག་པས། འདི་མ་སྦྱངས་པར་ཚོས་སྐྱབ་པའི་ཐབས་མཚིས་ན་
 བདག་ཚོས་བྱེད་ལགས་སོ།། ཞེས་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་ཤེ། ཚོས་བྱེད་
 པའི་དང་པ་དང་བཙོན་འགྲུས་ཡོད་ན་པི་སྦང་མ་སྦྱངས་པར་ཚོས་སྐྱབ་པའི་
 ཐབས་དང་གདམས་ཅངག་བདག་ལ་ཡོད། བྱས་པས།

དེས་དེ་ཞུ་ཟེར་ནས། རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་རྒྱུད་མ་སྦྱིན་པ་སྦྱིན་པར་
 བྱེད་པའི་དབང་བསྐྱར། བསྐྱོམ་པའི་གདམས་ཅངག་ནི།

རྒྱལ་བུ་ལ་འདི་སྦྱང་དུ། དྲི་བུ་རའི་སྐྱ་རྒྱ་བར་ཐོས་པའི་རྣམ་རྟོག་དོར་ལ།

1 'བྱས་ཏེ།' - ལྷུག་ཀུན་ཤོག ༡༣/ན. པེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ཁྱང་ 179-vol 87.
 2 'ཚོས་བྱེད་པ་ལ་བདག་གི་རོལ་མོ' - པེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ཁྱང་།
 3 'གདམ་ཅངག' - པེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ཁྱང་ དེ་ཉིད།
 4 'གདམ་ཅངག' - པེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ཁྱང་།
 5 'རྒྱ་བར་གྲགས་པའི་རྣམ་རྟོག' - པེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ཁྱང་ དེ་ཉིད།

སེམས་ཀྱི་དམིགས་པ་དང་སྐྱེའི་རྣམ་རྟོག་གཉིས་གཅིག་དུ་གྱིས་ལ་བསྐྱེམས་འཁོག
 བྱས་ནས། དེས་དེ་ལྟར་བསྐྱེམས་པས་ལོ་དགུ་ནས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྒྲི
 མར་མེ་ལྷ་བུའི་འོད་གསལ་གྱི་ཉམས་སྦྱིས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོབ། མངོན་
 པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོས་དུ་མ་རྒྱུད་ལ་སྦྱིས་ནས། མིང་དུ་
 ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་མྱིན་(རྒྱུ་)ལྷ་ཞེས་བྱ་བར་སྦྱོར་བམས་ཅད་དུ་བྲགས་ཤིང་།
 ལྷུང་རྩལ་གྱི་འོད་ཀྱི་སྦྱི་བོའི་ཚོགས་བམས་ཅད་ལ་ཚོས་དཔག་དུ་མེད་པ་
 བསྐྱེད།

མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་
 ཀྱིས་མཁའ་སྦྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་རྗོགས་སོ།། ॥

༡༣) གྲུབ་ཐོབ་སྒྲིབ་པ།

གྲུབ་ཐོབ་སྒྲིབ་པ་ལོ་རྒྱུ་ནི།

མགུར་འོད་ཀྱི་སྦྱི་བོའི་སྦྱི་བོ་ལྷུ་ལ་པོ་
 དེམས་ལས་² ལྷུ་ལ་སྦྱི་བོའི་སྦྱི་བོ་དུས་སུ་མི་ཀླུ་ལ་³གྲུབ་ཐོབ་ལས་
 རབ་དུ་བྱུང་བའི་སྦྱི་བོ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྣམས་⁴གྲུབ་ཐོབ་ལས་པའི་གནས་ལྷུ་

1 'བསྐྱེམས་འཁོག' - དེ་ཉིད་ དེ་ཉིད།
 2 'དེམས་ལས' - དེ་ཉིད་ འོག་ ༡༥ འོག་ དེམས་ལས་ ལྷུ་ལ་སྦྱི་བོ་ འོག་ ༡/བ。
 3 'མི་ཀླུ་ལས་ལྷུ་ལ' - དེ་ཉིད་ འོག་ ༡༥ དེ་ཉིད། མི་ཀླུ་ལས་ ལྷུ་ལ་སྦྱི་བོ་ འོག་ ༡༣/བ。
 4 'རྣམས་ལས་ལྷུ་ལ' - ལྷུ་ལ་སྦྱི་བོ་ འོག་ ༡༣/བ་ དེ་ཉིད་ འོག་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།

ལ་མཁས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཞིག་ཤུང་སྟེ། དེ་མཁས་ཤིང་བཙུན་པའི་ཡོན་
 ཏན་གྱི་སྟུན་པ་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱུ་པར་གྱུར་པ་དང་། དེའི་དུས་
 སུ་སི་ལྷའའི་སླིང་གི་རྒྱལ་པོ་ཀ་ཡིན་གྱི་བ་རང་གི་བསོད་ནམས་ལས་འདོད་ཡོན་
 གྱིས་བྲེལ་བ་མེད་པ་ཞིག་འབྱུང་པ་ལས། སི་ལྷའའི་སླིང་དུ་སངས་རྒྱལ་གྱི་བསྟན་
 པ་སྤར་མ་ཤུང་འཛིང་འཇམ་བུའི་སླིང་གི་མི་འོངས་པ་ཀུན་ལས་སངས་རྒྱལ་གྱི་
 ཚོས་གྱི་ཡོན་ཏན་ཐོས་ལ། ཚོས་སྟོན་པའི་གང་ཟག་དང་ནི་མ་འཕྲད་པའི་དུས་
 དེར་མགས་ཅན་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཤེ་ལྷུ་གྱི་བ་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་བཞུགས་པ་
 པ་ཐོས་ནས། རྒྱལ་པོ་ཀ་ཡིན་ལ་སོགས་པ་སི་ལྷའའི་སླིང་གི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་
 གྱིས་སྐྱོ་སྐྱོས་དང་སྤྱོད་འདྲིན་གྱི་ཕོ་ཉ་བཏང་སྟེ། སྤྱི་མཁ་འདྲེལ་ར་མཐར་གྱིས་

1 'བསོད་ནམས་འདོད་ཡོན་' - དེ་ཉི་ཤོག་ དེ་ཉི་ད།
 2 བཙུན་, - དེ་ཉི་ དེ་ཉི་ད།
 3 འདོད་, 'སླིང་དེར་སངས་རྒྱལ་གྱི་བསྟན་པ་སྤར་མ་ཤུང་' - ཞེས་པ་, ཅུང་ཟད་མི་ལེགས་ཏེ།
 སླིང་དེར་ཐོག་པ་ཆེ་ཆུང་དང་། བསངས་ལྷགས་དོ་ཇི་ཐོག་པའི་བསྟན་པ་སྤར་མ་ཐོས་དེར་ཡོད་པ་
 དང་། བཙུན་བཏན་སྟེ་པའི་སྟེ་སྟོན་གསུམ་དགོངས་འབྲེལ་བཅས་པ་སྟོན་པ་སྤར་མ་ལས་འདས་
 རྒྱལ་ལོ་བརྒྱ་ཅམ་གྱི་རྗེས་ཚོས་རྒྱལ་ཨ་ཤོ་ཀའི་དུས་ནས་ད་བར་ཉམས་མེད་དུ་ཡོད་པ་དང་། སླིང་
 དེར་སྟོན་པ་དངོས་སུ་ཕེབས་ཏེ་གསུང་བའི་མདོ་སྟེ་རྣམས་ད་ལྟ་ཡང་བཞུགས་པས་སོ། དེས་ན་
 གོང་སྟོས་གྱི་ཚིག་དོན་ ཐོག་ཆེན་གྱི་བསྟན་པ་ཉམས་ནས་མེད་པའི་དོན་ཡིན་པར་སེམས་སོ། །
 4 'བཙུན་' - དེ་ཉི་ དེ་ཉི་ད
 5 ཟེར་པ་ཐོས་, - དེ་ཉི་ དེ་ཉི་ད།
 6 'སླིང་པའི་' - ལྷུ་བ་ཀུན་, དེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣/བ. དེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༥, འོག
 7 'བྱི་མཁའ་ཤིལ་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ དེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༣/བ. དེ་ཉི་ད། བྱི་མཁའ་ཤིལ་ དེ་ཉི་ ཤོག་
 ༡༥ འོག དེ་ཉི་ད།

ཕྱིན་ནས། བོ་ཉ་བས་ནང་པར་སློབ་དཔོན་ལ་ཕྱག་ལུས། སི་རྒྱལ་འི་རྒྱལ་པོ་
ལ་སོགས་པས་བསྐྱར་བའི་སྐྱོ་སྐྱོས་གསེར་དང་དངུལ་དང་མུ་ཉིག་དར་ཟུང་ལ་
སོགས་པ་ཕུལ་ནས་འདི་རྒྱུད་དུ།

རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པས་ཞུ་། ལ། “དངོས་ཅག་གླིང་ཕྱན་མཐའ་འཁོབ་དུ་
ནི་སྐྱེས། མ་རིག་པའི་མུན་པ་ནི་འཕྲིབས། འདོད་ཆགས་ཀྱི་མེས་ནི་བསྐྱེགས།
ཞེ་སྤང་གྱི་མཚོན་གྱིས་ནི་གཅེས། འོག་པའི་རྩོག་པས་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤང་བ་ནི་
གཡོགས། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚོས་ཀྱི་ཐར་ལམ་ནི་སློར་ན། བདག་ཅག་རྣམས་
ལ་ཐུང་ཇི་ཆེན་པོས་དགོངས་ནས་སི་རྒྱལ་འི་གླིང་འདིར་འགྲོ་དོན་ལ་མི་གཤེགས་
སུ་མི་རུང་ཞུ་ཡིན་གདའ།” ཞེས་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་དགོངས་པ་
མངོན་དུ་མཇོང་ནས་གཤེགས་པར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་སོ།།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་གྲུ་རྩེ་པས་འཁོར་སློབ་མའི་ཚོགས་ཉིས་སྤྱང་ཅམ་
དང་། རྩེ་སྤྱོད་ཀྱི་སྐྱེགས་བམ་རྣམས་ཉ་དང་སྤང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་བཀལ་ནས་
ཆས་ཏེ། རྒྱལ་རྒྱ་དང་། ཨོད་རྩེ་ཡུ་རི་[ཨོྲེ་ཡ་རྩེ་ཡུ་རི་]དང་། རྒྱལ་པོའི་ཁབ་
དང་། རྩོ་ཇི་གདན་ལ་སོར་པའི་གྲོང་རྣམས་རིམ་གྱིས་བསྐྱོད་ནས། སི་རྒྱལ་འི་གླིང་
གི་རྒྱ་མཚོའི་འགྲམ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། སྤོན་ལ་བོ་ཉ་བདང་སྤེ། ཕྱི་ནས་སློབ་
དཔོན་འཁོར་དང་བཅས་པ་རྣམས་ཐུར་ཞུགས་ནས་བྱོན་པ་དང་། བོ་ཉ་བས་

1 ‘སོགས་པའི་ཞུ་ག’ - བོ་ཉི, བོག་ དེ་ཉིད།
2 ‘ཨོྲེ་རྩེ་ཡུ་རི་དང་’ - བོ་ཉི་ བོག་ ༡༥ བོང་, དེ་ཉིད།
3 ‘སི་རྒྱལ་གླིང་’ - རྒྱུབ་ཀུན་ བོག་ ༡༣/ན, 25. 14. བོ་ཉི, བོག་ ༡༥ བོང་ དེ་ཉིད།

སློབ་དཔོན་ཐེབས་ཀྱི་ཡོད་དོ་བྱ་བའི་གཏམ་རྒྱས་པས། རྒྱལ་པོ་ཀའི་ན་དང་།
 སློན་པོ་དང་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་དགའ་བ་
 སྐྱེས་ཏེ། དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རང་རང་གི་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་སློབ་བཏང་སྟེ།
 རྒྱ་མཚོའི་ཕྱོགས་སུ་ཡིད་གཏད་ནས་ཞག་བདུན་ལོན་པ་དང་། གདུགས་དང་
 རྒྱང་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྟགས་ཐམས་ཅད་མཐོང་ནས་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་
 རབ་དུ་དགའ་སྟེ། རང་གི་ཡུལ་ནས་རྒྱ་མཚོའི་བར་ཐམས་ཅད་དུ་ནི་ཕྱག་དར་
 བྱས། དར་ལ་སོགས་པས་ས་གཞི་ཐམས་ཅད་གཡོགས་ནས་དེ་ལ་སློབ་དཔོན་
 ལ་སོང་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཞབས་བཞག་ནས་གཤེགས་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་ཀའི་
 འཁོར་དང་བཅས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མེ་རྟོག་དང་། བདུག་སློབ་ལ་སོགས་པ་
 ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྒྱ་ཆེར་མཚོད་དེ། སློབ་དཔོན་དབྱེས་པའི་གནས་མལ་ལ་
 སོགས་པ་ཀུན་སུལ་ནས་ལོ་གསུམ་གྱི་བར་དུ་ཕྱི་སྡོད་ཀྱི་ཚུལ་མང་དུ་བཤད་དོ།།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་གྲུ་ལྷོ་འཁོར་བཅས་ཡུལ་དབུས་སུ་ཆས་པ་དང་།

རྒྱལ་པོ་ཀའི་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རྟ་དང་རྒྱང་པོ་དང་གསེར་དངུལ་
 དང་མུ་རྟིག་ལ་སོགས་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་སུལ་ནས་ཡུལ་དབུས་སུ་ལོག་པ་ལ་
 ལམ་གཉིས་ཡོད་པའི་རིང་ཤོས་ནས་ཆས་སོ།།

1 ‘ཀའི་སློན་པོ་དང་།’ རྒྱལ་ཀུན་ཤོག་ ༡༣/ན དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ཤོག་ ༡༥ བོང་ དེ་ཉིད།
 2 ‘ཐམས་ཅད་ནི་ཕྱག་’ - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༥ བོང་ དེ་ཉིད།
 3 ‘ཐམས་ཅད་ཀྱི་’ - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག་ ༡༣/ན.
 4 ‘ཚུལ་མང་དུ་བཤད་ནས།’ - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༥ བོང་ དེ་ཉིད། རྒྱལ་ཀུན་ ༡༣ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་རྒྱལ་འདུན་གྱི་ལྷན་ཚོགས་ལ་ལྟན་འགྲུབ་ཀྱི་འཕེལ་རྒྱས་ལ་འཇུག་པའི་
 [འཇུག་པའི་འགྲོ་བའི་]དུས་སུ་ས་དེར་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་དྲུག་ལྷ་ཁང་གསུམ་
 ཀས་ཡོད། དེའི་མིང་(དུ་ཡང་)རྒྱལ་འདུན་གྱི་ལྷན་ཚོགས་ཀྱི་དང་། དེ་
 ཀས་(ཡུལ་དབུས་སུ་འགྲོ་སྐབས་)བར་ན་(མི་གྲོང་)མེད་པའི་ལམ་ཞག་བདུན་
 (འགྲོ་དགོས་པ་)ཡོད་པ་ལ། འཁོར་རྒྱལ་ལ་(སློབ་དཔོན་གྱིས་)ཞག་བདུན་གྱི་
 ཆས་བྱེད་ཅིག་གསུངས་ནས། དེ་བཞིན་དུ་གསུང་(སློབ་དཔོན་ཀྱིས་)ཞག་བཞིའི་ལམ་
 དུ་ཐེབས་པ་ན། སྐལ་ལྷན་རྟོག་ཅེ་པ་དང་མཇུག་ཏུ། དེའི་ལོ་རྒྱུས་ནི་ལོ་རྒྱུས་
 ལོ་རྒྱུས་སུ་སྒྲིག་ཅོ། །(དེ་ནས་)སློབ་དཔོན་འཁོར་དང་བཅས་པ་སྤྲོད་པའི་ལོ་
 འདུན་པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱི་དུ་བགྲེས་པར་གྱུར་པས་སློབ་ལོང་ཞིང་ལུས་
 པོས་སློབ་མི་བཟོད་ནས། སློབ་མ་རྒྱལ་གྱིས་མཉེན་ཞེ་ལ་ཁ་ར་བདུན་ཀས་
 འདུན་པ་ལས། གཞན་ཁ་བཅས་རྒྱལ་ལ་རྒྱལ་སྤངས་ནས་སྤོ་བ་བསྒྲིག་ཅོ།

ཡོངས་[གྲྭ་]སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལོ་བརྒྱ་ཙུ་བཞིས་པའི་དུས་སུ། སློབ་
 དཔོན་ནི་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རྟོག་པའི་ངང་ལ་གནས་ལ། རྟོག་ཅེ་པས་རྒྱལ་ལ་
 མི་རྟོག་པ་བསྒྲེས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་
 ཐོབ་སྟེ་གཉེན་པོའི་ཚོས་ཉིད་ལ་གནས་སོ།

1 'དགའ་བྱེད་དབང་ཕྱུག' - ཅས་འདི་ཉིད་ལས་བྱུང་།
 2 'ལོ་རྒྱུས་ལོ་རྒྱུས་སུ་སྒྲིག་ཅོ' - ལོ་རྒྱུས་ ༡༣/བ. 26 14 བེ་ཉི་ ལོ་རྒྱུས་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 3 'ལོ་རྒྱུས་ལོ་རྒྱུས་' - ལོ་རྒྱུས་ ༡༣ འོག་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ ལོ་རྒྱུས་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 4 'སློབ་དཔོན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་' - ལོ་རྒྱུས་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 5 'རྟོག་ཅེ་པ་རྒྱལ་ལ' - ལོ་རྒྱུས་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།

དེ་ལས་བཞེངས་པ་ལས། སློབ་དཔོན་གྲུག་ལ་ནི་སློབ་མ་རྣམས་ཀྱིས་
 བསྟེན་བཀུར་བྱེད་ལ། འོག་ཅེ་པ་ལ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཀུན་དང་། ལྷའི་དབང་པོ་
 བརྒྱ་བྱེན་ལ་སོགས་པས་བདུད་ཅི་སྤྱི་བོ་ཚངས་པའི་བྱ་གནས་མར་སྤྱལ་ནས་
 ཚིམ་པར་བྱས་སོ།། ལྷ་དང་མཁའ་གྲོ་མ་ཐམས་ཅད་ན་རེ། འདི་ནི་དོ་རྗེ་
 སེམས་དཔའ་དངོས་ཡིན་ཟེར་རོ།། འོག་ཅེ་པའི་བྱེན་སྤྱལ་གྱིས་ལྷའི་འདོད་
 ཡོན་ཐམས་ཅད་ཡུང་དོ། (འོག་ཅེ་པས་)སྤྲོ་མའི་གདམས་ངག་མ་ཐོབ་བར་
 ལ་སྤྱི་རོལ་གྱི་རི་བོ་སོགས་ལ། ཐོབ་ནས་སེམས་ཀྱི་རི་བོ་བོ་སོགས་པས་དངོས་གྲུབ་
 ཐོབ་གསུངས་སོ།།

དེ་ནས་ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱེན་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་སུམ་ཅུ་
 ཅུ་གསུམ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་གནས་སུ་སྤྱན་དྲངས་པ་ལ། འོག་ཅེ་པ་གཤེགས་སུ་
 མ་བཞེད་ནས། (དེའི་ཞལ་ནས།) བདག་ནི་སྤྲོ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་བ་ཡིན་ཏེ།
 སངས་རྒྱུས་པས་ཀྱང་སྤྲོ་མ་བཀའ་དྲིན་ཆེ་ལ། དེ་ཅི་སྟེ་ན།

སྤྲོ་མ་སངས་རྒྱུས་སྤྲོ་མ་ཚོས།།
 དེ་བཞིན་སྤྲོ་མ་དགེ་འདུན་ཏེ།།
 དམ་པ་གསུམ་ལ་སྤྱལ་སུ་མཚོ།།
 དམ་པའི་བྱེན་གྱིས་བསྐྱབ་ཏུ་གསོལ།།

1 ‘འོག་ཅེ་པ་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་’ - བེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ འོག་ དེ་ཉིད།
 2 ‘ཐམས་ཅད་འཕེལ་བྱུང་དོ།’ - བེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད།
 3 ‘དེ་ཅི་སྟེ་ན་ ཞེས་པ་ནས་ ‘གསོལ་’ ཞེས་པའི་བར་ བེ་ཉི་ དཔར་མར་མི་འདུག་སྟེ་ཆད་པར་སྒྲང་།

ཅེས་གསུངས་ནས།། ཡི་ཤེས་ཀྱི་སྐྱེན་གྱིས་གཟིང་ན་ཡུལ་གཉིས་ཀྱི་
 བར་ཟླ་བ་དྲུག་གི་ལམ་ཡོད་ཀྱང་སྐད་ཅིག་ལ་མི་ཀྱམ་གི་ལར་བྱོན་ནས། ཡི་ཤེས་
 ཀྱི་ལུས་ཀྱིས་སླ་མ་ལ་ཕྱག་དང་བསྐྱོར་བས་བསྐྱེན་བཀུར་མཛད་པ་ལ། སླ་མ་
 འཁོར་དང་བཅས་པས་མ་མཐུན་ནས་(ཡང་)དོག་ཅེ་པས་རྣམ་སྤྲིན་གྱི་ལུས་
 དངོས་སུ་བསྐྱེན་ནས་ཕྱག་དང་བསྐྱོར་བ་གྲངས་མེད་པ་མཛད། ཞབས་ལ་མགོ་
 བོས་གདུགས་པ་དང་། སྐྱེ་པས་སུ་ཡིན་ངེས་པ་ན། བདག་སླ་མའི་སློབ་མ་
 ཡིན་ཞེས་ཞུས་པ་ན། བདག་ལ་སློབ་མ་དཔག་དུ་མེད་པ་ཡོད་པས་དོས་མ་ཟིན་
 གསུངས་པས། སླར་བདག་དོག་ཅེ་པ་ལགས་ཞུས་པས། དཔོན་སློབ་གཉིས་³
 བརྒྱུས་མཛེས་ནས། ཡིད་ཐེབས་པའི་གདམ་མང་དུ་མཛད་ནས་⁴

སླ་མས་སློབ་མ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོས་ཅེ་ཐོབ། གསུངས་པས་
 དོག་ཅེ་པས་དངོས་ཀྱིས་སླ་མའི་གདམས་ཅང་ག་ཉམས་སུ་སྐྱངས་པས་ཕྱག་གྱི་
 ཚེན་པོ་ཚོས་ཀྱི་སྐྱེ་ཐོབ་ནས་མཆི་ཞུས་པས། སླ་མའི་ཞལ་ནས་ངས་ནི་སྐྱེ་བ་
 གཙོ་བོར་བྱས་ཤིང་སྐྱེ་བ་པ་གཙོ་བོར་མ་བྱས་པས། དོན་དང་མ་སྤང་ལ། ཁྱོད་
 ཀྱིས་ནི་སྐྱེ་བ་པ་གཙོ་བོར་བྱས་ཤིང་སྐྱེ་བ་གཙོ་བོར་མ་བྱས་པས་དོན་དང་མཛེས་

1 'དེ་གསུངས་ནས།' - བེ་ཉི་ ཤོག ༡༥ འོག 180 vol. 87.
 2 'མཛད་པ' - བེ་ཉི་ ཤོག ༡༤ བོང, དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༣/བ.
 3 'སློབ་དཔོན་གཉིས་' - བེ་ཉི་ ཤོག ༡༤ བོང དེ་ཉིད།
 4 'མཛད་དེ' - བེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད།
 5 'གདམ་ངག' - བེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད།
 6 'མ་བྱས་ནས' - བེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༡༥ ན 27. 14.

ནས་འདུག་འཛིང་། ངས་ཁྱོད་ལ་གདམས་ངག་སྤྲིན་པ་ཡང་བཞེད་ནས་འདུག་²
ད་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ལ་གདམས་ངག་ཀྱང་སྟོན། ཡོན་ཏན་གྱི་ཚེས་ཅི་ཡོད་པའང་སྟོན་
ཅིག་གསུང་ས་པས།

དོག་ཅི་པས། དབེན་པའི་ས་སྤྱོད་ས་སུ་སླ་མ་ལ་ཚོས་ཀྱི་སྐྱེའི་ཡོན་ཏན་
དུ་མ་ཡང་བསྟན། སྤར་སླ་མ་རང་གི་གདམས་ངག་ཀྱང་ཡར་ལུལ། སླ་མས་
ཀྱང་དགུང་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་སླངས་པས། སླ་མ་
རྒྱལ་རྒྱུ་³ལྡོག་པས་ཀྱང་ཕུག་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། འགྲོ་
བའི་དོན་མཇེད་དེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུ་རུ་རྒྱལ་རྒྱུ་སྤྱི་སྤྱི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།

༡༩) གྲུ་རུ་རྒྱུ་སྤྱི་སྤྱི

གྲུ་རུ་རྒྱུ་སྤྱི་སྤྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི། སེན་རྩོན་གར་བྱ་བ་ན། ཐར་མཁའ་
ཞིག་ལ་བུ་མང་དུ་ཡོད་པ་ལས། དེ་རྣམས་ཀྱི་ཕས་ཡུལ་དེར་ཐགས་ཀྱི་ལས་
བྱས་པས་དེ་འགྲོར་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་གྱུར་དོ།

དེར་བུ་རྣམས་ལ་རྩེ་དང་འཚམས་པའི་མནའ་མ་སླངས་⁴དེ་འགྲོགས་

1 'འདུག་ལ།' - བེ་ཉི་ཤོག་ དེ་ཉིད། ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
2 'འདུག་ལ།' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
3 'རྒྱལ་རྒྱུ་' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
4 'མནའ་མ་བསྐྱུ་ཏེ' - བེ་ཉི་ ཤོག་ ༡༦ འོག 180. vol 87.

པས། ཡུལ་དེར་ཐགས་མཁན་གྱི་རྟོ་རྒྱུད་དཔག་དུ་མེད་པ་འཕེལ་བར་གྱུར་།
 ཏོ།། (དུས་ཀྱི་རིམ་པས་) ཐགས་མཁན་དེའི་བྱམ་མོ་ནི་གི། ཐགས་མཁན་
 རང་གི་ལོ་བརྒྱན་ཅུ་ཅཱ་དགུ་ལོན་པ་ན་ཆས་གིང་འཁོར་པས་ལུས་ཀྱིས་སྦྱོར་མི་
 བཟོད་པ་དང་། མནའ་མ་ཀུན་གྱི་གན་དུ་གསོ་རེས་བྱེད་ཅིང་ཡོད་པ་ལས།
 དེ་ཆས་པའི་སྦྱོད་ལམ་ལ་ཀུན་གྱིས་འཕུའ་ཞིང་བཞད་གད་དུ་བྱེད་པ་དང་། དེར་
 མནའ་མ་ཀུན་གྱིས་གྲོས་བྱས་པ།

འོ་སྐྱེལ་གྱི་གྲོས་པོ་ཆེན་པོ་འདི་²མིས་མཐོང་ན་ཞེ་ལྷོག་ལ། རང་རེ་ཀུན་
 ཀྱང་སྤྲིག་གསོག་པར་འདུག་པས། རྒྱུད་མོས་ཚལ་དུ་ཅཱི་སྦྱིལ་པོ་བྱས་ཏེ་དེར་
 བཞག་ལ། ཟ་མ་རེས་མོས་ཀྱིས་³བསྐྱེལ་ལོ་ཟེར་ནས་ཐམས་ཅད་མཐུན་ཏེ་དེ་
 བཞིན་དུ་⁴བྱས་སོ།།

དེ་ནས་ལན་གཅིག་གི་ཚེ་སྐ་མ་རྒྱལ་ནུ་རྒྱ་བ་མཐར་གྱི་ཡུལ་དེར་
 བྱོན་པ་དང་། ཐགས་མཁན་གྱི་བུ་ཆེ་ཤོས་ཀྱི་གན་དུ་བྱོན་ནས་⁵བདག་ལ་ཟས་
 བྱིན་ཅིག་བྱས་པ་ལ། དེར་བཞུར་གིག་ཟེར་ནས། ནང་དུ་གཡོས་སྒྲ་ཚོགས་

1 'གྱུར་ཏེ་.....' - ཤོག ༡༩/ན. 27. 14.
 2 'གིན་པོ་འདིས་' - རྒྱུབ་ཀུན་ ཤོག ༡༩/བ. དེ་ཉིད།
 3 'ཟས་རེས་ཀྱིས་བསྐྱེལ་' - ཤོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད།
 4 'དེ་བཞིན་དུ་བྱས་' - རྒྱུབ་ཀུན་ ཤོག དེ་ཉིད།
 5 'གམ་དུ་བྱོན་' - ཤོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད།
 6 'བྱས་པས་' - ཤོག ༡༩ ཤོག དེ་ཉིད།

བྱས་ཟིན་ནས། རྒྱུ་མ་ལ་མེ་ཁྲོའལ་དེ་ནང་དུ་སྤྱོད་དོངས་ཤིག་ཟེར་ནས། དེ་
 བཞིན་འབྱས་ཏེ། སྤུང་མ་ནང་དུ་བྱོན་ནས་ཟས་ཀྱི་བྱ་བ་གྲུབ་སྟེ། སྤུང་མ་རྒྱལ་ན
 རྩེ་ལ་ལྷན་དུ་གཤེགས་པར་ཆས་པ་ལ། ཐགས་མཁན་གྱི་རྒྱུ་མས་སྤུང་མ་
 གཤེགས་དུ་མ་གཤེགས་པར་གནས་འདིར་གཟེམས་པར་ལྷུ་ལྷུས་པས། སྤུང་མས་
 བདག་མིའི་ནང་དུ་མི་ཉལ་གསུངས་པས། འོ་ན་དངོས་ཅག་གི་སྐྱོད་མོས་ཚལ་
 དུ་གཟེམས་པར་ལྷུ་བྱས་ནས། སྐྱོད་མོ་ཚལ་དུ་སྤྱོད་དོངས་ཏེ། ཐགས་མཁན་
 གྱིས་མེ་མར་ལ་སོགས་པ་བསྐྱལ་ནས་དེར་བལྟགས་པ་ན། ཐགས་མཁན་གྱི་དོ་
 བོས་མིའི་སྐྱེ་ཉི་ཐོས། སྤྱི་ཡིན་ནི་ཆ་མེད་ནས་དྲིས་པ། དེ་ན་སྐྱེ་གྲགས་པ་དེ་
 སྤྱི་ཡིན། སྐྱོབ་དཔོན་གྱིས་བདག་མཐོན་པོ་ཚོས་པ་ཞིག་ཡིན། ཉིད་རང་སྤྱི་
 ཡིན། སྐྱེས་པ་དང་། དེ་ན་ལེ། བདག་ཐགས་མཁན་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཕ་ལགས་ཏེ།
 བདག་གཞིན་པའི་དུས་སུ་གནས་དང་ལོངས་སྐྱོད་ཀྱི་བྱི་བདག་པོ་དངོས་ཡིན་
 ཀྱང་། ད་ལྟ་བུ་དང་མནའ་མ་ཀྱིས་བདག་ལ་འཕྱུ་སྐྱོད་ཅིང་། གཤེགས་གྱིས་
 མཐོང་གི་འདོགས་ནས་སྐྱོད་མོས་ཚལ་འདིར་སྤྱོད་ནས་བཞག་པ་ཡིན་ལགས།
 འཁོར་བའི་ཚོས་ལ་སྐྱོད་པོ་མེད་པ་འདི་འདྲ་བ་ལགས་སོ།། ཞེས་སྐྱེས་པ་ལ།
 རྒྱུ་མ་རྩེ་ལ་ལྷན་དུ་གཤེགས་པ་གསུངས་པ། —

1 'དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ།' - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༥
 2 'ཁྲིམ་པའི་ནང་དུ་མི་ཉལ་' ཞེས་པའོ།
 3 'མཐོང་གིས་འདོགས་' - སྐྱེ་གྲགས་ ཤོག ༡༤/བ.
 4 'སྐྱེ་བ་ལ།' - སྐྱེ་གྲགས་ ཤོག ༡༤/བ. དེ་ཉིད།

འདུས་བྱས་ཐམས་ཅད་ནི་མི་ཉལ་པ། སྲིད་པར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་
 ལྷུག་བསྐྱེད་པ། ཚོས་ཐམས་ཅད་ནི་བདག་མེད་པ། ལྷ་དཀ་ལས་འདས་པ་
 ནི་ཞི་ཞིང་བདེ་བ་ཡིན་པས། སྤི་རྒྱགས་ཀྱི་ཚོས་མི་དགོས་སམ། གསུངས་
 པས། ཐགས་མཁན་གྲོག་པོས་དགོས་ཞུས་ནས། རྒྱལ་འཛུགས་པས་ཐགས་
 མཁན་དེ་ལ་འདུལ་ཤོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་(བཅུག་ནས་)དབང་བསྐྱུང་།
 གདམས་པ་ལ་བྱིན་ནས་བསྐྱོམ་པ་དུ་བཅུག་སྟེ། སྤོ་མ་གཞན་དུ་གསལ་སོ།།
 ཐགས་མཁན་དེས་ཀྱང་སྤོ་མའི་གདམས་པ་ལ་ཡིད་ལ་བྱས་ཏེ། ལྷར་
 བཞིན་མཚའ་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་ལ་ཁ་མི་ཟེར་བར་འདུག་བསྐྱམས་པར་བྱས་
 ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་སྐྱུ་བ་པ་བྱས་པས་ལོ་ཉེ་དུག་(གྱི་རིགས་)མང་པོ་ཐོབ་པ་
 མིས་མ་ཚོར་བ་ལ། དུས་གཅིག་ན་བུ་ཆེ་བ་དེས་ཟ་འོག་བཟང་པོ་ཞིག་བཏགས་
 ནས་དཀྱིས་ཕྱིད་པའི་བྱ་བ་ལ་གཡོངས་ཏེ་མ་ལ་ཟན་སྐྱེལ་བ་བརྗོད་པ་དང་།
 མཚན་མོ་མཚའ་མས་དུན་ནས་ཁྱོད་ལ་སོགས་པས་མ་ཚོར་བར་འཇམ་སྐྱེལ་དུ་

1 'དེ་དཀྱིས་ཤོར་' - ལྷུག་ཀུན་ འོག ༡༥/ན དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ འོག ༡༧ ཁྱང 181. vol. 87
 2 'གདམས་པ་' - བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
 3 'གོ་མ་དུ་བཅུག་ཏེ་' - འོག དེ་ཉིད།
 4 'གསལ་སོ་མ་' - ལྷུག་ཀུན་ འོག ༡༤/ན. 29 14.བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
 5 'ཁ་ཡང་མི་ཟེར་བ་བསྐྱམས་' - བེ་ཉི་ འོག ༡༧ ཁྱང དེ་ཉིད།
 6 'བཅུ་གཉིས་སུ་བྱས་ནས་' - བེ་ཉི་ འོག ༡༧ ཁྱང དེ་ཉིད།
 7 'ཞིག་ཉལ་ནས་' - བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
 8 'བྱ་བེས་བྱེད་' - བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
 9 'ཁྱོད་ལ་སོགས་པའི་མིས་མ་ཚོར་བར་' - བེ་ཉི་ འོག ༡༧ ཁྱང་ དེ་ཉིད།

ཕྱིན་པ་ན། སྤྱིལ་པོ་འི་ནང་ན་མི་མར་གྱི་སྤང་འབ་ཆེན་པོ་དང་། བུ་མོ་བཙོ་ལྷ་
 ཙམ་གྱིས་བསྐོས། ཁ་ཟམ་གྱི་རྣམ་པ་གྲུ་ལོ་མ་པ་མང་པོ་དང་། མི་ཡུལ་དུ་མི་
 འདུང་བའི་གོས་དང་། རྒྱན་མང་པོ་ཐོགས་པར་མཐོང་ནས་རིངས་པར་ལོག་
 གྱེ། རྩོལ་ཉིད་གྱི་ཕ་ཆེན་བལྟར་འདོངས་འབྲས་པས། རྩོས་ཕ་གི་བ་ཡིན་
 སྟམ་ནས་དུས་པ་ན། མི་གཞན་ཡང་འོངས་ནས་སྐྱེད་མོས་ཚལ་དུ་བལྟར་ཕྱིན་
 པས། སྡེ་མ་བཞེན་དུ་ཐམས་ཅད་གྱིས་མཐོང་ནས་ཡ་མཚའ་སྐྱེས་ཏེ། རང་དུ་
 ལོག་ནས་སྡར་གྱི་གཏམ་བཞེད་པས་བུ་ལ་སོགས་བས་གཉེན་ཀུན་འདི་འདྲ་བ་མི་
 མ་ཡིན། འདྲེ་གཅིག་འདུག་³ཟེར་ནས་བསྐྱོད་དོ།

ནངས་⁴པར་མི་ཀུན་གྱིས་ཐོས་ནས་སེམས་ལྡན་ལ་མི་ཐམས་ཅད་གྱིས་
 བལྟར་ཕྱིན་ནས། ཕུག་བྲས་པ་དང་། དེ་ཕྱིར་བྱུང་བ་ན་ལུས་བཞེས་ཏེ། ལོ་
 མཚུ་དུག་ལོན་པའི་ན་ཚོད་དུ་གྱུར་ནས་སྐྱུ་ལས་འོད་ཟེར་དཔག་དུ་མེད་པ་བྱུང་
 པས། མི་ཀུན་གྱི་མིག་གིས་⁵བལྟར་མི་བཟོད་པ་དང་། ལུས་མི་ལོང་གཡའ་
 དག་པ་ལྟར་སོང་བ་སྤང་བ་ཐམས་ཅད་འོད་དུ་གར་ཏེ། མིང་ཡང་ཏྲོག་ལྷ་ཞེས་

1 'གནང་བ' - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 'བལྟར་འདོང' - དེ་ཉི་ཤོག་ཀྱང་གོང་དེ་ཉིད།
 3 'འདི་འདྲ་བ་མི་མ་ཡི་འདྲེ་ཅིག་འདུག་ཟེར' - ལྷུ་ཀུན་ཤོག་ ༡༥/ན. 29. 14.
 4 'ནང་པར' - དེ་ཉི་ཤོག་ཀྱང་འོག་དེ་ཉིད།
 5 'མི་ཀུན་གྱིས་མིག་གིས་' ལྷུ་ཀུན་ཤོག་ ༡༥/ན དེ་ཉིད། 'མི་ཀུན་གྱིས་མིག་གི་བལྟར་' དེ་
 ཉི་ཤོག་ཀྱང་འོག་དེ་ཉིད།

ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བྲགས་སོ།།

འགྲོ་དོན་དཔག་དུ་མེད་པ་མཛད་དེ། མཐར་སྐྱོད་ཚོན་གཤམ་འཁྲི་བོའི་
ཚོར་དཔག་དུ་མེད་པ་དང་བཅས་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤམ་གས་
སོ།།

དེས་ན་རང་གི་དད་གུས་དང་སྤྲོ་མའི་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་སྤངས་ནས།
ན་ཚོད་ག་ན་ཡང་³ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་དུ་
རུང་བ་ཡིན་གསུངས།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་ཚོགས་སོ།། །།

༡༥) གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་ནི། ཅམ་རིམ་ཞེས་བྲུ་བ་ལྷམ་མཁན་ཏེ། དེའི་
ཡུལ་⁵རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས། མིལྷན་གར་བྲུ་བའི་གྲོང་སྲིར་ན། བཟོ་རིགས་མི་

1 'བྲགས་ས།' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག་ དེ་ཉིད། ཤེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད།
2 'སྤངས་ནས།' - ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༧ དེ་ཉིད།
3 'ག་ན་ཡང་ཆེ་འདི་ཉིད་' - ཤེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད།
4 'གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་' ཞེས་བྲུ་བ་ལྷམ་མཁན་དེ། 'དེའི་ལོ་རྒྱུ་' ཤེ་ཉི ཤོག་ དེ་ཉིད། 'ལྷམ་
མཁན་ཏེ' ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
5 དེའི་ལོ་རྒྱུ་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་ ཞེས་སོགས་བྲུང་སྤྱོ། འདིར་འགྲུབ་མི་ལེགས་
པར་འདུག་སྤྱོ། བསྐྱར་བཅོས་བྲས་ན - ཤོང་ལྷམ་ལ་མ་བྲས་ན - 'གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་བ་
ལྷམ་མཁན་ཏེ། འདིའི་ལོ་རྒྱུ་ནི། ཡུལ་རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་' ཞེས་བྲུང་། ལྷུ་བ་
ཀུན་ ཤོག་ ༡༥/བ. ཤེ་ཉི ཤོག་ ༡༧ འོག 181, vol.87.

འདྲ་བ་བཅོ་བརྒྱད་ཚང་བར་ཡོད་པ་ལས། རིགས་ལྷན་མཁམ་། དེ་མི་རྒྱུན་གར་།
 རྒྱུ་མ་གསར་རྩིང་གི་བཟོའི་ལས་བྱེད་ཅིང་། ལས་དེས་དྲུ་འདའ་བར་བྱེད་
 པ་ཡིན་པས། དེའི་གམ་ཡུ་དག་སློང་ཞིག་འོངས་པ་ལ། དེས་ལྷན་གྱི་བཟོ་
 འཕྲོ་བོར་ནས་དག་སློང་དེའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་བྱས་ཏེ་འབེལ་བའི་གདམ་ལེགས་
 པར་བྱས་ནས།

བདག་འཁོར་བ་ལ་སློབ་སྦྱོར་ནས་ཚོས་ཤིག་ལྔ་བྱེད་སྟུང་པ་ལ། དག་
 བའི་བཞེས་གཉེན་དང་མ་འཕྲད་པས་ད་དུང་ཚོས་སྒྲོར་མ་ལུགས། ད་འདི་དང་
 སྤྱི་མ་གཉིས་ཀ་ལ་ཕན་པའི་ཚོས་ཤིག་ལུ་ཞེས་ལུས་པས། རྒྱུ་མ་སྦྱོར་བྱས་
 རྒྱུ་མ་སྦྱོར་གྱི་ལས་ལུ་ལ། ལྷན་མཁམ་དེས་དག་སློང་ལ་བདག་རིགས་
 ངན་གྱི་བྱིས་དུ་ཉིད་བཞེས་གསོལ་བར་གནང་ངམ་ལུས་པས། དག་སློང་དེས་
 དོ་རྒྱུ་མཚན་ལ་འོངས་ནས་མཐོང་གསུངས་པས། དེས་ཚུང་མ་སོགས་རང་གི་
 བྱིས་གྱི་མི་ཀུན་ལ་དག་སློང་བྱོན་པའི་བར་སྤྱོད་དོ།

-
- 1 'རང་ཉིད་ཀྱང་མི་རྒྱུན་གར་ན' བེ་ཉི་ཤོག ༡༤ འོག དེ་ཉིད། 'མི་རྒྱུན' ལྷན་གུན་ཤོག དེ་ཉིད།
 - 2 'དེའི་གམ་དུ' ལྷན་གུན་ཤོག ༡༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'རྒྱལ་འབྲུར་པ་ཞིག་འོངས' བེ་ཉི་ཤོག ༡༧ འོག དེ་ཉིད།
 - 4 'ཚོས་གཅིག་བྱེད' - བེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།
 - 5 'སྦྱོར་གྱིས' - ལྷན་གུན་ཤོག ༡༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'རྒྱལ་འབྲུར་པ་ལ' - བེ་ཉི་ཤོག ༡༧ འོག་དེ་ཉིད།
 - 7 'རྒྱལ་འབྲུར་པ་དེས' - བེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།
 - 8 'འོང་ལ' - ལྷན་གུན། ཤོག དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།

དེའི་མཚན་ལ་དེ་དེ་རྩོན་པས། ལྷམ་མཁན་གྱིས་སྣོན་བཏིང་སྟེ་
 ཞབས་བཀྲ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་བཞེས་པ་གྲུ་ལོ་མ་པ་དང་ས། རྒྱུང་མ་དང་
 བྱ་མོ་ལ་སོགས་པ་ཡོ་བྱད་ཀྱི་སྤུལ་ཏེ། འབྲུ་མཉེས་ལ་སོགས་པའི་བསྟེན་
 བཀྲར་བྱེད་དུ་གཞུག་པ་ན། དགེ་སློང་ཡད་གྱིས་ནས་ལྷམ་མཁན་རྒྱུང་མ་དང་
 བཅས་པ་ལ་དབང་བསྐྱེད། གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། དེ་ཡང་ (གདམས་ངག་
 དངོས་ནི་)

ཉོན་མོངས་རྣམ་རྟོག་གོ་བ་དེ།
 བྱམས་དང་སྟིང་རྗེའི་སྤང་ནང་དུ།
 གྲུ་མའི་གདམས་པའི་སྤྱང་དང་ནི།
 ཚོས་བརྒྱད་སྤངས་པའི་རྒྱས་སྤྱད་ཀྱིས།
 ཡང་དག་ཉིད་དུ་བཅེམས་པ་ན།
 ལྷན་གྲུབ་འབྲས་བུའི་ལྷམ་འབྱུང་ངོ་།
 ངོ་མཚར་ཆེ་བའི་ཚོས་སྤྱི་ལྷམ།
 ལོག་པར་ལྷ་བས་དེ་མི་ཤེས།

དགའ་བ་དང་མི་དགའ་བའི་སྤང་སྤང་མེད་པའི་སྤྱད་པ་གྱིས། ལྷམ་

1 “སྟེ” - བེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ལོང་དེ་ཉིད།
 2 ‘རྣམ་འབྱུང་པ་དབྱེས་ནས་’ - བེ་ཉི་ཤོག ༡༥ ལོང་དེ་ཉིད། འདིར་དཔེ་གཅིག་ཏུ་ ‘དགེ་
 སློང་’ ཞེས་པ་དང་། གཅིག་ཏུ་རྣམ་འབྱུང་པ་ཞེས་པ་གཉིས་ཀྱིས་བས་དོན་ནི། རྣམ་འབྱུང་
 པ་དགེ་སློང་གི་ཆ་བྱེད་ཅན་ཞེས་པ་ལོ།

རྟོག་དང་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་ཀོ་བར་གྱིས། སྤྱིང་ཇི་ལྟར་སྤང་ནང་དུ་སྤྱོད་ས། སྤྱིང་མའི་གདམས་ངག་དང་རང་གི་ཉམས་སྤྱོད་གི་སྤྱོད་གིས་ཚེམས་ལ། ལྷན་འགྲུབ་ཚོས་སྤྱི་ལྷན་གྱི་དུང་པར་སྤོམས་ཡིག་ཅེས་པའི་གདམས་ངག་ཐོག་པས། ལྷན་མཁན་དེ་ན་དེ། དེ་ལྷན་བསྐྱོམས་པ་ལ་རྟོགས་ཅི་འདྲུང་། ལུས་པས། སྤྱིང་མའི་ཞལ་ནས་“དང་པོར་འཁོར་བ་ལ་སྤྱོད་བའི་རྟོགས་འདྲུང་། དེ་ནས་འདྲུང་བ་རྣམས་རིམ་གྱིས་ཚོས་ཉིད་དུ་ཐིམ་པའི་རྟོགས་འདྲུང་བ་ཡིན་”གསུངས་ནས་རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་མི་སྤང་བར་གྱུར་རྟོག།

ལྷན་མཁན་གྱིས་རང་གི་བྱིམ་རྟོང་སྤངས་ཏེ། དམོན་པར་གནས་པར་བྱས་ནས་བསྐྱོམས་པས། སྤྱིང་མས་གདམས་པ་བཞིན་རྟོགས་རིམ་པར་འདྲུང་བ་དང་། དེ་ལ་རྟོགས་པ་འདི་ལྷ་བྱ་སྤྱོད་ཏེ། ཅུ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་དུག་གཏི་ལྷག་དང་བཅས་པ་དཔེས་རྟོགས་ནས་སྤྱིང་མའི་གདམས་ངག་གི་ལྷན་གྱི་ཏེ། མ་རིག་པའི་ས་གཞི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལྷན་པར་བྱས་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྐྱབས་པས། མ་རིག་པ་སོགས་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དག་སྤོ། ལྷན་གྱི་ཚེ་ལོ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་ལ། ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་ཉིན་མཚན་མེད་པར་ལྷན་བཟོའི་དམིགས་པ་

1) “སྤྱིང་ཇི་ལྟར་སྤང་ནང་དུ་སྤྱོད་ས” ཞེས་པ་འདི་ པེ་ཉི་ལོ་ལྷན་མེད། ཐོག་ ༡༥ བོང་ 181, vol. 87

2) ‘སྤོམས་ཡིག’ - པེ་ཉི, ཐོག་ དེ་ཉིད།

3) ‘དང་པོ་འཁོར་བ་ལ’ - ལྷན་གྱི་ཐོག་ ༡༧/ན དེ་ཉིད།

4) ‘རིམ་པས’ - པེ་ཉི, ཐོག་ ༡༥ བོང་ དེ་ཉིད། ལྷན་གྱི་ཐོག་ ༡༧, དེ་ཉིད།

5) ‘གྱུར་ཏེ།’ - ལྷན་གྱི་ཐོག་ དེ་ཉིད།

དང་། སྤྱི་མའི་མཚན་ལ་གཉིས་མེད་དུ་བྱས་ནས་བསྐྱོམས་པས། ལྷ་མ་བཟོའི་
 ལས་ཐམས་ཅད་ནི་མི་ལྷན་ལ་སོགས་པས་བྱས་པས། མི་ལྷན་གྱི་ལས་ལྷ་མ་
 མཚན་སྐྱོམ་སྐྱབ་བྱེད་པ་ཡང་མ་ཚོ་ལ། ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོར་ཡོད་པ་ཡང་མ་གཤིས་པ་
 བ། དུས་གཅིག་ཁོ་རང་གི་བཟོ་ལ་མི་གཅིག་བལྟར་འོངས་པས། ལྷ་མ་མཚན་ནི་
 མཉམ་པར་བཞག་འཛམ་འདུག བཟོ་བོ་མི་ལྷན་སྐྱོམ་བྱེད་པར་མཐོང་ནས་ངོ་
 མཚར་སྤྲིས་ཏེ། གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་བརྒྱུད་ནས་མཐར་ཀུན་གྱིས་མཐོང་། དེར་
 ཐམས་ཅད་འདུས་ཏེ་གདམས་པ་ལྟ་བུས་པས། སྤྱི་མ་བསྐྱེན་པའི་ཐན་ཡོན་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ལ། མི་ལྷན་གྱི་སེམས་ཅན་ལ་ཚོས་མང་དུ་བཤད་ནས།
 མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཅམ་རྒྱ་ཞེས་ཕྱོད་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། འགྲོ་
 འོན་དཔག་མེད་མཚན་ནས་མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་རྫོང་དུ་གཤེགས་སོ།།
 གུ་རུ་ཅམ་རི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

༡༥) གུ་རུ་བརྒྱུས།

གུ་རུ་བརྒྱུས་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཁར་ལྷ་མ་བཟོ་བའི་རལ་གྱི་སྤྱི་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་

ཡིན་ལ། ཡུལ་མགར་ལ། རིགས་དམངས་རིགས། སྤྱི་མ་ཚོགས་(ཡོག་)ཅམ་ཏེ།
 དངོས་གྲུབ་ནི་ཐུན་མོང་གི་རལ་གྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པའོ། །

1 'མཉམ་པ་གཞག་ནས' - དེ་ཉི, ༡༥, འོག་དེ་ཉིད།
 2 'བརྐྱེན་པའི' - དེ་ཉི སོག་སོགས་དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་ཡུལ་མགར་ན་ཞིང་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བའི་བྱིམ་པ་ཞིག་གིས་ཕའི་ལས་པོར་
 རས་ཀྱི་བའི་ལས་དུས་ཉམ་དུ་བྱེད་པས། ཉིན་མཚན་དུ་ཀྱི་བའི་བསམ་པ་ཅི་
 གཅིག་དུ་གྱུར་པ་དང་། དུས་གཅིག་ན་བྱིམ་བདག་ཀྱི་མ་དེས་མགར་འི་གྲོང་
 བྱིར་དུ་ཀྱིར་སྤོང་པས་ཅི་ཡང་མ་ཐོབ་སྟེ། དུས་ཁྲོད་ཅིག་ནས་ཚུར་འོངས་པ་དང་།
 དུས་ཁྲོད་དེར་རྗེས་(ཡོག་)ཅུ་པའི་བྱ་བ་དང་འཕྲད་ནས་ཉིད་འདི་ན་ཅི་མཇེད་
 ཀྱིན་བལྟུ། ཞེས་ཞུས་པས། འཁོར་བའི་སྐྱེ་འཚིས་འཇིགས་ནས་འདི་ན་སྒྲོམ་
 བྱེད་ཅིང་འདུག་པ་ཡིན་བུས་པས། ཀྱིན་མ་ན་ལེ། སྒྲོམ་བུས་པས་འབྲས་བུ་ཅི་
 འོང་བ་ཡིན། ཟེར་བས། རྗེས་འཁོར་ནས་ “བསྒྲོམས་པའི་འབྲས་བུ་ནི་མངོན་
 པར་མཐོ་བ་དང་། ངས་པར་ལེགས་པའི་འབྲས་བུ་བདེ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་ན་ཁྲོད་
 ཀྱང་ཚོས་མི་བྱེད་དམ།” གསུངས་པས། དེ་ན་ལེ། ཚོས་ལ་མོས་ལྟ་མོས་
 ཏེ། དུས་ཁྲོད་དུ་སྒྲོམ་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་པའི་ལོང་མེད། དུས་ཉམ་དུ་ཀྱི་བའི་ལས་
 བྱེད་པས་རྒྱལ་པོའམ་སྒྲོན་པོའམ་བྱིམ་བདག་ལ་སོང་པའི་³རྗེས་ལེ་ཞིག་བརྒྱས་
 རས་ཐོབ་སྲིད་ཀྱང་རྗེས་ཀྱི་སྤྱི་ནས་དེ་ཀྱི་དང་འཕྲབ་ཅོད་འབྲུང་བས་དེ་ཀྱི་
 བྱིས་མི་བྱུབ་པའི་དངོས་བྱུབ་ཅིག་ཞུས་བུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་ཀྱིན་མ་ལ་
 དབང་བསྐྱུར་གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། དེ་ཡང་མགར་འི་གྲོང་བྱིར་ན་གོ་རི་⁴སམ་ཀྱི་

1 ‘མ་ཐོབ་ནས་ལོག་སྟེ་དུས་ཁྲོད་ཅིག་ནས - བེ་ཉི, འོག་ ༡༥ འོག་ དེ་ཉིད།
 2 ཞེས་སྒྲུས་པས། - དཔེ་ཉི་ འོག་སོགས་དེ་ཉིད།
 3 ‘སོགས་པས་རྗེས’ - རྒྱུབ་ཀྱིན་ འོག་ ༡༦/ན དེ་ཉིད།
 4 ‘གོ་རིས་མཁྱེར་རྒྱུབ་ཀྱིན་ འོག་ ༡༦/བ. 32 14 གོ་རིས་མཁྱེར་ རྒྱུབ་ཀྱིན་ རྒྱུར་རྒྱུ་ རོ་དཔར། འོག་
 ༥༠ དཔེ་འདི་དག་ལ་བརྟེན་ན། ལྷ་ཁང་དེའི་མིང་གོ་རི་འོག་རྒྱ་ “गौरी शंकर” ཞེས་དག་པར་མངོན།

[གོ་རིམ་གྱི་]ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱི་མཚོད་རྟེན་ནང་སྟེ་ཁང་། རང་ན་འཕགས་པ་སྐྱེན་
 རས་གཟིགས་ཀྱི་སྐྱེ་བྱིན་ལྷགས་ཅན་ཞིག་བཞུགས་ཀྱི། དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཞག་
 བདུན་གསུམ་ཉི་ལུ་ཚ་གཅིག་གི་བར་ལ་ཉིན་མཚན་ཀུན་དུ་ས་ལ་མ་འདུག་པར་
 བསྐྱོར་བ་གྱིས། ཟས་ཀྱང་སྟོང་ལ་ཟོ་ཞིག་སྐྱེའི་ཞབས་ཀྱི་འོག་ནས་སྐྱེལ་
 ཞིག་འོང་བར་མཐོང་ན་མ་འཇིགས་པར་མགོ་ནས་གཟུང་ཞིག་དང་། ཁྱོད་
 ཀྱི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཅོ།། ཞེས་གདམས་ངག་བྱིན་ནས་སྐྱེལ་དུ་བཅུག་གོ།

རྒྱུ་མ་དེས་ཀྱང་རྣལ་འབྱོར་པས་བྱིན་པའི་གདམས་ངག་ཉམས་སུ་
 བྱངས་དེ་འདི་བཞིན་དུ་སྐྱེལ་བ་བྱས་པས། ཞག་ཉི་ལུ་ཚ་གཅིག་ནས་སྐྱེན་རས་
 གཟིགས་ཀྱི་ཞབས་འོག་ནས་སྐྱེལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ལྷུང་ནས་དེའི་མགོ་ནས་
 གཟུང་བས། སྐྱེལ་རལ་གྱི་སྟངས་ལེ་ཤེས་ཀྱི་རལ་གྱི་འོད་དང་བཅས་པ་
 ཞིག་ལག་དུ་ཐོབ་སྟེ། རྒྱུ་མའི་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ། རལ་གྱི་དངོས་གྲུབ་
 ཐོབ་པས། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་ཁྲུ་ལྷ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་ལ། རྒྱུ་མོང་
 གི་དངོས་གྲུབ་བརྒྱད་ལས་རལ་གྱི་དངོས་གྲུབ་ཀྱང་ཐོབ་གོ། །

-
- 1 'མགོ་ནས་ཟུང་གིག' - རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ དེ་ཉིད།
 - 2 རྒྱུ་དུ་བཅུག་པས། རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ དེ་ཉིད།
 - 3 'བྱངས་དེ་བཞིན་དུ' - རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ ༡༧ བོང་ དེ་ཉིད།
 - 4 'དེ་བཞིན་དུ' - རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ ༡༧ དེ་ཉིད།
 - 5 'པོ་གཅིག' - རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ དེ་
 - 6 'བཟུང་བས།' - རྒྱུ་ཀུན་ བོག་ ༡༧ དེ་ཉིད།

ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གྱི་འབྲུལ་པའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དག་ནས་
 མགུ་བའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཞག་ཉི་ཤུ་ཅ་གཅིག་དུ་ཚོས་བསྐྱེད།
 མཐར་ཉེར་པ་བཅོད་པ་ཡང་གསུངས་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་
 གཤེགས་སོ།།

གུ་འཕྲོ་བཟུང་ཅུ་ཅ་བཞི་ལོ་རྒྱུ་རྫོགས་སོ། །

༡༦) རྒྱ་ལྷོ་ཀློང་།

གུ་འཕྲོ་བཟུང་ཅུ་ཅ་བཞི་ལོ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་རྫོགས་སོ། ། ཡུལ་རྒྱ་
 གར་གར་ཕྱོགས་། ཀླུ་ཞེས་བྱ་བའི་བྱེ་བྱག་ཀའོ་ར་བྱེ་བའི་ལོ་རྒྱུ་ རིགས་བུ་མ་ཟེ།
 དངོས་བྱུང་སྤོལ་མ་ལས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ཡང་ཀའོ་ར་ན་བྲོང་བྱིས་ཁྱིའི་སྤྱོད་དང་གཉིས་ཡོད་པ་ལ་། ཀུན་ལ་
 འཛོམས་པ་དང་འཕྲོག་པ་བྱས་པས། བུ་མ་ཟེ་ཀུན་འདུས་ནས་འདིས་འོ་སྤོལ་

1 'སྐབས་འདིར་བསྐྱེད་འགྲུལ་ཐེངས་དང་། བེ་ཉིའི་དཔར་མ། རྒྱ་བཟུང་སོགས་ལ་མཐུན་པར་རྒྱ་
 གར་གར་ཕྱོགས་ཞེས་བྱུང་ཡང་། ལང་གཤེགས་འཇུག་འབྲེལ་དུ་བྲངས་པར། "ལོ་ཕྱོགས་བེ་ཉིའི་ཡུལ་
 དུ་ནི།" ཞེས་དང་། སང་དཀར་ཚོས་འབྲུང་ལས་ཀྱང་། "ལོ་ཕྱོགས་བེ་དར་ལྷོ་ཡུལ་དུ་ནི།" ཞེས་
 བྱུང་བ་དང་། གཞུང་གཞན་ཀུན་ལས་ཀྱང་དེ་ལྟར་མཐུན་པར་བྱུང་བ་ཆེས་ཡོངས་སུ་བྲགས་པ་ལྟར་ལ།
 "ཀླུ་ཞེས་ཡུལ་དུ་ལྷ་ཡང་ངོ་འཕྲོད་ཀྱི་ཡོད་ཅིང་། དེ་ནི་རྒྱ་གར་ལོ་ཕྱོགས་ན་ཡོད་པས། འདིར་གར་
 ཕྱོགས་ཞེས་པ་ཡིག་ནོར་ཡིན་ནམ་དཔུང་དགོས། བེ་ཉི་ འོག ༡༩ བོང་, 182, vol. 87. རྒྱ་བཟུང་
 ཀུན་ འོག ༡༧/ན. སང་ཚོས་འོག ༣༣ 63. འཇུག་འབྲེལ་འོག ༦༣

2 'ཀའོ་ར་ ཞེས་པ་དེང་སྐབས་ས་ངོ་མི་ཟེན། བེ་ཉིའི་ཡུལ་ནི་ཀེར་ལ་ཡིན་པས། "ཀའོ་ར་ ཀེར་ལ་"
 ཡིན་སྲིད།

3 'ཡོད་པ་ - བེ་ཉི་ འོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད། རྒྱ་བཟུང་ འོག ༡༧/ན དེ་ཉིད།

ཐམས་ཅད་ལ་མི་འཚམས་པ་བྱས་པས། འདི་དང་འཐབ་པ་ལས་¹ཡུལ་གཞན་
 དུ་འབྱམས་འགོ་བ་དྲག་ཅེས་གྲོས་བྱས་པའི་གཏམ་དེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གསན་
 ཉན་བུམ་ཟེ་ཀུན་ལ་མི་བཏང་ནས་“ཁྱིད་རྣམས་²ཡུལ་གཞན་དུ་མ་འགོ་ཞིག་
 ཡུལ་གཞན་དུ་སྐྱབ་བསྐྱལ་བར་འོང་བས། ཁྱིད་ཅག་ཀུན་ཁོ་བོའི་རྗེས་འདི་
 རྣམས་ཁྱིད་ཅིག་”གསུངས་ནས་མོ་མ་ཐམས་ཅད་སྦྱིན་པ་བཏང་ནས། སློབ་
 དཔོན་ཀའོར་ནས་གྲོས་ཏེ་བསེལ་བ་ཚལ་གྱི་ཕ་རོལ་རྒྱལ་རྒྱར་³ཕྱོན་ནས་རབ་དུ་
 བྱང་སྟེ། རིག་པའི་གནས་ལྗེ་ལ་སྦྱངས་པས། བཤམ་པའི་མཐར་ཐུག་པར་བྱུར་
 ཏོ།།

དེ་ནས་བཤད་པ་ལ་སྦྱོར་ནས་སྐྱབ་པ་མཛད་པས་སྦྱོལ་མའི་ཞལ་གཟིགས་
 ཏེ། དཔལ་རྒྱལ་རྒྱུ་པའི་ཚོས་སྦྱོར་དགེ་འདུན་བརྒྱ་ (སྤྲུག་) གཞུགས་པའི་
 འཚོ་བ་དང་། གནས་སྤངས་ཏེ་ཡུལ་གཞན་དུ་ཕྱོན་ནས་གྲོང་ཁྱིད་གཅིག་དུ་
 བསོད་སྦྱོམས་མཛད། ལྷར་རང་གི་གནས་སུ་ལོག་ནས་བདག་གི་བསམ་པ་འདི་
 འདྲ་བས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མི་འགྲུབ་པས། ཡོན་ཏན་ཐོབ་པར་བྱས་ཏེ་⁴འགོ་
 དོན་བྱ་སྐྱམ་དུ་དགོངས་ནས། རྒྱལ་བོའི་ཁབ་དུ་ཕྱིན་ནས་འབྱུང་པོ་ཁྱུ་མཚོག་
 གི་འབྱུང་མོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བཞུས་པ་བྱས་པས། ཞག་དང་པོ་ལ་ས་གཡོས།

1 ‘འཐབ་པ་བས་’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘ཁྱིད་ཡུལ་གཞན་དུ་’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 3 ‘རྒྱལ་རྒྱ’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘བྱས་ཏེ་’ - སྐྱབ་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།

གཉིས་པ་ལ་ཚུ་བརྗོད། ། གསུམ་པ་ལ་མེ་འབར། བཞི་པ་ལ་རྒྱུ་ལངས། ལྷ་པ་
 ལ་མཚོན་གྱི་ཆར། རྩལ་པ་ལ་རྗོད་ཅིང་ཆར། བདུན་པ་ལ་དངོས་སུ་འབྱུང་མོ་
 ཀུན་འདུས་ནས་བར་གཅོད་བྱས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱི་ཕྱགས་དམ་ལ་གཡོ་བ་
 2མེད་པས། བར་གཅོད་³མ་ཚུགས་པ་དང་། གཞོད་སྦྱིན་མོ་ཀུན་འོངས་ནས་
 རྒྱུ་ལ་⁴ཅི་དགོས། དེ་ད་ཀྱིས་སྦྱིན་ཟེར་བ་ལ། གཞན་མི་དགོས་ངའི་འཚོ་བ་
 སྦྱོར་ཅིག་གསུངས་པས་⁵། དེ་རྣམས་ཀྱིས་འབྲས་ཕུལ་བཞི་དང་ཚོད་མ་ལྷ་ཉལ་
 དུ་སྦྱར་བ་དེ་བཞིས་ཀྱིན་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སྐབས་པ་མཇེད་པས་
 འབྱུང་མོ་བརྒྱ་ཅུ་བརྒྱུ་དབང་དུ་འདུས་ནས། འགྲོ་དོན་བྱ་སྐྱམ་སྦྱི། རི་སྐྱུ་
 རྩ་གིལ་ར་(སྐྱུ་ར་གིལ་)ཤོན་ནས་རི་དེ་གསེར་དུ་བསྐྱར་ནས་⁷འགྲོ་དོན་བྱ་སྐྱམ་
 སྦྱི་⁸རི་དེ་དང་པོར་ལུགས་སུ་བྱས། དེ་ནས་ལུགས་ཟངས་སུ་བྱས་ཅ་ན།
 འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་ཞལ་ནས། འདི་ལ་སེམས་ཅན་ཀུན་ཅོད་པ་ཆེན་པོ་

1 'གཉིས་པ་ལ་ཚུ་དང་།' - གསུམ་པ་ལ་མེ་དང་, བཞི་པ་ལ་རྒྱུ་དང་། ལྷ་པ་ལ་མཚོན་དང་།
 རྩལ་པ་ལ་རྗོད་ཅིང་ཆར། - བོ་ཉི་ བོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད།
 2 'གཡོས་པ་མེད་པས' - བོ་ཉི་ བོག ༡༩ དེ་ཉིད།
 3 'བ་ཚོད' - བོ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།
 4 'འབྱུང་ལ' - བོ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།
 5 'གསུངས་པ་ལ།' - བོ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།
 6 'སྐྱམ་པ་དང་།' - བོ་ཉི་ བོག ༣༠ བོང དེ་ཉིད། སྐབས་ཀུན་ བོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།
 7 'བསྐྱར་ལ' - བོ་ཉི་ བོག ༣༠ དེ་ཉིད། སྐབས་ཀུན་ བོག ༡༧/བ. དེ་ཉིད།
 8 'སྐྱམ་ནས' - སྐབས་ཀུན་ བོག དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།

འདྲུང་བས་སྤྲིག་པ་གསོག་པར་འོང་། གསུངས་ནས་འཕྲོ་བཅད་དེ་བོར་བས།།
ལྷན་པོ་ལྷན་པོ་དེ་ད་ལྟ་ཡང་ཟངས་མདོག་སྤྲིག་པོར་ཡོད།

དེ་ནས་ལྷོ་ཕྱོགས་དཔལ་གྱི་རི་བོར་བྱོན་པའི་ལམ་བར་དུ་གཙང་པོའི་
འགྲམ་ཞིག་དུ་²ཕྱིན་པ་ན། བ་ལང་ཇི་དུ་མ་དང་འཕྲད་ནས་ཆུའི་ལམ་དྲིས་པ་
ན། དེ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་ངན་པ་ཆུ་སྤོང་དང་། ངམ་གྲོག་ཅན་གྱི་མི་བདེ་བའི་
ལམ་བསྟན་པ་དང་། བ་ལང་³ཇི་གཞན་ཞིག་འདུག་པ་དེ་⁴འོངས་ནས་ལམ་འདི་
ལེགས་པ་མ་ཡིན། ལམ་འདི་ནས་གཤེགས་ཟེར་ནས་དེས་སློབ་དཔོན་ཁྱེད་ཀྱིས་
ཕྱིན་པས། ཆུའི་དགྱིལ་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྤྲུལ་པའི་ཆུ་སྤོང་ལ་སོགས་པའི་
འཇིགས་པ་སྣ་ཚོགས་བསྟན་པས། བ་ཇི་ན་ལེ། བདག་མ་གཤིའི་བར་དུ་མ་
འཇིགས་ཤིག་ཟེར་བས། སློབ་དཔོན་གྱིས་སྤྲུལ་པ་བརྟུལ་དེ་སྐམ་སར་ཕྱིན་པ་
དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ང་འཕགས་པ་སྤྲུལ་པའི་ཆུ་སྤོང་གི་ཁྱོད་ཀྱིས་ངོ་ཤེས་སམ།
གསུངས་པ་ལ། དེ་ན་ལེ། གཏམ་ནི་ཕྱོགས་འོ་མི་ཤེས་ཞུས་སོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བ་ལང་ཇི་དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ཆུ་ལས་བསྐྱལ་པའི་བརྟུལ་⁶

1 ‘འཕྲོ་ཚོད་དེ་བོར་གསུངས།’ - པེ་ཉི་ བོག 30 བློང་ དེ་ཉིད།
2 ‘འགྲམ་དུ་ཕྱིན་པ་ན’ - ལྷན་པོ་གྲུག་ བོག 10/བ. དེ་ཉིད།
3 ‘བ་ཇི་གཞན་ཞིག་……’ - པེ་ཉི་ བོག 10/བ. དེ་ཉིད།
4 ‘འདུག་པ་འོངས་’ - པེ་ཉི་, བོག 30 བློང་ དེ་ཉིད།
5 ‘ཕྱོགས་འོ་མི་ཤེས་’ - ལྷན་པོ་གྲུག་ བོག 10/བ. དེ་ཉིད། པེ་ཉི་ བོག 30 དེ་ཉིད།
6 ‘རྟུལ་’ - པེ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།

པ་ཅི་དགོས་པ་སྟེར་། པ་ཡིན་གསུངས་པས། བ་ལང་ཇི་ན་ཟེ། བདག་རྒྱལ་
 རོ་འོང་བའི་ཐབས་ཤིག་ལུ་ཟེར་བ་ལ། སྟོབ་དཔོན་གྱིས་སྟོབས་དེ་ན་གིང་
 སྐྱལ་འི་(ལྷ+ལའི)སྟོང་པོ་གཅིག་ཡོད་པ་ལ་ཚུ་གཏོར་བས། གིང་དེ་དེ་མ་
 ཐག་སྟངས་པོ་ཆེར་གྱུར་ནས་རྒྱལ་པོའི་ཞེན་པ་བྱས། དམག་ཚོགས་དགོས་ལུས་
 པས་སྟངས་པོ་ཆེ་མཁུན་མལ་ན་དམག་འོང་བ་ཡིན་གསུངས་པ་དེ་བཞིན་ཉུ་བྱང་
 སྟེ། རྒྱལ་པོའི་མིང་སྐྱལ་ལྷན་ལྷན་(སྐྱལ་ལྷན་ལྷན་—) ཞེས་བྱ་ལ། བཅུན་མོའི་མིང་
 སིན་མྱེ་ཞེས་བྱ་བར་གྱུར་དོ། །གནས་གྲོང་བྱིར་སྤྱོད་ལྷན་ཞེས་བྱ་བའི་ཡུལ་བྱང་
 པར་དུ་10འཕགས་པ་ཞེས་11གྱུ་བ་སྟེ། རྒྱལ་པོ་ཁྲལ་12འཇལ་བའི་གྲོང་བྱིར་

-
- 1 གཏོར་བ་ཡིན་ པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - 2 'ཡིན་མོ། ཞེས་གསུངས་པས།' - པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - 3 'ཐབས་ཅིག་ལུ་ཟེར་ནས་' - རྒྱལ་ལྷན་, ཤོག་ ༡༤/ན 'ཐབས་ཅིག་ལུ་ པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - † 'སྐྱལ་ ཞེས་པ་', 'སྐྱལ་ ཞེས་པའི་ཟུར་ཆག་ཡིན་པར་མངོན་མོ།
 - 4 'སྟོང་པོ་གཅིག་འདུག་པ་ལ་ ཚུ་སྟོར་བས་' - པེ་ཉི་ ཤོག་ ༣༠ མོང་ དེ་ཉིད།
 - 5 'སྟོང་པོ་གཅིག་འདུག་པ་ལ་ ཚུ་སྟོར་བས་' - པེ་ཉི་ ཤོག་ ༣༠ མོང་ དེ་ཉིད།
 - 6 'གིང་དེ་མ་ཐག་' - རྒྱལ་ལྷན་ ཤོག་ ༡༤/ན་དེ་ཉིད།
 - 7 'ལྷན་པ་ལ་' - རྒྱལ་ལྷན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - 8 'འཁུན་པ་ན་' - པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - 9 'བཞིན་དུ་' - རྒྱལ་ལྷན་ དེ་ཉིད།
 - 10 'བྱང་པར་འཕགས་པ་ཅིག་གྱུ་བ་' - རྒྱལ་ལྷན་ཤོག་ ༡༤/ན་པེ་ཉི་ ཤོག་ ༣༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 11 'བྱང་པར་འཕགས་པ་ཅིག་གྱུ་བ་' - རྒྱལ་ལྷན་ཤོག་ ༡༤/ན་པེ་ཉི་ ཤོག་ ༣༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 - 12 'རྒྱལ་པོ་ལ་ཁྲལ་.....' - པེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད། རྒྱལ་ལྷན་ ཤོག་ ༡༤/ན་ དེ་ཉིད།

དཔོན་གྱིས་གདམས་པ་གནང་སྟེ། རང་ཡུལ་དུ་བཅུད་ལེན་བསྐྱབས། ལོ་
བརྒྱའི་བར་དུ་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་སྟེ་གནས་སོ།།

དེའི་བར་འགྲོ་བ་རྣམས་འགྱུར་པ་དང་ལྡན། རིའི་བྱ་དང་རི་དྲགས་ཀྱི་
ཀྱང་བདེ་བར་འཛོལ་ལས་ལོ་བརྒྱ་ཉེ་སྟོན་དཔོན་གྱིས་སངས་རྒྱལ་གྱི་བསྐྱེད་པ་
དར་ཞིང་རྒྱས་པར་མཇུག་པ་ལ། བདུད་དགའ་རབ་དབང་ཕྱག་སྐྱོབ་དོན་གྱིས་
ནས་བར་ཆད་གྱི་ལྷས་བཀྲ་མི་གིས་པ་སྣ་ཚོགས་བྱུང་སྟེ། ཉི་ཟླའི་སྤང་བ་མེད་
པ་མོག་མོག་པོར་གྱུར་པ་དང་། ཤིང་ཐོག་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་འབྱུལ་བ་
དང་། ཆར་ཆུ་དུས་སྐྱུ་མ་བབས་པས་སྟོག་ཆགས་རྣམས་སྐྱེས་གཟེར་བ་དང་།
ནད་དང་མཚོན་གྱི་བསྐྱེད་པ་དར་བ་དང་། རྒྱལ་པོ་སྤུལ་སྤྲུལ་འདི་སྣམ་སྟེ།
འདི་དག་ནི་གཞན་མ་ཡིན་ཏེ་ངའི་སླ་མ་ལ་གནོད་པའི་ལྷས་ཡིན་སྣམ་རང་གི་
སྲས་ཅན་ཉི་ལྟ་སྐྱུར་ཡུ་བ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་བྱིན་ཏེ། འཁོར་ཉུང་ཟད་ཅིག་དང་བཅས་
ཏེ་དཔལ་གྱི་རི་བོར་སྟོན་དཔོན་གྱི་སྤྱན་རླུང་སྤྱན་པ་དང་།

སླ་མས། བུ་དོན་ཅི་ལ་འོངས་དྲིས་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་ན་ལེ།

བདག་དང་སེམས་ཅན་སྐྱེད་པ་ཟད་གྱུར་ཏམ།།

རྒྱལ་བའི་བསྐྱེད་པ་ཉམས་པར་གྱུར་ཏམ་ཅི། །

1 'སྐྱབས' - དེ་ཉི་ཤོག་སོགས་དེ་ཉིད།
2 'ཅན་ཉི་ལྟ་སྐྱུར་' དེ་ཉི་ཤོག་ ༡༡ བོང་ 'གཞོན་ཉུ་ཉུས་ལྡན་' - སང་དཀར་ཚོས་འབྱུང་ ཤོག་
༡༠། འདི་དག་པར་སེམས།
3 'རྒྱལ་བུ་ན་ལེ' - དེ་ཉི་ཤོག་ ༡༡ བོང་ དེ་ཉིད།

ནག་པོའི་ཕྱོགས་རྣམས་སྐྱུལ་བར་འགྱུར་པ་འཇམ།།
 ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལྷ་བ་ལྟར་དཀར་ལ།།
 ཆར་སྤྲིན་དང་འདྲའི་བདུད་རྒྱིས་ཡབ་སྐྱེ་བས་སམ་ཅི།།
 རོ་རྗེ་ལྷ་བུའི་སླ་མ་དམ་པ་ལ།།
 འདུས་བྱས་རང་བཞིན་གྱི་རང་མ་སྤྲིག་ལྟས་རྣམས།།
 འདྲུང་བས་བདག་ནི་འདིར་ནི་མཆིས་པ་ལགས།།
 ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་དགོངས་ལ་བྱིན་གྱིས་སློབས།།

ཞེས་ཞུས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་གསུངས་པ།

སྤྱིས་པ་ཐམས་ཅད་འཆི་བ་ཡིན། འདུས་པ་ཐམས་ཅད་བྲལ། བསཏུ་པ་
 ཐམས་ཅད་འཇོག། འདུས་བྱས་ཀྱི་མཐའ་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པ་ཡིན་ན་དེ་ལ་མི་
 དགའ་བ་ཅི་ཡོད། རྒྱུད་རང་བཅུད་ལེན་བྱིར་ལ་སོང་ཞེས་འགས་པས། དེ་ན་
 རེ། སླ་མའི་རྩར་བཅུད་ལེན་ཟེ་ཡིན་འདུག་ན་འདུག་སླ་མ་མི་བཞུར་ན་བདག་
 ལ་བཅུད་ལེན་མི་དགོས་ཟེར་ནས་དེར་འདུག་གོ། དེ་ནས་སློབ་དཔོན་འཕྲུལ་པས་
 དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སྤྲིན་པར་བཏང་བ་ལ། ལྷ་ཚངས་པས་བྲམ་ཟེ་ཞེས་འདྲུ་

1 'འགྱུར་པ་འཇམ' - དེ་ཉི་ཤོག ༡༡ ལོང་ དེ་ཉིད།
 2 'སྐྱེ་བས་སམ་ཅི' - དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།
 3 'སོང་གཅིག' - དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།
 4 'བྲམ་ཟེ་གཅིག' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༡༤/བ. 36. 14. དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།

སྐྱུལ་ནས་དབུ་བསྐྱངས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་སྤེར་བར་ཞལ་གྱིས་བཞེས་
 པ་དང་། རྒྱལ་པོ་སྐུལ་ལྡན་ནས་སློབ་དཔོན་འགྲོངས་པའི་སྐབས་བསྐལ་མ་བཟོད་
 བས། སློབ་དཔོན་གྱི་ཞབས་ལ་སྤྱི་བོས་གདུགས་ཏེ་གྲོངས་སོ། །མི་ཐམས་ཅད་
 ཀྱང་བུམ་ཟེ་དེ་ལ་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད་དོ།

དེའི་དུས་སུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་དབུ་བྱིན་པས་གཞན་གང་གིས་ཀྱང་མ་
 ཚོད་པ་ན་ཙུ་ཀུ་ག་གཅིག་གིས་རང་གི་དབུ་བཅད་ནས་ཚངས་པ་ལ་བྱིན་ནོ། །དེ་
 བས་གིང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྐམས། མི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསོད་ནམས་ཀྱང་
 འགྲིབས་སོ། །

ཐོན་གྱི་གནོད་སྤྱིན་མོ་བརྒྱན་གྱིས་སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ལུས་བསྐྱངས་ནས་
 ད་ལྟ་ཡང་ཡོད་དོ། །

- 1 'སྐྱངས་པས' - པལ་ཉི་ཤོག ༡༡ བོང་དེ་ཉིད།
- 2 འདིའི་མ་དཔེ་ཀྱན་དུ་བཅུ་པར་ཚངས་པའི་སྐུལ་པ་བུམ་ཟེ་ཞིག་གིས་སློབ་དཔོན་གྱི་དབུ་བསྐྱངས།
 ཞེས་བྱུང་ལ། པད་དཀར་ཚོས་འབྲུང་སོགས་ཚོས་འབྲུང་གཞན་ཀྱན་ལས་མཐུན་པར། རྒྱལ་པོ་བདེ་
 སྲོད་ཀྱི་སྐུ་སྐུ་ 'གཞོན་ཏུ་ཏུས་ལྡན' (འདིར་ཙན་ཏི་ཀུམ་ཞེས་བཤད་པ་དེས) ལ་མས་གོ་སྐབ་
 མེད་པ་ཞིག་སྤྱིན་པ་ན། བུས་དེ་མ་གྱོན་པར་བཞག་མས་རྒྱ་མཚན་དྲིས་པའི་ལན་དུ། རྒྱལ་པོའི་ཁྱི་
 ལ་འདུག་པའི་དུས་སུ་གྱོན་བྱས་པས། མས་བུ་ལ་རྒྱལ་སྲིད་མི་ཐོབ་པའི་རྒྱ་མཚན་དུ། དེའི་ཕ་ཀྱུ་
 སྐབས་དང་སྐྱ་ཚེ་མཉམ་ཚུལ་དང་། སློབ་དཔོན་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔལ་ཡིན་པས། དེའི་དབུ་ལེན་
 དཔོས་ཚུལ་སོགས་སྐུས་པ་རྒྱ་མཚན་དུ་བྱས་ཏེ། རྒྱལ་བུ་གཞོན་ཏུ་ཏུས་ལྡན་ཉིད་གྱིས་སློབ་དཔོན་གྱི་
 དབུ་བསྐྱངས་པར་བཤད་དོ། - པད་དཀར་ཚོས་འབྲུང་། ཤོག ༣༤ 67, 68, 14.
- 3 'སྐྱུ་གྱི་གནོད་སྤྱིན་མོ་' - པལ་ཉི་ཤོག ༡༡ བོང་དེ་ཉིད། འདིར་སྐྱུ་གྱི་གནོད་སྤྱིན་མོ་བརྒྱན་
 ཙུམ་བྱུང་ཡང་། དོན་ནི་ཐོན་འབྲུང་པོ་ཁྱུ་མཚོག་གི་འབྲུང་མོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱིས་འཚོ་བ་སྐྱར་ནས་
 བསྐྱུབས་སྐབས་བུལ་པའི་འབྲུང་མོ་བརྒྱ་ཙུ་བརྒྱན་པོ་དེ་རྣམས་ཡིན་ནོ།

སྤྱི་མའི་གདུང་འཚོ་བ་དུ་སྤྱི་བྱང་རྒྱུ་བ་བཞུགས་པ་ལའི་འོད་ཀྱི་མོ་འཕྲོ་
བ་སྤྱི་ཟེ་ར་ཙམ་ད་ལྟ་ཡང་ཡོད་དོ། །སྤྱི་བ་དཔོན་གྱི་སྤྱི་ལུས་དེ་རྒྱལ་བ་བྱམས་
པའི་བསྟན་པ་ལ་སྤྱི་བ་བཞེངས་ནས་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་གསུངས་སོ། །

གུ་རུ་སྤྱི་བ་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

༡༧) གུ་རུ་ཀཱ་ཏ་ཏ་སྤྱི་

གུ་རུ་ཀཱ་ཏ་ཏ་པུ་འི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ལྷ་རྒྱུ་ཏ་ཀཱ་ཏ་ཏ་པུ་བ་སྤྱི་བ་དཔོན་
ནག་པོ་སྤྱི་བ་པ་ལ། ཡུལ་སོམ་པུ་འི། སྤྱི་མ་རྒྱལ་ནུ་ར་པུ། རིགས་ཡི་གེ་པ།

དེ་རྒྱལ་པོ་ལྷ་སྤྱི་བ་གིས་བཞེངས་པའི་གཙུག་ལག་ཁང་སོམ་པུ་རིའི་དགེ་
སྤྱི་བ་ཞིག་ཡིན་པ་ལ། སྤྱི་མ་རྒྱལ་ནུ་ར་པུས་དབང་བསྐྱུ་ར། དབྱེས་པ་དོ་རྗེའི་
གདམས་པ་གནང་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྐྱུ་བས་པས། དུས་རེ་ཞིག་ན་ས་གཡོ་
བར་བྱེད་ཅིང་། དབྱེས་པ་དོ་རྗེའི་ལྷ་ཚོགས་ཞལ་གཟེགས་པས་དགའ་བ་སྐྱེས་པ་
ན། རྒྱ་གི་མས་རིགས་གྱི་བྱ། འདི་ནི་མཚན་མ་ཁྱད་པར་ཙན་མ་ཡིན་པས་མ་
སྤྱི་མས་གིག་བདེན་པ་དེ་ལོ་ན་ཉིད་ཉོགས་པ་མེད་པས་སོ་ཞེས་ཟེར། ཡང་པ་

1 སྤྱི་མའི་གདུང་འཚོ་བ་དུ་སྤྱི་བྱང་བཞུགས་པར་བཤད་པ་ནི། གསང་འདུས་འཕགས་ལུགས་པ་རྣམས་
གྱིས་བཞེངས་པ་དང་། རྣམས་ལུགས་སུ་སྤྱི་བ་གི་གཞན་དུ་སྤྱི་བ་དཔོན་གྱིས་བསྟན་པ་འཕགས་པ་ལྷ་
ལ་གཏད་པར་བཤད་དོ།

2 གུ་རུ་ཀཱ་ཏ་ཏ་པུ་དང་ ‘ཀཱ་ཏ་ཏ’ - པེ་ཉི་ཤོག་ ༣༡ འོག་དེ་ཉིད། སྤྱི་བ་ཀཱ་ཏ་ ༡༧/ན. དེ་
ཉིད། ‘कण्ठपा’ - राहुल पुरातत्व, नि० पृ० १२१, द्वितीय संस्करण ।

མང་། ཞིག་ཡོད་པ་དེ་ལ་ཞབས་བཞག་པས་²(ཞབས)རྩོལ་རྒྱུ་པ་དང་། སློབ་
 དཔོན་ང་རྒྱལ་སྐྱེས་ཏེ། ད་ནི་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་སྐྱེས་པ་དང་། ཡང་
 རྒྱུ་མས་བསྐྱོག་གོ། །ཡང་སྤྱིར་བཏང་³བ་དང་ཞབས་ཁྲུ་གང་ཅམ་གྱིས་ས་ལ་མི་⁴
 རེག་པ་དང་། ང་རྒྱལ་སྐྱེས་པས་སྲུང་བཞིན་ནོ། །

གཞན་ཡང་ནམ་མཁའ་ལ་གདུང་བདུན་དང་། རྒྱུ་མ་བདུན་ནམ་
 མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་དང་། རང་སྐྱེ་འབྱུང་བ་ཐོས་ནས་ད་ནི་བདག་གིས་དངོས་གྲུབ་
 ཐོབ་སྐྱེས་ནས། སློབ་མ་ཀུན་ལ་ངས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པས་འགྲོ་དོན་ལ་སྲིན་ཡུལ་⁵
 ལྟ་བུ་རིའི་ཡུལ་དུ་འདེངས་ཤིག་གསུངས་ནས། སློབ་མ་འཁོར་གསུམ་སྣོང་
 དང་ལྷན་ཅིག་དུ་ཆས་ཏེ་⁷ ཕྱིན་པ་དང་། འཁོར་རྣམས་ཚུ་ཁར་བོད། ཀམ་ཉ་⁸
 ལུ་རང་རྒྱ་མཚོ་ལ་བྱིང་བ་མེད་པར་ཕྱིན་པ་ན། སྐབས་ལ་བདག་གི་སྐྱ་མ་ལ་
 རུས་པ་མི་མངའ་བ་ལ་བདག་ལ་འདི་ལྟ་བུའི་རུས་པ་ཡོད་སྐྱེས་པའི་ང་རྒྱལ་བུང་
 བས་རུས་པ་ཉམས་ཏེ་དེ་ཉིད་དུ་རྒྱུ་རྒྱུ་བ་ནས། རྒྱུ་རྒྱུ་བས་གྱིས་མཐར་

1 ‘མའོང’ - དེ་ནི་ཤོག ༡༡ འོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘བཞག་པ་རྩོལ་རྒྱུ་པ་’ - དེ་ནི་ཤོག ༡༡ འོག་
 3 ‘ཡང་སྤྱིར་བཏང་བ་དང་’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག ༡༧/ན་
 4 ‘མ་རེག་པ་དང་’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།
 5 ‘སྲིན་པོ་ལྟ་བུ་རིའི་ཡུལ་དུ་’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།
 6 ‘འདེངས་ཅིག་’ - དེ་ནི་ཤོག ༡༡ འོག་དེ་ཉིད།
 7 ‘ཆས་སྡེ་’ - དེ་ནི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 8 ‘ཀམ་ཉ་’ - རྒྱུ་ཀུན་འོག ༡༩ དེ་ཉིད། དེ་ནི་ཤོག ༡༡ དེ་ཉིད།

ਠੇ। ਸ਼ੋਵ ਦਥੋਕ ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਠਕੋਯ ਦੁ ਖੁਕ ਠੇ॥

ਯਥਾ ਦੁ ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਆਦ ਪੋ ਦਦ ਠਖੁਦ ਪ ਯ 2 ਸ਼ੋਵ ਦਥੋਕ ਚੁਿਥਾ ਸਾਥੇਟ
 ਪਥਾ। ਸ਼ੁਯ ਆ ਠਦ ਪ ਯ 3 ਦ ਚੀਥ ਆ ਸੁਦ 3 ਦਥੋਥ ਪ ਠਦਿ ਆਕ ਆ ਯਿਕ ਦਿਥਾ ਸੁਥ
 ਸ਼ੇ। ਸ਼ੋਦ ਚੀ ਆ ਸੁਦ ਕ ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਠਿਥਾ ਠਦੁਥਾ ਪਰਿ ਥਾ ਸੁ ਖੁਕ ਠਥਾ ਵਯੁਥਾ 4 ਪਥਾ।
 ਸ਼ੁਯ ਆ ਠਦ ਪ ਸਥਾਸ ਠਦ ਆ ਸੁਦ ਆ ਦਥੋਥ ਪ 5 ਦ ਠਦੁਦ ਯ ਠਸ਼ੋ ਵ ਆ ਸ਼ੋਦ
 ਵਥਾ। ਠਦਿ ਯਿਕ ਪ ਦਿਥਾ ਸੁਥ ਠਥਾ ਠਥਾ ਠਥਾ ਠਥਾ ਠਥਾ 5 ਵਥਾ। ਵਸ਼ੋਦ ਵ ਪੁਥਾ ਪ
 ਦਦ। ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਚੁਿਥਾ ਸੁਥ ਪ—

ਦਥਾ ਠਿ ਥੇਟ ਵ ਵਥਿਕ ਠਕ ਠਥਾ ਥੇਟ ਵ ਯ ਠਕ ਪੁਥਾ ਠੇ। ਸਥਿਥਾ ਆ
 ਦੁਦ ਸ਼ੋਦ ਦੁ ਖੁਕ ਠਥਾ ਠਿਰਿ ਠੋ ਠਿਥਾ ਦਦ ਠਖੁਦ ਪ ਕ। ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਦਿ ਕ ਠੇ।
 ਸ਼ੋਦ ਚੁਿਥਾ ਚ ਥੇ ਠੁਥਾ ਠਥਾ ਠੁਥਾ ਕ ਠੋ ਠਿਥਾ 6 ਥੇਟ ਵ ਯ। ਆਠੁਪੁਥਾ ਸ਼ੀ ਵਠੋਕ 7
 ਠਥਾ ਵਠੋਦ ਪ ਵਥੁਥਾ ਪ ਯ। ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਕ ਠੇ। ਦੁਦ ਸ਼ੋਦ ਠਿਥਾ ਥੇਟ
 ਠਥਾ ਦਿਥਾ ਸੁਦ ਆ ਸੁਥ ਠਥਾ ਚ ਠੋਥਾ ਠੋ। ਦਿ ਠਥਾ ਸਥਾਸ ਆਥਕ ਕ ਠੇ। ਠਦਿ
 ਠਦੁ ਵ ਵ ਸੁਥ ਠੁਥਾ ਪਰਿ ਦੁਥਾ ਸੁਥ ਵਠੋਦ ਚ ਠੋ ਵ ਯਿਕ ਥੇਟ ਠੋ॥

1 'ਖੁਕ ਪਥਾ' - ਸੁਵ ਆਕ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ 'ਖੁਕ ਪਥਾ' ਸੋਠਿ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ
 2 'ਖੁਦ ਪ ਦਦ' - ਸੋਠਿ, ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ
 3 'ਠਖੁਦ ਦਥੋਥ' - ਸੋਠਿ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ
 4 'ਸੁਥ' - ਸੋਠਿ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ
 5 'ਪੁਥਾ ਠਠਯ' - ਸੁਵ ਆਕ ਸੋਥ ੧੯/੧. 38. 14.
 6 'ਠੋ ਠਿਥਾ' - ਸੋਠਿ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ
 7 'ਸ਼ੀ ਸੁਥ' - ਸੁਵ ਆਕ ਸੋਥ ਦਿ ਠਿਥਾ

དེ་ནས་ཐགས་མཁན་གྱིས་དྲི་ཚིན་རིལ་བུ་གསུམ་བཅུ་དང་ནས་ཀལ་པ་ལ་
 གཅིག་བྱིན་ནས་ཟོ་ཞིག་ཟེར་བ་ལ། ང་ལ་མིས་འཕྱ་བར་འོང་ཟེར་ནས་ཟེར་
 མ་འདྲོད་པ་དང་། གཅིག་ཐགས་མཁན་རང་གིས་ཟོས། གཅིག་ནམ་མཁའི་ལྷ་
 རྣམས་གྱིས་བྱིས། གཅིག་ས་འོག་གི་ལྷ་རྣམས་གྱིས་བྱིས་པོ།

དེ་ནས་གཉིས་ཀ་ཡུལ་དུ་ལོག་བྱིན་ནས། ཐགས་མཁན་གྱིས་པ་ཁ་ལྟས་
 ཆང་དང་བཟའ་བ་ཉོས་ནས་འདི་རྒྱད་དུ། ད་ཁྱོད་ཀྱི་འཁོར་ཀུན་སློབ་ལ་ཤོག་
 ཅིག་རང་ཅག་ཚོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ཞིག་ཡུ་དགོས་གསུངས་པ་ལ། ཀལ་པུ་འདི་སྐུམ་
 དུ་འདིས་མི་གཅིག་རང་ཡང་འབྲངས་པར་མི་འགྱུར་ན། ངེད་དཔོན་སློབ་སྐུམ་
 སློང་འདིས་ཇི་ལྟར་བྱ་སྐུམ་པ་ནས་དཔོན་སློབ་ཀུན་བྱིན་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་
 པའི་བྱིན་རྒྱལས་གྱིས་ལ་དུ་དང་འབྲས་ཆན་ལ་སོགས་པའི་འདྲོད་ཡོན་གྱིས་སློང་
 ཐམས་ཅད་གང་བར་གྱུར་ནས། ཞག་བདུན་གྱི་བར་དུ་ཚོར་གྱི་ཡོ་བྱད་ལ་འོངས་
 སྤྱད་ཀྱང་ཟེར་པར་མ་གྱུར་པ་དང་། ཀལ་པུས་ཆེད་ཅག་གི་བཟའ་བཅུ་དང་ཆུ་
 མཚོ་དང་འདྲ་བ་དངོས་ཅག་གིས་འཚལ་ཇོ་མི་ཐོར་ཟེར་ནས། ལྷག་པོལ་དོར་དེ་

1 'ཁྱོད་ཀྱིས' - ལྷག་ཀུན་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 'གཅིག' - དེ་ཉི་ཤོག་ ༡༡ དེ་དེ་ཉིད།
 3 'བྱིན་པ་ན།' - ལྷག་ཀུན་ཤོག་ ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 4 'ཀལ་པ' - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།

བསྐྱེད་པ་དང་། དེས་(སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་)ཉོན་ཅི་ལ་དུ་བ་ཡིན་པུས་པས། དེ་ན་མེ་ཅི་
 ལ་མི་དུ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཀུན་ལྡན་གྱི་ནས་མེད་པས་དུ་བ་ཡིན་ཟེར་བ་དང་།
 མཁའ་འགྲོ་སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་ འོ་ན་སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་པ་མེད་སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་པ་
 དེ་གཞན་མོས་བྱིར་རོ།

མཁའ་འགྲོ་མ་བྱིས་དུ་སྐྱེ་བས་པ་ན་ཀུན་ལྡན་མ་གྱི་བར་འདུག་པས།
 ཀུན་ལྡན་སྐྱེ་བའི་ཟེར་བ་ན་ལྡར་གྱི་བདམ་བཤོད་དེ་མེད་པུས་སོ།

དེ་ནས་ཞག་བདུན་དུ་སློབ་མའི་ཚོགས་ལ་ཚོས་བཤད། འཕགས་མོ་
 དབུ་བཅད་མའི་གདམས་ །ངག་བྱིན་ནས། སློབ་དཔོན་གྱི་རྣམ་སྤྲིན་གྱི་ལུས་དེ་
 ཉིད་དུ་བོར་ནས་མཁའ་སློབ་དུ་གཤེགས་སོ། དེ་ནས་མཁའ་འགྲོ་མ་སྐྱེ་བའི་སྐྱེས་
 རས། ད་ཅིའི་བུ་མོ་དེ་བཅའ་ན། སྤང་ལྷ་ཡུལ་དང་། འོག་ལྷའི་ཡུལ་དང་།
 བར་མའི་ཡུལ་གང་ནས་ཀྱང་མ་རྙེད་པ་ལས། ‘ཤམ་སྤྱིལ’ བྱ་བའི་ཤིང་ཞིག་³
 གི་ནང་ན་འདུག་པ་⁴མཁའ་འགྲོ་མས་དེ་བཟུང་ནས་ལྡགས་བདུབ་སྟེ། ཡང་
 བསད་པར་གྱུར་དོ།

དེས་ན་ང་རྒྱལ་དང་། སྤག་དོག་ནི་བར་ཆད་ཡིན་པར་གསེས་པར་བྱའོ།
 བྱུ་མོ་ཀུན་ལོ་རྒྱུ་རྫོགས་སོ།

1 ‘གདམས་ངག’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘བུ་མེད’ - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ཤོག་ ༡༧/བ. དེ་ཉིད།
 3 ‘ཤིང་ཅིག’ - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ཤོག་དེ་ཉིད། དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘འདུག་ནས’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད། ‘འདུག་པས’ ལྷུ་བ་ཀྱུན་ཤོག་དེ་ཉིད།

༡༤) གྲུག་རིམ་ལོ་རྒྱུས།

གྲུག་རིམ་ལོ་རྒྱུས་ནི། རྒྱུ་གནས་བཞི་ལས་བརྒྱུས་སྐྱེས་ཡིན།

དཔལ་རྣལ་ལྷན་གཟུགས་ལག་ཁང་ནས་²མར་གཤེར་དེ་³རབ་དུ་བྱུང་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཁན་པོ་མཛད་ནས་མཁན་བུ་འབྲུམ་ཡོད་པ་ལས། རང་ཉིད་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་མང་པོ་ལས་གདམས་ངག་ལུས་ཀྱང་རྟོགས་པ་མ་སྐྱེས་ནས། ཡུལ་ལྗོངས་སྤྱོད་ཀྱི་རྒྱུད་ན་སློབ་དཔོན་སྲུ་སྐྱུ་བ་བཞུགས་པའི་གདམ་ཐོས་ནས། དད་པ་དང་མོས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་སྐྱེས་ནས་ལམ་དུ་ལུགས་དེ་སྤྱིན་དོ།⁴

རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གི་འབྲུམ་དུ་(སློབས་པ་ན་)འཕགས་པ་འཇམ་

དཔལ་གྱིས་ཉ་པ་ཞིག་དུ་སྐྱུལ་ནས་བཞུགས་པ་ཀུན་རིམས་མཐོང་སྟེ། དེ་ལ་ཕྱག་དང་མཚུལ་སྤུལ་དེ། བདག་ཡུལ་ལྗོངས་སྤྱོད་ཀྱི་རྒྱུད་ན་སློབ་དཔོན་སྲུ་སྐྱུ་བ་བཞུགས་པའི་སར་འགྲོ་བ་ལགས་པས་བདག་ལ་ལམ་སྟོན་པར་ཞུ་བཞུགས་པ་དང་། དེ་ན་དེ། ས་གོ་ནགས་འཕྲུགས་པོའི་ནང་ན་བཅུད་ལེན་སྐྱུ་བ་ཅིང་བཞུགས་སོ་ཞེས་ལུང་བསྟན་ནས་དེར་སྤྱིན་པས། སློབ་དཔོན་བཅུད་ལེན་གྱི་རྗེས་བསམས་ནས་⁵དེ་སྤྱོད་ཀྱིན་བཞུགས་པ་མཐོང་ནས་ཕྱག་བྲུས། གསོལ་བ་

1 'མིན' - བེ་ཉི་ བོག ༡༩ འོག དེ་ཉིད།
2 'ཁང་ན' - རྒྱུ་གུན བོག ༣༡/ན དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ བོག ༣༩ དེ་ཉིད།
3 འདྲིར་རྣལ་ལྷན་གསུམ་པོའི་ལོ་རྒྱུས་འདུག་ཀྱང་། བཞི་བརྒྱ་པའི་ཆོ་གསལ་འབྲེལ་པས་སློབ་དཔོན་འདྲི་སྐྱེལ་ལོ་རྒྱུས་པོའི་སྐོར་སྐྱུ་བཤད་དོ། - བཞི་འབྲེལ་བོག ༣༡ ཟླ ༥༥
4 'སྤྱིན་པ་དང་།' - རྒྱུ་གུན བོག ༣༡ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ བོག ༣༩ འོག
5 'རྗེས་བསམས་ དེ་སྤྱོད' - རྒྱུ་གུན བོག ༣༡ དེ་ཉིད།

བདེ་བ་ནས་རྗེས་སུ་གཟུང་བར་ལུས་པས། གནང་སྟེ། གསང་བ་འདུས་པའི་
དགྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐྱུར། གདམས་ངག་གྲིན་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་གམ་དུ་
སློམ་གྱིན་བལྟས་སོ།།

དེ་ནས་ནགས་དེ་དང་ཉ་ཅང་མི་རིང་བ་ཞིག་ན་གྲོང་བྱིར་ཞིག་འཛིན་པ་
ལ། དེར་དཔོན་སློབ་གཉིས་ཀ་བསོད་སློམས་ལ་བྱོན་པས། ཀམ་རིལ་བསོད་
སློམས་ཤིན་དུ་ཞིམ་པ་རྙེད་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཞིམ་པ་མ་རྙེད་ནས། སློབ་
དཔོན་གྱིས་གསུངས་པ། བྱིད་ཀྱི་འདི་ནི་བུད་མེད་ཆགས་ནས་སྟེར་བ་ཡིན་པས་
མི་ཞིམ་པ་ཡིན་ནོ། །བྱིད་ཀྱིས་ཟས་ཞིམ་པོ་རྙེད་པ་མ་ཡིགས། དེ་ཡང་ཤིང་གི་
འདབ་མའི་སྟེང་དུ་མ་ལེན་པར་ཁབ་གྱི་རྩེ་ལ་ཆགས་པ་དེ་ལོང་གསུངས། དེ་
བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ་འབྲས་ཆན་དོག་མ་གཅིག་སྒངས་ཏེ་ཟོས་པས། དེའི་ནང་པར་
བུད་མེད་རྣམས་ཀྱིས་བག་སྐྱེལ་ཁུར་བ་བྱས་ནས་དེའི་སྟེང་དུ་བཟའ་བ་ཞིམ་པོ་
སྣ་ཚོགས་བཞག་སྟེ། ཁབ་གྱི་རྩེ་མོ་ལ་བཀལ་ནས་བྲངས་པས། དེ་སྐྱམ་ལ་ཡང་
བྲངས། ང་གིས་ཀྱང་གསོལ་བས་སྐྱམས་ཞལ་ཞལ་ཞལ། བྱིད་ཀྱི་འདི་ཅི་ཅུག་བྱས་
ནས་སྒངས་པ་ཡིན་གསུངས། དེ་ན་ཤེ། བདག་གིས་སྐྱམ་པར་གིས་གསུངས་པ་
བཞིན་བྱས་ནས་སྒངས་པ་ལགས་ལུས་པས། འོ་ན་བྱིད་གྲོང་བྱིར་དུ་མ་འགྲོ་བར་
ཁང་པའི་ནང་དུ་སྟོན་ཅིག་གསུངས་པས། དེ་བཞིན་བྱས་ཏེ་བསྐྱེད་པ་ན། ཤིང་

1 'ཅིག་ཡོད' - ལྷུ་གུན་ ཤོག་ དེ་ཉིད། ཤེ་ཉི་ ཤོག་ 33
2 'རྙེད་པ་དེ་མ་ལེགས' - ཤེ་ཉི་ ཤོག་ 33 འོག་ དེ་ཉིད།
3 'གསུངས་པས' - ཤེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།

གི་ལྷ་མོས་ཁང་པའི་ནང་དུ་བཟའ་བ་ཞིམ་པོ་མང་པོ་དྲངས་ཏེ་རང་གི་གཟུགས་
དངོས་སུ་བསྟན་ཕྱག་བཅའ་གཏམ་བྱས་སོ།།

དེའི་བསོད་སྦྱོམས་ཀྱང་སྤངས་ཏེ་སྤྲོ་མ་ལ་དྲངས་པས། རྩོད་ཀྱིས་འདི་
འདྲ་བ་གང་ནས་རྟེན་གསུངས་པ་ལ། ཤིང་གི་ལྷ་མོས་དྲངས་པ་ཡིན་ཞུས་པས།
སློབ་དཔོན་འཕགས་པས་བདེན་ནམ་སད་པའི་སྤྱིར་ཤིང་གི་ལྷ་མོའི་ཅན་དུ་བྱོན་
ནས་བལྟས་པས། ལྷ་མོའི་གཟུང་ནི་དངོས་སུ་མ་མཐོང་། དཔུང་པ་མན་ཆད་
ཀྱི་ལག་པ་མཐོང་ནས། དེར་སློབ་དཔོན་གྱིས་ངའི་སློབ་མ་ལ་གཟུགས་དངོས་སུ་
སྟོན་ལ། ང་ལ་མི་སྟོན་པ་ཅི་ཡིན་གསུངས་པས། ཤིང་དེ་ལས་སྐྱེ་འདི་ལྷ་ལྷ་བྱ་བྱང་
སྟེ། “རྩོད་ལ་ད་དུང་ཉོན་མོངས་པའི་ཆ་གས་མ་སྤངས་པར་འདུག་ལ། རྩོད་ཀྱི་
སློབ་མས་ཉོན་མོངས་པ་མ་ལུས་པ་སྤངས་པས་ང་མཐོང་ངོ་”ཞེས་ཟེམ།

དེར་མཁུན་སློབ་གཉིས་བཀའ་བཏྲུག་ནས་བཅུད་ལེན་གྱི་སྟེན་བཟའ་
དགོས་ཟེར་ཏེ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀམ་རི་ལྷ་བྱ་བ་ལྷུ་ཅུ་དེ་ལྷ་ལ་བྱིས། རང་ཉིད་
ཀྱིས་ཀྱང་གསོལ་དོ།། དེ་ནས་ཀམ་རི་ལྷ་ས་ཤིང་སྐམ་པོ་ཞིག་ལ་བཅུད་ལེན་གྱི་
སྟེན་བྱུགས་པས་ལོ་མ་སྐྱེས་པ་དང་། དེ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གཟིགས་ནས་ཅུང་
ཟད་བཞད་དེ། རྩོད་ཀྱིས་ངའི་བཅུད་ལེན་གྱི་སྟེན་ཤིང་ལ་བྱུགས་ན། ད་

1 ‘ལྷས་’ - བེ་ཉི་ འོག 30 བོང 183. vol 87.
2 ‘ཡན་ཆད་’ - ལྷུ་བ་ཀུན་ 32/བ དེ་ཉིད།
3 ‘མ་ལུས་པར་’ - བེ་ཉི་ འོག 30 བོང དེ་ཉིད།
4 ‘གསོལ་ལོ།’ - བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘བཅུད་ལེན་བྱུགས་’ - བེ་ཉི་ འོག དེ་ཉིད།
6 ‘གཟིགས་པས་’ - བེ་ཉི་ འོག, 30 བོང དེ་ཉིད།

ངའི་བཅུད་ལེན་བྱིར་ལ་ཤོག་གསུངས་པས། ཀམ་འཕྲུ་ན་ཤེ། བཞིད་ན་འབྲུལ་
 ཟེར་ནས། ལུ་ཇ་མ་གང་གི་ནང་དུ་རང་གི་ (འི་) ལུ་བཏང་ནས་གིང་བུས་
 དཀྱུགས་པས། བཅུད་ལེན་གྱི་ཇས་སུ་སོང་བས་དེ་བྱིར་ནས་སློབ་དཔོན་གྱི་ཐང་
 དུ་ཕྱིན་ཏེ་འཕུལ་བ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་འདི་རེ་མང་གསུངས་ནས་གིང་སྐམ་
 བོ་ལ་གཏོར་པས། དེ་ལས་ལོ་མ་སྐྱེས་སོ། །དེ་ཡང་སློབ་དཔོན་གྱིས་སློབ་མ་ལ་
 ཏོགས་པ་སྐྱེས་སམ་མ་སྐྱེས་ཡང་ཏོགས་པ་ཡིན་ཅོ།

དེར་ཏོར་པ་སྐྱེས་པར་གོ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ད་ལྟོ་འཁོར་བར་མ་
 འདུག་གཅིག་གསུངས་པས། དེ་ཐོས་པའི་མོད་ལ་བར་སྐྱང་ལ་གཤེགས་པར་
 ཆས་པ་ལ། ལྔར་ནས་སློབ་དཔོན་ལ་བསྟེན་བཀུར་བྱེད་³ཅིང་ཕུག་ཕྱིར་འབྲངས་
 པའི་ (གིང་ལྗ) བུད་མེད་ཅིག་ཡོད་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྱིས་ལྟོ་ཅི་འདོད་
 ནས་བདག་ལ་ཡུན་རིང་⁴དུ་བསྟེན་བཀུར་བྱེད་པ་ཡིན། ཞེས་སྐྱས་པ་དང་།
 བུད་མེད་དེས། བདག་ལ་ཅི་ཡང་མི་དགོས་ཀྱི། ལྟོ་ཀྱི་སྐྱེན་ལ་ཆགས་ནས་
 འགྲོ་ཏེ་པ་ཡིན་པས་སྐྱེན་དགོས་ཟེར་བ་ལ། སློབ་དཔོན་རང་གི་སྐྱེན་གཡས་པ་

1 'ཕྱོན་ཏེ།' - པེ་ཉི་ ཤོག 30 བོང་ དེ་ཉིད།
 2 'སྐྱེས་མ་སྐྱེས་' - པེ་ཉི་ 30 བོང་ དེ་ཉིད།
 3 'མཇེད་ཅིང་' - ལྷུ་གུན་ ཤོག 33/ན དེ་ཉིད།
 4 'བདག་ལ་བརྟེན་བཀུར་' - པེ་ཉི་ ཤོག 30 འོག 184. vol 87.
 5 'འབྲངས་པ་' - པེ་ཉི་ ཤོག 30 འོག དེ་ཉིད།

བཏོན་ནས་དེ་ལ་བྱིན་པས། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཞུ་རྒྱུ་དེས་པ་མིག་གཅིག་
པ་ཞེས་བྲགས་།།

ཞུ་རྒྱུ་དེས་ཀའ་རིས་དེས་སླ་མ་ལྟ་སྐྱབ་ཀྱི་གདམས་པ་ལ་ཉམས་སུ་སྒངས་
པས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་སྒྲི། རྒྱུད་ཡོངས་སུ་གོལ་ནས་སླ་མའི་གསུང་ཐོས་པ་
ཙམ་གྱི་མོད་ལ་བར་སྒྲུང་ལ་ཤིང་དུལ་བདུན་ཙམ་དུ་འཕགས་ནས་འགྲོ་བ་དུ་མ་
ལ་ཚོས་བསྟན་པས་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་སློན་པར་བྱས་ནས་རང་གི་འོག་ན་སླ་མ་
བཞུགས་པ་ལ་རྒྱུད་པ་ནམ་མཁའ་ལ་³བསྟན་མགོ་ཐུར་དུ་ཕྱོགས་ནས་ཐལ་མོ་
སྐྱར་དེ་སླ་མ་ལ་ཕྱག་བྱས་ནས་མེ་དོག་གི་ཆར་ཕབ་ནས་དེ་ཉིད་དུ་མི་སྒྲུང་བར་
གུར་རོ།།

སློབ་དཔོན་ཞུ་རྒྱུ་དེས་འཇུག་གུ་རྒྱུ་ཀའ་རིས་སྒྲི་མཚན་གཉིས་ལྟན་དེའི་ལོ་རྒྱུ་རྗོགས་
སོ།། །།

1 'བྲགས་པ་དང་།' - དེ་ཉི་, ཤོག 30 དེ་ཉིད།
2 'གདམས་པ་' - དེ་ཉི་ ཤོག 30 དེ་ཉིད།
3 'ནམ་མཁའ་' - དེ་ཉི་ ཤོག 30 འོག་ དེ་ཉིད།

ཚ་སྐྱོ་ཅན་དང་འབྲས་བུ་མེད་པར་སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའོ།།” གསུངས་པས། རྒྱུས་
 བུ་དེས་རྒྱུ་གྱི་རྣམ་པར་སྤྲོད་པ་རྒྱུ་མ་ཐོས་པ་དེ་ཐོས་པས་འཇིག་ནས། དེ་ལ་
 བདེན་པར་སྒྲུབ་ཏེ། འཕགས་པ། བདག་ནི། ཐལ་ལྷན་(ལྷ་ལྷན་)ལྷ་ཞེས་བུ་བ་
 ལགས་ཏེ། དུས་ཉམས་དུ་རྒྱུ་གཅིག་དུ་སྒྲུ་ཞིང་། བདེན་པ་སྤྲོད་ཅེ་མོ་བརྒྱུར་
 བཤགས་པའི་ཚ་ཅམ་ཡང་མི་སྒྲུ་བ་ལགས་སོ། །ད་ལྟར་ཡང་རྒྱུ་ཅི་སྒྲུ་སེམས་
 པ་ལགས་ཟེར་བས། དགོ་སྤོང་གིས་ཁྱོད་ཚོས་གིག་མི་བྱེད་དམ། གསུངས་པས།
 དེ་ན་དེ། འཕགས་པ་ཚོས་ལྷ་བཞུད་ལགས་ཏེ། དང་པོ་ནས་རྒྱུ་ལ་གོམས་
 པས་དེ་སྤོང་བར་བྱེད་མི་རྣམས་ལགས་ཞེས་བཤེས་པ་ལ། (དགོ་སྤོང་)དེས་རྒྱུ་
 རྒྱས་ཀྱང་མི་སྤོང་བའི་ཡག་མས་ངག་ཡོད་དོ་གསུངས་པས། དེ་དགའ་སྤོང་ཚོས་ལྷ་
 འཚལ། ཟེར་ནས་དགོ་སྤོང་གིས། དེའི་ཁམས་དང་བསམ་པ་དང་བག་ལ་ཉལ་
 དང་བསྐྱུན་ནས་རྣ་བར་རྒྱ་ལུགས་པ་འབྱིན་པའི་གདམས་ངག་བཞིན་དུ་རྒྱུ་
 ཉིད་རྒྱུ་གྱི་གཉེན་པོར་བསྐྱོམ་པའི་གདམས་ངག་གི་སྤོང་དུ་དབང་བསྐྱུར་ནས་
 རྒྱུད་ཡོངས་སུ་སྤྲོད་པར་བྱས་ཏེ། གདམས་ངག་འདོད་ཅི་འདི་རྒྱུད་དུ།

གཤམ་བྱའི་ཚོས་ཐམས་ཅད་ནི་གདོད་མ་ནས་རྒྱུ་ཡིན་ལ། ཁྱོད་ཀྱིས་
 མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་དུག་དབང་པོ་དུག་གིས་ཉམས་སུ་མྱོང་།

1 ‘དེར’ - དེ་ཉི་ འོག ༣༥ བོང་ དེ་ཉིད།
 2 ‘མི་དོ་བའི’ - དེ་ཉི་ འོག ༣༥ བོང་ དེ་ཉིད།
 3 ‘གདམས་ངག’ དེ་ཉི་ འོག ༣༥ བོང་ 184. vol 87. དེ་ཉི་དཔལ་མའི་མ་དཔེ་ལ་གདམས་ངག་ཅེས་པ་
 ས་མེད་པ་ཁོ་ན་གྱིས་འདུག་པས། ཟུར་མཚན་མེད་པ་རྣམས་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་གཤམ་པར་བྱའོ།
 4 ‘གདམས་ངག’ - དེ་ཉི་ འོག ༣༥ བོང་ 184. vol 87.

བ་ཐམས་ཅད་རླུན་པ་ཡིན་པས། །ཉོད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་རླུན་གཅིག་པུར་སྐྱོམས་
ཤིག་དེ་ཡང་—

སྣང་སྲིད་རླུན་པའི་ཚོས་རྣམས་ལ།
རླུན་པར་མ་ཤེས་རླུན་སྣ་ཟེར།
ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་རླུན།
དེས་ན་ཚོགས་དྲུག་ཡུལ་དྲུག་ཀྱང་། ༡

རླུན་ཏེ་བདེན་པ་ག་ལ་ཡོད།
རླུན་ལ་བདེན་པར་ཞིན་པ་ཡི།
བདེན་པས་འཁོར་བའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་མྱོང་།
ཀྱི་མ་བྱིས་པ་རླུན་ཉིད་ལ། ༢

རླུན་པར་མ་རྟོགས་བདེན་པར་བརྩུང་།
དེ་ཡིས་ཟོ་ཆུའི་ཁྱད་མོ་ལྟར།
ཡང་དང་ཡང་དུ་འཁོར་བར་འབྱམས།
དེས་ན་ཉོད་ཀྱིས་ཚོས་རྣམས་ཀུན། ༣

རླུན་པ་ཉིད་དུ་ཡང་དག་སྐྱོམས་།
སྣ་ཉིད་རླུན་པ་ཡིན་པ་ལྟར།

1 'བསྐྱོམས' - དེ་ཉི ༣༥ འོག་དེ་ཉིད། བསྐྱོམས་ སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག ༣༣/ན་དེ་ཉིད།

གཟུགས་ལ་སོགས་པའང་དེ་བཞིན་ཏེ།

དེར་འཛིན་པ་ཡང་རྒྱན་དུ་སྒྲོམ་ས། །

ཞེས་གསུངས་པས། (དེས་སྤྲུལ་པས་) ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་རྒྱན་དུ་བསྒྲོམས་པས་ལོ་བདུན་ན་སྒྲུང་སྤྱིད་ཐམས་ཅད་རྒྱན་དུ་སྒྲུང་བའི་རྟོགས་པ་སྦྱིས་ཏེ། ཚོས་ཐམས་ཅད་རྒྱན་པར་རྟོགས་པས་ཡང་དག་གི་ཞེན་པ་ལོག་གོ། །

དེ་ནས་ཡང་སླ་མ་དེ་བྱོན་ཏེ། “ཚོས་ཐམས་ཅད་རྒྱན་པར་ཡང་མ་གྲུབ་སྟེ།” མ་སྦྱིས་མ་འགག་པས་ཚོས་ཐམས་ཅད་རང་གི་ངོ་པོས་སྒྲོང་པར་སྒྲོམ་ས། གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་རྟོགས་སོ།

ནམ་རྟོག་ལམ་དུ་ལོངས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། སྤྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་² སླ་མ་སྤྲུལ་ཞེས་གྲགས་ཤིང་། སྐལ་བ་དང་ལུན་པ་དག་ལ་ན་བར་རྒྱ་ལྷགས་³པ་འབྱིན་པའི་གདམས་པ་བསྟན་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་སྤྲུལ་པའི་ལོ་རྒྱུ་རྫོགས་སོ།

1 ‘ཞེན་པ་ལོག་’ - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག 33/ན དེ་ཉིད། བེ་ཉི་, འོག 34 ཞོང་ དེ་ཉིད།
 2 ‘ཐམས་ཅད་ན་’ - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག དེ་ཉིད།
 3 ‘རྒྱ་ལྷག་པ་’ - བེ་ཉི་, འོག 34 ཞོང་ དེ་ཉིད།
 4 ‘ཐམས་ཅད་པའི་’ - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག 33/ན བེ་ཉི་, འོག 34 འོག དེ་ཉིད།

30) གུ་རུ་རྒྱ་རོ་པ།

གུ་རུ་རྒྱ་རོ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཆང་འཚོང་པའི་རིགས་ཡིན་པའ།

རྒྱ་འཚོལ་ནས་རྒྱ་གར་གར་ཕྱོགས་སྤྲོལ་པུ་འཕྲ་བར་གིང་བདུས་ནས་འཚོང་བར་བྱེད་པའི་ཆེ། མིལྷན་གར་བྱ་བ་ན་ཉི་ལོ་པ་འཕྲ་བའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་པ་བཞུགས་བྱ་བའི་གཏམ་ཐོས་ནས། གིང་ཁུར་གཅིག་གྲིལ་སྤྲོས་པའི་པགས་པ་ལ་བཙོངས་ནས་དེ་གྲོན་ཉེ་རྒྱལ་འབྲོར་པའི་ཆ་ལུགས་སུ་བྱས་ཉི། མཐར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཉི་ལོ་པ་འཚོལ་དུ་བྱིན་པ་དང་། མིལྷན་གར་དུ་བྱོན་ནས་དྲིས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་གྲོས་ཉེ་གཤེགས་ནས་མེད་ཟེར་བས། རྒྱ་རོ་པས་ཡུལ་ཐམས་ཅད་དུ་བཙུལ་ཀྱང་མ་རྟེན་དེ། མཐར་གྱིས་ཡུན་རིང་པོ་ལོན་པ་དང་། ལམ་ཀ་ཞིག་དུ་འཕྲད་དོ། །

1 'རྒྱ་རོཏཔ' - རྒྱ་རོཔ པད་དཀར་ཚོས་འབྲུང་ ཤོག 134/བ དི་སློབ་དཔལ།
 2 འདིར་ཆང་ཚོང་རིགས་སུ་བཤད་ཀྱང་པད་དཀར་ཚོས་འབྲུང་སོགས་སུ་“ཀ་སློར - ཁ་ཆེ་སློ
 ཞེས་པ་ནས་...བུམ་ཟེའི་རིགས་ལ་དཀར་ནག་བརྒྱན་ཡོད་པའི་བཟང་ཤོས་བུམ་ཟེ་རྒྱལ་པོ་བྱེད་པའི་
 མིང - ‘རྒྱ་རོཏཔ’ (རྒྱ་རོཏཏམ) ཞེས་བྱ་བའི་བརྒྱན། ཡབ་ཁ་ཆེའི་རྒྱལ་པོ་དགེ་བའི་གོ་ཆ།
 ཡུམ་དཔལ་གྱི་སློབ་གྲི་སྤྲོས་སུ་འབྲུངས། མཚན་ཀྱན་དུ་བཟང་པོ།” ཞེས་བྱུང་དོ། པད་ཚོས་
 ཤོག 136/ན དེ་ཉིད།
 3 ‘ཕྱོགས་སུ་སྤྲོལ་པུ’ - ལྷུ་བ་ཀྱན་ ཤོག 33 ཕྱོགས་སྤྲོལ་པུ པེ་ཉི་ ཤོག 34 འོག་ དེ་ཉིད།
 4 ‘ཉི་ལོ་པ’ ཉི་ལོ་པ ལྷུ་བ་ཀྱན་ དེ་ཉིད།
 5 ‘པོ་ཅིག’ - པེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད།
 6 ‘རྒྱལ་འབྲོར་ཉི་ལོ་པ’ - པེ་ཉི་ ཤོག 34 འོག་ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་རྒྱུ་ལ་ཕྱག་དང་བསྐྱོར་བ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཏེ། སླ་མ་ལ་¹སྐྱུ་
 ཁམས་བདེའམ། ཞེས་སྐྱུ་ལ་ན། ཉི་ལོ་ཕུ་ན་ལ། རྩོད་ཀྱི་སླ་མ་ང་མ་ཡིན་
 ལ། ངའི་སྐྱོབ་མ་ཡང་རྩོད་མ་ཡིན་ཟེར་ནས། རྩོ་ཡིན་བདེག་དུ་བྱུང་²ཡང་སྐྱར་
 དད་པར་གྱུར་ཏེ།³ རྩོ་མའི་ནང་དུ་བསོད་སྐྱེམས་སྲངས་ནས་སླ་མ་ལ་དྲངས་
 བེད། བསོད་སྐྱེམས་གསོལ་ཏེ་སྐྱར་རྩོ་བ་དང་བདེག་པ་ལ་སོགས་བྱེད་ཀྱང་ལྷག་
 པར་དད་པ་སྐྱེས་ཏེ། ལྷག་མ་ཟོས་ཤིང་ཕྱི་ནས་བསྐྱོར་བ་བྱེད་དོ།། དགོང་མོ་
 ས་སྐྱོས་པ་དང་དེར་འོངས་ནས་ཉལ།⁴ ཐོ་རངས་བསོད་སྐྱེམས་ལ་འགྲོ། དེ་
 ནས་སླ་མ་ལ་དྲངས་ཀྱིན་དེ་ལྷར་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་སྐྱོ་བ་མེད་པར་བརྟེན་བཀུར་
 བྱས་ཀྱང་རྩོ་བ་མ་ཡིན་པ་ཐ་མལ་པའི་ཚིག་གཅིག་ཀྱང་གསུང་བ་མེད་པ་ན།
 དུས་གཅིག་གི་ཚེ་བྱིམ་བདག་གཅིག་ལག་མ་ལེན་པའི་སར་བསོད་སྐྱེམས་ལ་
 ཕྱིན་པས། བཟའ་བ་མང་པོ་དང་ཁྱད་པར་ཚོད་མའི་རྣམ་གྲངས་བརྒྱན་ཅུ་ཅཱ་
 བཞི་ཙམ་གྱི་ནང་ནས་སྐྱོ་བ་ལྟས་^(ལྷལག) ཞེས་བྱ་བའི་ཚོད་མ་ཤིན་དུ་ཞེམ་
 པ་ཞིག་རྣམས་རྙེད་པ་ཁྲུར་ཏེ་སླ་མ་ལ་དྲངས་པས། ཉི་ལོ་པས་⁷བཞེས་ནས་

1 'སླ་མ་སྐྱུ་ཁམས་' - དེ་ཉི་ བོག 34 འོག 184. vol 87.
 2 'གྱུར་ཡང་' - དེ་ཉི་ བོག 34 འོག དེ་ཉིད།
 3 'སྐྱེ' - བོག 36 བོང་ དེ་ཉིད།
 4 'བོད་ས་རྣམ་སྐྱོས་པ་དང་དེར་འོངས་ནས་' - དེ་ཉི་ བོག 36 བོང་ དེ་ཉིད།
 5 'གཉིས་སྐྱོ་བ་མེད་' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 33 དེ་ཉིད།
 6 'བདག་ཞིག་' - དེ་ཉི་ 36 བོང་ དེ་ཉིད།
 7 'ཉི་ལོ་པ' - ཞེས་བོད་དུ་མང་དུ་བྱུང་།

ཕྱི་ཚེས་མ་ལ་སླ་མ་ཤིན་ཏུ་དགུས་ནས། བྱ་ཟས་འདི་འདྲ་བ་གང་ནས་རྟེན།
སྲུང་བྱིན་པ་ཡིན། གསུངས་པས།

རྒྱ་ལོ་པ་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་དུ་དགའ་བ་མཚོག་དུ་གྱུར་ནས་འདི་
སྣམ་དུ་བདག་གི་སླ་མའི་དྲུང་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་བསྐྱེད་པ་ལ། རྒྱུ་སྲུ་ཡིན་ཙམ་
ཡང་མ་གསུངས་པ་ལ། དེ་རིང་བུ་ཞེས་གསུངས་སོ་སྣམ་ནས་དགའ་བ་དང་།
དེ་ལོ་པས་བྱ་ཚེས་མ་ཞིམ་པོ་དེ་དུང་སྤོངས་ལ་ཤོག གསུངས་པས། ལན་བཞི་
སྤོང་དུ་ཕྱིན་པས་བྱིམ་དེའི་མི་ཀུན་གྱིས་དགའ་བཞིན་དུ་བྱིན་ནོ། །ལན་ལྔ་པ་ལ་
རྒྱ་ལོ་པས་བསམ་པ། ད་ནི་སྤོང་བ་ཡང་ངོ་ཚ་ལ། མ་ཕྱིན་ན་ནི་སླ་མ་མི་དགུས་
སྣམ་ནས། སླར་སྤོང་དུ་ཕྱིན་པ་ན་བྱིམ་གྱི་མི་ཀུན་ལས་ལ་ཡིངས་པའི་བར་ལ་
ཚེས་མ་སྤོང་དང་བཅས་པ་བརྒྱས་ནས་བྱིར་འོངས་ཏེ། སླ་མ་ལ་དྲངས་པས་སླ་
མ་དགུས་ནས་བྱ་བཙོན་འགྲུས་བཟང་པོ་བྱ་བར་བཏགས།

བྱིན་རྒྱབས་དང་དབང་བསྐྱར་ཏེ། རོ་རྗེ་འཕགས་མའི་གདམས་པ་
གནང་གླེ་ཡབསྐྱེམས་པས། སླ་བ་དྲུག་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་གླེ། མཚན་ཡང་རྒྱ་ལོ་
པ་ཞེས་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ལ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ནས་མཚོད་པ་ལ་
འོངས་པ་ལ་མཐུགས་ཀ་ནས་འོད་ཕྱུང་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐོང་ཞིང་། ཐག་
རིང་བ་སློབ་པ་རེའི་ལམ་ནས་ཀྱང་མཐོང་བར་གྱུར་ཏོ།།

1 'བཞིན་དུ' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག ༣༣/བ དེ་ཉིད།
2 'གནང་ཏེ' - པེ་ཉི ཤོག ༣༦ ཞོང དེ་ཉིད།
3 'འོངས་པ་ལས' - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག ༣༣/བ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་གདུལ་བྱ་དཔག་དུ་མེད་པའི་དོན་མཛད་ནས། མཐར་ལུས་
 དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།
 གུར་ལྷོ་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།།

༡༡) གུར་བྱ་ལོ་རྒྱུས་

གུར་བྱ་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་ཀྱི། བྱའི་ལོ་རྒྱུས་ལྟར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ལོ་རྒྱུས་ལ།
 དེའི་ལྷུལ་ནི་བོ་རྒྱལ་ལུ་(ཡིན་ལ) རིགས་ནི་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བའི་དམངས་རིགས་
 ཡིན།²

དེ་ཡང་བོ་རྒྱལ་ལུ་ལོ་རྒྱུས་ལྟར་དེ་དང་ཉེ་བ་ན་དུ་རྒྱུས་ (ཅིག) ཡོད་ལ།
 དུ་རྒྱུས་དང་ཉེ་བ་ན་གནས་པའི་སྤྱི་བུ་ཞིག མཚན་མོ་དུ་རྒྱུས་ན་སྤྱང་གི་
 ཀྱུན་ཚོགས་ནས་སྤྱང་འདོན་པ་³ལ་གྱིན་དུ་འཛིགས་ནས། ཉིན་མཚན་མེད་པར་
 མི་དེ་སྤྱང་གི་འཛིགས་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་གོ⁴

ཉིན་གཅིག་དེའི་གམ་དུ་དགོས་ལྟར་ཞིག་བྱོན་ནས་བསོད་སྤོམས་བྱས་པས།

1 ‘གཤེགས་པ’ - བོ་ཉི་ཤོག ༡༦ འོག་དེ་ཉིད། འདིར་གྲུབ་ལོ་རྒྱུས་, བྱའི་ལོ་རྒྱུས་, གཤེགས་པ་, རིགས་
 རྒྱུས་འདུག་ཀྱང་ ཐམས་ཅད་ - བྱའི་ལོ་རྒྱུས་ ཞེས་པའི་རྩུར་ཆག་ཡིན་པར་མཛོེ།
 2 ‘ཡིན་ལ’ - ལྷུབ་ཀྱུན་ དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ དེ་ཉིད།
 3 ‘འདོན་པ་གྱིན་དུ’ - བོ་ཉི་ དེ་ཉིད།
 4 ‘འདུག་པ་དང་’ - ལྷུབ་ཀྱུན་ ཤོག ༡༧/ན་ དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ དེ་ཉིད།

དེས་དགེ་སློང་དེའི་རྐང་པ་ལ་ཕྱག་བྱས་ཀྱིས། གསོང་པོར་སྐྱ་བའི་གདམ་
ལེགས་པར་བྱས་ཏེ། བཞེས་ཆབ་དངས་པ་དང་། དགེ་སློང་གིས་སྤྱིན་པའི་ཕན་
ཡོན་གྱི་ཚོས་བཤད་པས། དེ་ན་ཟེ།

“འཕགས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིན་པའི་ཕན་ཡོན་གྱི་ཚོས་ཀྱང་ངོ་མཚར་ཆེ་སྟེ།

དེ་བས་ཀྱང་²མི་འཇིགས་པའི་ཚོས་ཤིག་³མངའ་ན་བདག་ལ་དེ་སྤྱིན་པར་མཛོད་
ཅིག་ཞུས་པས། དགེ་སློང་གིས་ཁྱོད་⁴འཁོར་བའི་སྐྱག་བཟུལ་ལམ་⁵དེ་མ་ཡིན་པ་
ཅི་ལ་འཇིགས། བྱས་པས། (མི་དེ་ན་ཟེ) “འཁོར་བའི་སྐྱག་བཟུལ་གྱི་འཇིགས་
པ་ནི་ཐུན་མོང་དུ་ཀུན་ལ་ཡོད་ལ། བདག་ནི་མོས་པ་ཚོད་རྒྱུང་⁷བས་གནས་
དུར་ཁྱོད་དང་ཉེ་བའི་སློབས་ཀྱིས་སྤྱང་གིའི་རྒྱུད་ཀྱིས་ཉིན་མཚན་དུ་འཇིགས་པ་
སྤྱིན་མི་ཆད་པས། དེ་ལ་ཕན་པའི་ཚོས་མཚིས་ན་བདག་བགྱིད་ལགས་སོ་”
ཞེས་ཞུས་པས།

1 ‘ཕྱག་འཚལ་ནས་སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག་ ༣༤/ན་དེ་ཉིད། ཕྱག་བཟུལ་ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ འོག་དེ་ཉིད།
2 ‘བདག་ལ་དེ་བས་ཀྱང་མི་འཇིགས་པའི་ཚོས་ཅིག་མངའ་ན་དེ་སྤྱིན་པར་མཛོད་ཅིག་ - སྐྱབ་ཀྱི་
ཤོག་ ༣༤ ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ འོག་ 184. vol 87.
3 ‘བདག་ལ་དེ་བས་ཀྱང་མི་འཇིགས་པའི་ཚོས་ཅིག་མངའ་ན་དེ་སྤྱིན་པར་མཛོད་ཅིག་ - སྐྱབ་ཀྱི་
ཤོག་ ༣༤ ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ འོག་ 184. vol 87.
4 ‘ཁྱོད་ལ་’ སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག་ ༣༤/ན་དེ་ཉིད།
5 ‘སྐྱག་བཟུལ་པའམ་’ - ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ འོག་
6 ‘མཐུན་མོང་པ་ཡིན་པ་ཀུན་ལ་ཡོད་ལ།’ - ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ འོག་དེ་ཉིད།
7 ‘རྒྱུངས་’ - ཤེ་ཉི་ཤོག་ ༣༧ འོག་དེ་ཉིད།

དག་སྤོང་དེས་འཇིགས་པ་དེ་ལ་མན་པའི་སྐྱབས་དང་གདམས་འངག་ང་
 ལ་ཡོད་ཀྱི། ཐོག་མར་དབང་བསྐྱར་གྱི་ཡག་སྤངས་ནས། དེས་དབང་ཡོན་དུ་
 གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་མང་པོ་སྤུལ་ནས་ཞུས་སོ། །གདམས་འངག་གི་
 འཇིགས་པས་འཇིགས་པ་སྤོང་བའི་གདམས་ངག་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ།

“ཁྱོད་དགྲ་ལ་སོགས་པ་ལ་མི་འཇིགས། སྤང་གིའི་སྐྱད་ལས་འཇིགས་
 བ། ཁྱོད་ཀྱིས་འཇིག་ཉེན་གྱི་སྐྱབས་སོ་ཙམ་ཐམས་ཅད་སྤང་གིའི་སྐྱད་དང་
 དབྱེར་མེད་དུ་ཉིན་མཚན་མེད་པར་སྐྱོམས་གིག། །གནས་ཀྱང་དུར་ཁྱོད་དུ་ཁང་
 བུ་གྱིས་ལ་སྤོང་ཅིག”ཅེས་གདམས་པ་བྱིན་པ་དང་། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་
 ཉེ་བསྐྱོམས་པས། སྐྱབས་ཐམས་ཅད་བྲགས་སྤོང་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་པའི་ངང་དུ་
 སྤང་གིའི་སྐྱའི་འཇིགས་པ་སྤོང་བ་དང་། འཇིགས་པ་རང་གྲོལ་འཇིགས་མེད་
 བདེ་ཆེན་གྱི་ཉམས་སྦྱེས་ནས་ལོ་དགུར་བསྐྱོམས་པས། ལུས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་
 དག་ནས་སྤུག་སྐྱེ་ཆེན་པོའི་དངོས་སྤུབ་ཐོབ་པར་གྱུར་དོ། །

1 ‘གདམས་ངག’ - པེ་ཉི་པོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘བསྐྱར་བགྱིས’ - སྐྱབས་ཀྱན་པོག་ ༡༥
 3 ‘གདམས་ངག’ - པེ་ཉི་པོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘སྤངས་པའི་གདམས་ངག་གི’ - སྐྱབས་ཀྱན་པོག་ ༡༥ དེ་ཉིད།

བདག་གི་སྤྱི་བ་འདི་འདྲ་བའི་དོན་མེད་པས་ཅི་ཞིག་གྲུ། ལྷམ་ནས་ཡང་
 ལྷམ་ཡང་དུ་བྲོས་པ་ལ་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་མ་བཏང་སྟེ། (ཉིན་གཅིག་)སྟོབ་
 དཔོན་གྱིས་ཆེས་གོས་བོར་ནས་(གོས་)ཆེམ་བུ་(ཅན་)ཞིག་བསྐྱམས། བྱིམ་དུ་
 ཡི་གེ་བྲིས་ནས་བོར་དེ། ང་ད་མི་ལོག་པས་སྟོག་དུ་³མ་འོངས་གིག་བྱ་བ་བྲིས།
 ཁོང་གིས་རྒྱབ་མོ་བྲོས་ནས་གོང་བྱིར་ཀུར་བུ་བའི་དུར་ཁྲོད་དུ་⁵བཞུགས་ནས་
 ཟས་བསོད་སྟོམས་སྒངས་གིང་རྒྱབ་པ་བྱེད་པའི་ཆེ་རྒྱུ་ལས་བསོད་སྟོམས་
 སྒངས་གིང་བསྟེན་བཀུར་བྱས་ལ། དེས་འཇོ་བ་མཛད་དེ་བསྐྱབས་པས་ལོ་བཅུ་
 ན་དྲི་མ་མ་ལུས་པ་དག་ནས། ལྷག་གྱི་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། ལྷ་ཡུལ་དུ་
 བྱོན་ནས་ལྷས་ཞལ་ཟས་ཀྱི་བསྟེན་བཀུར་བྱས་ལ། ལྷ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་དངོས་
 གྲུབ་ཐོབ་པས་སྟོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ (དེ་ལྟར་) ཉི་ལོ་བྱ་བར་བྲགས།

དེས་གདུལ་བྱ་དཔག་དུ་མེད་པ་ལམ་ལ་བཀོད་ནས་འགྲོ་དོན་མཛད་ཅ
 མཐར་སྐྱུ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྟོན་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་ཉི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

1 ‘ཅིག’ - ལྷག་ཀུན་ བོག 32/བ. གཅིག བེ་ཉི ལོག 32 བོང དེ་ཉིད།
 2 ‘བོར་སྟེ’ - བེ་ཉི་ བོག 32 བོང དེ་ཉིད།
 3 ‘སྟོག་དུ’ - བེ་ཉི དེ་ཉིད།
 4 ‘བྱ་བའི་ཡི་གེ་བོར’ - ལྷག་ཀུན་ བོག 32/བ. བེ་ཉི བོག 32 དེ་ཉིད།
 5 ‘ན་ཞུགས’ - ལྷག་ཀུན་ 32 དེ་ཉིད། བེ་ཉི 32 དེ་ཉིད།
 6 ‘མཛད་ལ’ - ལྷག་ཀུན་ བོག 32/བ. དེ་ཉིད། 48. 14. བེ་ཉི བོག 32 བོང

དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་བསྐྱོམས་བྱས་ན།

ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་སངས་རྒྱས་ཐོབ།

རྟགས་ཀྱང་རིམ་པར་འགྲུང་བར་འགྲུང། ३

ཞེས་བསྐྱོམས་པས། ཅུ་ལྷན་དོན་མ་རྟོགས་ནས་སྐྱོམ་ལ་ཞུས་པས།

སྐྱོམ་འཕྲི་ལེན་པས།

“སྐྱོམ་པ་ནི་མ་རིག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལས་འཇུག་པ་སྐྱོམ་ཆོགས་འགྲུང་²

བ་ཡིན་ཞོ། །སྐྱོང་སྤྱིད་ལྷན་གྱི་ཆེན་པོར་རྟོགས་པའི་ལྷན་བསྐྱོམ་པ་དག་པར་

བྱེད་པ་ཡིན་ཞོ། །

ཉིན་མཚན་བདེ་བ་བསྐྱོམ་པ་ནི་སྤྱིང་རྗེ་རྒྱན་དུ་བསྐྱོམས་ན་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་

བདེ་བ་རང་ལ་འཆར་བ་ཡིན་ཏེ། ཆེ་སྤྱིད་ལས་³རྣམས་མངོན་ཞེན་གྱིས་མ་

བཟུང་ན་ཤུགས་འགྲུང་གི་སྤྱོད་པ་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན།

སྤྱི་མ་ཅེར་འགྲུང་ཞེས་⁴པ་ནི་བདེ་སྤྱིད་ཐམས་ཅད་སེམས་ལས་འགྲུང་

བས། ད་དུང་ཡང་མངོན་ཞེན་ཡོད་དམ་མེད་གསུངས་པའོ།

1 ‘དེ་ལས་འཇུག་པ་’ - དེ་ཉི ३༧ འོག་དེ་ཉིད།

2 ‘གྲུང་བ་’ - དེ་ཉི་ བོག་དེ་ཉིད།

3 ‘སྤྱིད་ལས་རྣམས་’ - ལྷན་ཀྱན་བོག་ ३༥/ན་དེ་ཉིད།

4 ‘འགྲུང་ཅེས་’ - ལྷན་ཀྱན་བོག་ ३༥/ན་དེ་ཉི ३༧ འོག་དེ་ཉིད།

དེ་ལྟར་ཡུན་རིང་ཞེས་པ་ནི་བཙུན་འགྲུས་བསྐྱེད་དེ་མ་ཡིང་ས་པར་
 སེམས་ལ་བལྟ་།བའོ། །དེ་ལྟར་རྒྱན་དུ་བསྐྱོམས་ན་སེམས་ཀྱི་འགྲུལ་པ་
 ལྷོག་པ་ནས་ཆེ་འདི་ཉིད་³ལ་འགྲུས་བྱ་སངས་རྒྱས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སླ་
 མས་གདམས་ངག་བྲིན་ཏེ། ཅད་པུས་ཡུལ་སེམས་ཉམས་དུ་དེ་ལྟར་བསྐྱོམས་པས་
 ལོ་དྲུག་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་⁴སྟེ། མིང་དུ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པ་
 ཅད་པུ་ཞེས་སྐྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་ཤིང་། ལོ་བདུན་ནས་འཁོར་ལྡ་བརྒྱ་
 དང་བཅས་ཏེ། མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུབ་ཅད་པུའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

1 ‘ལྷོལ་’ - དེ་ཉི་ཤོག་ ༡༧ དེ་ཉིད།
 2 ‘ལོག་ནས་’ - དེ་ཉི་ཤོག་ དེ་ཉིད།
 3 ‘ཀྱི་འགྲུས་’ དེ་ཉི་ཤོག་ དེ་ཉིད།
 4 ‘ཐོབ་ཏེ།’ - དེ་ཉི་ཤོག་ སོགས་ དེ་ཉིད།
 5 ‘ཅད་པ་’ - ཞེས་མ་དཔེར་ ‘ཅ’ སྤེས་འདུག་ཀྱང་ རྒྱ་དཔེར་ ‘ཅ’ ཉིད་ཡོད་པར་ངེས་སོ།
 - འདིའི་རིགས་དམངས་རིགས་ཡིན་པར་ - རྩ་རྒྱལ་གྱིས་གསུངས། - ངའ་པུ་འཕེལ་བའི་སྐོར་
 པུ་ ༡༢༡.

སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་པ་མ་ཡིན། སྤྲོ་མའི་གདམས་ངག་གིས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་
བཀྲུས་ན་གདོད་དག་པ་ཡིན་ཅོ། །ཡང་གསུངས་པ་—

ཐེག་ཆེན་རིགས་ལྡན་མཚོག་ཡིན་ལ།

རྒྱལ་དང་བྲམ་ཟེ་དེ་ལྟ་མིན།

ལུས་སོགས་དྲི་མ་མི་དགེ་བ།

བརྒྱད་ལྡན་སྤྲོ་མའི་གདམས་པ་ཡིས། ༡

བཀྲུས་ན་གཙང་བ་སྤྲོ་ན་མེད།

རྒྱལ་ཡིས་བཀྲུས་པ་དེ་ལྟ་མིན།

ཞེན་མེད་སྣོད་དང་ཁ་ཟས་མཚོག།

དཀར་གསུམ་ལ་སོགས་དེ་ལྟ་མིན། ༢

ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་དད་པར་གྱུར་ནས། བྲམ་ཟེ་ན་སེ། རྫོང་གྱིས་
བདག་ལ་དེའི་གདམས་ངག་ཅིག་བྱིན་ཅིག་ཟེར་བས། (རྒྱལ་འབྱོར་པས་)འོ་ན་
བདག་ལ་ཟན་བྱིན་ཅིག་དེ་ལྟར་བྱའོ་སྤྲོས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་སེ། འདིར་བདག་
ཚོས་ཉན་ན་འཁོར་དང་མི་ཀུན་མི་དད་པས། རྫོང་གང་དུ་བཞུགས་པ་དེར་
བདག་མཚིས་ན། ཉིད་གང་དུ་བཞུགས། ཟེར་བས། ང་དུར་ཚྲོད་ན་འདུག་གི་
དེར་ཆང་དང་། ཕག་ཤ་བྱིར་ལ་ཤོག་བྱས་པས། བྲམ་ཟེ་ན་སེ། ངེད་བྲམ་ཟེ་

1 'གདམས་ངག' - དེ་ཉི་ཤོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།

རྣམས་ཆང་དང་ཕག་གཉིས་མིང་ཡང་འདོན་མི་རུང་ན་འཁྲུང་དུ་གལ་རུང་།
 ཟེ་ར་པས། རྣལ་འབྱོར་པས་གདམས་པ་ལ་དགོས་ན་བྱིར་ལ་ཤོག་གསུངས་པས།
 བྲམ་ཟེ་སྐྱེས་པ། ཉིན་པར་མཚིར་མི་འཚལ་བས་མཚན་ལ་དེ་ལྟར་མཚིར་
 ཞེས་ཟེ་ར་ཏེ། བྲམ་ཟེ་དེས་རང་ཉགས་བསྐྱུར་ནས་ཚོང་དུས་སུ་ཕྱིན་ཏེ། ཆང་
 དང་ཕག་གཉིས་ནས་དུར་ཚོང་དུ་ཕྱིན་ནས་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་བྲངས་པས། རྣལ་
 འབྱོར་པས་³རང་གིས་ཀྱང་གསོལ། བྲམ་ཟེ་ལ་ཡང་བྱིན་ནས་བྱིན་ལྷབས་འཕོ་
 བའི་དབང་བསྐྱུར་མཛད་ཏེ། བྲམ་ཟེ་ལ་⁴མཚལ་འབྲུལ་དུ་བཅུག

བྲམ་ཟེ་དེའི་རིགས་ཀྱི་རྒྱལ་བཅག་པའི་དོན་དུ་ཕྱག་དར་བྱེད་དུ་

བཅུག་ནས་ལྷ་བའི་བདེ་བསྐྱེད་ལ། བཞུགས་དེར་ཞལ་ཞལ་བྱེད་དུ་བཅུག་ནས་⁵
 རྒྱུད་པའི་བདེ་བསྐྱེད། ཞལ་ཞལ་དེའི་ཁ་དོག་ནི་སྐྱོམ་པའི་བདེ་ཡིན། དེ་
 བསྐྱེད་གཅིག་དུ་གྱུར་པ་ནི་འབྲས་བུའི་བདེ་ཡིན་ཅོ། བསྐྱེད་པས།

གོང་གི་བདེ་དེ་རྣམས་ཀྱི་དོན་ཡང་ཉོགས། ལྷང་སྲིད་འཁྲུལ་པའི་རྣམ་
 འབྲུལ་དུ་ཤེས། རིགས་ཀྱི་རྣམ་ཉོག་ཐམས་ཅད་དོར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་ལ་ཞུགས་

1 'གདོན་པར' - བོ་ཉི་ཤོག 34 དེ་ཉིད། 185. Vol 87.
 2 'གདམས་པ' - བོ་ཉི་ཤོག 34 འོག་དེ་ཉིད།
 3 'འབྱོར་པ' - བོ་ཉི་ཤོག 34/བ.
 4 'བྲམ་ཟེ' - བོ་ཉི་ཤོག 34 དེ་ཉིད། བྲམ་ཟེར་རྒྱུལ་ཀྱུན 34/བ.
 5 'པས' - བོ་ཉི་ཤོག 34 དེ་ཉིད།
 6 'ནས' - རྒྱུལ་ཀྱུན་ཤོག 36/ན.

ཉི་བསྐྱོམས་པས། ལོ་དྲུག་ན་ཕུག་གྱུ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་
པ་སྐྱོད་པུ་ཞེས་སྟོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་སོ།། 1

འགྲོ་དོན་མཇུག་དེ་མཐར་འཁོར་ལྟ་བུ་དང་བཅས་ཉི་ལྷུས་དེ་ཉིད་
ཀྱིས་མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུར་སྐྱོད་པུའི་ལོ་རྒྱུས་རྗེས་སོ།། ॥

༣༥) གུར་དོམ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་

གུར་དོམ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་— དོམ་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་བསྐྱར་ན་གཉིས་

གཅིག་དུ་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་ལ།⁴ དེ་ཡང་ཡུལ་སྐྱེས་ལུ་ལུ་(གཞན་ལུ་)བྱ་བར་སྤང་
པོ་ཕུག་དར་ཁྲོད་བསྐྱེད་པའི་རིགས་ཡིན།⁵

དེས་ཉལ་དུ་གོས་རྩིང་པ་ཀུན་སྤྱད་ཤྲིན་ལེར་པར་བཅེམས་ནས་གྲོན་
པར་བྱེད་དོ།⁷ །དུས་གཅིག་མི་ཆེ་ལེར་པར་སྤངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞེས་གྲོན་

1 'གྲགས་ལ།' - ལྷུ་ཀུན་ འོག ༣༤/ན. པེ་ཉི ༣༥ འོག དེ་ཉིད།
 2 'བཅས་ལུས་དེ་...' - པེ་ཉི འོག ༣༥ དེ་ཉིད། ལྷུ་ཀུན་ ༣༤ དེ་ཉིད།
 3 'དྲིམ་རྒྱུ' - ཞེས་པ་དུམ་བྱ་གཉིས་ཅན་ཞེས་པར་བསྐྱར་ན་ལེགས།
 4 'ཞེས་བྱ་བ' - པེ་ཉི འོག ༣༥ འོག པེ་ཉི དང་ལྷུ་ཀུན་གཉིས་ཀར་ 'སྐྱེས་ལུ་' ཞེས་བྱ་དེ།
 5 'ཡིན་ལ' - པེ་ཉི འོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད།
 6 'བསྐྱེད་ཤིན' - པེ་ཉི ༣༥ འོག དེ་ཉིད།
 7 'གྲོན་པ་དང' - པེ་ཉི འོག ༣༥ འོག དེ་ཉིད། ལྷུ་ཀུན་ འོག ༣༤/ན. དེ་ཉིད།
 8 'དུས་གཅིག' - པེ་ཉི འོག མོགས་དེ་ཉིད།

ནས། དེ་ལ་ཁྱོད་དོན་མེད་པའི་རྒྱལ་བཟུལ་འདི་འདྲ་བས་ཅི་བྱེད། དེ་བས་
 ཚོས་མི་བྱེད་དམ། གསུངས་པས། དེ་ན་མེ་བདག་ལ་ཚོས་སུས་སྒྲེར་བཟུལ་
 རྒྱལ་འབྱོར་པས་ངས་སྤྱིན་གསུངས་ནས་བདེ་མཚོག་གི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་
 དབང་བསྐྱེད། བསྐྱེད་རྗེས་ཟུང་འཇུག་གི་གདམས་པ་ལ་བྱིན་ནས། (མི་
 དེས་)དེ་བསྐྱོམས་པས་གོས་འཚམ་པའི་རྟོག་པས་(གཤམ་བྱས་དེ་)སྐྱོམ་དུ་མ་
 འདོད་པ་དང་། དེ་ན་མེ། རྒྱལ་འབྱོར་པ་བདག་རྟོག་པས་གཡོངས་ནས་སྐྱོམ་དུ་
 མི་འདོད་པར་འདུག་ཞུས་པ་ལ། (རྒྱལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་) རྟོག་པ་ལམ་
 འབྱོར་གྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་སྟེ་—

ཚོས་རྒྱལ་མས་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ངང་།

འཚམ་དང་བཅམ་པར་བྱ་བ་མེད།

ལྷ་དང་སྐྱབས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ལོ།

གསུམ་རྒྱལ་མས་རྟོགས་པ་ཚོས་ཀྱི་དབྱིངས། ༡

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྐྱོམས་པ་ན། གོས་འཚམ་
 པའི་རྟོག་པ་དང་། ལྷ་དང་སྐྱབས་གསུམ་པོ་ཚོས་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་སྐྱོར་ནས།

- 1 'ཁྱོད་མེད་པའི་...' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༤ འོག དེ་ཉིད།
- 2 'གདམ་ངག' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ བོང དེ་ཉིད།
- 3 'ལྷ་བལ' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ བོང དེ་ཉིད། རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༣༧/ན. དེ་ཉིད།
- 4 'འཚམ' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ བོང 185. vol 87.
- 5 'གཤམ་གསུངས་...' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ བོང 185. vol 87.

བསྐྱེད་ཚོགས་ཟུང་འཇུག་གི་རྟོགས་པ་སྐྱེས་དེ། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་ཕུག་རྒྱ་ཆེན་
པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པོ།

དེ་ནས་འགྲོ་དོན་དཔག་མེད་མཇེད་དེ་མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གསེར་སོ།

གྲུབ་ཐོབ་ཀྱི་(རྒྱུ་མཚན་གྱི་) ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

༣༥) གྲུབ་ཚོགས་ལྡན་པའི་

གྲུབ་ཚོགས་ལོ་རྒྱུས་ནི། མཚོགས་བྱ་བ་ལེ་ལོ་ཅན་ནོ། །དེ་ཡང་

ཡུལ་པའལི་ཡུའ་བྱ་བ་ན།³ བྱིས་བདག་གཅིག་གི་བྱ་ཞིག་གཤམ་གྱི་ཆེ་ནས་སྤྱོད་
ལམ་རྣམ་པ་བཞི་གང་བྱེད་ཀྱང་ཉལ་ནས་བྱེད་པ་ཞིག་⁴ཡོད་པ་ལ།⁵ ས་མ་དང་
ཉི་དུ་ལྷན་འདྲི་འདྲ་བའི་བུས་ཅི་བ་དུ་བཅས་བསྐྱེད་བྱེད་ཅིང་དུར་ཁྲོད་དུ་
བསྐྱེད་པའི་⁷ནས། དེས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཉལ་ནས་བསྐྱེད།⁸

1 'མ་དཔེ་རྣམས་སུ 'རྒྱུ་མཚན་གྱི་' - ཞེས་འདུག དོན་ཡང་ “གཉིས་གཅིག་དུ་བྱེད་པ་”
ཞེས་བསྐྱེད་འདུག་ཀྱང་། དོན་དངོས་ནི་ ‘དྲིམ་རྒྱུ་ལྡན་’ ཞེས་པ་དང་། ཐོབ་སྐྱེད་ལ་ ‘གཉིས་
ཅན་ཞེས་’ ཞེས་པ་ཉིད་ཡིན།

2 ‘མཚོགས་ཞེས་པ་ཟུར་ཆགས་ལྟེ་’ ཡིག་སྐྱེད་ལ - ‘མཚོགས་’ ཞེས་པ་ཉིད་ཡིན།

3 ‘བྱ་བར’ - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ བོག་ ༣༥/བ. 52. 14.

4 ‘ཅིག་ཡོད་པ་ལས་’ - བོ་ཉི་ བོག་ ༣༥ བོང་ དེ་ཉིད། ལྷུ་བ་ཀྱུན་ བོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།

5 ‘ཅིག་ཡོད་པ་ལས་’ - བོ་ཉི་ བོག་ ༣༥ བོང་ དེ་ཉིད། ལྷུ་བ་ཀྱུན་ བོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།

6 ‘ཉི་དུང་ཀྱང་’ - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ བོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།

7 ‘སྐྱེད་ནས་’ - བོ་ཉི་ བོག་ ༣༥ བོང་ དེ་ཉིད།

8 ‘བསྐྱེད་པ་དང་’ - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ བོག་ ༣༥/བ. དེ་ཉིད།

དེ་རྒྱལ་འབྲོར་པ་ཞིག་ཕྱོད་ནས་དེས་དེ་མཐོང་བ་ན། སྤྱིང་ཇི་སྤྱེས་
 ཅས། མོང་ཁྱིར་ནས་བཟའ་བདུང་སྤངས་ཏེ་དེ་ལ་བྱིན་པ་དང་། དེས་ཟས་ཟ་
 བ་ལའང་མི་ལངས་པར་མཐོང་ནས། རྒྱལ་འབྲོར་པ་དེས་དེ་ལ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཟས་
 ཟ་བ་ལའང་མི་ལངས་པར་འདུག་ན་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་ཅི་ལྟས་བྱས་པས། དེ་
 ཅ་ལ། ཅི་ཡང་མ་ལྟས་པས་བདག་པ་མས་སྤངས་པ་ཡིན་ཟེས། རྒྱལ་(འབྲོར་
 པས་དེ་ལ་)འོ་ན་ཉལ་བྱིན་ཚོས་སྐྱབ་ལྟས་སམ། བྱས་པས། དེ་ཅ་ལ། ལྟས་ཏེ་
 བདག་འདྲ་བ་ལ་ཚོས་སྐྱས་སྤྱེས། ཟེས་ལོ། །

རྒྱལ་འབྲོར་པས་ངས་སྤྱིན་གསུངས་ཏེ། དབྱེས་དོར་(གྱི་དཀྱིལ་
 འཁོར་)དུ་དབང་བསྐྱུས། མི་ཟབ་པའི་ཇོགས་པའི་རིམ་པ་བདམས་ངག་དུ་བྱིན་
 ཅས་སྤོང་སྤོང་ལེ་ཅེས་ཐོག་ལེ་ཉུངས་ཀར་གྱི་འབྲུ་ཙམ་གྱི་ནང་དུ་སྤོང་གསུམ་
 འདུས་པར་སྤོམས་གིག་བྱས་པས། དེ་ཅ་ལ་དེ་ལ་ཉལས་ཅི་ལྟ་བུ་འབྲུང་བ་
 ལགས། ཟེས་བཤམ། (རྒྱལ་འབྲོར་པས་)བསྤོམས་ཙུ་ལེས་ཡོང་གི་གསུངས།⁵

(དེ་)ནས་དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྤོམས་པས། ཡུངས་ཀར་དང་སྤོང་

1 'སྤངས་ནས་' བེ་ཉི་ བོག 36 བོང་ དེ་ཉིད།
 2 'ཟ་བ་ལ་མི་ལངས་' - བེ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།
 3 'གསུངས་ནས་' - སྐྱབ་ཀྱུན་ བོག 36/བ. 52.
 4 'ཡུངས་ཀར་' - བེ་ཉི་ བོག 36 འོག 185. vol 87.
 5 'སྤོམས་ཙུ་ལེས་ཡོང་གི་གསུངས་པས།' - བེ་ཉི་ བོག 36 འོག དེ་ཉིད།
 6 'ཉུངས་ཀར་' - སྐྱབ་ཀྱུན་ བོག 36/བ. དེ་ཉིད།

གསུམ་གྱི་དམིགས་པ་སྤོང་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་སྒྲོར་ནས་སྤོང་ཉིད་ཕུག་ཆུ་ཆེན་པོའི་
རྟོགས་པ་རྒྱུད་ལ་འབྲུངས་སོ།།

དེས་ལོ་དགུར་བསྐྱམས་པས་ཕུག་ཆུ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་
འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཇུག་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཨེྲིགའི་ལོ་རྒྱུས་ཇོགས་སོ།། ॥

༣༧) གུ་རུ་ཀལཔ།

གུ་རུ་ཀལཔའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀལཔ་ཞེས་པ་འབརྒྱུར་ན་སྒྲོན་པ་ཞེས་བྱའོ།༡
དེའི་ཡུལ་ནི་རྒྱུ་ཡིན༢། ལྷ་མ་ནི་རྒྱུད་ལེགས་པར་སྤྲངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་
པ་ཞེས་ཡིན༣༤

ཀལཔ་ནི་ཆེ་སྲ་མ་བཟོད་པ་བསྐྱམས་པའི་འབྲས་བུ་གཟུགས་བྱུང་གིན་
དུ་མཚར་བ་ཞེས་ཡོད་ལ། རྒྱུ་ཡི་སྤྱོད་པོ་ཀུན་དེ་ལ་ལྷ་ཞིང་འབྲངས་པས༤
དེ་དེས་སྒྲོ་ནས་དུར་ཁྲོད་ཞེས་དུ་འདུག་ནས་ཡོད་པ་ལ། ལེགས་པར་སྤྲངས་པའི་

1 ‘ཀལཔ་སྤྱོད་’ - ལྷུ་ཀུན་ ༣༤/བ. དེ་ཉིད།
2 ‘ཀལཔ་ཞེས་པ་འབརྒྱུར་ན་སྒྲོན་པ་ཞེས་བྱའོ།།’ - ཞེས་པའི་ཚིག་འདི་ ‘པེ་ཉི་དཔར་མར་མི་འདུག་
ཤོག ༣༩ འོག 186. vol 87.
3 ‘ཡུལ་ནི་རྒྱུ་ཡིན།’ - པེ་ཉི་ཤོག ༣༩ དེ་ཉིད།
4 ‘ཅིག་ཡིན་ལ།’ - པེ་ཉི་ཤོག ༣༩ འོག 185. vol 87.
5 ‘འབྲང་བལ’ - ལྷུ་ཀུན་ ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད། ‘འབྲང་བས’ - པེ་ཉི་ཤོག ༣༩ འོག

ནལ་འབྱོར་པ་ཞིག་འདིར་བྱོན་ནས་ཁྱོད་དུ་རྒྱོད་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་
པས།

(མི་)དེ་ན་ཤེ། བདག་མི་ཀུན་གྱིས་འདུག་དུ་མ་སྟེར་ནས་འདིར་འདུག་
གིན་གདའ་ཞུས་པས།² (ནལ་འབྱོར་) པས་འོ་ན་ཁྱོད་ལ་ཚོས་མི་དགོས་སམ།
གསུངས་པས། (དེ་ན་ཤེ།) ཚོས་དགོས་ཏེ་བདག་ལ་སུས་སྟེར་ཟེཤ། ནལ་
འབྱོར་པ་དེས། ཁྱོད་ལ་ཚོས་དགོས་ནངས་སྦྱིན་གྱིས་གསུངས་ནས། བདེ་
མཚོག་(གི་དགྱིལ་འཁོར་)དུ་དབང་བསྐྱུལ། བསྐྱེད་ཚོགས་ཀྱི་དོན་སྟོམ་དུ་བཅུག་
པས། དེས་བསྐྱེད་ཚོགས་ཟུང་འཇུག་དུ་རྟོགས་པའི་ནང་དུ་བདག་གཞན་གཉིས་
སུ་དམིཎ་པ་སྟོར་ནས་གུར་འབྲུང་ལྷུག་པའི་སྦྱོད་པ་སྦྱད་པས། རྒྱུ་ལྷུ་འཛིན་མི་
ཀུན་ན་ཤེ། སྦྱོན་པ་ཅིག་འདུག་ཟེར་བ་ལ། དེས་གསུངས་པ་—

བདག་དུ་བརྒྱུང་བས་⁴གཞན་སྤང་སྟེ།

གཉིས་ཀྱིས་རང་བཞིན་སྐྱུག་པར་བྱས།

མཁས་པས་དེ་ལྟར་མཁྱེན་པ་ན།

ནམ་པར་རྟོག་པའི་ལྷ་ཚོགས་དང་། །

ཡི་གེ་ཨ་ཡ་ནང་ཉིད་དུ།

མཁའ་ལ་འཇའ་ནི་ཡལ་བ་ལྟར།

1 'པ་ཅིག' - ཐུབ་ཀུན་ འོག 30 དེ་ཉིད། ཤི་ཉི འོག 30 དེ་ཉིད།
2 'ཟེར་རོ' - ཐུབ་ཀུན་ འོག 30 དེ་ཉིད། ཤི་ཉི འོག དེ་ཉིད།
3 'བྱིན་གྱིས' - ཤི་ཉི, འོག དེ་ཉིད།
4 'གསུང་པ' - ཤི་ཉི, འོག དེ་ཉིད། ཐུབ་ཀུན་ འོག དེ་ཉིད།

སྐྱེ་དང་འགག་པ་གནས་པ་གསུམ།

སྐྱོན་པ་བདག་གིས་མ་སྤྱད་པས། ३

གཉིས་མེད་ཤུགས་འབྱུང་སྤྱོད་པ་བདེ།

གསལ་ལ་མ་འགགས་རྟོགས་པ་བདེ།

ཚོགས་དྲུག་མ་འགགས་སྐྱོམ་པ་བདེ།

ཚོལ་སྐྱབ་མེད་པའི་འབྲས་བུ་བདེ། ३

ཞེས་གསུངས་ནས་དྲུལ་བདུན་ཙམ་གྱི་ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས་ཚོ་
འཕྲུལ་སྐྱ་ཚོགས་བསྟན་ལོ།¹

དེ་མན་ཆད་སྲ་མ་ཀལ་ཕུ་ཞེས་གྲུ་ལ། མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེར་སོ།

གུརུཀལཔུའི་ལོ་རྒྱུས་རྩོགས་སོ། ॥

1. 'བསྟན་ནས' - སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག ३༥ པེ་ཉི, ཤོག ३༠ ཤོང་དེ་ཉིད།

འཛིན་གསུམ་ །གྱིས་བྱིན་གྱིས་བཟུངས་ནས་གདམས་པ་ལྟར་བྱིན།

དེས་བསྐྱོམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་ཕྱག་རྒྱས་ལུས་ཀྱི་དྲི་མ་དག
ལྟར་གྱིས་ངག་གི་དྲི་མ་དག །དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་གོ།³
གདམས་ངག་ནི།⁴

འབར་བའི་ཕྱག་རྒྱའི་ཚུ་ཡིས་ནི།
ལུས་ཀྱི་དྲི་མ་འབྱུང་པ་ཡིན།
ཞུའི་ཀུའི་ཚུ་ཡིས་ནི།
ངག་གི་དྲི་མ་འབྱུང་པ་ཡིན། །

དཔའ་བོ་ཡབ་ཡུམ་སྦྱོར་བ་ཡིས།
སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དྲུང་འབྱིན་དོ།³

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་དུ། ལུས་ཕྱག་རྒྱ་ངག་བཟུངས་པ་སེམས་བསྐྱེད་
རྗེས་དང་མ་བུལ་བར་བསྐྱོམས་པས། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་གྱི་དྲི་མ་དག་སྟེ།
ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ། (ཚུ་ལ་) གོས་དྲི་མ་

1 'ལྷགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་' - ལྷུ་ཀུན་ འོག 30/བ ལྷགས་ཕྱག་དྲིང་ངེ་འཛིན།
ཤི་ཉི འོག 30 འོང དེ་ཉིད།
2 'གདམས་ངག་' - ཤི་ཉི འོག དེ་ཉིད།
3 'དག་ནས་' - ལྷུ་ཀུན་ འོག 30/བ. དེ་ཉིད། ཤི་ཉི འོག དེ་ཉིད།
4 'གདམས་ངག་བྱ་བ་ནི།' - ལྷུ་ཀུན་ 30/བ. གདམས་ངག་དོ་བོ་ནི ཤི་ཉི འོག དེ་ཉིད།

ཅན་བཏང་བ་བཀྲ་མི་དགོས་པར་རང་དག་དུ་འགྲོ་བ་ཀུན་གྱིས་མཐོང་བས།
ཡོན་ཏན་ཐོབ་པར་གཟོད་རྟོག་ལ། རྫོགས་ཤིང་ཞེས་སྤོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲུབ་སོ།།

གྲུབ་རྫོགས་ཤིང་ཞེས་སྤོགས་སོ།། ॥

༣༩) གྲུབ་ཀྱི་ཀུན་ལྡན་པ།

གྲུབ་ཀྱི་ཀུན་ལྡན་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་མི་རྒྱུ་ནག་པ།² (རིགས་རྒྱལ་
རིགས།) (ཡུལ་དེ་) རྒྱལ་པོ་གཅིག་ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཡུན་སུམ་ཆོགས་ཤིང་།
འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་བྲེལ་བ་མེད་པ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་གནས་པའི་ཆེ།
དེའི་གམ་³དུ་ལེགས་པར་སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་⁴ཕྱོག་ནས་བསོད་
སྤོམས་བསྐྱངས་⁵པས། རྒྱལ་པོས་བཟུང་བ་དང་། བཅའ་བ་གྲུ་ཚོམ་པ་བྱངས་
ནས། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་གསུངས་པ།

1 གྲུབ་ཤིང་། - རྒྱལ་ཀུན་ ༣༩/བ. པེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད།
2 'ནག་པ་བྲུ་ནག' - རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ ༣༧/བ. པེ་ཉི་ འོག་ ༣༠ འོག་ དེ་ཉིད།
3 'གན་དུ' - རྒྱལ་ཀུན་ ༣༧ 54. 14.
4 པ་ཅིག་ རྒྱལ་ཀུན་ འོག་ དེ་ཉིད།
5 'སྐྱངས་' - པེ་ཉི་ འོག་ ༣༠ འོག་ 186. Vol 87

“རྒྱལ་པོ། རྒྱལ་སྲིད་ལ་སྲིད་པོ་མེད་ཅིང་། སྲིད་པར་སོང་བ་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བསྐྱལ་བ་ཡིན་ཏེ།¹ རྒྱ་གཞི་ན་²འཛི་མོ་ཆུན་ལྟར་འཁོར་བ་ཡིན་ཞིང་།³ བྱི་བྲག་གི་སྐྱབ་བསྐྱལ་བ་མེད་པ་མེད་ལ།⁴ མཐོ་རིས་ཀྱི་བདེ་བའང་འགྱུར་བའི་སྐྱབ་བསྐྱལ་ཡིན། ལྷོང་འཁོར་ལོས་བསྐྱུར་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡང་ངན་སོང་དུ་ལྷུང་⁵བ་ཡོད་ན། འདོད་ཡོན་སྐྱབ་བྱེད་ཟེལ་པ་དང་འདྲ་བ་ལ་མ་ཆགས་པར་རྒྱལ་པོ་ཚོས་མཛོད་ཅིག”གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་ལེ།

“འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་མ་སྤངས་པར་ཚོས་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་ཚོས་བབྱེད་ཀྱི། དེ་མ་ཡིན་པར་གོས་ཚེ་མ་བུ་ཅན་དང་། ཟས་བསོད་སྦྱོམས་ཀྱིས་བདག་འཛོ་མི་རུས་སོ།།” ཞེས་སྒྲུས་པ་དང་། རྒྱལ་འབྱོར་པ་དེས་སྒྲུས་པ་“གོས་ཚེ་མ་བུ་དང་། ཟས་བསོད་སྦྱོམས་ནི་མཚོག་ཡིན་པས། ཉིད་ཀྱང་དེ་འདྲ་བ་ལ་བསྐྱེན་དཔོན་སོ།།” ཞེས་སྒྲུས་པ་ན་རྒྱལ་པོ་ན་ལེ།

1 ‘ཡིན་སྟེ།’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘རྒྱ་གཞི་’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 3 ‘ཅིང་’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘མེད་པ་ལ།’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 5 ‘འགྱུར་བ་འགྱུར་བའང་།’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད། ལྷུང་བའི་ - ལྷུང་གུན་ ༣༧ །
 6 ‘ལྷུང་བ་’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 7 ‘རྒྱུ་བྱེད་པོས་’ དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 8 ‘ཐོས་སྒྲུས་པ་ན།’ - དེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།

གོས་ཆེས་ལྷ་ཅན་སྐྱུག་པོ། ཁ་ཐོར་ཐོད་པ་དང་། ཟས་ལྷག་རོལ་སྐྱུག་པོ་
བས། འདི་བདག་གིས་མི་རྣམས་སོ་ཞེས་ཞུས་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་སྐྱེས་
པ་—

“ཁྱོད་ཀྱི་དེ་འདྲ་བའི་ང་རྒྱལ་དང་། རྒྱལ་སྲིད་བྱེད་པ་ནི་མཐར་འཇག་
སོང་གི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ཉམས་སུ་སྤོང་བར་འགྱུར་བ་ཡིན་ལ། ངས་གོས་ཆེས་ལྷ་
(ཅན) དང་། ཟས་ལྷག་རོལ་དང་། ལྗོད་ཐོད་པ་ཁྲུ་ཡང་འབྲས་ལྷ་ཟག་པ་
མེད་པའི་བདེ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་པས། འོ་སྐྱེལ་(གྱི་) རྒྱལ་སྲིད་ཁྱེད་པར་ཆེ་བ་
ཡིན།” སྐྱེས་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ། “འོ་ན་ཀྱང་འདྲོད་ཡོན་མ་སྤངས་པར་ཚོས་སྐྱུབ་
པའི་ཐབས་(ང་)ལ་ཡོད་ཀྱི་” བསྐྱེད་པས། རྒྱལ་པོ་ན་མེ། “འོ་ན་བདག་
ཚོས་བཞུད་ལགས་པས་” བཞུད་དགོས་ཞུས་པ་ལ།

རྣལ་འབྱོར་པས་གདམས་པ། “རྒྱལ་པོ་རང་གི་ལག་གི་གདུ་བུ་རིན་པོ་
ཆེ་འབར་བ་ལ་ཞེན་པ་དང་། ང་རྒྱལ་སྐྱོས་ཐོང་ལ་རིན་པོ་ཆེའི་འོད་དང་ཞེན་པ་
མེད་པའི་སེམས་གཉིས་གཅིག་དུ་གྱིས་ལ་སྐྱོམས་ཤིག་”ཅེས་གདམས་ངག་བྱིན་
ཏེ།³

གདུ་བུ་འོད་ཟེར་ལེགས་འཕྲོ་བ།
སྐྱོས་ཤིག་རང་སེམས་ཉིད་ཀྱང་བདེ།

1 ‘ཡིན་ལ།’ - རྒྱུབ་ཀྱན་ ཤོག 34/ན. 55. 14.
2 ‘བསྐྱོམས་ཤིག’ - དེ་ཉི ཤོག 32 ཞོང་དེ་ཉིད།
3 ‘བྱིན་ནས’ - རྒྱུབ་ཀྱན་ ཤོག 34/ན. དེ་ཉིད།

སྤྱི་ཡི་རྒྱུན་སོགས་དུ་མ་ཡིས། ।

ཁ་དོག་དུ་མ་འབྱུང་འབྱུར་ཡང་། ༡

དེ་ཡི་རང་བཞིན་འབྱུར་བ་མིང།

དེ་བཞིན་སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་ཡིས།

བྲན་རྟོག་དུ་མ་འབྱུང་འབྱུར་ཡང་།

སེམས་ཉིད་རིན་ཆེན་འབར་བ་བཞིན། ༢

ཞེས་གསུངས་པ་ན། དེ་བཞིན་དུ་རྒྱལ་པོས་ཕྱག་གཡས་པའི་གདུ་བུ་ལ་སེམས་
གདང་ནས་བསྐྱེད་པ་ལས་འདོད་ཡོན་གྱི་སྤང་དུ་སེམས་ཉིད་དོ་འབྲོད་²ནས་
ཟླ་བ་དྲུག་ན་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་³སྟེ་ཡོད་པའི་ཆེ། རང་གི་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་སྐྱོ་
གསེང་⁴ནས་བལྟས་པས། ལྷའི་བུ་མོ་དཔག་དུ་མིང་པས་བསྐྱོར་བར་མཐོང་ནས་
དོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། གདམས་པ་⁵ལྷུས་པས། དེའི་ཞལ་ནས་—

སེམས་ཉིད་རྟོགས་པ་རྒྱལ་པོ་ཡིན།

བདེ་བ་ཆེན་པོ་རྒྱལ་སྲིད་ཡིན།

བྱང་དུ་འཇུག་པ་ལོངས་སྤྱོད་མཚོགས།

རྒྱལ་པོ་དགོས་ན་དེ་ལྟར་གྱིས། ༣

1 'སྐྱེས་པས' - དེ་ཉི, བོག ༡༡ བོང་དེ་ཉིད།
 2 'དོ་འབྲོད' - ལྷུ་བཀྱུན་ ༣༤/བ. དེ་ཉིད།
 3 'ཐོབ་ཏེ།' - དེ་ཉི, བོག ༡༡ བོང་དེ་ཉིད།
 4 'སྐྱོ་སེང' - དེ་ཉི, བོག དེ་ཉིད།
 5 'གདམས་པ་ལྷུས' - ལྷུ་བཀྱུན་ བོག ༣༤/བ.

རྒྱལ་བུ་དེས་རྒྱལ་སྲིད་བཟུང་། རྣམ་ལྷན་བ་དུག་²གི་བར་དུ་ཡུམ་དང་མ་
 འཕྲད་ན།³ དེར་ངའི་མ་གར་སོང་། འདིར་མི་འོང་བ་ཅི། ཞེས་སྐྱེས་པས།
 [འཁོར་གཞན་རྣམས་ཀྱིས་] ཡབ་ཀྱི་མྱ་ངན་བྱིད་པས་འདིར་མ་གཤེགས་སོ་ཟེར་
 རོ། །དེ་ནས་ལོ་གཅིག་ལོན་པ་དང་། མ་དེར་འོངས་⁴ནས་དུས་པས། དེར་
 [བུས་]ཡུམ་ཅི་ལ་བཤུམ། བྱས་པས། (མས) ང་ལྟོད་རིན་པོ་ཆེའི་སྲི་ལ་འདུག་
 ཅིང་རྒྱལ་སྲིད་བྱིད་པ་ལ་མ་དགའ་ནས་དུས་པ་ཡིན་ཟེར་བས། རྒྱལ་བུས་མ་ལ་
 ལྷས་པ—

“ཡུམ་མི་དགེས་ན་རུ་བོ་ལ་⁵རྒྱལ་སྲིད་འཛིན་དུ་བཅུག་ནས།
 བདག་རབ་དུ་བྱུང་བ་བཟྱིད་ལགས་སམ། ལྷས་པས།” (མས)དེ་རུང་ཟེར།
 དེ་ནས་གཟུང་ལ་རྒྱལ་སྲིད་གཏད་དེ་རབ་དུ་བྱུང་།⁸ འཁོར་དག་སློང་སུམ་བརྒྱ
 དང་བཅས་དེ་གཟུག་ལག་ཁང་ཞིག་དུ་བཞུགས་པ་ན། དེར་མ་འོངས་ནས་ཡང་
 དུས་པ་དང་། སྐས་ཀྱིས་དེ་ལ་ཕྱག་བྱས་དེ། ཡུམ་ཅི་ལ་བཤུམ། བྱས་པས།

1 ‘གཟུང་ནས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༡ འོག
 2 ‘ལྷ་དུག’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༡ འོག
 3 ‘མ་འཕྲད་ནས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད།
 4 ‘འོང་ནས’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༤/བ. དེ་ཉིད།
 5 ‘རུ་བོ་རྒྱལ་སྲིད’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༣༤/བ. 56. 14.
 6 ‘རབ་དུ་འབྱུང་བར’ - དཔེ་ ཤོག ༣༡ འོག 186 . 87.
 7 ‘ཅུང་ལ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༡ འོག དེ་ཉིད།
 8 ‘རབ་དུ་བྱུང་བུས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༡ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ ༣༤ དེ་ཉིད།

མས་ཁྲོད་རབ་དུ་བྱུང་ཡང་རྒྱལ་པོའི་ཚུལ་ལྟར་འཁོར་དང་འདུ་འཛིན་ནང་དུ་
བཞུགས་པ་འདིས་མ་དགའ་བ་ཡིན་ཞེས་སྒྲུས་པ་དང་། སྲས་ཀྱིས་འོ་ན་ཅི་ཅུག་
བགྱི། ཞེས་ཞུས་པས།

མས་དགོན་པར་འདུ་འཛིན་སྤོངས་ལ་འདུག་ཅིག་ཟེར་བས། དེས་གཙུག་
ལག་ཁང་སྤངས་ནས་དགོན་པར་གོང་དུ་ཞེས་ཡིག་ཡིག་ཅུར་འདུག་པ་དང་། དེར་
ཡང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ལས་འཕྲོས་བྲེལ་བ་མེད་པར་གྱུར་
པ་དང་། ཡང་(དེར་)ཡུམ་བྱོན་ནས་དུས་པས། སྲས་ཀྱིས་ཡུམ་ལ་ཕྱག་བྱས་
ཏེ། ཅི་ཅུག་བགྱི། ཞུས་པས། མ་ན་རེ—

‘རབ་དུ་བྱུང་བ་ལ་འཚོ་བའི་ཡོ་བྱད་དོན་མེད་པ་བཅངས་ནས་ཅི་བྱེད།’
ཟེར་རོ། དེ་ནས་དེས་ཚོས་གོས་དང་སྤྱང་བཟེད་ལ་སོཾ་པ་ཀུན་བོར་ནས།
རྒྱལ་འབྱོར་པའི་ཆ་ལྟར་སུ་བྱས་ཏེ་ཡུལ་ཁམས་གཞན་དུ་ཕྱིན་པ་ན། དེའི་
མ་མཁའ་འཕྲོ་མ་ཡིན་པས་ལམ་བར་དུ་སྲས་ལ་བདེ་མཚོག་(གི་དཀྱིལ་འཁོར་)
དུ་དབང་བསྐྱར་ནས་ཚོས་བཤད་པས། སྲས་དུར་ཁྲོད་དུ་ཐལ་བའི་ནང་དུ་ཉལ་
གྱིན་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྐྱབས་པས། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ་

1 ‘འདིའི་མ་དགའ’ - བཅི་ཤོག་ ༣༡ དེ་ཉིད།
2 ‘ཅིག་གི’ - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༣༧/ན. 57 དེ་ཉིད། བཅི་ཤོག་ ༣༡ དེ་ཉིད།
3 ‘བྱས་ནས’ - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༣༧ དེ་ཉིད། བཅི་ཤོག་ ༣༡ དེ་ཉིད།
4 ‘དེའི་ཡུམ’ - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག་ ༣༧ དེ་ཉིད། བཅི་ཤོག་ དེ་ཉིད།

ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱིན་པ་དང་། ཡུམ་རྒྱལ་མ་མང་པོ་དང་ལྷན་ཅིག་ནམ་མཁའ་ལ་
འོངས་ནས་སྤྲུལ་ལ་སྤྲུལ་པ་—

“ཁྱོད་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མི་བྱེད་པར་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་ལ་ངོ་
མཚར་ཆེ་རྒྱ་ཅི་ཡོད། དེ་འདྲ་བུ་དང་འདྲ་བ་ཡིན་པས་ད་འགྲོ་དོན་གྱི་གིག་
གསུངས།”

སྤྲུལ་གྱི་རྒྱུ་ཕྱིན་པ་ལོ་རྒྱུན་གྱི་²ཡུལ་སྐྱལ་པུར་བུ་བ་ན་གྲོང་བྱིར་འབུམ་
ཚོ་སྤྱིད་དང་གསུམ་ཡོད་པར་སྤྱིན་པ་དང་། དེ་ན་³ཡུལ་ཀར་སྤྱིར་⁴ཞེས་བུ་བ་ན་
བྲག་⁵པན་ལྷ་ཞེས་བུ་བའི་དགོན་པ་ན་ཏལ་ཅེ་⁶ལྷུག་བུ་བའི་ལྷུག་པ་ཡོད་པར་
བཞུགས་ནས་སྤྲུབ་པ་བྱས་པས་སྤྲ་མེན་མ་ཀུན་གྱིས་ཚོར་ནས། སྤྲ་མེན་མ་
གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་སྤྲུན་པ་དང་། སྤྲ་མེན་གྱི་གཙོ་མོ་པརྒྱ་དེ་མི་བུ་བ་འཁོར་
དང་བཅས་ཉེ་བར་ཆད་ལ་འོངས་པ་དང་། སྤྲ་བ་དཔོན་ལྷ་བ་ནག་པོ་ཞིག་⁷སྤྱོད་
ནས་གྲོང་བྱིར་དུ་བསོད་སྤོམས་ལ་བྱོན་པའི་ལམ་དུ་སྤྲ་མེན་མའི་བུ་མོ་ཚན་⁸

1 ‘གསུངས་པས’ - ལྷུབ་ཀུན་ འོག 30/ན. 57 བེ་ཉི འོག 33 བོང་ དེ་ཉིད།
2 ‘ལོ་རྒྱུན་གྱི་སྐྱལ་པུར’ - བེ་ཉི འོག 33 དེ་ཉིད།
3 ‘དེ་ལ་ཡུལ་ཀར་སྤྱིར’ - ལྷུབ་ཀུན་ འོག 30 ན དེ་ཉིད།
4 ‘ཀར་བེར’ - བེ་ཉི, 33 བོང་
5 ‘པན་ལྷ’ - བེ་ཉི འོག 33 བོང་། ‘བྲག’ ཞེས་པ་འདིར་མི་སྤྲང་།
6 ‘ཏལ་ཙ’ - བེ་ཉི འོག 33 བོང་ དེ་ཉིད།
7 ‘ནག་པོ་ཅིག’ - ལྷུབ་ཀུན་ འོག 30/ན. དེ་ཉིད། ནག་པོ་གཅིག་ བེ་ཉི འོག 33
8 ‘མཚན་གཅིག’ - བེ་ཉི འོག 33 དེ་ཉིད།

གཅིག་དང་ཕྱད་ནས། (དེ་རྣམས་ཀྱིས་སློབ་དཔོན་ལ) རྒྱུ་ལ་བདག་ཅག་
བཞེས་པ་འདྲིན་པས། དེ་ད་ཀྱི་བྱིས་དུ་གཤེགས་པར་ཞུ་བའི་སློབ་དཔོན་
བྱིས་བདག་བྱིས་གཅིག་ནས་མི་ཟ་བསོད་རྩོམས་བྱེད་པ་ཡིན་གསུངས་ནས།
པརྱ་དེ་མི་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྷུ་ལྷ་བཅོལ་ནས་བྱོན་ནོ།།

སྤ་མེན་མ་ཚན་པ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་བློས་ཕྱུས་ཏེ། རྗེས་ལ་རུས་པ་ཡོད་
པ་ཡིན་པས་འདི་ལྷ་བ་བཟུང་དགོས་ཟེར་ན་ཟོས། ལྷག་མ་མེ་ལ་བསྐྱེགས་པ་
དང་། སློབ་དཔོན་ལོག་ནས་འོངས་ཏེ། སྤ་མེན་མ་རྒྱུ་ལ་ངའི་ལྷ་བ་བཅོལ་བ་
བྱིན་ཅིག་གསུངས་ནས། སྤ་མེན་མས་ལྷ་བ་གཞན་ཞིག་བྱིན་པ་དང་། ང་རང་
གི་ལྷ་བ་དགོས་གསུངས་ནས།⁴ སྤ་མེན་མས་གསེར་ལ་སོགས་པའི་བསྐྱེས་མ་
གཏད་ཀྱང་མ་བཞེས།

སློབ་དཔོན་བྱིས་རྒྱལ་པོའི་གམ་དུ་བྱོན་ནས་འདི་སྐད་དུ། “འོ་རྒྱལ་
པོ་ཡིན་ན་ཚོ་མ་རྒྱུ་ལ་སོགས་པ་མི་སྲུང་བ་ཅི་ཡིན།” གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་
ན་པེ། ཚོ་མ་རྒྱུ་བྱིས་སུ་བཅོལ། ཟེར་བ་ལ། སློབ་དཔོན་བྱིས་འོ་རྒྱལ་པོ་སྤ་མེན་

1 ‘བྱོན་པས’ - ལྷུ་རྒྱུ་གོག་ ༣༧/བ. པེ་ཉི་གོག་ ༣༡ བོང་།
2 ‘བློས་ཕྱུས’ - པེ་ཉི་གོག་ ༣༣ དེ་ཉིད།
3 ‘བྱིན་པ་ན’ པེ་ཉི་གོག་ དེ་ཉིད།
4 ‘གསུངས་པས’ - ལྷུ་རྒྱུ་གོག་ ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཉི་གོག་ ༣༡ དེ་ཉིད།

མ་ཀུན་གྱིས་ངའི་ལྷ་བ་བྱིར་ཟེར་བ་ལ། རྒྱལ་པོས་སྤྱ་མེན་མ་ཀུན་བཀུག་ནས་
རྣལ་འབྱོར་བའི་ལྷ་བ་བྱིན་ཅིག་བྱས་ཀྱང་། བདག་ལ་མེད་ཟེར་ནས་མ་བྱིན།

སློབ་དཔོན་ཉལ་ཚེ་སྤུག་དུ་བྱིན་ནས་སྐྱུབ་པ་བྱས། ཁྲོ་པོ་བཅུ་ལ་གཏོར་
མ་བཏང་བ་དང་༢ སྤྱ་མེན་མ་དུ་མ་གཅིག་གིས་སྤུག་གི་ཚུ་རྒྱམས་པར་བྱས་པ་
ན།³ སློབ་དཔོན་གྱིས་སའི་ལྷ་མོ་ལ་ཚུ་⁴ཐོན་ཅིག་གསུངས་པས་ཚུ་བྱུང་ངོ་།

དེ་ནས་སྤྱ་མེན་མ་ཀུན་འདུས་ཏེ་གླིང་བཞི་རི་རབ་དང་བཅས་པ་ན་
གནས་པའི་སྤྱ་མེན་མ་ཀུན་(ལ)སྐྱས་པས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་འོངས་པ་དང་།
སློབ་དཔོན་གྱིས་ཐམས་ཅད་ལུག་དུ་བྱས་ཏེ་བོར་བས། རྒྱལ་མོ་ལ་⁵སོགས་པ་
ཀུན་(ཀྱང)ལུག་དུ་སོང་བས། ཉལ་ས་ཏེ། སློབ་དཔོན་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་
པ་དང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་ལུག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མགོའི་སྐྱ་བྲིགས་ནས་བཏང་བས།
བྱུང་མེད་ཐམས་ཅད་སྐྱ་བྲིགས་པ་གསལ་དུ་སོང་ནས་དུ་ཡིན་འདུག་གོ །

ཡང་དེ་ཉིད་དུ་བཞུགས་པ་ལ་འདོད་ཁམས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བྲག་
བཅད་དེ་བཀྲོང་བར་བྱས་པ་ལ། ཡར་ལ་སྐྱིགས་མཚུབ་མཚུང་པས་བྲག་རྣམ་
མཁའ་ལ་ཡི་རོ་ཆགས་པ་ད་དུང་ཡང་ཡོད་དོ།

1 'མ་བྱིན་པ་དང་།' - རྒྱུབ་ཀུན་ འོག 30/བ 58 བེ་ཉི འོག 33 འོག
2 'མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་གཏོར་མ་བཏང་བ་དང་།' - བེ་ཉི འོག 33 འོག 186. Vol 87
3 'ཚུ་རྒྱམས་པ་ན།' - བེ་ཉི འོག 33 འོག དེ་ཉིད།
4 'ལྷ་མོ་ཚུ་ཐོན་ཅིག' - བེ་ཉི འོག 33 འོག
5 'རྒྱལ་པོ་སོགས' - རྒྱུབ་ཀུན་ འོག 30/བ.

དེར་སྐྱེལ་པོས་ཀྱང་སྤྱ་མེན་མ་འདི་ཙམ་གྱིས་མི་གཅིག་མ་གྲུབ་པ་ཅི་
 ཉེས། ད་བཟོད་པ་ཡུལ་ལ་དམ་ལ་གནས་པར་གྱིས་བྱས་ཀྱང་མ་ཉན་པ་ན། སྤྱ་
 མས་སྤྱ་མེན་མ་རྣམས་སྣར་ལ་བརྒྱས་ཏེ་གཤེན་རྗེ་ཚོས་ཀྱི་སྐྱེལ་པོ་ལ་གཏོད་²
 པའམ། ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་མི་བྱེད་ན། ཉ་རུ་བྱས་
 ཏེ་བྱིར་བ་ཡིན་ཞེས་གསུངས་པས།³ སྤྱ་མེན་མ་ཀུན་སློབ་དཔོན་གྱི་རུས་པ་ལ་
 འཇིགས་ནས། སྐབས་སུ་སོང་ཞིང་དམ་ལ་གནས་པར་མཛད་དོ།

དེ་ནས་སྤྱ་མེན་མ་དག་གིས་ཐོས་པའི་ལྷ་བ་ཀུན་སྐྱབས་ཏེ། སློབ་དཔོན་
 གྱིས་ལྷ་བའི་དུམ་བུ་ཀུན་བརྒྱས་ནས་བསྐྱིགས་པས་སྤྱ་མ་ལས་བག་ཙམ་གྱང་བ་
 ཞིག་གྱང་བ་བསྐྱམས་ནས་གཤེགས་པས། མཚན་ཡང་ཀུས་ལ་ལྷ་ཞེས་པའམ་ལྷ་

1 ‘སྣར་ལ་རྒྱས་’ - ཤེས་ཤིག་ ༣༣ དེ་ཉིད།
 2 ‘གཏོད་པ་’ - སྐྱབས་ཀྱིས་ ཤེས་ ༣༠/ན་
 3 ‘ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་བྱེད་གསུངས་པས་’ - ཤེས་ ཤེས་ ༣༣ འོག་
 “ཉ་རུ་བྱས་ཏེ་བྱིར་བ་ཡིན” ཞེས་པ་ཤེས་ཏེ་དཔར་ལ་མི་འདུག ཤེས་ དེ་ཉིད། ཚིག་འདི་
 ཅུང་མི་བདེ་བས་བཅོས་ན་ “ངའི་བསྟན་པ་ལ་ཞུགས་ནས་དམ་ལ་གནས་པར་མི་བྱེད་ན། སྣར་
 ལ་བརྒྱས་ཏེ། གཤེན་རྗེ་ཚོས་ཀྱི་སྐྱེལ་པོ་ལ་གཏོད་པའམ། ཉ་རུ་བྱས་ནས་བྱིར་བ་ཡིན། ཞེས་
 གསུངས་པས་” ཞེས་བྱས་ན་ལེགས།

ལུས་ལུལ་ནས། གཞན་གྱི་ལུལ་ལོ་དེ་གར་(ལོ་དེ་སར་) ལྷོ་ལོ་དང་། དེར་
དཔོན་སློབ་གསུམ་གྱིས་། བསོད་སྦྱོར་སྦྱོར་བྱེད་ཅིང་བསྟུང་།

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་བཙོང་ས་པའི་ལོ་རྒྱུས་སོང་དུ་རྒྱ་ཡུའི་རྣམ་ཐར་དུ་
གསལ་ལ། སློབ་དཔོན་ལུ་ཉི་པ་དང་བུམ་ཟེའི་སློན་པོ་གཉིས་གྱིས་རྒྱལ་ལོ་ལྷོ་ལོ་
རར་ནང་པའི་རྒྱུ་རྒྱུ་རྒྱ་ར་ཞག་བདུན་ནས་བརྟོལ་ཏེ། དེར་ཆང་འཚོང་མ་ཡོད་
པའི་གན་དུ་ལྷོ་ལོ་ནས། ཆང་འཚོང་གཙོ་མོའི་སློབ་ཅའ་ནས།⁴ རྒྱུ་ལྱི་ལུ་ལོ་
མི་མི་ཉོའམ། ཞེས་སྒྲིམ་པ་དང་། དེས་ནང་དུ་སྒྲིམ་པ་ན་ཉོ་ཟེར་ཞིང་། རིན་ཅི་
དགོས་ཟེར་བ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གསེར་ཏོ་། ལུམ་བཟུང་དགོས་གསུངས་པས།
དེས་ཀྱི་དེ་བཞིན་དུ་བུས་ཏེ་བུམ་ཟེའི་བུ་བྱིར་ལོ། (སློབ་དཔོན་གྱིས་དེ་ལ)
བཙོགས་ལུ་ལོ་རང་གཙོག་ལུ་ཉལ་དུ་ཆུག་ལ་རིན་འཁོར་བ་དང་ཐོང་ཞིག
གསུངས་ནས་སློབ་དཔོན་གཉིས་སོ།

1 'གསུམ་བསོད་སྦྱོར་' - ལྷོ་ལོ་ལོག 30/ན།
2 'དུ་རྒྱ་' - ལྷོ་ལོ་ལོག 30/ན. པེ་ཉི, ལོག 3 ལོང་དེ་ཉིད།
3 'རྒྱལ་ལོ' - ཞེས་པོད་དཔར་གུ་ལ་འདུག་ཀྱང་ དོན་ནི 'རྒྱལ་' ཞེས་པ་ཡིན་ནོ།
4 'བཙོགས་པས' - ལྷོ་ལོ་ལོག 30/ན།
5 'རྒྱུ་ལྱིས' - པེ་ཉི ལོག 33 ལོང་དེ་ཉིད།
6 'ཏོ་ལོ' - ལྷོ་ལོ་ལོག 30/ན. དེ་ཉིད། 'པེ་ཉི' ལོག 33 ལོང་
7 'ལོགས་སུ' - པེ་ཉི ལོག 33 ལོང་།

དེ་ནས་སློབ་དཔོན་གྲུ་ཟེ་དེས་ཆང་འཚོང་མའི་ལས་ཁྲུང་པར་ཅན་
 བྱས་པས་དགའ་ནས་གཙོ་འཁོར་ཀུན་ཇོ་བོ་ཟེར་པོ། །དེ་ནས་ཞག་གཅིག་གི་ཆེ་
 ཉིན་པར་ལས་བྱས་ནས་ཟས་ལ་མ་བསྐྱབས་པར་མཚན་མོ་སྐྱེད་མོས་ཚལ་དུ་
 ཉལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། ཆང་འཚོང་མས་ཟས་མ་བྱིན་པ་དེ་མཚན་མོ་དུན་ནས་
 སྐྱེལ་དུ་བཏང་བ་ན། བྲམ་ཟེ་ལ་བུ་མོ་བཙོ་ལུ་ཅམ་གྱིས་བསྐྱེན་བཀུར་ནི་བྱེད།
 རང་ཉིད་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་སྤང་བ་ལ་འདུག་པ་མཐོང་པས། དེ་ཆང་འཚོང་མ་ལ་
 བསྐྱེད་པས། དེ་འགྲོད་པ་སྐྱེས་ཏེ། (དེས་) སློབ་དཔོན་ལ་བྱིད་བདག་ཅག་
 གིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བཀོལ་བའི་སྤྲོད་པ་བདག་ལ་ཡོད་བས། དེའི་དོན་དུ་ལོ་
 བཅུ་གཉིས་སུ་བདག་གི་མཚོན་གནས་མཛོད་ཅིག་བདག་བསྐྱེན་བཀུར་བྱེད་པ་
 ལགས་ཞེས་ཞུས་པས། དེ་མ་བཞིན་དེ། ཆང་འཚོང་མ་ལ་སོགས་པ་
 རེ་ཡིན་ཏེ་(རྒྱ་ཡིན་ཏེ)ཤུ་རིའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཚོས་བཤད་ནས་
 གདམས་པ་ལ་ཐོག་སྤོ། འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྐྱོད་དུ་
 གཤེགས་སོ།།

མཚན་ནི་འབྲས་དྲུང་བའི་ལས་བྱེད་པས་‘དེ་རྒྱུ་སྤྲོད་’ཞེས་གྲུ་ལ།
 དེས་ཚོགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་པ་—

1 ‘དགུག་པར’ - བོ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།
 2 ‘གདམས་པ’ - བོ་ཉི་ ༣༣ དེ་ཉིད།

རིག་བྱེད་འདོན་པའི་རྟོག་པོ།

འབྲས་བུ་བ་ཡི་བསམ་གཏན་ཅན།

གཏུན་དུ་འབྲས་ནི་ལེགས་པར་བརྒྱུང་ས།¹

ཡུགས་མས་འཕྲོར་ལ་སྐྱེད་པར་བྱེད།²

ལྷ་མའི་གདམས་པས་འབྲས་དག་བརྒྱུང་ས།

ལས་གཞན་དག་ནི་མི་བྱེད་པར།

ནག་པོ་ཡི་ནི་འབྲས་དག་བརྒྱུང་ས།

དང་པོ་དགེ་བས་སྐྱིག་པ་བརྒྱུང་ས།³

རྩོམ་རིག་པའི་ཐོ་བ་ཡིས།

ཟེར་ནི་ཉི་མ་ལྷ་བ་ཡིས།

གཏུན་ཁང་ཚོས་ཉིད་སྤྲོད་བ་རུ།

སྤང་སྤང་གཉིས་སུ་མེད་པར་བརྒྱུང་ས།⁴

རྩྱུ་སྐྱེས་ལྷ་མ་རྩོག་ཞོ་དཀྲོགས་པས།

1 མ་དཔེ་ཀུན་ལ་‘རྟོག་’ - དང་རྟོག་གཉིས་ཀར་ངེས་མེད་དུ་བྲིས་འདུག

2 ‘ཏུན་དུ’ - དེ་ནི་ཤོག 33 འོག 187. Vol 87.

3 ‘དུང’ - གྲུབ་ཀུན་ཤོག 30/བ. 60.

4 ‘མཐོར་བ’ - དེ་ནི་ཤོག 33 འོག 51.

5 ‘རིགས་པའི’ - དེ་ནི་ཤོག 33 51.

6 ‘ཟེར་ནི་ལྷ་བ་ཉི་མ་ཡིས།’ - དེ་ནི་ཤོག 33 51.

བདེ་བ་ཆེན་པོའི་མར་དག་འབྲུང་།།

རོ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པར་སྲོང་།། ར

ཞེས་གསུངས་སོ།།

འི་རྒྱུ་ཆང་འཚོང་མ་ལ་ཚོང་བའི་དགོས་པ་ནི་བྲམ་ཟེ་རྟོག་པ་ཆེ་བ་དེ་ཆང་
འཚོང་གིས་ཉམས་འགྲོ་བས་རིགས་ཀྱིང་རྒྱལ་བཅག་པའི་ཕྱིར་དེར་བཅོངས་པ་
ཡིན་ཅོ།།² ཞེས་གསུངས།།

གུ་རུ་འི་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ།། །།

33) གུ་རུ་མུ་རྩེ་བླ་³

གུ་རུ་མུ་རྩེ་བའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། མུ་རྩེ་ནི་རོ་ར་ལྷ་འཛིན་པ་བྱ་བ་ཡིན་

ལ། དེའི་ཡུལ་ནི་མཉམ་ཡོད། རིགས་ནི་ལྷ་རིགས།⁴ ལྷ་མ་ནི་སློབ་དཔོན་
ནག་པོ་སྲོད་པ་ཡིན་ཅོ།།

1 'གཅོངས' - བེ་ཉི་ཤོག་དེ་ཉིད།

2 'པ་ཡིན།' - ལྷ་བ་ཀུན་ཤོག་ 37/ན. 61.

3 '' - 'མུ་རྩེ' པའི་རྒྱ་དོན་བོད་སྐད་དུ་ 'རོ་ར་ལྷ་འཛིན' ཞེས་བརྒྱུད་འབྲུག་པར་དབྲུང་ན
'མུ་རྩེ' ཞེས་པ་མ་དག་གམ་སྐམ། དོན་ནི་ 'མུ་རྩེ་ལོ'

4 'རིགས་ནི་ལྷ་རིགས།' - བེ་ཉི་ཤོག་ 33 འོག་དེ་ཉིད།

ལྷན་རྒྱེ་པ་ནམ་མཁའ་ལ་གནས་པ་ལ། ཏུས་གཅིག་གི་ཆེ་མཉམ་གསལ་པ་
 དགྲ་བཅོམ་པ་ཞིག་ཚོས་གོས་དང་། ལྷུང་བཟེད་དང་འཁམ་གསེལ་དང་བཅས་
 པ་འོད་དང་གཟི་བརྗིད་དང་ལྷན་པ་ཞིག་ནམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པར་མཐོང་
 ནས། རོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ་ལྷའི་བཟོ་བོ་ལྷི་ལྷུག་ལ་དྲིས་པ།

རྗེའི་སྲས། འདི་འདྲ་བའི་རོ་མཚར་ཅན་མཁའ་ལ་རྒྱ་བ་འདི་ཅི་ལགས།
 ལྷས་པས། ལྷི་ལྷུག་ལ་ན་རེ། འདི་ནི་ཉོན་མོངས་པ་སྤངས་པའི་འཕགས་པ་
 དགྲ་བཅོམ་པ་ཡིན་ཟེར་བས། ལྷན་རྒྱེ་པས་ཀྱང་དེ་འདྲ་བ་ཐོབ་པར་འདོད་ནས་
 འཇམ་བུའི་སྤྱིང་དུ་སྤྲུལ་འོངས་ནས། ལྷོ་བ་དཔོན་ནག་པོ་སྤྱོད་པ་ལ་ཚོས་ལྷས།⁵

ནག་པོ་སྤྱོད་པས་གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐྱུར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་
 སྤྱང་བའི་ཐབས་ཚད་མེད་པ་བཞི་ལྷི་གདམས་ངག་བྱིན་ནས། ལྷིང་རྗེ་ལྷ་བ།
 དགའ་བ་སྐྱོམ་པ། ལྷུས་པ་སྤྱོད་པ། དང་སྤྱོམས་འབྲས་བུར་བསྐྱོམས་པས།

1 'གནས་པ་ན།' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 32 དེ་ཉིད།
 2 'གཅིག་ལ' བོ་ཉི བོག 33 འོག དེ་ཉིད། 61. 'ཏུས་གཅིག་འཕགས་པ' བོ་ཉི བོག དེ་ཉིད།
 3 'ལྷུང་བཟེད་འཁམ་གསེལ' - བོ་ཉི བོག 33 འོག དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 32 61.
 4 'སྐྱེས་ཏེ་ལྷི་ལྷུག་ལ' - བོ་ཉི བོག 33 འོག དེ་ཉིད། 'ལྷའི་ལྷི་ལྷུག་ལ' ལྷུབ་ཀྱན་ 32/ན.
 5 'ལྷས་པས' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 32/ན. 61. བོ་ཉི བོག 34 ལོང དེ་ཉིད།
 6 'ནག་པོ་པས' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 32/ན.

ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་འབྲུལ་པའི་དུག་ཐམས་ཅད་དག་ནས། མཉུ་མུ་དྲུ་འི་འབྲས་བུ་
ཐོབ་སྟེ། ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱིས་གྲགས།²

དེ་ལ་སྤྲི་བྱ་མཁས་ཅི་བྱས་དྲིས་པས། དེའི་ཞལ་ནས་ —

དམིགས་པ་མེད་པའི་ལྟ་བ་དང་།།

རྒྱན་ཆད་མེད་པའི་སྒྲོམ་པ་དང་།།

ཕ་མ་ལྟ་བུའི་སྦྱོད་པ་དང་།།

ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའི་འབྲས་བུ་བཞི།། ༡

ཐ་དད་མེད་པར་མངོན་དུ་མཐོང་།།

མངོན་པར་ཞེན་པ་ག་ལ་གྲུབ།།

ཞེ་མ་སྤྲོ་མངོ་མཚར་ཆེ།།

མཁས་པས་དུག་དུ་བསྐྱེན་པར་གྱིས།། ༢

ཞེས་གསུངས།⁴ མཉུ་མུ་ཡོད་ལ་སོགས་པའི་གྲོང་ཁྱིམ་ཆེན་པོ་དུག་དུ་
ལོ་བཞི་བརྒྱའི་བར་དུ་འགྲོ་དོན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་མཛད་དེ། མཐར་མཁོར་
བཞི་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྦྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་རྣམ་རྟེན་ལོ་རྒྱུ་སྤོགས་སོ།། ॥

1 'ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ།' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་དེ་ཉིད།
2 'གྲགས་ལ' - རྒྱབ་ཀྱིན་ཤོག ༣༡/ན. གྲགས་དེ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་།
3 'པར་བརྒྱ' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་ 187. Vol 87.
4 'ཅེས་གསུངས' - དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།

སོང་བ་བཞིན་དུ་ཁམས་གསུམ་ཐམས་ཅད་སྣོང་བར་བསྐྱོམས་ལ། ཁམས་
གསུམ་སྣོང་པ་བཞིན་སེམས་ཉིད་ཀྱང་སྣོང་བར་སྐྱོམས་གིག་ཅེས་པ་སྟེ།

ཚོ་ལོས་ཚོར་རྣམས་ཟད་པ་ལྟར།
རིག་པའི་ཚོ་ལོས་ཁམས་གསུམ་གྱི།
རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་གྱིས།
དེ་ཡིས་³བདག་ཉིད་གདུངས་⁴པ་ལྟར། ༡

རྣམ་རྟོག་ཚོས་སྐྱར་གདུང་⁵བར་བྱ།
དུར་ཁྲོད་དབེན་པར་ཉལ་བ་ལྟར།
བདེ་ཆེན་སྣོང་དུ་ཉལ་བར་བྱ། ༢

ཞེས་བཞུག་པ་བཞིན་དུ་⁶བསྐྱོམས་པས། ཁམས་གསུམ་གྱི་རྟོག་པ་ཚོས་
ཉིད་དུ་རུབ། དེ་ལྟར་རྟོགས་པའི་རིག་པ་དེ་ཡང་རང་བཞིན་མེད་པར་གྱུར་ཏེ།
ཕྱག་སྐྱ་ཆེན་པོ་མཚོག་གི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། དེས་གསུངས་པ་ —

1 'བཞིན་དུ།' - སྐྱབ་ཀྱན་ འོག་ ༣༡/བ. དེ་ཉིད།
2 'ཅེས་དང་།' - སྐྱབ་ཀྱན་ འོག་ ༣༡ དེ་ཉིད། .ཉི, འོག་ ༣༥ འོག་ དེ་ཉིད།
3 'དེ་ཡི་' - བེ་ཉི་ འོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།
4 'གདུང་བ་ལྟར' - བེ་ཉི་ འོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།
5 'བདུང་བར་བྱ' - བེ་ཉི་ འོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།
6 'བཞིན་སྐྱོམས་' - བེ་ཉི་ འོག་ དེ་ཉིད།

དང་པོ་རྒྱུ་བ་མ་རྒྱུས་ན།
 ཐར་པའི་ལམ་དུ་ག་ལ་འཇུག།
 དད་པའི་སྒྲ་མ་མ་བརྟེན་ན།
 དངོས་ལྷོ་བ་དམ་པ་ག་ལ་འཇུག། ༩

ཅེས་གསུངས་ཏེ། རྣམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་
 མཁའ་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་སུ་གཤེགས་སོ།

གུར་ཏུ་འཇུག་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ། །

༩༥) གུར་ཏུ་འཇུག་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་

གུར་ཏུ་འཇུག་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་ ཡུལ་ཀ་པི་ལ་ལྷ་སྐྱ་¹ ར་བུ་མ་ཟེ་ཞིག་
 རྣམས་ལ་དད་པ་རྒྱུས་ཏེ། རྣམ་འབྲོར་གྱི་རྒྱུད་པ་མཇུག་ཅིང་། མཐར་གྱིས་
 ལོ་མ་ལྷོ་ལ་བྱོན་ནས་ལུས་སྤྱི་ཞི་བོ་འབྲུག་ཏུ་བྱོན་པའི་ལམ་ཁ་ན། བྱི་བུ་²མོ་ལྷོ་
 མ་ཐེག་པ་ཞིག་འདུག་པས་དེ་ལ་བུ་མས་པ་རྒྱུས་ནས་དེ་བྱིར་ཏེ་བོང་བྱིར་དུ་བྱོན་
 རྣམས་ཕྱོགས་བཞིར་གཟུགས་པས། ཕྱོགས་གཅིག་ན་བུ་མ་ལྷོ་ལ་ཞིག་འདུག་

1 'ཀ་པི་ལ་ལྷ་སྐྱ' - ལྷོ་མོ་བཟུང་ཅུ་ཙུ་བཞི་ལོ་རྒྱུས་ ༩༥/ན. དེ་ཉི་ལོ་ ༩༥ ལོ་ག་ དེ་ཉིད།

ཀཔིལ་ ར་ཀུལ་ པུ་ལ་ སི་ པུ་ ༡༢༢, པུ་ སི་སྐྱ་ལོ་ལོ།

2 'ལོ་མ་ལྷོ་ལ་བྱོན་པའི་ལམ་ཁ་ན་སྤྱི་ཞི་བོ་འབྲུག་' - མ་ཞོ་ལ་ལམ་བཟང་ ལོ་ག་ 250.

3 'བྱི་བུ་མོ་ལྷོ་ཐེག་པ་ཞིག་' - དེ་ཉི་ལོ་ ༩༥ ལོ་ག་ 188. Vol 87.

པ་ །དེར་བྱི་གུ་བོར་ཏེ་བསོད་སྟོ་མས་སྤངས་ཀྱིན་དེར་བརྒྱབས་པས། །ལོ་བརྒྱ་
 གཉིས་ནས་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་མངོན་ཤེས་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པས།
 རྣམ་ཅུ་ཙུ་གསུམ་ལ་སོང་པའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་སྤྱན་དྲངས་ཏེ་(དེར་)བྱོན་པའི་²
 རིས་སུ་བྱི་གུ་ཕུག་པ་ཉིད་དུ་ལུས།³

མི་མེད་པར་བྱི་གུས་ས་བྱས་པས་རྒྱ་དང་བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱུང་བ་
 ཟ་ཞིང་དེར་བཟུང་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ལ་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་མཚོད་པ་རྒྱ་
 ཆེན་པོ་བྱས་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པས་སྤར་གྱི་བྱི་གུ་དྲན་ཏེ་ལོག་པར་བརྒྱུ་མས་
 པ་ལས། ལྷ་རྣམས་ན་ཤེ། ཡོན་ཏན་འདི་ཙམ་ཐོབ་ཀྱང་། བྱི་གུ་འདྲ་བའི་རྟོག་
 པ་མཚོད་པ་འདི་མ་ལེགས་པས། འདི་ཉིད་དུ་བཞུགས་པར་ལུ་ཟེར་⁴ཡང་ཡང་
 བཀག་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཆེ་མ་གསན་པར་བྲག་ཕུག་དུ་ལོག་ནས་བྱོན་ཏེ།
 བྱི་གུ་ལ་བྱིལ་བྱིལ་མཚོད་པས། དེ་མཁའ་འགྲོ་མར་སོང་སྟེ་དེའི་ལལ་ནས་ —

ལེགས་སོ་ལེགས་སོ་རིགས་ཅན་ཁྱོད།
 བར་ཆད་དབང་དུ་མ་སོང་སྟེ།
 དངོས་གྲུབ་དམ་པ་ལེན་དུ་འོངས།
 རྣ་མའི་དངོས་གྲུབ་རྒྱན་པ་སྟེ། །

1 'འདུག་པས' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 33/ན. པེ་ཉི, བོག 30 འོག དེ་ཉིད།
 2 'བྱོན་པས' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 33 དེ་ཉིད།
 3 'ལུས་པས' - ལྷུབ་ཀྱན་ བོག 33 དེ་ཉིད། པེ་ཉི བོག 34 བོང 188.
 4 'ཞེས་ཡང་ཡང' - པེ་ཉི བོག 34 བོང དེ་ཉིད།

ལོག་པར་ལྷ་བ་དག་ལ་ཡོད།

ངོ་མཚར་མིན་དེ་འགྱུར་བ་ཅན།

ཟག་མེད་བདེ་ཆེན་མཚོག་ཉིད་ཀྱི།

དངོས་གྲུབ་དམ་པ་མ་ཡིས་སྟེང། 3

ཞུས་གསུངས་ཤིང་། ཐབས་ཤེས་རྒྱང་འཇུག་གི་བརྒྱུ་བརྒྱན་ནས།
འགྱུར་མེད་ལྷ་བ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་རྒྱད་ལ་སྦྱིས་ཤིང་། དངོས་གྲུབ་མཚོག་ཐོབ་
པས། དེ་མན་ཆད་ལུ་མ་བྱོན་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སློམ་ཀུའུ་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་
བར་གྲགས།

འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད། རྒྱུང་གྱིར་ཀའི་ལམ་སྦྱུང་གི་སྦྱོར་བའི་ཚོགས་དང་
བཅས་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྦྱོང་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་ཀུའུ་རྒྱུ་ཞེས་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

1 'གྲགས་ཤིང་' - རྒྱུབ་ཀུན་ ཤོག 33/བ. 64. བེ་ཉི 34 ཤོང
2 'མཛད་ནས་' - རྒྱུབ་ཀུན་ ཤོག 33/བ. 64. བེ་ཉི 35 ཉིད

༣༥) གྲུ་ཀུ་ཅི་པ།

གྲུ་ཀུ་ཅི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀུ་ཅི་པུ་བྱ་བ་ལྷག་ལྷ་ཅན་ཏེ། ཡུལ་
 ཀུ་ཅི་པུ་བྱ་བ་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་ཞིང་ལས་ཀྱིས་འཚོ་བར་བྱེད་པ་
 མཉམས་པའི་གཞི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱིས་ལྷག་པར་ལྷ་བཞེས་སྐྱེས་ནས། དེ་
 རྗེས་ཆེར་སོང་ནས་ཡེ་ལོ་སོགས་པའང་མི་ཤེས་པར་གྱུར་པས་དེ་སྐྱེས་
 བཟུལ་ནས་སྤྱོད་དེ་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་ཉལ་ནས་བཟུང་པའི་ཆེ། དེར་འཕགས་པ་
 ལྷ་སྐྱེས་བྱོན་པས། དེ་ལོ་དང་པ་སྐྱེས་ནས་ཐལ་མོ་སྐྱར་ཏེ།⁴

ཞེ་མ་འཕགས་པ་གང་ནས་བྱོན།
 བདག་ནི་ལས་ངན་གྱིས་མནར་བས།
 སྐྱེས་བཟུལ་བཟོད་དཀའ་འདི་འདྲ་ན།
 ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག་འབདག་ལ་སྤྱོད།⁶

1 'ཀུ་ཅི་པུ' - བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་དེ་ཉིད། སལ་ཆེར་ "ཀུ་ཅི་པུ" ཡིན་པར་འདྲ།
 2 'གྲུ་ཀུ་ཅི་པུ' - སྐྱེས་ཀུན་ཤོག ༣༣/བ. དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་།
 3 'སྐྱེས་པའི' - བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་དེ་ཉིད།
 4 'སྐྱེས་ནས' - བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
 5 'ཐབས་ཤིག' - སྐྱེས་ཀུན་ཤོག ༣༣/བ. བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་དེ་ཉིད།
 6 'སྤྱོད' - བོ་ཉི་ཤོག ༣༥ འོག

ཡོད་དང་མེད་ལས་བདེ་སྐྱབ་འབྱུང་།།
 མཐའ་གཉིས་རྟོགས་པ་དང་བྲལ་ན།།
 བདེ་དང་སྐྱབ་བཟུལ་གལ་ཡོད།།
 ཚོས་རྣམས་རང་རང་ངོ་བོས་སྦྱོང་།། ༡

ཞེས་འགས་པས་ (དེའི་དོན་)དེས་འཕྲིན་པར་རྟོགས་ཏེ། དམིང་
 མེད་སྐྱབ་རྒྱ་ཚེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། དེས་ཀཉའི་(ཀཉའི་རྒྱུ)ལ་སོགས་
 པར་ལོ་བདུན་བརྒྱའི་བར་དུ་འགྲོ་དོན་མཛད་དེ། (ཐམས་ཅད་)དུ་ཀུའི་ཕྱི་
 ཞེས་གྲགས་ལ། (མཐའ་)འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྦྱོང་དུ་
 གཤེགས་སོ། །

གྲུབ་ཀུའི་ཕྱི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ། །

1 ‘ཅེས་གསུངས་’ - པེ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
 2 ‘དེ་ལེགས་པར་རྟོགས་’ - སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག ༣༣/ན།

དེ་བཞིན་ཐོས་པ་སྣ་ཚོ་གསུང་།།

སེམས་ཉིད་དབྱིངས་སུ་བཞུགས་པར་གྱིས།། 1

ཞེས་གསུངས་པའི་དོན་(དེས་)གོ་ནས། ཐོས་པའི་ཚོས་ཐམས་ཅད་²
སེམས་ཉིད་(དེ)དུ་མ་རོ་གཅིག་དུ་རྟོགས་ཏེ། སྤྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་བྱུབ་
ཐོབ་ནས། རྣམ་པུ་ཞེས་བྲགས།

གདུལ་བྱ་མང་པོ་ཐར་ལམ་ལ་བཞོན་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་
སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུ་རྣམ་པུའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ།། ॥

༣༧) གྲུ་མ་ཉི་ལྔ་པ།

གྲུ་མ་ཉི་ལྔ་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། མ་ཉི་ལྔ་སྟེ་ང་རྒྱལ་ཅན་ལོ།། དེ་ཡང་ཡུལ་
མགལ་⁴ན། དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ལུས་སྟོབས་ཤིང་ཆེ་བ་ཞིག་གནས་པ་
དེ། ངས་མི་ཐུབ་པའི་མིའམ་སྟོག་ཆགས་གང་ཡང་མེད་སྟུང་པའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་
དུས་ཉམ་དུ་མོན་ནས་འདུག་པའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་དེ་ལ་
བཞུགས་ཏེ། རྟོན་ཅི་སེམས་ཤིང་འདུག་གསུངས་པས། ཅི་ཡང་སེམས་པ་མེད།

1 'བགྱི' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
2 'ཚོས་རྣམས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
3 'གྲུ་མ་ཉི་ལྔ་པ' - རྒྱལ་ཀྱན་ ཤོག ༣༣/ན. 65. 14.
4 'མགལ' - རྒྱལ་ཀྱན་ ཤོག དེ་ཉིད།། མགལ་ དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ ཤོང 188. Vol 87.

ཟེར་བས། ‘འོ་ན་ངས་མི་ཐུབ་པ་ཅི་ཡང་མེད་སྐྱེ་པ་དེ་ཅི་ཡིན།’ གསུངས་
པས། དེ་དང་ནས་‘ན་མོ་’ཞེས་ཕྱག་བྱ་བའི་མི། ང་རྒྱལ་གྱི་དྲི་མ་དག་པར་གྱུར་
ཅིག་ གསུངས་པས། དེ་ན་ཟེ། བདག་ལ་ཚོས་ཤིག་འབྱུ་ཟེར་བས། རྣལ་འབྱོར་
པས་རླུང་གསུངས་དྲི། སྤྱི་རྒྱུ་ལས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐྱར་མཛད། (དེ་ནས) —

སྐྱང་བ་སེམས་སུ་ཤེས་བྱས་ན།
སེམས་ཉིད་སྐྱོང་བ་སྐྱེ་འགག་མེད།
དེ་ལ་མ་ཡངས་སྐྱོམ་ཡེ་ཡིན།
སྐྱོང་དུ་གྱུར་ན་འབྲས་བུའོ། ༡

གསུངས་པ། དེས་མ་གོ་ལགས་ཞུས་པས། ཡང་ —

ཁྱོད་ནི་སྐྱོབས་ཅན་ཉིད་ཡིན་པས།
ཁྱོད་ཀྱིས་མི་ཐུབ་གང་ཡང་མེད།
སྐྱང་བ་རླུང་དང་ཤེས་པ་གསུམ།
ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་གཟུང་བར་བུའོ། ༢

1 ‘ཚོས་ཅིག’ - ཐུབ་ཀྱི་ཤོག་ ༣༣/བ. དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ཤོག་ ༣༦ བོང་ དེ་ཉིད།
2 ‘བསྐྱོམས་’ - བེ་ཉི་ཤོག་ ༣༦ བོང་ དེ་ཉིད།
3 ‘གྱུར་པ་’ - ཐུབ་ཀྱི་ཤོག་ ༣༣/བ. དེ་ཉིད།
4 ‘ད་མ་གོ་ལགས་’ - ཐུབ་ཀྱི་ཤོག་ ༣༣/བ. 66.

ཞེས་འགལ་བ་ལམ་ཁྲིར་གྱི་གདམས་པ་བསྒྲན་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ཅི་
 དཀའ་སྒྲུལ་ན་བཟུང་བས། གཟུང་བའི་ཡུལ་མ་རྙེད་ཅིང་། འཇིན་པའི་ཤེས་པ་
 ལྗོངས་ལྡོག་ལྡོག་མཁའི་དབྱིངས་ལྗོངས་རྟོགས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབཔ།

ཡུལ་མགུག་ལ་³སོགས་པར་ལོ་སྲུལ་བརྒྱའི་བར་དུ་གདུལ་བྱ་དཔག་དུ་
 མེད་པ་ལ་གནས་ལུགས་དངོས་མེད་སྒྲོབས་ལྡན་གྱི་གདམས་པ་གནང་ནས།
 མཐར་འཁོར་ཉིས་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་ཙུ་གཅིག་དང་བཅས་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་
 མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུབ་ཉི་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ།། ||

༣༤) གྲུབ་ཉི་རྒྱུ་

གྲུབ་ཉི་རྒྱུ་ནི། དྲན་པ་མེད་པ་གྲུབ་ཡིན་ལ། འདིའི་ཡུལ་ནི་རྩོམ་
 རུལ་(ཡུར་ཡིན་ཞིང་། རིགས་ནི་ཤིང་འཛོང་པའི་རིགས་ཡིན་ནོ།།

1 'སྒྲིང་བས་' - བེ་ཉི་ ཤོག ༣༤ འོག
 2 'ཐོབ་སྒྲུབ་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༣༣/བ. བེ་ཉི་ ཤོག ༣༤ འོག
 3 'མགུག' - བེ་ཉི་ ཤོག ༣༤ འོག 188. Vol 87. 'མགུག' ལྷུབ་ཀྱན་ ༣༣/ན.
 4 'དྲན་པ་མེད་པ་ཞེས་པ་དཔེ་གཉིས་ཀར་འདུག་ཀྱང་། 'མཚན་' ཞེས་པའི་སྐྱོད་ནི་བསམ་མེད།
 5 'ཡིན་ཅིང་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༣༣/བ. 66. 14

དེ་ཡང་གིན་དུ་དབུལ་ཞིང་ཕོངས་པ་ཡིན་པས་ཉིན་མཚན་དུ་མོར་
 ཇི་སྲིད་པས། འཇིག་རྟེན་གྱི་རྣམ་རྟོག་གཞན་གང་ཡང་བྲན་པ་མེད་པར་
 མོར་ཇི་སྲིད་འབྲེལ་ཞིག་འདོད་པས་གསུངས་ཏེ། དབེན་པ་ཞིག་ན་འདུག་པ་དང་།
 དེའི་གམ་པ་དུ་ལྷན་ལམ་འཕྲོར་པ་ཀུན་ལ་ཕྱེ་ལུ་ཕྱེ་ལུ་ཕྱོད་ནས། རྒྱུ་དབེན་པ་ན་
 ལུས་ངག་དབེན་པར་འདུག་ཕྱི་ཅི་སེམས་གྲིན་འདུག། གསུངས་པས། དེ་ན་ཤེ།
 ལྷན་ལམ་འཕྲོར་པ་བདག་ནི་འཇིག་རྟེན་གྱི་མོར་ཇི་སྲིད་སེམས་པ་ལས་གཞན་ཅི་ཡང་མི་
 དྲན་ལ། མོར་སེམས་ཀྱང་ཁྲག་པ་ནི་ཅི་ཡང་མི་འདུག་ཞུས་པས། རྒྱུ་དབེན་
 གྱིས་ང་ལ་མོར་ཇི་སྲིད་ཁྲག་པ་འདི་གདམས་པ་ཡོད་དེ་རྒྱུ་གྲིས་སྐྱབ་ལུས་སེམས་
 གསུངས་པས། དེ་ན་ཤེ། རྒྱུ་དབེན་ལུས་པའི་ཐབས་མེད་པས་ཅིས་ཀྱང་ལྷན་ཤེས་ཤིང་།

(དེ)ནས་(རྒྱུ་དབེན་གྱིས་)དེ་(ལ་)བདེ་མཚན་དུ་དབང་བསྐྱར།

མི་ཐབས་པ་ཐོགས་པའི་རིམ་པ་འདི་གནང་སྟེ།

འདོད་པས་རྟེན་པ་གལ་ཡོད།།

1 'ཡིན་ལ' - བཞི, བོག 36 འོག དེ་ཉིད།
 2 'གན་དུ' - བཞི, བོག 36 འོག དེ་ཉིད།
 3 'ཀུན་ལ' - བཞི, བོག 36 འོག དེ་ཉིད། རྒྱུ་གྲུན་བོག 33/བ དེ་ཉིད།
 4 'ཁྲག་པ' - རྒྱུ་གྲུན་བོག 33/བ དེ་ཉིད།
 5 'མི་ཐབས་པ' - ཞེས་འདུག་ཀྱང་། འདི་ལྟ་དཔེར - 'ཞུགས་སྐྱོང་རྒྱུ' ཞེས་ཡོད་པར་སྐྱང་ལ།
 དེ་ནི་ "ཐབས་མོའི་མཐར་ཐུག" ཅིས་པ་ཡིན།།

མོ་མཁམ་གྲུ་ནི་ཇི་བཞིན་ལོ།

དེས་ན་འདོད་པའི་སེམས་སྤོངས་ལ།

རང་ལུས་ནམ་མཁའི་ངང་ཉིད་དུ། ༡

རང་སེམས་སྐར་མར་གསལ་བར་སྐྱོམས།

དེ་ཡང་ལོ་རྒྱུ་ཉིད་ཡིན་པས།

མངོན་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ།

འདོད་དགུ་མ་ལུས་འབྱུང་བར་འབྱུང། ༢

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱོམས་པས། ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་
རྟོག་པ་དེ་སྐར་མའི་ངང་དུ་སྐྱོད། སྐར་མ་དེ་ཡང་ནམ་མཁའི་ངང་དུ་རྒྱབ་ནས་
རྟོག་མེད་ཀྱི་ངང་དུ་སོང་བ་ན་སྐར་(སྐར་མས་)དེ་ལ།

ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་ཇི་ལྟར་བྱ།

ཕྱིད་ཀྱིས་ཡུལ་དུ་བྱས་སམ་ཅི།

1 'མོ་མཁམ་གྲུ' - བོ་ཉི, བོག ༣༧ བོང 189. Vol 87.
 2 'བཞིན་དུ' - བོ་ཉི, བོག ༣༧ དེ་ཉིད།
 3 'སྤོངས་ལ' - ལྷུབ་ཀྱིན་ བོག ༣༤/ན།
 4 'བསྐྱོམས' - བོ་ཉི བོག ༣༧ བོང དེ་ཉིད།
 5 'རྟོག་མེད་དུ་སོང་བ་ན།' - ལྷུབ་ཀྱིན་ བོག ༣༤/ན 67.
 6 'ཅི་ལྟར་བྱ' - ལྷུབ་ཀྱིན་ བོག ༣༤/ན དེ་ཉིད།

ཁ་དོག་དབྱིབས་སོགས་བུལ་བ་ལ།¹

ཅི་ལྟར་ཞེན་ཅིང་རི་ལྟར་བསྐྱོམས།² 3

གསུངས་པས། (དེས་)དེའི་དོན་རྟོགས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་

གྲུབ་ཐོབ་སྒྲིལ།³ ལྷ་མ་ཨུའི་རྣམ་པ་ལྔ་གས།

གནས་ལུགས་ཀྱི་གདམས་པས་ལོ་སུམ་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས།

འཁོར་དཔག་དུ་མེད་པ་དང་བཅས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེད་སོ།

གྲུབ་ལུ་ཨུའི་རྣམ་པ་ལྔ་གས་སོ། །

36) གྲུབ་བསྐྱེད།⁵

གྲུབ་བསྐྱེད་འོ་རྒྱས་ནི། བསྐྱེད་འོ་རྒྱས་ཀྱི་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་པ་

བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་རྒྱུར་བྱ་བ་ན་རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་རྒྱལ་པོའི་

1 'བ་ན།' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག 30 བོང་དེ་ཉིད།

2 'སྐྱོམ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག 30 བོང་དེ་ཉིད།

3 'ཐོབ་ནས།' - དེ་ཉིད་ཤོག་དེ་ཉིད།

4 'ཨུའི་རྣམ་པ་ལྔ་གས་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག 30/ན་

5 'བསྐྱེད' - ཞེས་པ་མ་དཔེ་ཀུན་ལ་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་། ཡིག་ཅོར་མེད་ན་མ་དཔུང་། ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག་དང་པོ་ལ་ལྷུ་བ་ཀུན་ལས་འོ་མ་ལེན་ཞེས་པ་ཡིན།

6 'ཆུ་ལ' - དེ་ཉིད་ཤོག 30 བོང་དེ་ཉིད་ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག 30/ན་

འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་གྱིས་ལྷོས་ནས་འདུག་པ་ལ། དེའི་གམ་དུ་ལེགས་པར་
 སྦྱངས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས་ཟས་ཀྱི་བསོད་སྦྱོམས་བྱས་པས།
 བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་གྱ་ཚོམ་པ་དྲངས་ཏེ། རྒྱལ་པོ་དེ་²དང་ནས་ཚོས་
 སྲིག་³ཞུ་བའི་བུ་ལ། དེས་ཀྱང་ཚོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཅ་བ་དམ་ཚིག་⁴ཡིན་པ་
 དང་། དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཅ་བ་སྤྲོ་མ་ཡིན་ཚོ། ཞེས་གསུངས་ཏེ། བྱིན་
 རྒྱལ་འཕོ་བའི་དབང་བསྐྱར་ནས། ཅ་རྒྱུང་ཐིག་ལེའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་སྟེ།

གཞན་ལུས་ཐབས་ལྡན་ཁྱད་པར་ཅན།
 སྤྲུག་རི་རྣམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ།
 རྟུག་རི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་ལ།
 བྱང་སེམས་འོ་མ་བསྐྱེས་ཤིང་ལེན། །

གནས་སུ་འཁྱོལ་ནས་ཁོང་དུ་དྲངས།⁵
 བདེ་བ་རྒྱན་ཆད་ཏེ་ལྷ་མིན།
 བདེ་བས་བདེ་བ་འཇོམས་པ་ན།

1 ‘མཚན་པ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧
 2 ‘རྒྱལ་པོ་དང་ནས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ ལོང་དེ་ཉིད།
 3 ‘ཚོས་གཅིག’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ ལོང་
 4 ‘ཅ་བ་དམ་པ་ཡིན’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ དེ་ཉིད།
 5 ‘ཁོང་དུ་གྲུབ།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ འོག
 6 ‘རྒྱན་ཆགས་དེ་ལྷ་མིན’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༧ འོག དེ་ཉིད།

དེ་ཡང་སྒོང་དང་དབྱེར་མེད་སྒོམ་ས།། ༡

ཞེས་ཡག་སྲུང་ས་པས། དེས་ཀྱང་(དེ་ལྟར་)ཉམས་སུ་སྲངས་པས། ལོ་
བརྒྱ་གཉིས་ནས་མ་ཐོང་སྤང་³གི་དྲི་མ་དག་ནས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྟེ། བདུལ་བྱའི་
དོན་ཡང་མང་དུ་མཇད་དེ། ⁵ལྷུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།
གྲུབ་བརྒྱན་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ། །

༤༠) གྲུབ་ལོན་སྤྱོད།

གྲུབ་ལོན་པུའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ལོན་སྤྱོད་པ་ལྟེ་ཕ་བ་བྱ་བའོ།

(དེ་ཡང་) ཡུལ་ས་ལི་ཡུའ་ན་རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་དུ་ཐོངས་ནས་
པ་ལྟེ་ཕ་བ་མཚོ་ནས་བདུས་ཏེ་འཚོ་བ་བྱེད་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཆེ་རྒྱལ་
འཕྱོར་བ་ཞིག་དང་འཕྲད་ནས། (དེ་ལ་པ་ལྟེ་ཕ་བ་) དེ་དྲངས་པས། དེས་

1 'སྒོམ' - དེ་ཉི འོག ༣༧ དེ་ཉིད།
2 'ཅེས་གསུངས' - དེ་ཉི འོག ༣༧ འོག
3 'མ་ཐོང་གི་དྲི་མ' - ལྷུ་ཀྱུན་ འོག ༣༤/ན. དེ་ཉིད།
4 'བྱས་ནས' - དེ་ཉི འོག ༣༧ འོག
5 "དཔེར་ན་ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་ཡིས། རྒྱལ་པོ་མ་འབྱེད་པ་བཞིན། སྐྱེས་དམ་པའི་གདམས་ངག་
གིས། བྱང་རྒྱལ་སེམས་ཀྱི་བདུད་ཚི་སྲངས།" ཞེས་གསུངས་ནས། དེ་ཉི འོག ༣༧ འོག 189.
Vol 87.
6 'ལོན་ལོན' - དེ་ཉི འོག ༣༧ འོག 189. Vol 87.
7 'བརྒྱས་ཏེ' - དེ་ཉི འོག ༣༧ དེ་ཉིད།

ཀྱང་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཡོན་ཏན་བཤད་པས།
 དེ་འཁོར་བ་ལས་སློ་ལྷོག་ཤི། སློ་མ། ཐར་པ་ཐོབ་པའི་ཐབས་ཤིག་ལུ་ལགས་
 ཟེར་བ་ལ།² (རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་) རུང་གསུངས་ནས། གསང་བ་འདུས་པར་
 དབང་བསྐྱར་དེ།³ རང་ལུས་ཐབས་ལྷན་ལ་བརྟེན་པའི་གདམས་པ་འདི་
 གནང་ངོ་།།

སྤྱི་ཐོར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཅན།།
 ཉེ་ནི་དཀར་པོ་ཡང་དག་བསམ།།
 ལྷོ་བར་སྐྱལ་པའི་ཡི་གེ་ལྷོ།།
 འོད་འབར་བས་ནི་ཉེ་འཇག་སྟེ།། ༡

དགའ་དང་དགའ་བྲལ་མཚོག་དགའ་དང་།།
 ལྷན་སྐྱེས་དག་ནི་རིམ་པ་བཞིན།།
 འབྲུང་བས་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་།།
 ཐར་པའི་བདེ་ཆེན་འདོར་ཞིང་ལེན།། ༢

1 'སློལྲགས་' - པའི་ཉེས་ཤིག་ལྟེ་དེ།
 2 'ཟེར་བས་' - ལྷོག་ཀྱང་ཤིག་ལྟེ་ ༡༧/བ. 68.
 3 'བསྐྱར་སྟེ' - པའི་ཉེས་ཤིག་ལྟེ་
 4 'ལ་བསྐྱེན་པའི' - པའི་ཉེས་ཤིག་ལྟེ་ འོག་དེ་ཉེས།
 5 'ཆེན་པོར་ནི' - པའི་ཉེས་ཤིག་ལྟེ་ འོག་དེ་ཉེས།
 6 མ་དཔེ་ཐམས་ཅད་ལ་ 'པོ' ཞེས་འདུག་ པའི་ཉེས་དཔེ་ལས་ཞེས་འབྲུང་། ཤིག་ལྟེ་
 ཡིན་ཀྱང་རྒྱན་དོན་དང་མཐུན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ན་, 'པོ' ཞེས་འོངས་དགོས་བསམ།

ཡང་རྒྱལ་རྒྱའི་རྒྱལ་པོ་དེམ་པུལ་། བཞུགས་པའི་ཚེ། དེའི་ཚོས་སློར་ལ་དག་འདུན་
 བདུན་བརྒྱའི་སྐྱེ་འཚོ་བཟང་པོ་བཟང་བདུང་སོགས་ཅི་བཞིན་འབུལ་ཞིང་། སྤེ་
 པ་བཞི་ཡོད་པའི་ཕལ་ཆེན་སྤེ་པའི་མཁན་པོ་ལ་མཁན་བུ་སུམ་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་
 ལ་༥ གཞན་ཀུན་བརྩོན་པས་རིགས་པའི་གནས་ལཱ་ལ་བྱང་བར་ཡོད་པ་ལ།
 རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་དག་སྦྱང་དེ་ནི་རྟག་དུ་གཉིད་ལོག་པར་བྱེད་པ་ལ། ཐོ་བའི་མེ་
 རྫོང་ཀྱང་ཆེ་ནས། འབྲས་བུ་ལྡེ་ལྡེ་ནངས་རེ་བཞིན་ཟ་ཡིན་འདུག་པ་ལ། རྒྱལ་
 པོ་དེམ་པུལ་ན་རེ་འདི་ནི་སྐྱུ་ལྷུ་ཞིག་འདུག་གོ། །ཟེར་བས་མིང་ཡང་སྐྱུ་ལྷུ་ཞིག་
 བྲགས།³ དེ་ནི་ཟ་ཉལ་འཆག་གསུམ་པ་⁴ཞེས་བྱའོ།།

རྒྱལ་རྒྱའི་ཚོས་སློར་དེ་ན་དུས་རྟག་དུ་མདོ་རེས་མོས་སུ་འདོན་པའི་
 ལུགས་ཡོད་པ་ལས། དེ་ན་གནས་པ་ཀུན་གྱིས་སྐྱུ་ལྷུ་ལྡེ་ལ་ཁ་ཟེར་ཞིང་མཁན་
 པོས་ཀྱང་། རྫོང་གིས་མདོ་འདོན་པ་ལ་སོགས་པ་མི་འོང་བས་གཞན་དུ་སོང་
 ཞིག་ཟེར་བ་ན། དེ་ན་རེ། ང་ཚུལ་བྲིམས་མ་ཉམས་པས་གནས་ནས་དབྱང་
 བར་མི་རིགས་ཤིང་། རིག་པ་སློབ་པའི་སྐལ་བ་མེད་ཟེར་ནས་འདུག་པ་ལ།

དུས་གཅིག་གི་ཆེ་མདོ་འདོན་པའི་རེས་བབ་པས། དག་འདུན་གྱིས་
 དེ་ལ་སང་ནི་རྫོང་གིས་མདོ་(འདོན་པའི་)རེས་མོས་ཡིན་པས་ཐོན་ཅིག་ ཅེས་

1 'དེམ་པུལ' - པེ་ཉི་ཤོག ༣༥ བོང་སྐབ་ཀུན་ ༣༤/ན.
 2 'ཡོད་པ' - སྐབ་ཀུན་ ཤོག ༣༥ པེ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད།
 3 'བྲགས་ལ' - སྐབ་ཀུན་ ༣༥ དེ་ཉིད།
 4 'སྐྱུ་ལྷུ' - ཟ་ཉལ་འཆག་གསུམ་པ=སྐྱུ་ལྷུ་ + ལྷུ་ + ཀུ་ = སྐྱུ་ལྷུ་

སྒྲིམ་པས། དེས་ཀྱང་འདོན་པར་ཁས་སྒྲངས་པ་དང་། ལྷེན་ལྷེན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་²ལ་
 འདུན་ཀྱན་ནང་ས་པར་³སྒྲུག་ལ་མདོ་འདོན་པ་ལ་བལྟ་བ་ཡིན་ཟེར་བའདང་⁴གད་
 བྱེད་པ་ལ། དེའི་མཁུན་པོ་ན་ཅེ། རྒྱུད་ཀྱིས་རིག་པ་སྤོབ་པའི་ཆེ་བ་ཡིན་གཉིད་
 གཅིག་ཕུ་ལོག་ན། ད་ལྷེན་ལྷེན་ལམས་པ་རྣམས་ཀྱི་ནང་མདོ་མི་ཐོན་བྱས་པས།⁵
 སྒྲུག་ལ་ཅེ་བདག་མདོ་འདོན་ཟེར་ཉན་མ་འདོད་པ་ལ། མཁུན་པོས་
 སྒྲིམ་པ་— རྒྱུད་ཀྱིས་མདོ་མ་ཐོན་ན་གནས་ནས་སྒྲོད་པས། དེ་བས་འདུག་ན་
 རྒྱུད་ལྷེན་སྒྲིམ་པ་ལ།⁶ ང་རང་གིས་ཟེར་ནས་མ་ཉན་པ་དང་།⁷ མཁུན་པོས་
 འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་སྒྲུགས་ཨར་པཅན་བསྐྱབས་ནས།⁸ ‘སྒྲུགས་འདི་
 མཚན་གཉིད་མ་ལོག་པར་སྒྲིམ་གྱིག’ རྒྱུས་ནས་སྒྲུགས་ཀྱི་གདམས་པ་བྱིན།⁹
 དེས་ཀྱང་མཚན་གཉིད་མ་ལོག་པར་གྲོལ་ཐག་པ་བདགས་པས།¹⁰ནས། སྒྲུགས་

1 ‘སྒྲངས་’ - པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ཞོང་ དེ་ཉིད།
 2 ‘ལྷེན་ལྷེན་’ - སྒྲུབ་ཀྱན་ ཉིག་ 34/ན. 69.
 3 ‘ནང་ས་པ་བྱོན་ནས་’-པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ཞོང་ རྒྱ་དཔེར = ‘གདུལ་བྱུ་མི’ ཡོད་པར་སྒྲང་།
 4 ‘བའདང་གད་བྱེད་’ - སྒྲུབ་ཀྱན་ ཉིག་ 34/ན. 69.
 5 ‘བྱས་པ་ལ’ - སྒྲུབ་ཀྱན་ ཉིག་ 34 དེ་ཉིད། པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ཞོང་ དེ་ཉིད།
 6 ‘སྒྲིམ་པ་ན’ - སྒྲུབ་ཀྱན་ ཉིག་ 34/ན. 69. པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ཞོང་ དེ་ཉིད།
 7 ‘མ་ཉན་བ་ན’ - སྒྲུབ་ཀྱན་ ཉིག་ 34 དེ་ཉིད། པའི་ཉི་ཤེས་ 35 དེ་ཉིད།
 8 ‘བསྐྱབས་ཏེ’ - པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ཉིག་ དེ་ཉིད།
 9 ‘བྱིན་པས’ - པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ལོག་
 10 ‘བདགས་’ - པའི་ཉི་ཤེས་ 35 ལོག་, དེ་ཉིད།

བཟླས་པས། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་དེར་དངོས་སུ་བྱོན་ནས། ‘སླ་སྲུ་ཀུ་པུ་
 རྩོད་ཅི་བྱེད་’གསུངས་པ་ལ། [སླ་སྲུ་ཀུ་པུ་]བདག་ནངས་པར་མདོ་འདོན་པའི་
 རེས་མོས་བབ་ལགས་པས་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་ལ་གསོལ་བ་འདེབས་པ་
 ཡིན་ཞུས་པས། འཕགས་པའི་ཞལ་ནས་རྩོད་གྱིས་ང་འོ་ཤེས་སམ། གསུངས་
 པས། ‘བདག་གིས་མ་འཚལ་ལགས་’ ཞུས་པ་ལ།² (ང་) འཇམ་དཔལ་
 ཡིན་གསུངས་པས། འོ་ན་བདག་ལ་ཤེས་རབ་ཡུན་སུམ་ཚོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་
 ཞུ་བུས་པས། འཕཇ་པའི་ཞལ་ནས་“རྩོད་ལ་ངས་རིག་པ་སྤྱིན་³གྱི། རངས་པར་
 མདོ་ཐོན་ཅིག་”གསུངས་ནས་མི་སྤང་བར་གྱུར་དོ།།

དེ་ནས་ནངས་པར་མདོ་འདོན་པའི་དུས་སུ། དགེ་འདུན་གྱི་ཀུན་དགའ་
 རྩ་བར་རྒྱལ་པོ་ལ་སོང་པའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་སླ་སྲུ་ཀུ་མདོ་འདོན་པ་ལ་
 བལྟའོ་⁴ཞེས་གཅིག་ལ་གཅིག་སྤྱོད་པ་དང་། མི་དོག་ལ་སོགས་པ་མཚོད་པའི་ཡོ་
 བྱད་ཀུན་བྱིར་ནས་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་བཞད་གད་གྱི་ཚེད་དུ་དེར་ཕྱིན་པ་
 དང་། སླ་སྲུ་ཀུ་པུ་དགེ་འདུན་གྱི་གདུགས་ཚོད་གསོལ་ནས་ཞུམ་པ་མེད་པར་

1 ‘པས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ དེ་ཉིད། སྐབ་ཀུན ༣༥/བ. དེ་ཉིད།
 2 ‘ཞུས་པས’ - སྐབ་ཀུན ཤོག ༣༥/བ. དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ འོག
 3 ‘བྱིན་གྱི’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ འོག 189
 4 ‘ལ་ལྟའོ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ འོག
 5 ‘སླ་སྲུ་ཀུ་པུ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༣༥ འོག

གུང་མོང་ལག་ཁང་གི་མིའི་སྤོང་དུ་བྱོན་ནས་བཞུགས་པའི་ཆེ། གཟི་བྱིན་ཁྱད་པར་
 འཕྲུ་པར་འདུག་པས་ཐམས་ཅད་རྟོག་པ་སྐྱེས་པ་ལ། མདུན་ཡོལ་བས་
 བཅད་དེ། བདག་གིས་མདོ་ལྡར་བྱུང་བ་ཞིག་ལ་བཤད་དམ། མ་བྱུང་བ་ཞིག་
 ལ་བཤད། གསུངས་པས། པལྗོད་ཀྱི་གཅིག་ལ་གཅིག་ལྟ་ཞིང་། སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་
 ཀྱི་དང་རྒྱལ་པོ་བཞད་གད་བྱེད་ལ། རྒྱལ་པོ་ན་ཟེ། རྟོད་ཀྱིས་ཟེ་ལུགས་ཀྱང་
 ལྡར་མ་བྱུང་བ་ཞིག་ལོན་ལ། ཉལ་བ་དང་འཆགས་པའི་སྤྱོད་ལམ་ཡང་ལྡར་མ་
 བྱུང་བ་ཞིག་ལྟེ་བྱེད་པས། ཚོས་ཀྱང་ལྡར་མ་བྱུང་བ་ཞིག་ལྟེ་བྱེད་ཟེ་པ་ལ། དེས་
 སྤྱོད་འཇུག་ལེའུ་བཅུའི་བདག་ཉིད་བཤད་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བས།
 རྒྱལ་པོའི་པལྗོད་ལྟེ་བྱེད་དང་། རྒྱལ་པོ་དེས་ལྡུལ་ལྟེ་བྱེད་ལྟེ་བྱེད་ཚོགས་
 ཐམས་ཅད་དད་ནས། མེ་རྟོག་གཏོར་ནས་ལུས་ལྟེ་བྱེད་ཅམ་དུ་ཆགས་ལ། འདི་
 རི་སྐྱུ་ཀྱུ་མ་ཡིན་ཏེ་མཁས་པར་འདུག་གོ། ཟེ་ནས་རྒྱལ་པོ་དང་། པལྗོད་ཀྱི་

-
- 1 'བཞུགས་པས་གཟི་བྱིན་' - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ. ཉིད།
 - 2 'འཕྲུགས་ནས་' - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ.
 - 3 'འདུག་ནས་' - བེ་ཉི་ བོག ༣༧ བོང་ དེ་ཉིད།
 - 4 'བྱུང་བ་ཅིག་ - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ. དེ་ཉིད། 'བྱུང་གཅིག་ བེ་ཉི་ བོག ༣༧ བོང་
 - 5 'མ་བྱུང་བ་ཅིག་
 - 6 'མ་བྱུང་བ་ཅིག་ - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ. 'གཅིག་ བེ་ཉི་ བོག ༣༧ བོང་
 - 7 'བཅིག་ - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ. 'གཅིག་ བེ་ཉི་ བོག ༣༧ བོང་
 - 8 'མཁའ་འཕུར་' - ལྷུ་ཀྱན་ ༣༥/བ.
 - 9 'དེ་བཤལ་' - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༥/བ. བེ་ཉི་ ༣༧ བོང་
 - 10 'དལུས་ལུ་ཅམ་' - བེ་ཉི་ བོག ༣༧ བོང་ དེ་ཉིད།

གྱིས་ཤུག་དེས་ཀྱི་བར་བཏགས། རྒྱལ་པོ་དང་པལྗོངས་ཀྱི་ལྷན་པོ་ལྟེ་ལོ་བར་བྱས་
པས་ཞི་བ་ལྷ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།

དེ་ནས་པལྗོངས་སོགས་དེར་འདུས་པ་ཀུན་གྱིས་དེའི་འབྲེལ་པ་ཞིག་
མཛད་པར་ཞུས་པས། ལྷོ་ནས་མཛད།² དེ་དག་གིས་མཁན་པོར་ཞུས་པས་མ་
གནང་བར། ཚོས་གོས་དང་ལྷུང་བཟེད་ལ་སོགས་པ་རབ་དུ་བྱུང་བའི་ཡོ་བྱེད་
དཀོན་མཆོག་དང་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་ལྷུལ་ནས། མཁན་པོ་དང་དགེ་འདུན་གྱིས་
མ་ཚོར་བར་བྲོས་ལྷོན་ཏེ།³ དེ་མ་གྱིས་རྗེ་ལྷོ་ལྷོ་བའི་གྲོང་ཁྱིམ་འདུམ་ཚོ་བྱེད་
དང་གསུམ་⁵ ཡོད་པར་གྲོང་གི་རལ་གྱི་ཡུ་བ་གསེར་གྱིས་བསྐྱེས་པ་ཞིག་

1 'ཤུག་དེས་' - བོ་ཉི་ཤོག་ ༣༧ བོད་ དེ་ཉིད། འདིར་ 'ཤུག་དེས་' ཞེས་པ་རྒྱལ་པོ་དང་
པལྗོངས་ཀྱི་བར་བྱས་པའི་རྒྱ་མཚན་གྱིས། དུས་དེའི་ཚེ་དེ་དག་གིས་བཏགས་པར་བཤད་
ཀྱང་། བུ་སྟོན་ཚོས་བྱུང་པར་དཀར་ཚོས་འབྱུང་བོག་ ༧༡ དུ་རྒྱུ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཚོས་འབྱུང་བོག་ ༡༥༧
ནམས་སུ་རྒྱལ་རྒྱུ་མཁན་པོ་རྒྱལ་བའི་ལྷ་ལས་རབ་བྱུང་ཞུས་ཏེ། མཁན་པོས་དེ་ལྷར་བཏགས་པར་
བཤད། འདིའི་གཞོན་ནུའི་མཚན་ཞི་བའི་གོ་ཚེ་ཡིན་ཞེས་ཀུན་ལས་མཐུན་པར་བྱང་།
2 པད་དཀར་ཚོས་འབྱུང་དུ་སློབ་དཔོན་རང་ཉིད་གྱིས་སྤྱོད་འཇུག་ལ་སློབ་བཤད་མཛད་པའི་ཚེ་འདུག་
ཀྱང་། དེ་ལ་འབྲེལ་པ་མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་ཚོས་འབྱུང་གང་ནས་ཀྱང་མི་གསལ།
3 'འདིར་རྒྱལ་རྒྱུ་ནས་བྲོས་ལྷོན་པར་བཤད་ཀྱང་། གྲོང་ཁྱིམ་འདུམ་ཚོར་ཚན་ཀ་ལོ་རྒྱའི་ཡུལ་གྱི་ནགས་
ཚོལ་གྱི་གཙུག་ལག་ཁང་ནས་རབ་བྱུང་གི་ཚོས་གོས་པོར་ནས་གཤེགས་པར་དུ་རྒྱུ་ཐའི་རྒྱ་གར་ཚོས་
འབྱུང་ལས་གསུངས། ཤོག་ ༡༥༦ །
4 'དེ་ལྷོ་ལྷོ་' - བོ་ཉི་ཤོག་ ༣༧ བོད་ དེ་ཉིད།
5 'འདུམ་ཚོ་བྱེད་ཡོད་པ་' - བོ་ཉི་ དེ་ཉིད།
6 'བཀུས་པ་' - བོ་ཉི་ ཤོག་ ༣༧ བོད་

བརྒྱལ་མས་ནས་བྱོན་ཏེ། དེའི་རྒྱལ་པོ་ལ་བདག་བྱིད་ཀྱི་རང་གི་པ་བཟྱི་བྱས་པས་
རྒྱུང་གསུངས་ཏེ། ཉི་མ་རེ་ལ་གསེར་དོ་ལ་ཡུ་བཅུ་བཅུ་ལྷན་པ་དེས་འཚོ་བ་མཛད་
ལ། ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་རལ་གྱི་པ་བྱིད་ཀྱི་རྩིང་པོའི་དོན་དང་མ་བུལ་བར་
མཛད་དོ།

དུས་གཅིག་སྟོན་ཀའི་ཚེ་རལ་གྱི་པ་ཀུན་ལྷ་མོ་ལྷུ་མའི་རྟེན་ལ་མཚོན་པ་
བྱིད་པས། ཁོང་གིས་ཀྱང་དེ་ཁོ་ན་ལྟར་མཛད། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རལ་གྱི་འབྲུང་
པ་ཡིན་པ་ལ། ཀུན་གྱིས་འབྲུང་པའི་ཚེ་ཁོང་གི་རལ་གྱི་གིང་དུ་འདུག་པ་དེ་
གྲོགས་གཅིག་གིས་མཐོང་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྦྲུམ་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་རེ་བྱིད་ཀྱི་
རལ་གྱི་ང་ལ་སྟོན་ཅིག་ཟེར་བ་ལ། (དེ་ན་རེ་)བརྒྱན་ན་བྱིད་ཅག་ལ་གནོད་པར་
འགྱུར་བས་མི་རྒྱུང་གསུངས་པས། གནོད་ཀྱང་སླེའི་དེས་པར་སྟོན་ཅིག་ཟེར་བས།
འོ་ན་མིག་ལ་རེ་འཕོབ་ཅིག་གསུངས་ནས། རལ་གྱི་ཤུབས་ནས་སྤྱང་པས་འོད་མ་
མཚོན་པར་མ་བཀའ་པའི་མི་རྣམས་ཞར་པ་དང་། བཟོད་པར་གསོལ་ཞིང་
གསོལ་བ་བཏབ་པས། དེ་དག་ལ་ཞལ་ཆབ་བྱས་པས་མིག་ཅན་དུ་སོང་ནས་

1 'རྒྱལ་པོ་སྟོན་ལ' - དུས་ཚོས་ བོག ༡༥༥།
2 'དོ་ལོ' - ལྷུབ་ཀུན་ བོག ༣༧/ན. བོ་ཉི བོག ༣༧ བོང་ དེ་ཉིད། = འདིར་རྒྱལ་པོའི་སྟོན་པོ་
བྱིད་པའི་སྟོན་རྒྱལ་ལྷན་ལྷན་ལྷན་སྤྱིར་བྱོན་ཇིས་སུ་བཤད་ཀྱང་དུ་རྒྱུ་མཐོང་ཚས་འབྱུང་དུ་དེ་རྒྱལ་ལྷན་པ་བྱོན་
གོང་གི་གནས་རྒྱལ་ཡིན་པར་གསལ་བར་གསུང་འདུག བོག ༡༥༥།
3 'ཡ་རེ་བཞོབ' - ལྷུབ་ཀུན་ བོག ༣༧/ན. 'ཡ་བ་རེ་ཞོབ' - བོ་ཉི ༣༧ འོག་
4 'ཞར་ནས' - ལྷུབ་ཀུན་ བོག ༣༧/ན. དེ་ཉིད། བོ་ཉི བོག ༣༧ དེ་ཉིད།

ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། མཚོན་གནས་སུ་ཞུས་པས་མ་བཞེད་དེ། དེ་རི་བྲག་ཅིག་འདྲ་
བྱོན་ནས་སྐྱུལ་པའི་རི་དྲུགས་བསད་ཅིང་། དེ་དག་གི་ག་ཟ་བ་མི་ཀུན་གྱིས་
མཐོང་ནས་(དེ་)རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་བཅས་དེར་བྱོན།²

རྒྱལ་པོས་སྐྱེས་པ་བྱིད་ལྔར་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་བརྟུལ་ནས་
ཚོས་ལ་བཞོད། འདིར་ཡང་མིག་ཞར་བ་གསོས་པ་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད། དེ་
འདྲའི་རྒྱས་པ་མངའ་བཞིན་དུ་སློབ་ཆགས་ལ་གཞོད་པ་མཇུག་པའི་ལྷགས་ཡོད་
དམ། ཞུས་པས། ཞི་བ་ལྷན་བདག་གིས་བསད་པ་མ་ཡིན། གསོས་པ་ལགས།
གསུངས་ནས། རྒྱལ་པོའི་སློ་སྤྱོད་ནས་བལྟས་པ་ན། རི་དྲུགས་རྣམས་གཉིས་
འགྱུར་གྱིས་ཆེ་བར་འགྱུར་ཏེ། ཕྱིར་དོན་ནས་རི་དང་ལྷང་པ་ཁྲུབ་པར་གྱུར་པས།
རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་དད་པ་ན། མཐར་རི་དྲུགས་དེ་དག་གར་སོང་ཆ་མེད་
དུ་གྱུར་པས། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་སྐྱུལ་བ་ཡོད་པ་དག་གིས་ནི་ཚོས་ཐམས་ཅད་
མི་ལམ་སྐྱུ་མ་ཅམ་དང་། གདོད་ནས་མ་སྐྱུབ་པར་རྟོགས་པ་ཡང་སྐྱེས་ནས་ལམ་
ལ་གནས་པར་གྱུར་ཏེ། དེའི་ཞལ་ནས་—

དག་གི་བསད་པའི་རི་དྲུགས་རྣམས།
དང་པོ་གང་ནས་ཀྱང་མ་འོངས།
བར་དུ་གང་ལ་ཡང་མི་གནས།

1 'བྲག་ཞིག་དུ' - རྒྱལ་ཀུན་གྱི་ཤོག་ ༣༥/ན. པེ་ཉི, ཤོག་ ༣༧ དེ་ཉིད།
2 'དེར་བྱོན་ནས' - རྒྱལ་ཀུན་གྱི་ཤོག་ ༣༥ དེ་ཉིད། པེ་ཉི ཤོག་ ༣༧ དེ་ཉིད།
3 'བརྟུལ་ནས' - རྒྱལ་ཀུན་གྱི་ཤོག་ ༣༥ དེ་ཉིད།

ཐ་མ་གང་དུའང་འགག་མི་འགྱུར། ༡

གདོད་ནས་མ་གྲུབ་ཚེས་རྣམས་ལ།

བསད་དང་བསད་ཀྱི་གལ་གྲུབ།

ཀྱི་མ་སེམས་ཅན་རྗེས་རེ་རྗེ།

ལྷ་སྲུག་ནི་སྣེ་བར་བྱེད། ༢ ཅེས་གསུངས་ནས།

ཡུལ་དེའི་རྒྱུ་ལ་སོཾ་པ་ཀུན་བརྟུལ་ཡས་ཚེས་ལ་བཀོད་དོ། ।

དེ་བས་ན་དད་གུས་ཚེས་བསྐྱབས་³ན། ལྷ་སྲུག་པས་མཚན་གཅིག་

བསྐྱབས་པས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ནས། ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་

གཅིག་དུ་རྟོགས་དེ། ཡོན་ཏན་གྱི་ཚེས་སྐོད་ཅིག་མ་ལ་ཕྱིར་ནས་མཐར་ལོ་

བརྒྱ་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤོང་དུ་གཤེགས་སོ།

གུ་སྲུག་སྲུག་སྲུག་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ། །

༤༡) གུ་སྲུག་རྒྱ་སྲུག་

གུ་སྲུག་རྒྱ་སྲུག་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ལྷ་རྒྱན་ན་གྲོང་གྲིང་འབུམ་

ཚོ་ལྷ་ཡོད་པ་ལ། རྒྱལ་པོ་གཉིས་ཀྱིས་དབང་བྱེད། སམ་སྤོལ་⁴གྲོང་གྲིང་འབུམ་

1 'བསད་དང་སོད་བྱེད' - པེ་ཉི་ འོག ༣༧ འོག
 2 'བརྟུལ' - ལྷ་སྲུག་ འོག ༣༤/བ. 72.
 3 'སྐྱབས་ན' - པེ་ཉི་ འོག ༣/བ. འོད 190. Vol 87
 4 सम्भवतः 'शाम्बल'

ཚོ་ཕྱིད་དང་གསུམ་ལ་རྒྱལ་པོ་ཨིན་རྒྱལ་ཏིས་དབང་བྱིང། ལྟུ་ཕུ་རིའི་སྲོང་བྱིར་
 འབུམ་ཚོ་ཕྱིད་དང་གསུམ་ལ་རྒྱལ་པོ་ལྷ་ལོ་རྒྱལ་རས་འདབང་དུ་བྱིང་པ་ན། སམ་
 ལྷོ་ལའི་རྒྱལ་པོ་ཨིན་རྒྱལ་ཏི་ལ་སྲིང་མོ་ལཱ་མི་ཀར་བྱ་བ་ལོ་བདུན་ལོན་པ་ཞིག་ཡོད་
 དེ། ལྟུ་ཕུ་རིའི་རྒྱལ་པོ་ལྷ་ལོ་རྒྱལ་ཏི་ལ་སྲོང་དུ་བཏང་བ་ལས། རྒྱལ་བུ་
 ཨིན་རྒྱལ་ཏིས་སློན་པོ་ཀུན་བསྐྱུས་ནས་སྲོལ་བྱས་པ་ལ། འཇམ་ལོ་རྒྱལ་པོ་ཚོས་
 མི་བྱིད་པ་ཙམ་མ་གཏོགས་གཞན་མཉམ་པ་ཡིན་ཟེར་ནས་བཏང་བར་ཆད་
 བྱས། མོ་ཉལ་ཚོས་བྱིད་པ་དང་། མི་བྱིད་པའི་བྱིད་པར་ཡོད་དེ། གཉེན་བྱ་
 ཡིས་གསུངས་ནས་བཞོག།³

དེའི་ཕྱི་ལོ་དེའི་སྐུ་སམ་སྐྱོལ་འོངས་ནས། ལཱི་མུ་ཀར་དང་འཕྲད་
 བྱས་རྒྱལ་བུ་རང་གི་ཡུལ་དུ་ཆས་པ་ལ། ཨིན་རྒྱལ་ཏིས་ཉི་དང་སྲང་པོ་དང་
 གསེར་དངུལ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེས་མང་པོ་བསྐྱར་ནས་བཏང་ངོ་།

དེ་རང་གི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། བས་ཆུང་མ་ག་ཤེ། ཟེར་བོ་ལ། བུ་མོ་
 ཆུང་བས་མ་བསྐྱར་བྱས་པས། དེ་ལེ་ཟེར་ལ། དེ་ཙམ་རྒྱལ་པོ་ཨིན་རྒྱལ་ཏི་ལ་བཙུན་
 མོ་མང་པོ་ཡོད་དེ་ཐམས་ཅད་ཚོས་ལ་དད་པ་གསལ་ཡོད་པས། ལུ་མ་དུལ་

1 'འཇམ་ལོ' - བོ་ཉི་ བོག ༤༠ བོང་ དེ་ཉིད། 'འཇམ་ལོ' ལྷུ་ཀར་ བོག ༣༤
 2 'མཉམ་པ་ཟེར་ནས' - བོ་ཉི་ བོག ༤༠ བོང་
 3 'བཞོག་པས' - ལྷུ་ཀར་ བོག ༣༧/ན. 73.
 4 'ཟེར་ཏེ' - ལྷུ་ཀར་ བོག ༣༧ དེ་ཉིད།

བཟུམ་མོ་དང་བཅས་པས་སྐྱམ་ལུ་ལྷ་པུ་ལ་དབང་དང་གདམས་པ་ལྷུས་ནས་
 ལྷོ་ཕོ་བཟང་བཟོན་པར་གནས་པ་ལ། ལྷམ་གྱིས་ལོ་བཟུང་གྲུག་ལོན་ནས། རྒྱལ་ལོན་
 ཞེས་པའི་རྒྱལ་པོས་མོ་ཉ་བཏང་(དེ)ནས་ལྷམ་གྱི་རྒྱལ་དང་། ལྷམ་གྱིས་
 འཁོར་བ་ལ་ཡིད་འབྱུང་ནས་ལྷོ་ཕོ་བཟང་དེ་གྲུག་པ་ཕོ་བཟང་ནས་ཕྱག་དར་པ་³
 རྗེས་སུ་གཟུང་ནས་མཁའ་རྫོང་དུ་གཤེགས་པ་སོགས་ལྷམ་དང་གི་རྣམ་ཐར་དུ་
 བསལ།

དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་རྒྱལ་པོ་ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་དེ་ལ་ལྷམ་གྱིས་ལོ་རྒྱུ་མཛད་
 རྒྱལ་གྱི་ཕྱིན་དང་མོ་ཉ་བཏང་། [ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་དེས་] “དེ་ལྷམ་མོས་གྲུག་པའི་ས་
 བརྗེས་པ་ནི་ལེགས་ཏེ། དང་ཉིད་ཞི་བའི་མཛད་པ་ནི་མ་ལེགས་” བསུང་དོ།
 །དེ་ནས་ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་དེ་བསམ་པ་ལ་དེ་སྤྱིང་མོ་དེ་སྤྱི་བ་དོན་ཡོད་པར་སོང་
 འདུག་པ་ཡང་རྒྱལ་སྤྱིད་དོན་རྒྱུང་ལ། ཉེས་དམིགས་ཆེ་བ་འདི་སྤངས་ལ་ཚོས་
 བྱེད་དགོས་སྣམ་ནས། དང་གི་སྤྱིས་ལ་རྒྱལ་སྤྱིད་གཏད་དེ་ཁང་བཟང་ཞིག་དུ་

1 ‘གདམས་པ’ - དེ་ཉི་མོག ༤༠ འོག་མོག 190. Vol 87
 2 ‘གྲུག་པའི་ས་བརྗེས་ནས་’ - ལྷོ་ཕོ་བཟང་མོག ༣༧/ན. 75.
 3 ‘ཕྱག་དར་པ་སོགས་རྗེས་སུ་’ - ལྷོ་ཕོ་བཟང་མོག ༣༧ དེ་ཉིད།
 4 ‘གཤེགས་པ་རྣམས་’ - ལྷོ་ཕོ་བཟང་མོག ༣༧ དེ་ཉིད།
 5 ‘བཏང་པས།’ - དེ་ཉི་མོག ༤༠ འོག་ དེ་ཉིད།
 6 ‘དང་ཞི་བའི’ - ལྷོ་ཕོ་བཟང་མོག ༣༧/ན. དེ་ཉིད།
 7 ‘ཁང་བཟང་གཅིག་དུ་’ - ལྷོ་ཕོ་བཟང་མོག ༣༧ དེ་ཉིད། དེ་ཉི་མོག ༤༠ འོག་ དེ་ཉིད།

སྐྱུ་བ་པ་མཛད། ། ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་ལ།
 འཁོར་རྣམས་ཀྱི་མ་ཤེས་ནས། སྲས་དང་འཁོར་འབངས་རྣམས་ཀྱིས་བལྟ་
 ཕྱིན་པ་ནས་དེའི་སྣོ་དབྱེ་བར་བརྟམས་པ་དང་། རྣམ་མཁའ་ནས་སྣོ་མ་དབྱེ།
 ང་འདི་ན་ཡོད་ཟེར་བ་ཐོས་ནས་རྣམ་མཁའ་ལ་བལྟས་པས། དེ་རྣམས་ཀྱིས་
 (རྒྱལ་པོ་)རྣམ་མཁའ་ལ་བཞུགས་པར་མཐོང་ནས་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཙམ་གྱི་
 དགའ་བ་སྐྱེས་ཏེ། དད་བཞིན་དུ་ཕྱག་བྱས་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་འདུག།

ཡབ་རྒྱལ་པོ་རྣམ་མཁའ་ལ་ཞག་བདུན་དུ་བཞུགས་ནས་སྲས་དང་
 འཁོར་འབངས་རྣམས་ལ་ཟབ་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཚོས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་
 གསུངས་ནས་འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་ལྷུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྐྱོད་དུ་
 གཤེགས་སོ།

གུ་རུ་ཨིན་དྲུ་ཏིའི་ལོ་རྒྱུས་རྣོགས་སོ། །

༤༩) གུ་རུ་མི་གོ་སྤྲ།

གུ་རུ་མི་གོ་སྤྲའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྫོགས་ལར་(བོ་གུལ་)ཁ་ཟས་འཚོང་
 པའི་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་གིས་དུས་རྟག་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ལ་འཚོ་བ་
 རྒྱངས་པས། ལན་ཅིག་རྣལ་འབྱོར་པ་ན་ཟེ། རྫོང་ངལ་བསྟེན་བཀུར་བྱེད་པ་ཅི་

1 'མཛད་པས' - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག ༣༧ དེ་ཉིད། པེ་ཉི་ བོག ༤༠ དེ་ཉིད།
 2 'འདུག་པ་དང་།' - པེ་ཉི་ བོག ༤༠ དེ་ཉིད། སྐྱབ་ཀྱན་ བོག ༣༧ དེ་ཉིད།
 3 'བཅས་ལྷུས་དེ་ཉིད' - པེ་ཉི་ བོག ༤༠ འོག་ དེ་ཉིད།

ཡིན། གསུངས་པས། (མི་)དེས་སྤྱི་མའི་ལམ་རྒྱགས་དགོས་པ་ལགས་ཞུས་
 པས། (རྒྱལ་འབྲུང་པས་)འོ་ན་སྤྱི་མའི་ལམ་རྒྱགས་རྒྱལ་རྒྱུས་སམ། གསུངས་
 པས། རྒྱས་ལགས་ཟེར། (དེ་)ནས་དེས་བྱིན་རྒྱལ་འཕེ་བའི་དབང་བསྐྱར་
 མཛད་དེ། སེམས་ཉིད་ངོ་སྟོན་པའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ་།།

རང་སེམས་ཡིད་བཞིན་ལོ་རྒྱུ་ལས།།
 འཁོར་འདས་བྱི་བྲག་རྣམ་པར་འཆར།།
 རྟོགས་དང་མ་རྟོགས་གཉིས་ཡིན་པས།།
 འགྱུར་མེད་སེམས་ཉིད་ངང་ལ་ལྟོས།། ༡

གཉིས་འཛིན་རྣམ་རྟོག་ག་ལ་འབྱུང་།།
 རང་བཞིན་མེད་སྤྱིར་དེ་ཡི་ངང་།།
 ཚོས་རྣམས་གང་ཡང་སྐྱབ་པ་མེད།།
 མ་རྟོགས་འབྲུལ་པའི་འདོད་པས་བཅིངས།། ༢

ཞེས་གསུངས་³པས། དེས་ཀྱང་རྣམ་པ་རང་གི་སེམས་སྲུ་གོ་སེམས་
 དེས་འགྲོ་འོང་མེད་པ་གནས་ལུགས་ཀྱི་ངང་དུ་གོ་ནས། རང་སེམས་འགྱུར་བ་

1 'རྒྱས་ལགས་ཟེར་ནས།' - རྒྱལ་ཀྱན་ཤོག ༣༧/བ. དེ་ཉི་ཤོག ༧༡/ཁོང་།
 2 'ལོ་རྒྱུ་ལས' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༡ ཁོང་དེ་ཉིད།
 3 'ཅེས་གསུངས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༡ ཁོང་དེ་ཉིད།

མིང་པའི་དོན་ལ་གནས་པས། ཟླ་བ་དུག་ནས་འབྲུལ་པའི་རྟོག་པ་འགགས་
ནས་རང་སེམས་གཉུག་མའི་དོན་རྟོགས།

(དེ་ནས་དེ་)གཅན་གཟན་ལྟར་དུ་སྐྱོད་འཁྲིམ་པར་བྱེད་ཅིང་། དེས་
སྐྱོན་པའི་སྐྱོད་པས་སྐྱོང་དང་སྐྱོང་བྱིར་དུ་འོངས་ནས། མིག་བབས་ནས་འཛིགས་
འཛིགས་སུ་བལྟས་པས། རྒྱ་བོ་དག་སླ་མ་འཛིགས་འཛིགས་སུ་ལྟ་བ་ཟེལ། (དེ་
ནས་) ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་‘མེ་ཀོ་ལུ་’ཞེས་བྲགས་སོ།

དེས་ཟབ་མོའི་ཚོས་ཀྱིས་གདུལ་བྱ་མང་དུ་བདུལ་ཅན་ས། མཐར་རྟོགས་
པ་ལ་སོགས་པ་བཅོད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གུ་ལུ་མེ་ཀོ་ལུ་ལོ་ལྷན་པུ་ལོ་ལྷན་པུ་སོ། །

༧༧) གུ་ལུ་ཀོ་དལི་ལྷན་པུ་

གུ་ལུ་ཀོ་དལི་ལྷན་པུ་ལོ་ལྷན་པུ་ ཡུལ་རྫུ་མེ་གུར་བྱ་བ་ཅན་ཞག་བཞིར་
ཕྱིན་པའི་ས་ན། གནས་དང་ཡུལ་གྱི་ཚེད་དུ། ཀོ་དལི་ལྷན་པུ་རྟོག་ཅེས་སྐྱོད་ཅེས་སོ།

-
- 1 'དུར་སྐྱོད་དུ་འཁྲིམ' - རྒྱལ་ཀྱན་ འོག 30/བ. 74.
 - 2 'བརྟུལ་ནས' - བེ་ཉི་ འོག ༧༡ བོང 190. Vol 87
 - 3 'བཅོད་དེས' - བེ་ཉི་ འོག ༧༡ བོང དེ་ཉིད།
 - 4 'ཀོ་དལི་ལ' - རྒྱལ་ཀྱན་ འོག 32/ན. 75. 14. བེ་ཉི་ འོག ༧༡ དེ་ཉིད།
 - 5 'རྫུ་མེ་གུར་ཡུལ་བྱ་བ་ནས' - རྒྱལ་ཀྱན་ འོག 32/ན 75. བེ་ཉི་ འོག ༧༡ དེ་ཉིད།

ཞིག་བཞོ་ཞིང་ཡོད་པའི་མེ། ལྷོ་བ་དཔོན་གྲུ་རྩི་པ་སི་རྒྱལ་འོ་རྒྱལ་པོ་ས་གདན་བྱངས་
དེ་སྐར་ཡུལ་དབུས་སུ་འོག་ཕྱིན་པ་དང་མངལ།

ལྷོ་བ་དཔོན་གྱིས་བྱིད་ཅི་བྱེད། ལྷོ་ས་པ་དང་། དེས་ཀྱང་སྐྱུ་ཁམས་ལ་
སོགས་པ་ལྷུས་ནས། དངོས་རི་བཞོ་ཡིན་གདའ་ལྷུས་པ་དང་། རི་བཞོ་ནས་ཅི་
བྱེད་གསུངས་པ་ན། རྒྱལ་པོ་ངན་པ་ཀུན་གྱིས་ཡུལ་བཞིག་ནས་མི་ཐམས་ཅད་
སྐྱུག་བསྐྱེད་ཞིང་ཡིད་མི་བདེ་བས། ཡུལ་ཡང་མེད་པས་ས་འདིར་བདག་རི་འདི་
བཞིག་ནས་འདིར་གནས་དང་ཡུལ་བྱེད་པ་ཡིན་ཞེས་ལྷུས་པས། གྲུ་རྩི་པས་སྐྱུས་
པ་²རི་བོ་བཞོ་བའི་སྐྱུགས་དང་གདམས་³ངག་ང་ལ་ཡོད་ན་དེ་བྱོད་ལ་མི་དགོས་
སམ། ⁴གསུངས་པ་དང་། དགོས་ཞེས་ལྷུས་པས། དེའི་ཞལ་ནས་—

བྱོད་ཀྱི་ལས་ནི་འདི་ལྟ་བུས།

ལུས་ནི་ངལ་བར་གྱུར་པས་⁵ན།

ལས་ནི་ཤིན་དུ་ངན་པ་སྟེ།

ཕྱིན་ཅི་འོག་གི་ལས་དུག་ཡིན། །

ས་བཞོ་བ་ནི་སྐྱིན་པ་དང་།

1 'ཞེས་ལྷུས་པས།' - དེ་ནི་ཤོག ༧༡ འོག་དེ་ནི་དེ།

2 'གྲུ་རྩི་པས་གསུངས་པ།' - དེ་ནི་ཤོག ༧༡ འོག་དེ་ནི་དེ།

3 'གདམས་ངག' - དེ་ནི་ཤོག་དེ་ནི་དེ།

4 'ཞེས་སྐྱུས་པས།' - ལྷོ་བ་ཀུན་ཤོག ༣༤/ན 75. 14.

5 'གྱུར་པ་ན' - ལྷོ་བ་ཀུན་ཤོག ༣༤/ན

གཞན་ལ་མི་གོད་ཚུལ་སློམས་དང་།

སྐྱབ་བསྐྱུལ་བཟོད་པའི་བཟོད་པ་དང་།

དེ་ལ་བཙོན་པའི་བཙོན་འགྲུས་དང་། ३

དེ་ལ་མ་ཡིངས་བསམ་གཏན་དང་།

དེ་ཤེས་པ་ཡི་ཤེས་རབ་སྟེ།

ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ལས་དུག་པོ།

།སོལ་ལ་ཡང་དག་ལས་དུག་གྱིས། ३

སླ་མ་ལ་གུས་སྦྱིན་པ་དང་།

རང་རྒྱུད་བསྐྱུང་པའི་ཚུལ་སློམས་དང་།

སེམས་ཉིད་བཟོད་པའི་བཟོད་པ་དང་།

དེ་བསྐྱོམས་པ་ཡི་བཙོན་འགྲུས་དང་། ८

དེ་ལ་མ་གཡིངས་བསམ་གཏན་དང་།

དེ་ཉིད་ཤེས་པའི་ཤེས་རབ་སྟེ།

དུས་ཚམས་ཉུག་ཏུ་གོམས་པར་གྱིས། ॣ

1 'སྐྱུངས་ལ' - པའི་ཉི་ཤོག ༧༡ ལོག་དེ་ཉིད།

2 'རང་རྒྱུད་སྐྱུང' - སྐྱབ་ཀྱིན་ཤོག ३५/ན. 75.

3 'དེ་སྐྱོམས་པ' - སྐྱབ་ཀྱིན་དེ་ཉིད།

ཞེས་ཁག་སྐྱུང་ས། ཀོད་ལེས་²ཡང་དེའི་དོན་བསྐྱུས་བཞིག་ལྷུ་ལྟ་ཟེར་³

བལ། (བློན་པས) —

དེ་ཡང་སླ་མ་ལ་གུས་པར་གྱིས། བདེ་སྐྱུག་ཐམས་ཅད་རང་གི་སེམས་
ལས་བྱུང་བས་རང་སེམས་གཉུག་མའི་དོན་ལ་གོམས་པར་གྱིས། དེ་ཡང་རང་
སེམས་གཉུག་མ་འགྱུར་བ་མེད་པ་ནི་རི་དང་འབྲུ་ལ། རིག་པ་གསལ་ལ་མ་
འགག་པ་དེ་དོག་ཅེ་དང་འབྲུ་བས་ཤོས་ཤིག་བཙོན་འགྱུས་གཉིས་པོ་ལག་པ་
གཡས་གཡོན་དང་འབྲུ་བས་མ་བུལ་བར་བཞོད་གོས་པ་ཡིན་གསུངས་ནས། དེ་
ཡང་⁴ཆོགས་སུ་བཅད་ནས་གསུངས་པ། —

བདེ་སྐྱུག་ཐམས་ཅད་སེམས་ལས་བྱུང་།།

གདམས་པས་སེམས་ཀྱི་རི་བོ་ཤོས།།

ས་ཡི་རི་བོ་བཞོས་གྱུར་གྱང་།།

གཉུག་མའི་བདེ་ཆེན་རྟོགས་མི་འགྱུར།། ༦

1 ‘ཤེས་གསུངས་པས’ - དེ་ནི་ཤོག ༩། འོག་དེ་ནི་ད།
 2 ‘ཀོད་ལེས། དེའི་དོན’ - དེ་ནི་ཤོག ༩། འོག་དེ་ནི་ད།
 3 ‘ཟེར་བས།’ - དེ་ནི་ཤོག ༩། འོག་དེ་ནི་ད།
 4 ‘དེ་ལྟར་ཆོགས་སུ་བཅད་’ - དེ་ནི་ཤོག ༩། བོད་ 191. Vol 87

ཞེས་འགས་ལ་ཕ་བཞི་ན་དུ་དེས་ཀྱང་བསྐྱོམས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་
ནས་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།²

དེ་ནས་འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཛད་དེ།³ ལྷས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་རྫོན་
དུ་གཤེགས་སོ།

གུར་ཀོང་ལི་ཡུའི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

-
- 1) 'ཅེས་གསུངས་པ' - དེ་ཉི, བོག ༥༣ དེ་ཉིད།
 - 2) 'ཐོབ་སྐྱེ' - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༤/བ. 76 དེ་ཉིད། དེ་ཉི, བོག ༥༣ བོང དེ་ཉིད།
 - 3) 'མཛད་ནས' - ལྷུ་ཀྱན་ བོག ༣༤ དེ་ཉིད། དེ་ཉི, བོག དེ་ཉིད།

८५) सुवर्षवः वसुदेवः ।

सुवर्षवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः

‘वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

1 'कमरिपा, (कंपरिपा) - राहुल, पुरा० त० नि० पृ० १२३ ।

2 'सुवर्षवः' - सुवर्षवः वसुदेवः ३५ वसुदेवः वसुदेवः 'सालिपुत्र' राहुल० वही ।

3 'वसुदेवः' - सुवर्षवः वसुदेवः ३५ वसुदेवः 'वसुदेवः' वसुदेवः ३५ वसुदेवः

4 'वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः वसुदेवः

5 'वसुदेवः' - सुवर्षवः वसुदेवः ३५/५ वसुदेवः

6 'वसुदेवः' - वसुदेवः वसुदेवः ३५ वसुदेवः 191. Vol 87.

གསུངས་པས། དེ་དག་དགའ་ནས་ཕྱག་དང་མཚོད་པས་མཉེས་པར་བྱས་ནས་
གདམས་པ་ལུས་པས། བྱིན་རྒྱལས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐྱུར་ནས་དམིགས་པ་ཅུ་
གསུམ་གྱི་གདམས་པ་(འདི་ལྟར་) གནང་སྟེ།

ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱིའི་སྤྱད་པ་དང་། སོལ་བ་དང་། མི་དང་། ལྷགས་བལྟ་བའི་
དམིགས་པ་འདི་ནང་དུ་སྒྲུབས་ཤིག ཅུ་རོ་མ་དང་རྒྱང་མ་གཉིས་སྤྱད་པར་གྱིས།།
ཅུ་ཨལ་²རྒྱ་ཉི་སོལ་མལ་དུ་གྱིས། རྣམ་ཤེས་མགར་བར་གྱིས། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་
སྒྲོར་³། རྣམ་རྟོག་སོལ་བར་གྱིས། དུག་གསུམ་ལྷགས་སུ་གྱིས་ལ་དུང་⁴དང་།
ཚོས་སྐྱ་གཉིས་མེད་བདེ་ཆེན་གྱི་བཟོའི་འབྲས་བུ་སྟོན་ནས་འོང་བ་ཡིན་གསུངས་
ཏེ། [དེའི་དོན་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དེ་གསུངས་པ།]

ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱིའི་ལས་དག་ལ།
གོམས་པ་བཞིན་དུ་ནང་དུ་ཡང་།
ལལ་རྒྱ་དང་རས་རྒྱའི།
གཡས་གཡོན་སྤྱད་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ། །

1 'གྱིས་ཤིག' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
2 'ཨལ་རྒྱ་ཉི' - ལྷུག་ཀུན་ཤོག ༣༩/ན 77.
3 'ཡེ་ཤེས་མེར་གྱིས' - ལྷུག་ཀུན་ཤོག ༣༩/ན
4 'བདུངས་དང་།' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
5 'གསུངས་ནས' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།

ཨམ་རྒྱུ་ཉིའི་སོལ་མལ་དུ།
 རྣམ་པར་ཤེས་པའི་མགར་བ་ཡིས།
 རྣམ་པར་རྟོག་པའི་སོལ་བ་ལ།
 རིག་པ་ཡི་ཤེས་མེ་སྤར་ནས། ༩

དུག་གསུམ་ཉོན་མོངས་ལྷགས་བཞུ་²ལྟེ།
 ཆོས་སྐྱེ་བའི་མེད་འབྲས་བུ་གྱིས། ༩

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་རང་གི་ལས་དང་བསྐྱེད་ནས་བསྐྱོམས་པས། ལོ་དུག་ན་ཕྱག་གྱེ་ཆེན་པོའི་དངོས་སྤྱུལ་ཐོབ་ལ། གཞན་གྱིས་མ་ཆོར་བ་ན། སོལ་མལ་དུ་འབད་པ་མེད་པར་བཟོ་སྐྱོ་ཆོགས་སྤྱུལ་པ་དང་། སྤྱི་ལོ་ལྷན་པོ་གྱེ་བོ་ཀུན་ལོ་སྐོལ་གྱི་མགར་བ་འདིས་ཡོན་ཏན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོབ་ནས་འདུག་ཟེར་ནས། རོ་མཚར་ཏེ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་སྒྲ་མ་གྲིལ་ལོ་སྤྱི་ལོ་ཞེས་གྲགས།

དེས་ཀྱང་འགྲོ་དོན་མང་དུ་བསྐྱབས་ནས་ [མཐར་རང་གི་] རྟོགས་པ་ལ་སོགས་པ་བརྗོད་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།
 གུར་གྲིལ་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། ॥

1 'སོ་མལ་དུ།' - བེ་ཉི, ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
 2 'གཞུ་སྐྱེ' - བེ་ཉི, ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
 3 'ཐོབ་པ་གཞན་...' - བེ་ཉི, ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
 4 'སྤྱི་ལོ་ལྷན་པོ་གྱེ་བོ་ཀུན་ལང་' - བེ་ཉི, ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
 5 'གྲགས་ལ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག ༣༧/ན 77

༧༩) གུར་ལྷུ་ལ་ན་རྒྱ་ས།

གུར་ལྷུ་ལ་ན་རྒྱ་སའི་ལོ་རྒྱུ་ས་ནི། ལྷུ་ལ་ན་རྒྱ་ས་སྐྱེ་བྱ་བ་འཇིན་བྱ་བ་ཡིན། ཡུལ་
 བཀའ་ཐོབ་ཐོབ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ལ། རིགས་གྲུ་མ་ཟེ་ཡིན་པ་ལས། འཁོར་བའི་ཚོས་
 ལ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་དུར་ཁྲོད་དུ་སྐྱེན་ཏེ། ཤིང་གཅིག་གི་ཚར་བསྐྱེད་པས་ཤིས་པ་
 བདེ་བ་སྐྱེས་ཤིང་པ་ན། རྣམ་མཁའ་ནས་རྒྱུ་མ་གཅིག་གིས་རིགས་ཀྱི་བྱ་ཁྲོད་ཡང་
 དག་པའི་དོན་ཡིད་ལ་གྱི་ཤིག་ཟེར་བའི་སྐྱེ་བྱུང་བ་དང་། དེ་དགའ་ནས་ཡང་དང་
 ཡང་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་པས། ཡི་ཤིས་ཀྱི་རྒྱུ་མས་ཞལ་དངོས་སུ་བསྐྱེན་ནས་
 དབྱེས་དོར་དུ་དབང་བསྐྱེད་ཏེ། རྩོགས་པའི་རིམ་པའི་མན་ངག་འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ།

“སྤྱི་ནང་ཁམས་གསུམ་སྐྱོད་བརྒྱན་ཐམས་ཅད་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་
 གསུམ་དུ་འདུས། དེ་གསུམ་གྱི་རྣམ་ཉོག་ཅུ་གསུམ་དུ་འདུས། ཅུ་གཉིས་རྒྱ་རྒྱུ་རྒྱ་
 འདུས་པ་ལ། དེ་རུ་བྲན་རིག་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་ཉོག་པ་སྤྱི་བོ་ཚངས་པའི་བྱ་ག་ནས་
 ཡར་ཐོན་ལ་སྐྱང་སྐྱོང་དབྱེར་མེད་དུ་སྐྱོམས་ཤིགས་”པའི་གདམས་པ་བྱིན་ནས།

སྤྱི་ནང་ཚོས་རྣམས་མ་ལུས་པ།
 ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དག་དུ་འདུས།
 གཡས་གཡོན་ཞུས་རྒྱུ་རྒྱུ་རྒྱུ་འདུས།
 དེ་ཡང་ཚངས་པའི་བྱ་ག་སྤྱི། །།

སྐྱོང་པ་ཉིད་དེ་བདེ་ཆེན་མཚོགས།

1 ‘ཞེས་བྱ་བ་ཡིན།’ - དེ་ཉི་ཤོག་ ༧༩ འོག་ དེ་ཉིད།

རྣལ་འབྱོར་དག་པའི་ངང་ལས་འབྱུང་།།

བདེ་སྣོང་བྱང་འཇུག་བསྐྱེལ་བར་འཚེལ།། 3

ཞེས་གསུངས་།། དེ་ལྟར་རྫོག་པའི་རིམ་པ་གནང་བ་ནི། དེས་ཀྱང་
བསྐྱེལས་པས་ལོ་བདུན་ན་ཕྱག་གྱུ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ། དེ་ནས་ཉོགས་པ་
བཟོད་དེ། འགྲོ་བ་དཔག་དུ་མེད་པའི་དོན་མཛད་ནས་འཁོར་གསུམ་བརྒྱ་དང་
བཅས་པ་མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུ་རྒྱལ་ནུར་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། ॥

༧༧) གྲུ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་

གྲུ་རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་ནི། རྒྱུ་ལོ་རྒྱུ་སྐྱེ་སྐྱེ་གཅན་འཇིག་བྱའོ། དེ་

ཡང་ཡུལ་ཀུམ་རུལ། རིགས་དམངས་རིགས་སོ།།

དེ་གསུམ་ནས་ལུས་པོ་སྐྱོར་མི་བཟོད་པ་དང་། བཞེན་དང་བྱ་ཀྱན་ཡང་

གཤེ། བརྒྱས་པ་བྱེད་ནས་དེ་མ་དགའ་སྟེ། སྐྱེ་བ་སྐྱེ་མ་དུ་ན་ལྟོད་

1 'ཅེས་གསུངས་' - བེ་ཉི, བོག ༧3 བོང བོག 191. Vol 87.

2) 'གནང་ནས་' - སྐྱེ་བ་ཀྱན་ བོག 32/བ 78. བེ་ཉི, བོག ༧3 བོང དེ་ཉིད།

3) 'ཐོབ་སྟེ།' - སྐྱེ་བ་ཀྱན་ བོག 32/ བ དེ་ཉིད། བེ་ཉི, བོག ༧3 བོག དེ་ཉིད།

4) 'རྒྱལ་ནུར་' - སྐྱེ་བ་ཀྱན་ 32 དེ་ཉིད། རྒྱལ་ནུར་ བེ་ཉི, བོག ༧3 དེ་ཉིད།

5) 'རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་' - བེ་ཉི, ༧3 བོང་།

དུ་ཕྱིན་པ་དང་། དེའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་བྱོན་ནས། བྱོད་དུར་བྱོད་
ན་ཅི་བྱོད་ཅིང་འདུག་བྱས་པས། དེ་ན་རེ—

བདག་གི་ལང་ཚོའི་ལྷ་བ་དེ །།
གས་པའི་སྐྱ་གཅན་གྱིས་བཅོམ་ནས།།
བྱ་ཚ་ལ་སོགས་གཤེ་བར་བྱོད།།
ཤིན་དགའ་བས་གནས་ན་ཡོད།། ༡

ཉུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་དེ་ལ་སྐར—

བྱོད་ཀྱི་རྣམ་སྤྲིན་འབྱུང་བ་ལ།།
ཚུ་བོ་གསུམ་གྱིས་གཡེངས་ཟེན་ནས།།
ད་ནི་འཆི་བའི་ཚུ་བོ་འབྱུང་།།
འཆི་རྒྱགས་ཚོས་ཤིག་མི་བྱོད་དམ།། ༢

གསུངས་པས། ལྷ་མ་(ལགས་) ཚོས་བྱོད་ལགས་ཏེ། བདག་གས་ཤིང་
མོར་དང་བྲལ་བ་ལ་ཚོས་སུས་སྦྱེས། ཟེར་བ་ལ། ཡང་དེའི་ཞལ་ནས —

གཉུག་མའི་སེམས་ལ་གས་པ་མེད།།
དད་སོགས་མོར་ལ་འགྲིབ་པ་མེད།།
གས་པས་དམ་ཚོས་སྐྱུ་བ་རུས་ན།།

1 'ལྷ་བ་ལ།' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ བོང་། ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༣༧/བ 78.
2 'གནས་པའོ།' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ འོག་དེ་ཉིད།
3 'ཚོས་ཅིག་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༣༧/བ 78. བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ འོག

ཁྱོད་ནི་བདག་གིས་རྗེས་བརྒྱུང་འགྲུ། 3

ཞེས་གསུངས་2ཏེ། སྤྱི་ཚུལ་ལས་འཕྲོ་བའི་དབང་བསྐྱུར་བྱས་ནས་ཐོག་
ལའི་གདམས་པ་3འདི་ལྟར་བྱིན་ཏེ་4།

“ཁྱོད་ཀྱི་སྤྱི་བའི་སྤྱིང་དུ་ཨ་ལས་ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྐྱོམས་ལ།
དེའི་ནང་དུ་སྤྱང་སྤྱིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྟོག་པ་ལུགས་པར་སྐྱོམས་ཤིག” ཅས་དང་།

ཡང་—

“གཉིས་མེད་རྟོགས་5པའི་སྐྱ་གཅན་གྱིས།

གཟུང་འཛིན་རྟོག་པ་བཅོམ་ནས་ནི།

སྤྱི་བོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སུ།

ཟབ་པའི་ཐོག་ལའི་ངང་ཉིད་ལས། 6

བདེ་སྤོང་བྱུང་འཇུག་སྐྱུན་དག་གིས།

མུང་པོ་ལ་སོགས་དག་བཅོམ་ནས།

སངས་སྐྱེས་རྣམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་འབྱུང་།

ཞེས་འགག་མེད་ངོ་མཚར་ཆེ། 7

-
- 1 ‘བརྒྱུང་གྲུ།’ - པེ་ཉི་ཤོག ༤3 འོག་དེ་ཉིད།
 - 2 ‘ཅས་གསུངས་’ - པེ་ཉི་ཤོག ༤3 འོག་
 - 3 ‘གདམས་པ་’ - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༤0/ན 79.
 - 4 ‘བྱིན་ཏེ’ - པེ་ཉི་ཤོག ༤3 འོག་དེ་ཉིད།
 - 5 ‘རྟོག་པའི་’ - པེ་ཉི ༤3 འོག་དེ་ཉིད།
 - 6 ‘ངང་ལས་’ - པེ་ཉི ༤3 འོག་དེ་ཉིད།

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བསྐྱོམས་པས། ཇི་ཞིག་ཙམ་ན་
 གཉིས་འཛིན་གྱི་ཟླ་བ་ཐམས་ཅད་གཉིས་མེད་སྐྱབ་གཙན་གྱིས་ཟོས་ནས། གཉིས་
 མེད་ཀྱི་བདུད་ཚི་སྤྱི་པོའི་ཚངས་པའི་བྱ་ག་ནས་མར་ཞུགས་པས། ལུས་ཐམས་
 ཅད་བདུད་ཚིས་གང་ཞིང་རྒྱས་ནས། ལོ་བཅུ་དྲུག་ལོན་པའི་ན་ཚོད་དུ་གྱུར་ནས།
 ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྤེ། ཀུམ་རུལ་ལ་སོགས་པའི་སྤྱི་བོ་མང་པོ་བདུལ་
 བས་མཐར་ཉོགས་པ་བརྗོད་དེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུར་རུལ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

༧༤) གྲུར་རྒྱམ་སྤྱ།

གྲུར་རྒྱམ་པའི་ལོ་རྒྱུས་མི། རྒྱམ་སྤྱ་སྤེ་ཚོས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་བོ་རྫི་རྒྱ
 གར་བྱ་བ་ན། དེ་པརྫི་ཏ་ཡིན་པ་ལ། ཟླ་བ་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་སྐྱབ་པ་གཙོ་བོར་མ་
 བྱས་པས། སྤྱིས་བགྲེས་ནས་སྤྱན་ལོང་བ་དང་། དེ་ལ་འདི་ལྟ་བུའི་སེམས་པ་སྤྱིས་ཏེ།
 བདག་སྒྲ་མ་ཞིག་འདང་འཕྲད་ན་ཅི་མ་རུང་སྐྱམ་པ་དང་། མི་ལམ་དུ་འགྲུག་མས་
 ལུང་བསྐྱན་པ་ནི། “ཁྱོད་ཀྱི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ང་ཡིན་ནོ” ཞེས་ཟེར་བ་ལ།
 དེས་གསོལ་བ་བཏབ་པས། འགྲུག་མས་དེ་ལ་དངོས་སུ་ཞུ་ཞུ་བསྐྱན་ཏེ་དབང་བསྐྱར་
 བས། གདམས་ངག་²(གནང་བ་)ནི། ཚོས་ཐམས་ཅད་སྤོད་དུ་སྐྱོམས། ཉོག་པ་
 ཐམས་ཅད་མར་དུ་སྐྱོམས། རང་གི་རྣམ་ཤེས་སྤོང་བུར་སྐྱོམས། དེ་ལ་ཡི་ཤེས་
 ཀྱི་མི་འབར་བར་སྐྱོམས་ཤིག་གསུངས་ཏེ། དེ་ཚིགས་སུ་བཅད་པར་གསུངས་པ།

1 'སྒྲ་མ་ཅིག་དང་' ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༧༠ ན 79. དེ་ཉིད་ བེ་ཉི བོག ༧༧ བོང་ དེ་ཉིད།
 2 'གདམས་པ་ནི་' . བེ་ཉི བོག ༧༧ བོང་ དེ་ཉིད།

ཚོས་རྣམས་མ་ལུས་སྒྲོང་ནང་དུ།

རྣམ་པར་རྟོག་པའི་མར་སྤྲུགས་ཀྱིས།

རིག་པའི་སྒྲོང་བྱུང་མེ་སྐར་བས། ༡

སེམས་ཉིད་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་མཐོང་། ༡

ཞེས་ 4གསུངས་པས། རྟོག་པ་ཡི་ཤེས་སུ་སྒྲོང་བའི་མན་ངག་དེ་བརྒྱབས་
པས། ལོ་ལྔ་ནས་དུག་ལ་སྤྲུག་གིས་བདེ་བ་ལྟར་པ་ལྟར་རྟོག་པ་ཡི་ཤེས་སུ་གྱུར་ནས། ལུས་
གྱིས་པ་ལོ་བརྒྱུད་པ་ལྟར་སོང་སྟེ་སྟེ་བོ་དག་ངོ་མཚར་བར་གྱུར་དོ། །དེའི་ཞལ་ནས་

ཇི་ལྟར་རྒྱ་རྒྱུན་ཚོགས་པ་ན།

འབྲས་བུ་སྒྲོང་པར་ག་ལ་འབྱུང།

དེས་ན་སློ་སློས་གསལ་ལྡན་པས།

དེ་ལ་རབ་དུ་འབད་པ་བྱ། ༢

ཞེས་ 5གསུངས་དེ། སློག་མཁན་གྱི་ཚུལ་གྱིས་འཇུག་དོན་མང་དུ་མངོན་
ནས། མཐར་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུ་རྒྱུ་ལྡེ་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

-
- 1 'སྤྲུག་ནས་' ཤེ་ཉི་ ཤོག་ དེ་ཉིད།
 - 2 'རིགས་པའི་སྒྲོང་བྱུ་མེ་སྐར་བར་' ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ལེ་ ཞོང་ དེ་ཉིད།
 - 3 'རིགས་པའི་སྒྲོང་བྱུ་མེ་སྐར་བར་' ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ལེ་ ཞོང་ དེ་ཉིད།
 - 4 'ཅེས་གསུངས་' ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ལེ་ ཞོང་ དེ་ཉིད། 'ཞེས་' དང་ 'ཅེས་དེ་' ཚིག་ 'ཅེས་' སྤྲུ་འདི་ལ་
ནོར་བུ་མང་བས་སྤྲུགས་ཐོབ་ཤེས་དགོས།
 - 5 'ཅེས་གསུངས་' ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ལེ་ དེ་ཉིད།
 - 6 'སློག་མཁན་གྱི་ཚུལ་གྱིས་' ཞེས་པ་ཤེ་ཉི་ དཔལ་ལ་མི་འདུག་ ཤེ་ཉི་ ཤོག་ ལེ་ ཞོང་ ལྟོས།

༧༩) གྲུབ་རྫོག་རིམ།

གྲུབ་རྫོག་ལོ་རྒྱུས་ནི། རྫོག་རིམ་གྱི་སྒྲིབ་ཁྲུང་བ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། དེ་
 ཡང་ཡུལ་སྐྱེའི་ཡུལ་གྱི་བ་ན་དམངས་རིགས་ཤིག་ཡུལ་ཉལ་གྱི་སྒྲིབ་ཁྲུང་ནས་སྒྲིབ་
 ལོན་ཅི་ཞིང་སྒྲིབ་དུ་འཇུག་པ་ལ། དུས་གཅིག་ན་འཇུག་རྒྱུའི་རྗེས་ཙང་མ་ཁྲུག་ནས་
 ཤིང་དུང་གཅིག་གི་ཚར་འདུག་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་འབྱོར་ནས་དེ་ལ་
 བསྐྱངས་⁴པས། (དེས་)བདག་ལ་དེ་རིང་ཁྱོད་ལ་དུང་རྒྱུའི་རྗེས་ཙང་མ་མཚིས་
 ཟེར་བ་ལ། འོ་ན་ཁྱོད་ལ་ཚོས་མི་དགོས་སམ། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ་དགོས་
 ལགས་ཏེ་དགོ་བའི་བཤེས་གཉེན་དང་མ་ཕྱད་པ་ལགས། ཟེར་བ་ལ། དེས་སྐྱབ་
 རུས་སམ་གསུངས་པས། རུས་ལགས་ཞུས་པ་དང་། དེས་དབྱེས་རྗོར་དུ་དབང་
 བསྐྱར་ནས་བསྐྱེད་རྗོགས་གྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་། —

‘གྲུབ་རྫོག་རིམ་ཁྱོད།
 ཚོས་གྲི་དབྱིངས་གྲི་སྒྲིབ་ནང་དུ།
 རིག་པའི་རྗེས་རྣམས་བཅུག་ནས་ནི།
 དེ་ནི་གཉེས་སུ་མེད་པར་སྐྱོམས། །

1 ‘རྫོག་རིམ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ བོང་དེ་ཉིད།
 2 ‘རིགས་ཞིག’ - སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག ༧༠/ བ་དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ བོང་དེ་ཉིད།
 3 ‘པ་ཅིག’ - སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག ༧༠/བ 80. དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ འོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘སྐྱངས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ འོག་དེ་ཉིད།
 5 ‘ཟེར་བས’ - སྐྱབ་ཀྱི་ཤོག ༧༠/ བ 80. དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ འོག་དེ་ཉིད།

ཞེས་ཁ་གསུངས་ཏེ། དེས་ཀྱང་བསྐྱེམས་པས་དོན་དོགས་ཏེ། ལོ་གསུམ་ན་
དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ། དེ་ཡང་སྒྲོང་ཁྲུལ་གྱི་བསྐྱེད་པ་ལས་ཀྱི་སྒྲོང་པ་ལས་ཀྱི་སྒྲོང་པ་
འདི་ཅི་ཡིན། ཟེར་བ་ལ།

སྒྲོང་ཉིད་ཆེན་པའི་སྒྲོང་ཁྲུལ་ནས།

བདེ་ཆེན་འབྲས་བུ་སྒྲོང་བ་ལགས།

འདོད་པ་དང་བཅས་སྟོགས།

སྐལ་ལྷན་ཀུན་གྱིས་མ་ཤེས་སམ། 3

ཞེས་གསུངས་ནས། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཇུག་དེ། ཉོགས་པ་བཟོད་ [པ་
སོགས་མཇུག་] ནས་མཚན་སྟོགས་ཞེས་གྲགས།

མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྒྲོང་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་ཐོབ་ཐུགས་ལྷན་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ།

1 ‘ཤེས་གསུངས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ འོག དེ་ཉིད།
2 ‘ཐོབ་ཏེ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ འོག ཐོབ་སྟེ། ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༧༠/བ
3 ‘སྒྲོང་པས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
4 ‘གྲགས་ལ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༧༠/ བ 80.

༥༠) ལྷན་སྐྱོང་གི།

ལྷན་སྐྱོང་གི་འོ་རྒྱུ་གི། མི་རྒྱུ་མི་རྒྱུ་ཞིང་པ་ཞེས་བྱ་ལ། དེ་རིགས་(ཀྱི་) དམངས་རིགས་དང་། ཡུལ་སྐྱེའི་ཡུལ་བ་ལོ་ལ།

དེ་ཡང་དུས་ལྡན་གཅིག་ཞིང་ལས་བྱས་ཡམས་ཐང་ཆད་ནས་འདུག་པ་ དང་། དེ་རྒྱལ་འབྲེལ་པ་ཞེས་འོངས་ནས་ཁྱོད་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ཅེས་སྐྱེས་ པས། དེ་ན་རེ། བདག་ཞིང་ལས་ཀྱིས་ཆད་ནས་འདུག་གིན་གདའ་བྱས་པས། (རྒྱལ་འབྲེལ་པ་) དེ་ན་རེ། རྒྱལ་བཟུང་འདི་འདྲ་བ་ལ་མི་སྐྱོ་འཕྲ། ཆོས་ཀྱིས། བྱས་པས། དེ་ན་རེ།

བདག་ལ་ཆོས་སྐྱེས་སྤེར་བེད་ལོ། རྒྱལ་བཟུང་ན་(ཆོས་)ངས་སྤྱིན་གྱིས། གསུངས་པས། རྒྱལ་ལགས་བེད་ནས། དེ་ལ་རྒྱལ་འབྲེལ་པས་དབང་བསྐྱེད་ པསྤྱིད་ཚོགས་ཀྱི་གདམས་ངག་སྤྱིན་ནས་སྐྱོམ་དུ་བཅུག་པ་ལ། རྒྱལ་བཟུང་པའི་ དབང་གིས་ཞིང་ལས་ཀྱི་རྒྱལ་པར་ཚོགས་པ་ལ་གཡེངས་ནས་སྐྱོམ་དུ་མ་འདོད་པ་ ལ། དེ་སྤྱོད་ལ་བསྐྱེད་པས།

1 'གཅིག་ཞིང་ལས' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
2 'བྱེད་པས' - དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།
3 'བྱེད་ཅིང་.....' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
4 'ད' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
5 'གོམ་དུ' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༥ ལོང་ དེ་ཤོག 192. Vol 87.
6 'སྐྱེད་པས' - དེ་ཉི་ཤོག དེ་ཉིད།

དེས་དེ་ལ་¹རང་གི་རྣམ་རྟོག་གི་དམིག་པ་དང་མཐུན་པའི་གདམས་²ངག་
ཕོག་སྟེ།³ ‘སྲིད་རང་གི་ཤེས་པ་གསོལ་དུ་གྱིས། ཚོར་བ་བདེ་སྤྲུག་སྲོང་བ་དེ་སྤང་
དུ་གྱིས། ལུས་ཞིང་དུ་བསྐྱོམས། ཉིན་མཚན་ཚོས་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བའི་འབྲས་བུ་
འབྱུང་བར་སྐྱོམས་ཤིག’ ཅེས་དང་། འདི་ཉིད་ཚིག་སྤྲུབ་ཅན་དེ་གསུངས་པ་ནི—

རང་གི་རྟོག་པ་ཐོང་གསོལ་དང་།

ཚོར་བ་བདེ་སྤྲུག་སྤང་དོར་⁴གྱིས།

རྣམ་སྐྱེན་སྤང་པོའི་ས་གཞི་ལ།

ཁམས་ཀྱི་ས་བོན་ལེགས་བདེ་བ་པས། །

བདེ་ཆེན་འབྲས་བུ་རྒྱན་མི་ཆད།

ཞིང་ལས་དེ་ལ་བརྩོན་པར་གྱིས། ། ༣

གསུངས། (དེ་)བཞེན་⁵དུ་བསྐྱོམས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་འཁོར་བའི་
རྣམ་རྟོག་སྤྲ་ཚོགས་པ་འགྲུ་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ་དང་། ཤིང་དུལ་བདུན་ཅམ་གྱི་⁶

1 ‘དེས་རང་གི་’ - དེ་གི་ སོག་ དེ་གི་དང་།
2 ‘གདམས་ངག་ཕོག་’ - དེ་གི་ སོག་ དེ་གི་དང་།
3 ‘ཕོག་དེ།’ - དེ་གི་ སོག་ ཕོགས་ དེ་གི་དང་།
4 “དོར་” ཞེས་པ་ཟུང་ངམ་ཆ་སྟེ་གཉིས་ཀྱི་མིང་དོ།
5 ‘བཞེན་བསྐྱོམས་པས་’ - དེ་གི་ སོག་ ལུ སོང་ དེ་གི་དང་།
6 ‘བདུན་ཅམ་ནམ་མཁའ་’ - དེ་གི་ སོག་ དེ་གི་དང་།

ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ནས། རྟོགས་པ་བཟོད་དེ། སྤྲེལ་འཕུང་གི་མེད་ཀྱི་འགྲོ་
དོན་དཔག་དུ་མེད་པ་མཛད་ནས། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུ་མེད་ཅི་ཞི་ལོ་རྒྱུ་སྐ་རྟོགས་སོ། ॥

༥༡) གྲུ་ཕྱི་ལྟེང་།

གྲུ་ཕྱི་ལྟེང་ལོ་རྒྱུ་སྐ་ནི། རིགས་བུ་ཟེ། དངོས་གྲུབ་སྤྱན་རས་གཟིགས་
ལས་སོ།

དེ་ཡང་ཕྱི་ལྟེང་ཡེ་ལྟེང་པ་བུ་ཟེའི་བུ་ཞིག་ཟེ། ཕྱི་ལྟེང་པ་ལྟེང་པ་ལྟེང་
འདྲེན་མའི་ཚལ་ལྟེང་པ་ལྟེང་ལས་སྤྱོད་ཀྱི་དེ། དེ་དང་མེ་རིང་པ་ཞིག་ན་པ་ལྟེང་ལྟེང་
བུ་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་
དེས་ལ་མོས་པས་སྤྱོད་ཀྱི་མཚན་ལོ་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་
བུས། མེ་རྟོག་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་
བུས་ནས། མེ་རྟོག་དེ་དང་གི་སྤྱི་བོར་ལོན་པ་ལོན་པས། བར་དེར་སྤྱོད་དཔོན་གྱི་སྤྱོད་
བྱོན་ནས་(སྤྱོད་ལོ་)མེ་རྟོག་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་ལྟེང་

-
- 1 'སའི་ཕུང་' - ལྷུ་ལྟེང་གི་ལོ་ ༤༡/ན དེ་ཉིད།
 - 2 'སྤྱོད་' - ལོ་ཉི་གི་ལོ་ ༤༥ ལོ་དང་དེ་ཉིད།
 - 3 'བུ་གཟིགས་' - ལོ་ཉི་གི་ལོ་ ༤༥ ལོ་དང་དེ་ཉིད། ལྷུ་ལྟེང་གི་ལོ་ ༤༡/ན 81.
 - 4 'ཚལ་དུ་' - ལྷུ་ལྟེང་གི་ལོ་ ༤༡/ན ༧ དེ་ཉིད།
 - 5 'སྤྱོད་ནས་' - ལོ་ཉི་གི་ལོ་ ༤༥ ལོ་དང་དེ་ཉིད།
 - 6 'དེར་མེ་རིང་པ་' - ལོ་ཉི་གི་ལོ་ ༤༥ དེ་ཉིད།

པི་ཀའ་ཁྲོས་ནས་ངས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་མཚོན་པ་བྱས་པ་ལས་མི་ལོན། འདིས་
ལན་གཅིག་བྱས་པ་ལས་ལེན་སྐྱམ་པ་དང་།

སྐྱོ་གཟུགས་དེའི་ཞལ་ནས། རྩོད་རང་གི་བསམ་པ་མ་དག་པ་ཡིན། ངས་
ཅི་ཡང་མ་ཉེས་ཞེས་འཕེལ་བྱས་པ་དང་། དེར་དེ་འཁྲོད་པ་སྐྱིས་ཏེ། ལྷོ་བ་
དཔོན་ལུ་སྐྱབ་ཀྱི་ཞབས་སྤྱོད་པོར་སྒངས་ནས། བདག་རྗེས་སུ་གཟུང་དུ་གསོལ་ཟེར་
བས། དེས་ཀྱང་དབང་བསྐྱར་ནས་ལྷ་སྤྱོད་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་[གདམས་པ་] འདི་
ལྷར་གནང་ཞེ —

“ཕུགས་རྗེས་ཆགས་པའི་བདེ་བ་དང་།།

གདོད་ནས་མ་གྲུབ་གཅིག་ཡིན་ཏེ།།

ཐ་དད་མེད་པར་ཡང་དག་ལ།།

འཕགས་པ་ཉིད་ཀྱི་དགོངས་པའོ་”། ༡

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་གོ་ནས་བསྐྱབས་པས་ཞག་བདུན་ནས་གྲུབ་པ་
ཐོབ། འགྲོ་བ་ལ་ཕུགས་རྗེས་གཟིགས་ནས་སྤྱོད་པའི་གདམས་པས་མན་མང་དུ་
བདགས་ཏེ། མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུབ་པི་ཀའ་ཁྲོས་ལོ་རྒྱུས་རྗེས་སོ།། ॥

1 ‘མ་ཉེས་པའི་སྐྱབ་པ་’ - དེ་ཉི འོག ༥༥ བོང དེ་ཉིད།
2 ‘དེར་འཁྲོད་པ་’ - དེ་ཉི འོག ༥༥ དེ་ཉིད།
3 ‘ཐོབ་སྐྱོ།’ - ལྷོ་བ་ཀྱན འོག ༥༥/བ 82.

པར་འདུག་པས། ང་ནི་འདི་དང་སྤྱི་མ་གཉིས་ཀའི་རྒྱལ་སྤྱི་དྲེང་པ་ཡིན་པས། །
 འོ་སྐོལ་བཟའ་མི་གཉིས་ཆེ་སྤྱི་མའི་ཆེད་དུ་ལམ་རྒྱགས་མཚོད་གནས་དུམ་གཅིག་
 ལ་ཚོར་གསོག་འབྲས་ན་མི་རུང་ངམ། ཞེས་སྒྲིམ་པ་དང་། བཅུན་མོ་ན་ཤེ། ཉིད་
 ལ་སྤར་ཡང་མཚོད་གནས་དཔག་དུ་མེད་པ་མཆིས་ལ། ད་ཡང་མཚོད་གནས་
 གཞན་པས་ཁྱད་པར་འཕགས་པ་འདུལ་བ་འཇིག་པ་ཆེན་པོ་ཞིག་གྲོང་མཐའ་མ་
 གིའི་ཤིང་དུང་གི་ཅུ་ན་ཟས་བསོད་སྒྲིམས་པ་ཚོས་གོས་དང་ཡོ་བྱད་ངན་ངོན་གྱིས་
 འཚོས་པ་ཞིག་ཡོད་པས། དེ་ལ་ཉིད་ཀྱིས་འབཞེས་ཐང་ཚོད་སྒྲ་བརྒྱན་ཅུ་ཅཱ་བཞི་
 དང་། ལྷུང་བའི་བཅའ་བ་བཅུ་བཞི་དང་། ལྷུན་ཆང་ལ་སོགས་པའི་བདུང་བ་ལྔ་
 དང་། མེ་མར་གྱི་སྒྲུང་བ་མ་ཡིན་པ་རིན་པོ་ཆེའི་སྒྲུང་བ་དང་། རྒྱལ་སྤྱི་དྲེང་གི་
 འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་སྒྲིན་པར་བྱའོ་ཞེས་སྒྲིམ་པ་དང་། རྒྱལ་
 པོས་ཀྱང་རུང་གསུངས།

(དེ)ནས་ནང་པར་འཁོར་དུམ་ཅིག་སློབ་དཔོན་སྤྱན་འབྲེན་དུ་བཏང་

པས་མ་ཁྲག་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་མང་པོ་དང་། བཅས་དེ་བྱོན་ནས་ཕྱག་བྱས་
 སེམས་དགོས་པའི་གཏམ་མང་པོ་སྒྲིམ་པས། (སློབ་དཔོན་གྱིས་)ཅི་ལ་འདིར་

1 'བྱེད་པ་ཡི།' - བེ་ཉི། འོག་ ༤༤ བོང་ དེ་ཉིད།
 2 'བསོགས་' - བེ་ཉི། འོག་ ༤༤ བོང་ དེ་ཉིད།
 3 'ཉིད་ཀྱི' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག་ ༤༣/ན
 4 'གསུངས་དེ' - བེ་ཉི། འོག་ ༤༤ བོང་ གསུངས་ནས་ ལྷུབ་ཀུན་ འོག་ ༤༣/ན 85.

གཤེགས་གསུངས་པ་ལ། སློབ་དཔོན་ལ་བདག་དང་ནས་མཚོན་གནས་སུ་སྤྱོད་
འདྲིན་དུ་འོངས་པ་ལགས་ཞེས་འཁུམ་པས། སློབ་དཔོན་ན་རེ། —

རྒྱལ་པོའི་རྒྱལ་སྤྱི་ཉི་མེད་(པ་)དང་བཅས་པ་ཡིན་པས་བདག་དེར་མི་
འོངས་གསུངས་པས། འོ་ན་གཏན་དུ་མི་བཞུགས་ཀྱང་ལོ་གཅིག་ཙམ་བཞུགས་
པར་ཞུས་པས་མ་བཞེད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ལྷོ་བ་དུག་དང་། གསུམ་དང་
གཅིག་དང་ཕྱིད་དང་ཞག་གཅིག་གཤེགས་པར་ཞུས་པ་ལ་ཡང་། རྫོང་རྒྱུ་ཅན་སྤྱོད་
ལམ་བཞིལ་མེས་གསུངས་པ་གང་ཤེད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་པའི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་
མི་འོངས་གསུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ཞག་བཅུ་བཞིའི་བར་དུ་ཡང་ནས་ཡང་དུ་གལ་
གྱིས་ཞུས་ཀྱང་མ་བཞེད་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཁྲིམ་ཏེ་སྤྱོད་ལ་ཞེ་
སྤང་གི་མི་འབར་ཏེ། [སྤྱིར་ལོག་སྟེ་]རྒྱལ་པོས་སྤྲོས་པ། —

“དགེ་སྤྱོད་འདིའི་ཚངས་པར་སྤྱོད་པ་³སྤྲོས་ལེན་རྒྱས་ན་རྒྱལ་སྤྱི་ཕྱིད་
དང་། གསེར་ཁལ་གཅིག་སྟེར་རོ”། ཞེས་ཡོངས་སུ་སྤྲོགས་མཁན་བཏང་བ་དང་།
ཡུལ་དེ་ན་སྤྱོད་འཚོང་མ་གཡོ་ཅན་མ་⁴ཀུན་གྱི་གཙོ་མོ་ཞེས་ཡོད་པ་(དེ)ན་རེ།
ངས་རྒྱས་ཞེས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྤྲོས་པ་དང་། རྒྱལ་པོས་འོ་ན་རྫོང་གིས་བཙོན་འགྲུས་
དང་འབད་པས་སྤྲོབས་ཤིག་ཅེས་སྤྲོས་སོ།།

1 ‘ཤེགས་ཞུས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༦ བོང་དེ་ཉིད།
2 ‘བཞི་སྟགས་’ - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༣
3 ‘སྤྱོད་པ་དང་སུམ་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༦ འོག་དེ་ཉིད།
4 ‘གཡོ་ཅན་ཀུན་གྱི་’ - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༣/བ 2. 86.

སྐྱུ་འཛོང་མ་དེ་ལ་བྱུ་མོ་ལོ་བརྒྱུ་གཉིས་ལོན་པ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚོས་ཀྱིས་
 མ་གོས་པ་བྱུ་བཞིན་མཇིས་པ་འགྲོ་ན་སྐབས་ལྷུག་པ་སྐྱུས་ན་སྐྱུ་སྐྱུ་པ་ལུས་པ་
 ལྷུས་ཤིང་རྒྱ་འབྱུང་མཐོང་པ་ཉི་མས་མཐོང་ཡང་ཉི་མ་འབྱུང་མི་འདོད་པ་འཇིག་
 ཡོད་པ། བདག་གིས་དེ་བཏང་ན་ཡལ་པ་བརྒྱུ་སྐྱུ་ཚངས་པ་སྐྱུ་པ་དང་
 འབྱུང་རྒྱས་སོ་སྐྱུ་མ་ནས། བྱུ་མོ་དེའི་མ་དེས་སྐྱུ་བ་དཔོན་གྱི་དྲུང་དུ་³སྐྱུ་ནས་ལྷུག་
 དང་བསྐྱུ་བ་བྱུ་ཀྱི་ལོག་སྐྱུ་། དེ་ལྷ་རྒྱུ་བཏུ་འི་བར་དུ་བྱུས་ནས་སྐྱུས་པ།
 བདག་དབྱུང་ལྷ་བ་གསུམ་དབྱུང་གནས་པའི་འཛོ་བ་སྐྱུ་བའི་ཡོན་བདག་
 བཞིད་དོ་སྐྱུས་པས། དེ་མ་འདོད་པ་དང་། ལྷ་བ་གཅིག་གི་བར་དུ་ཡང་སྐྱུས་པས།
 སྐྱུ་བ་དཔོན་གྱིས་ཞལ་གྱིས་བཞིས་པ་དང་། དུ་རི་སྐྱུ་དབང་ནས་བཀྲ་གིས་རྒྱ་ཚེན་
 པོ་བྱས། ཚིག་དུ་ཡང་འདི་ལྷ་རྒྱས་ཏེ།

བྱུ་མཐོང་གཡོ་ནི་བརྒྱུད་ཅུ་གཅིག།
 འདོད་པ་ཡང་ནི་བརྒྱ་འབྱུང་རོ།།

1 'འབྱུང་དུ་མི་ཐུབ་ཞིག' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག་དེ་ཉིད།
 2 'བཏང་ལ' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག་དེ་ཉིད།
 3 'བྱུ་མོ་དེའི་མ་དེས་སྐྱུ་བ་དཔོན་གྱི་དྲུང་དུ' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག་དེ་ཉིད།
 4 'ལོག་ཏེ' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༤ དེ་ཉིད།
 5 'བདག་དབྱུང་ལྷ་བ་གསུམ་འཛོ་བ་སྐྱུ་བའི' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག་ 192. Vol 87.
 6 'དུ་རི་སྐྱུ་དབང' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༤༣/བ
 7 'རྒྱ་ཚེན་ལྷུ་རོ' - བེ་ཉི་ཤོག ༤༧ ཤོང་དེ་ཉིད།

ཞེས་སྦྲུམ་གྱི་ངང་ས་གཡོས་ན་སྒྲིང་བཞི་ཡང་གཡོ་ཞིང་བསྐྱུ་བར་རྒྱལ་ན་
དགེ་སྦྱོང་འདི་ཅི་སྦྲོས་སྒྲུམ་དུ་སེམས་གིང་། ངག་དུ་ཡང་འདོན་པར་བྱེད་དོ། །

དེའི་སྐབས་སུ་སྦྱོབ་དཔོན་ན་རེ་ང་ལ་ཟས་སྦྱེལ་བ་ཀུན་སྦྱེས་པ་ཐོང་།
ཡུད་མེད་མ་གཏོང་། ཞིག་བྱས་པས། དེ་བཞིན་དུ་བགྱེད་ཞེས་སྦྲུམ་ནས། ཀར་འི་
ཆུ་དང་འབྲས་ཆུ་ཞེས་བ་སྦྱེད་གཉིས་ཀྱི་ཡུལ་དུ་སྦྱེས་པ་ཀུན་གྱིས་བསྐྱེལ་ནས།
དེ་ནས་སྦྱང་འཛོང་མ་གཡོ་ཅན་མ་དེས་བུ་མོ་བྱུན་སྦྱར་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་ནས་
བཟའ་བ་དང་བཅོམ་བ་སྦྱར་ཚོགས་བྱ་ཞོམ་པ་མང་པོ་བསྐྱར་ནས་གཡོག་ལྡེ་བརྒྱ་དང་
བཅས་ཏེ་³བཏང་ནས། རགས་ཀྱི་ཅུ་ནས་འཁོར་ཀུན་སྦྱིར་ལོག་ཅིག་བྱས་ནས་
བཏང་ངོ་།།

དེ་ནས་བུ་མོས་མས་བསྐྱབས་པའི་གཡོ་རྒྱལ་སྤྱད་བཞིན་དུ་ནང་དུ་ལྷུང་
པ་དང་། དགེ་སྦྱོང་ལྔར་གྱི་ཟན་སྦྱེལ་མི་⁴ཡིན་སེམས་ནས་ནང་དུ་འོངས་པ་དང་།
བུ་མོ་གཞོན་རུ་མ་བྱུན་སྦྱར་ཚོགས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ་ཞིག་⁵མཐོང་ནས། སྦྱེས་པ་ཀུན་
གར་ཐོང་། སྦྲུམ་པས། བུ་མོས་སྦྲུམ་པ། དེ་ཀུན་ལ་ལོང་མེད་ན་ངོས་ཅག་མཚིས་
སོ་བྱས་ཏེ། དེ་ནས་བུ་མོ་ཡུན་རིང་དུ་འདུག་པ་དང་། ད་སོང་སྦྲུམ་པས། ད་སུང་

1 'མ་བཏང་ཞིག' - དེ་ཉི་ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
2 'ཞེས་བ་སྦྱེད་ཀྱི་བར་' སྦྱུབ་ཀུན་ ཤོག ༧༣/བ ༧ དེ་ཉིད། ཞོང་གི་ཚིག་དང་བསྐྱུན་ན་འདི་ཉིད་དག
3 'བཅས་ནས' - དེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད།
4 'ཟས་སྦྱེལ་ཡིན་སེམས' - སྦྱུབ་ཀུན་ ཤོག ༧༣/ ན 87.
5 'བ་ཅིག' - སྦྱུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད། དེ་ཉི་ ཤོག ༧༧ ཞོང་ དེ་ཉིད།

ནམ་མཁའ་ལ་སྤྲིན་ཁ་དོག་ནམ་པ་ལྟ་འདྲུས་ནས་ཆར་འོང་བར་གདའ་བས། དེ་
ཆད་པ་དང་མཆིས་སྐྱས་ནས་ཡུན་རིང་དུ་བསྐྱད་པ་དང་། ཉི་མ་རྒྱབ་པར་གྱུར་
ནས་བུ་མོས་སྐྱས་པ། —

དངོས་ལ་ལམ་གྲོགས་མ་མཆིས་པས་གོས་དང་རྒྱན་ལ་བལྟས་ནས་སྤོག་
དང་འབྲལ་བར་མཆི་ཞུས་པས། བདེན་ནམ་སྐྱམ་ནས་དེར་ཉལ་བ་དང་། བུ་
མོས་མཚན་ལ་འཇིགས་པ་སྐྱད་སྐྱས་པས། དེར་བུ་མོ་རྩེ་བརྒྱལ་བ་དང་།
ཡུལ་དང་ཉེ་བའི་སྒོ་བས་ཀྱིས་དེ་གཉིས་ལུས་འདྲིས་པར་གྱུར་ནས། དེར་སྐྱོར་བ་
བྱས་པས་དགའ་བཞི་སྐྱེས་ཏེ་ལམ་བཟོད་པར་གྱུར་ཏེ།

ནངས་པར་གྱི་དུས་སུ་ཡང་མའི་གམ་དུ་མ་ཕྱིན་པར་དེར་བསྐྱད་པས།
དགེ་སློང་དང་གཉིས་ཀ་ལ་བཟའ་བཅའ་སྐྱེལ་གྱིན་བོར་པོ། །དེ་ལྟར་ལོ་གཅིག་ལོན་
པ་དང་། བུ་བྱིའུ་ཞིག་³བཅས་པར་གྱུར་ལ།⁴ (འདྲིར་)རྒྱལ་པོས་དུས་ཉལ་དུ་
སྐྱད་འཛོང་མ་ལ་དྲིས་པས། མོས་གསལ་པོ་མ་སྐྱས་ལ། དེ་ནས་ལོ་གསུམ་ལོན་
པ་དང་སྐྱད་འཛོང་མས་རྒྱལ་པོ་ལ་སྐྱས་པ། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ། ཉིད་ཀྱིས་བཀའ་
གདམས་པའི་དོན་བསྐྱབས་ཏེ་མཆིས། བྱུང་དབྱེས་པར་མཛོད་ཅིག་ཞུས་པ་དང་།
དེ་ལ་རྒྱལ་པོས་བཀའ་སྐྱབ་པ།

1 'ཁ་དོག་ལྟ་འདྲུས' - བེ་ཉི་ བོག ༧༧ དེ་ཉིད།
2 'གཉལ་བ་དང་།' - རྒྱབ་ཀྱིན་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ བོག དེ་ཉིད།
3 'ཅིག་རྩེས' - རྒྱབ་ཀྱིན་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ བོག ༧༧ འོག་ དེ་ཉིད།
4 'གྱུར་བ་དང་།' - རྒྱབ་ཀྱིན་ དེ་ཉིད། བོག ༧༧ འོག་ དེ་ཉིད།

འོ་ན་ཞག་གསུམ་གྱི་དུས་སུ་དགེ་སློང་ངའི་གམ་དུ་འོང་བ་གྱིས། ཞེས་
འཁྲིད་གྱི་བུ་མོ་ལ་སྦྱོས་ཤིག་ཟེར་རོ། །དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་སྤེལ་བུ་འཁྲིད་མི་ཀུན་དང་
བཅས་དགེ་སློང་གི་གམ་དུ་ཆས་སོ།།

དེར་3(དེའི་ཚེ་)དགེ་སློང་གིས་བུ་མོ་ལ་ད་འོ་སྐོལ་གནས་འདིར་འདུག་
གམ་གཞན་ཞིག་དུ་འགྲོ་སྐྱེས་པ་ལ། བུ་མོས་སྐྱེས་པ། འོ་སྐོལ་གྱི་ལས་ངན་པ་འདི་
ལ་མི་ཀུན་འཕྲ་ཡིན་འདུག་པས། མིའི་ཡུལ་དུ་འབྱུངས་ན་ཡང་དགའ་བེད་ནས།
བུ་མོས་བུ་རྒྱུང་དང་ཆང་གི་ཀུ་བ་ཁུར་ནས། བཟའ་ཚོ་གཉིས་ཀྱིས་སྲིན་པ་དང་།
ལམ་བར་དུ་རྒྱལ་པོ་དང་འཕྲད་ནས། (དེ་)སྐང་པོ་ཆེའི་སྤོང་ནས་བབས་ཏེ་སྐྱེས་པ།

དགེ་སློང་གི་4ཚོས་གོས་ནང་ན་ཅེ་ཡོད། བུ་མོ་འདི་འཁྲིད་གྱི་ཅེ་ཡིན། སྐྱེས་
པས། དགེ་སློང་ན་ཤེ། གོས་ཀྱི་ནང་བུ་རྒྱུང་དང་ཀུ་བ་ཡོད། བུ་མོ་འདི་ངའི་རྒྱུང་
མ་ཡིན་སྐྱེས་པས། རྒྱལ་པོ་ན་རེ་ངས་སྲིན་དྲངས་པའི་དུས་སུ་འཁྲིད་སྲིག་ཅན་གྱི་
གམ་དུ་མི་འོངས་ཟེར་བ་ལ། ད་ལྟ་བུའི་རང་བུ་དང་རྒྱུང་མས་ཅེ་བྱེད།⁵ སྲིག་
ཅན་ཅིག་བྱིད་རང་འདུག་ཅེས་སྐྱེས་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ང་ལ་ཉེས་པ་མེད་པས།
སྐྱུར་བ་མ་འདེབས་ཤིག་གསུངས་པས། སྐྱུར་ཡང་ལྲར་བཞིན་བགྲངས་པས། སློབ་

1 'འོ་ན་ཞག་གསུམ་གྱི་དུས་སུ' (ང) དགེ་སློང་གི་གམ་དུ་འོང་བ་ཡིན་པས་འཁྲིད་གྱིས་བུ་མོ་ལ་སྦྱོས་ཤིག་
ཟེར་རོ།' - ལྷུབ་ཀུན་ བོག ༤༣/ན .
2 'དགེ་སློང་ཅན་དུ་ཆས་སོ།།' - བེ་ཉི, བོག ༤༣ འོག་ དེ་ཉིད།
3 'དེར་ ཞེས་སྐྱུབ་ཀུན་ལ་མེད' - ལྷུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད། བེ་ཉི, བོག ༤༧ བོང་ དེ་ཉིད།
4 'དགེ་སློང་གི་གོས་ཀྱི་ནང་' - བེ་ཉི, བོག ༤༧ འོག་ དེ་ཉིད།
5 'ཅེ་བྱེད' - བེ་ཉི, བོག ༤༧ འོག་ དེ་ཉིད།

དཔོན་གྱིས་བྱ་རྒྱུ་དང་ཀྱ་བ་ས་ལ་བརྟེན་པ་ལས། སའི་ལྷ་མོ་འཛིགས་དེལ། ས་
 གས་ནས་ཚུ་³བརྟོན་པ་དང་། ཚུའི་ནང་དུ་བྱ་རྒྱུ་དང་ཀྱ་བ་རྗེ་རྒྱུ་བྱུར་སོང་།
 ཁོང་རང་བདེ་མཚོག་དང་། བུ་མོ་ཡུམ་རྗེ་རྗེ་ཕག་མོར་སོང་ནས། རྒྱལ་པོ་འཁོར་
 དང་བཅས་པའི་ནམ་མཁའི་སྤྱང་དུ་བདེ་མཚོག་ཡབ་ཡུམ་རྗེ་རྗེ་བྱུ་བྱུར་བཅས་
 པར་གྱུར་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པས་མགྲིན་གཅིག་དུ་ནམ་མཁའ་ལ་བཞུགས་
 བས། སློབ་དཔོན་ལ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ་ཞེས་གསོལ་བ་འདེབས་ཀྱང་། རྗེ་རྗེ་སྐོས་
 པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་མ་བཞེངས་པ་དང་། རྒྱུ་པོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་ས་གས་
 པའི་རྒྱུར་རྒྱུ་ནས་འཆི་བ་ལ་ཐུག་པ་ན་འཕྲ་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་སྐྱེད་ཅིག་ལ་
 དེར་གཤེགས་ནས། ས་གས་པའི་རྒྱ་ཞབས་ཀྱིས་བཀའ་ནས་རྒྱལ་པོ་དེམ་པུལ་
 འཁོར་དང་བཅས་པ་དབུགས་དབྱུང་བར་མཇོང་དོ། །

དེ་ནས་སྐར་ཡང་སྒྲ་མ་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པས། དེས་རྒྱུ་སྐྱ་གཅིག་
 བསྐྱབས་པས་ཚུ་ཐམས་ཅད་མི་སྤྱང་བར་གྱུར་དོ། །དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་འཁོར་དང་
 བཅས་པས་བཟོད་པར་གསོལ་བས། འཕགས་པའི་སྐྱུ་ཡང་དེ་ཉིད་དུ་རྗོའི་རང་
 བྱུང་དུ་སོང་སྟེ། ད་དུང་ཡང་ཞབས་འོག་ནས་ཚུ་སྐྱུ་རེ་རེ་ཅམ་འབྲུབ་ཟེར་པོ།
 དེ་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་དེས་གདམས་པ་གསུངས་པ་ནི། —

1 ‘སྐབས་པས’ - དེ་ཉི, ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
 2 ‘འཛིགས་ནས།’ - དེ་ཉི, ཤོག ༧༧ དེ་ཉིད།
 3 ‘ཚུ་རྗོལ།’ - དེ་ཉི, ཤོག དེ་ཉིད།
 4 ‘འདུག་ཟེར’ - དེ་ཉི ཤོག ༧༥ ཞོང 193. Vol 87.

རྒྱུ་རྒྱན་དང་དུག་ཉིད་ཀྱང་།།
 རང་གི་ངོ་བོ་གཅིག་ཉིད་ལས།།
 འབྲས་བུ་ཡང་ནི་གཉིས་སུ་འབྱུང་།།
 དེ་བཞིན་སྤང་བུ་གཉིན་པོ་གཉིས།། ༡

ངོ་བོ་གཅིག་སྟེ་ཐ་དད་མིན།།
 མཁས་པས་རྟོགས་ནས་སྤོང་མི་བྱེད།།
 བྱིས་པ་མི་མཁས་པ་དག་གིས།།
 མ་རྟོགས་དུག་ལྲས་འཁོར་བར་འབྱམས།། ༢

ཞེས་ཡག་སྲུངས་པས། རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་བོའི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་
 མི་མོས་པའི་སྐྱོ་བསྐྱར་འཕགས་ནས་གཅིག་ཏུ་མཐུན་པར་དད་པར་གྱུར་ནས།
 འགྲོ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལམ་ལ་གནས་པར་གྱུར་ཏེ། ཚིག་ཏུ་ཡང་དྲིལ་བུ་པ་
 ཞེས་བརྗོད་པས་དེ་ལྟར་ཆད་སློབ་དཔོན་དྲིལ་བུ་སྤྲོ་ཞེས་ཕྱོགས་མཚམས་ཐམས་
 ཅད་དུ་གྲགས་སོ།།

-
- 1 'ཉིད་ལ' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༥ བོང་དེ་ཉིད།
 - 2 'ཤེས་གསུངས' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ བོང་དེ་ཉིད།
 - 3 'སྐྱུ་འཕགས' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༥/ན 87.
 - 4 'གྱུར་སྟེ' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ བོང་དེ་ཉིད།
 - 5 'བརྗོད་ནས' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༥/ན དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ བོང་དེ་ཉིད།
 - 6 'དེང་མན' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ བོང་དེ་ཉིད།

བུ་མོ་དེས་སློབ་དཔོན་ལ་སྐྱེ་བ་ལྷན་ལ་ལན་དུག་གི་བར་དུ་ཚུལ་སྲིལ་ས་
 ལ་བར་ཆད་བྱས་པ་ཡིན་ལ། ད་ཅིས་ཀྱང་། ཚུལ་སྲིལ་ས་ལ་བར་ཆད་བྱས་པ་ལ་
 རློབ་དཔོན་ཚོས་ཉིད་ཀྱི་ངང་དུ་གཉིས་འཇིན་གྱི་རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་སློབ་ནས་
 རྒྱུད་སློབ་པའི་སློབས་ཀྱིས་ལམ་དུ་སོང་བ་ཡིན་ནོ།།

སྲས་ནི་ཕྱག་རྟོག་རྩེ། །བུ་མོ་དེས་ཀྱང་སྲས་ནས་བརྟེན་བཀུར་བྱས་པའི་
 བན་ཡོན་གྱིས་ད་ཅིས་དྲི་མ་དག་པ་ཡིན་གསུངས།

དེ་ལྟ་བུའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པའི་སློབ་དཔོན་དྲིལ་བུ་པ་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་
 གཉིས་ཀ་མཁའ་སློབ་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་སྐྱེས་སྤྱི་ལོ་བུ་སྤྱི་ལོ་རྒྱུས་རྗོངས་སོ།། ॥

1 ‘ད་ཅིས་ཀྱང་བར་ཆད་བྱས་པ་ལ།’ - རྒྱུད་ཀྱི་ཤོག་ ༤༤/ན.
 2 ‘བྱས་པས’ - པེ་ཉི་ཤོག་ ༤༤།
 3 ‘སྲས་ནི་ཕྱག་རྟོག་བུ་མོ་’ - པེ་ཉི་ཤོག་ ༤༤ འོག་དེ་ཉིད།
 4 ‘དག་པ་ཡིན་གསུངས། ཞེས་པའི་ཚིག་གི་གོ་དོན་ལ་དཔུང་ན། ཤོང་གསལ་བུ་མོའི་སློབ་
 གྱི་ཚིག་དེ་སྤྱི་མ་མི་འཇིགས་སྤྱིན་གྱི་ཚིག་དོན་ལོ་རྒྱུ་བས་རང་སྐད་དུ་བྲིས་པར་སྣང་།

༥༩) གྲུ་རྩོ་གི་སྤྲོ

གྲུ་རྩོ་གི་སྤྲོ (ཡོ་གི་པ) ལི་ལོ་རྒྱུ་མི། དུལ་ལོ་རྒྱུ་སྤྲོ། རིགས་གདོལ་
 པ། སྤྲོ་མ་གཤམ་²འི་སྤྲོ། དེ་ཡང་བཙོན་ལ་གྲུ་མ་ཆེ་ལ་གིས་རབ་ཆུང་བར་གྲུ་པ་
 དང་། དུས་གཅིག་ན་སྤྲོ་མ་གཤམ་འི་སྤྲོ་གི་ལམ་དུ་གཤེགས་ནས། དབྱེས་དོར་དུ་
 དབང་བསྐྱར་དེ།³ བསྐྱེད་རྩོགས་ཀྱི་གདམས་ངག་⁴གནང་ནས་སྤོམ་དུ་བཅུག་པས།
 དེའི་དོན་མ་གིས་ནས་སྤྲོ་མ་ལ་དངོས་ཀྱིས་⁵བསྐྱེད་པའི་རྩོ་མི་ཐོགས་པས་ལུས་
 ངག་གི་དགོ་སྤོར་བཅུད་པར་ལུ་ལུས་པས། སྤྲོ་མས་དོ་རྩོ་ཉི་ལུ་ཀའི་བསྐྱེད་པ་
 བསྐྱེད་པས་ནས་གནས་ཆེན་ཉི་ལུ་ཅུ་བཞི་ར་སོང་ལ་སྤྲོ་བས་གིག་གསུངས་པས།
 དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་བྱས་པས། ལོ་བཅུ་གཉིས་ན་རྩོ་མ་དག་སྤོ། མཉུ་མཉུ་འི་དངོས་
 གྲུབ་ཐོབ་སྤོ། དེས་རྩོགས་པ་བརྩོད་དེ། ལོ་ལྔའི་བར་དུ་ལྷོ་དོན་སྤོ་ཚོགས་
 མཛད་ནས་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུ་རྩོ་གི་སྤྲོ་ལོ་རྒྱུ་རྩོགས་སོ།། ॥

1 'ཨོ་རྒྱུ་སྤོ' - གྲུབ་ཀུན་ བོག ༧༧ ན 87. བོ་ཉི བོག ༥༥ འོག དེ་ཉིད། =
 'ཨོ་རྒྱུ་སྤོ' ལ་གོ་བ་མི་འགྲིག འདི་ནི 'ཙཱཱ་ཤུ་ཤི' ཞེས་པའི་རྩུར་ཆག་སྤོ་རྒྱུ་
 པའི་ཚིག་དུ་བྱས་པ = 'ཨོ་རྒྱུ་སྤོ' ཞེས་པ་ཡིན་མོ།།
 2 'གཤམ' - བོ་ཉི བོག ༧༥ འོག དེ་ཉིད།
 3 'དབང་བསྐྱར་སྤོ' - བོ་ཉི བོག ༧༥ འོག
 4 'གདམས་པ' - བོ་ཉི བོག ༧༥ འོག དེ་ཉིད།
 5 'སྤོམ་པས' - བོ་ཉི བོག ༧༥ འོག
 6 'ཐོགས་ནས' - བོ་ཉི བོག ༧༥ དེ་ཉིད།

༥༧) གུརུཅེ་ལུགས།

གུརུཅེ་ལུགས་འོ་རྒྱལ་ནི། ཡུལ་²མཚུལ་ཤུར། རིགས་དམངས་རིགས།
སྤ་མ་མི་བྲམ། དེ་ཡང་གཉིད་ཆེ་བས་དུས་དྲིལ་དྲིལ་གྱི་དབང་དུ་སོང་ནས་
བཙོན་འགུས་ཚོ་མ་མི་རྒྱལ་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཆེ་འཁོར་བའི་ཉེས་དམིགས་ལ་
སློལ་ནས་ཤིང་ཙུ་³ཞིག་དྲིལ་ནས་པ་དང་། དེར་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་⁴འོངས་ནས་
ཁྱིད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཀྱིན་འདུག་ཅེས་གསུངས་པས། ཅེ་ལུགས་རེ —

བདག་འཁོར་བ་ལས་ཐར་བའི་(ཐབས་)ཚོས་སྐྱབ་སྒྲུབ་པ་ལ་ཚོས་སྒྲོན་
པའི་སློབ་དཔོན་དང་མ་འཕྲད་ཅིང་། སྐྱབ་པའི་རང་བཞིན་གྱིས་གཉིད་ཆེ་བས་
བཙོན་འགུས་ཚོ་མ་མི་རྒྱལ་པས། ཉིད་ཀྱི་བདག་ལ་ཚོས་ཀྱང་སྤྱིན་དགོས་ཤིང་།
གཉིད་རྒྱང་བའི་ཐབས་ཤིག་⁵མ་བྱིན་ན་ཡན་པ་⁶མེད་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་
མི་བྲིས་ན་རེ—

ཁྱིད་ལ་དབང་བསྐྱར་ན་གཉིད་རྒྱང་ལ་འཁོར་བ་ལས་ཀྱང་ཐར་བ་ཡིན།

1 'མ་དཔེ་ཀུན་ལས་ཅེ་ལུས་ - ཞེས་མཐུན་པར་འདུག་ཀྱང་། ལྷ་སྐྱབ་མ་དག་པར་མངོན་
ཏེ། དོན - ཅེ་ལུགས་ ཞེས་པ་ཡིན། 'འཇུག་ཀུ་' ལྷ་སྐྱབ་པར་ལྷ་སྐྱབ་པར་ལྷ་སྐྱབ་པར་ལྷ་སྐྱབ་པར་
2 'མཚུལ་ཤུར་ - བོ་ཉི་ཤོག་ ༧༨ འོག་ ལྷ་སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག་ ༧༧/བ.
3 'ཤིང་ཙུ་གཅིག་ ལྷ་སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག་ ༧༧/ བ ༩ 88. 'ཤིང་ཙུ་ཅིག་ བོ་ཉི་ཤོག་ ༧༨ འོག་
4 'པ་གཅིག་སོང་ནས་ བོ་ཉི་ ༧༧ ཤོག་ 'པ་ཅིག་ ལྷ་སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག་ ༧༧/བ ༩ དེ་ཉིད།
5 'ཐབས་ཅིག་ - ལྷ་སྐྱབ་ཀུན་ ཤོག་ ༧༧/བ ༧ 88. བོ་ཉི་ ཤོག་ ༧༧ ཤོག་
6 'ཡན་མེད་ - བོ་ཉི་ ཤོག་ ༧༧ ཤོག་ དེ་ཉིད།

གསུངས་ནས། བདེ་མཚོག་ཏུ་དབང་བསྐྱར་དེ། མི་ཟབ་པའི་ཚོགས་རིམ་ཅ་ཚུང་གི་གདམས་པ་ལ་འདི་ལྟར་བྱིན་དེ།

སྣང་སྲིད་ཐམས་ཅད་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་གསུམ་དུ་བརྒྱུས་ལ། ལལ་ལྷན་དང་རས་ལྷན་དབུ་མ་ཨམ་རྒྱུ་ཉི་རུ་ཆུག་ལ། ལུས་དང་རྒྱུ་ཉི་མཚོ་ར་བསྐྱོམས་པ། བེས་པ་ངང་པར་བསྐྱོམས་ལ་མཚོ་ནང་དུ་ངང་པ་འཕྱོ་བར་སྐྱོམས་གིག་གཉིད་ཀྱང་ཆུང་ལ་ཚུང་རྒྱུ་ཉི་ར་ཆུང་པས་མི་རྟོག་པ་ངང་གི་སྐྱེས་པ་ཡིན། གསུངས་ནས་གདམས་པ་བྱིན་པ།

དེས་ཀྱང་བསྐྱོམས་པས་ལོ་དགུ་ན་དེ་མ་དག་སྟེ་སྐྱུག་སྐྱེ་ཆེན་པོའི་དངོས་ལྷན་ཐོབ་པ།

སྣང་སྲིད་ཚོས་རྣམས་རང་གི་ལུས་ངག་ཡིད་ལ་འདུས།
དེ་ཡང་གཟུང་འཇིན་མི་རྟོག་ཅུ་ནི་གསུམ་དུ་འདུས།

-
- 1 'གོང་འོག་ཀྱང་དུ་ "མི་ཟབ་པའི" ཞེས་འདུག་ཀྱང་, རྒྱ་དཔེར་ ལྷན་མཐོང་རྒྱུ་ 'आगम्यार' ཞེས་ཡིད་སྣང་བས་འདི་ 'ལྷན་ དགག་སྐྱོ་མིན་ཞིང་། 'བྱིན་དུ' དང་ 'ཀྱང་དུ' ཞེས་པའི་དོན་ཡིན་པས་འབྱུང་མ་དག་པར་སེམས་སོ།། ༧༥ འོག
 - 2 'གདམ་ངག' - པེ་ཉི, ༧༧ |
 - 3 'རྒྱུ་ཉི་ར' - པེ་ཉི, འོག ༧༧ གོང་ དེ་ཉིད།
 - 4 'སྐྱོམས' - པེ་ཉི, འོག ༧༧ གོང
 - 5 'སྐྱོམས་ན་གཉིད' - འོག ༧༧ དེ་ཉིད།
 - 6 'བྱིན་དེ།' - ལྷན་ཀྱང་ འོག ༧༧/༧ པེ་ཉི འོག ༧༧ དེ་ཉིད།
 - 7 'ཐོབ་སྟེ།' - ལྷན་ཀྱང་ འོག དེ་ཉིད། 'ཐོབ་ནས་' - པེ་ཉི འོག ༧༧ དེ་ཉིད།
 - 8 'གཟུང་འཇིན་མི་རྟོག' - པེ་ཉི འོག ༧༧ གོང་ དེ་ཉིད།

གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུག་ནས་རྣམ་པར་གྲུབ་པའི་ངང་པ་དེའི་བཅུད་རྒྱིས་མཚོར་བསྐྱོམས་བྱས་ལ།།

རྣམ་པར་གྲུབ་པའི་ངང་པ་དེའི་བཅུད་རྒྱིས་མཚོས་།།

ཞེས་གསུངས་ནས། དེས་རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ། ལྷན་དེ་ཉིད་རྒྱིས་མཁའ་སྤོང་དུ་
གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཅེ་ལུ་གའི་འོ་རྒྱུ་ས་རྫོགས་སོ།། །།

༥༥) གུ་རུ་གྲྱུ་ར་རི་སྤྲོ་པ།³

གུ་རུ་གྲྱུ་ར་རི་འོ་རྒྱུ་ས་ནི། ཡུ་ལ་རི་སྐྱུ་རྣམ་པར་ལྷོ་རིགས་བྱ་པ། དེ་ཡང་རྟོག་
དུ་དོལ་ཁྲུ་ར་ནས་བྱ་རྩོམ་བྱེད་པ་ལས། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་དེའི་གམ་དུ་རྣལ་འབྱོར་
པ་ཞིག་སྤོམ་ནས་རིགས་ཀྱི་སྤྲོ་པ་འབྱོར་བྱེད། རྣམ་པས། བྱ་པ་ན་མེ། འཕགས་

- 1 'གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུག་ནས་རྣམ་པར་གྲུབ་པའི་ངང་པ་དེའི་བཅུད་རྒྱིས་མཚོར་བསྐྱོམས་བྱས་པ་
ཐོབ་ནས། དེས་རྟོགས་བརྗོད་དེ་། བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ བོང 193. Vol 87. འདི་མ་དག་
པར་མདོན།
- 2 'གཉིས་པོ་དབུ་མར་འདུག་ནས་རྣམ་པར་གྲུབ་པའི་ངང་པ་དེའི་བཅུད་རྒྱིས་མཚོར་བསྐྱོམས་བྱས་པ་
ཐོབ་ནས། དེས་རྟོགས་བརྗོད་དེ་། བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ བོང 193. Vol 87. འདི་མ་དག་
པར་མདོན།
- 3 'གྲྱུ་ར' - རྒྱུ་བ་རྒྱུ་ཤོག ༩༥/ན བོད་རྒྱུར བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ ། བོད་རྒྱུར - ས་རྒྱ་
བཀའ་འབུམ་ བྱུ་ར་སྤྲོ གུ་ཤར་ལི་ལ།, ར་འུ་ལེ་ པུ་ལེ་ རྩེ་ ༡༢༤ །
- 4 'རི་སྐྱུ་རྣམ་པར་ལྷོ་རིགས་བྱ་པ' རྒྱུ་བ་རྒྱུ་ཤོག ༩༥ རྒྱུ་རྣམ་པར་ བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ བོང དེ་ཉིད།
- 5 'པ་ལས' - བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།
- 6 'ཅིག' - རྒྱུ་བ་རྒྱུ་ཤོག ༩༥/ན ལ 'པ་གཅིག' - བོ་ཉི་ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།

པ་བདག་ནི་སྔོན་ལས་ངན་པ་བསག་པས་བྱ་པའི་རིགས་སུ་སྐྱེས་ནས། འཚོ་བའི་
ཆེད་དུ་སྔོན་ཆགས་ལ་དུས་ཉམ་དུ་རྣམ་པར་འཚེ་བར་བབྱིད་པས་སྐྱོ་ཡིན་གདའ་
འོ་ཞུས་པས། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་ེ—

“ལས་དང་ལས་ཀྱིས་ཆེ་འདིར་སྐྱུག།
འདི་བས་ཕྱི་མར་འཆེར་སྐྱུག་ན།།
ཉམ་དུ་བདེ་བ་དམ་པའི་ཚོས།།
སྐྱབ་པར་མི་བྱེད་ཅིས་ཤེ་ཨང་།།” ༡

ཞེས་³གསུངས་པས། དེ་ན་ཤེ། ལྷ་མ་ལགས་བདག་འདྲ་བའི་སེམས་
ཅན་སྤྱི་ལ་ཅན་ལ་སྐྱབས་ཇི་འཁྲུངས་ནས་གདམས་པ་སྐྱུལ་⁴ན། ཅིས་དེ་མི་སྐྱབ་
ཟེར་བས། [རྣལ་འབྱོར་པས་] དེ་ལ་བྱིན་རྒྱབས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐྱར་མཛད་
ནས། དམིགས་པ་གཅིག་པའི་གདམས་ངག་རང་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་པ་དང་མཐུན་པ་
བྱིན་དེ།

འཇིག་རྟེན་གྱི་སྐྱ་ཐམས་ཅད་བྱའི་སྐྱར་སྦྱོམས། བྱའི་སྐྱ་དང་རང་གི་ཤེས་
པའི་དམིགས་པ་གཉིས་གཅིག་དུ་བྱིས་ལ་སྦྱོམས་ཤིག གསུངས་ལ། [དེ་ཉིད་
ཆེགས་སུ་བཅད་དེ་གསུངས་པ་]—

1 ‘ཕྱི་མ་ཆེར’ - དེ་ཉི ཤོག ༩༩ འོག 194. དེ་ཉིད།
2 ‘ཅི་སྐྱེ་ཡང’ - དེ་ཉི ཤོག ༩༩ འོག དེ་ཉིད།
3 ‘ཅིས་གསུངས’ - དེ་ཉི ཤོག ༩༩ དེ་ཉིད།
4 ‘པ་ཚོ་ལ་ན’ - དེ་ཉི ཤོག ༩༩ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘གསུངས་པ་ན།’ - སྐྱབ་ཀྱིན ཤོག ༩༥/ན 89.

དེ་སྐྱོལ་སེམས་ཤོར་ནས་སྒྲུབ།

ཁྱེད་ཀྱི་སྐྱོན་སྐྱོར་གྲགས་ཏེ།

སྐྱོན་མས་སྐྱོ་ཙམ་ཉིད་དུ་གཅིག།

དེ་བཞིན་སྐྱོ་དང་སྐྱར་འཇིན་པ།

ཁྱེད་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་ངོ་བོ་སྐྱོམས། ༣

ཞེས་ །གསུངས་པས། དེ་ལྟར་བསྐྱོམས་པ་ན་སྐྱོ་གྲགས་སྤོང་དབྱེར་མེད་དུ་
 ཉོགས་ཏེ། ལོ་དག་ན་སེམས་ཀྱི་དྲི་མ་དག་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ་
 རང་གི་ཉོགས་པ་བརྗོད་ནས་ལོ་བརྒྱའི་བར་དུ་འཇིག་རྟེན་དུ་བཞུགས་ཏེ།
 སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དཔག་དུ་མེད་པ་མཛད་དེ། འཁོར་སུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་
 ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྲོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གུར་གྱི་རའི་ལོ་རྒྱུས་ཇོགས་སོ། །

༥༦) གུར་ལུ་ཅི་ཀ་སྤྱོད།

གུར་ལུ་ཅི་ཀ་འི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི། ལུ་ཅི་ཀ་ནི་⁵ཙོག་འདུག་གོག་ལངས་མཁན་ཅོ།

ཡུལ་གྲུབ་སྤྱོད་སྤྱོད་ལ་ན་བྲམ་ཟེ་ཞིག་མི་མང་པོ་གི་བས་ཤེས་པ་སྤྱོད་སྤྱོད། འཁོར་བ་

1 'ཅེས་གསུངས་' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ འོག་དེ་ཉིད།
 2 'ཐོབ་སྐྱོ།' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། སྐྱབ་ཀྱན་ཤོག ༥༥/ན 89.
 3 'བཞུགས་ཏེ།' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། སྐྱབ་ཀྱན་ ༥༥ དེ་ཉིད།
 4 'མཛད་ནས།' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
 5 'ལུ་ཅི་ཀ་སྤྱོད་' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།

ལས་སློལ་ལོག་ནས་གནས་དབུགས་པ་ཞིག་ཏུ་སྦྱོར་དེ་ཚོས་བྱེད་སྐྱེམ་ནའང་གདམས་པ་
མེད་པས། དང་ལ་ཚོས་གསུང་བའི་སླ་མ་འཇིག་ནམ་འཕྲད་སྐྱེམ་པ་ན།

དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ཡིན་པའི་ཕྱིན་པ་ན་³དེ་དགའ་སྤེལ་གྱི་
འཚལ་བ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ན་ལེ་དང་ལ་སྤྱི་འཚལ་ནས་ཅི་དགོས། གསུངས་པ་
ལ། དེ་ན་ལེ་བདག་འཁོར་བ་ལས་སློལ་ལོག་ནས་ཚོས་གིག་⁴བྱེད་སྐྱེམ་པ་ལ།
གདམས་ངག་སྒྲོན་པའི་སླ་མ་མ་རྟོན་ནས། དེ་རིང་སླ་མ་དང་འཕྲད་པས་གདམས་
པ་ལྟོ་ཟེར་བས།

[རྣལ་འབྱོར་པ་]དེས་[དེ་ལ་]བདེ་མཚོག་ཏུ་དབང་བསྐྱར་དེ། བསྐྱེད་
ཚོགས་ཀྱི་གདམས་པ་གནང་བས། དེས་འབད་ནས་བསྐྱེམས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་
ན་⁵བསྐྱེད་ཚོགས་ཟུང་དུ་རྒྱུག་ཆེ་བྱུང་བ་ཐོབ་ནས། ལུ་ཅི་ཀར་བྲགས་གིང་། ལྷན་
ནས་ —

“འཁོར་བ་སྤང་ན་འདས་པ་གཉིས།
ཐ་དད་ཡོད་པར་མ་མཐོང་སྟེ།
དེ་ཉིད་ཐར་པ་བདེ་ཆེན་པོ།

1 ‘སླ་མ་གཅིག’ - ལྷན་པོའི་བཅའ་ཁྲིམས་ ༤༩/བ ༡ པའི་ཉིན་མོ་ ༤༩ དེ་ཉིད།
2 ‘པ་ཅིག’ - ལྷན་པོའི་བཅའ་ཁྲིམས་ ༤༥/བ ༡ ‘པ་གཅིག’ པའི་ཉིན་མོ་ ༥༠ བོང་།
3 ‘བྱོན་ནས’ - ལྷན་པོའི་བཅའ་ཁྲིམས་ ༤༥/བ ༡ པའི་ཉིན་མོ་ ༥༠ བོང་།
4 ‘ཚོས་ཅིག’ - ལྷན་པོའི་བཅའ་ཁྲིམས་ ༤༥/བ ༡ 90 པའི་ཉིན་མོ་ ༤༠ རོག
5 ‘བཅུ་གཉིས་ལ’ - ལྷན་པོའི་བཅའ་ཁྲིམས་ ༤༥ དེ་ཉིད། པའི་ཉིན་མོ་ ༤༩ དེ་ཉིད།
6 ‘སྤྱི་གཉི’ - པའི་ཉིན་མོ་ ༥༠ བོང་ 194. Vol 87.

དམན་པར་བརྒྱུང་། བས་བཟོད་པར་དཀའ།” །

ཞེས་ཡག་སྲུང་ས་ཏེ། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྐྱོད་དུ་གཤེགས་པ་སྟེ།
ནམ་མཁའ་ན་རྟོགས་པ་རྣམས་བཟོད་དེ་མི་སྤང་བར་གྱུར་དོ།

གྲུབ་ལུ་ཅི་ཀའི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

༥༧) གྲུབ་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་༤

གྲུབ་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ར་གུ་ཆ་སྟེ་ཡོན་ཏན་མེད་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་

ཤུའདེ་ག་བྱ་བའི་དམངས་རྩོལ་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ལས་བྱ་བ་འཕེལ་ཏེ། བཙམ་སྟོན་
སྐྱེ་ཆེན་པོ་བྱས་ནས་སྐྱེད་བསྐྱེད་ས་པ་ན། དེ་གཉིད་དང་ལེ་ལོ་ཆེ་བས་འཇིག་རྟེན་
གྱི་བྱ་བ་གང་ཡང་མ་དྲན་པས། འདི་འདྲ་བའི་ལེ་ལོ་ཅན་གྱི་མི་བྱ་བ་བཟང་ངན་
གང་ཡང་མི་འོང་བ་འདི་སྐྱེས་པ་བས་ཤིང་ཐོག་ཅིག་ཡིན་ན་བཟའ་རུ་ཡོད་པ་ལ་
ཟེར་ནས་མཐུན་པར་དམོད་པའི་ཆེ། དེ་ཡིད་བྱུང་ནས་སྐྱོགས་དབེན་པ་ཞིག་དུ་
སོང་ནས་བཟུང་ཡོད་པ་ལ། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་མཐོན་ནས་(དེ་ལ་)ཐོང་བྱིས་

1 ‘གཟུང་བས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ བོང་དེ་ཉིད།
2 ‘ཅེས་གསུངས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ བོང་དེ་ཉིད།
3 ‘གཤེགས་ཏེ།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད། རྒྱབ་ཀྱི་ཤོག ༤༥/བ
4 ‘འཇིག་རྟེན་’ - ར་ཀུ་ཆ་ལོ་རྒྱུས་ ༤༥ དེ་ཉིད། དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ དེ་ཉིད།
5 ‘ཐོག་ཅིག་’ - རྒྱབ་ཀྱི་ཤོག ༤༥/བ 90
6 ‘ཡིད་བྱུངས་ནས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ བོང་དེ་ཉིད།
7 ‘བ་གཅིག་’ - རྒྱབ་ཀྱི་ཤོག ༤༥/བ དེ་ཉི་ཤོག ༥༠ བོང་།

ནས་བསོད་སྐྱེམས་ལོངས་ལ་དྲོངས་ཤིག་གསུངས་པས། དེ་ན་ཡེ་བདག་གིས་
 མི་ལོངས་པར་འདུག་ན་། ཟེར་ནས་ས་ལ་འགོག་ཀྱང་མ་རུས་པ་ལ། དེའི་ཐུགས་
 རྗེས་བཟའ་བ་བྱིན་ནས་ཁྱོད་ལ་ཡོན་ཏན་ཅི་ཡོད། གསུངས་པས། འཕྲ་པ་²
 བདག་ནི་ནགས་ཞེས་བཏགས་པ་ལགས་ན་ཡོན་ཏན་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །ཞེས་ཟེར་
 བས། །ཁ་ཟས་[སོགས་] ཉལ་བྱིན་³བཟའ་བཏུང་བྱེད་པ་ན། དེ་ལ་[རྣལ་འབྱོར་
 པ་] དེས་གི་བས་མི་འཛིགས་སམ། བྱས་པས། འཛིགས་ཏེ་⁴ཐབས་མེད་ཟེར་
 རྒྱུ་པར་རུས་ན་ཐབས་སྐྱིན་གྱི་གསུངས་པས། ཉལ་བྱིན་བྱུར་ཡོད་ན་རུས་ལགས་
 ཟེར་བས། དེས་དབང་བསྐྱར་ནས་སྤང་སྤོང་བྱང་འཇུག་གི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་
 བཅང་སྟེ།

གཟུང་འཛིན་གང་ཡང་མ་གྲུབ་པས།
 མ་རྟོགས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི།
 རྒྱུག་བཟུལ་གྱིས་མནར་སྤྱིང་རེ་རྗེ།
 དེ་ཡང་གདོད་ནས་མ་གྲུབ་སྟེ། །

སྤང་དང་སྤོང་པ་དབྱེར་མེད་པའི།
 འོད་གསལ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེས་ནས་ཀྱང་།

1 'བདག་མི་ལོང' - རྒྱུག་ཀུན་ ཤོག ༤༥/བ
 2) 'རྣལ་འབྱོར་པ' - ཤེ་ཉི ཤོག ༥༠ བོང་།
 3 'ཉལ་བྱིན་བཟའ་བཏུང་བྱེད' - ཤེ་ཉི ཤོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།
 4 'འཛིགས་སྟེ' - ཤེ་ཉི ཤོག ༥༠ འོག

སྤྱོད་པ་ལྟ་བུར་སྤྱོད་པ་ལོས།

གོང་ཁྱིམ་དག་དུ་རྒྱུག་པར་བྱ། ༢

ཞེས་ །གསུངས་པ་ལྟར་དེས་ཀྱང་བསོད་སྤོམས་བྱེད་ཅིང་བསྐྱབས་པས།
འོད་གསལ་ལྟར་འདུག་གི་དོག་པ་སྤྱིས་ནས། གྲུབ་པ་ཐོབ་ཤི། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་
དུ་སྤྱོད་ནས་མི་རྣམས་སུ་ཡིན་ཟེར་བ་ལ། དེས་མི་ཀུན་ལ་བལྟས་ཀྱིན་དུས་པས།
མི་རྣམས་ཀྱང་འདི་འདྲ་བ་སྤྱིར་རེ་རྗེ་ཟེར་ནས་དུ་བར་བྱེད།

གདུལ་བྱ་སྤྱོད་དང་ལྡན་པ་ལ་སྤང་སྤོང་དབྱེར་མེད་ཀྱི་ལམ་སྤོན་པར་བྱེད་
དོ། དེ་ནས་རྒྱ་མཚོར་གྱུ་ཞིག་པ་བཞིན་འཇུག་པའི་རྒྱ་ཐམས་ཅད་ཞིག་ནས། ཕྱག་
རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ཅིང་། ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གུར་ཀྱུ་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྗེས་སོ། །

༥༥) གུར་ཀྱུ་ལོ་རྒྱུས་

གུར་ཀྱུ་ལོ་རྒྱུས་ལོ་རྒྱུས་ ལུའ་ལྷོ་(པོ)ག་ལར་རྒྱལ་པོ་ཞིག་ལ་བུམ་

-
- 1 'ཅེས་གསུངས་' - དེ་ཉི འོག ༥༠ དེ་ཉིད།
 - 2 'སྐྱབས་' - དེ་ཉི འོག ༥༠ འོག དེ་ཉིད།
 - 3 'མི་དག་' - དེ་ཉི འོག ༥༠ འོག
 - 4 'ནག་ཀྱུ' - དེ་ཉི འོག ༥༠ བོང་ རྒྱལ་ཀྱུན་ ༤༥/ བ 'འཇུག་པའི་' - རཀུལ་ལྷོ་པོ་ འོག ༡༢༤ །
 - 5 'རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་' - དེ་ཉི འོག ༥༡ བོང་ 'རྒྱུ་ལོ་རྒྱུས་' - རྒྱལ་ཀྱུན་ འོག ༤༥ དེ་ཉིད།

ཟེའི་སློན་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་བུམ་ཟེ་(དེ་)ཚོས་སྒྲོམ་ཞུགས་
 ར་ས། བཀའ་གསང་ལྔ་གས་²ཀྱི་ཚོས་གསང་གིན་བསྐྱབས་པས། བྱིན་ལྷ་བས་བྱུང་
 བ་སུས་ཀྱང་མ་ཚོར་བ་དང་། དུས་རྒྱུན་དུ་གཏོར་མ་མང་དུ་བཏང་བས། སློན་པོ་
 གཞན་གྱིས་མ་ཐོག་ནས་རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་པས། རྒྱལ་པོས་ཀྱང་དེ་བཙོན་དུ་བཟུང་སྒྲི
 ལྷགས་སུ་བཅུག་པ་ན། དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་

ལྷའི་རྗེས་སུ་ལ་³ཕྱིད་ལོངས་པ་ཆུད་ཚོས་སུ་བཅུག་པ་མེད་པས་ [བདག་]
 ལྷའ་ལས་ཐོང་ཞིག་⁴བྱས་ཀྱང་རྒྱལ་པོས་མ་ཉན་པ་ན། དེའི་ཕྱི་དེར་གཏོར་མའི་
 དུས་སུ་བྱ་དག་⁵འོངས་པས། དེ་མེད་པར་རྒྱལ་པོའི་ཁང་པར་བྱ་རོག་⁶དག་
 འདུས་ནས་དམག་དྲངས་ཏེ། མི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མགོ་བོད་གས་⁷འཚོགས་པར་བྱེད་
 པས། དེ་ན་བྱ་སྐད་ཉན་ཤིས་པ་ཞིག་⁸གིས་ཉན་པས།

ངེད་ཀྱི་པ་མར་གྱུར་པའི་བུམ་ཟེ་རྒྱལ་པོས་བསྐྱམས་པ་ཡིན་ཞོ་ཟེར་ནས།
 དེ་རྒྱལ་པོ་ལ་སྐྱས་པ་དང་། རྒྱལ་པོ་ན་ཟེ། དེ་ལྷ་ན་ཁོ་བདེན་ཟེར་ནས། བཟོད་

1 'ཡོད་པས' - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ འོག་ ༧༦/ན 91 པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ བོང་།
 2 'གསང་ལྔ་གས་གསང་གིན་བསྐྱབས།' - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ འོག་ ༧༦/ན .
 3 'ཆེད་ལོངས་ཆུད་ཚོས་སུ' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ བོང་།
 4 'ཐོང་ཅིག' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ བོང་།
 5 'བྱ་རོག་དག' - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ འོག་ ༧༦ དེ་ཉིད།
 6 'བྱ་དག་འོངས' - ལྷུ་བ་ཀྱུན་ འོག་ ༧༦ ན་།
 7 'ཐམས་ཅད་མགོ་ལ་ཏྱོག་པ་དང་།' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ བོང་ དེ་ཉིད།
 8 'ཤིས་པ་ཅིག་གིས' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ བོང་ དེ་ཉིད།

པར་སྤུལ་དེ། །བྱ་དག་ལོག་དུ་ཆུག་ཅིག་ཟེར་བས། དེས་བྱ་དག་ལ་སྦྱས་ནས་བྱ་
ལོག་པས་རྒྱལ་པོ་ཆེར་དང་དེ། ཉི་མ་རེ་ལ་འབྲས་ཁལ་ཉི་ལུ་གཏོར་རྒྱུན་ལ་
སོགས་པ་སྤུལ་ལོ།

དེ་མན་ཆད་སླ་མ་ཇུ་ལྟན་ཞེས་གྲགས་ལ། དེའི་ཞལ་ནས་—

ལྷན་ཅིག་སྦྱིས་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ།

སླ་མའི་དྲིན་གྱིས་ཡང་དག་ཏོགས།

བདེ་ཆེན་མཚོག་གི་སློན་པོ་བྱེད།

འཁོར་བའི་འཁོར་དུང་མི་གནས། ༡

གནས་ལུགས་རང་གསལ་རྒྱལ་པོ་དེས།

གཟུང་འཇིན་གཉིས་ཀྱི་དབྱ་ཡང་བཅོམ།

འཁོར་བའི་བདེ་ལ་ཆགས་པ་མེད།

ཀྱི་ཉི་མ་ཏོགས་སེམས་ཅན་རྣམས། ༢

ཀྱི་མ་ཞེས་ནི་ཇུ་ལྟན།

ཞེས་གསུངས་དེ། འགྲོ་དོན་མང་དུ་མཇུག་དེ། ལོ་བདུན་བརྒྱ་ན་མཁལ་

སྤོང་དུ་གཤེགས་སོ།

གུ་རུ་ཇུ་ལྟན་ཉི་ལོ་རྒྱུས་ཇོགས་སོ། །

1 'བཅོད་པར་སྤུལ་ནས' - རྒྱུ་ལྷན་གྱི་ཤོག ༤༦/བ དེ་ཉིད།
2 'ཇུ་ལྟན' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༡ ཤོང
3 'ཇུ་ལྟན' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༡ ཤོང 'ཇུ་ལྟན' - རྒྱུ་ལྷན་གྱི་ཤོག ༤༦/བ.

༥༩) གུ་རུ་ཅཔ་རི་སྤྲོ།

གུ་རུ་ཅཔ་རི་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཅམ་པུ་ཀ་ཡིན། རིགས་ཁྲུང་བ་འཛོང་པའོ། །དེ་ཐོང་ས་ནས་གོས་ཀྱང་ཀཱུལ་ལས་གོན་རྒྱ་མེད་པ་ཞིག་གིས་བདག་སྤྲུག་པོ་ཞིག་ཅན་ས་འཁྲུང་བ་སྤངས་ཤིང་། བཙོང་ས་ནས་དེའི་ཁྲིམ་འཛོ་བར་བྱེད་པའི་ཚེ། དེས་ཁྲུང་བ་མར་ཁྲུང་ཚོས་(བཙོས་)པ་མ་གཙོང་ས་པར་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཐོས་པས། ཕྱིད་ཅམ་ཐོས་ཟིན་པ་ན། འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་སྤྲུག་དགེ་སློང་ཞིག་དུ་སྐྱུལ་ནས་དེའི་གམ་དུ་བྱོན་པ་ན། དེ་དད་པ་སྐྱེས་ནས་སྤྲུག་བྱས་ཏེ་ཁྲུང་བ་ཕྱིད་པོ་དེ་དགེ་སློང་དེ་ལ་དྲངས་པས། དེ་ན་ཤི།

བྱིད་ཀྱིས་འདི་གང་ནས་ཁྲུགས་པ་⁴ཡིན་གསུངས་པས།⁵ དེས་ཀྱང་བདེན་པར་སྐྱེས་པ་དང་། [འཕགས་པས་] འོ་ན་འོ་སློལ་གཉིས་ཡོན་མཚོན་དུ་འདུག་པས་⁶ངས་ཡོན་བདག་ལ་ཚོས་ཤིག་⁷བྱ་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་མཐུལ་བྱས་ཏེ་མེ་ཉོག་ལ་སོགས་པ་སྤུལ་བས། སྐུལ་པས་ཀྱང་སྐྱབས་འགྲོ་སེམས་བསྐྱེད་

1 'མཚར་པ' - དེ་ཉི ༥༡ གོང་ 'སྐྱབས་ཀྱན་གོག་ ༤༦/བ. 'ཤེར་ཤིག་' - རའ་ རི་ རུ་ ༡༢༤ །

2 'སྤྲུག་པོ་གཙོག་ནས་' - སྐྱབས་ཀྱན་གོག་ ༤༦/བ

3 'སྤྲུག་པོ་ཅིག་ནས་འཁྲུང་བ་' - དེ་ཉི གོག་ ༥༡ གོང

4 'ཁྲུང་བ་ཡིན་' - སྐྱབས་ཀྱན་གོག་ ༤༦/བ ༦།

5 'གསུངས་ནས་' - སྐྱབས་ཀྱན་གོག་ ༤༦/ བ དེ་ཉིད།

6 'འདུག་པ་' - དེ་ཉི. གོག་ ༥༡ འོག་ 914

7 'ཅིག་གྲུ་' - དེ་ཉི. གོག་ ༥༡ དེ་ཉིད། སྐྱབས་ཀྱན་གོག་ ༤༦/ བ.

བྱིན་ལྟ་བུ་ལྷན་པ་ལྷན་པ་ ཡི་གེ་དྲུག་མའི་གདམས་པ་གནང་བས། དེས་ཀྱང་བྱུ་སྐུ་
 པས་བསོད་སྤོལ་སྐྱིས་འཚོ་བ་། དུས་དེ་རྒྱུ་བ་ཡཔའི་དུས་སྐུ། ལྷ་སྐྱི་ཁྱུ་སྐུ་བའི་
 བདག་པོ་དེ་འོངས་ནས། དེའི་རིན་གྱིན་ཟེར་བ་ལ། དེས་ང་ལ་ཅང་མེད་ན་བྱུ་སྐུ་
 པས། དེ་བརྒྱུང་ནས་བརྒྱུངས་པས། དེའི་ཁ་ནས་ང་གཅིག་ལྷན་མ་ཟོས་སྤོལ་
 དཔོན་དང་དེད་གཉིས་ཀས་ཟོས་ནས་ང་གཅིག་པོ་བརྒྱུང་ངམ། དུས་པས། དེ་
 བཞིན་དུ་རྒྱ་དེ་ཅིག་པ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཀྱང་བྱུང་བས་ངོ་མཚར་ནས། བདག་གི་
 ཁྱུ་སྐུ་བ་བྱིད་ཀྱིས་བྱིས་དེ་སོང་ཟེར་ནས་བཏང་ངོ་།།

དེས་ཀྱང་སྤྱི་ཁང་ཞིག་དུ་བྱིན་ནས་རང་གི་ཡི་དམ་གྱི་རྟེན་ཞིག་ཡོད་པ་
 ལས་ཁྱུ་སྐུ་བའི་རིན་སྒྲུངས་པས། [དེས་དེ་ལ་] གསེར་དོ་ལ་བརྒྱ་བཏང་པ་ན།
 དེ་ཁྱུ་སྐུ་སྐུ་སྐྱིས་བདག་ལ་ཁྱུ་སྐུ་བའི་རིན་དུ་གཏད།

ལྷ་སྐྱི་སྐྱི་བ་པ་བག་ཅིག་ཡོད་པ་དེས་དག་ནས། ངའི་སྤྱི་མ་འཕགས་པ་
 ཡིན་པར་འདུག་ཟེ། རི་པོ་དུལ་ར་འགྲོ་བར་ཆས་དེ་བྱིན་པ་ན། བར་དུ་ཆེ་ར་

1 'འཚོ་བ་དང་བྱུ་སྐུ་' - བེ་ཉི་ སོག ༥༡ འོག
 2 'བརྒྱུ་བས་པའི་རྒྱུ་བ་ཀྱན་ སོག ༧༤ དེ་ཉིད། 'སྤྱི་བས་པའི་' - བེ་ཉི་ སོག ༥༡ དེ་ཉིད།
 3 'ཟེར་པས་' - བེ་ཉི་ སོག ༥༡ དེ་ཉིད། རྒྱུ་བ་ཀྱན་ ༧༤/༧
 4 'བྱུ་བ་ལ་' - བེ་ཉི་ དེ་ཉིད། རྒྱུ་བ་ཀྱན་ ༧༤ དེ་ཉིད།
 5 'ཞལ་ནས་' - བེ་ཉི་ སོག ༥༡ དེ་ཉིད།
 6 'དོ་ལི་' - བེ་ཉི་ དེ་ཉིད། རྒྱུ་བ་ཀྱན་ དེ་ཉིད།
 7 'སྤྱི་ཁང་' - བེ་ཉི་ དེ་ཉིད།

མའི་ནགས་¹ ཤིག་ནས་རྐང་པ་ལ་ཆེར་མ་བྱུག་ནས་སྐྱུག་བཟུལ་ཆེན་པོ་བྱང་སྟེ།
འཕགས་པ་ལ་སྐྱེ་སྐྱེས་ཆེན་པོ་ཡང་[ཡང་]བཏང་བས། འཕགས་པས་ཀྱང་ཞལ་
དངོས་སུ་བཟུང་།

ཁྱོད་ཀྱི་སླ་མ་ང་ཡིན་པས། ད་ཁྱོད་རང་དོན་གཉེར་བར་མ་བྱེད་པར་བྱིར་
ལོག་ལ་གདུལ་བྱ་རྣམས་དྲང་བར་བྱོས་ཤིག གསུངས་པས། དེ་དགའ་ནས་རྣམ་
མཁའ་ལ་འཕགས་ཏེ་ཅམ་ཡུཀར་ཡང་²བྱོན་ནས་³། ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མཐོང་བས་
ངོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། གདམས་པ་ཞུས་པས། སྤང་སྤོང་དབྱེར་མེད་ཀྱི་གདམས་པ་
ཡང་གསུངས།

དེ་མན་ཆད་སླ་མ་ཅུ་⁵རིམ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་ཏེ། མཐར་ལུས་དེ་
ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུས་ཐོག་སོ། །

1 ‘གཅིག་ནས་’ - སྐྱུག་ཀྱང་ ཤིག ལའ/ན
2 ‘ཅམ་ཡུཀར་ཡེ་བྱོན་པས་’ - ཤི་ཉི, ཤིག ༥༡ འོག 194. Vol 87
3 ‘ཅམ་ཡུཀར་དེ་བྱོན་པས་’ - ཤི་ཉི, ཤིག ༥༡ འོག 194. Vol 87
4 ‘གསུངས་ཏེ་’ སྐྱུག་ཀྱང་ ལའ/ན ཤི་ཉི ༥༡ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘བཅའ་རིམ་ཞེས་ཡིག་ལོ་རྒྱུས་ཏེ་’ - དོན་ ‘ཅམ་ཡུཀར་’ ཡིན་ལ་ དེའི་བྱུར་ཆག་ ‘ཅམ་ཡུཀར་’ ཡིན་
པར་སྤང་།

རྒྱལ་འབྲོར་པ་ཡུལ་མང་པོར་བྱོན་ན། མི་རྟོག་འདི་འབྲུ་བ་དང་བདག་
འབྲུ་བའི་རྒྱལ་པོ་གཞན་ན་གཟེགས་སམ། ལུས་པས། (རྒྱལ་འབྲོར་པ་)
དེ་ན་རེ—

མི་རྟོག་ཙམ་པུཀ་ནི་དྲི་མཚོག་ལྟར་གྱུར་ཀྱང་།
རང་གི་ལུས་ལས་དྲི་མ་ལྷ་ཚོགས་དེ་མ་ཡིན།
རྒྱལ་པོ་རྒྱལ་སྲིད་གཞན་ལས་ཁྱད་པར་འཕགས་གྱུར་ཀྱང་།
འཆི་བར་གྱུར་བའི་ཆེ་ན་གང་ཡང་མེད་པར་འགྲོ། ༡

ཞེས་འགས་པས། རྒྱལ་པོས་བརྟགས་པས་ལུས་ལ་ཞེན་པ་རང་ལོག་
དུ་སོང་ནས། སྐར་དེ་ལ་གདམས་པ་ལུས་པས། (རྒྱལ་འབྲོར་པ་) དེས་དང་པོར་
ལས་རྒྱུ་འབྲས་བུ་ན། དེ་ནས་དབང་བསྐྱུར་དེ་གདམས་པ་ལམ་བསྐྱེད་རྗེས་
གནང་བས། དེའི་རྣམ་རྟོག་མི་རྟོག་ལ་སོགས་པ་ལ་སོང་མཁས་སྐྱོམ་དུ་མ་འདོད་
པ་ལ། དེས་རྟོག་པ་ལམ་བྱིས་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ། ।

སྤང་ཙམ་ཉིད་ནས་སྤང་པ་ན།
སྤ་མའི་མན་ངག་མི་རྟོག་ལ།
རང་སེམས་བུང་བ་འགན་པར་བྱེད།
ཟག་མེད་འདུད་ཅིའི་སྤང་ཅི་གསུམ། ༢

1 'ཅེས་གསུངས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།
2 'མི་རྟོག་ལ་སོང་ནས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༣ ལོང་དེ་ཉིད།
3 'རང་སེམས་བུང་བོ་' - དེ་ཉི་ཤོག ༥༣ འོག་དེ་ཉིད།

ཉམས་ནས་གྲོང་དང་གྲོང་བྱིར་དུ་བསོད་སྦྱོམས་བྱེད་པ་ལས། དུས་གཅིག་ནས་
བསོད་སྦྱོམས་མ་རྙེད་ནས། སེམས་ཁོང་དུ་རྒྱུད་ཅིང་། དབེན་པ་ཞིག་དུ་བཟུང་
པའི་དུས་སུ་རྒྱ་གོ་མ་ཞིག་བྱོན་ནས། ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས།
དེས་ཀྱང་བདེན་པར་སྦྱས་པ་ན།

དེས་ང་ལ་འདོད་པ་རྙེད་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་གསུངས་པས། དེ་ན་མེ།
བདག་ལ་ལྟ་ཟེམ། འོ་ན་ཡོན་ཅི་ཡོད། གསུངས་པས། (དེས་)སྤྱིང་འོག་གི་སོ་མེ་
མེ་བཞག་ནས་གཞན་རྣམས་བདོན་ཏེ་སྤུལ་བས། ལྷག་པའི་བསམ་པ་གཡོ་སྤྱོད་
པར་མཁྱེན་ནས་(དེ་ཉིད་དུ་)དབང་བསྐྱར། ཐབས་དང་གེས་རབ་ཟུང་འཇུག་གི་
གདམས་པ་གནང་། (དེ་)ནས་དེས་ཀྱང་བསྐྱོམས་པས་ལོ་བདུན་ན་བདེན་པ་
མཐོང་།² ཟག་མེད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་རྒྱུད་ལ་སྦྱིས་ནས་³རང་གི་རྟོགས་པ་བརྗོད།⁴

གདུལ་བྱའི་དོན་དུ་གྲོང་དང་གྲོང་བྱིར་དུ་བྱོན་ནས་སྤྲིལ་བུ་ཞེས་བྱ་
བར་བྲགས།⁷ ལོ་མང་པོ་ན་ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

གྲུབ་སྤྲིལ་བུའི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

1 'བསྐྱར་ཏེ' - ལྷག་ཀྱན་ ༧༧/ན པེ་ཉི་ འོག་ ༥༣ འོག
2 'མ་ཐོང་སྤྱི' - ལྷག་ཀྱན་ ༧༤ པེ་ཉི་ འོག་ ༥༣ འོག
3 'སྦྱིས་ནས་འདུལ་བྱའི་དོན་...' - ལྷག་ཀྱན་ ༧༧/ན
4 'བརྗོད་དེ' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༣ འོག
5 'དོན་ལ།' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༡ འོག
6 'སྤྲིལ་ཞེས' - པེ་ཉི་ འོག་ ༥༣ འོག
7 'བྲགས་ཏེ' - ལྷག་ཀྱན་ འོག་ ༧༤/ན པེ་ཉི་ འོག་ ༡༣ འོག་ དེ་ཉིད།

པས། (དེ་ན་རེ་)སྤྱི་མ་(ལགས་)དེ་ལྟར་ན་ཐར་པ་འདྲུང་བའི་ཐབས་ལུ་ཟེར་
བས། དེས་དབང་བསྐྱར་ནས་མཚན་མ་རང་གསལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་སྟེ།

“རང་ལུས་དེལ་གྱི་གོང་ཉིད་ལས།
རྣམ་རྟོག་མར་ཁྱེད་ཅེས་ཀྱང་།
སེམས་ཉིད་སྣོད་དུ་སྐྱབས་བྱས་ཏེ།
སྣང་སྣོད་དབྱེར་མེད་སྣོད་བུ་ལ། ༡

རིག་པ་ཡི་གེས་མེ་སྤར་ནས།
མ་རིག་མུན་པ་སྤངས་གུར་ཏེ།
ཐར་པའི་བདེ་བ་སྤྲོད་མེད།
ཟག་མེད་བདེ་ལ་གནས་པར་འགྱུར་། ༢

ཞེས་གསུངས་ནས། དེས་ཀྱང་གུས་པར་བསྐྱོམས་པས། ལོ་དུག་ན་
བསྐྱེད་རྫོགས་ཟུང་དུ་ཚུད་དེ་བྱུ་པ་ཐོབ་ནས་རང་ལུས་ལས་འོད་འཕྲོས་པས་
སྐྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་གང་བར་བྱས་པ་ན། དེ་གཞན་གྱིས་མཐོང་ནས་སྐྱེལ་པོ་ལ་
བསྟུང་པ་ན། སྐྱེལ་པོས་བཞུར་བཏང་བས་དེ་ལྟར་འདྲུག་པ་དང་། དེས་ཀྱང་ཟག་
པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ལ་ལོངས་སྤྱོད་པའི་སྐྱེལ་པོ་དང་མཉམ་པ་འགའ་ཡང་མེད་
དོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པའོ། ༢ཤིང་། ཐམས་ཅད་དད་པ་ལ། དེ་དག་གི་

1 'བྱུ་པ་དེ' - སྐྱེལ་གྱུན་ ཤོག ༤༤/བ 90 'ཐམས་ཅད་གང་བར་བྱས་པ་དེ' བེ་ཉི་ ༥༩ བོང
2 'གསུང་ཞིང' - སྐྱེལ་གྱུན་ ཤོག ༤༤/བ བེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ བོང དེ་ཉིད།

བས། སྐྱོ་བ་སྐྱེས་པར་གདའོ།། ཞེས་ཟེར་བ་ལ།། དེས་²སྐྱིན་གདག་ཁྱོད་ཀྱིས་མ་
 ལོ་ལ། འཁོར་བའི་སེམས་ཅན་འདི་³རྣམས་སྐྱུག་བསྐྱེད་བ་ལས་བདེ་བ་ནི་
 འགའ་ཙམ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་དུས་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཐ་མ་མེད་
 པར་སྐྱུག་བསྐྱེད་གཅིག་ལྟུང་⁴ལས་མེད་དེ། སྐྱོ་བ་མ་སྐྱེས་⁵པར་གདའ་ན་གསུངས་
 པས།

དེ་དང་ནས་སྐྱ་མ་དེ་ལས་⁶ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག་⁷ལྟུང་ལགས་ཟེར་བས།
 དེས་དབང་བསྐྱུར་ནས་བསྐྱེད་ཇོགས་གཉིས་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་སྟེ།

“མ་རིག་པ་ཡི་རྒྱ་ས་ལས།།
 ཉོན་མོངས་རྣམ་རྟོག་འདམ་⁹ཕྱང་སྟེ།།
 སྤྱོད་ལེན་འཁོར་ལོས་རིགས་དུག་གི།
 རྒྱ་ཕྱས་ཡི་ཤེས་མེ་ཡིས་སྤྲེགས་”།། ༡

1 ‘ཟེར་བས’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ ཤོག ༤༥ པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ འོག
 2 ‘དེ་སྐྱིན་’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ ཤོག ༤༥ པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ ཤོང
 3 ‘འདི་སྐྱུག་བསྐྱེད་’ - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
 4 ‘གཅིག་ལྟུང་’ - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
 5 ‘མ་སྐྱེས་གདའ་ན་’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ ཤོག ༤༥/ བ 96.
 6 ‘དེ་ལ་ཐར་པའི་’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ ཤོག ༤༥ དེ་ཉིད།
 7 ‘ཐབས་ཤིག་’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ ཤོག དེ་ཉིད། པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ འོག དེ་ཉིད།
 8 ‘གནང་བ་ནི་’ - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
 9 ‘འདམ་ཕྱང་’ - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༩ འོག

त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।

तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।

सुवर्णवन्दनं तु क्वचिद्विद्युत्सुखा ॥ ॥

७८) सुवर्णवन्दनं

सुवर्णवन्दनं । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।
 त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् । तत्रैकं त्रिसंशयान्तरात् ।

- 1 'उत्संशयान्तरात्' - पं० ५३ त्रिसंशयान्तरात् ।
- 2 'सुवर्णवन्दनं' - सुवर्णवन्दनं पं० ८५/ व ८९/३
- 3 'उत्संशयान्तरात्' - पं० ५३ त्रिसंशयान्तरात् 'उत्संशयान्तरात्' सुवर्णवन्दनं पं० ८९ 'उत्संशयान्तरात्' सुवर्णवन्दनं पं० १७१ चवरी (जबरी-अजपालि) पा - रा० पुरा० नि० पृ० १२४ ।
- 4 'सुवर्णवन्दनं' - सुवर्णवन्दनं पं० ८९/ ३ पं० ५३ त्रिसंशयान्तरात् ।
- 5 'सुवर्णवन्दनं' - पं० ५८ त्रिसंशयान्तरात् सुवर्णवन्दनं पं० ८९/३ 195. Vol 87

ཉེ་(དེ་)དེར་སླེབས་པ་ན། རམ་འཛིན་(ཅན་འཛིན་)པས། ལེགས་སོ་གསུངས་ནས་ལྷགས་
ཚུ་གཏོར་བས་མ་སྦྱང་གཉིས་རང་འབྲུང་དོ་རྗེ་ལོ་སྐྱུར་སོང་སྟེ། ཟས་ལ་སོགས་པ་
གང་ཡང་མི་དགོས་པར་གྱུར་ཏེ།

(དུས་) དེར་བྱིམ་དུ་དེའི་ཁྱོ་ཡོང་། འནས་དྲིས་པས་གར་སོང་ཆ་མེད་པར་
སོང་ངོ་(ཟེར་རོ)། །དེས་ཀུན་ལ་དྲིས་པས་ཐོས་ཉེ་བསྐྱབས་ནས་འོངས་པས།
སྤར་གྱི་གཏམ་བཤད་དོ། །ཉེ་ལ་ཡང་སྤྲུལ་ཚུ་བཏབ་པས་སྤར་བཞིན་སོང་སྟེ།
དེ་གསུམ་སྟན་གཅིག་ལ་གནས་པར་བྱེད་དོ།³

ཡང་དེའི་ཕྱི་ནས་གཉེན་འདུན་གཅིག་ནས་གཉིས་སུ་འོངས་པ་དེ་དག་
ཐམས་ཅད་དེ་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ། སུམ་བརྒྱ་ཙམ་དེར་མཉེ་བའི་སྐྱུར་བ་ལྟར་འོངས་
པས་ཐམས་ཅད་དོན་དང་འཕྲད་དོ།⁴

བུ་མོའི་བུ་ལ་ནི་ཡོན་ཏན་འདི་ལྟ་བུ་ཡོད་དེ། འབྲས་བུ་ནས་ནི་མཁའ་
སྤྱོད་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་འོངས་ལ། དོ་རྗེ་ནས་གསེར་འབྱུང་གྱི་འཕྱི་འོང་ཞིང་། འོག་སྒོ་
ནས་བཅུད་ལེན་དང་། མིག་ནས་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་སོགས་སུ་བ་ཆེན་བརྒྱན་
འབྲུང་ངོ་།⁷

1 'འོངས་ནས་' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།
2 'བཤད་དེ་དེ་ལ' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༥།
3 'གནས་པར་བྱེད་པ་ཡོད་པར་གསུངས་ངོ་' - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༤༩/ན འེ་ཉི་ དེ་ཉིད།
4 'འཕྲད་དེ་' - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༤༩/བ དེ་ཉིད། བོ་ཉི་ཤོག ༥༥ འོག
5 'འབྱུང་ཕྱི་འོང་' - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༤༩/བ
6 'བཅུད་ལེན་' - ལྷུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད།
7 'འབྲུང་བའོ་' - ལྷུབ་ཀུན་ དེ་ཉིད།

(ཚུལ་)དེ་སྤྱོད་མཚམས་ཐམས་ཅད་དུ་གྲགས་པས། ཅམ་པུ་ཀའི་རྒྱལ་
 བོ་མཉི་ལ་¹མོགས་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་བཟུང་འོངས་པས། རྒྱལ་བོ་དད་ནས་ཡབ་
 ཡུམ་གསུམ་ལ་ལྷ་ཁང་གཅིག་དང་། དེའི་སྤྱིར་གཞན་སུམ་བརྒྱ་ལ་ལྷ་ཁང་གཅིག་
 བྱས་ལ། མིང་‘དུམཔ’²ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་སོ། །

དེའི་ནང་དུ་རྣམ་རྟོག་ངན་པ་ཡོད་པ་འགྲོ་རྩི་འདོད་དེ་རྩི་སྐྱེ་དེས་རྒྱང་
 བ་ལ་སོར་པ་བྱེད་དོ། །དེར་སྐྱེ་བ་གནས་ཆར་ནས་དུ་ད་ལྟ་ཡང་ [ཨ་ལྷ་ཡད་རྩེའི་
 དུས་]རྣལ་འབྱོར་པ་མང་དུ་ཡོད་དོ་གསུང་དོ། །དེ་སྐྱེ་བ་³ཐམ་གྱི་ཉེ་སྤྱོད་འདི་
 རི་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཡིན་ལ། རྒྱལ་བ་བྱམས་པའི་བསྐྱེད་པའི་བར་དུ་
 འདུག་ཅིང་དེ་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་དོ།།

གུ་ལ་ཐོབ་ཅུ་ (རྩེ་རི་)པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ། །

1 ‘མཉི་ལ་མོགས་’ - ཞེས་ཀྱང་ལ་འདུག་ཀྱང་ ཡི་གེ་ཆད་པར་མངོན་སྤྱོད་, ‘མཉི་ལྷུལ་’
 ཞེས་ཡོད་སྤྱང་།
 2 ‘དུམཔ’ - བེ་ཉི་ བོག ༥༧ འོག
 3 སྐྱེ་བ་ཐམ་གྱི་ཉེ་ - བེ་ཉི་ བོག ༥༧ འོག

༤༥) གྲུ་མ་ཞི་རྒྱ་དྲུ།

གྲུ་མ་ཞི་རྒྱ་དྲུ་འཇམ་མེད་ལྷོ་ལོ་རྒྱུས་ནི། བྱོར་
 བྱིར་ཨག་ཅི་བྱ་བ་ན་བྱིམ་བདག་འབྱོར་པ་ཅན་ཞིག་ལ། བུ་མོ་ལོ་བརྒྱ་གསུམ་མ་
 གཅིག་ཡོད་པ་དེ་རང་གི་རྟ་དང་འཚམས་པའི་བག་མར་བཏང་ནས། སྐར་མ་
 མའི་གམ་དུ་འོངས་ནས་དེ་ན་ཡོད་པ་ན། སྐ་མ་ཀུཀུ་རི་ཕུ་བྱོན་ནས་བུ་མོ་ལ་
 བཟའ་བ་བསྐྱངས་པས། བུ་མོ་ན་ཤི། ཉིད་གཟུགས་བྱད་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་
 འདི་འདྲ་བ་ཟས་བསོད་སྟོམས་ཀྱིས་འཚོ་ཞིང་། གོས་ཚེམ་བུ་ཅན་གྱིས་ཅི་བྱེད།
 རང་གི་རྟ་དང་འཚམས་པའི་བྱིམ་ཐབ་ཅིག་ལེན་མོད་ཟེར་བས། དེའི་ཞལ་ནས་—

“བདག་གི་འཁོར་བས་འཇིགས་ཤིང་སྐྱབ་པས་ཤོ།།
 ཐར་པ་བདེ་ཆེན་མཚོག་ནི་སྐྱབ་པར་བྱེད།།
 དེ་ཡང་རྟེན་བཟང་འདི་ལ་མ་བསྐྱབས་ན།།
 ཕྱི་ནས་འདི་འདྲ་རྟེན་པར་ག་ལ་འགྱུར།།”

དེས་ན་རྟེན་བཟང་ཚོར་བུ་རིན་ཆེན་འདི།།
 བྱིམ་ཐབ་མི་གཙང་ནང་དུ་སྐྱས་པ་ཤོ།།

1 གྲུ་མ་ཞི་རྒྱ་དྲུ་འཇམ་མེད་ལྷོ་ལོ་རྒྱུས་ནི། - རྟེན་འབྱོར་མ་ལྷན་པའི་ལྷུབ་ཀུན་ ༤༩ །
 2 ‘བརྟེན་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༤ འོག
 3 ‘སྐར་མ་ལས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༤ འོག 196. Vol 87
 4 ‘ཚེམ་བུས་ཅི་བྱེད་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༤ འོག
 5 ‘སྐྱ་པ་ན།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༤ འོག
 6 ‘ཐབ་པས་ན།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༥ འོག།

དགོས་འདོད་རེ་འཛོམས་སྲུག་བཟུལ་ལྟ་ ཚོགས་འབྲུང་།

དེ་ལྟར་རྟོགས་ནས་བདག་གིས་བྱིམ་ཐབ་སྤངས་། 3

ཞེས་ཤིག་སྤངས་པས། དེ་དང་ནས་བསོད་སྣོམས་གྲུ་ཉོམ་པ་དྲངས་པ་ནས།
ང་ལ་ཐར་པ་ཐོབ་པའི་ཐབས་ཤིག་ལུ་ཟེར་བ་ལ།

དེས་ངའི་བྱིམ་དུ་རྒྱོད་ཡིན་པས་དགོས་ན་དེར་ཤོག་གསུངས་པས། དེ་
བྱ་³བ་གང་ཡང་མ་དྲན་དེ་དགོངས་ཀ་སྲོམ་ནས་དེར་སོང་བ་ལ། སླ་མས་བུ་མོ་
དེའི་རྒྱུད་སློན་པར་མཐོང་ནས་བདེ་མཚོག་དུ་དབང་བསྐྱུལ། བསྐྱེད་རྗེས་ལྷུང་
འཇུག་གི་གདམས་པ་གནང་ནས།⁴ ཞལ་བདུན་དུ་དགོན་པ་དེ་ཉིད་དུ་སྐྱབ་པ་བྱས།
དེ་ནས་མ་མ་ཅན་དུ་སྦྱོར་པས། དེ་དག་བརྟེན་པ་དང་། ངེ་སྐྱེས་ལ་སོགས་པ་
བྱེད་པས། བུ་མོས་ཁམས་གསུམ་པོ་དག་ན་མ་མར་མ་གྱུར་པ་ནི་མེད་ལ། རིགས་
དང་རུས་ཆེ་བས་ཀྱང་འཁོར་པའི་གཏིང་ལས་⁵བསྐྱོབ་པ་མེད་པས་ན། བདག་ནི་
སླ་མ་བསྟེན་ནས་ཐར་པ་སྐྱབ་པར་བྱེད་པས་ཚུབ་ཅིག་ངས་ལམ་དུ་བྱིར་⁶མོ་ཟེར་
བས།དེ་རྣམས་བག་ཅིག་དང་ནས་ཅང་མི་ཟེར་བ་ན། དེས་ཀྱང་སླ་མའི་གདམས་⁷

1 'ཤོས་གསུངས་' . དེ་ཉི་ ཤོག ཡུ བོང དེ་ཉིད།
2 'བསོད་སྣོམས་དྲངས་' . དེ་ཉི་ ཤོག ཡུ བོང དེ་ཉིད།
3 བུ་མོ་དེ་སླ་མའི་གསུ་གིས་ཡིད་གཡོས་ནས་བྱ་བ་གཞན་གང་ཡང་མ་དྲན་པའོ།
4 'གནང་བས་' . དེ་ཉི་ ཤོག ཡུ བོང དེ་ཉིད།
5 'གདེངས་ལ་' . དེ་ཉི་ ཤོག ཡུ བོང དེ་ཉིད།
6 'འབྱིར་མོ་' . དེ་ཉི་ ཤོག ཡུ བོང དེ་ཉིད།
7 'གདམས་པ་སྐྱོམ་' . དེ་ཉི་ ཤོག དེ་ཉིད།

ངག་བསྐྱོམ་ཞིང་། ལས་དང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་སྒོས་བཏང་ནས་ལོ་གཅིག་དུ་བསྐྱད་
པ་ན། ལྔ་ཀྱི་ཁྱོད་(དེ་)འོངས་ནས་བྱིར་བས།

དེའི་བྱིམ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་གྱི་ལས་དང་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཇི་
ལྟ་བུར་བྱེད་ཅིང་ཁ་དང་ལུས་ཀྱང་ཐུབ། ངག་སྟུན་པ་ལ་སོགས་པ་ཟེར་ཡོང་
ཡོད་པ་ན། བུ་ཚ་ཡང་རིམ་པར་བྱ་དང་བྱ་མོ་གཉིས་སྐྱེས་སོ།³ །དེ་(ཚོ་)ཡང་དེ་
ཁོ་ན་འདྲ་བར་ཡོད་པས་རིགས་ཀྱི་བུ་ཚ་འདི་འདྲ་ཟེར་ནས་(ཀུན་གྱིས་)སྒོན་པར་
བྱེད་པའི་ཚེ། སྤྲོ་མ་དང་འཕྲད་ནས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོ་ན། (དེ་ནས་ཉིན་གཅིག་)
ཚུ་འཚུར་ཕྱིན་ནས་བྱིམ་དུ་འོངས་པའི་ལམ་⁴དུ་ཤིང་ཞིག་ལ་རྐང་པ་འཕྲོགས་
ནས་རྗེ་མ་ཆག་པས། དེ་གར་འདུག་ནས་བྱིམ་དུ་ཉི་མ་ཕྱེད་ཀྱི་བར་དུ་མ་འོངས་
པ་དང་⁵ ལྟར་ཕྱིན་པ་རྗེ་མ་ཆག་པོ་ལ་ལྟས་ནས་འདུག་པས། དེ་ལ་གཏམ་ཅི་
སྐྱས་ཀྱང་མི་ཉུན་པ་ལྟ་བུ་ལ། ཐམས་ཅད་(འདི་)འདྲེས་གཟུང་⁷ ངམ་ཅི་
ཟེར་ཞིང་ཉི་མ་གྲོས་ལ་ཁད་པ་ན—

ཐོག་མ་མེད་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས།

1 'ལས་དང་བྱ་བ་ཇི་ལྟར་བྱེད་ཅིང་' - བེ་ཉི་ འོག ༥༥ བོང་ དེ་ཉིད།
2 'ཟེར་ཅིང་' - བེ་ཉི་ འོག ༥༥ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༠/ན. དེ་ཉིད།
3 'སྐྱེས་པ།' - བེ་ཉི་ འོག ༥༥ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༠/ན.
4 'བྱིམ་དུ་འོངས་པས་ཤིང་ཞིག་ལ' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༠ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ འོག ༥༥
དེ་ཉིད།
5 'མ་འོངས་པས' - བེ་ཉི་ འོག ༥༥ དེ་ཉིད། ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༠/ན.
6 'ལྟ་བུར་' - བེ་ཉི་ འོག ༥༥ དེ་ཉིད།
7 'བཟུང་ངམ་ཅི' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༠ དེ་ཉིད།

ལུས་ཀྱི་རྩ་མ་ཆ་གཤམ་པ་ལ།

བྱིས་དུ་ལོག་པ་གཤམ་པ་ལོ།

བདག་གི་རྩ་མ་ཆ་དེ་རིང་ཆགས། ༡

ད་ནི་འཁོར་བའི་བྱིས་དུ་ནི།

མི་ལྷོག་བདེ་བ་ཆེན་པོར་འགྲོ།

ཨི་མ་སྤྲོ་མ་ངོ་མཚར་ཆེ།

བདེ་བ་ཐོབ་འདོད་དེ་ལ་བརྟེན། ༢

ཅེས་གསུངས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕགས་ཏེ། ཞག་ཉི་ཤུ་ཅུ་གཅིག་ན་
ཨག་ཅེ་¹ (ཞེས་པ་རང་གི་ཡུལ་)པ་(རྣམས་)ལ་གདམས་པ་གསུངས་ནས་
མཁའ་སྤྱོད་དུ་གསལ་བས་སོ།

གུ་རུ་མེ་ལྷུ་འུ་ལོ་རྒྱུ་སྤྲོད་པས་སོ། །

༤༤) གུ་རུ་མེ་ལྷུ་

གུ་རུ་མེ་ལྷུ་འུ་ལོ་རྒྱུ་སྤྲོད་པས་སོ། ཡུལ་དེ་སྤྱི་ལོ་འུ་མ་བྱིས་བདག་ཅིག་ལ་བུ་མོ་
གཉིས་ཡོད་པ་ལ། དེ་དང་དཔོན་ཞིག་ལ་ཡང་བུ་གཉིས་ཡོད་པ་གཉིས་དུ་བྱས་པ་
དང་། བུ་མོ་དེ་གཉིས་ལ་ཐམས་ཅད་ཁ་ཟེར་བར་བྱེད་པ་ལ། དེ་གཉིས་ཀྱིས་ངན་
པ་³བྱས་པ་ནི་ཅི་ཡང་མེད་དོ།

1 'ཨག་ཅེ་' - བོ་ཉི་ཤོག་ ༥༥ འོག
2 'གཉིས་ཡོད་པ་' - བོ་ཉི་ཤོག་ ༥༥ འོག་ དེ་ཉིད། 196
3 'ངན་པ་ཅི་ཡང་བྱས་པ་མེད་དོ།' - བོ་ཉི་ཤོག་ ༥༥ འོག་ དེ་ཉིད།

དེའི་ཆེ་རུ་མོ་ན་ཤེ། རྒྱ་མཚན་མེད་པ་ལ་ཁ་ཟེར་བ་འདི་འདྲ་ལས་།
 གཞན་དུ་འབྱུངས་དགོས་ཟེར། སུ་མོ་ན་ཤེ། གང་དུ་ཕྱིན་ཀྱང་ཚོགས་མ་བསཏ་
 པས་འདི་དང་ཁྱད་མི་འོང་བས་འདི་རང་དུ་བསྐྱད་དགོས་ཟེར་བའི་ཆེ་སྒྲ་མ་
 ཀུན་ལྡན་ཡུ་བ་དེར་བྱོན། དེ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཐོ་མོ་བདུན་བརྒྱུ་བསྐྱོར་བ། མ་ཤེག་
 པའི་གདུགས་དབུ་ལ་འཁོར་བ། རྒྱ་མཚན་གྱི་མ་དགོལ་བར་འཁོལ་བ་ལ་སྟོར་པའི་
 ཡོན་ཏན་དཔག་དུ་མེད་པ་དང་ལྡན་པར་གྲུ་པས་། སྐྱུ་གཉིས་ཀྱིས་འོ་སྐྱོལ་
 གཉིས་ལ་ཡུལ་མི་དང་ཁྱོས་ཀྱང་ཁ་ཟེར་བས། སྒྲ་མ་འདི་ལ་གདམས་པ་ཞུས་
 ཉས་སྐྱབ་པ་བྱེད་དགོས་བྱས་ནས་དེའི་ཅན་དུ་ཕྱིན་ནས། ལྷར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་འབྲུག་
 ཅིང་གདམས་པ་ཞུས་པས། དེས་ཀྱང་གནང་གྱི། དབང་བསྐྱུར་ནས་ལྷ་བསྐྱོར་པ་
 སྐྱོད་པ་འབྲས་བུ་རྒྱུང་འཇུག་ཕག་མོའི་གདམས་པ་གནང་རོ།།

དེ་གཉིས་ཀྱིས་(ཀྱང་)བཙོན་པས་བསྐྱབས་པས་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་གྲུབ་
 པ་ཐོབ་གྱི། སྒྲ་མ་ཅན་དུ་ཕྱིན་ནས་ཕྱག་དང་མཚོད་པ་བྱས། བཀའ་རྒྱུ་གྱིས་ཁྱབ་

-
- 1 'འདི་འདྲ་ལ' - དེ་གི་ བོག ༥༥ འོག དེ་གི་ད།
 - 2 'ཐོད་དཔེ་ཀྱན་ལ་མལ་ཆེར་མཐུན་པ' - ཀུན་པ་ ཞེས་འདུག་ཀྱང་ ཀུན་ལྡན་ ཡིན།
 - 3 'བྱོན་དེ' - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག ༥༠/བ. དེ་གི་ད།
 - 4 'མེད་པ་སྐྱོགས་པས་དཔུན་གཉིས' - དེ་གི་ བོག ༥༥ འོག 'བསྐྱགས་པས' - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག ༥༠/བ.
 - 5 'ཁྱོ་ཡང' - སྐྱབ་ཀྱན་ བོག ༥༠ དེ་གི་ད། དེ་གི་ བོག ༥༥ འོག
 - 6 'ལོ་རྒྱུས་ཀྱང་བསྐྱད' - དེ་གི་ བོག ༥༥ འོག

པའི་གཏམ་བཏང་བས། (སླ་མས་) བྱིད་གང་པ་ །ཡིན། ངས་མ་གྲོས་གསུངས་
 པས། སྤར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་བསྟན་དོ། །འོ་ན་ང་ལ་ཡོན་ཏན་འབྱུང་དགོས་གསུངས་པས།
 [དེ་གཉིས་ཀྱིས་] སླ་མ་ཅི་བཞིན་པ་འབྱུང་ཞུས་པས། འོ་ན་ང་ལ་བྱིད་གཉིས་ཀྱི་
 མགོ་པོ་བྱིན་ཅིག་གསུངས་པས་དེས་ཀྱང་སླ་མ་བཞིན་ན་འབྱུང་ཟེར་ནས། དེ་
 གཉིས་ཀྱིས་རང་རང་གི་ཁ་ནས་ཡི་གེས་ཀྱི་རལ་གྱི་ཚོང་ར་དང་ལྷན་པ་རེ་ཕྱང་
 ནས་ཡལ་ལག་གི་དམ་པ་མགོ་བཅད་ནས་ཕུལ་དེ།

བདག་ཅག་གཉིས་པོ་སླ་མའི་བཀའ་དྲིན་གྱིས།
 བསྐྱེད་ཚོགས་ཟུང་འཇུག་འཁོར་འདས་སྦྱོས་པ་བཅད།
 ལྷ་སྦྱོད་ཟུང་འཇུག་སྤང་སྦྱོས་པ་བཅད།
 དབྱིངས་རིག་ཟུང་འཇུག་བདག་བཞུན་སྦྱོས་པ་བཅད།
 སྦྱོས་མེད་བད་ཡི་ཚུལ་དུ་འདི་འབྱུང་ལོ། །

ཞེས་འགས་པས་གཞིན་དབུ་བཅད་དེ་གར་མཇེད་པས། ཀམ་ལྷོ་(ཀམ་ལྷོ) པའི་
 ཞལ་ནས་—

ཨི་མ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོ་གཉིས།

-
- 1 'བྱིད་གང་ཡིན' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'རང་རང་གི་ཡལ་ལག་གི་དམ་པོ་མགོ་པོ་' - ཤོ་ཉི ཤོག ༥༦ བོང་ དེ་ཉིད།
 - 3 'བདག་གཉིས་པོ་སླ་མའི་བཀའ་དྲིན་གྱི་' - ཤོ་ཉི ཤོག ༥༦ བོང་
 - 4 'དབྱིངས་རིགས་' - ཤོ་ཉི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།
 - 5 'ཅེས་གསུངས་' - ཤོ་ཉི ཤོག ༥༦ དེ་ཉིད།

ཡོན་ཏན་མཚོག་ཐོབ་དགེ་བ་སྟེ།

རང་ཉིད་ཞི་བདེ་དམན་པས་ན།

འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་གནས་པར་མཛོད། ༡

ཅེས་གསུངས་པས། མགོ་བོ་སྐར་གསོས་²དེ་མ་མེད་པར་གྱུར་པས།

ཐམས་ཅད་ངོ་མཚར་སྐྱེས་ནས་དབུ་བཅད་མ་སྤུན་གཉིས་སུ་བྲགས།

ཀུན་ལྡན་ཞེས་འབྲིང་བྱས་ནས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པ། ལོ་
མང་དུ་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས་རྟོགས་པ་བཟོད་པ་ལ་སོགས་པ་མཛད། དེ་ནས་
མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།

ཤུ་མོ་སྟེ་གུ་རུ་མེ་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྟོགས་སོ། །

༤༧) གུ་རུ་ཀུན་ལའ།

གུ་རུ་ཀུན་ལའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། གྲུབ་ཆེན་ཀུན་ལྡན་ཞེས་པའི་སྤྱོད་པའི་ཞབས་

ཀྱིས་རྗེས་སུ་བཟུང་བ་བཟོད་མ་ཐག་པའི་དབུ་བཅད་མ་སྤུན་⁴གཉིས་ཀྱི་ལུ་མོ་དེ་

1 'གསུངས་ནས' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༡/ན
 2 'སྐར་སོས་དེ' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༤ བོང་དེ་ཉིད།
 3 'ཐོབ་སྟེ།' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༡/ན. དེ་ཉིད།
 4 'དཔུན་གཉིས' - བོ་ཉི་ཤོག ༥༤ བོང་ 196 Vol 87.

ཡིན་ལ། རྣམ་ཐར་གོང་གིས་རྟོགས་ཤིང་། མཚན་རྣལ་འབྱོར་མ་ཀའལ་ཞེས་
གྲགས་སོ།

གུ་ལ་ཀའལ་ལོ་རྒྱུ་རྗེ་གས་སོ། །

༦༤) གུ་ལ་ཀའལ་ཀའལ་

གུ་ལ་ཀའལ་ལོ་རྒྱུ་ནི། དེ་ཡང་ཀུ་ཙེ་ཅན་ཏེ། བྱོང་བྱིར་སྤྲེལ་ལེར་²
ན་གང་བཅས་དམངས་རིགས་ཤིག་³ལྗོན་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་ཤིན་ཏུ་ཡང་ཀུ་ཙེ་ཆེ་
ནས་བྱོང་བྱིར་གྱི་མི་ཀུན་སུན་⁴ཏེ། བསྐྱོད་ནས་བཏང་བ་དང་། དེ་སྐྱོ་བ་སྐྱེས་ནས་
མཐར་གྱིས་དུར་ཁྲོད་དུ་སྦྱིན་ནས་སེམས་ཁོང་དུ་རྒྱུད་ཅིང་འདུག་པའི་ཆེ། རྣལ་
འབྱོར་པ་ཞིག་དེར་བྱོན་ནས། ཁྲོད་དུར་ཁྲོད་དུ་ཅིའི་ཆེད་དུ་འདུག་ཅེས་དྲིས་
པས། དེས་སྤར་གྱི་ལོ་རྒྱུ་བདེན་པར་སྦྱས་པ་དང་།⁵ (རྣལ་འབྱོར་པས་)དེ་ལ་
ཁྲོད་མི་སྐྱོ་བ་དང་། འཁོར་བའི་སྐྱུག་བསྐྱེད་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་མི་དགོས་སམ།
བྱས་པས། དེས་ཅེས་ཀྱང་དགོས་ཉུང་པས། དེ་ལ་ཕྱག་དང་མཚན་པ་བྱེད་དུ་

1 'ཀེའི་ཀེའི' - གུ་ལ་ཀུན་ བོག ༥༡/ན . 101. 14 'वलकलपा' - རའེ་ པེུ་ རིེ་ པེུ་
༡༢༤ །
2 'སྤྲེལ་ལེར་ན' - གུ་ལ་ཀུན་ བོག དེ་ཉིད། 'भिरलिर नगर' - རའེ་ པེུ་ རིེ་ པེུ་ ༡༢༤ །
3 'རིགས་ཞིག' - གུ་ལ་ཀུན་ བོག ༥༡/ན.
4 'བསྐྱོན་ཏེ།' - པེ་ཉི་ བོག ༥༦ བོང་།
5 'སྦྱས་པས་' - པེ་ཉི་ བོག ༥༦ འོག

བཅུག་ནས། གསང་བ་འདུས་པར་དབང་བསྐྱར་དེ། རྒྱང་བ་རང་གྲོལ་གྱི་གདམས་
པ་འདི་གནང་ཡོད།

སྐྱ་ཙམ་ཉིད་དུ་རང་དང་གཞན་གྱི་སྐྱ།
དོ་བོ་གཅིག་ལ་ཐ་དད་མེད་པར་སྐྱོམས།⁴
དེ་ནས་རང་སྐྱ་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ནས་ནི།
འབྲུག་སྐྱ་ལྟར་བྲགས་མེ་དོག་ཆར་འབབ་སྐྱོམས།⁵

ཞེས་བསྐྱུངས་པས། དེས་ཀྱང་འབད་ནས་བསྐྱོམས་པས། གཞན་གྲོ་བ་
ལ་སོགས་པའི་སྐྱ་⁶རང་གིས་(=རང་སྐྱའི་ནང་དུ)སྐྱར་ལ། རང་སྐྱ་དེ་ཡང་མེ་
དོག་ཆར་འབབ་པའི་ནང་དུ་སྐྱར། མེ་དོག་གི་དོག་པ་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་སྐྱར་
ནས། རྒྱང་བ་ཐམས་ཅད་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་གསུམ་དེ། རྒྱང་བ་རང་གྲོལ་དུ་སོང་
ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ།⁸ རྒྱུགས་ཐམས་ཅད་དུ་སྐྱ་མ་ཀུ་ཙཱ་ཅན་གྱི་བར་བྲགས།⁹

1 'དབང་བསྐྱར་ནས།' - དེ་ཉི་མོག་ ༥༤ འོག་དེ་ཉིད།
2 'གནང་ཡོད' - རྒྱུབ་ཀྱན་མོག་ ༥༡ དེ་ཉིད།
3 'འབད་མེད་དུ་སྐྱོམས།' - རྒྱུབ་ཀྱན་མོག་ ༥༡/བ.
4 'འབད་མེད་དུ་སྐྱོམས།' - རྒྱུབ་ཀྱན་མོག་ ༥༡/བ.
5 'མེས་གསུངས་' - དེ་ཉི་མོག་ ༥༤ འོག་དེ་ཉིད།
6 'སོགས་པའི་སྐྱ་རང་གིས་སྐྱོང་' - རྒྱུབ་ཀྱན་མོག་ ༥༡/བ.
7 'གསུངས་' - དེ་ཉི་མོག་ ༥༤ དེ་ཉིད།
8 'ཐོབ་པས་' - དེ་ཉི་མོག་ ༥༤ དེ་ཉིད།
9 'བྲགས་པའི་' - རྒྱུབ་ཀྱན་མོག་ ༥༡ དེ་ཉིད། དེ་ཉི་མོག་ ༥༤ དེ་ཉིད།

[མཐར་]གདུལ་བྱའི་དོན་མང་དུ་བྱས་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་[ལ་སོགས་
 པ་]གསུངས་ཏེ། འཁོར་སུམ་བརྒྱ་དང་བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།
 གུ་ཏུ་ཀལ་ཀལ་ལི་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ།། ॥

༤༩) གུ་ཏུ་ཀལ་རྒྱལ།

གུ་ཏུ་ཀལ་རྒྱལ་ལི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཀལ་རྒྱལ་གྱི་ཆེ་མ་བུ་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། ཡུལ་
 མཆོད་རྟེན་གྱི་ཡུལ་ལ་ཡུལ་ལྷན་དུ་བའི་གང་ཟག་ཅིག་³འབྱོར་པ་དང་ལོངས་སྤྱོད་
 ཀྱིས་མོངས་ནས་གོས་ཆེ་མ་བུ་བྱེད་ཅིང་སྤངས་པ་ན། དུས་གཅིག་གི་ཆེ་ཆེ་མ་བུ་
 བྱེད་པའི་ཁབ་ལག་པ་ལ་བྱུག་གི་⁴ལྷན་དུ་ལྷན་ལྷན་གྱི་ཆེ་བས་མ་བཟོད་ནས་
 སྤོགས་གཅིག་དུ་འདྲེ་ལྷོག་བྱེད་པ་ན། མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིན་ལྷོ་བུད་མེད་ཅིག་⁵དུ་
 སྤྱུལ་ཏེ་འདིའི་གམ་དུ་བྱོན་ནས། བྱོད་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེས་སྐར་
 གྱི་གཏམ་ལེགས་པར་བཏང་བས། དེས་གསུངས་པས།

“འདི་བས་སྐྱེ་བ་སྐྱེ་མར་ཡང་སྐྱུག་བསྐྱུལ་བ་[ཆེན་པོ] ལྷོང་ལ། ད་དུང་
 སྐྱེ་བ་སྐྱེ་མར་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདི་བས་ལྷན་པའི་སྐྱུག་བསྐྱུལ་ཉམས་སུ་ལྷོང་བས་

1 ‘བཅས་ཏེ’ - ལྷན་ཀྱང་གོག་ ༥༡/བ. དེ་ཉིད།
 2 ‘ཅེས་བྱ་བར’ - བོ་ཉི་གོག་ ༥༤ འོག་ 196 Vol 87.
 3 ‘གང་ཟག་གཅིག’ - བོ་ཉི་གོག་ ༥༤ དེ་ཉིད། ལྷན་ཀྱང་ ༥༡/བ . དེ་ཉིད།
 4 ‘བྱུག་ཏེ’ - བོ་ཉི་གོག་ ༥༤ དེ་ཉིད།
 5 ‘བུད་མེད་ཞིག་དུ་སྤྱུལ་ནས’ - བོ་ཉི་གོག་ ༥༤ འོག་ དེ་ཉིད།
 6 ‘བུད་མེད་ཞིག་དུ་སྤྱུལ་ནས’ - བོ་ཉི་གོག་ ༥༤ འོག་ དེ་ཉིད།

[འཁོར་བ་འདི་]ལྷུག་བཟུལ་གྱི་རང་བཞིན་ལས་མ་འདས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་
 གསུངས་པས། དེ་ན་ཟེ། དེ་ལས་ཐར་པའི་ཐབས་ཤིག་¹ཟེར་བ་ལ།² མཁའ་
 འགྲོ་མ་དེས་ཀྱང་ཕྱོད་ཀྱིས་སྐྱབ་རྒྱས་སམ། གསུངས་པས། དེས་ཅེས་ཉེ་མི་རྒྱས་
 ཟེར། (དེ་)ནས་དེར་དབྱེས་པ་དོ་རྗེས་དབང་བསྐྱར།³ ཚད་མེད་པ་དང་། ལྷ་
 མའི་རྣལ་འབྱོར་དང་། བསྐྱེད་རིམ་གྱི་རྣལ་འབྱོར་གནང་སྟེ། བསྐྱེད་སྟེ་མཁའ་⁴པས། དེ་
 ཚེས་བུ་ལ་རྟོག་པ་སོང་བ་ན་རྟོག་པ་ལམ་བྱིར་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།⁵

སྤྱིར་ཉིད་བར་སྤྱང་ལྷུག་དར་ཁྲོད།
 དུན་དང་རིག་པའི་ཁབ་སྐྱེད་ཀྱིས།
 ལོས་དག་བཅེམས་ལ་སྤྱིར་རྗེས་ཁབ།
 སྤྱིད་གསུམ་སེམས་ཅན་བྱུང་པར་སྐྱེམས། །

1 ‘ཐབས་ཅིག’ - ལྷུག་ཀྱང་ཤོག ཡ།/བ. ‘ཐབས་གཅིག’ པེ་ཉི་ཤོག ཡ། བོང
 2 ‘ཟེར་བས’ - ལྷུག་ཀྱང་ཤོག ཡ།/བ. པེ་ཉི་ཤོག ཡ། བོང།
 3 ‘བསྐྱར་ནས’ - ལྷུག་ཀྱང་ཤོག ཡ། པེ་ཉི་ཤོག ཡ། དེ་ཉིད།
 4 ‘སྐྱེམས་པས’ - པེ་ཉི་ཤོག ཡ། བོང།
 5 ‘དེས་ཚེས་བུ་མ་ཤེས་པར་སོང་བ་ན། ལྷུག་རྟོག་པ་ལམ་བྱིད་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།
 པེ་ཉི་ཤོག ཡ། བོང།
 6 ‘འཚེས’ - པེ་ཉི་ཤོག ཡ། དེ་ཉིད།

ཞེས་འགས་པས། དེས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱོམས་པས་ཚོས་ཐམས་
ཅད་སྤོང་པར་རྟོགས་ནས་དེ་ལྟར་མ་རྟོགས་པའི་སེམས་ཅན་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་
སྐྱེས་ནས། དེ་གཉིས་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་མདུ་མུ་དེ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ།

སྐྱབས་ཐམས་ཅད་དུ་སྒྲ་མ་ཀུན་ལྷིཔུ་ཞེས་འགྲུགས། འགྲོ་བའི་དོན་མང་
དུ་མཛད་པ་རྟོགས་པ་བཅོམ་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ནས་མཐར་ལུས་དེ་ཉིད་
ཀྱིས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་ཀུན་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྗེས་སོ།། ॥

༧༠) གུ་རུ་རྒྱུ་ལོ།

གུ་རུ་རྒྱུ་ལའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་རྫོགས་ཀྱི་བར་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་

ཟག་ཅིག་རྒྱའི་ཐག་པ་བྱས་ནས་འཚོ་བའི་ཆེད་དུ་བརྩོངས་མཔ་ན། དུས་གཅིག་གི་

-
- 1 'ཤེས་གསུངས' - དེ་ཉི འོག ༥༧ དེ་ཉིད།
 - 2 'ཟུང་འཇུག་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་སྐྱེ' - དེ་ཉི འོག ༥༧ བོང་།
 - 3 'ཞེས་གསུངས་ཤིང་།' - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག ༥༣/ན. དེ་ཉི འོག ༥༧ དེ་ཉིད།
 - 4 'མཛད་ནས' - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག ༥༣ དེ་ཉིད། 'མཛད་དེ' - དེ་ཉི འོག ༥༧ དེ་
ཉིད།
 - 5 'མཐར་རྟོག་པ་བཅོམ་པ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག ༥༣ དེ་ཉིད།
 - 6 རས, ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག ༥༣ དེ་ཉིད།
 - 7 'རྒྱུ་ལི' - ལྷུ་བ་ཀུན་ འོག ༥༣/ན. (ཐུའུ་ལི) - རའའ་ཕུའུ་ཆིའུ་ཕུའུ་ ༡༢༥ །
 - 8 'འཚོང་པ་ན' - དེ་ཉི འོག ༥༣ བོང་ དེ་ཉིད།

ཚེ་དེས་ཐལ་པ་བསྐྱེལ་དྲག་པས་ལག་པ་ལ་ཚུ་འབྱར་དྲག་པོ་བྱུང་སྟེ། ཟུག་རྩུ་
ཚེན་པོ་བྱུང་བས། དེ་རུ་ཡིན་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་བསྐྱེད་པ་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་ཞིག་
བྱོན་ནས་དེ་ལ་ཅི་ཉེས། གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་གཏམ་དྲང་པོར་བཏང་བས།
(སྐར་རྣལ་འབྱོར་པ་)དེས་གསུངས་པ་—

“སྲོད་ད་ལྟ་རྒྱུག་བསྐྱེལ་འདི་ཙམ་ཡང་མི་བཟོད་པར་འདུག་ན། ཕྱི་མ་
ངན་སོང་དུ་སྐྱེས་ཙམ་ཅི་ཅུག་བྱེད་པ་ཡིན” གསུངས་པས། དེ་ན་ཤེ། སྐ་མ་དེ་
ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག་འཁྱེད་ཐེ་བས། (རྣལ་འབྱོར་པས་)དེ་ལ་དང་པོ་བྱིན་
རྒྱལས་འཕོ་བའི་དབང་བསྐྱར་བྱས་ནས། རྟོག་པ་ལམ་ཁྱེད་ཀྱི་གདམས་པ་འདི་
གསུངས་སོ—

སྤང་བ་གོམས་པའི་ཀུ་ག་དང་།
ཀུན་བཏགས་པར་སྤང་ཉིད་ཡགས་གཉིས།
གདོད་ནས་མ་བྱུ་དོ་པོར་ནི།
རུས་པ་རྒྱན་མི་ཆད་པར་སྐྱོམས། །

ཞེས་གསུངས། (དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་གསུངས་) པའི་དོན་བཙོན་འབྱུས་
ཀྱིས་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྐྱོམས་པས། ཀུན་བཏགས་[བཏགས་]གཞི་མེད། གཞན་

1 ‘ཐབས་ཅིག’ - རྒྱུབ་ཀུན་ བོག ༥༣/བ . དེ་ཉིད།
2 ‘པར་སྤང་ན་གནས་གཉིས’ - རྒྱུབ་ཀུན་ བོག ༥༣/བ . ‘པར་སྤང་ཉིད་གནས་’ པེ་ཉི
བོག ༥༧ འོག

དབང་རྟེན་འབྲེལ། ཡོངས་གྲུབ་ཚུལ་གྱི་དབྱིངས་གྱི་ངོ་བོར་། (རྟེན་)གཅིག་ཏུ་
 རྟོགས་ནས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པ། སྤྱོད་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་རྒྱུ་ལོ་ལྷན་ཞེས་³
 བྲགས་ཤིང་། ལོ་བདུན་བརྒྱའི་བར་དུ་རྒྱ་གར་མཐའ་དབུས་རྣམས་སུ་འགྲོ་དོན་
 མང་དུ་མཇུག་ནས་རྟོགས་པ་བརྗོད་པ་ཡང་གསུངས་ཏེ། འཁོར་ལྷ་བརྒྱ་དང་
 བཅས་⁴པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གསལ་བས་སོ།།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་ས་ཚུལ་སོ།། །

༧) གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་ས་ལྷན་པ།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུ་ས་ལྷན་པ། ལྷན་པ་སྤྱོད་ལྷན་པ་བྱ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་⁵

ཡུལ་དེ་སྤྱོད་པ་བྱ་བ་ཆེ་ལུ་⁷རྟེན་གྱི་གང་ཟག་ཅིག་སྤྱོད་པའི་འབྲས་བུས་
 འབྱོར་པ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་། རང་ཉིད་ཁང་བཟང་གི་ནང་ན་འདོད་པའི་ཡོན་ཏུན་ལྷན་པ་
 ཡོངས་སྤྱོད་ཅིང་གནས་པའི་ཆེ། རྣམ་མཁའ་ལ་སྤྱིན་ཁ་དོག་ལྷན་པའི་སྤྱིན་
 ལས་སྤོག་ཆགས་སྤོག་ཚོགས་གྱི་གཟུར་འབྲས་བུ་མཐོང་ནས་དེ་ལ་བལྟས་པས། བྱ་
 ངང་པ་རྣམ་མཁའ་ལ་འབྲས་བུ་མཐོང་ནས། དེའི་བསམ་པ་ལ་ང་ཡང་འབྲས་

1 'ངོ་བོ་གཅིག་ཏུ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༥༣ དེ་ཉིད། བེ་ཉི་ བོག ༥༧ འོག
 2 'ཐོབ་སྤྱོད' - བེ་ཉི་ ༥༧ འོག ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༥༣/ན .
 3 'ཞེས་བྱ་བར་བྲགས་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༥༣/ན .
 4 'བཅས་ནས' - བེ་ཉི་ བོག ༥༧ འོག དེ་ཉིད།
 5 'དེས་ཀྱང' - ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༥༣/བ ན
 6 'བྱ་བར' - བེ་ཉི་ བོག ༥༧ དེ་ཉིད། ལྷུ་བ་ཀུན་ བོག ༥༣/བ
 7 'རྟེན་གྱི' - བེ་ཉི་ བོག ༥༧ དེ་ཉིད།

རྒྱལ་ན་རེ་དགའ་སྐྱམ་ནས་བྱ་བ་གང་ཡང་མ་དྲན་པའི་དུས་སུ་སྐྱམ་མ་ཀའ་རི་ལྟ་
 དེར་བྱོན་ནས་བསོད་སྦྱོམས་མཇེད་པས། དེ་ན་ཤེ་རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་བསོད་སྦྱོམས་
 འདྲིན་ལགས་ཀྱི་ཉིད་ལ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བའི་ཐབས་མངའ་ན་ཞུ་བེར་ནས།
 བཞེས་ཆབ་བྱ་ཚོམ་པ་དྲངས་ནས་ཕྱག་བཙལ་ཡོན་སུལ་བས། དེས་(དེ)ང་ལ་
 ཡོད་ཀྱི་གསུངས་ནས། རྗེ་རྗེ་གདན་བཞེས་དབང་བསྐྱར་ནས། གདམས་ངག་དུ་
 “གནས་ཆེན་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞི་རྩ་ལྔ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞི་ཡོད་པ་དེར་སོང་ལ་འུ་གི་མ་རེ་
 རེའི་བཞུས་པ་ཁྱི་ཚོ་རེ་རྩོམ་ཡིན་ རྩམ་རེ་ཁྱོད་ཤོག” གསུངས་ནས་བཏང་བས།

དེ་ན་ཤེ། དེ་དག་ཚང་བ་དང་རི་ལྗར་བྱེད་པ་ཡིན། ཟེར་བ་ལ། “དེ་
 དང་པོ་ཟངས་ཀྱི་སྦྱོད་དུ་ཚུགས། དེ་ནས་དདུལ། དེ་ནས་གསེར་གྱི་སྦྱོད་དུ་ཚུགས། ཅིག
 རམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བར་རྒྱས་སོ” གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་ལོ་བཅུ་གཉིས་ནས་
 སྐྱམ་ཚང་བ་དང་། དེ་ལྟར་བྱས་པས་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་བས་མིང་ཡང་
 ལྷན་ལེ་ཞེས་བྱ་བར་བྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་བྲགས་ཤིང་། རྗོགས་པ་བརྗོད་ནས་
 ལུས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཁའ་སྦྱོད་དུ་གཤེགས་སོ། །

གྲུབ་ཐོབ་ལེའི་[ལྷན་ལེའི་]ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

1 ‘རྣལ་འབྱོར་པ་ལ་བསོད་སྦྱོམས་’ - པེ་ཉི་ཤོག ༥༧ འོག
 2 ‘ཕྱག་འཚལ་’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣/བ. དེ་ཉིད།
 3 ‘རྩོམ་གྱིན་’ - པེ་ཉི་ཤོག ༥༥ ཤོང་།
 4 ‘ཟེར་བས་’ - ལྷུབ་ཀུན་ ཤོག ༥༣ དེ་ཉིད།

༧༩) བྱ་རྒྱུ་ལྟུང་།

བྱ་རྒྱུ་ལྟུང་ལོ་རྒྱུས་ནི།— ཀུལ་ལྟུང་ཐོབ་པ་ཅན་ནོ། ། དེ་ཡང་ཡུལ་
 རྒྱུ་ལྟུང་གི་བར་དམངས་རིགས་ལས་ཀྱི་འཛོལ་བ་འཁོར་ལ་བྱ་ཚ་ལྟུང་ལོ་རྒྱུས་ལྟུང་
 རྒྱུ་ལས་ཀྱི་དེའི་རྒྱུང་མ་གྱི་ནས་རོ་དུར་ཁྲོད་དུ་བསྐྱེད་བསྐྱེད་ལ་བསྐྱེད་
 ཡིན་བསྐྱེད་པ་ན། ཡང་བྱ་ཚ་ཀུན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་མིས་དེ་ལ་སྐྱེད་བཏང་བས། དེ་
 ཀུན་གྱི་རོ་དུར་བསྐྱེད་ནས་ཡང་དུ་ཡིན་བསྐྱེད་པ་ན། རྒྱུ་ལྟུང་ལོ་རྒྱུས་ལོ་རྒྱུས་ལོ་
 དེར་བྱོན་ནས།

ཁྲོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་གསུངས་པས། དེ་ན་རེ་“རྒྱུ་ལྟུང་ལྟུང་
 བདག་ཁྲིམ་ཐབ་དང་བྱ་ཚ་ཀུན་གྱི་བུ་བའི་སྐྱེད་ཅན་གྱིས་ཡིད་གདུངས་ནས་རོ་འདི་
 རྒྱུ་ལས་སྐྱོ་བཏོང་མ་རྒྱུས་ཏེ་འདིར་འདུག་གིན་གདུང།” ལྷན་པས། སྐྱོ་བ་དཔོན་
 རྒྱུ་ལོ་སྐྱོད་པས་གསུངས་པ་—

“ཁམས་གསུམ་གྱི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འདིའི་རང་བཞིན་ཡིན་ཞིང་།
 ཁྲོད་གཅིག་ལྟུང་མ་ཡིན། དེ་ལ་སྐྱེད་ཅན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ལྟུང་མི་ཕན་པས་ (དེ་
 བས་) ཚོས་གྱིས། ཁྲོད་འཁོར་བའི་སྐྱེད་ཅིང་ལོ་རྒྱུས་ལྟུང་སྐྱེད་པས།” གསུངས་པས།

-
- 1 ‘ཐོབ་པ་ཅན།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༥ ཁོང་དེ་ཉིད།
 - 2 ‘དམངས་རིགས་ལས་ཀྱིས་འཛོལ་བ་གཅིག་ལ’ - ལྷན་གྱི་ཤོག ༥༣/བ. ལས་ཀྱིས་འཛོལ་བ་གཅིག་ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༥ ཁོང་།
 - 3 ‘དམངས་རིགས་ལས་ཀྱིས་འཛོལ་བ་གཅིག་ལ’ - ལྷན་གྱི་ཤོག ༥༣/བ. ལས་ཀྱིས་འཛོལ་བ་གཅིག་ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༥ ཁོང་།
 - 4 ‘ཡིན་ཅིང་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༥༥ ཁོང་ལྷན་གྱི་ཤོག ༥༣/ན. དེ་ཉིད།

དེ་ན་ཨ། སྐྱེ་འཛི་ལ་འཇིགས་ཏེ། དེ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་མངའ་ན་བདག་ལ་
ཚོལ་ཅིག་ལྷས་པས།

དེས་ [དེ་རྗེ་] དབྱེས་པ་རྗེ་རྗེའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐྱུར་ནས། བསྐྱེད་
རྗེགས་ཀྱི་གདམས་པ་བྱིན་ཏེ། སྐྱོད་པ་བྱེད་དུ་བཅུག་² བྱ་ཚའི་རུས་པས་བྱིན་དུག་
བྱེད་དུ་བཅུག་ནས་བྱོན་³། རུང་མའི་མགོ་བོ་བཅད་ནས་ཁ་ཐོར་བྱས་ཏེ། ཐོད་པ་
ནི་བསྐྱེད་རིམ། ཐོད་པའི་ནང་སྐྱོད་པར་ཡོད་པ་ནི་རྗེགས་རིམ་ཡིན་པར་བསྐྱེད་
པས། དེས་ཀྱང་སྐྱོད་པ་བྱེད་ཅིང་བསྐྱོམས་པས། ལོ་དགུ་ན་⁴རྒྱང་འཇུག་དུ་སོང་
སྟེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་⁵། [དེ་ནས་] གདུལ་བྱ་རྣམས་ལེ—

ང་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཐོད་པ་ཅན།
ཚོས་རྣམས་རང་བཞིན་བདག་གིས་ནི།
ཐོད་པ་ལྟ་བུར་རྗེགས་པ་ན།
བྲགས་ལས་བྱུང་བའི་སྐྱོད་པར་གནས། ༡

1 'བྱིན་སྟེ' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ འོག 197 Vol 87.
2 'བཅུག་པས' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད། རྒྱུབ་ཀྱུན་ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
3 'བྱོན་མོ།' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།
4 'དགུ་ནས' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ དེ་ཉིད།
5 'ཐོབ་ནས' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ འོག རྒྱུབ་ཀྱུན་ཤོག ༥༩/ན . དེ་ཉིད།
6 'གདུལ་བྱ་དག་ལ' - བོ་ནི་ཤོག ༥༥ འོག རྒྱུབ་ཀྱུན་ཤོག ༥༩/ན.

ཞེས་ 'གསུངས་ནས་ནམ་མཁའ་ལ་གར་བྱས་པས།² མི་ཐམས་ཅད་
 དང་ནས་སྒྲ་མ་ཀུལ་པུ་ཞེས་བྲགས་། [རང་]གི་རྟོགས་པ་ (ཡང་)བཟོད།
 (དེ)ནས་ལོ་ལྔ་བརྒྱུ་འགྲོ་དོན་མཛད་། (མཐར་)འཁོར་བྱུག་བརྒྱ་དང་བཅས་
 ནས་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུགས་ལའི་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ།། ॥

༧༩) གྲུགས་ལྔ་པུལ།

གྲུགས་ལྔ་པུལ་འི་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི། ཀེར་པུལ་སྟེ་སྟེ་ཚོར་སྤངས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ཅོ།⁶

གོང་གི་རྒྱུ་ལྔ་པུལ་ལྟར་བྱུལ་པོའི་གང་ཟག་ཅིག་རྒྱུ་སྤྱོད་རྒྱུས་པ་ལ་
 ལོངས་སྤྱོད་ཅིང་རྣམ་ཐོས་ཀྱི་སྒྲས་ལྟ་བུར་ཡོད་པ་ལ། དེས་ཀྱང་མ་ངོམས་དེ།
 སྤྱོགས་གཞན་ན་ཡོད་པའི་རྒྱུས་པོའི་སྤྱོད་ཀྱང་ཀྱང་སྤྱོགས་ནས་ལོངས་སྤྱོད་པར་

-
- 1 'ཤེས་གསུངས་' - པེ་ཉི་ཤོག ༥༥ འོག
 - 2 'ཐམས་ཅད་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༩ །
 - 3 'བྲགས་དེ་' - པེ་ཉི་ ༥༥ འོག ལྷུབ་ཀྱན་ ༥༩ དེ་ཉིད།
 - 4 'མཛད་དེ་' - པེ་ཉི་ ཤོག ༥༥ འོག ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༩ དེ་ཉིད།
 - 5 'ཀེར་པུལ་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༩/ན. པེ་ཉི་ ཤོག ༥༥ འོག དེ་ཉིད། 'ཀེར་པུལ་' - རའུ་ཤུའུ་ལེ་ལེ་ ༩༣༥ 'ཀེར་པུལ་' ལྷུབ་ཀྱན་ ལྷུང་པར་ཤོག ༡༧༥ 'ཀེར་པུལ་' རྟོགས་བཟོད་གོ་རིམ་ ཤོག ༤༩/ན
 - 6 'ཀེར་པུལ་སྟེ་སྟེ་ཚོར་སྤངས་པ་བྱ་བ་ཡིན་ཅོ།' ཞེས་པ་པེ་ཉི་པར་ལ་མཛད། ཤོག ༥༥ འོག ཀེར་པུལ་པ - 'གཡོངས་བྱེད་ཞབས་' - རྟོགས་བཟོད་གོ་རིམ་ ཤོག ༤༩/ན.
- 123
- 7 'བྱ་བ་རྒྱལ་པོ་' - ལྷུབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༩/ན. དེ་ཉིད།

བྱེད་པ་ན། ཡང་ཡུལ་ཁམས་གཞན་དུ་དམག་དྲངས་པས། དེ་ན་ཡོད་པའི་སྐྱེས་པ་
འབྲོས་ལྷུས་པ་རྣམས་བྲོས་ནས་མེད་པ་ལ། བྱད་མེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་བྲོས་མ་
ལྷུས་པས་བརྒྱལ་བ་དང་། རུ་བ་ལ་སོགས་པ་དཔག་དུ་མེད་པ་རྒྱལ་པོས་མཐོང་
ནས། དེས་སློན་པོ་ཞིག་ལ་དྲིས་པས་དེས་གཏམ་དྲང་པོར་སྐྱེས་པ་ན།

རྒྱལ་པོ་སློབ་ཆེན་པོ་སྐྱེས་ཏེ། འདི་འདྲ་བ་སྤྱིང་རྗེ་བར་འདུག་པས་འདི་
རྣམས་ཀྱི་པ་ལ་སོར་པ་ཁྲུག་ལ་རང་རང་གི་སྤྱིད་ལ་གནས་པར་གྱིས་ཤིག་གསུངས་
པས། སློན་པོས་ཀྱང་དེ་བཞིན་བྱས་ཏེ། ལྷར་རང་གི་གནས་སུ་བྱོན་ནས། རྒྱུན་
གཏོང་གི་དྲིལ་ཆེན་པོ་བསྐྱབས་ཏེ། ཟད་པ་མེད་པའི་རྒྱུན་པ་ཆེན་པོ་བཏང་ནས།
ད་ནི་ཚོས་ཤིག་། དུ་དགོས་དགོངས་ནས་ཡོད་པའི་དུས་སུ། རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཞིག་
དེར་བྱོན་ནས་བཟའ་བཅའ་བསྐྱངས་པས་དེས་ཀྱང་གྲུ་ཚོམ་པ་དྲངས་༥ དེས་
རྒྱལ་པོ་ལ་ཆད་མེད་པ་བཞི་ལ་སོགས་པའི་ཚོས་བཤད་པས། [རྒྱལ་] པོ་དེ་ན་པེ།

ཆེ་འདི་ཉིད་ལ་འཚང་གྱི་³པའི་ཚོས་ཤིག་⁴ལྷ་བེར་བས། དེས་བདེ་
མཚོག་དུ་དབང་བསྐྱུར། བསྐྱེད་རྗེས་གཉིས་ཀྱི་རིམ་པ་བསྐྱོམ་དུ་བཅུག་པས།
ལྷར་གྱི་བག་ཆགས་ཀྱི་དབང་དུ་སོང་སྟེ། རྒྱལ་སྤྱིད་དང་དམག་གི་རྟོག་པས་ལམ་
བསྐྱིབས་པ་ན། དེས་རྟོག་པ་རང་གྲོལ་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་-

1 'ཚོས་གཅིག' - པེ་ཉི་ཤོག ༥༧ བོང་དེ་ཉིད། ཚོས་ཅིག - ལྷུབ་ཀྱུན་ཤོག ༥༩/བ.
2 'དྲངས་ཏེ' - ལྷུབ་ཀྱུན་ཤོག ༥༩/བ . པེ་ཉི་ཤོག ༥༧ བོང་དེ་ཉིད།
3 'སངས་རྒྱུས་པའི་ཚོས་ཅིག་ལྷ' - པེ་ཉི་ཤོག ༥༧ བོང་ 197 Vol 8.
4 'སངས་རྒྱུས་པའི་ཚོས་ཅིག་ལྷ' - པེ་ཉི་ཤོག ༥༧ བོང་ 197 Vol 87.

ཁམས་གསུམ་པ་ཡི་སེམས་ཅན་རྣམས།
 དམག་ཚོགས་དཔའ་བོས་ཁྲིའི་པར་སྒྲོམས།
 མཁའ་དབྱིངས་མ་ལུས་རང་སེམས་ལས།
 བྱུང་བའི་དཔའ་བོ་དཔག་མེད་གཉིས། ༡

དབྱེར་མེད་གྲུར་ནས་དགྲ་རྣམས་བཅོམ།
 རང་ཉིད་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཉིད།
 རྒྱལ་ལ་སོགས་པའི་བདེ་ཐོབ་ནས།
 སྲིད་པའི་རྩེ་མོར་བསྒྲོམ་པར་བྱ། ༢

ཞེས་ཡག་སྲུངས། (དེ)ནས་དེས་ཀྱང་ལོ་བཅུ་གཉིས་སུ་བསྒྲོམས་པས་ལྷ་
 བ་རྟོགས་ཏེ་གྲུབ་པ་ཐོབ་ནས་རྒྱལ་པོ་རང་གི་ཕོ་བྱང་འོད་གྱིས་ཁྱབ་པས། བཅུ་མོ་
 ལ་སོགས་པས་གྲུབ་པ་ཐོབ་པར་གོ་ནས་མཚོན་པ་བྱེད་པ་ན། དེས་-

ཚད་མེད་བཞི་ཡི་སེམས་ཅན་ལ།
 ཆགས་པས་འདྲོད་པ་སྤྱད་པར་བྱ།
 དཔའ་བོ་ཞི་ལྡང་ཆེན་པོ་ཡིས།
 དགྲ་རྣམས་མ་ལུས་བརྒྱལ་པར་བྱ། ༣

1 'ཆེན་པོ་ནི།' - དེ་ཉི་ འོག་ ༥༧ བོང་།
 2 'ཅེས་གསུངས་' - དེ་ཉི་ འོག་ ༥༧ བོང་ དེ་ཉིད།

ཁམས་གསུམ་རྐང་མཐོལ་དུ་མནན་པའི་མི་ལམ་བྱང་བས། དེ་རྒྱལ་པོ་ལ་ཞུས་
 པས། ངས་མི་ཤེས་པས་མཚོན་གནས་པརྩིད་དང་བྲམ་ཟེལ་དྲི་བར་བྱ་གསུངས་
 ནས། དེ་དག་ལ་ཚོས་སྟོན་ཡོན་དང་བཅས་པ་སུལ་ནས་ཞུས་པས། དེ་དག་
 གིས་བརྟགས་པ་ན་ཚོས་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་འཛིན་པའི་རྒྱལ་པོ་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་
 ཞིག་བལྟམ་པར་འདུག་པ་ལ། དེ་ལ་འཛིག་རྟེན་པ་མི་དགའ་བས། དེ་དགའ་
 བའི་ཕྱིར་འཛིག་རྟེན་གྱི་སུམ་སུམ་ཚོར་པའི་འབྱུང་གནས་ཤིག་། འབྱུང་ངོ་འབྲས་
 པས། ཐམས་ཅད་དགའ་བར་བྱུར་དོ།།

དེ་ནས་ལྷ་དགའ་ངོ་བཅུ་ཚང་བ་དང་། བལྟམས་པ་ཡང་མཚན་ཕྱིད་ན
 བསོད་ནམས་དང་ལས་ལས་བྱུབ་པའི་མཚོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གི་པརྩིའི་སྤང་དུ་བཅས་
 ཏེ། ཡུལ་ཕྱོགས་དེར་འདོད་པའི་ཡོ་བྱད་ཀྱི་ཆར་བབས་པས། རྒྱུ་བོ་དགའ་ངོ་
 མཚར་ནས་སུའི་མཐུ་སྟུམ་པ་དང་། ཉིན་ཕྱིད་ཅམ་ནས་དེའི་མཐུ་ཡིན་པར་ཤེས་
 ནས། མཚན་ཡང་མཚོ་སྐྱེས་གཞོན་ལུ་ཞེས་བཏགས།

དེའི་མཐུས་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལོངས་སྤྱོད་ལ་
 སྤྱོད་པ་ན། ཡང་སྲས་གཅིག་བལྟམས་ནས་མཚོན་གཉིས་སུ་སོང་བ་དང་། ཡབ་
 ཡུམ་འགྲོངས་ནས་རྒྱལ་སྲིད་གཅིན་ལ་སུལ་བས། ཁོང་གིས་གཙུང་ལ་གཏད་དེ།

1 'འབྱུང་གནས་ཞིག' - པའི་ཉི་ཤོག ༥༧ འོག་རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ན.
 2 'འབྱུངས་སོ།' - རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ན .
 3 'བཅས་ནས་' - པའི་ཉི་ཤོག ༥༧ འོག
 4 'ཞེས་བཏགས་ཏེ' - པའི་ཉི་ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད། བརྟགས་ཏེ་རྒྱལ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ན .
 5 'ཡབ་ཡུམ་རྣམས་' - པའི་ཉི་ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།

དེ་གི་སློང་མཇེད་ནས། སྤྱི་རྒྱུན་པོ་ཕྱིན་པའི་མེ། ལམ་ཁར་འཕགས་པ་རྒྱུན་རས་
 བཞིགས་ཀྱིས་དེ་གི་སློང་ཞིག་དུ་སྤྱུལ་ཏེ་མཇེད་བས་ངོ་མ་གཤམ་པ་ལ། སྤྱུལ་པ་
 དེས་དེ་གི་སློང་(མཚོ་སྐྱེས་)ལ་གཏམ་དྲིས་པར་བདེན་པར་གསུངས་པས།
 (སླར་)དེ་ལ་འོངས་སྐྱུ་དང་འཕྲད་པར་འདོད་དམ། གསུངས་པས། དེ་གི་སློང་
 ཞིས་(མཚོ་སྐྱེས་)དང་ལ་ཐབས་མེད་ན་འདོད་པ་དེ་ཀ་འདོད་དེ་གསུངས་པས།
 (དེས་)འོ་ན་ང་ལ་སླ་མར་འཛིན་ཅིང་གུས་ན་ཐབས་ཡོད་དོ། ། གསུངས་པས།
 དེས་སྤྱུལ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ཏེ་ཞུས་པས། དེས་དབྱེས་དོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས་སུ་དངོས་
 4སྤྱུ་སྤྱུལ་ནས་ཞུ་བ་བཞུགས་ཏེ་དབང་བསྐྱར་གདམས་པ་གནང་ནས་འཕྲུ་པ་དེ་ཉིད་
 དུ་མི་སྤང་བར་གྱུར་དོ། །

དེས་ཀྱང་སྤྱི་རྒྱུན་པོ་ཕྱིན་ནས་སྤྱུལ་པ་བྱེད་པའི་མེ། རྣལ་འབྱོར་པ་འདྲ་བ་
 ཞིག་ཕྱོག་ནས་དེ་ལ་ཁྱོད་འདིར་ཅི་བྱེད་པ་ཡིན། ཟེར་བས། དེས་ཀྱང་དྲང་པོར་
 གསུངས་པ་དང་། འོ་ན་ང་ཡིས་བསྐྱེན་བཀུར་བྱ་ཡི། སྤྱུལ་པ་ཐོབ་པའི་དུས་སུ་
 བདག་ལ་གདམས་པ་གནང་དགོས་ཟེར་བས། རྒྱུང་གསུངས་ནས་སྤྱུལ་པ་སློང་པ་

1 'སྤྱི་རྒྱུན་པོ' - སྤྱུལ་ཀུན་ བོག 40 པེ་ཉི་ བོག 42 འོག
 2 'གསུངས་ནས' - པེ་ཉི་ བོག 40 བོང་།
 3 'ཐབས་ཡོད་དོ་གསུངས་ནས' - པེ་ཉི་ བོག 40 དེ་ཉིད།
 4 'ལྷ་ཚོགས་དངོས་སུ' - སྤྱུལ་ཀུན་ 40 /བ.
 5 'གྱུར་པ་དང་།' - སྤྱུལ་ཀུན་ བོག 40 /བ.
 6 'འོངས་ནས' - པེ་ཉི་ བོག 40 བོང་།

སྒོ་བ་དཔོན་མཚོ་སྐྱེས་ཀྱིས་གསུངས་ནས་དེ་ཙམ་ང་ལ་མི་སྐྱོ་བར་གསང་
 བའི་ལྷན་ཡོད་དམ། ལྷན་གྱི་མི་འོང་། བའི་ཐབས་ང་ལ་ཡོད་པ་ལ་ད་འདོངས་
 རྒྱུ་གསུངས་ནས། འབྲས་ཆེན་³རྣམས་བསྐྱུས་ཏེ་ཚུལ་འཕྲོན་ནས་གཏོར་མ་
 བཏང་། ལྷ་ཆེན་པོ་བུ་ཕྱེད་ལྷན་དང་ལྷན་གྱི་དང་ཏིང་ཏིང་འཛིན་གྱིས་གཟིར་བས།
 དེ་རྣམས་ལྷན་པ་འགམས་པ་སྐྱུ་བྱེད་ནས། དེར་འོངས་ཏེ་ལས་ཅི་བཞི། ཟེར་བ་
 ལ།

འཇམ་བུའི་སྒྲིང་དུ་ཆར་མེད་ནས་སེམས་ཅན་རྣམས་གི་བཞུགས་ཀྱིས་
 ཉེས་པས། ད་ཡང་ཞག་དང་པོ་ལ་བཟའ་བའི་ཆར་ཕོ་བཟེལ་དེ་བཞིན་དུ་གཉིས་
 པ་ལ་འབྱུང་དང་། གསུམ་པ་ལ་གནས་མལ་དང་། དེ་ནས་ཞག་གསུམ་དུ་རིན་པོ་
 ཆེའི་ཆར་ཕོ་བཟེལ་དེ་ལྟར་བྱས་པ་དང་ཆུའི་ཆར་ཕོ་བཟེལ་གསུངས་པས། (ལྷ་
 རྣམས་ཀྱིས་)དེ་བཞིན་དུ་བཀའ་བསྐྱུབས་པས་སེམས་ཅན་རྣམས་སྐྱུ་བུ་བསྐྱེད་
 ལས་ཐར་བ་དང་། དེའི་སྐྱེན་པ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་ཁྱེད་པར་གྱུར་ཅིང་། འདི་
 རི་སྒོ་བ་དཔོན་ཆེན་པོ་མཚོ་སྐྱེས་ཀྱི་མཐུ་ཡིན་ལོ།། ཟེར་ཞིང་ཐམས་ཅད་དད་པར་
 གྱུར་ཏོ།།

1 'མི་ཡོང་བའི' - བོ་ཉི ༤༠ འོང ༡ དེ་ཉིད།
 2 'ད་འདོང་ཅིག' - བོ་ཉི བོག ༤༠ དེ་ཉིད།
 3 'འབྲས་ཆེན' - ལྷན་གྱི་གོ་བོ ༥༤ /བ. དེ་ཉིད།
 4 'ཟེར་བས' - ལྷན་གྱི་གོ་བོ ༥༤ དེ་ཉིད། བོ་ཉི བོག ༤༠ འོག དེ་ཉིད།
 5 'ཞིང་གིས' - ལྷན་གྱི་གོ་བོ ༥༤ དེ་ཉིད།

དེ་ནས་ཕྱར་གྱི་གཡོག་ར་མ་(རྒྱམ་)ཞེས་པ་ལ་དབང་བསྐྱར་དེ་གདམས་པ་
 གནང་བས་འཇིག་རྟེན་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ། གདམས་པ་ནི་དགེས་རྗེས་ཀྱི་
 བསྐྱེད་རྫོང་གི་གདམས་པ་གནང་ནས་འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མ་གྲས་པར་
 མཁའ་སྤྱོད་ལ་མ་འགྲོ་ཞིག་ད་དཔལ་གྱི་རི་ལ་སོང་ལ་འདི་ལྟར་གྱིས། འགྲུབ་
 པར་འགྲུར་རོ་གསུངས་ནས། སླ་མ་མཁའ་སྤྱོད་ལ་གཤེགས་སོ།།

ར་མས་(རྒྱམས་) ཀྱང་དཔལ་གྱི་རི་ལ་ཉེ་བ་ན་རྒྱལ་པོའི་བུ་མོ་དབང་དུ་
 བསྐྱུས་ནས་གཉིས་ཀས་ར་མར་(རྒྱམར་)གཙུག་ལག་ཁང་བཞེངས་པ་ལ་སོགས་
 པ་གྲས་དེ། མཐར་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གྲུབ་ཐོབ་པའི་ལོ་རྒྱུས་རྫོགས་སོ།། །

༧༥) གྲུབ་ཐོབ་ཐུགས་ལྡན།

གྲུབ་ཐོབ་ཐུགས་ལྡན་པའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། སེམས་ཅན་ཅད་ཟ་བ་བྱ་བ་³ ཡིན་ལ།
 དེ་ཡང་གྲོང་ཁྱིམ་ལྗོངས་ལྗོངས་⁴ བ་རྒྱལ་པོ་སེམས་ལྡན་པའི་མངའ་རིས་ཡིན་ལ། དེ་ན་
 དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་གི་དུ་གྲོང་པ་ཆེ་ནས་ཟ་བ་ཅི་ཐོབ་ཟ་བ་ན།

1 'ཐོབ་ལ' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༥༥ པའི་ཉི་ཤོག ༤༠ དེ་ཉིད།
 2 'མཁའ་ལ་གཤེགས་སོ།' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༥༥/ན . 109.
 3 'ཐམས་ཅད་ཟ་བ་ཡིན་ལ།' - པའི་ཉི་ཤོག ༤༠ འོག
 4 महर (सहर) - रा० पुरा० नि० पृ० १२५ ।

དུས་གཅིག་གི་ཆེ་བཟའ་བ་ཅི་ཡང་མ་རྟེན་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་ལྷོ་ཡིད་ལ་བྱེད་
ཅིང་གནས་པ་ན། དཔལ་ལ་སར་ཉལ་དེར་བྱོན་ནས་ཁྱོད་འདི་ན་ཅི་བྱེད་ཅིང་འདུག་
གསུངས་པས། དེ་ན་རེ—

‘བདག་མོ་བའི་མེ་དྲོད་ཆེ་བས་བཟའ་བ་ཅི་མོས་ཀྱང་འགྲང་བ་མི་འོང་
ལ། ཁྱད་པར་དེ་རིང་བཟའ་བ་ཅི་ཡང་མ་རྟེན་ནས་ཕྱོགས་གཅིག་ལ་བར་གདའ་’ཟེར་
བས། སར་ཉལ་ཁྱོད་དེ་རིང་གི་ཕྱོགས་པ་ཅམ་ཡང་མི་བཟོད་ན་ཡི་དུགས་སུ་
ཕྱིས་ན་ཅི་ཅུག་བྱེད། གསུངས་པས། དེ་ན་རེ། དེ་འདྲ་བ་གང་ན་ཡོད། ཟེར་བས།
དེར་ལྷོས་དང་། གསུངས་ནས་ཡི་དུགས་བསྟན་པས། འདི་འདྲ་བར་སྐྱེ་བའི་རྒྱ་
གང་ལགས། དེའི་རྒྱ་བསྟན་པས་སླ་མ་འདི་འདྲ་བ་ལས་ཐར་བའི་ཐབས་ཤིག་འཇུག་
ཟེར་བས།

[རྒྱལ་འབྱོར་པས་]དེ་ལ་དང་པོར་དབང་བསྐྱར་ནས་རྒྱ་སྐུ་ཀྱའི་འཇུག་པ་
བསྟན་པ་ནི—

མྱོད་པ་ནམ་མཁའ་སྤོང་པ་ལ།
མོ་བའི་མེ་དྲོད་དུས་མེ་འབར།
ལྷང་སྤྱིད་བཟའ་བདུང་གཉིས་ཡིན་དེ།

1 ‘དཔལ་’ ཞེས་- པེ་ཉི དཔར་ལ་མེད། ཤོག ༤༡ བོད་།
2 ‘མི་ཡོང་ལ’ - པེ་ཉི ཤོག ༤༡ བོད་ 198. Vol 87.
3 ‘ཐབས་ཅིག’ - རྒྱལ་ཀྱན་ ཤོག ༥༥/ན.

ཐོས་པས་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་འཕྲོམས།

ཞེས་ཡག་སྲུངས་ཏེ། དེས་ཀྱང་གྲུ་པས་བཏོགས་པས། ཉི་ཟླ་གཉིས་ཀྱང་
འཇིགས་ནས་རི་རབ་ཀྱི་ཁོང་སེང་དུ་ཡིབ་པས། མི་རྣམས་མཐོན་གཅིག་ཏུ།
སྒྲུང་བ་རྒྱུ་པར་གྱུར་འགྲེམ་ཟེར་བས། བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོ་ལ་⁴ཏུ་གིས་ཀུན་གྱིས་
བསྐྱུལ་བས་དེ་དེར་ཕྱོག་ཏེ། (དེ་ལ་) ད་ཐམས་ཅད་ཐོས་ཟིན་པས་མེད་པར་
ཕྲོམས་ཤིག་གསུངས་པས། དེ་བཞིན་དུ་བྱས་པས་སྒྲུང་སྒྲུང་རྒྱང་འཇུག་དུ་རྟོག་ཏེ།
གྲུ་པ་ཐོབ་ནས་ཉི་ཟླ་ཡང་གྲུང་བས་ཐམས་ཅད་དགའ་བར་གྱུར་ཏོ།

དེར་ལོ་བཙོ་ལྷ་ནས་གྲུ་པ་བརྟེས་ཤིང་། རྟོགས་པ་བཟོད་དེ་འགྲོ་དོན་ལོ་
དུག་བརྒྱུར་མཛད། མཐར་འཁོར་སྒྲུང་དང་བཅས་ཏེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།
གྲུ་སྐྱེས་ཐོག་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། །

༧༦) གྲུ་རྒྱུ་གོ་རྟོག་པོ་རྟོག་པོ།

གྲུ་རྒྱུ་གོ་རྟོག་པོ་རྟོག་པོ། འཕགས་པ་ལྷ་སྐྱུ་བ་སྐྱེས་ཀྱི་འདུག་པ་ན་

བཞུགས་པའི་ཆེ། རྒྱ་གར་རྒྱུ་ཕྱོགས་ནས་བྲམ་ཟེ་ཞེས་ཀྱི་ཡིན་མཐར་གྱིས་ཡོང་སྟེ།
སྐྱེས་པའི་ཕྱོགས་བལྟས་པས། གསེར་གྱི་སྒྲོང་གི་ནང་དུ་བཟུང་བ་གྲུ་ལོ་པ་

1 'བཏོགས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༡ བོང་།
2 'ཤེས་གསུངས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༡ བོང་ དེ་ཉི་ཤོག
3 'བར་གྱུར་ནས་ཀྱི་མ་' - རྒྱུ་ཀུན་ ཤོག ༥༥/བ . དེ་ཉི་ཤོག
4 'བྲམ་ཟེ་ཆེན་པོ་ཏུ་གིས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༡ བོང་།
5 'དུག་བརྒྱུ་མཛད་' - རྒྱུ་ཀུན་ ཤོག ༥༥ དེ་ཉི་ཤོག ༤༡ འོག
6 'སྐྱེས་' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༡ འོག

གསོལ་བ་མཐོང་སྒྲི། དེ་ལ་བརྒྱ་བའི་བསམ་པ་གར་བ་སྒྲ་མས་ཐུགས་ཀྱིས་མཁྱེན་
ཏེ། གསེར་གྱི་སྒྲོད་དེ་ཐང་ལ་བརྒྱར་བས་འདི་ལྟར་མཇེད་པ་ཅི་སྐྱམ་པ་ན། དེས་
དེའི་ནང་དུ་ཕྱིན་ནས་བདག་བརྒྱ་སྐྱམ་པ་ལ། བརྒྱ་མི་དགོས་པར་བདག་ཅན་དུ་
བརྒྱར་ལ་འདི་ཅི་ལགས། ལུས་པས།

“སྒྲ་མས་ང་ནི་འཕགས་ཡ་ལྷ་སྐྱབ་བྱ་བ་ཡིན། འདི་ཚོར་ལ་སོགས་པ་ནི་
གཞན་དོན་ཡིན་པས། རྒྱུ་ལྷ་མི་དགོས་ཀྱི་བཟའ་བ་དང་བཅའ་བ་འདི་དག་ཟོལ་
སྒྲོད་ཅིག འགྲོ་བའི་དུས་སུ་ཚོར་ཅི་དགོས་པ་བརྒྱར་ལ་བཏང་གི་” གསུངས་པས།
དེས་ (དེའི་) མཇེད་སྒྲོད་ལ་དད་དེ་ཚོས་ལུས་པས།

དེ་ལགས་ལ་འདུས་པར་དབང་བརྒྱར་ནས་མངོན་ཞེན་རང་གྲོལ་གྱི་

གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།། —

- གྲུབ་ཐོབ་ཅད་སྒོས་ཐོང་ལ།།
- སྒྱི་བོར་ཀུན་བརྟགས་རྩ་མཚོ་ག་ནི།།
- རིན་ཆེན་མ་ལག་དང་བཞིན་ཅན།།
- གསལ་ལ་འོད་འཕྲོ་བ་བསྐྱོམ་པར་བྱ།། ༡

- 1 ‘རྒྱར་བས་’ . དེ་ནི་ བོག ༦༡ འོག
- 2 ‘འཕགས་པ་’ ཞེས་པ་དེ་ནི་དཔར་ལ་མེད . བོག ༦༡ འོག
- 3 ‘དེར་གསང་’ . དེ་ནི་ བོག ༦༡ དེ་ནི་ད།
- 4 ‘མར་གད’ . ལྷུ་ལྷ་མི་ བོག ༥༥/བ .
- 5 ‘གསལ་ལ་འོད་འཕྲོ་སྐྱོམ་’ . དེ་ནི་ བོག ༦༡ འོག

ཞེས་ །གསུངས། (དེ་)ནས་གནས་ཁང་གི་མཐའ་མར་རིན་པོ་ཆེས་གང་
 བར་བྱས་ནས་བཞག་པས་དེ་དགའ་སྟེ་གདམས་པ་དེ་བསྐྱེམས་པས། ལོ་བཅུ་
 གཉིས་ནས་རྩ་དེ་ཆེར་སོང་ནས་གཡོ་འགུལ་བྱེད་པའི་ཆེ་དེ་ཐུག་ནས་སྐྱུག་བསྐྱེད་
 བ་ན། སྤམ་དེ་(དེར་)བྱོན་ནས། ཁམས་བདེའམ། གསུངས་པས། དེས་མ་བདེ་
 བའི་གདམ་ཞུས་པས་དེ་མཁུན་ནས་ཡང་གདམས་པ་གསུངས་པ་ནི་

ཀུན་བདགས་ 2བསྐྱེམས་པའི་རྩ་ཆེན་ 3གྱིས།

བདེ་བ་ཐམས་ཅད་འཇོམས་པ་ལྟར།

དེ་བཞིན་ 4དངོས་པོར་མངོན་ཞེན་པས།

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱུག་བསྐྱེད་ལོ། 3

ཆོས་རྣམས་ཡང་དག་ཡོད་མིན་ཏེ།

མཁའ་ལ་སྤྱིན་ནི་འགྲིག་ 5པ་བཞིན།

སྐྱེ་བ་གནས་པ་འགག་པ་གསུམ།

གང་ལ་གང་གི་ཕན་གཞོན་འབྱུང་། 3

དེ་བཞིན་སེམས་ཉིད་དག་པ་ལ།

ཅི་ཞིག་ཕན་ཞིང་ཅི་ཞིག་གཞོན།

1 'ཅེས་གསུངས་' - བོ་ཉི་ཤོག ༦༡ འོག 198. Vol 87.
 2 'ཀུན་བདགས་ཐོམས་པའི་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག ༥༤/ན.
 3 'རྩ་ཆེན་' - བོ་ཉི་ཤོག ༦༡ འོག
 4 'དེ་སྐྱེད་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག ༥༤/ན . བོ་ཉི་ཤོག ༦༡ འོག
 5 'མཁའ་ལ་སྤྱིན་བཞིན་འབྱུང་བ་བཞིན།' - བོ་ཉི་ཤོག ༦༡ འོག དེ་ཉིད།

གདོད་ནས་མ་གྲུབ་གཟུང་འཛིན་དེ།།

རང་རང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤོང་།། ར

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་གནས་ལུགས་སྤོང་པ་ཉིད་ཚོགས་དེ། དེ་ལ་
ལྷོ་དུག་མཉམ་པར་བཞག་པས་འཁོར་འདས་དབྱེར་མེད་དུ་རྟོགས་ནས་གྲུབ་པ
ཐོབ་སྟེ། མཚན་ཡང་རྣམ་པོ་རྗེ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས། སྐྱ་མའི་གདུང་འཚོ་བ་དུ་
བསྐྱོས་ནས་སེམས་ཅན་ལ་གྲུབ་པ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་དེ —

ས་འོག་ཡེ་ལྷོ་དང་རལ་གྱི་དང་།།

ཆར་བཅད་མན་འདོགས་གཉིས་ཀ་དང་།།

རིལ་བུ་མིག་སྐྱེན་གཉེར་རྣམས་དང་།།

རྐང་མགྲོགས་དག་ཅེད་བཅུད་ཀྱིས་ལེན།།

བརྒྱད་པོ་གང་འདོད་བྱིན་ཅིག་གསུངས།། ར །།

དེ་ལྟར་བྱམས་པའི་བསྐྱེད་པའི་བར་དཔལ་གྱི་རི་དེ་ཉིད་དུ་གནས་ནས་⁴
འཕྲོ་དོན་གྱིས་ཤིག་གསུངས་ནས་བཞག་པ་ཡིན་ཅོ། །ལོ་ཉི་མེར་བཞུར་སྐད་དོ།།

གྲུབ་ཐོབ་པོ་རྗེའི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ།། །།

1 'འཛིན་སྟེ།' - པེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་ དེ་ཉིད།
2 'འོག་བསྐྱོད་' - པེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་།
3 'དག་ཀྱང་' - པེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་།
4 'དེ་ཉིད་གནས་པས་' - ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༥༤/ན. ར དེ་ཉིད།

༧༧) གྲུབ་རྒྱུ་རྒྱུ།

གྲུབ་རྒྱུ་རྒྱུའི་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་སྐལ་ཡུའ་²བྱ་བ་ན་རྒྱལ་པོ་ཨིན་ཏུ་ཡུལ་³བྱ་བ་གནས་པ་ལ། དེ་ལིང་ས་ལ་སོང་ནས་ཉི་མ་དྲོས་པ་ན་ཚོང་འདུས་སུ་འོང་ས་པ་ལ་མི་ཀུན་(གྲིས་)ཕྱག་བྱེད་པའི་ཚེ་ལུ་ཉི་⁴ལྷ་དེ་ན་འདུག་པ་རྒྱལ་པོས་མ་ཐོང་བ་དང་རྒྱལ་པོས་སྐྱེས་པ་—

“ཁྱོད་འདྲ་བའི་སྐྱེས་བུ་བྱེད་བཞིན་བཟང་ཞིང་ལྷ་ན་སྐྱབ་པ་ལ། འདི་འདྲ་བའི་ཉེའི་རྒྱ་སྟོ་མི་གཙང་བ་མ་ཟ་ལྟོ་འཁོག། ཁྱོད་ལ་བཟའ་བ་ཅི་དགོས་བདག་གིས་སྟེར་ཞིང་། གཞན་གང་དགོས་པ་ཡང་སྟེར། རྒྱལ་སྲིད་དགོས་ཀྱང་སྟེར་རོ།”
ཟེར་བས། དེས་སྐྱེས་པ་“མི་འཆི་མི་གས་པའི་ཐབས་ཡོད་ན་དེ་ཀུན་བདག་ལ་དགོས་སུ་⁷རུང་”ཟེར་རོ།

རྒྱལ་པོས་འོ་ན་བདག་གིས་རྒྱལ་སྲིད་དང་སྲས་མོ་སྐྱེན་བྱས་པས།

[ལུ་ཉི་པས་]བདག་མི་དགོས་ཟེར་རོ། །ཅིའི་སྲིད་མི་དགོས་བྱས་པས།(དེ་ན་རེ་)

1 ‘དུ་རྒྱུ་པ’-རྒྱུ་ཀུན་ཤོག ༥༦/ན. དེ་ཉིད། ‘རྒྱ་རྒྱུ་པ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་།
2 ‘སལ་ཡུའ’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག ༥༦/ན. ‘སྐལ་ཡུའ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་ ར་ཇི་སྐ
(སའི་ཡུའ་) - ར༠ པུ༠ བེ༠ པུ༠ ༡༢༥ ། ར་ཐ་མ་ ས་སྐྱེ་རྒྱུ་-༡༩༥༢ .
3 ‘ཨི་རྒྱུ་ཡུལ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་ དེ་ཉིད།
4 ‘ལུ་ཉི་པ’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག ༥༦/ན. དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་ དེ་ཉིད། ‘ལུ་ཉི་པ’-ར༠ བའི
5 ‘མ་ཟོ་ཤོག’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་།
6 ‘བདག་གིས་སྟེར།’ - རྒྱུ་ཀུན་ཤོག ༥༦/ན.
7 ‘དགོས་ཟེར་རོ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༣ བོང་།

གསུམ་ཡོད་དེ། དེ་ན་ལྷ་ཁང་ཞིག་ཡོད་ལ་དེའི་མཚོན་པ་བྱེད་པའི་གར་མཁན་མོ་
བདུན་བརྒྱ་ཡོད་པའི་གཙོ་མོའི་གམ་དུ་སྦྱིན་ནས། དེའི་སྒོ་ཙུ་པ་སུམ་བརྒྱ་ཙམ་
ཡོད་པ་ལ་སྦྱས་པ།

བྱིད་ཅག་གི་ཇོ་མོ་མི་མི་ཉོ་འཇམ། དེ་དག་གི་ནང་དུ་སྦྱས་པས་འབུམ་པོ་
ན་ཟེ། ཉོ་ལྷ་ར་འདོང་ཟེར་ནས་སྦྱར་བྱེད་སྦྱོང་བལྟས་པས། བྱིད་ལྷ་ན་སྦྱག་པ་ཞིག་
མཐོང་ནས། རིན་ཅི་དགོས། ཟེར་ཟེ། །གསེར་དོ་ལ་བརྒྱ་³དགོས་བྱས་དེ། རྒྱལ་
བྱ་དེ་ལ་བཙོང་ས། [དེ་]ནས་གཅིགས་⁴སུ་མཚན་ལ་མི་དང་ལྷན་ཅིག་དུ་ཉལ་དུ་
མ་གཞུག་པར་གཅིག་པོར་གཞོག་⁵ལ། ཞོའི་⁶རིན་འཁོར་བ་དང་ཐོང་ཞིག་ཞེས་
ཟེར་ནས་སྦྱོབ་དཔོན་དང་བུམ་ཟེའི་བུ་གཉིས་སོང་ངོ་།།

དེ་ནས་རྒྱལ་བུ་དེས་⁷དུ་རི་མོའི་བྱིམ་དུ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་དུ་རྐང་པ་
བཀྲུས་པ་དང་། བརྒྱ་བྱུག་ལ་སོགས་པ་བྱས། [དེ་རྒྱན་དུ་]སྤྲོ་མའི་མན་ངག་མ་
བཟེད་པར་བྱས། [དེས་]ལས་⁸རྒྱན་གྱི་ཐོག་མར་འདྲིལ་བའི་ལས་བྱེད་དུ་བཅུག་

1 དེ་དག་གི་ནང་དུ་སྦྱ་མཁན་གཙོ་མོ་ན་ཟེ། རྒྱབ་རྒྱན་ བོག ༥༦/བ.
2 ‘ལྷས་པས’ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ འོག དེ་ཉིད།
3 ‘ལྷ་བརྒྱ’ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ འོག
4 ‘ཅིགས་སུ’ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ འོག དེ་ཉིད།
5 ‘ཞོག་ལ’ - རྒྱབ་རྒྱན་ བོག ༥༦/བ . ༥ དེ་ཉིད།
6 ‘ཞོའི་རིན’ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ འོག ༧ དེ་ཉིད། ‘ཞོའི་ཞོས’ གཉིས་ཀ་རྒྱབ་རྒྱན་ལ་མེད། བོག དེ་ཉིད།
7 ‘རྒྱ་རི་མོའི’ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ འོག
8 ‘བྱས་དེ།’ ཐམས་ཅད་ཀྱི་ - བོ་ཉི་ བོག ༤༩ དེ་ཉིད། རྒྱབ་རྒྱན་ བོག ༥༦/བ. དེ་
ཉིད།

པས། ལས་ཀྱིས་འཚོས་པའི་གཡོག་པོ་ཐམས་ཅན་གྱི་སྤོང་དུ་སྐྱུག་པ་དང་།
 དེའི་དུས་སུ་དུ་རིམ་འི་གམ་དུ་སྐྱུག་པོ་ཇི་ན་པ་ཞེས་ཀྱང་། བྱ་གཞི་ཞེས་ཀྱང་བྱ་།
 སྐྱུག་པོ་གཞན་ཞེས་གསེར་དོ་ལ་ལྡ་བརྒྱ་ཙམ་ཁྲར་ནས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཚོས་དོན་དུ་
 བཞེར་ནས་འོངས་སོ།།

སློབ་དཔོན་གྱིས་བར་བྱས་ནས་གསེར་དོ་ལ་བདུན་³བདུན་འཇལ་གྱིན་
 འདུག་པ་དང་། དེ་ནས་ཞག་འགའ་ཙམ་ནས་ཀྱུ་མོ་བའི་མེ་བོ་དོ་ཤོར་བ་དང་།
 ཁ་ཟས་དྲུ་པའི་སྐྱེན་གྱིས་མོ་བ་ན་བས། དེས་⁴མཚན་སྤྱད་ན་སྤྱི་རྩོལ་དུ་སྐྱེན་པ་ན།
 ལྷུ་མ་རའི་ནང་ནས་ཤིན་དུ་རྗི་ཞེས་པ་དང་འོད་ཅིག་འོང་བ་དེས་མཐོང་ནས་དེར་
 སྐྱེན་པས་ [དུ་རིམ་འི་] ཁོལ་དེ་བུ་མོ་བཙོ་ལྡ་ཙམ་གྱིས་ནི་བསྐྱེན་བཀྱར་བྱེད། ཁོ་རང་
 ཁྱིའི་སྤོང་ན་འདུག་པ་མཐོང་ནས་དོ་མཚར་སྐྱེས་ཏེ། རིངས་པར་བྱིམ་དུ་སྐྱེན་ནས་
 སྤྱད་འཚོང་མ་ལ་སྐྱས་པ་དང་། [སྐར་]དེ་ལྟར་བཞེས་ཀ་སྐྱེན་པས། ལྡ་མ་བཞེན་
 མཐོང་ནས་སྤྱད་འཚོང་མ་འགྱོད་པ་སྐྱེས་ཏེ། དེའི་ཞབས་ལ་ཕྱག་བྱས། བསྐྱོར་བ་
 བྱེད་ཅིང་བདག་ཅག་སེམས་ཅན་ལྟ་པས། འཇུལ་ཏེ་ཡོན་ཏན་ཅན་དུ་མ་ཤེས་
 ནས་ཉིད་བཀོལ་བས། བདག་ལ་སྤྱིག་པ་བྱུང་བ་བཟོད་པར་གསོལ།

1 ‘བྱ་བའི་སྐྱུག་པོ་’ - སྐྱུབ་ཀྱུན་ འོག ༥༤/བ. ལ བེ་ཉི འོག ༤༩ བོང དེ་ཉིད།
 2 ‘འོངས་པ་དང་’ - བེ་ཉི འོག ༤༩ བོང སྐྱུབ་ཀྱུན་ འོག ༥༧/ན.
 3 ‘བདུན་འཇལ་གྱིན་’ - བེ་ཉི འོག ༤༩ བོང་།
 4 ‘དེའི་མཚན་སྤྱད་’ - བེ་ཉི ༤༩ སྐྱུབ་ཀྱུན་ ༥༧ །
 5 ‘གསོལ་ཤིང་།’ - བེ་ཉི འོག ༤༩ བོང སྐྱུབ་ཀྱུན་ འོག ༥༧/ན .

ལོ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བར་མཚོན་གནས་མཚན་པར་ལྷུ་ལྷུས་པས། དེས་མ་བཞིན།

དེ་ནས་སྤྲོད་འཚོང་མ་དང་རིན་ཡམས་ “བདག་ཅག་འགྲུང་རྗེས་སུ་གཟུང་
དུ་གསོལ་” བྱས་པས། བར་སྤང་ནས་གྲོང་ཁྱིམ་སྤོང་བར་འབེབས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་
མན་ངག་གསུངས་པ་⁴ —

འཇིག་རྟེན་ཕལ་བའི་རྒྱལ་པོ་ཡི།

གདུགས་དང་སྤང་བོ་ཁྱིམ་ལས།

ང་ཡི་རྒྱལ་སྤྱིད་ཁྱུང་པར་འཕགས།

ཐར་པའི་གདུགས་དང་ཐེག་ཆེན་ཞེས། ¹

སྤྱིད་པ་གསུམ་གྱི་གདན་ཁྱིམ།

དུ་རྟེན་ལོངས་སྤྱོད་བྱེད། ²

ཅེས་གསུངས། སློབ་དཔོན་འདི་དུ་འཇིག་རྟེན་ལོ་བཅུ་གཉིས་མཚན་དུ་རྟེན་སྤྱོད་
བྱ་བར་གྲུག། མཐར་འཁོར་བདུན་བརྒྱ་དང་བཅས་ཏེ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེད་སོ།

གུ་རུ་དུ་རྟེན་ལོ་རྒྱུས་རྗོགས་སོ། །

1 ‘ལྷུས་པས་མ་བཞིན་དེ’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༩ བོང ༤ ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
 2 ‘རིན་ཡམས་’ - ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧/ན .
 3 ‘བདག་ཀྱང’ - ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག དེ་ཉིད།
 4 ‘མན་ངག་གྲུང་ནས་བསྐོས་པར་བྱས་ཏེ། དེས་གསུངས་པ།’ ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧ དེ་ཉིད།
 5 ‘ཅེས་གསུངས་པ་ལ།’ - ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧/ན . 113 བོ་ཉི་ཤོག ༤༩
 6 ‘འདི་ནི་དུ་རྟེན་’ - ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧/ན . ‘འདི་རྗེ་འཇིག་རྟེན་’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༩ བོང།
 7 ‘མཚན་ཞེས་པ་ལྷུབ་ཀྱན་ལ་མེད།’ - ཤོག ༥༧/ན .
 8 ‘རྗོགས་པར་གྲགས་ཤིང་’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༩ བོང ལྷུབ་ཀྱན་ཤོག ༥༧/ན

༧༩) གུ་ཐུ་ཕན་ཉུ་

གུ་ཐུ་ཕན་ཉུ་ལོ་རྒྱུ་ནི། ཕན་ཉུ་མཚིལ་ལྷམ་ཅན་མོ། །དེ་ནི་ཡུལ་

སིན་རྟོན་གར་བྱ་བ་ན་དམངས་རིགས་ཀྱི་གང་ཟག་ཅིག་མཚིལ་ལྷམ་ལ་བརྟེན་ཅན་ས་
 ཡོད་པ་ལ། དུས་གཅིག་གི་ཚེ་རྣལ་འབྱོར་པ་མཐུ་སྟོབས་ཅན་ཅེས་པ་བསོད་
 སྟོམས་བསྐྱངས་ཅན་ས། མཐར་གྱིས་དུར་ཁྲོད་པར་བྱོན་པ་མཐོང་པས།
 དེ་ལ་དད་པ་སྐྱམ་སེམས་ནས་དེས་དེར་སྦྱོར་པས། (རྣལ་འབྱོར་པས་) ཁྲོད་ཅི་
 ལ་འོངས། གསུངས་པས། (དེས་) ཚོས་ལུ་(རུ་འོངས་) ཟེད། (དེ་) ཅན་
 (རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་) འཁོར་བའི་ཉེས་པ་དང་། ཐར་པའི་ཕན་ཡོན་
 གསུངས་པས། དེ་འཁོར་བ་ལ་སྦྱོབ་སྦྱེས་དེ། སྐྱམ་འཁོར་བ་ལས་ཐར་བའི་
 ཐབས་ཤིག་ལྟུ། ཟེད་བས། རྣལ་འབྱོར་པས་དེ་ལ་བྱིན་རླབས་འཕོ་བའི་དབང་
 བསྐྱར་ནས་མངོན་ཞེན་ལམ་ཁྲིར་གྱི་གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།།

མཚིལ་ལྷམ་རྒྱན་ཅན་གྱོན་ནས་འགོ་བ་སོགས།།
 རྒྱགས་པའི་སྐྱ་ནི་སྟན་པ་བྱུང་བ་དེས།།

-
- 1 'ཡུལ་ཕན་ཉུ' - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ. 'पनहपा' - रा० पु० नि० पृ० १२५ ।
 - 2 'རྟེན་ཅན་' - པོ་ཉི་ ཤོག ༩༩ བོང་ དེ་ཉིད།
 - 3 'སྐྱངས་ཅན་' - པོ་ཉི་ ཤོག ༤༩ བོང་ དེ་ཉིད།
 - 4 'མཐར་གྱིས་དུར་ཁྲོད་པར་བྱོན་པ་' - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'གསུངས་པས།' - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ.
 - 6 'ཐབས་ཅིག་' - རྒྱལ་ཀུན་ ཤོག ༥༧/བ.

སྐྱེ་ཙམ་དག་ཀྱང་དེ་རུ་འདུས་པ་ན།
དེ་ཡང་གྲགས་སྤོང་དབྱེར་མེད་པ་བསྐྱེལ་པར་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་པས། དེས་ཀྱང་དེའི་དོན་གོ་ནས་བསྐྱེལས་པས། ལོ་དགུ་
ན་མཐོང་སྤང་གི་རྗེས་དག་ནས་གུབ་པ་ཐོབ་སྟེ། སྤྱི་མ་པན་ཏུ་གྲུ་བར་གྲགས་ཤིང་།
རྟོགས་པ་བརྗོད་དེ་ལོ་བརྒྱན་བརྒྱར་འགྲོ་དོན་མཛད་ནས། འཁོར་བརྒྱན་བརྒྱ་དང་
བཅས་པ་མཁའ་སྤྱོད་དུ་གཤེགས་སོ།།

གུ་རུ་པན་ཏུ་ལུ་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ།། །

༤༠) གུ་རུ་ཀོ་ཀེ་ལུ།⁴

གུ་རུ་ཀོ་ཀེ་ལུ་⁵ལུ་ལོ་རྒྱུས་ནི། བྱོང་བྱིར་ཅམ་པུ་རྩ་(ཅམ་པུ་ཅམ་པུ་) ན་རྒྱལ་པོ་ཞིག་
ཡོད་པ་ལ། སོས་ཀའི་དུས་སུ་རྒྱལ་སར་ཚ་བས་མ་རྒྱལ་ནས།⁷ ཤིང་
ཞམ་ལུ་སྤྱོད་མོས་ཚལ་གྱི་གྲིབ་མ་དང་། རྒྱ་བྱང་མོ་དང་མེ་དོག་ཤིང་ཐོག་སྤྱི་

1 ‘འདུག་པ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ བོང་།
2 ‘སྐྱེལ་པར་བྱ’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ བོང་།
3 ‘ཞུ་པན་ཏུ་གྲུ་བར’ - སྐུ་བ་ཀུན་ ཤོག ༥༥/ན. །
4 ‘ལུ’ ཞེས་པ་རྒྱ་དབེ་རྩ་མས་སུ་གུབ་ཐོབ་ཀྱི་མཚན་མཐའ་ལ་འདུག་ཀྱང་བོད་དཔེར་རེ་འགའ་ལ་
འདུག་རེ་འགའ་ལ་མི་འདུག
5 ‘ཀོ་ཀེ་ལུ་པ’ - སྐུ་བ་ཀུན་ ༥༥ །
6 ‘ཅིག་ཡོད་པ་ན’ - སྐུ་བ་ཀུན་ ༥༥།
7 ‘ཚད་པས་མ་རྒྱལ་ནས’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ བོང་།

ཚོགས་པ་དྲི་ཞིམ་པ་ཁ་དོག་ལེགས་པ་ལ་སོགས་པས་དབྱེས་ནས། ཨ་མའི་སྐྱེད་
 མོས་ཚལ་དུ་དར་ཟབ་ལ་སོགས་པའི་སྣམ་དང་སྲས་ལ་ནི་འདུག རྒྱལ་བུ་ལ་
 སོགས་པས་།བརྗེན་བཀུར་བ་དང་། བུ་མོ་གཞོན་ལྷ་མ་མང་པོ་ལ་ལས་དྲིལ་སྦྱིས་
 བྱེད། ལ་ལས་རྒྱང་གཡབ་གཡོབ། ལ་ལས་སྐྱུ་དང་ལ་ལས་གར་བྱེད། ལ་ལས་མི
 རོག་འཕྲོར་ཞིང་། རྒྱལ་སྤིད་ཀྱི་འདོད་ཡོན་ལ་ཆུ་པས། མི་ལུས་རྒྱུད་ཐོས་པའི་ཆེ
 ཡང་དག་པའི་དགོ་སྤོང་ཞིག་དེར་བྱོན་པ་ནལ། སྒོ་ཙུམ་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་
 དེས་དེ་དག་གིས་ནང་དུ་མ་བཏང་བ་ན། རྒྱལ་པོས་དེ་ཐོས་ཏེ་དེ་ནང་དུ་ཐོང་ཞིག་
 གསུངས་ནས་ནང་དུ་བྱོན་པས། (རྒྱལ་པོས་)དེ་ལ་བཟའ་བ་ལ་སོཾ་པ་དྲངས་ནས།

(རྒྱལ་པོས་དགོ་སྤོང་ལ་)ཁྱོད་ཀྱི་ཚོས་དང་ངའི་ཚོས་གང་དགའ། བྱས་
 པས། དགོ་སྤོང་གིས་སྦྱས་པ། བྱིས་པས་བལྟས་ན་ཁྱིད་ཀྱི་བཟང་། །མཁས་པས་
 བལྟས་ན་དུག་དང་བཅས། །གསུངས་པས། རྒྱལ་པོས་དུག་ཅེས་བྱ་བ་ཅི་ལ་ཟེར་
 བ་ལགས། བྱས་པས། དེས་དུག་གསུམ་རྒྱས་པར་གསུངས་ཏེ། “དུག་དེ་དང་
 རྒྱལ་སྤིད་བསྐྱེས་ན་ཐ་མ་ངན་སོང་དུ་འགྲོ་ཞིང་སྐྱུག་བསྐྱེད་ཏེ། དཔེར་ན་དུག་དང་

1 ‘སོགས་པའི་...’ - ལྷུབ་ཀུན་ ༥༥ པེ་ཉི ༤༧ འོག
 2 ‘བྱོན་པས་སྦྱོ་བ་སྐྱུང་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་’ - པེ་ཉི, འོག ༤༧ འོག བྱོན་ནས་སྦྱོ་བ་སྐྱུམ་གྱི་ ལྷུབ་ཀུན་
 འོག ༥༥/ན .
 3 ‘བྱོན་པས་སྦྱོ་བ་སྐྱུང་བརྒྱ་ཙམ་ཡོད་པ་’ - པེ་ཉི, འོག ༤༧ འོག བྱོན་ནས་སྦྱོ་བ་སྐྱུམ་གྱི་...ལྷུབ་ཀུན་
 འོག ༥༥/ན .
 4 ‘གསུངས་པས་’ - པེ་ཉི འོག ༤༧ ལྷུབ་ཀུན་ ༥༥ |

འདྲིས་པའི་བཟའ་བདུང་བཟང་པོ་ཞེས་པ་དང་འདྲའོ།” བྱས་པས། རྒྱལ་པོ་དེ་
 རིགས་སད་ཀྱི་གང་ཟག་ཡིན་པས་དེ་སྤྲོ་མར་བཟུང་། ། གདམས་ངག་ལྷུས་པས་
 (དགེ་སློང་དེས་)དེ་ལ་བདེ་མཚོག་ཏུ་དབང་བསྐྱར་ནས་ལམ་བཟུང་ནོ།

དེས་རྒྱལ་སྤྲིད་བྱ་ལ་གཏད་དེ་ཙུ་བ་ནས་སྤང་བྱས་ཀྱང་། ཨམ་འི་ཚལ་གྱི་ཀོ་
 ཀོ་ལའི་སྤྲོ་ལ་ཡིད་ཚུ་ནས་ལམ་སྤོམ་དུ་མ་བདུབ་ཡལ་། (དགེ་སློང་) དེས་(དེ་
 ལ་)རྟོག་པ་གང་སྤྲིས་གཅིག་ཅར་སྤོམ་བའི་གདམས་པ་འདི་ལྟར་གནང་ངོ།

དཔེར་ན་ནམ་མཁའ་སྤོང་པ་ལ།
 འདུག་སྤྲོ་སྤྲོ་ནམས་འདུ་བར་བྱེད།
 དེ་ལས་ཆར་རྒྱན་འདུང་བ་ཡིས།
 ཙུ་བའི་ལོ་རྟོག་རྒྱས་པ་ལྟར། ༡
 དེ་བཞིན་ན་བ་སྤོང་བར་ནི།
 ཀོ་ཀོ་ལའི་འདུག་སྤྲོ་ཡིས།
 རྟོན་མོངས་དུག་གི་ཆར་རྒྱན་གྱིས། ༢
 ཆགས་སྤང་ལོ་འདབ་རྒྱས་པར་བྱེད།
 མི་མཁས་བྱིས་པའི་རང་བཞིན་ཅན།

1 ‘གཟུང་ནས།’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག
 2 ‘སྤྲོབ་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ །
 3 ‘ལས་’ - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ འོག
 4 ‘ཀོ་ཀོ་ལའི་’ - རྒྱབ་ཀྱན་ ཤོག ༥༥/བ.

ན་ལེ། རང་དུ་གཤེགས། བདག་གིས་ཉིན་ཞག་(གཅིག་)གི་འཚོ་བ་འདྲེན་པ་ཡིན།
 ཟེར་ནས་སྤྱོད་དང་ས་ཏེ། ཞབས་བཀུས་སྣམ་བསྟུང་། ལ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་
 བཞེས་ཆབ་གྱུ་ཚོམ་པ་དང་སཱ།

(དེ་ནས་)དེ་ན་རེ་འཕགས་པ་ཉིད་ 33ས་བསོད་སྒྲུལ་ས་དང་དཀའ་ཐུབ་
 འདི་ལྟར་མཇེད་པའི་ཆེད་དུ་བྱ་བ་ཅི་ལགས། ཟེར་བ་ལ་༥། དག་སྤོང་གིས་
 དེ་ལ་བདག་འཁོར་བ་ལ་འཇིགས་ནས་ཐར་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པས་དེའི་ཕྱིར་
 ཡིནལ། གསུངས།།

ཡང་དེས་འཕགས་པ་འོ་སྐོལ་གཉིས་ཀྱི་རྟེན་ལ་ཁྱད་པར་ཅི་ཙམ་བདོག
 བྱས་པས། དེས། ཁྱད་ཆེ་སྟེ། ཁྱོད་ཀྱི་རྟེན་ང་རྒྱལ་ལ་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོས་མི་འབྱུང་
 ལ། བདག་གི་དད་པའི་རྟེན་ལ་ཡོན་ཏན་དཔག་དུ་མེད་པ་འབྱུང་ངོ་།། གསུངས་
 པས། ཡང་དེས། འཕགས་པ། ཡོན་ཏན་བྱ་བ་ཅི་ལ་ཟེར། ཞུས་པས། དེས། ཆེ་
 འདིར་ཚོས་བྱེད་པའི་རྟེན་ལ་མི་དང་མི་མ་ཡིན་གྱི་མཐར་ཆད་མི་འབྱུང་ཞིང་།

-
- 1 'ལྟབ་པ' - བེ་ཉི་ བོག ༤༥ བོང་།
 - 2 'དང་ས་ཏེ' - བེ་ཉི་, བོག ༤༥ བོང་།
 - 3 'ཉིད་འཕགས་པ' - ལྷུ་བ་ཀུན ༥༥ / བ. བེ་ཉི་ བོག ༤༧ བོང་།
 - 4 'མཇེད་པ་ཅིའི་ཆེད་དུ་བྱ་བ་ཅི་ལགས' - བེ་ཉི་ བོག ༤༥ བོང་།
 - 5 'ཟེར་བའི' - བེ་ཉི་ བོག ༤༥ བོང་ ལྷུ་བ་ཀུན བོག ༥༥ / བ.
 - 6 'ཐར་པ་ཐོབ་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཡིན' - ལྷུ་བ་ཀུན བོག ༥༥ / བ. བེ་ཉི་ བོག ༤༥ དེ་ཉིད།
 - 7 'གསུངས་ནས' - ལྷུ་བ་ཀུན བོག ༥༥ / བ. 'གསུངས་པས' བེ་ཉི་ བོག ༤༥ བོང་།
 - 8 'མ་ཡིན་པའི' - བེ་ཉི་ བོག ༤༥ བོང་ དེ་ཉིད།

མ་ཐར་ཐུག་སངས་རྒྱལ་གྱི་རྒྱ་ཐོབ་པ་ལ་སོགས་པ་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་
འདས་པའི་ཡོན་ཏན་བཤད་པས། དེས་དེ་འདྲ་བ་ཐོབ་པའི་ཐབས་འཁོག་ལ།
ཟེར་བ་ལ།

དེས་དེ་ལས་ལྷན་པ་དང་འཚོང་པ་ (ལས་)ལ་སོགས་པའི་འཇིག་
རྟེན་པའི་ལས་རྒྱས་སམ། གསུངས་པས། དེ་འདྲ་བ་གང་ཡང་མི་རུས་ཟེར་བ།
འོ་ན་རྣམས་ཐོག་གཅིག་ཏུ་བསྐྱེད་ནས་སྒྲོམས་རྒྱས་སམ་གསུངས་པས། རུས་ཟེར་
ནས། (དེས་)དེ་བའི་མཚོག་ཏུ་དབང་བསྐྱེད་ནས། ཚོགས་དྲུག་རང་གསལ་གྱི་
གདམས་པ་འདི་གནང་ངོ་།

སྒྲོ་ཚོགས་སྐྱེད་བ་སེམས་གྱི་རང་བཞིན་ལས།
འགའ་ཡང་གུད་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པས།
ཚོགས་དྲུག་ཡུལ་ལ་རང་སར་བཞག་པར་བྱ།
མ་ཞེན་མི་འགགས་ཏེ་ཡི་ངང་ལ་ལོག་གོ།

1 'ཐབས་གཅིག' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༥ བོང 'ཐབས་ཅིག' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན.
2 'ཟེར་བས' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན. དེ་ཉི་ཤོག ༤༥ བོང་།
3 'སྒྲོ' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན . དེ་ཉི་ཤོག ༤༥ བོང་།
4 'ཟེར་བས' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧ དེ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
5 'མི་འགག' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
6 'ངང་ལ་ཞོག' - ལྷུབ་ཀུན་ཤོག ༥༧/ན

‘གཟུང་སྐར་ངན་’¹ཟེར་ནས་རྒྱལ་སར་སྤྱོད་མ་དང་ས་པའི་དུས་སྤྱི་ ལྷམ་
 གྱིས་སྤྱོད་པོ་དག་གཟིགས་པས། བམས་ཅད་ཕྱི་པར་འདུག་ནས་²ཐུགས་སྦྱོར་བའི་ཚེ།
 རྒྱལ་བུ་དེའི་འཁོར་རྣམས་ཀྱིས་ག་མང་པོ་བྱིར་དེ་ལིང་ས་ལས་³ཡོག་ནས་དེའི་
 མདུན་ནས་མར་འོངས་⁴པས། ལྷམ་ན་ཤེ། འདི་ཀུན་སྤྱི་ཡིན། ཅི་བསད། གང་
 རྣམ་འོང་། གང་པ་⁵ཡིན། གསུངས་པས། འཁོར་རྣམས་ཀྱིས།⁶ བྱོད་ཀྱི་བྱོ་རྒྱལ་
 པོས་རི་དྲུགས་གསོད་དུ་བཏང་པ་ཡིན། བྱས་པས། (གཏམ་དེ་) ལྷོ་འགྲངས་པ་
 ལ་ཁ་བས་ཀྱི་གཏམ་བཏང་བ་ལྟར་གྱིན་དུ་ཡང་ཐུགས་ལོག་སྤྱོད། ངའི་མིང་པོ་དེ་
 ཚོས་སྦྱོར་བའི་རྒྱལ་པོ་ཡིན་པ་ལ། ལུ་སྤྱིགས་འདི་འདྲ་བ་ལ་ང་བཏང་སྤྱོད་ནས་དེ་
 ཉིད་དུ་བརྒྱལ་ལོ། །དེ་ནས་བརྒྱལ་བ་སངས་པ་དང་། བྱོད་བྱིར་བ་དེ་རྣམས་ལ་
 རོར་རྣམས་བྱིན། འཁོར་ཀུན་ལ་རྒྱན་ཆ་བསྐྱར་ནས་ཡུལ་དུ་བཞྱོག། དེ་ནས་དེ་
 མན་ཆད་ཞག་བཏུ་རུ་སྤྱི་ཡང་མ་ལྟར་ཞིག་ཟེར་ནས། ཁང་པ་གཅིག་དུ་
 བཞུགས་⁷དེ། ལུས་ལ་མར་ནག་དང་སོལ་བ་བྱུགས། སྤྱོད་བཞིགས། གཅེར་བུར་

1 ‘འདུག་པས’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
 2 ‘ལིང་ས་པ་ཡོག་ནས’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
 3 ‘མར་སོང་བས།’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
 4 ‘གང་ཡིན’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༥ འོག
 5 ‘ལིང་ས་ལ་སྤྱོད་པ་ཡིན།’ - བྱོད་ཀྱི་ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༥ ‘ལིང་ས་ལ་སྤྱོད་པ་ཡིན’ ཞེས་
 པ་སྤྱོད་ཀུན་ལ་མེད། ཤོག ༥༠/བ.
 6 ‘མ་བཏང་ཅིག’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༤ བོང་།
 7 ‘ཞུགས་དེ’ - བོ་ཉི་ཤོག ༤༤ བོང་།
 8 ‘བཞིགས།’ - སྤྱོད་ཀུན་ ཤོག ༥༠/བ .

ཕྱང་ནས་སྒྲིུན་རྒྱུ་བྱེད་ཅིང་། སྤྱིང་པོའི་དོན་ལས་མ་གཡོས་པར་བཞུགས་པས།
 དེས་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་སྤྱང་ན་གྱིས་ཚོན་ནས་སྤྲོན་པ་ལ་སོང་པས་སྤྲོན་གྱི་སྒྲིུར་
 བ་བྱེད་པར་བྱས་པས། དེར་སྤྱོད་ལོངས་པ་ལ་དེག་འཚོགས་ཁྲོའི་ཕྱང་འཕག་པ་ན།
 དེ་རྒྱམས་གྱིས་མིང་པོ་ཅན་དུ་སོ་ཉ་བཏང་བས། དེ་ཐུགས་བདེ་བར་གནས་ཏེ།
 འཁོར་བ་ལ་ཐུགས་ལོག་པ་ཡིན་ཏེ་འོང་སྐྱམ་དུ་དགོངས་སོ།།

ལྷམ་གྱིས་དེ་མན་ཆད་སྒྲིུན་མའི་བརྒྱལ་ཞུགས་གྱིས་གནས་ནས།
 ལྟུང་པོར་ཟས་གྱི་ལྷག་མ་ཟ་ཞིང་། དུར་ཁྲོད་དུ་ཉལ་ནས་སྤྱིང་པོའི་ཚོས་ཉམས་
 སྤྱོད་སྤངས་པས། ལོ་བདུན་ནས་ལྷམ་པ་ཐོབ། རྒྱལ་པོ་དེའི་ཕྱག་དར་བ་ཞིག་གིས་
 ལྷམ་ལ་བསྐྱེན་བཀུར་བྱས་པས། དེ་ལ་ཡང་གདམས་པ་གནང་ནས་ཡོན་ཏན་ཐོབ་
 པས། དེས་ཡོན་ཏན་རྟོགས་པ་གཞན་གྱིས་མ་ཚོར་བའི་དུས་སུ་རྒྱལ་པོ་ལྷམ་
 རྩ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ལིངས་ལ་བྱོན་པ་ན་རྒྱམ་ཚོད་མ་རིག་སྟེ། དེ་ཉིད་ལ་
 རྒྱལ་པོ་གཉིད་དུ་སོང་༢ དེ་ནས་ཕྱིན་པས་ལམ་ལོག་པར་འབྱམས་ཏེ། དེ་
 དགོངས་³ ཡུལ་དུ་ལོག་མ་རུས་པས་ཉལ་ས་མེད་དེ་ལྷགྲིུར་ཉལ་བའི་ཕྱག་དུ་
 ཕྱིན་ནས། སྒྲིུན་མ་འདི་ཅི་རང་བྱེད་དམ་སྐྱམ་བཞུགས་པས། དེ་ནི་རང་ལུས་ལས་
 འོད་འཕྲོ་བས་གནས་པ་ལ། ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ནས་ལྷམ་གྱི་ཕྱོ་མོ་དཔག་དུ་མེད་

1 'ཐོབ་ཅིང་' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༧/བ. པེ་ཉི འོག ༤༤ བོང་།
 2 'སོང་བས' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༧/བ. 'སོང་ནས' - པེ་ཉི འོག ༤༤ བོང་།
 3 'དེ་གོངས' - པེ་ཉི འོག ༤༤ བོང་།
 4 'ན' - ལྷུབ་ཀུན་ འོག ༥༧ 'ནི' - པེ་ཉི འོག ༤༤

ལས་བསྐྱོར་ནས་མཚོན་པ་བྱེད་པར་མཐོང་བས། དད་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱེས་ཏེ།
དགོངས་ཀྱི་དེར་བཟུང་ནས་ཕྱི་དེ་ཡུལ་དུ་སྐྱེ།

སྤྱི་ལོ་ག་སྐྱེ་ཕྱག་བྱས་པས། ང་འདྲ་བའི་བུད་མེད་ལ་ཕྱག་བྱེད་པ་ཅི་སྐྱེ།²
བྱས་པས། ཡོན་ཏན་ཡོད་པས་³ན་གདམས་པ་ཞུ་བྱས་པས། དེས་དེ་ལ།—

འཁོར་བའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བསྐྱེད་བཅས་ལ།⁴
བདེ་བ་འགའ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ།
དེ་ཡང་སྐྱེ་ག་ན་འཆི་ལ་སོགས་པས།
འགྲོ་བའི་གཙོ་བོ་ལྷ་མོ་དག་ཀྱང་གདུངས། ༡

ངན་སོང་གསུམ་ནི་སྐྱབ་བསྐྱེད་ཉིད་ཡིན་ཏེ།
མན་ཚུན་ཟ་ཞིང་བཀྲིས་པས་ཉལ་དུ་ཉེན།
ཚ་ཞིང་གུངས་པས་ཉེན་པ་དཔག་དུ་མེད།
དེས་ན་སྐྱེ་པོ་ཐར་པའི་བདེ་ཆེན་ཚོལ། ༢

1 'མོངས་ཁ' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ མོང་།
2 'ཅི་ཡིན' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤ མོང་།
3 'ཡོན་ཏན་ཡོད་པས་ན' - ཞེས་པ་དེ་ཉི་དཔར་ལ་མེད་ཤོག ༤༤ མོང་སྐྱབ་ཀྱུན་
༤༠/ན.
4 'འཁོར་བར་གནས་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱབ་བསྐྱེད་དང་བཅས་པ།' - དེ་ཉི་ཤོག ༤༤
འོག

འཇིག་རྟེན་ཚོས་བརྒྱན་ཆ་སྦྱོམས་ནས།

དབུས་ནས་བདེ་རྒྱན་དབབ་བྱས་དྲི། ༡

འཁོར་ལོ་བཞི་ལ་དགའ་བ་བཞི།

བདེ་སྦྱང་དབྱེར་མེད་རྣམ་པ་ཅན།

ཡང་དག་པར་ནི་སྦྱོམ་འབྲས་ན།

བདེ་བ་ཟག་མེད་འབའ་ཞིག་ལས། ༢

སྐྱུག་བཟུལ་སྐྱད་ཅིག་ཅམ་མི་སྲིད།

ཅེས་གསུངས་པ་གོ་ནས་བསྐྱོམས་པས། ལོ་གསུམ་ན་གྲུབ་པ་ཐོབ་ཤི།
ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་དུ་སྒྲུ་མ་སུང་བྱ་བར་གྲགས་ཤིང་། དེས་རྟོག་པ་བཟོད་ཅིང་།
འགྲོ་དོན་བྱས་ནས། འཁོར་བརྒྱན་བརྒྱ་དང་བཅས་མཁའ་སྦྱོང་དུ་གཤེགས་སོ།

གུ་རུས་མུ་དྲི་ལོ་རྒྱུས་ཚོགས་སོ། ॥

༡༥) གུ་རུ་བྱུ་ཡི་ལྟ་

གུ་རུ་བྱུ་ལི་ལྟ་ལོ་རྒྱུས་ནི། ཡུལ་ཨམཔ་ཞེས་ཕ་པར་བྱུ་ལི་བྱ་བའི་བྲམ་ཟེ་

ཞིག་ལ་ཚོར་མང་དུ་ཡོད་ལ། བདུད་ཅིའི་ཉམས་ལེན་བྱེད་ཅིང་། དངུལ་ཚུ་མང་
དུ་ཉོས་ནས་བདུལ་ནས་མེད་རྣམས་འཇུག་པ་ཡིན་(པ་)ལ། སྤོང་གཅིག་མ་

1 'བསྐྱོམ་བྱས་' - སྐྱུག་ཀུན་ ཤོག ༤༠/བ .
2 མའི-(ཡམ་འི)ག - གའ་ པུ་ སི་ པུ་ ༡༢༥ ।
3 'ཅེས་པར་' - ཤི་ཉི ༤༧ བོད་ དེ་ཉིད།
4 'བདུལ་པས་' - སྐྱུག་ཀུན་ ཤོག ༤༠/བ.

གཤམ་ནས་གྲུབ་ཉམས་འབྱུང་དུ་མ་འདོད་པ་དང་། དེ་ཁྲོམ་ནས་བེ་འབུམ་དེ་གརྒྱ་
ལ་བརྒྱུར་ནས་བཏང་ངོ་།།

དེའི་2མོ་ར་ཡང་ལོ་བཅུ་གསུམ་དུ་བརྒྱབས་པས་3ད་དེ། མྱོང་བྱིར་ནས་
མར་3བསོད་སྟོམས་ལ་བྱོན་ནས། རྒྱལ་པོ་4རྩམ་འི་གཙུག་ལག་ཁང་ཡོད་པའི་མྱོང་
བྱིར་ལ་སྦྱིན་པས། དེ་ན་དུ་རི་5མོ་ཞིག་གིས་གརྒྱའི་འབུམ་དུ་བྱུས་ལ་སྦྱིན་པས་
དེས་ལེ་བུམ་དེ་རྩེད་ནས། བུམ་ཟེ་དེ་ལ་བརྟན་པས། ཁོའི་སྐར་གྱི་སྦྱོན་ཡིག་དུ་
འདུག་ནས་བགད་7པས། ཅི་ཟེར་བ་ལམ། སྐར་གྱི་ལོ་རྒྱུས་བརྟན་པས། (དུ་རི་མོ་
ན་རི་)ད་དུང་ང་ལ་གསེར་ཁལ་གཅིག་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པས་བརྒྱབ་པར་བྱ་
དགོས་ཟེར། དེས་སྐར་ཡང་འདིས་བརྒྱས་ནས་འདི་ལ་ཐུག་པ་ཡིན། (ད་)
ཅང་ཡོད་དེ། བྱས་པས།

བུམ་ཟེ་ལ་རང་དབང་མེད་པར་གྱིས་ཟེར་ནས་དངུལ་རྒྱ་མང་དུ་ཉོས་དེ།
ལོ་གཅིག་དུ་བརྒྱབས་པས། རྒྱུ་རུ་ར་དམར་པོ་བྱ་བ་མ་གཤམ་ནས་ཉམས་འབྱུང་དུ་

-
- 1 'དཔེ་བུམ་དེ' - རྒྱབ་ཀྱིན་ ༤༠/བ .
 - 2 'ཁོའི་རྫོང་ཡང་' - རྒྱབ་ཀྱིན་ ༤༠/བ .
 - 3 'མྱོང་བྱིར་ལ་མར་' - རྒྱབ་ཀྱིན་ བོག ༤༠/བ.
 - 4 'རམ་འི' - རྒྱབ་ཀྱིན་ བོག ༤༠/བ . པེ་ཉི་ བོག ༤༧ བོང་།
 - 5 'རྩེ་མོ' - པེ་ཉི་ བོག ༤༧ བོང་།
 - 6 'སྦྱིན་པས་བེ་བུམ་དེ་རྩེད་ནས།' - པེ་ཉི་ བོག ༤༧ བོང་།
 - 7 'གད་པས' - པེ་ཉི་ བོག ༤༧ བོང་།
 - 8 'ཟེར་བས' - རྒྱབ་ཀྱིན་ བོག ༤༠/བ . པེ་ཉི་ བོག ༤༧ འོག

མ་འདོད་པ་ན། (ཉིན་གཅིག་) དུ་རི་མོ་དེས་ལྷུས་བྱས་པས་རང་བྱུང་གི་མེ་དོག་
སེན་མོ་ལ་འབྱུང་བ་དང་། དེས་སྦྱུང་པ་ན། དེའི་ཟེར་མ་སྤུང་ནང་དུ་ལྷུང་ས་
པས་དེ་མ་ཐག་དྲུ་རྒྱུ་མས་བྱུང་བ་དང་། བྲམ་ཟེས་མོ་ལ་དྲིས་པས་འདི་འདྲ་བའི་
ཟེར་མ་སོང་བ་ཡིན་ནམ། གཞན་བཅུག་པ་མེད། བྱས་པས་དགའ།

དུ་རི་མོ་དེས་བྲམ་ཟེའི་བཟའ་བདུང་ལ་དིག་ཏུ་བདེ་བ་ནས་བྱིན་པས།
ལྲར་གྱི་དུས་སུ་མ་ཚོར་བ་ལ། དེའི་ཞག་གཅིག་ཚོར་བས། དུ་རི་མོས་གྲུབ་བམ།
བྱས་པས། ལྷུ་མཚན་ཅི། ཟེར་རོ། ལྲར་བཟའ་བདུང་ལ་དིག་ཏུ་བདེ་བ་མི་ཚོར་
བ་ལ་དེ་རིང་ཚོར་བས་སོ་བྱས་པས། དེ་ན་ཟེ།

དེ་ཡང་གྲུབ་པའི་རྟགས་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། གཡས་སུ་འཁོར་བ་དང་། བཏུ་
ཤིས་ཡཔའི་རྟགས་བརྒྱན་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བའོ་བྱས་པས། དེས་བཏུ་ཤིས་རྒྱ་
ཚེན་པོ་བྱས་ཏེ། བྲམ་ཟེ་དུ་རི་མོ་རྟ་ཚོང་མ་ཞིག་འདྲང་གསུམ་གྱིས་ཟོས་པས་དེ་
གསུམ་གྱིས་འཚི་བ་མེད་པའི་ཚེའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་ཐོ།།

གདམས་པ་ལ་སྤྲལ་དོག་བྱས་ནས་སུ་ལ་ཡང་མི་སྟེར་བའི་སྤྱིར་ལྷ་ཡུལ་དུ་
ཕྱིན་པས། ལྷ་རྒྱུ་མ་འགྲིས་མ་བསྟེན་ནས། དེས་རྒྱལ་པོ་གྱི་ལམ་བར་འབྲུ་བའི་

-
- 1 'སོར་མོར་' . དེ་ཉི་ཤོག ༤༧ འོག
 - 2 'བཏུ་ཤིས་ལ་བརྟགས་བརྒྱན་' . དེ་ཉི་ཤོག ༤༧ འོག
 - 3 'རྟ་དང་གསུམ་གྱིས་' . དེ་ཉི་ཤོག ༤༧ འོག
 - 4 'ཐོབ་སྟེ།' . དེ་ཉི་ཤོག ༤༧ འོག ལྷུ་བ་ཀུན་ཤོག ༤༡/ན.
 - 5 'ལྷ་ཀུན་གྱིས་མ་བསྟེན་ནས་' . དེ་ཉི་ཤོག ༤༧ འོག
 - 6 'གྱི་ལམ་པར་གྱི་ལམ་པར་' ཞེས་ དེ་ཉི་ཤོག བསྟེན་དཔར་དང་, ལྷུ་བ་ཀུན་ཐོང་དཔར་དེ་སྤྱིའི་སྟོག་དཔར་རྒྱུ་མ་ལ་
འདྲ་བར་འདྲེག་གྲང་། དེ་ནི་ 'གྱི་ལམ་པོ་' ཞེས་པའི་བྱུར་ཆག་ཡིན་པར་མངོན་ནོ། གནས་ནི་སྤྲེལ་འོ།།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱན་ཅུ་ཙུ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས།

ཡུལ་དུ་ཕྱིན་ནས་གནས་ཏེ། དེ་ན་བྲག་དཔངས་སྲུ་དཔག་ཚད་འདང་། རྒྱུ་རྒྱུང་
བྲགས་བརྒྱ་ཡོད་ལ། མཐའ་འདམ་གྱིས་བསྐྱར་བ་དེའི་སྤང་ན་གིང་རྒྱུང་གཅིག་
ཡོད་པས་དེའི་གྲིབ་མ་ལ་གནས་པར་བྱེད་དོ།

དེ་ནས་སྐྱོན་དེའི་མན་ངག་རྒྱུན་ཚད་ནས་མེད་པ་ན། འཕགས་པ་རྒྱ་རྒྱུབ་
གྱིས་མཁའ་སྤྱོད་བརྒྱབས་ཡན་དེར་བྱོན་ཏེ། ལྷ་མ་ཡ་གཅིག་སྐྱས་ཡ་གཅིག་
བསྐྱམས་ནས་ཕྱག་བྱས་ཏེ་གདམས་པ་ཁྲུས་པས། འདིར་ག་ཚུག་བྱས་ནས་འོངས།
ཟེལ། མཚིལ་ལྷ་མ་འདིའི་མཐུ་ལ་བརྟེན་ནས་འདིར་འོངས་པ་ལགས། གསུངས་
པས། དེས་གདམས་ངག་བྱིན་ཏེ། ང་ལ་ཡོན་དུ་ལྷ་མ་འདི་ཕུལ་ཅིག་ ཟེར་བས།
དེ་ཕུལ་ནས་ཡ་གཅིག་སྐྱས་པ་དེ་བསྐྱམས་ནས་སྐྱར་འཇམ་བུའི་སྤིང་དུ་བྱོན་ནས།
དཔལ་གྱི་རིར་རྒྱུབ་པ་མཛད་དེ། འགྲོ་བ་ལ་ཕན་བཏགས་³སོ།

དེས་ན་⁴“སེར་རྩལ་སོགས་པ་ཉོན་མོངས་པ་གང་གི་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པ་དེ་
ལས་⁵ཡོན་ཏན་སྤང་ནི་རྒྱས་གིང་། ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་རྒྱུད་ལ་མི་སྐྱེ་བས་ན།
སྤྱི་མའི་མན་ངག་དང་ལྷན་པ་གལ་ཆེ་བ་ཡིན།” གསུང་དོ།

གྲུབ་ཐོབ་ལོ་རྒྱུས་རྣམས་སོ། །

1 ‘དཔག་ཚད་བརྒྱ་དང་’ - རྒྱུ་རྒྱུན་ ༦༡/ན. འདི་ཡིག་ནོར་ཡིན་པར་སྤང་།
2 ‘རྒྱུབས་ནས་’ - དེ་ཉི་ཤོག་ ༤༧ འོག་
3 ‘ཕན་བཏགས་སོ་’ - དེ་ཉི་ཤོག་ ༤༤ བོང་།
4 ‘གསེར་ལ་སོགས་’ - དེ་ཉི་ཤོག་ ༤༤ བོང་།
5 ‘གང་རྒྱུད་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་’ - རྒྱུ་རྒྱུན་ ཤོག་ ༦༡/ན. དེ་ཉི་ཤོག་ ༤༤ བོང་།

ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་གྲགས་པ་ལྷུ་ཉི་པ་སོགས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་བཅུ་ཅུ་བཞིའི་
 ལོ་རྒྱུས་གང་། །རིགས་མཚོག་མྱོད་ཤུང་མག་རྩུ་འཁྲུངས་ཡང་དག་ཡོན་ཏུན་
 གྱིས་བརྒྱན་མི་འཇིགས་པ་དཔལ་གྱི། །མགུར་གྱི་བུམ་པ་ལས་ཤུང་བཞིན་དུ་བདག་
 གིས་དེ་རྣམས་ལེགས་བསྐྱར་།བསོད་ནམས་གང་།² །དུག་གིས་མནར་རྣམས་
 འཚོ་བྱེད་སྒྲ་མས་ཟིན་ནས་དུག་ཉིད་སྤོང་གི་ངོ་བོར་རྟོགས་པར་ཤོག།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་ལོ་རྒྱུས་རྒྱ་གར་ཅམ་ཡུ་རྫོང་གི་སྒྲ་མ་མི་འཇིག་པ་
 གྱིན་པ་དཔལ་གྱི་ཞལ་ནས་གསུངས་པ་ལྟར། དགེ་སློང་སློན་གྲུབ་ཤེས་རབ་གྱིས་
 ལེགས་པར་བསྐྱར་བའོ།། དགེའོ།། །།

1 'བརྒྱུས' - ལྷུ་བ་ཀུན་ ཤོག ༤༡/བ. 'རྒྱུས' - དེ་ཉི་ ཤོག ༤༤ བོང་ དེ་ཉིད།
 2 'བསོད་ནམས་དེས།' - དེ་ཉི་, ཤོག ༤༣ བོང་།

ཕྱར་བཞོལ།

གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་ཅུ་ཅུ་བཞིའི་བྱིས་ཡིག་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་ཞེས་བྲ་བ་
བཞུགས་སོ། །

༄། །ཀམ་གྱུ་རེལ། གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་³ཅུ་ཅུ་བཞིའི་⁴འབྲི་⁵ཚུལ་ལ་
འདི་རྒྱད་ཅེས་བྲ་སྟོ།

ཨོྃ རབ་དུ་དགེ་བའི་དཔལ་གྱུར་མེད་བྱང་ཀུན།
རབ་སྒྲིན་སྲ་མེད་ཡང་དག་ཇོགས་སངས་རྒྱས།
རབ་མཚོག་ལྷ་ཡི་ལྷར་གྱུར་གྲུབ་དབང་ལ།
རབ་གསུ་དྲངས་བས་རྟག་པར་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །

གང་གི་བསྐྱེད་ལ་ཐེག་ཆེན་སྐྱབས་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས།
གཉེས་མེད་འཕ་མཚོག་ཡོངས་བརྟེས་གྲུབ་པའི་དབང་པོ་ནི།

1 'མ་དཔེ་རང་གི་བཞུགས་བྱང་' - གྲུབ་ཐོབ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་བཅུ་ཅུ་བཞིའི་བྱིས་ཡིག་གི་དུ་དག་
ཅིང་གསལ་བ་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་ཞེས་བྲ་བ་བཞུགས་སོ། ། ཨོམྃ། - ཞེས་པ་འདུག འོག
༡/བ དི་ལི་སྟོག་ དཔར་འོག 395.
2 'ཀམ་གྱུ་རེ' - འོག ༡/བ. 396. བྱིས་ཡིག་[ལེགས་སྐྱར་དུ་ཕྱག་འཚལ་བ་ལ་རྣལ་དབྱེ་བཞི་
པ་དགོས་པས་སོ།།]
3 'བརྒྱད་བཅུ' - འོག དེ་ཉིད།
4 'འབྲི་ཚུལ' - འོག དེ་ཉིད།
5 'ལྷ་གྲུར' - འོག དེ་ཉིད།

ད་ཀྱི་ལ་འཁོར་གཙོར་གྱུར་འཕགས་པའི་འཕགས་པ་དེ་རྒྱུ།

དོ་ཇི་སྟོབ་དཔོན་ཆེ་མཚོག་རྣམས་ལ་གུས་སུག་འཚལ། ༡

ཡི་ཤིས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་ནི་སྟོབས་རེ་མ་ཡིན་དེ།

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཉིད་གྱུར་སྐྱེ་འཕྲུལ་དྲུ་བར་རྟོལ།

བསམ་བྱིས་མི་བྱུང་བྱིས་པའི་སྟོ་རྩ་ལས་འདས་པར།

བདག་གིས་¹ དྲན་མོད་དེ་ལྟ་ན་ཡང་གདུལ་བྱའི་ངོར། ༢

གནས་སྐབས་ཉིད་དུ་གདུལ་བྱའི་སྤང་ངོར་དང་པོ་ཡི།

རྣམ་ཐར་ཅི་འདྲའི་ཚུལ་ལ་མ་འཁྲུལ་ཚད་མ་ཉིད།

ཡོངས་གཟིམ་ཀུན་དགའ་སྤྱིང་པོས་² འཕམ་ཡུལ་གྲུབ་པའི་གདམ།

ཇི་བཞིན་གདན་ལ་³ ལེར་ཕབ་བཞོད་གང་འདིར་བཤད་གྱི། ༣

བལ་བོད་གན་པའི་རྣ་གདམ་ཙམ་ཞེན་འཁྲོག་པའི་ཡིད།

སྟོ་མ་སྲ་བཅན་དབང་གྱུར་འཁྲུལ་པའི་རབ་རིབ་མིག།

གསལ་འདོད་དགེ་བ་ཅན་ཀུན་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐུར་འདི།

ཡིད་གཉིས་མེད་རྩུངས་གྲུབ་སྐྱེ་ཚད་ལྡན་ལ་ལྟོས་ཤིག། ༤

མཁས་ཀྱང་ཐ་སྙད་ཆོག་གི་རྟོལ་ཅེད་ཉིད།

བཅུན་ཡང་བཟང་ཉོག་མདུད་པས་དགྲིས་པ་ཉིད།

1 'བདག་གི' ཤོག ༡/ན. 397. དེ་ཉིད།
 2 'པོའི' - ཤོག ༡/ན. དེ་ཉིད།
 3 'གཞན་ལ' - ཤོག ༡/ན. དེ་ཉིད།

སྐྱོན་མེད་ཡོན་ཏན་དང་ལྷན་གྲོ་ལུ་པ་སྒྲི།

ཚུལ་དེར་སྐྱོན་ལམ་འདེབས་ལ་འབད་པར་འདིགས། ༤

ཞེས་ཆེད་དུ་བརྗོད་ནས་གྲོ་ལུ་པའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་ལི་

སྣང་བརྟན་མེད་ལྷན་པོ་གྲོ་ལུ་པའི་ཚུལ་ནི་།

གཙོ་བོ་དོ་རྗེ་འཆང་། ཡིད་དམ་མཚོན་བྱེད་ཁྲོ་བོ་མི་གཡོ་བ་སྒྲོན་པོ་
ཕུས་བཅུགས། ཚོས་སྐྱོང་མཚོན་བྱེད་མགོན་པོ་ཕུག་བཞི་པ། བོ་དོ་འི་འབྲས་པུ་
འཇིན་པ། དེ་རིགས་མ་ཡིན་པར་ཕུག་གཡས་དང་པོ་གྲོ་ལུ་གཡམ་མཚོག་སྐྱིན་
གང་རིགས། གཞན་རྣམས་སྐྱི་དང་འབྲ་བར་འབྱོ།

༡) ལུ་ཉི་ཤུ་

གྲོ་ལུ་པོ་བ་རྣམས་ཀྱི་དང་པོ་སྐྱོབ་དཔོན་ལུ་ཉི་ཤུ་ཅུང་ཟད་སྐྱེ་བ་སྐྱམ་པ་

-
- 1 'བ་རིགས་...' - བོག ༣/བ. 318. དེ་ཉིད།
 - 2 "སྣང་བརྟན་ཅི་ལྷན་པོ་གྲོ་ལུ་པའི་ན" - བོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།
 - 3 "སྣང་བརྟན་ཅི་ལྷན་པོ་གྲོ་ལུ་པའི་ན" - བོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།
 - 4 'འབྲ་བ' - བོག དེ་ཉིད།
 - 5 འདིར་དོ་རྗེ་འཆང་དང་མི་གཡོ་བ་དང་། མགོན་པོ་ཕུག་བཞི་པོ་གསལ་གཙོ་བོ་དང་། འཁོར་གྱི་ཚུལ་དུ་
འབྲིད་གོས་ཚུལ་དང་། གྲོ་ལུ་པོ་བ་རྣམས་དེའི་མཐའ་སྐྱོར་དུ་འབྲིད་གོས་ཚུལ་སོགས་ནི་ཚོགས་དང་།
རྗེས་གནང་སོགས་ཀྱི་སྐབས་ཁྱད་པར་བ་རྣམས་སྐྱེས་སྐྱེ་བའོད་ཚུལ་ཙམ་ཡིན་འདུག་པས་གྲོ་
པོ་བ་ཀྱི་བྱི་ཐབས་ཀུན་ལ་དེ་ལྷན་པའི་ངེས།
 - 6 'ཞེས་པ' - བོག དེ་ཉིད།

མདོག་སྒྲོ་བསངས།། མདུན་དུ་ཉ་ཡི་རྒྱ་ལྡོ་སྤྲངས་ནས་(དེ་ནས་གཅིག་)ལལ་དུ་
གསོལ་བ། རལ་པའི་ཐོར་རྒྱལས་འུང་ཟད་ཡོད་པ་བྲང་སྤྲུ་དང་བཅས་པ་(དེ་
རྣམ་པ་འབྲི་དགོས།)

2) ལྡིལ་ལྡུ།³

ལྡིལ་ལྡུ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་འགྲིལ་བལྟགས་པ། འཁོར་སློན་པོ་
དང་བཅུན་མོལ་སོགས་པས་བསྐྱར་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཅུང་ཟད་གསལ་བ་ཡོད་པ་
དགོས།།

3) མི་རྒྱུས།

མི་རྒྱུས་ནི་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་བཞིན་ཆང་འཚོང་མའི་ཁང་པ་ན་འདུག་

-
- 1 'སྒྲོ་སངས' - ཤོག དེ་ཉིད།
 - 2 'ཐོར་གཅུགས' - ཤོག དེ་ཉིད།
 - 3 'ལལ་པ' - ཤོག དེ་ཉིད།
 - 4 'རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན' ཞེས་པའི་ཚིག་གི་ཇི་སྲིད་སྤྲངས་ཏེ་དེང་སང་གྲུབ་ཐོབ་རྒྱལ་པོའི་ཆ་
བྱང་ཅན་ཐམས་ཅད་བོད་ཆས་དང་སོག་ཆས་གྲོན་པ་བོད་སོག་གི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་འབྲི་སྲོལ་
འདུག་པ་འདི་གི་རྒྱུ་དུ་མ་དག་ཅིང་། གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་དང་ཉ་ཅང་མི་མཐུན་པ། རྒྱའི་བྱི་
ཡིག་དང་བྱི་ཐབས་སོགས་ཀྱི་གོ་བ་མ་ལོན་པ་ཁོ་ནར་སྤང་ཞིང་། དགོས་པ་གཞན་ཡང་མ་མཐོང་
བས། དེས་ན་རབ་བྱུང་ན་གནའ་བོའི་ལོ་རྒྱུས་ལྟར་ཡུལ་དུས་དེ་དང་དེའི་རྒྱལ་པོ་སོགས་ཀྱི་ཆ་
ལུགས་འབྲི་དགོས། དེ་མ་བྱུང་ན་མ་ཐོད་དང་གོ་དོན་མཚུངས་པ་རྒྱགས་བའི་རྒྱལ་ཆས་
གིག་གི་ཆ་ཡང་མི་རུང་བ་མེད་ཅམ་ཡོང་སྟུགས།

པ། བོས་འདོམས་དགྲིས་ཙམ་ལས་མེད་པ། རི་དྲགས་གྱི་པགས་པ་གདན་དུ་
 བྱས་པ། མདུན་ནས་ཆང་འཚོང་མས་ཆང་འབུལ་བཞིན་པ། ཉམས་སྦྱང་
 དགྱིལ་དུ་བཞུགས་པ། ཁང་པའི་སྤང་གི་ནམ་མཁའ་ལ་ཉི་མའི་དགྱིལ་འཁོར་
 ཡོད་པ་ལ། མི་འདྲ་བའི་ཁྱད་ཚོས་དབུ་སྐྱ་ཙོ་འབྲགས་ལ་མི་དོག་གི་འསྤང་བ་
 ཙམ་མ་གཏོགས་པ་རྒྱན་མེད་པ། ཕྱག་གཡས་པ་སྤྲིག་མཛུབ་གཡོན་པས་མིན་
 (གཉན་)གྱི་རྩ་ཞལ་ཆང་གིས་གང་བ་འཇིན་པ་(དགོས།)

༤) རོ་སྤྲིན་ཉི་ཤུ་ཀ།

རོ་སྤྲིན་ཉི་ཤུ་ཀ་ནི་སྐྱུ་ལ་ཤུས་རྒྱན་ཆ་ཆང་ཡོད་པ། ཕྱག་གཡས་ན་དུག་སྐྱུལ་
 གྱི་ལྷག་འཇིན་པ། སྐྱུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཙན། སྐྱུའི་གཡོན་ནས་ཡུམ་གྱིས་³
 འཁྱུང་ཅིང་། སྐག་ལ་ཆིབས་པའོ།

༥) བཤམ་རིམ།

བཤམ་རིམ་ནི་སྐྱུ་བ་ནག་པོ། ཕྱག་གཡས་ན་མདའ་དང་། གཡོན་ན་འོད་
 མའི་(སྐྱུག་མའི་)གཞུ་བསྐྱམས་པ། གཞུ་མཚོག་[གི་སྤོད་སྤོད་དམ་མགོ་མཛུག་

1 'ཙོ་བྲོག' - བོག ༣/བ. 398. དེ་ཉིད།
 2 'བརྒྱན' - བོག ༣/ན. 399. དེ་ཉིད།
 3 'གཡོན་ལས་ཡུམ་གྱི་འཁྱུང' - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།

གཉིས་ཀྱི་ལ་མག་པའི་ཁོག་སྤོང་ཁོག་སྤོང་། བཀའ་བ་ཡ། མ་ཕྱེད་སྤོང་མདོང་ས་
གཤེབས་པའི་སྤོང་གཡོག་ཅན། མི་དོག་དང་འབྲས་བུའི་རྒྱན་ཡོད་པ། རིག་མ་
གཉིས་ཀྱང་རྒྱན་གོས་དེ་དང་འབྲས་བུ་མདའ་དོང་སྤྲུག་པར་ཐོགས་པ་འབྱེད།

༤) སར་ཉལ།

སར་ཉལ་ནི་སྤྱི་བའ་དཀར་གཤེབས་པའི་ ཚངས་སྤྱད་ཐོགས་པའི་ མདའ་སྤོང་པའི་
རྒྱུ་པ་ཅན་གཞེན་ག་ཐོན་པ། འབྲས་མ་རྒྱུང་མ་ཡོད་པ། རྒྱལ་འབྱུང་པའི་
ཚ་ལུགས་ཅན་ནགས་དབེན་པ་ན་འདུག་པ་འབྱེད།

༥) ཀྱི་ལུ་ལུ།

ཀྱི་ལུ་ལུ་ནི་དུ་རྒྱུ་དུ་བཞུང་གིང་། མདུན་དུ་ཀྱང་རུས་མང་པོ་བཀའ་པ། རྒྱན་
མེད་པ། རྒྱ་ཚོ་བྱུང་མེད་པའི་སྤོང་སྤོང་སྤོང་སྤོང་། ཕྱག་ལུ་མཉམ་བཞག་མཚན་པ་འབྱེད།

1 ཁོག་མེད་ - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 2 བཀའ་ལ། - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 3 གཤེབས་པའི་ - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 4 ཐོགས་པའོ་ - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 5 སྤོང་ཅན་ - བོག ༣/ན./ན. 311. དེ་ཉིད།
 6 'མདའ་སྤོང་པ་བྱུང་པའི་སྤོང་དཔོན་ཀ་བ་མེད་པ་ཡིན་པས་ཀས་འཁོག་པའི་རྒྱུ་པ་མི་འབྱེད།' བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 7 'མདུན་དུ་ཀྱང་རུས་ཉལ་པ' - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 8 'རྒྱ་ཚོ་བྱུང་' - བོག་སོགས་དེ་ཉིད།
 9 'སྤོང་སྤོང་' - བོག ༣/ན. 311. དེ་ཉིད།
 10 'ཕྱག་ ཞེས་པ་མེད་ - བོག དེ་ཉིད།

༤) ལྷན་པུ།

ལྷན་པུ་ནི་ཉ་ཚེན་པོའི་ཁོག་པ་གཤམ་། པའི་དབུས་ནས་ཐོན་པའི་ཚུལ་
 དུ་སྒྲི། ཞབས་གཉིས་²ཡའམ་གཅིག་ཉ་ཡི་ཁོག་ནང་དུ་ཚུད་ཅམ་བུ་ལ། ཡུག་
 གཉིས་གར་མཇེད་པའི་ཚུལ་དང་། ལྷ་ག་ལྗོ་བསངས་⁴རྒྱན་མེད་ཅིང་ལྷ་
 འཇིངས་པའོ་ཤ།

༥) ལོ་རྒྱུ།

ལོ་རྒྱུ་ནི་ལྷ་བྲགས་པ་⁶ཡུག་མཉམ་བཞག་ལྷ་ག་དཀར་བ། ལྷན་ལ་ལུང་
 ལྷག་པོ་དང་། མགུལ་ལ་ར་དུང་བཏགས་པ། ལྷ་ལུས་གཅིར་བུའམ་ཅཀྱཀྱ་
 ཞེས་བུ་བ་འཁོར་ལོ་ལྷ་བུའི་བེམ་པོ་གསོལ་བ། མདུན་དུ་བ་སྒྲང་གི་ཁྱུ་མཚོན་
 བྱིད་བ་སྒྲང་འགའ་བཅས་འབྲི་དགོས།

1 'གཤམ་པའི' - ལོག ༣/ན. 399.
 2 'གཉིས་སམ་གཅིག' - ལོག དེ་ཉིད།
 3 'ཚུད་ཅམ' - ལོག ༣/ན. བ དེ་ཉིད།
 4 'ལྗོ་སངས' - ལོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།
 5 'འཇིང་པ' - ལོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 6 'ལྷ་བྲགས་པ' - ལོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 7 'བ་སྒྲང་འགའ་བཅས་འབྲི་དགོས' - ཞེས་པ་འདི་བྲི་ཡིག་རྩ་བར་མེད། ལོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

༡༠) ལྗོངས་ལྟུང་།

ལྗོངས་ལྟུང་ནི་སྐྱེ་རལ་པའི་ཐོར་རྒྱལ་ས་²རྒྱུང་དུ་ཡོད་པ་ལ། ཤིང་རྒྱུང་
ན་གནས་ཤིང་⁴མཉམ་བཞག་གི་རྒྱལ་དུ་བཞུགས་པ། ལོགས་⁵གཅིག་ནས་
ཕར་འགོ་བའི་⁶ཚོང་པ་འགའ་ཞིག་གི་ཚོང་སོལ་བར་⁷སོང་བའི་རྒྱལ་བྱིད་དགོས།

༡༡) ལྗོངས་ལྟུང་།

ལྗོངས་ལྟུང་ནི་ཇོ་ལྷ་ར་⁸དུ་གྲུབ་པ་སྐྱེད་⁹པ་གསུམ་ཡོད་པའི་རྒྱུད་ཅན་
འཆང་སྟེ་དེ་དུང་བཞིན་པ། མགོ་ལ་ཐོད་བཅིང་བ་སོང་རྒྱལ་བུའི་རྣམ་པ་ཅན་
བྱེད་¹⁰།

-
- 1 'ལྗོངས་གི་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'ཐོར་རྒྱལ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'རྒྱུང་ཡོད།' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 4 'མཉམ་བཞག་བྱས་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'ལོགས་གཅིག' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'ཕར་ཚོང་པ' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'སོལ་བར་སོང་བ་བྱིས' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།
 - 8 འདིར་ 'ཇོ་ལྷ་ར་དུ་གྲུགས་པ' ཞེས་པ་ལ་གོ་དོན་མི་སྤང་བས། དོན་ནི་ 'སྐྱེད་ཡིད་དུ་གྲུགས་པ' ཞེས་པ་པའམ་ཡང་ན་ཇོ་ལྷ་ར་ = ཡུལ་ཞེས་པ་ཡིན་སྟེ་མ་དཔུང་དགོས།
 - 9 'སྐྱེ་བ' - ཤོག དེ་ཉིད།
 - 10 'བྱིད' - ཤོག ༣ /བ. དེ་ཉིད།

༡༡) འཁྲིལ་ལ།

འཁྲིལ་ལ་ནི་དག་སྤོང་པ་རྒྱུ་ལྟེ་རྣམ་པ་ཅན་ཅུང་ཟད་བཅུས་པའི་རྣམ་པ་
ཡོད་པ་དབུ་ལ་པའ་ལྷ་གསོལ་བ་བྱའོ།།

༡༢) དྲུག་ལ།²

དྲུག་ལ་ནི་ཤིན་ཏུ་གན་པོའི་ཆ་བྱང་ཅན་གྱི་འཕགས་པ་³ [ཕགས་པའི་ལ་
སོགས་པའི་ཡོ་བྱང་གཤམས་ཏེ་ཕགས་པའཕགས་པ] འི་རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༡༣) ཅམ་རིལ་ལ།

ཅམ་རིལ་ལ་ནི་ལྷམ་བཟོ་བྱེད་པའི་བྱ་བ་ལ་གནས་བཞིན་པ་བྱའོ་⁴།

༡༤) འཁྲིལ་ལ།⁵

འཁྲིལ་ལ་ནི་རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་ཅན་⁶ལྷུག་ན་རལ་གྱི་ཐོར་⁷ནས་རྣམ་

1 'ཤིན་ཏུ་' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

2 'དྲུག་ལ' - ཤོག ༣/བ. 400. སྤོང་ལོག་སྤོང་དཔལ་

3 'གྱི་འཕགས་པ' ཞེས་པ་ཕགས་པའཕགས་ - ཞེས་པའི་བརྗོད་ཅིང་ཡིན་སྟེ།

4 'ལྷམ་བཟོ་བྱེད་པའི་བྱ་བ་ལ་གནས་པ' - ཤོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།

5 'འཁྲིལ་ལ' - ཤོག ༣/བ. 400. དེ་ཉིད།

6 'ཐོར་ཚུགས་ཅན' - ཤོག ༣/བ. དེ་ཉིད།

7 'རལ་གྱི་ཐོར་ནས' - ཤོག ༣ དེ་ཉིད།

མཁའ་ལ་འཕུར་བ། དེའི་ཉི་འཁོར་ལིག་ན་མཚོད་རྟེན་ལིག་གི་སྒོ་ནས་སྐྱུལ་ཚིན་
པོ་ལིག་ལུས་སྤྱེད་ཙམ་ཐོན་པ་བྱིས། མཚོད་རྟེན་གྱི་ནང་ནས་སྐྱུན་རས་གཟིགས་
ཀྱི་སྐྱ་ཅུང་ཟད་ཐོན་པ་ཙམ་འབྲིས་ནའང་ལིགས།

༡༥) ལྷ་སྐྱུབ།

འཕགས་པ་ལྷ་སྐྱུབ་ནི་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་བཞིན་ནམ། ཡང་ན་³སྐྱུ་ག་
སྡེ་བསངས་³གིན་དུ་མཚར་བ་ལྷ་བུ་ལ་དབུ་ལ་གཙུག་གཏོར་ [ཅུང་ཟད་ཐོན་]
ཡོད་པ། དགོ་སྒྲོང་གི་ཆ་བྱད་ཙན་⁴ [དབུའི་རྒྱབ་སྤྱོགས་ནས་སྤྱིང་དུ་ཐོན་པ་]
སྐྱུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཙན་བྱས་ན་དོན་དང་མཐུན་ཞིང་⁵ ཡང་⁶མཚན་དཔེ་
ཙན་གྱི་སྐྱུ་ལ་མོས་ན་ནི་དེ་འཇའ་ལུས་ཀྱི་སྐྱ་ཡིན་པས་འཁོར་ལོ་བསྐྱར་བའི་ཆ་
བྱད་དུ་བྱས་ཀྱང་རུང་⁷བར་མངོན་ལོ།

༡༦) རྣམ་པོ་སྤྱོད་པ།

རྣམ་པོ་སྤྱོད་པ་ནི་སྐྱུ་ག་སྡེ་བསངས་⁸ཕྱག་ན་རྒྱ་མ་རུ་དང་ཐོད་པ་དང་

1 'ཟིབ་ཙམ་མངོན་པ་བྲིས་ནའང' - བོག ༧/ན. 40. དེ་ཉིད།
2 'ཡང་ན་འདི་ལའང' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
3 'སྡེ་བསངས' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
4 'དགོ་སྒྲོང་གི་ཆ་བྱད་སྐྱུལ་མགོའི་གདེངས་ཀ་ཙན' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
5 'བྱེད་པ་དོན་དང་མཐུན་ཅིང་།' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
6 'ཆེ་སྡེ་མཚན་དཔེ' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
7 'ལིགས་པར' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
8 'སྡེ་བསངས' - བོག ༧/ན. དེ་ཉིད།

ཁ་རྩིག་བསྐྱམ་པ། མཁའ་ལ་གདུགས་བདུན་རང་འཁོར། རམ་རྩ་བདུན་རང་
 འཁོལ། སྤྱིན་མོའམ་རོལང་མ་ལ་ཆིབས་པ། རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་¹དང་རུས་
 པའི་རྒྱན་དུག་གྱིས་བརྒྱན་²པ། རྣལ་ལྷན་གྱིས་སྦྱང་དགྱིས་པ་³སོགས་ཇི་
 ལྟར་རིགས་པ་ལྟར་གྱིས་པ།

༡༤) ལྷ་རྩུད་ལྷ།⁵

ལྷ་རྩུད་ལྷ་ནི་དགོ་སྤོང་གི་ཆ་བྱང་ཅན། ཤིང་ཀར་རའི་ལོ་མ་སྟེ་ཤིང་ལོ་
 ཆེན་པོ་ཞིག་ལྷ་ལ་བསྐྱམས་པ་⁶བྱུང་།

༡༥) ཐ་གཞན་ལྷ།⁷

ཐ་གཞན་ལྷ་ནི་གཡས་གཡོན་ཕན་ཚུན་དུ་སྤོང་བྱིས་རི་འབྲི་ཞིང་། ཤིང་
 སྤོང་ཞིག་ལ་སྤྱིང་བསྐྱེས་སུ་བཞུགས་པ། དེའི་མདུན་ན་དགོ་སྤོང་ཞིག་འབྲིངས་
 རས་དེ་ལ་གདུམ་སྦྱོ་བཞིན་པའི་ཚུལ་དུ་འབྲི་དགོས་ཅི།

1 'ཐོར་ཚུགས་' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 2 'རུས་པའི་རྒྱན་དུག་' - ཤོག ༤/ན དེ་ཉིད།
 3 "ལྷ་ལྷན་གྱི་སྦྱང་དགྱིས་སོགས་ཅི་ལྟར་རིགས་པར་འབྲིའོ།" - ཤོག ༤/ན དེ་ཉིད།
 4 "ལྷ་ལྷན་གྱི་སྦྱང་དགྱིས་སོགས་ཅི་ལྟར་རིགས་པར་འབྲིའོ།" - ཤོག ༤/ན དེ་ཉིད།
 5 'ལྷ་རྩུད་ལྷ' - ཤོག ༤/ན དེ་ཉིད།
 6 "དགོ་སྤོང་ཤིང་ཀར་རའི་ལོ་མ་སྟེ་ཤིང་ལོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ལྷ་ལ་བསྐྱམས་པ།" - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 7 ཐ་གཞན་ལྷ་ - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 8 'འབྲིངས་རས་གདུམ་སྦྱོ་བ།' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

30) རྩོམ་པ་

རྩོམ་པ་ནི་སྐྱོ་བ་སྐྱུག་པོ་རལ་པའི་ཐོར་ཚུར་དང་རུས་འབྱུང་ཅན། སྐྱེལ་
 2མི་ལྷན་གསོལ་བ་མི་ལྷན་གསུང་གི་ཀླང་ལག་གཉིས་ནས་ཕྱག་གིས་³གཟུང་ས་ནས་
 ཞབས་བརྟུང་བསྐྱུལ་གྱི་ཚུལ་⁴གྱིས་བཞུགས་པའམ་གར་སྐྱབས་མཛད་པ་བྱའོ།།

31) རྩོམ་པ་

རྩོམ་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ལྟེ་སྤྱང་གི་རོ་སྤྱག་པར་བཀལ་བ་ཞིག་འབྱའོ།།

32) རྩོམ་པ་

རྩོམ་པ་ [རྩོམ་པ་]ནི་སྐྱོ་བ་ཚོ་ནག་རྩོམ་བརྟུང་ས་པའི་རྣམ་པ་ཅན།
 མདུན་ན་⁷རིག་མས་སྤོང་གཅིག་ནས་རྩོམ་བརྟུང་ས་པའི་ཁྲུང་བྱར་རྩོམ་སྐྱུག་པའི་
 རྣམ་པ་ཅན་དུ་ཡོད་པ་བྱའོ།།

-
- 1 'རུས་འབྱུང་ཅན' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 2 'མི་ལྷན་གསོལ་བའི་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 3 'ཕྱག་གི་གཟུང་ས་ནས་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 4 'བཀལ་གྱིས་ཚུལ་གྱིས་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 5 'མཛད་པ་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 6 'བཀལ་པ་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 7 'མདུན་དུ་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 - 8 'རྣམ་པ་ཅན་' - རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་

༣༩) ཅད་པ།

ཅད་པ་ནི་སྤོང་གི་[སྤོང་]རྒྱལ་དུ་འཁྲུང་ཞིང་པོད་ཚུང་ཞིག་ལག་དུ་སྤོགས་པ་
རབ་བྱུང་གི་ཆ་བྱད་ཅན་དུ་བྱ་འོ།།

༣༠) ལྷན་པ།

ལྷན་པ་ནི་སྤོང་གི་སྤོང་གི་དང་ཆང་བུམ་མདུན་དུ་²བཞག་པ། ཆང་སྐྱུད་ཅན།
སྐྱུ་གད་པ་བཅིངས་པའི་སྤོང་ཅོག་ཅན། རྣ་རྒྱལ་སོགས་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་ཅུང་
ཟད་ཡོད་པ། དེའི་གཡས་སྤོགས་སུ་³བྲག་སྐྱེང་ལྟ་བུ་མཐོ་བ་ན་སྐྱ་མ་རྣལ་འབྱོར་
པ་རལ་པའི་སྤོང་རྒྱལ་ཅན་ཞིག་⁴བཞགས་པའོ།།

༣༡) ལྷུ་ཁན་དེ་སྤྲོད།⁵

ལྷུ་ཁན་དེ་སྤྲོད་ནི་ཕྱག་ན་དུ་ར་ཁྲོད་ཀྱི་གོས་ལྷན་སྤྲུལ་མང་པོ་སྤོགས་གཅིག་
དུ་བསྐྱུས་ནས་ཆོམ་བུར་⁶འཆོམ་པའོ།།

1 ‘ཅན་ཅོ།’ - བོག ༥/བ. 402. དེ་ཉིད།
2 ‘མདུན་དུ་བཞག་པ’ - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
3 ‘སྤོགས་བྲག་སྐྱེང་’ - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
4 ‘ཅན་གཅིག’ - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
5 ‘ལྷུ་ཁན་རི་པ’ - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
6 ‘ཆོམ་པ།’ - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

༣༦) མཛོགས་ཀྱི་ལྷན་

མཛོགས་ཀྱི་ [མཛོགས་ཀྱི་] ཏུ་རྩོད་གཅིག་དུ་འབྲེན་ཉལ་མཛད་པ།
རལ་པའི་ཐོར་རྒྱལ་ཅུང་ཟད་ཡོད་པའོ།

༣༧) ཀལ་ཀལ་ལྷན་

ཀལ་ཀལ་ལྷན་རལ་པའི་ཐོར་རྒྱལ་ཅུང་ཟད་ཙམ་ཡོད་པ། གཟུགས་
མཛེས་པ། ཕྱག་མཉམ་བཞག་མཛད་ཅིང་དུ་རྩོད་ན་གནས་པའོ། །

༣༨) རྩོམ་ལྷན་

རྩོམ་ལྷན་གཞིང་པ་རྣམས་སུ་³གོས་རྩིང་པ་འབྲུད་པའི་རྣམ་པ་ཅན་ལོ།

༣༩) ཀྱི་ཀྱི་ལྷན་

ཀྱི་ཀྱི་ལྷན་ནི་རང་གི་ལག་གདུབ་ལ་ལྷ་བཞིན་དུ་⁴འདུག་པ། རྣམ་མཁའ་
ནས་ལྷ་དང་ལྷ་མོས་མཚོད་པ་འབྲུལ་བ།

1 'ཅུང་ཟད་ཙམ་གཟུགས་མཛེས་' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
2 'རྒྱ་བེ་པ' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
3 'འདྲི་རྩོད་གཞིང་པ' ཞེས་བོད་ཤན་ཞུགས་པ་ཡིན་ནམ་དུལ། - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
4 'བཞིན་འདུག་པ' - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

30) ཀམྱལཔུ།

ཀམྱལཔུའམ་ལུ་ལྷ་པུ་ནི་ས་ལ་རང་ཤོང་བ་ཙམ་ཞིག་²བྱས་པའི་ཁ་
 མཚམས་མི་མགོ་སྐམ་³པོས་བསྐྱར་བའི་དབུས་ན་གཟིམ་པ། ཡང་ན་བྲག་རྩལ་
 ན་བེམ་མི་མཉམ་བཞག་མཇེད་པ་བྱས་ཀྱང་རུང་། འདི་⁴དགོ་སྤོང་གི་ཆ་བྱང་
 ཅན་ཅོ།

31) རི་རྒྱུ་པུ།

རི་རྒྱུ་པུ་ནི་སྤོང་གཅིག་དུ་འབྲས་སྲུགས་⁵ནས་གདུན་ཤིང་གིས་འབྲས་
 བྲུ་⁷ཞིང་རྒྱལ་འབྲུད་པའི་རྣམ་པ་ཅན། ལྷོགས་གཅིག་ན་ཆང་འཛོང་མ་ཞིག་
 ཡོད་པ་འབྲི་དགོས།⁸

32) ལྷོ་རྒྱུ་པུ།

ལྷོ་རྒྱུ་པུ་ནི་རྒྱལ་པོའི་བུའི་རྣམ་པ་ཅན་⁹། རམ་མཁའ་ལ་དགོ་སྤོང་ལྷུང་

1 ‘ཀི་པ་ལ་པ’ - ཤོག ༥/ན. 403. དེ་ཉིད།
 2 ‘རང་ཤོག་བཞིན་དུ་བྱས་’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 3 ‘སྐམ་པོས’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 4 ‘དགོ་སྤོང’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 5 ‘སྲུག་ནས’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 6 ‘གདུན་ཞིང’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 7 ‘བྲུ་ཞིང’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 8 ‘འབྲི’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
 9 ‘རྣམ་པ་ཅན’ - ཤོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

བཟེད་ཐོགས་པ་ཞིག་། འགྲོ་བ་ལ་བཟོ་ཞིང་། མདུན་ནས་ལྷ་ཡི་བཟོ་བོས་
གཏམ་སྒྲུབ་པའི་རྒྱལ་དུ་འདུག་པ་འབྱོར་།།

༣༣) དུལ་པུ།

དུལ་པུ་ནི་ཤོ་ཅི་བ་ཞིག་གིས་༥། ཤོ་རྒྱ་གར་ལུགས་སུ་བྱིང་།

༣༤) ཀུཀུའི་པུ།

ཀུཀུའི་པུ་ནི་རུས་པའི་རྒྱན་དང་ཐོར་རྒྱགས་ཡོད་པ་ལྷུང་དུ་བྱི་མོ་ཡོད་
པ་གིས་༧།

༣༥) ཀུཅི་པུ་༨

ཀུཅི་པུ་ནི་ལྷག་པར་མ་བ་སྐྱེས་ཡོད་པའི་རྒྱལ་འབྱོར་པ་མདུན་ནས་སློབ་
དཔོན་སྐྱེས་པའི་བཞུགས་ཡོད་པ་ཞིག་གིས་༩། །

-
- 1 'ཐོགས་པ་འགྲོ་བ' - ཡ/ན. དེ་ཉིད།
 - 2 'མདུན་ན' - ཤོག ཡ/བ. 404. དེ་ཉིད།
 - 3 'གཏམ་སྒྲུབ' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 4 'ཞིག་འབྱི' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'བརྒྱན་དང' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'རྒྱགས་ཅན' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'ཡོད་པ་གི་' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 8 'ཀུའི་པ' - ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད།
 - 9 'གཅིག་འབྱི' . ཤོག ཡ/བ. དེ་ཉིད། འདི་མ་དཔེར་ཆིག་གོང་འོག་ལྷག་པའི་རྒྱལ་དུ་ཡོད།

༣༦) རྣམ་སྤྲུ།¹

རྣམ་སྤྲུ་ནི་བྲམ་ཟེའི་²ཆ་བྱང་ཅན་སློབ་སློན་བྱེད་པའི་རྣམ་པར་བཞུགས་
ཡོད་པ། དེའི་གཡས་གཡོན་དུ་པོ་སློབ་མང་པོ་³ཡོད་པ་བཅས་གྲིས།

༣༧) མ་ཉི་སྤྲུ།⁴

མ་ཉི་སྤྲུ་ནི་ཡན་ལག་སློམ་ཞིང་⁵ལྷ་སྲུལ་ཅན་གཞན་ལ་ལྲས་སློབས་
འབྲན་⁶པའི་རྒྱལ་ཅན་ལོ། །བྱང་མའི་རྣམ་པ་ཅན་བྱས་ཀྱང་རུང་།⁷

༣༨) ཨ་ཅི་རྣམ་པ།⁸

ཨ་ཅི་རྣམ་པ་ནི་ནགས་ནས་ཤིང་གཅོད་ཅིང་། ⁹ཤིང་ཁྲར་ཁྲར་ནས་འགྲོ་

1 'རྣམ་པ' - ཤོག ༥ 404. དེ་ཉིད།
 2 'བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱང་པོ་དེ་མང་པོ་དང་བཅས་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད། འདྲི་པོ་དེ་ -
 ཞེས་པ་བོད་དཔེ་མལ་ཆེ་བ་ལས་བྱུང་ཡང་འདྲི་ལེགས་སྲུང་གྱི་མིང་ཡིན་པས་ 'པོ་སློབ་' ཡིན་གྱི་ -
 'པོ་དེ' ཟེར་བ་མ་དག་པར་མངོན་ལོ།
 3 'བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱང་པོ་དེ་མང་པོ་དང་བཅས་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 4 'མ་ཉི་ལ' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 5 'སློམ་ཞིང་ལྷ་སྲུལ' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 6 'འབྲན་པའི' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 7 'བྱང་མའི་སོགས་མ་དཔེར་མེད།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 8 'ཨ་ཅི་རྣམ་པ' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 9 'གཅོད་ཤིང་ཤིང་ཁྲར་ཁྲར་ནས' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

བ་༡༨༡། ཡང་ན་ནགས་ན་ཕྱིད་ཉལ་གྱི་ཚུལ་གྱིས་བཞུགས་པ་སྒྲོམ་ལ་གནས་
བཞིན་པའོ།།

༣༩) ལྷམ་ཉི་ཤུ་²

ལྷམ་ཉི་ཤུ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་³ཅན་ཕྱག་ན་ཐོད་པ་ཡོད་པ་⁴ གཡོན་
ཕྱོགས་ནས་བཅུན་མོས་འཁྲུད་པ་⁵བཅས་འབྲི་དགོས།

༤༠) རྣམ་པ་

རྣམ་པ་ནི་པདྨའི་མཚོ་ནས་མི་རྟོག་པ་སྐྱེ་ཅུ་བ་དང་བཅས་པ་གཅོད་པའི་
རྣམ་པ་ཅན་གྱི་འོ།།

༤༡) ལྷ་སྐྱུ་ཤུ་

ལྷ་སྐྱུ་ཤུ་ནི་ཞི་བ་ལྷ་སྐྱེ། མཐའ་དགེ་བདུན་གྱིས་⁷བསྐྱོར་བའི་བྱི་

-
- 1 'འཇ་ཞེས་པ་མན་ཆད་མ་དཔེར་མེད།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'འདི་ལ' - ལྷ་མཉུན་དང་ལྷ་སྐྱུ་ལྟེན་པ་འདུག་ཡང་འདིར་མ་དཔེ་ལྟར་གྲིས་པ་ཡིན་ལ། འདིའི་
རྣམ་ཐར་དུ་ 'བརྒྱའི' ཞེས་གྲིས་འདུག་ལ། དེའི་དོན་ཡང་ 'རྒྱལ་པོའི་མ་ལེན་ ཞེས་གྲིས་
འདུག་ ཤོག ༥༤/ན. རྣམ་སྐོག་དཔེར་དེ་ལོ།
 - 3 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 4 'ཕྱག་ན' ཞེས་སོགས་མེད - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'འཁྲུད་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'གཅོད་པ།' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'གྱི་བསྐྱོར' - ཤོག ༥/བ. དེ་ཉིད།

སྤྲོང་ནས་རྣམ་མཁའ་ལ་ཅུང་ཟད་འཕགས་པ། དགེ་སྤོང་གི་ཆ་བྱད་ཅན། ཕྱག་
ཚོས་འཆད་མཛད་པ། མདོག་དཀར་ལ་དམར་བ་གཉམས་རྒྱས་པའི་¹རྣམ་པ་
ཅན་གྱའོ།།

༤༢) ཨིནྱ་ལྷ་ཉི།

ཨིནྱ་ལྷ་ཉི་ནི་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་ལ། ཕྱག་ཚོས་སྟོན་དང་ཚུ་སྦྱིན་
གྱི་ཕྱག་རྒྱ་མཛད་པ། བྱད་མེད་སྲུ་དང་རྩལ་མེ་དང་བྲོ་གར་བྱེད་པ་མང་པོས་
པ་སྐྱོར་བའི་²རྣམ་པ་ཅན་གྱའོ།།

༤༣) མིགོ་ཕུ།

མིགོ་ཕུ་ནི་ཁྲར་བ་འཚོང་ཞིང་འཚོང་བའི་དོན་དུ་ཟས་སྐྱ་ཚོགས་[མདུན་
དུ་] བཀྲམ་པའི་³རྣམ་པ་ཅན་འབྲི་དགོས།།

༤༤) རྟོག་ཅི་སྤྲ།

རྟོག་ཅི་སྤྲ་ནི་དབུ་ལ་ཐོད་བཅིང་⁴ཞིང་རྟོག་ཅིས་ཞིང་ཐ་རྩེང་བཞོ་བ་
[འམ་རི་འབྲམ་ཞིག་གི་ཡུལ་ན་གནས་བཅའ་སྟེ་རི་བཞོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱས་ན་
རྣམ་ཐར་དང་མཐུན།]

1 'པའོ།' - བོག ༥/བ. དེ་ཉིད།
2 'བསྐྱོར་བའོ།' - བོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
3 'བཀྲམ་པའོ།' - བོག ༥/ན. དེ་ཉིད།
4 'ཅིང་ཞིང་' - བོག ༥/ན. དེ་ཉིད།

༤༥) ཀམ་རིལ།

ཀམ་རིལ་ནི་(=ཀམ་པ་རིལ་)ལྷགས་མགར་²གྱི་ལས་བྱེད་པའི་རྣམ་པ་
ཅན་དུ་བྱུངོ།།

༤༦) ལྷལ་ནུབ་རྒྱུ་

ལྷལ་ནུབ་རྒྱུ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རལ་པའི་ཐོས་ཚུགས་དང་རུས་རྒྱན་ཅན་ལ།
ཞབས་³གཅིག་རྒྱབ་ནས་བཀུག་སློང་དུང་པར་བཀལ་བ། ལ་⁴གཅིག་བརྒྱུ་མ་པའི་
རྣལ་གྱིས་ཕུས་མོ་ས་ལ་བཅུགས་པ། ཕུག་གི་⁵མཇུག་མོ་གཉིས་ཅི་སྤྲད་པ་སོར་
མོ་གཞན་རྣམས་བསྐྱོལ་བའི་ཕུག་རྒྱ་མཇུག་ནས་ཕུག་རྒྱ་དེ་མགོ་⁶མཇུག་བརྒྱུ་
ནས་སྤྱི་བོར་བཅེངས་⁷པ། ཕྱོགས་གཅིག་ནས་རིག་མས་བརྟེན་པའི་[ལུས་ཀུན་
ས་ལ་ཕབས་པའི་]ཕུག་འཚལ་བ་⁸བཅས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་འབྱི་དགོས།

-
- 1 'ཀམ་རིལ་པ' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 2 'མགར་གྱིས་ལས' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 3 'ཞབས་ཕྱོགས་གཅིག' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 4 'ཕྱོགས་གཅིག་བཞད་པའི་ཕུས་བཅུགས།' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 5 'ཕུག་སོར་མཇུག་མོ་གཉིས' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 6 'མགོ་གཞུགས་བརྒྱུ་' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 7 'འཚེངས་' - རྟོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 8 'འཚལ་བ།' - རྟོག དེ་ཉིད།

༧༧) རྒྱུ་ལྟུང་།

རྒྱུ་ལྟུང་ནི་དུ་རྒྱུ་ཚེ་ན་འདུག་ཅིང་སྐྱུ་ག་སྡེ་¹ལས་ངས་ཡིད་ཙམ་བགྲེས་པ་²།
དབུ་སྐྱུ་བྲགས་²ལ། ཕྱག་མཉམ་བཞག་བྲས་ཤིང་། དུ་རྒྱུ་ཀྱི་མི་རོ་ལ་བལྟ་བ་
ཞིག་གིས་³།

༧༩) རྒྱུ་སྤྲུ་།

རྒྱུ་སྤྲུ་ནི་དག་སྤོང་བགྲེས་པོ་ཕྱག་ན་པོ་སྤྱི་བལྟམ་པའི་⁴རྒྱམ་པ་ཙན་
གིས་།

༧༩) རྒྱུ་རྒྱུ་སྤྲུ་།

རྒྱུ་རྒྱུ་སྤྲུ་ནི་རྒྱུ་སྤྲུ་ཞིག་གི་ནང་དུ་སྤོང་ཆེན་པོ་ཞིག་བཅུག་ནས་སྤོང་མོ་
སྤོང་པའི་རྒྱུ་དུ་བཞིངས་པའི་⁶རྒྱམ་པ་ཙན་དུ་བྱ།

1 'སྡེ་སངས་' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
2 'སྐྱུ་བྲགས་པ་' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
3 'འབྲི།' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད། འདྲིས་ 'མི་རོ' ཞེས་འདུག་ཀྱང་དངོས་འབྲེལ་དེ་བུད་
མེད་ཀྱི་རོ་མལ་མེད་མཚན་མ་སོང་བྱེད་དུ་འབྱུང་བ་མི་སྐྱུ་པའི་རྒྱམ་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བ་ཞིག་གོ།
4 'པོ་དེ་བལྟམ་པ།' - ཤོག ༤/ན. 405. དེ་ཉིད།
5 'འཇོ་ལའི་ནང་དུ་' - ཤོག ༤/ན. 406. དེ་ཉིད།
6 'བཞིངས་པ།' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།

༥༠) མེནྱིན་སྤྲ།

མེནྱིན་སྤྲ་ནི་སྤྲ་གཉིས་ལ་གཉེན་ཤིང་བཅུག་ནས་ཞིང་མོ་བའི་རྣམ་པ་
ཅན་²དུ་འབྲི་དགོས།

༥༡) པརྟེས་སྤྲ།

པརྟེས་སྤྲ་ནི་བྲམ་ཟེའི་གཞོན་ལྟའི་རྣམ་པ་ཅན་³པརྟེས་རྒྱུ་བའི་འགྲམ་
ན་སྤྲ་རས་གཟིགས་ཀྱི་ལྷ་ཁང་ཞིག་⁴ཡོད་པ་ལ་དེའི་ནང་གི་སྤྲ་རས་གཟིགས་
ཀྱི་སྐྱེ་དེ་ལ་དགོ་སྤོང་ཞིག་⁵གིས་མཚོད་པ་འབུལ་བ་⁶ལ་བལྟ་བའོ།

འདིའི་ལོ་རྒྱུས་ན་སྤྲ་རས་གཟིགས་དང་དབང་ཕྱུག་ནོར་བའི་ལོ་རྒྱུས་
ཡོད་པས།⁷ སྤྲ་རས་གཟིགས་[འདི་སྐྱེ་མདོག་]དམར་པོ་ཕྱུག་གཡོན་ན་པརྟེས་

1 'མེ་དི་ནི་པ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 2 'རྣམ་པ་ཅན།' - ཤོག ༤/ན. བ དེ་ཉིད།
 3 'ཁོང་རང་བྲམ་ཟེའི་གཞོན་ལྟའི་ཆ་བྱད་ཅན' ཞེས་པ་འདི་གཤམ་ན - 'མཚོད་པ་འབུལ་བ'
 ཞེས་པའི་རྗེས་སུ་འདུག་ཀྱང་འབྲེལ་ཆགས་པའི་དབང་གིས་འདིར་བཞག་པ་ཡིན།
 4 'ལྷ་ཁང་ཅིག' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 5 'གཅིག་གི་མཚོད་པ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 6 'འབུལ་བ།' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 7 'ཡོད་པ།' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།

དང་། གཡས་དེ་ཁ་འབྱེད་པ། ཡུམ་གྱིས་ཡག་ཡོན་ནས་འབྱུང་པ། སྐྱེའི་གཡས་གཡོན་དུ་རྩེ་གསུམ་དང་ཐོད་པ་བཞག་པའོ།།

༥༣) འྲིལ་བུ་པ།

འྲིལ་བུ་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཆ་ལུགས་ཅན། སྐྱེལ་རུས་རྒྱན་དང་སྟག་ལྷགས་ཀྱི་ཤི་ཐབས་དང་རལ་པའི་ཐོར་རྒྱལས་སོར་ཡོད་པ་སྐྱུ་མདོག་སྡོ་བསངས། རོ་རྩེ་དང་འྲིལ་བུ་འཛིན་པ་༥ ཡུམ་ལ་འབྱུང་པ་༧ ཡུམ་ནི་རོ་རྩེ་རྣལ་འབྱོར་མ་དངོས་སྐྱུ་མདོག་དམར་མོ་གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པ། དེ་ཡང་གཉིས་ཀ་ནམ་མཁའ་ལ་འཕུར་ཐབས་སམ་ཡང་ན་བདེ་མཚོག་ལྷན་སྐྱེས་བཞིན་གཡས་བརྒྱུད་གཡོན་བསྐྱུམ་གང་བྱས་ཀྱང་རུང་སྟེ། རམ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པ་མཚོན་བྱེད་སྤྱིན་གསེབ་དུ་བཞུགས་པ་གྲིས།

-
- 1 'དང' ཞེས་པ་མ་དཔེར་མེད། - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'ཡུམ་གྱི་གཡོན་ནས' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'འདྲིར་སྤྱན་རས་གཟིགས་སྐྱུ་མདོག་དམར་མོ་རོ་རྩེ་ཚོས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་བྱས་ཀྱང་རུང་མོད། སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་དབང་ཕྱུག་ཚོར་བའི་འབྲུལ་གཞི་ལ་ཐོད་པ་དང་རྩེ་གསུམ་དགོས་པའི་འབྱུང་པར་གང་ཡང་མེད་དོ།།
 - 4 'སྐྱེལ་རུས་རྒྱན་ཉིད་རྣལ་འབྱོར' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'སྐྱུ་ལུས་མི་གཤམ་སྡོ་བསངས་པ།' - ཤོག ༤/བ. 406. དེ་ཉིད།
 - 6 'འཛིན་པས' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'འབྱུང་པ་ལ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།

(དེའི་)འོག་སྤྱོད་ས་ཀྱི་ས་ནས་མཚོ་ལུང་པས་ཡོང་བྱིང་གི་སྤྱིང་ཙམ་
 སྤེལ་ས་པ་³(སྤྱིང་ཙམ་རྒྱལ་པ་)མཚོ་དགྱིལ་ནས་⁴ (སྤྱི་ན་རས་གཟིགས)
 ཁས་རུལ་འཛིན་སྤྱིང་ཙམ་ཐོན་པ་གྱིས།⁵

༥༣) རྫོགས།

རྫོགས་པ་⁶[ཡོགས་པ་] ཅི་རྒྱལ་འབྲོར་པ་[ལུས་]གཅེར་བུ། འཁར་པ་ཐོགས་
 པ་⁷ ཡོ་བྱང་རྣམས་སྤྱོད་བྱུག་(འཁར་པའི་)ཅེ་ལ་བརྒྱུན་ནས་སྤྱོད་
 པར་⁸ཐོགས་པའི་ཚུལ་⁹དུ་འབྲི་དགོས།

༥༤) ཅུལ་གྱིས།

ཅུལ་གྱིས་ (=ཅུལ་གྱིས་) ཅི་རྒྱལ་འབྲོར་པའི་ཆ་བྱང་ཅན་རི་བྲགས་ཀྱི་

-
- 1 'འོག་སྤྱོད་ས་མཚོ་ལུང་པས་' - འོག་ ལ/ན. 407. དེ་ཉིད།
 - 2 'འོག་སྤྱོད་ས་མཚོ་ལུང་པས་' - འོག་ ལ/ན. 407. དེ་ཉིད།
 - 3 'བསྐྱེད་པ་དང་།' - འོག་ ལ/ན. དེ་ཉིད།
 - 4 'མཚོ་དགྱིལ་ནས་ཁས་རུལ་འཛིན་' - འོག་ ལ/ན. དེ་ཉིད།
 - 5 'འབྲི།' - འོག་ དེ་ཉིད།
 - 6 བྱང་དཔེ་མང་ཆེ་བར་ 'ཆོ་བ་སྤྱོད་ཡང་། རྒྱུ་རུ་བུ་འཛིན་ 'ཡོགས་' ལུ་ཁ་ནས་བརྗོད་
 རྒྱུ་ 'ཆོ་བ་' རྩེར་རྒྱལ་། སྤྱོད་པར་མཛོམ་ཞིང་། རྒྱུ་ཁར་པའི་སྤྱོད་ལུ་ 'ཡོགས་'
 ལུ་ 'ཆོ་བ་' སྤྱོད་ཡོད་ རྩེར་ཟེ།
 - 7 'ཐོགས་པའི་' - འོག་ ལ/ན. དེ་ཉིད།
 - 8 'རྒྱུན་ཅིང་སྤྱོད་པས་' - འོག་ ལ/ན. དེ་ཉིད།
 - 9 'ཐོགས་པ་ཞིག་འབྲི།' - འོག་ ལ/ན. དེ་ཉིད།

པགས་པའི་གདན་བདིང་ཞིང་། ལ་ཏ་ལྷས་སུ་བཅུག་ནས་ཉལ་བ། མདུན་དུ་
ཕྱོམ་གྱིང་བཅུགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་བྱིས་།།

༥༥) ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྷ་།

ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་ [ལོ་རྒྱུ་རྒྱུ་] རི་སྐྱད་ལ་གྱིང་ལོ་རྒྱུ་གཡོགས་³ཅན། དབུ་སྐྱ་
བཅོས་⁴བྲགས། རྩི་བཅུགས་⁵དྲེ། བྱ་གཤོར་བའི་རྣམ་པ་ཅན་བྱའོ།།

༥༦) ལུ་ཅི་གསུ།

ལུ་ཅི་གསུ་ནི་བྲམ་ཟེའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ་⁶སྐྱ་དང་ཁ་སྐྱ་རྣམས་འཇབ་ཅི་ས་
བརྟོགས་པས་⁷ཟེད་ཟེད་པ་ཞིག་⁸བྱིས།།

1 'མདུན་དུ་བཅོམ་གྱིང་བསྐྱར་བའོ།།'
 2 'གུ་རུ་ཏ་པ' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 3 'གྱིང་ལོ་རྒྱུ་གོས་ཅན།' - ཤོག ༧/ན./ན. དེ་ཉིད།
 4 'དབུ་སྐྱ་ཅོ་བྲིག' - ཤོག ༧/ན. 407. དེ་ཉིད།
 5 'རྩིང་ཅུག་དྲེ' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
 6 'ཅན་ལས' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
 7 'བརྟོགས་པའི' - ཤོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
 8 'པ་ཅིག' - ཤོག དེ་ཉིད།

༥༧) རྒྱུ་ལྷ་པོ།

རྒྱུ་ལྷ་པོ་ནི་མལ་ཁྲིལ་རྒྱུ་བརྟེན་²པའམ་བསྟེན་ནས་ཟས་ཟ་བ།
མདུན་དུ་རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཞིག་ཡིད་³པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱིས།

༥༨) རེ་བུ་ལྷ་པོ།

རེ་བུ་ལྷ་པོ་ནི་ཕྱག་ན་ཉིང་⁴གསལ་བ་སྐྱམས་པ་གཏོར་མ་སྐྱ་ཚོགས་པ་
གཏོང་⁵བའི་རྣམ་པ་ཅན། འཁོར་སློབ་མ་རྗེ་རྗེ་བརྟུང་བ་དང་། སྲིང་བུ་འབྱུང་
པ་དང་། བསོལ་སྟོན་འཁོལ་⁶བ་དང་། དེ་སྦྱང་བརྟུང་བ་སོགས་འབྲི་དགོས།

༥༩) བཅའ་ལྷ་པོ།

བཅའ་ལྷ་པོ་ནི་རྒྱལ་འབྱོར་པ་གིང་དུང་ཞིག་ན་འདུག་པ། དུ་སྐྱ་བྱུང་བ་⁸

-
- 1 'ནི་རྒྱུ་ལྷ་པོ' - ཤོག ལ/བ. 408. དེ་ཉིད།
 - 2 'མལ་ཁྲིལ་རྒྱུ་བརྟེན་ནས་' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'པ་ཅིག་ཡིད་པ།' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།
 - 4 'ཉིང་ཐག' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'བརྟུང་བའི' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'སྐྱེལ་པ' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'བཅའ་ལྷ་པོ' ཞེས་བོད་དཔེ་མང་པོར་འདུག་མོད། དེ་ནི་ཡུལ་སྐད་ཀྱི་དབང་གིས་ 'ག' 'བ' ཟུ་སོང་བར་མངོན་ལ། 'བཅའི' ཞེས་པའི་དོན་ནི་ 'གཙོ་རི', ཡིན་པར་སྐད་ཞིང་སྐྱུ་མ་འཁྲུང་བྱེད་པ་ཞིག་གོ།
 - 8 'སྐྱ་བྱེགས་པ' - ཤོག ལ/བ. དེ་ཉིད།

ན་བཟའ་ཀའུལ་། གུ་བ་འདོམས་དགྲིས་ཙམ་ལས་མེད་²ལ། (ཀའུ་རི་ཞེས་པའི་
 ལྷུ་མ་)འཁྲུང་ཕྱིད་ཙམ་ཟ་བ། (དེའི་)མདུན་དུ་སྐྱེན་རས་གཟིགས་སམ་དེའི་
 སྐྱུལ་པ་དག་སྦྱོང་³ཞིག་གིས།

༤༠) ཙམ་པ་ཀའུ

ཙམ་པ་ཀའུ་ནི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཙམ་སྦྱིད་མོས་ཚལ་གྱི་དབུས་ན་བཞུང་
 པ། མཐའ་རྣམས་ཤིང་ཙམ་པ་⁴ཀ་སྟེ་ཡལ་ག་རྣམས་ལྷུ་མ་པོར་སྦྱིས་པ། ལོ་མ་
 ལྷང་ནག་མེ་དོག་སེར་སྐྱ་ཡོད་⁵པས་བསྐྱར་བའི་རྣམ་པ་ཙམ་གྱིས།

༤༡) སྦྱིལ་ལྷུ་⁶

སྦྱིལ་ལྷུ་(སྦྱིལ་ལྷུ་)ནི་ཕུག་ན་ཀུ་བའི་སྦོད་བསྐྱམས་པ། དེའི་མདུན་ན་
 རྒྱུ་མ་⁷ཞིག་ཞི་བའི་རྣམ་པ་ཙམ་སྦྱིལ་བའོལ་བ་རུས་རྒྱན་⁸ཡོད་ཙམ་ཚོས་སྦོན་

1 'གོས་ཀྱང་ཀའུལ་ལས་གོན་རྒྱ་མེད་པ།' ལྷུ་མ་རྣམས་ཤོག ༡༡ - 232 དེ་ལོ་སྦོག།
 2 'མ་དཔེར་' རྣམ་ཟ་ཀའུ་རི་གུ་བ་འདོམས་གྲིས་སྐྱུ་གསུམ་པ་གཟིག་ལས་མེད་པ། ཞེས་ཀའུ་རི་ཞེས་པ་
 དེ་ན་བཟའ་ཁྱད་ཚོས་སྐྱུ་གསུམ་འདུག་ཀྱང་། དེ་ནི་འཁྲུང་བའི་མིང་ངམ་ཁྱད་ཚོས་ཡིན་པར་སྦྱང་ངོ་།
 3 'དག་སྦོང་ཡོད་པ་ཅིག་འབྲི' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
 4 'ཙམ་ཀ' - ཤོག ༧/བ. 408. དེ་ཉིད།
 5 'པས་བསྐྱར་བའི་རྣམ་ཙམ་གྱིས་' ཞེས་པ་མ་དཔེར་མེད། ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
 6 'སྦྱིལ་ལྷུ་' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད། འདིར་སྦྱིལ་ལྷུ་ཞེས་པ་ཡུལ་རྒྱུ་ཕྱི་བྲག་པ་ཡིན་རུང་།
 དོན་ནི་ - དྲིད་ཏེ་སོ་གཉིས་པ་བྱ་བ་ཡིན།
 7 'རྒྱུ་མ' - ཤོག ༡༣༣ 242. རྣམ་དེ་ — སྦོག་སྦོག།
 8 'རུས་བརྒྱན་' - ཤོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

པའི་རྣམ་པ་ཅན། གྲུབ་ཐོབ་དེས་རང་གི་སོ་བདོན་རྣམས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་འབྲུལ་
བའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་འབྱོལ།

༤༢) རྫིལི་པ།²

རྫིལི་པུ་ནི་མར་ནག་(སྐྱུ་མ་ནག་)གི་སྣོད་མང་པོ་བཤམ་རྣམས་འཚོང་བའི་
རྒྱལ་ཅན་ལ། མདུན་དུ་པརྫིང་ཞིག་⁴གིས་ཚོས་སྣོན་པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱིས།

༤༣) ཀུམ་གླུ་རི་པ།

ཀུམ་གླུ་རི་པུ་ནི་རྩ་⁶མཁར་གྱི་རྣམ་པ་ཅན་ལ། རྩ་བཟོ་བ་བྱུང་མེད་དང་
བཅས་པ་གྱིས།

༤༤) ཅཔ་རི་པ།⁸

ཅཔ་རི་པུ་ནི་ན་བཟའ་མེའལེ་གསོལ་པ་ (མེའལེ་ནི་རྒྱལ་⁹གཟན་འབྲ)

-
- 1 'འབྲུལ་བ།' - བོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'རྫིལི་པ' - བོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'རྒྱལ་དང་།' - བོག ༤/ན. 499. དེ་ཉིད།
 - 4 'མརྫིང་ཅིག་གི' - བོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 5 'རྩ་བ་རི་པ' - བོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 6 'སྐྱུ་མཁར' - བོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 7 'རྣམ་པ།' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 8 'ཅན་རི་པ' - བོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 9 'རྒྱལ་གཟན' - བོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

བ་འཁྲིག་གི་དགྲིལ་ནས་མགོ་འདོན་ས་ཡོད་པ་²ཕྱིད་ཕྱིད་མདུན་ཚུབ་གྱི་གོས་
 ཡིན་པ་ལ་སྐྱོ་³རྟ་འཆིང་གྱི་ཡོད་པ་ཞིག་གོ། ཤིང་དུང་ཞིག་⁴དུ་ཕྱོད་གཅིག་ན་
 མི་བདང་ཞིང་དུད་པ་འཕུལ་⁵པ། ཕྱོགས་གཅིག་ན་བཅུད་ལེན་གྱི་⁶ ལྷོད་ཡོད་
 པ། མི་རྣམས་ལ་བཅུད་ལེན་དེ་ནས་ཤིང་ལོ་གཅིག་གིས་འཕྲོར་རྒྱལ་བྱེད་པ།
 མདུན་དུ་བྱུང་མེད་ཞིག་དང་བྱིས་པ་ཞིག་⁷ཐལ་མོ་སྐྱར་ནས་⁸འདུག་པ། དེའི་
 རྗེས་སུ་མི་མང་པོ་ར་མདའ་⁹བའི་རྒྱལ་གྱིས་ཡོང་བཞིན་པ། དེའི་ལྷག་¹⁰ ཅམ་
 ན་བྲག་ཕྱག་ཅིག་ན་དབུས་སུ་ལྷ་གཅིག་། །གཡས་སུ་ལྷ་རྒྱ་རྒྱུང་བ་གཅིག་གཡོན་དུ་
 ལྷ་མོ་གཅིག་བཅས་གསུམ་ཀ་གདན་གཅིག་ལ་བཞུད་པ་བཅས་བྱིས།¹²།

1 'འདྲ་བའི' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 2 'པ་ལ' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 3 'སྐྱོ་རགས་བཅིངས་པའོ།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 4 'གཅིག་དུ' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 5 'ཕུལ་བ' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 6 'ལེན་གྱི' - འོག ༤/ན. 409. དེ་ཉིད།
 7 'མདུན་དུ་བྱུང་མེད་དང་བྱིས་པ་གཅིག་ཐལ་མོ་སྐྱར་བ།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 8 'མདུན་དུ་བྱུང་མེད་དང་བྱིས་པ་གཅིག་ཐལ་མོ་སྐྱར་བ།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 9 'རམ་འདའ་བའི་རྒྱལ་གྱི་ཡོང་བ།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 10 'ལྷག་ཅམ' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 11 'དབུས་དང་ལྷན་གཅིག་དང་།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 12 'ལྷ་མོ་གཅིག་རྣམས་གདན་གཅིག་ལ་སུམ་སྐྱིགས་སུ་བཞུགས་པ་འབྲི།' - འོག ༤/ན. དེ་ཉིད།

༤༥) རྣལ་འབྱོར་མ་མཆི་སྒྲུ།

རྣལ་འབྱོར་མ་མཆི་སྒྲུ་ནི་བྱང་མེད་རྒྱན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་། བརྒྱན་པ་རྣམ་མཁའ་
ལ་འཕྱར་བའི་རྣམ་པ་²ཅན། འོག་གི་ས་གཞི་ལ་ཚུ་བུམ་ཆག་པ་གཅིག་འབྲིའོ།།

༤༦) རྣལ་འབྱོར་མ་མཁའ་ལི་ཤ།⁴

རྣལ་འབྱོར་མ་མཁའ་ལི་ཤ་ནི་གཅེར་བུ་རྩམ་པའི་རྒྱན་ཅན་མཆོད་ཁྲུང་དུ་
ཁྲུའི་ག་བརྒྱུག་པ། སྐྱོ་བ་ལྡོལ་བ་ཞལ་རྣམས་རལ་གྱི་ཕྱུང་ས་པ་ཕྱུག་གཡས་པས་
འཛིན་པའི་ཚུལ་ཅན་ལ། ཕྱག་གཡོན་པས་ཐོད་པ་བསྐྱམས་པ་བཅས་གྲིས།

༤༧) རྣལ་འབྱོར་མ་ཀའ་ཁལ་ལྷ།

རྣལ་འབྱོར་མ་ཀའ་ཁལ་ལྷ་(ཀའ་ཀའ་ལི་)ནི་སྦྱིར་རྣལ་འབྱོར་མ་མཁའ་ལི་
དང་འབྲེ་བ་ལ་⁸ཕྱུག་གཡས་རྣ་གྱི་གུག་⁹གཡོན་པས་རང་གི་དབུ་བཅད་དེ་

-
- 1 'ཀྱི་བརྒྱན་པ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'འབྲི།' - ཤོག ༤/ན. དེ་ཉིད།
 - 4 'མཁའ་ལ་པ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'སྐྱོ་གྲོལ་བ' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'ཞལ་ལས་རལ་གྱི་ཕྱུང་བ་ཕྱུག་གཡས་པས་འཛིན་ཚུལ།' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 7) 'ཀའ་ཁལ་ལང' དེ་ཡང་འབྲེ་བ་ལ།- ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 8) 'ཀའ་ཁལ་ལང' དེ་ཡང་འབྲེ་བ་ལ།- ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 9) 'རལ་གྱི་འམ་གྱི་གུག' - ཤོག ༤/བ. དེ་ཉིད།

བསྐྱམས་པ་འབྲི་བ་ཡིན་པ་ལ། རིག་མཉམ་པའི་རྣམ་ཉོག་གིས་དེ་འབྲེལ་བྱི་
 བར་མི་སྡོམ་ན། སྐྱེ་བའི་དབྱུང་ལ་མཉམ་པའི་བྱིས་མང་རྒྱུ་ལ་འགའ་རིམ་སྤྱད་
 ལ་བཞིན། རྒྱ་གར་གསལ་ལ་ཡང་དབྱུང་ལ་ཅིང་ཕྱག་ན་ཡང་དབྱུང་བའི་བསྐྱམས་
 པ་བྱིས་ཀྱང་མི་འགའ་ལོ། །འདི་གཉིས་ཅུ་རྣམ་མཁའ་ལ་གར་སྐབས་སམ་
 (ཞབས་)བཀྱང་བསྐྱམ་(གྱི་)ཚུལ་དུ་(བཞུགས་པ་)འབྲི་དགོས།

སྤྱི་རྣལ་འབྲུར་མ་འདི་གཉིས་མཇུག་པ་འབྲེལ་བྱས། རབ་བྱུང་བས་
 བཀོད་པའང་འབྲེལ་བས་ཚོག་མོ།

༤༤) ཀལ་ཀལ་སྤྱི་

ཀལ་ཀལ་སྤྱི་ཁ་དོག་སྡོམ་དུ་མཐོང་ན་གནས་པ། དེའི་མདུན་(ཅུང་
 ཟད་)མཐོ་བ་ནས་རྣལ་འབྲུར་པ་རུས་ཐུན་ཅན་གྱིས་ཚོས་གསུང་བའི་རྣམ་པ་
 ཅན་བྱིས།

-
- 1 'བསྐྱམས་པ་འབྲི་བ་ཡིན་པ་ལས།' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 2 'འགའ་ཞིག་མཉམ་པའི་རྣམ་ཉོག་' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 3 'དེ་འབྲེལ་བྱི་བ་མི་སྡོམ་' - བོག ༤/བ. 410. དེ་ཉིད།
 - 4 'ལ་འབྲུང་བ་' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'དབྱུང་ལ་ཅིག་' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'མི་འགའ་' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'རབ་བྱུང་བས་བཀོད་པ་' ཞེས་རྣལ་འབྲུར་མཉམ་པའི་རྒྱུ་ལ་འགའ་རིམ་སྤྱད་པ་ཞེས་པའི་དོན་ཡིན་ནམ་དུས།
 - 8 'མཚོག་མོ།' - བོག ༤/བ. དེ་ཉིད།

༤༩) ཀུན་ལེས།

ཀུན་ལེས་ནི་།གོས་འཛེམ་པའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ་མདུན་དུ་མཁའ་འགྲོ་
མ་ཞིག་ཡགོས་ཚེས་སྟོན་པའི་རྣམ་པ་འབྱེད།

༥༠) རྟུལ་ལེས།³

རྟུལ་ལེས་ནི་ཅུ་ཐམས་འཚོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་གྱེད།

༥༡) ཇུཏ་ལེས།

ཇུཏ་ལེས་ནི་མགོ་ལ་ཐོད་བཅིངས་⁴པ་ལུས་ལ་ཅོ་ལ་སྟེ་གོས་ཕུ་ཐུང་⁵
ཅན་གྱོན་པ། རིན་པོ་ཚོའི་རྒྱན་ཐོར་ཡོད་པ། ཁ་སྤུ་བཟང་པོ་ཅན་ཞིག་རྣམ་
མཁའ་ལ་བལྟ་བ། རྣམ་མཁའ་ལ་སྤྲིན་ཁ་དོག་སྣ་ལྔ་པ་ལ་སྲང་པོ་དང་། ཐུང་
པ་ལ་སོགས་པའི་སྟོག་ཆགས་ཚོགས་པ་འདྲ་བའི་དབྱིབས་⁶ཅན་ཡོད་པ། དེ་
དང་ཉེ་བར་ངང་པ་དངོས་གཉིས་འཕུར་བ། དེའི་མདུན་ན་རྣལ་འབྱོར་པ་གིང་
ལོ་ཐོགས་⁷པ་ཞིག་ཡོད་པའོ།

1 'ཀུན་ལེས་ཡང་གོས་ཚེས་བྱེད་པ' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
2 'གཅིག་གིས' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
3 'རྟུལ་ལེས' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
4 'ཅུ་ཐམས་འོག' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
5 'བཅིང་གིང' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
6 'ཕུད་ཐུང' - ༩/ན. དེ་ཉིད།
7 'འདྲ་ཕུང་གི་དབྱིབས་ཅན' - འོག ༩ ན དེ་ཉིད། 'ཐོགས་པ' - འོག ༩/ན. དེ་ཉིད།

༢༣) ཀུལྲུལྲུ།

ཀུལྲུལྲུ་ནི་རྒྱ་མདོག་ནག་པོ་དུ་ར་ཁྲོད་ན་བུད་མེད་གྱི་རོ་ཞིག་ཡོད་པའི་
ཕྱོད་པ་བཀོག་འཕྲི་ཕྱག་ན་བཟུམས་པ། ལྲུས་ལ་རུས་རྒྱན་ཆ་ཚང་བ་ཡོད་པའི་²
རྣམ་པ་ཅན་དུ་འགྱུར།

༢༣) ཀེར་ལྲུལྲུ།³

ཀེར་ལྲུལྲུ་ནི་ཁ་དོག་བཟང་པོ་⁴ཁྲོ་ཉམས་ཅན། མགོ་ལ་ཚོད་པ⁵
ཞེས་བྱ་བ་དབུས་དང་ཕྱོགས་བཞི་སྟེ་ཅེ་མོ་ལྡོ་ཡོད་པ། རིན་པོ་ཆེའི་དོག་ཅན་རྒྱ་
མཚམས་ལ་དཔའ་བོའི་དར་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་གསེར་གྱི་འཕྲུང་མོ་ལས་རྣ་བའི་
ལྷག་གཡས་གཡོན་ནས་མར་⁶འཕྲང་བ། རལ་གྱི་དང་སྤུབ་འཆང་⁷བ་ཁྲི་ལ་
བཞུགས་⁸པའི་རྣམ་པ་ཅན་གྱིས།

1 'བྲིགས་ཏེ།' - འོག ༧/ན. 401. དེ་ཉིད།
2 'ཡོད་པ།' - འོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
3 'ཀེར་བ་ལ་བ' - འོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
4 'བཟང་བ' - འོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
5 'ཚོད་པན' - འོག ༧/ན. དེ་ཉིད།
6 'ནས་མར་དར་དབྱངས་ཕྲང་བ' - འོག ༧/བ./བ. 412. དེ་ཉིད།
7 'འཕྲང་བ' - འོག ༧/བ. དེ་ཉིད།
8 'བཞུགས་པ' - འོག ༧/བ. དེ་ཉིད།

༧༥) སྤྲུག་རྒྱུ།

སྤྲུག་རྒྱུ་ནི་དགོ་སྤོང་གི་རྣམ་པ་ཅན་མདུན་ན་འཕུ་པ་སྤྲུག་རྒྱུ་
གཟེགས་བཞེངས་པའི་²རྒྱུ་དུ་བཞུགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་བཅས་གྲིས།

༧༦) སའབྱུང་ལྡན།

སའབྱུང་ལྡན་ནི་རྫོང་ཆེན་པོ་ཞིག་དུ་ཁ་ཟས་བཟང་ངན་རྣམ་པ་ལྡོ་ཚོགས་
པ་སྤྲུགས་ཏེ་མདུན་དུ་བཞག་ནས་ཟ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་གྲིས།³

༧༧) རྣམ་པོ་རྣམས།⁴

རྣམ་པོ་རྣམས་ནི་དགོ་སྤོང་གི་རྣམ་པ་ཅན་[ལྷུག་གཉིས་]མཉམ་བཞག་མཛད་
པ། དེའི་ཕྱོགས་གཅིག་ན་བྲག་ལྷུག་ཅིག་གི་ནང་ན་དགོ་སྤོང་མགོ་ལ་རི་དྲུགས་ཀྱི་
རྩ་སྐྱེས་ཡོད་པའི་⁵རྣམ་པ་ཅན་ཞིག་གྲིས།⁶

1 'ས་ཀ་ར་པ' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།
 2 'བཞེངས་པ་གཅིག' - ཤོག ༩/ན. དེ་ཉིད།
 3 'མདུན་ལ་རྫོང་ཆེན་པོ་གཅིག་ཀྱི་ཁ་ཟས་བཟང་ངན་རྣམ་པ་ལྡོ་ཚོགས་སྤྲུག་ཏེ་ཟ་བ།' - ཤོག
 ༩/བ. དེ་ཉིད།
 4 'ན་ག་རྫོ་རྣམས་' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།
 5 'སྐྱེས་པའི' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།
 6 'ཅན་གཅིག་འབྲི' - ཤོག ༩/བ. དེ་ཉིད།

༧༧) དྲཱིགྲཱི།

དྲཱིགྲཱི་མི་(ལུས་ལ་)རྩམ་རྒྱན་(ཚ་ཚངས་པ། ཟུག་ན་)དེ་རྗེ་རྩིལ་ཕྱི་
བརྒྱུངས་ཅན་སྐྱུ་མཁའ་ལ་གཤེགས་པ། འཁོར་བུད་མེད་མང་པོ་ཡང་ནམ་
མཁའ་ལ་འཕུར་དེ་འགྲོ་བ། (དེའི་)འོག་ཕྱོགས་གྱི་ས་གཞི་ལ་གྲོང་བྱིར་(དང་
དེ) ཉམ་མི་རྣམས་སློབ་དཔོན་ལ་བལྟ་བ་དང་། རྩོམ་ཞིག་གི་ཚེ་ན་རྩོམ་ལྷང་
པོ་ཆེ་ཡོད་པ་³བཅས་འབྲི་དགོས།

༧༨) ཕུཏེལིལྷ།⁴

ཕུཏེལིལྷ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་དབྱེས་རྩོམ་གྱི་ཐང་ཀ་ཐོགས་པ་ཞིག་གླེ།
དེའི་མདུན་ན་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་གྱི་མི་ཞིག་དེ་ལ་གཏམ་སྒྲུབ་པའི་ཚུལ་དུ་
འདུག་པ་བཅས་འབྲི་དགོས།⁵

༧༩) པནཏེལྷ།⁶

པནཏེལྷ་ནི་ལྷམ་ཡུ་བ་ཅན་⁷གཡེར་ཀ་སོགས་རྒྱན་མང་པོ་བཏགས་པ་
གྲོན་ནས་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་⁸ཅན་ཞིག་གིས། །

1 'རྩོམ་པ' - བོག ༩/བ. དེ་ཉིད།
2 'བརྒྱུངས་' - བོག ༩/བ. དེ་ཉིད།
3 'ཡོལ་འབྲི' - བོག ༡༠/ན. 413. དེ་ཉིད།
4 'ཕུར་ལིལ' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
5 དབྱེས་རྩོམ་གྱི་ཐང་ཀ་དགོས། དེའི་མདུན་གྱི་ཕྱོགས་ན་རྒྱལ་པོའི་ཆ་བྱད་ཅན་གྱི་གཏམ་སྒྲུབ་པའི་ཚུལ། བོག
༡༠/ན. དེ་ཉིད།
6 'པནཏེལ' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
7 'ལྷམ་ཡུ་བཅད་པ' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
8 'རྣམ་པ་འབྲི' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

༤༠) ཀོ་ཀེ་ལུ་ཡ།

ཀོ་ཀེ་ལུ་ཀི་རྒྱལ་པོའི་རྣམ་པ་ཅན་²སྤྱིད་མོས་ཚལ་འབྲས་བུ་ཅན་གྱི་
 ཤིང་གིས་³གང་བའི་དབུས་སུ་བཞུགས་པ།⁴ གཞོན་ཀུ་མ་མང་⁵པོས་སྤྱུ་དང་
 གར་དང་ཁྲུས་གསོལ་བའི་རྣམ་པ་ཅན། ཤིང་རྣམས་ལ་བྱ་ཀོ་ཀེ་ལ་⁶སྤྱེ་ཁ་བྱུག་
 རྒྱལ་པོ་མང་པོ་ཡོད་པ། མདུན་དུ་དགོ་སྤོང་ཞིག་གཏམ་⁷སྤྱེ་བའི་རྒྱལ་དུ་ཡོད་
 པ་བཅས་བྲིས།

༤༡) ཨའྲི་གེ་ལ།

ཨའྲི་གེ་ཀི་རྩ་བྱིམ་ཞིག་ན་གནས་པ་གཟུགས་མཛེས་པ། མདུན་དུ་
 དགོ་སྤོང་ཤིན་དུ་མཚར་བ་ཞིག་བསོད་སྤྲོམས་མཛེད་པའི་རྒྱལ་དུ་བྲིས་ཀྱང་།

-
- 1 'ཀོ་ལོ་ལི་ལ་པ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 2 'རྣམ་པ།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 3 'གི་གང་བ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 4 'སུ་ཡོད་པ།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 5 'གཞོན་ཀུ་མང་པོ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 6 'ཀོ་ལེ་ལ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 7 'དགོ་སྤོང་གཅིག་དང་གཏམ་སྤྱེ་བ་འབྲི།' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 8 'ཨའྲི་གེ་ལ' - ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 9 གཟུགས་མཛེས་པ་གཅིག་གི་མདུན་དུ་དགོ་སྤོང་ཤིན་དུ་མཚར་བ་བསོད་སྤྲོམས་མཛེད་པ་འབྲི།
 ཤོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

༤༩) རྣལ་འབྱོར་མ་ལཱེཀླར།

རྣལ་འབྱོར་མ་ལཱེཀླར་(ལཱེཀླར་)ནི་དུས་ཁྲོད་ན་²བཞུགས་པ་སྐྱ་བཞོལ་བ་³
གྲི་གུག་དང་ཐོད་པ་དང་། ཁྲུའི་ག་བསྐྱམས་གིང་རུས་རྒྱན་⁴གྲིས་བརྒྱན་པ། ཡང་
ན་སྐྱོན་ཐབས་སུ་⁵གྲིས་པའང་ཡོད།

༤༩) སམུདྲུལ།

སམུདྲུལ་ནི་(རྣལ་འབྱོར་པ་)རྒྱ་མཚོ་དང་སྡོང་གི་བར་⁶ནས་[བྲུ་ལ་
ཞུགས་ནས་]འབྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་། རས་ཀྱི་ཐོད་བཅིངས་པམ། མདུན་ན་གྲུབ་
ཐོབ་ཨུའི་རྣམ་པ་གཅེར་བུ་རལ་པ་དང་བཅས་པས་ཚོས་སྐྱོན་པའི་རྒྱལ་དུ་བཞུགས་
པ་བཅས་གྲིས།

1 'ལཱེཀླར་' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད། ལཱེཀླར - གི་རྒྱལ་འདི་མ་ལཱེཀླར་
ལཱེཀླར་ ཡིན།

2 'ཁྲོད་བཞུགས་པ་' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

3 'སྐྱ་བཞོལ་བ་' - བོག དེ་ཉིད།

4 'རུས་རྒྱན་ཅན་མ།' - བོག ༡༠/ན. 413. དེ་ཉིད།

5 'སྐྱོན་ཐབས་འབྲི་པའང་' - བོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།

6 'རྒྱ་མཚོ་སྡོང་བར་སྐྱེད་ནས་འབྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ།' - བོག ༡༠/བ. 414. དེ་ཉིད།

7 'རྒྱ་མཚོ་སྡོང་བར་སྐྱེད་ནས་འབྲོ་བའི་རྣམ་པ་ཅན་ལ།' - བོག ༡༠/བ. 414. དེ་ཉིད།

8 'ཁོ་རང་རས་ཀྱི་ཐོད་ཅན།' - བོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

9 'རལ་པ་ཅན་གཅིག་གིས་ཚོས་སྐྱོན་པ།' - བོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།

༤༯) བུ་ལི་སྤྲ།

བུ་ལི་སྤྲ་ནི་བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱང་ཅན་འཇུན་དུ་གཞིང་པ་དང་བུ་མ་པ་
དངུལ་ཚུ་གྲུབ་པའི་བརྒྱན་ལེན་གྱིས་གང་བ། ལུགས་མང་པོ་གསེར་དུ་བརྒྱུར་
བའི་ཚུལ་ཅན། ཁོང་རང་གི་གཡོན་ཕྱོགས་སུ་ཚུང་མ་བུ་དང་བུ་མོ་དང་མནལ་
མ་དང་རྟ་(ཚོང་མ་)གཅིག་བཅས་³འབྲི་དགོས།

དེའི་ཕྱོགས་གང་རུང་ཞིག་དུ་མཚོའི་དགྲིལ་ན་བྲག་རི་གྲུ་བཞི་པ་ཅེ་ན་
ཁང་བཟང་དང་⁴བཅས་པ་འབྲིའོ།

དེ་ལྟར་ན་གྲུབ་ཐོབ་ཆེན་པོ་བརྒྱན་ཅུ་ཅཱ་⁵བཞིའི་བྲི་ཡིག་སོ་སོའི་རྣམ་
ཐར་དང་མཐུན་པའི་སྐར་བ་འདི་ནི། ཇི་བཅུན་ཆེན་པོ་སྤྲོལ་བའི་མགོན་པོའི་
བཞིན་པ་ཇི་ལྟ་བུའི་རང་རྟོག་གིས་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་བསྐྱེད་⁸པར་བཞོད་པའོ།

འབྲི་ཡིག་ཇོགས་སོ།། །

-
- 1 'ཁོ་རང་དང་བྲམ་ཟེའི་ཆ་བྱང་དུ་འབྲི' - འོག ༡༠/ན. དེ་ཉིད།
 - 2 'ཁོ་རང་བྲམ་ཟེའི་ཞེས་སོགས་འདིར་འདུག་ཀྱང་། ཆེག་སྤྱོར་མི་ལགས་པས་དང་པོར་བྲིས་པའོ།
 - 3 'རྟ་གཅིག་རྣམས་འབྲི།' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 4 'ཞིག་དུ' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 5 'བརྒྱན་བཅུ' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 6 'འཐུན་པར' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 7 'རང་རྟོགས་གི' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 8 'ལ་སྐྱེད་པ' - འོག ༡༠/བ. དེ་ཉིད།
 - 9 'འབྲི་ཡིག' སོགས་མ་དཔེར་མེད།

སློབ་ཚིག་

ཨི་མ་གྲུལ་བའི་ཞལ་སྐྱིན་མད་བྱང་བ།

འཕགས་མཚོག་དེ་རྟུཀ་དཔལ་ཆེ་བའི་མཚོག།

སྐྱ་ཡི་གར་།གང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཚུལ།

གདུལ་བྱའི་དཔལ་མགོན་དེ་དག་ངོ་མཚར་ཆེ། ༡ །

གང་གི་སྐྱ་བརྟེན་༢འབྲི་ཚུལ་ནོར་འབྲུལ་ལྷག་ཆད་སྐྱོན།

སྤངས་༣པ་འདི་ཉིད་འཕགས་ཡུལ་གདམ་ལ་རྟོག་གོམས་༤གྱུར།

མཁས་པའི་མཁས་མཚོག་དེ་ཡི་གསུང་གི་མཐུ་དཔལ་ལས།

སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་འོད་གསལ་བཞིད་གང་འདིར་གསལ་བྱས། ༣ །

གང་ཞིག་གྲུབ་མཚོག་སློབ་དཔོན་ཆེ་འདི་རྣམས་ཀྱི་སྐྱ།

འབྲི་སེམས་བྲིས་༥པ་དེ་མཐོང་དགའ་སེམས་སྐྱེ་བ་ཀུན།

བྱང་ཆེན་ཉེ་ལམ་མཚོག་བརྟེས་སློབ་དཔོན་དེ་དག་བཞིན།

རྗེ་ཇི་སེམས་པའི་གོ་འཕང་ཡོངས་སུ་ཐོབ་པར་ངངས། ༣ །

1 'སྐྱ་ཡི་གར་གང' - བོག ༡༠/བ. - ༡༡/ན. 414 - 415. དེ་ཉིད།
 2 'སྐྱ་བརྟེན' - བོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
 3 'སྤངས་པ' - བོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
 4 'རྟོག་གོམས་གྱུར' - བོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
 5 'འབྲི་སེམས་འབྲི་བ' - བོག ༡/ན. དེ་ཉིད།
 6) 'ཡོངས་སུ་སྐྱེད་པར་ངངས།' - བོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།

གཞན་ཡང་མཚམས་མེད་སྲོད་དང་ཉི་མ་རེ་རེ་བཞིན།
 བྲམ་བེ་གསོད་ཀྱང་སྟོབས་བཞི་ཡོངས་སུ་ཚང་གྱུར་པས།
 གཉེན་པོ་ཀུན་སྲོད་ཕྲགས་ལྡན་འདི་ལ་འབད་པ་ན།
 སྐྱབ་པའི་ཕྱང་པོ་མ་ལུས་འདག་ལ་སོམ་ཉི་ཅུ། ། །

ལས་བཞི་ལྟ་སྤངས་གྲུབ་ཆེན་བརྒྱན་ཀྱང་འདིས་ཐོབ་ལ།
 ཕྱག་རྒྱ་ཆེ་མཚོག་གཉེར་ཡང་དེར་བཞོད་གྲུབ་ཆེན་ཏེ་༥།
 དེས་ན་ཡི་ཤེས་གྲུབ་པའི་མཚོག་གྱུར་འདི་དག་རྣམས།
 རང་གི་རྩ་བའི་སྒྲིམ་འི་སྐྱུ་འཕུལ་ཡོངས་ཤེས་པས། ། །

རྣ་བར་ཉེན་དང་གྲི་མཚོད་ལས་ལ་བརྩོན་པ་ཡི།
 བག་ཆར་ཁྱོད་ལ་བཞག་པས་རྣམ་ཀུན་དགེ་བའི་འབྲས།
 ལྷུར་སྟེར་དེ་ཕྱིར་འདི་ལ་བདག་སོ་དགའ་བ་སྦྱིས།
 སོ་ལྡན་རྣམས་ཀྱང་འདི་ལ་སྲོད་པར་གྱིས་ཤིག་ཀྱ། ། །

རབ་དཀར་ལྷག་བསམ་དག་པས་འབད་པ་ཡིས།
 རབ་གྲུབ་མཚོག་སྐྱའི་སྤང་བརྟན་འཕྲི་བའི་ཐབས།

1 ‘འཚམས་མེད་’ - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
 2 ‘ཆེན་སྟེ’ - ཤོག ༡༡/ན. དེ་ཉིད།
 3 ‘རྣམས་པར་ཉེན་’ - ཤོག ༡༡/བ. 416. དེ་ཉིད།
 4 ‘སྤང་བརྟན་’ - ཤོག ༡༡/བ. 416. དེ་ཉིད།

རབ་དུ་གསལ་དག་འདི་བགྱིས་མཐུས་བདག་སོགས།།

རབ་མཚོག་དོ་རྗེ་སེམས་པ་ལྟུང་ཐོབ་ཤོག། ལ །།

ཅེས་གྲུབ་ཐོབ་བརྒྱད་¹ །ཅུ་ཅུ་བཞི་ཡི་ངོས་འཛིན་འབྲུལ་པ་ཅན་སྐྱེ་མ་²

ལྔ་བཅུན་གྱི་རྗེས་སུ་མ་འབྲང་བར་གྲུབ་ཐོབ་སོ་སོའི་སྐྱུབ་³ཐབས་དང་། དབང་

ཚོག་⁴དོན་རྗེས་སེམས་དང་བཅས་པའི་གཞུང་སློབ་དཔོན་དཔལ་བོ་དོ་རྗེའི་མན་

ངག་⁵མི་ཉམ་ལོ་ལྷོ་བས་བསྐྱུར་བའི་ཚད་ལྡན་དེའི་⁶རྗེས་སུ་འབྲངས། མཁས་

པའི་མཁས་པ་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་ལོ་ནང་སྐྱུལ་སྐྱུ་རྗེ་བཅུན་དོ་རྗེ་འཆང་ཀུན་དགའ་⁷

སྤྱིང་པོའི་བཞེད་པ་ཇི་བཞིན་རྟག་བརྟན་ཐོག་མཚོག་ནི་རྟུག་འི་⁸ལྷ་ཁང་དུ་ལོགས་

བྱིས་སུ་བཞུགས་པ་དང་། དེ་བཞིན་རས་བྱིས་ཀྱང་གཉིས་གསུམ་ཅམ་མཐོང་

ཞིང་། ལྷག་དུ་རྗེ་བཅུན་དམ་པས་མཇེད་པའི་བྱིས་ཡིག་དངོས་མ་ཞིག་ལོ་ནང་

གི་ཕྱག་དར་ཉལ་ཉལ་ཁྲོད་ནས་སྡེ་ཆུང་བོས་ཅུང་ཟད་བྱུང་བ་ཞིག་ཀྱང་རྗེད་པས་

1 'བརྒྱད་བཅུ - ཤོག ༡༡/བ. 416. དེ་ཉིད།

2 'ལྔ་བཅུན' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

3 'བསྐྱུབ་ཐབས' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

4 'དབང་མཚོག' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

5 'མི་ཉམ' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

6 'དེ་ཡི' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

7 'ཀུན་སྤྱིང་པོའི' - ཤོག ༡༡/བ. དེ་ཉིད།

8 'ཅུ་བར་ནི་རྟུག' - ཞེས་བྱིས་པ་འདུག་པས་དེ་བཞིན་བྱིས་པ་ཡིན་ལ། དོན་ནི་'ཉི་རྟུག' - ཞེས་བྱ་བར་སྤང་ངོ་།། ཤོག ༡༣/ན. དེ་ཉིད།

དེ་ཉིད་དཔང་པོར་བྱས། རང་བཅོས་མ་བསྐྱད་པར་གྲུབ་བརྒྱའི་མངོན་པར་རྟོག་
 པ་དག་ཅིང་གསལ་བ་འདི་ནི། མདོ་ཁམས་དབུས་འབྲུར་འབྲི་རྒྱུད་རེ་ཁའི་
 རྫོང་ས་སུ་སྐྱེས་པའི་ “རིག་འཛིན་ཆེ་དབང་ལོ་རྒྱུས་” ལྷན་ཡུལ་འབྲས་མོ་
 རྫོང་ས་། ཀྱི་བྱང་སློབ་འབྲི་མཚམས་གསང་སྤྲུགས་རི་བོའི་དཔེ་གནས་སུ་བྱིང་
 ཡོས་ནག་ལྷའི་དམར་རྩྭ་མཁའ་འགྲོ་འདུ་བའི་དུས་(ཆེ་)ཆེན་ཉེར་ལྗེའི་ལྷ་
 ཆར་གྲུབ་པར་བྱས་པའི་ཡེ་གེ་པ་ནི་བསྟན་འཛིན་རྟོ་རྗེའོ།། ||

ཆེད་བརྗོད།

མཁས་སློམ་གྱིས་པའི་ངན་གཡོས་ཅི་ཞིག་གྱ།
 བཅུན་ཚུག་མདུད་འཛིན་དམ་པོས་དོན་རལ་ཡང་།།
 འཛིག་རྟེན་འཛིག་རྟེན་འདས་པའི་སྤྲུགས་མཐའ་དག།
 ལྷུར་རྟོགས་གྲུབ་པ་ཉིད་ལས་སུ་ཞིག་ག།
 དེས་ན་བདག་ནི་ཆེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ།།
 གྲུབ་པའི་དབང་ལྷུག་རྣམས་ཀྱི་རྗེས་འབྲངས་ནས།།
 མ་ལོར་སྤྲུགས་ཀྱི་སློབ་པས་བདག་གཞན་དོན།།
 རྒྱ་ཆེན་ཡིད་བཞིན་ལོ་རྒྱུ་ཉིད་འབྲུབ་ཤོག།།

ཞེས་པའང་ཆེད་བརྗོད་པའོ།།

དགེ་ལོ།

མཚུགས་པ།

1 རྫོང་ས་ - ཤོག ༡༣/ན. དེ་ཉིད།
 2 ‘རྣམས་ཀྱིས་རྗེས་’ - ཤོག 12./བ. 418. དེ་ཉིད།
 3 ‘མཆེད་དུ་བརྗོད་’ - ཤོག ༡༣/བ. དེ་ཉིད།
 4 ‘འདིའི་གཤམ་དུ་ལོ་རྒྱུ་ཞེས་སོགས་ཆེག་འགའ་འདུག་པ་དེ་མ་དཔེའི་ཡན་ལག་དུ་མི་སྤང་བས་མ་གྱིས།།

३२४ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

७) कङ्करिपा ^१ (कङ्कालवाले) गैद'सुस'बसस	शूद्र (गृहपति ^२)	माघहुर (पूर्वी भारत)	
८) मीनपा (मछली के पेट में रहनेवाले) अ'सदि'बसस	मछुआ	कामरूप	जालन्धरपा का शिष्य गोरक्ष के गुरु, मत्स्येन्द्र का पिता।
९) गोरक्षपा (गायें चरानेवाले) स'क्षद'सुद', स'क्षद'सुद'	गन्धिक (धूप बेचनेवाला)	पूर्वी भारत	राजा देवपाल
१०) चौरङ्गीपा (चोरों के जाने से प्रकट होनेवाला) गु'क'स'ठक	क्षत्रिय	पूर्वी भारत	राजा देवपाल का पुत्र
११) वीणापा वीणा बजानेवाले सि'क्षद'बसस	क्षत्रिय	गौड़ (विहार)	कण्ठपा का शिष्य (भद्रपा का शिष्य)
१२) शान्तिपा (रत्नाकरशान्ति) वि'सदि'बसस	ब्राह्मण	विक्रमशिला (मगध)	देवपाल ^३
१३) तन्तिपा (तन्तुपा) (कपड़ा बुननेवाले) स'स'स'बसस	जुलाहा	सेन्धो नगर	जालन्धर का शिष्य

१. केकालिपा, कोकलिपा, कङ्कलिपा, पुरातत्त्व, पृष्ठ १४८ द्र०।

२. वृत्तान्त में 'गृहपति' ही शब्द है।

३. (क) राहुल 'महिपाल' लिखते हैं। पुरातत्त्व निबन्धावली, पृष्ठ १४९ II

(ख) यह सिंहल-द्वीप के राजा 'कविन' (कपिना) के समकालीन थे। द्र० चौ० वृ० तनग्युर संग्रह जापान Vol. ८७ पृष्ठ १८०

१४) चमरिपा (चर्मकार) झम'म'म'क'ल'व'सा	चर्मकार	विष्णुनगर (पूर्वदेश)	
१५) खड्गपा (तलवार धारण करनेवाला) र'व'शै'ल'व'सा	शूद्र	मगध	गुरु योगी चर्परी (चर्पत्री) का शिष्य
१६) नागार्जुन गु'झु'व'ल'व'सा	ब्राह्मण	काञ्ची	सरह का शिष्य (राजा सातवाहन प्रथम)
१७) कण्हपा (कृष्ण चर्यपाद) क'ण'प'ल'व'सा	कायस्थ	सोमपुरी	गुरु जालन्धरपा (राजा देवपाल)
१८) कर्णरिपा (कनापा या आर्यदेव, कणरिपा) क'र'न'पा क'र'ण'र'ि'पा	क्षत्रिय	सिंहल ^१	गुरु नागार्जुन
१९) थाकणपा हु'क'ण'पा क'ण'पा (म'ण'क'ण'पा)	शूद्र	पूर्वी भारत	शान्तिपा का गुरु
२०) नरोपा (नरोत्तम या नडजातिवाले) न'र'ो'पा क'ण'पा	मदीरा बेचनेवाला ^२	शालिपुत्र मगध ^३	महिपाल

१. यहाँ मूल वृत्तान्त में आर्यदेव के सम्बन्ध में केवल नालन्दा के उपाध्याय होने की बात लिखी है।

२. राहुल, पुरातत्त्व पृष्ठ, १४९ द्र०।

३. इनकी जाति और स्थान दोनों अन्यत्र भिन्न पाये जाते हैं।

३२६ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

२१) श्यालिपा (सियार के आवाज से डरनेवाले) शुद्ध'गी'बस्य	शूद्र	विधपुर (विल्हपुर)	
२२) तिल्लिपा (तिल पिरोकर तेल निकालनेवाले) द्वि'दु'बस्य	ब्राह्मण	विष्णुनगर	नरोपा (नडपा) का गुरु
२३) चत्रपा; चत्तपा (पुस्तक लेकर भिक्षा माँगनेवाले) शुद्ध'अ'बस्य	शूद्र	सेन्धोनगर	
२४) भद्रपा; भद्रिपा स'द'बस्य	ब्राह्मण	मणिधर	सरहज ^१
२५) धुखन्तिपा द्वयान्तिपा (द्वैत के अन्त करनेवाला या द्विखण्डी) शुद्ध'अ'बस्य	जमादार	घन्धपुर	गन्धपुर
२६) अजोगी (अयोगी) (अयोग्यवाले, आलसी) वि'वि'उ'क	गृहपति (वैश्य)		पाटलिपुत्र ^२
२७) कलपा (पागल योगी) शुद्ध'अ'बस्य	राजपुर		अवधुतिपा

१. राहुल, पुरातत्त्व, पृष्ठ १५०-३०१।

२. (क) राहुल, पुरातत्त्व, पृष्ठ १५०-३०,

(ख) 'शालिपुत्र'; राहुल पुरातत्त्व, पृ० १५०-३०।

३२८ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

३६) धर्मपा (बहुश्रुत ^१) 𑂔𑂗𑂢𑂣𑂤𑂥𑂦𑂧𑂨𑂩𑂪𑂫𑂬𑂭𑂮𑂯𑂰𑂱𑂲𑂳𑂴𑂵𑂶𑂷𑂸𑂺𑂹𑂻𑂼𑂽𑂾𑂿𑃀𑃁𑃂𑃃𑃄𑃅𑃆𑃇𑃈𑃉𑃊𑃋𑃌𑃍𑃎𑃏𑃐𑃑𑃒𑃓𑃔𑃕𑃖𑃗𑃘𑃙𑃚𑃛𑃜𑃝𑃞𑃟𑃠𑃡𑃢𑃣𑃤𑃥𑃦𑃧𑃨𑃩𑃪𑃫𑃬𑃭𑃮𑃯𑃰𑃱𑃲𑃳𑃴𑃵𑃶𑃷𑃸𑃹𑃺𑃻𑃼𑃽𑃾𑃿𑄀𑄁𑄂𑄃𑄄𑄅𑄆𑄇𑄈𑄉𑄊𑄋𑄌𑄍𑄎𑄏𑄐𑄑𑄒𑄓𑄔𑄕𑄖𑄗𑄘𑄙𑄚𑄛𑄜𑄝𑄞𑄟𑄠𑄡𑄢𑄣𑄤𑄥𑄦𑄧𑄨𑄩𑄪𑄫𑄬𑄭𑄮𑄯𑄰𑄱𑄲𑄳𑄴𑄵𑄶𑄷𑄸𑄹𑄺𑄻𑄼𑄽𑄾𑄿𑅀𑅁𑅂𑅃𑅄𑅅𑅆𑅇𑅈𑅉𑅊𑅋𑅌𑅍𑅎𑅏𑅐𑅑𑅒𑅓𑅔𑅕𑅖𑅗𑅘𑅙𑅚𑅛𑅜𑅝𑅞𑅟𑅠𑅡𑅢𑅣𑅤𑅥𑅦𑅧𑅨𑅩𑅪𑅫𑅬𑅭𑅮𑅯𑅰𑅱𑅲𑅳𑅴𑅵𑅶𑅷𑅸𑅹𑅺𑅻𑅼𑅽𑅾𑅿𑆀𑆁𑆂𑆃𑆄𑆅𑆆𑆇𑆈𑆉𑆊𑆋𑆌𑆍𑆎𑆏𑆐𑆑𑆒𑆓𑆔𑆕𑆖𑆗𑆘𑆙𑆚𑆛𑆜𑆝𑆞𑆟𑆠𑆡𑆢𑆣𑆤𑆥𑆦𑆧𑆨𑆩𑆪𑆫𑆬𑆭𑆮𑆯𑆰𑆱𑆲𑆳𑆴𑆵𑆶𑆷𑆸𑆹𑆺𑆻𑆼𑆽𑆾𑆿𑇀𑇁𑇂𑇃𑇄𑇅𑇆𑇇𑇈𑇉𑇊𑇋𑇌𑇍𑇎𑇏𑇐𑇑𑇒𑇓𑇔𑇕𑇖𑇗𑇘𑇙𑇚𑇛𑇜𑇝𑇞𑇟𑇠𑇡𑇢𑇣𑇤𑇥𑇦𑇧𑇨𑇩𑇪𑇫𑇬𑇭𑇮𑇯𑇰𑇱𑇲𑇳𑇴𑇵𑇶𑇷𑇸𑇹𑇺𑇻𑇼𑇽𑇾𑇿𑈀𑈁𑈂𑈃𑈄𑈅𑈆𑈇𑈈𑈉𑈊𑈋𑈌𑈍𑈎𑈏𑈐𑈑𑈒𑈓𑈔𑈕𑈖𑈗𑈘𑈙𑈚𑈛𑈜𑈝𑈞𑈟𑈠𑈡𑈢𑈣𑈤𑈥𑈦𑈧𑈨𑈩𑈪𑈫𑈬𑈭𑈮𑈯𑈰𑈱𑈲𑈳𑈴𑈶𑈵𑈷𑈸𑈹𑈺𑈻𑈼𑈽𑈾𑈿𑉀𑉁𑉂𑉃𑉄𑉅𑉆𑉇𑉈𑉉𑉊𑉋𑉌𑉍𑉎𑉏𑉐𑉑𑉒𑉓𑉔𑉕𑉖𑉗𑉘𑉙𑉚𑉛𑉜𑉝𑉞𑉟𑉠𑉡𑉢𑉣𑉤𑉥𑉦𑉧𑉨𑉩𑉪𑉫𑉬𑉭𑉮𑉯𑉰𑉱𑉲𑉳𑉴𑉵𑉶𑉷𑉸𑉹𑉺𑉻𑉼𑉽𑉾𑉿𑊀𑊁𑊂𑊃𑊄𑊅𑊆𑊇𑊈𑊉𑊊𑊋𑊌𑊍𑊎𑊏𑊐𑊑𑊒𑊓𑊔𑊕𑊖𑊗𑊘𑊙𑊚𑊛𑊜𑊝𑊞𑊟𑊠𑊡𑊢𑊣𑊤𑊥𑊦𑊧𑊨𑊩𑊪𑊫𑊬𑊭𑊮𑊯𑊰𑊱𑊲𑊳𑊴𑊵𑊶𑊷𑊸𑊹𑊺𑊻𑊼𑊽𑊾𑊿𑋀𑋁𑋂𑋃𑋄𑋅𑋆𑋇𑋈𑋉𑋊𑋋𑋌𑋍𑋎𑋏𑋐𑋑𑋒𑋓𑋔𑋕𑋖𑋗𑋘𑋙𑋚𑋛𑋜𑋝𑋞𑋟𑋠𑋡𑋢𑋣𑋤𑋥𑋦𑋧𑋨𑋩𑋪𑋫𑋬𑋭𑋮𑋯𑋰𑋱𑋲𑋳𑋴𑋵𑋶𑋷𑋸𑋹𑋺𑋻𑋼𑋽𑋾𑋿𑌀𑌁𑌂𑌃𑌄𑌅𑌆𑌇𑌈𑌉𑌊𑌋𑌌𑌍𑌎𑌏𑌐𑌑𑌒𑌓𑌔𑌕𑌖𑌗𑌘𑌙𑌚𑌛𑌜𑌝𑌞𑌟𑌠𑌡𑌢𑌣𑌤𑌥𑌦𑌧𑌨𑌩𑌪𑌫𑌬𑌭𑌮𑌯𑌰𑌱𑌲𑌳𑌴𑌵𑌶𑌷𑌸𑌹𑌺𑌻𑌼𑌽𑌾𑌿𑍀𑍁𑍂𑍃𑍄𑍅𑍆𑍇𑍈𑍉𑍊𑍋𑍌𑍍𑍎𑍏𑍐𑍑𑍒𑍓𑍔𑍕𑍖𑍗𑍘𑍙𑍚𑍛𑍜𑍝𑍞𑍟𑍠𑍡𑍢𑍣𑍤𑍥𑍦𑍧𑍨𑍩𑍪𑍫𑍬𑍭𑍮𑍯𑍰𑍱𑍲𑍳𑍴𑍵𑍶𑍷𑍸𑍹𑍺𑍻𑍼𑍽𑍾𑍿𑎀𑎁𑎂𑎃𑎄𑎅𑎆𑎇𑎈𑎉𑎊𑎋𑎌𑎍𑎎𑎏𑎐𑎑𑎒𑎓𑎔𑎕𑎖𑎗𑎘𑎙𑎚𑎛𑎜𑎝𑎞𑎟𑎠𑎡𑎢𑎣𑎤𑎥𑎦𑎧𑎨𑎩𑎪𑎫𑎬𑎭𑎮𑎯𑎰𑎱𑎲𑎳𑎴𑎵𑎶𑎷𑎸𑎹𑎺𑎻𑎼𑎽𑎾𑎿𑏀𑏁𑏂𑏃𑏄𑏅𑏆𑏇𑏈𑏉𑏊𑏋𑏌𑏍𑏎𑏏𑏐𑏑𑏒𑏓𑏔𑏕𑏖𑏗𑏘𑏙𑏚𑏛𑏜𑏝𑏞𑏟𑏠𑏡𑏢𑏣𑏤𑏥𑏦𑏧𑏨𑏩𑏪𑏫𑏬𑏭𑏮𑏯𑏰𑏱𑏲𑏳𑏴𑏵𑏶𑏷𑏸𑏹𑏺𑏻𑏼𑏽𑏾𑏿𑐀𑐁𑐂𑐃𑐄𑐅𑐆𑐇𑐈𑐉𑐊𑐋𑐌𑐍𑐎𑐏𑐐𑐑𑐒𑐓𑐔𑐕𑐖𑐗𑐘𑐙𑐚𑐛𑐜𑐝𑐞𑐟𑐠𑐡𑐢𑐣𑐤𑐥𑐦𑐧𑐨𑐩𑐪𑐫𑐬𑐭𑐮𑐯𑐰𑐱𑐲𑐳𑐴𑐵𑐶𑐷𑐸𑐹𑐺𑐻𑐼𑐽𑐾𑐿𑑀𑑁𑑂𑑃𑑄𑑅𑑆𑑇𑑈𑑉𑑊𑑋𑑌𑑍𑑎𑑏𑑐𑑑𑑒𑑓𑑔𑑕𑑖𑑗𑑘𑑙𑑚𑑛𑑜𑑝𑑞𑑟𑑠𑑡𑑢𑑣𑑤𑑥𑑦𑑧𑑨𑑩𑑪𑑫𑑬𑑭𑑮𑑯𑑰𑑱𑑲𑑳𑑴𑑵𑑶𑑷𑑸𑑹𑑺𑑻𑑼𑑽𑑾𑑿𑒀𑒁𑒂𑒃𑒄𑒅𑒆𑒇𑒈𑒉𑒊𑒋𑒌𑒍𑒎𑒏𑒐𑒑𑒒𑒓𑒔𑒕𑒖𑒗𑒘𑒙𑒚𑒛𑒜𑒝𑒞𑒟𑒠𑒡𑒢𑒣𑒤𑒥𑒦𑒧𑒨𑒩𑒪𑒫𑒬𑒭𑒮𑒯𑒰𑒱𑒲𑒳𑒴𑒵𑒶𑒷𑒸𑒻𑒻𑒼𑒽𑒾𑒿𑓀𑓁𑓃𑓂𑓄𑓅𑓆𑓇𑓈𑓉𑓊𑓋𑓌𑓍𑓎𑓏𑓐𑓑𑓒𑓓𑓔𑓕𑓖𑓗𑓘𑓙𑓚𑓛𑓜𑓝𑓞𑓟𑓠𑓡𑓢𑓣𑓤𑓥𑓦𑓧𑓨𑓩𑓪𑓫𑓬𑓭𑓮𑓯𑓰𑓱𑓲𑓳𑓴𑓵𑓶𑓷𑓸𑓹𑓺𑓻𑓼𑓽𑓾𑓿𑔀𑔁𑔂𑔃𑔄𑔅𑔆𑔇𑔈𑔉𑔊𑔋𑔌𑔍𑔎𑔏𑔐𑔑𑔒𑔓𑔔𑔕𑔖𑔗𑔘𑔙𑔚𑔛𑔜𑔝𑔞𑔟𑔠𑔡𑔢𑔣𑔤𑔥𑔦𑔧𑔨𑔩𑔪𑔫𑔬𑔭𑔮𑔯𑔰𑔱𑔲𑔳𑔴𑔵𑔶𑔷𑔸𑔹𑔺𑔻𑔼𑔽𑔾𑔿𑕀𑕁𑕂𑕃𑕄𑕅𑕆𑕇𑕈𑕉𑕊𑕋𑕌𑕍𑕎𑕏𑕐𑕑𑕒𑕓𑕔𑕕𑕖𑕗𑕘𑕙𑕚𑕛𑕜𑕝𑕞𑕟𑕠𑕡𑕢𑕣𑕤𑕥𑕦𑕧𑕨𑕩𑕪𑕫𑕬𑕭𑕮𑕯𑕰𑕱𑕲𑕳𑕴𑕵𑕶𑕷𑕸𑕹𑕺𑕻𑕼𑕽𑕾𑕿𑖀𑖁𑖂𑖃𑖄𑖅𑖆𑖇𑖈𑖉𑖊𑖋𑖌𑖍𑖎𑖏𑖐𑖑𑖒𑖓𑖔𑖕𑖖𑖗𑖘𑖙𑖚𑖛𑖜𑖝𑖞𑖟𑖠𑖡𑖢𑖣𑖤𑖥𑖦𑖧𑖨𑖩𑖪𑖫𑖬𑖭𑖮𑖯𑖰𑖱𑖲𑖳𑖴𑖵𑖶𑖷𑖸𑖹𑖺𑖻𑖼𑖽𑖾𑗀𑖿𑗁𑗂𑗃𑗄𑗅𑗆𑗇𑗈𑗉𑗊𑗋𑗌𑗍𑗎𑗏𑗐𑗑𑗒𑗓𑗔𑗕𑗖𑗗𑗘𑗙𑗚𑗛𑗜𑗝𑗞𑗟𑗠𑗡𑗢𑗣𑗤𑗥𑗦𑗧𑗨𑗩𑗪𑗫𑗬𑗭𑗮𑗯𑗰𑗱𑗲𑗳𑗴𑗵𑗶𑗷𑗸𑗹𑗺𑗻𑗼𑗽𑗾𑗿𑘀𑘁𑘂𑘃𑘄𑘅𑘆𑘇𑘈𑘉𑘊𑘋𑘌𑘍𑘎𑘏𑘐𑘑𑘒𑘓𑘔𑘕𑘖𑘗𑘘𑘙𑘚𑘛𑘜𑘝𑘞𑘟𑘠𑘡𑘢𑘣𑘤𑘥𑘦𑘧𑘨𑘩𑘪𑘫𑘬𑘭𑘮𑘯𑘰𑘱𑘲𑘳𑘴𑘵𑘶𑘷𑘸𑘹𑘺𑘻𑘼𑘽𑘾𑘿𑙀𑙁𑙂𑙃𑙄𑙅𑙆𑙇𑙈𑙉𑙊𑙋𑙌𑙍𑙎𑙏𑙐𑙑𑙒𑙓𑙔𑙕𑙖𑙗𑙘𑙙𑙚𑙛𑙜𑙝𑙞𑙟𑙠𑙡𑙢𑙣𑙤𑙥𑙦𑙧𑙨𑙩𑙪𑙫𑙬𑙭𑙮𑙯𑙰𑙱𑙲𑙳𑙴𑙵𑙶𑙷𑙸𑙹𑙺𑙻𑙼𑙽𑙾𑙿𑚀𑚁𑚂𑚃𑚄𑚅𑚆𑚇𑚈𑚉𑚊𑚋𑚌𑚍𑚎𑚏𑚐𑚑𑚒𑚓𑚔𑚕𑚖𑚗𑚘𑚙𑚚𑚛𑚜𑚝𑚞𑚟𑚠𑚡𑚢𑚣𑚤𑚥𑚦𑚧𑚨𑚩𑚪𑚫𑚬𑚭𑚮𑚯𑚰𑚱𑚲𑚳𑚴𑚵𑚷𑚶𑚸𑚹𑚺𑚻𑚼𑚽𑚾𑚿𑛀𑛁𑛂𑛃𑛄𑛅𑛆𑛇𑛈𑛉𑛊𑛋𑛌𑛍𑛎𑛏𑛐𑛑𑛒𑛓𑛔𑛕𑛖𑛗𑛘𑛙𑛚𑛛𑛜𑛝𑛞𑛟𑛠𑛡𑛢𑛣𑛤𑛥𑛦𑛧𑛨𑛩𑛪𑛫𑛬𑛭𑛮𑛯𑛰𑛱𑛲𑛳𑛴𑛵𑛶𑛷𑛸𑛹𑛺𑛻𑛼𑛽𑛾𑛿𑜀𑜁𑜂𑜃𑜄𑜅𑜆𑜇𑜈𑜉𑜊𑜋𑜌𑜍𑜎𑜏𑜐𑜑𑜒𑜓𑜔𑜕𑜖𑜗𑜘𑜙𑜚𑜛𑜜𑜝𑜞𑜟𑜠𑜡𑜢𑜣𑜤𑜥𑜦𑜧𑜨𑜩𑜪𑜫𑜬𑜭𑜮𑜯𑜰𑜱𑜲𑜳𑜴𑜵𑜶𑜷𑜸𑜹𑜺𑜻𑜼𑜽𑜾𑜿𑝀𑝁𑝂𑝃𑝄𑝅𑝆𑝇𑝈𑝉𑝊𑝋𑝌𑝍𑝎𑝏𑝐𑝑𑝒𑝓𑝔𑝕𑝖𑝗𑝘𑝙𑝚𑝛𑝜𑝝𑝞𑝟𑝠𑝡𑝢𑝣𑝤𑝥𑝦𑝧𑝨𑝩𑝪𑝫𑝬𑝭𑝮𑝯𑝰𑝱𑝲𑝳𑝴𑝵𑝶𑝷𑝸𑝹𑝺𑝻𑝼𑝽𑝾𑝿𑞀𑞁𑞂𑞃𑞄𑞅𑞆𑞇𑞈𑞉𑞊𑞋𑞌𑞍𑞎𑞏𑞐𑞑𑞒𑞓𑞔𑞕𑞖𑞗𑞘𑞙𑞚𑞛𑞜𑞝𑞞𑞟𑞠𑞡𑞢𑞣𑞤𑞥𑞦𑞧𑞨𑞩𑞪𑞫𑞬𑞭𑞮𑞯𑞰𑞱𑞲𑞳𑞴𑞵𑞶𑞷𑞸𑞹𑞺𑞻𑞼𑞽𑞾𑞿𑟀𑟁𑟂𑟃𑟄𑟅𑟆𑟇𑟈𑟉𑟊𑟋𑟌𑟍𑟎𑟏𑟐𑟑𑟒𑟓𑟔𑟕𑟖𑟗𑟘𑟙𑟚𑟛𑟜𑟝𑟞𑟟𑟠𑟡𑟢𑟣𑟤𑟥𑟦𑟧𑟨𑟩𑟪𑟫𑟬𑟭𑟮𑟯𑟰𑟱𑟲𑟳𑟴𑟵𑟶𑟷𑟸𑟹𑟺𑟻𑟼𑟽𑟾𑟿𑠀𑠁𑠂𑠃𑠄𑠅𑠆𑠇𑠈𑠉𑠊𑠋𑠌𑠍𑠎𑠏𑠐𑠑𑠒𑠓𑠔𑠕𑠖𑠗𑠘𑠙𑠚𑠛𑠜𑠝𑠞𑠟𑠠𑠡𑠢𑠣𑠤𑠥𑠦𑠧𑠨𑠩𑠪𑠫𑠬𑠭𑠮𑠯𑠰𑠱𑠲𑠳𑠴𑠵𑠶𑠷𑠸𑠺𑠹𑠻𑠼𑠽𑠾𑠿𑡀𑡁𑡂𑡃𑡄𑡅𑡆𑡇𑡈𑡉𑡊𑡋𑡌𑡍𑡎𑡏𑡐𑡑𑡒𑡓𑡔𑡕𑡖𑡗𑡘𑡙𑡚𑡛𑡜𑡝𑡞𑡟𑡠𑡡𑡢𑡣𑡤𑡥𑡦𑡧𑡨𑡩𑡪𑡫𑡬𑡭𑡮𑡯𑡰𑡱𑡲𑡳𑡴𑡵𑡶𑡷𑡸𑡹𑡺𑡻𑡼𑡽𑡾𑡿𑢀𑢁𑢂𑢃𑢄𑢅𑢆𑢇𑢈𑢉𑢊𑢋𑢌𑢍𑢎𑢏𑢐𑢑𑢒𑢓𑢔𑢕𑢖𑢗𑢘𑢙𑢚𑢛𑢜𑢝𑢞𑢟𑢠𑢡𑢢𑢣𑢤𑢥𑢦𑢧𑢨𑢩𑢪𑢫𑢬𑢭𑢮𑢯𑢰𑢱𑢲𑢳𑢴𑢵𑢶𑢷𑢸𑢹𑢺𑢻𑢼𑢽𑢾𑢿𑣀𑣁𑣂𑣃𑣄𑣅𑣆𑣇𑣈𑣉𑣊𑣋𑣌𑣍𑣎𑣏𑣐𑣑𑣒𑣓𑣔𑣕𑣖𑣗𑣘𑣙𑣚𑣛𑣜𑣝𑣞𑣟𑣠𑣡𑣢𑣣𑣤𑣥𑣦𑣧𑣨𑣩𑣪𑣫𑣬𑣭𑣮𑣯𑣰𑣱𑣲𑣳𑣴𑣵𑣶𑣷𑣸𑣹𑣺𑣻𑣼𑣽𑣾𑣿𑤀𑤁𑤂𑤃𑤄𑤅𑤆𑤇𑤈𑤉𑤊𑤋𑤌𑤍𑤎𑤏𑤐𑤑𑤒𑤓𑤔𑤕𑤖𑤗𑤘𑤙𑤚𑤛𑤜𑤝𑤞𑤟𑤠𑤡𑤢𑤣𑤤𑤥𑤦𑤧𑤨𑤩𑤪𑤫𑤬𑤭𑤮𑤯𑤰𑤱𑤲𑤳𑤴𑤵𑤶𑤷𑤸𑤹𑤺𑤻𑤼𑤽𑤾𑤿𑥀𑥁𑥂𑥃𑥄𑥅𑥆𑥇𑥈𑥉𑥊𑥋𑥌𑥍𑥎𑥏𑥐𑥑𑥒𑥓𑥔𑥕𑥖𑥗𑥘𑥙𑥚𑥛𑥜𑥝𑥞𑥟𑥠𑥡𑥢𑥣𑥤𑥥𑥦𑥧𑥨𑥩𑥪𑥫𑥬𑥭𑥮𑥯𑥰𑥱𑥲𑥳𑥴𑥵𑥶𑥷𑥸𑥹𑥺𑥻𑥼𑥽𑥾𑥿𑦀𑦁𑦂𑦃𑦄𑦅𑦆𑦇𑦈𑦉𑦊𑦋𑦌𑦍𑦎𑦏𑦐𑦑𑦒𑦓𑦔𑦕𑦖𑦗𑦘𑦙𑦚𑦛𑦜𑦝𑦞𑦟𑦠𑦡𑦢𑦣𑦤𑦥𑦦𑦧𑦨𑦩𑦪𑦫𑦬𑦭𑦮𑦯𑦰𑦱𑦲𑦳𑦴𑦵𑦶𑦷𑦸𑦹𑦺𑦻𑦼𑦽𑦾𑦿𑧀𑧁𑧂𑧃𑧄𑧅𑧆𑧇𑧈𑧉𑧊𑧋𑧌𑧍𑧎𑧏𑧐𑧑𑧒𑧓𑧔𑧕𑧖𑧗𑧘𑧙𑧚𑧛𑧜𑧝𑧞𑧟𑧠𑧡𑧢𑧣𑧤𑧥𑧦𑧧𑧨𑧩𑧪𑧫𑧬𑧭𑧮𑧯𑧰𑧱𑧲𑧳𑧴𑧵𑧶𑧷𑧸𑧹𑧺𑧻𑧼𑧽𑧾𑧿𑨀𑨁𑨂𑨃𑨄𑨅𑨆𑨇𑨈𑨉𑨊𑨋𑨌𑨍𑨎𑨏𑨐𑨑𑨒𑨓𑨔𑨕𑨖𑨗𑨘𑨙𑨚𑨛𑨜𑨝𑨞𑨟𑨠𑨡𑨢𑨣𑨤𑨥𑨦𑨧𑨨𑨩𑨪𑨫𑨬𑨭𑨮𑨯𑨰𑨱𑨲𑨳𑨴𑨵𑨶𑨷𑨸𑨹𑨺𑨻𑨼𑨽𑨾𑨿𑩀𑩁𑩂𑩃𑩄𑩅𑩆𑩇𑩈𑩉𑩊𑩋𑩌𑩍𑩎𑩏𑩐𑩑𑩒𑩓𑩔𑩕𑩖𑩗𑩘𑩙𑩚𑩛𑩜𑩝𑩞𑩟𑩠𑩡𑩢𑩣𑩤𑩥𑩦𑩧𑩨𑩩𑩪𑩫𑩬𑩭𑩮𑩯𑩰𑩱𑩲𑩳𑩴𑩵𑩶𑩷𑩸𑩹𑩺𑩻𑩼𑩽𑩾𑩿𑪀𑪁𑪂𑪃𑪄𑪅𑪆𑪇𑪈𑪉𑪊𑪋𑪌𑪍𑪎𑪏𑪐𑪑𑪒𑪓𑪔𑪕𑪖𑪗𑪘𑪙𑪚𑪛𑪜𑪝𑪞𑪟𑪠𑪡𑪢𑪣𑪤𑪥𑪦𑪧𑪨𑪩𑪪𑪫𑪬𑪭𑪮𑪯𑪰𑪱𑪲𑪳𑪴𑪵𑪶𑪷𑪸𑪹𑪺𑪻𑪼𑪽𑪾𑪿𑫀𑫁𑫂𑫃𑫄𑫅𑫆𑫇𑫈𑫉𑫊𑫋𑫌𑫍𑫎𑫏𑫐𑫑𑫒𑫓𑫔𑫕𑫖𑫗𑫘𑫙𑫚𑫛𑫜𑫝𑫞𑫟𑫠𑫡𑫢𑫣𑫤𑫥𑫦𑫧𑫨𑫩𑫪𑫫𑫬𑫭𑫮𑫯𑫰𑫱𑫲𑫳𑫴𑫵𑫶𑫷𑫸𑫹𑫺𑫻𑫼𑫽𑫾𑫿𑬀𑬁𑬂𑬃𑬄𑬅𑬆𑬇𑬈𑬉𑬊𑬋𑬌𑬍𑬎𑬏𑬐𑬑𑬒𑬓𑬔𑬕𑬖𑬗𑬘𑬙𑬚𑬛𑬜𑬝𑬞𑬟𑬠𑬡𑬢𑬣𑬤𑬥𑬦𑬧𑬨𑬩𑬪𑬫𑬬𑬭𑬮𑬯𑬰𑬱𑬲𑬳𑬴𑬵𑬶𑬷𑬸𑬹𑬺𑬻𑬼𑬽𑬾𑬿𑭀𑭁𑭂𑭃𑭄𑭅𑭆𑭇𑭈𑭉𑭊𑭋𑭌𑭍𑭎𑭏𑭐𑭑𑭒𑭓𑭔𑭕𑭖𑭗𑭘𑭙𑭚𑭛𑭜𑭝𑭞𑭟𑭠𑭡𑭢𑭣𑭤𑭥𑭦𑭧𑭨𑭩𑭪𑭫𑭬𑭭𑭮𑭯𑭰𑭱𑭲𑭳𑭴𑭵𑭶𑭷𑭸𑭹𑭺𑭻𑭼𑭽𑭾𑭿𑮀𑮁𑮂𑮃𑮄𑮅𑮆𑮇𑮈𑮉𑮊𑮋𑮌𑮍𑮎𑮏𑮐𑮑𑮒𑮓𑮔𑮕𑮖𑮗𑮘𑮙𑮚𑮛𑮜𑮝𑮞𑮟𑮠𑮡𑮢𑮣𑮤𑮥𑮦𑮧𑮨𑮩𑮪𑮫𑮬𑮭𑮮𑮯𑮰𑮱𑮲𑮳𑮴𑮵𑮶𑮷𑮸𑮹𑮺𑮻𑮼𑮽𑮾𑮿𑯀𑯁𑯂𑯃𑯄𑯅𑯆𑯇𑯈𑯉𑯊𑯋𑯌𑯍𑯎𑯏𑯐𑯑𑯒𑯓𑯔𑯕𑯖𑯗𑯘𑯙𑯚𑯛𑯜𑯝𑯞𑯟𑯠𑯡𑯢𑯣𑯤𑯥𑯦𑯧𑯨𑯩𑯪𑯫𑯬𑯭𑯮𑯯𑯰𑯱𑯲𑯳𑯴𑯵𑯶𑯷𑯸𑯹𑯺𑯻𑯼𑯽𑯾𑯿𑰀𑰁𑰂𑰃𑰄𑰅𑰆𑰇𑰈𑰉𑰊𑰋𑰌𑰍𑰎𑰏𑰐𑰑𑰒𑰓𑰔𑰕𑰖𑰗𑰘𑰙𑰚𑰛𑰜𑰝𑰞𑰟𑰠𑰡𑰢𑰣𑰤𑰥𑰦𑰧𑰨𑰩𑰪𑰫𑰬𑰭𑰮𑰯𑰰𑰱𑰲𑰳𑰴𑰵𑰶𑰷𑰸𑰹𑰺𑰻𑰼𑰽𑰾𑰿𑱀𑱁𑱂𑱃𑱄𑱅𑱆𑱇𑱈𑱉𑱊𑱋𑱌𑱍𑱎𑱏𑱐𑱑𑱒𑱓𑱔𑱕𑱖𑱗𑱘𑱙𑱚𑱛𑱜𑱝𑱞𑱟𑱠𑱡𑱢𑱣𑱤𑱥𑱦𑱧𑱨𑱩𑱪𑱫𑱬𑱭𑱮𑱯𑱰𑱱𑱲𑱳𑱴𑱵𑱶𑱷𑱸𑱹𑱺𑱻𑱼𑱽𑱾𑱿𑲀𑲁𑲂𑲃𑲄𑲅𑲆𑲇𑲈𑲉𑲊𑲋𑲌𑲍𑲎𑲏𑲐𑲑𑲒𑲓𑲔𑲕𑲖

४२) इन्द्रभूति (इन्द्र के समान ऐश्वर्यवाला) इन्द्र-भूति-सिद्धि	क्षत्रिय	सम्भोल देश (उडीयन के अन्तर्गत)	अनङ्गवज्र के शिष्य
४३) मेकोपा (भयंकर देखनेवाला) मेकोपा-सिद्धि	वणिक	भङ्गल देश (बंगाल)	
४४) कोदपिला (कोडलिपा) केनेत (?) कोद-पिला-सिद्धि		रामेश्वर	शान्तिपा का शिष्य
४५) कमरिपा (कम्परिपा भी) कमरिपा-सिद्धि	लोहार	सालिपुत्र	अवधुतिपा का शिष्य
४६) जालन्धरपा जालन्धर-सिद्धि	ब्राह्मण	नगरभो (नगर दृष्ट कुट?) का गुरु	कन्हण और मत्स्येन्द्र
४७) राहुल राहुल-सिद्धि	शूद्र	कामरूपा	सरह तीसरा
४८) धर्मपा (धर्म उपदेशक) धर्म-पा-सिद्धि (धर्म-पा-सिद्धि)	ब्राह्मण (?)	बोधिनागर	विरुपा से चौथे पीढ़ी
४९) धोकरिपा (मिट्टी के पात्रवाला) धोकरिपा-सिद्धि	शूद्र	सालिपुत्र	
५०) मेधिनि (खेती करनेवाला) मेधिनि-सिद्धि	शूद्र	सालिपुत्र (लाखपुम?)	लीलापा से चौथे पीढ़ी

३३० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

५१) पङ्कजपा འདམ་སྐྱེས་ལལས།	ब्राह्मण	नागार्जुन के शिष्य
५२) घण्टपा རྒྱལ་སྤུའི་ལལས།	क्षत्रिय	वारेन्द्र नालन्दा राजा देवपाल (तन्पुर में ८६/१)
५३) जोकिपा ^१ (जोगीपा, योगीपा) རྒྱལ་འཕྲུལ་ལ།	डोम	ओदन्तपुरी शबरपा का शिष्य
५४) चलुकिपा (गहरी नींदवाला) གཞིན་ཚེན་ལལས།	शूद्र	मङ्गलपुर मैत्रिपा का शिष्य (भङ्गलपुर)
५५) गोधुरिपा (गुण्डरिपा) (पक्षी मारनेवाला ब्याध) ལུ་ཇོན་ལལས།	ब्याध	डिसु नगर लीलापा का शिष्य (चिड़ियामार)
५६) लुचिकपा ཀོག་ལང་མཁན་གྱི་ལལས།	ब्राह्मण	भङ्गल देश (बंगाल देश)
५७) नगुणपा (बिना गुणवाला) ལོན་ཏན་མེད་ལལས།	शूद्र	पूर्वदेश
५८) जयानन्द རྒྱལ་བ་ཀུན་དགའ།	ब्राह्मण	भङ्गलपुर

१. मिथिलादि स्थान के लोग 'य' को 'ज' का उच्चारण करते हैं, उनके उच्चारण के आधार पर यहाँ भी 'योगी' शब्द की जगह 'जोगी' हो गया है। 'जोकि' यहाँ 'क' तिब्बत के लोगों ने 'ग' के जगह अपभ्रंश कर दिया है।

५९) पचरिपा ॠ॒ळ॑न् ॠ॒ण॑न् ॠ॒व॑न्	कहार	चम्पक	मीनपा का गुरु
६०) चम्पकपा उ॒म॑य॒ण॑ ॠ॒व॑न्	क्षत्रिय	चम्पक	
६१) भिक्षनपा (भिखनपा, भिक्षावाला) व॒र्ष॑न् ॠ॒म॑न् ॠ॒व॑न्	शूद्र	सालिपुत्र	
६२) धिलिपा ^१ (तिल्लीपा; तेल बेचनेवाला) म॒न् ॠ॒ण॑ ॠ॒ळ॑न् ॠ॒व॑न्	तेल वणिक	सतपुरी	
६३) कुम्भरिपा (कुम्भकार) ॠ॒ण॑ ॠ॒ळ॑न् ॠ॒व॑न्	कुम्भकार (कुम्भकार)	जोमनश्री (?)	
६४) चरिपा ॠ॒व॑न् ॠ॒ण॑ ॠ॒व॑न्	चरवक ^२ (चर्बरिपा)	मगध (पशुपालक)	कणहपा की तीसरी पीढ़ी
६५) योगिनी मणिभद्रा ॠ॒ण॑ ॠ॒ळ॑न् ॠ॒व॑न्	गृहपति कन्या (वैश्य)	अगचे नगर	कुकुरिपा की शिष्या
६६) योगिनी मेखली ॠ॒ण॑ ॠ॒ळ॑न् ॠ॒व॑न्	गृहपति कन्या	देवीकोट	कणहपा की शिष्या

१. 'भलिपा' द्र० राहुल पुरातत्त्व पृष्ठ १५३

२. जंगलों में पशु चराकर अपनी जीविका चलानेवाले एक जाति। पशु-पालक, 'चारवक' यह शब्द नगरों से दूर रहने या सभ्यता से दूर रहनेवालों के नाम हैं। द्रष्टव्य आर्यदेव के ज्ञान सार-समुच्चय नामक ग्रन्थ की बोधिभद्र कृत वृत्ति में ति० तन्त्रयुर में।

३३२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

६७) योगिनी कनखलापा (कनखल) कृत्वा'रुद्र'स'त्रेष'स' अति'सपुत्र'वस'स'	गृहपति कन्या देवीकोट	कणहपा की शिष्या
६८) किलपा, किलिकिलि गु'रु'उक'वस'स'	शूद्र	भिरिलिड नगर
६९) कन्तलिपा, कनालिपा सै'स'कु'उक'सु'वस'स'	जमादार	मणिभद्र (नगर)
७०) धहुलिपा धगुलिपा द्व'स'स'स'अ'उ'वस'स'	शूद्र	धोकर देश (थोकर)
७१) उडिलिपा उधलिपा भी, वैश्य (उड़नेवाले) अ'धु'र'स'व'व'वस'स' (अ'धु'र'स'अ'उ'वस'स')	वैश्य	देवीकोट कर्णरिपा का शिष्य
७२) कपालिपा सै'द'य'उक'वस'स'	शूद्र	राजपुरी (नगर)
७३) किरपालपा (किलपा) स'अ'उ'स'सु'द'वस'स'	क्षत्रिय	ग्रहर (प्रहार, सहर)
७४) सागरपा (सरोरूह) अ'रु'रु'स'स'व'व'वस'स'	क्षत्रिय	काञ्ची राजा इन्द्रभूति (छोटा इन्द्रभूति)
७५) सर्वभक्ष स'अ'स'उ'द'उ'	शूद्र	अभिर नगर (महर, सहर) राजा हरिश्चन्द्र गुरु सरह (छोटे)
७६) नागबोधि गु'रु'सु'द'कु'व'वस'स'	ब्राह्मण	पश्चिमी भारत नागार्जुन के शिष्य

७७) दारिकपा कुट्'अ' उक्'ल'व'स'।	क्षत्रिय (राजा इन्द्रपाल)	सालिपुत्र (उड़ीसा)	समकालीन लुईपा
७८) पुतलिपा शु'प'कु'ल'व'स'।	शूद्र	भंगाल (बंगाल)	
७९) पनहपा, उपनहपा पु'अ'अ'अ'ल'व'स'।	चर्मकार	सेन्धो नगर	
८०) कोकिलपा (कोयलवाला) कु'कु'ल'व'स'।	क्षत्रिय	चम्पार्ण (चम्पारण)	
८१) अनङ्गपा अ'अ'अ'ल'व'स'। (अ'अ'अ'अ'अ'ल'व'स'।)	शूद्र	घहुर (गौड़)	
८२) योगिनी, लक्ष्मीकर अ'अ'अ'अ'अ'।	राजकुमारी	सम्भल नगर	राजा इन्द्रभूति
८३) समुद्रपा अ'अ'अ'ल'व'स'।	शूद्र	सर्बडि (ह?) सर्वार, गोरखपुर, बस्ती जिला ^१	
८४) व्यालिपा (भालि, सर्प या व्याघ्रवाला) अ'अ'अ'ल'व'स'। अ'अ'अ'अ'अ'ल'व'स'।	ब्राह्मण	अपत्र देश (एपत्र)	नागार्जुन (वृत्तान्त के अनुसार)

चौरासी सिद्धों से सम्बद्ध प्रतिमा निर्माण विधि^१

१. लुहिपा

सिद्धों में प्रथम लुईपा आते हैं^२। लुईपा या आचार्य लुहिपा का शरीर दुबला-पतला एवं वर्ण साँवला है। उनके सामने मछली के आँत का ढेर लगा होना चाहिए। उनमें से एक मछली की आँत निकालकर अपने मुँह में डालकर खाते हुए, वे गम्भीर और प्रसन्न-मुद्रा में दिखाई देते हैं। छाती में हलके बाल और सिर पर हलकी-सी बँधी हुई जटा होनी चाहिए।

२. लीलापा

लीलापा राजा के रूप में सिंहासन पर बैठे हुए दिखाई देते हैं। वे चारों ओर से अपने मन्त्रियों एवं रानियों से परिवृत दिखाई देते हैं।

३. विरूपा

सामान्यतः प्रसिद्ध है कि विरूपा का स्वरूप एक मदिरा बेचनेवाली व्यवसायी की दूकान में बैठकर मदिरा पीते हुए दिखाई देता है। वस्त्र के रूप में मात्र एक छोटी-सी लंगोटी उनके शरीर पर होना चाहिए। मृगचर्म के बिछौने पर बैठे हों तथा सामने मदिरा बेचनेवाली एक स्त्री उन्हें मदिरा दे रही हो। वे अर्धासन-मुद्रा (एक पैर समेटा हुआ तथा दूसरा पैर कुछ फैला हुआ) में बैठे हों। मकान के ठीक सामने ऊपर आकाश में सूर्य-मण्डल चमकता हुआ दिखाई देना चाहिए। अन्य विशेषताएँ ये हैं—

सिर मुड़ा हुआ, पुष्प-मालाओं के अतिरिक्त अन्य आभूषणों का अभाव; उन्हें दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली से सूर्य की ओर इंगित करते हुए तथा बायें हाथ में ररूः (जंगली मृग^३) का सींग धारण किये हुए हों आदि।

१. मूल ग्रन्थ में यह शीर्षक बहुत लम्बा है। द्रष्टव्य तिब्बती पाठ में पृष्ठ।

२. यद्यपि यहाँ सिद्धों में से लूहिपा को प्रथम माना गया है, पर यह क्रम न तो कालिक है और न उपदेश-परम्परा अथवा ज्ञान-परम्परा का है, यह केवल एक गणचक्र विशेष में उपस्थिति का क्रम मात्र है। द्रष्टव्य डुब थबस् कुनतु० पृष्ठ....।

४. डोम्बिपा

डोम्बिपा (या डोम्बि हेरुक) को अस्थि-निर्मित षड्अलङ्कारों से अलंकृत होना चाहिए। उनके दाहिने हाथ में विषैले सर्प का चाबुक तथा सिर के पीछे सर्प का फन लहराता हुआ होना चाहिए। उनकी पत्नी उन्हें बायीं ओर से आलिङ्गन करती हुई दिखलाई देती हो। दोनों एक व्याघ्री पर सवार रहते हैं। व्याघ्री बच्चों को जन्म देकर, उसे दूध पिलाती हुई अवस्था में है।

५. शबरपा

शबरपा (या शबरिपा) का वर्ण साँवला है। उनके दाहिने हाथ में वाण और बायें हाथ में (विशेष) बाँस से निर्मित धनुष है। धनुष के एक छोर में मृत सुअर का ऊपरी आधा भाग तथा दूसरे छोर में उसका अधोभाग टँगा हुआ होना चाहिए। उन्हें फल और फूलों से निर्मित आभूषण तथा मोर की पिच्छों से बने अधोवस्त्र धारण किये हुए होना चाहिए। उनके दोनों ओर दोनों पत्नियाँ वाण एवं तरकश धारण किये खड़ी हों।

६. सरहपा

सरह या सरहपा ब्राह्मण पुरोहित के वेश में ब्रह्मसूत्र (जनेऊ) धारण किये हुए, गौरवर्ण एवं युवावस्था में दिखलाई पड़ना चाहिए। अर्धासन में बैठकर एक वाण को दोनों हाथों से सीधा करते हुए मुद्रा में होना चाहिए।

७ कङ्कारिपा

कङ्कारिपा या कङ्कालिपा योगी के वेष में श्मशान में आसीन, रंग से साँवले मुण्डित सिर तथा अलङ्कार रहित हों, उनके सामने बहुत बड़ी मात्रा में नरकङ्कालों का ढेर दिखलाई पड़ना चाहिए।

१. यहाँ रुरुः नामक मृग के सिंग का उल्लेख आया है। मूल पाण्डुलिपि में इस जानवर का नाम 'गूजन्' लिखा है। यह भोट देशीय नाम है। भिक्षु येशे दोन डुब तन पई ग्यलछन कृत चिकित्साशास्त्र 'जेछरमिगग्यन' में 'गूजन्' (जन्) नामक जानवर को अमरकोष में उल्लिखित कृष्णसारः; रुरुः; न्यङ्कुः; एणः आदि का पर्याय बताया गया है। द्रष्टव्य पृ० १६। फोटो संस्करण नं० २३२, दिल्ली सं० १९१७। परन्तु अमरकोष की व्याख्या-सुधा में कृष्णसारः; रुरुः; न्यङ्कुः आदि मृग के भेद माने गये हैं। द्र० अ० १०, सिंह व०।

८. मीनपा^१

मीनपा मछली का पेट फाड़कर उसमें से निकलते हुए, जिनके दोनों पैर अभी मछली के पेट में ही घुसे हुए हों ऐसा दिखलाई पड़ना चाहिए। शरीर का वर्ण साँवला और अलङ्कार रहित तथा उनके दोनों हाथ नृत्य-मुद्रा में होना चाहिए।

९. गोरक्ष

गोरक्ष का वर्ण गौर तथा सिर मुण्डित होना चाहिए। वे समाहित-मुद्रा में हों। उनके कानों में कृष्णमृग^२ सींगों से निर्मित सिक्के के आकार के कुण्डल तथा कण्ठ में शंख और सींग से निर्मित आभूषण हों। वे निर्वसन या 'चक्रकन्त' नामक (विशेष) वस्त्र पहने हों। गो समुदाय को लक्षित करने के लिए सामने कुछ गाय की प्रतिमा भी हो।

१०. चौरङ्गीपा

चौरङ्गीपा राजकुमार के रूप में एक वृक्ष के मूल में समाहित मुद्रा में बैठे हुए और हलकी-सी जटा बाँधे हुए हों। उनके बगल से कुछ व्यापारी प्रभूत धन-सम्पत्ति लेकर जाते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

११. वीणापा

वीणापा सिर पर पगड़ी बाँधे हुए पूर्ण राजकुमार के रूप में हों। वे तीन तारों वाली वीणा नामक वाद्ययन्त्र को बजाते हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

१२. शान्तिपा

शान्तिपा भिक्षु के रूप में सिर पर पण्डितोचित टोपी पहने हों। उनका दाहिना हाथ धर्मोपदेश की मुद्रा में हो तथा बायें हाथ में पोथी रखी हुई हो। पद्मासन लगाकर वे शान्त-मुद्रा में स्थित हों। शरीर में कुछ-कुछ वृद्धावस्था का रूप झलकना चाहिए।

१. मीनपा या मत्स्येन्द्र या मत्स्येन्द्रनाथ के एक ही व्यक्ति होने के कुछ प्रमाण मिलते हैं। द्र० डुब थब० कु० पृ०....।

२. कृष्ण-मुद्रा, मूल०....।

१३. तन्तिपा

तन्तिपा योगी के वेश में तथा अत्यन्त वृद्ध के रूप में दिखलाई पड़ें। उनको कपड़ा बुनने के औजार लेकर तन्तुओं से कपड़ा बुनते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

१४. चमरिपा

चमरिपा चर्मकार एवं योगी के वेश में जूता बनाते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

१५. खड्गपा

खड्गपा- जटा बाँधे हुए योगी के वेश में तलवार लेकर आकाश में उड़ते हुए दिखलाई दें। समीप में नीचे जमीन पर एक स्तूप हो, जिसके अन्दर विराजमान आर्यलोकेश्वर की मूर्ति के कुछ भाग बाहर से भी दिखलाई पड़ रहे हों। स्तूप के नीचे से एक बहुत बड़े सर्प का आधा शरीर बाहर निकलता हुआ दिखलाई पड़ना चाहिए।

१६. नागार्जुन

नागार्जुन भिक्षु रूप में, अत्यन्त सुन्दर एवं श्याम वर्ण के हों। उनका सिर का मध्य भाग हलका-सा उष्णीय उभरा हुआ हो। उनके सिर के पीछे से ऊपर की ओर सात नाग अपने सात फनों को फैलाये हुए स्थित हों। कहीं-कहीं फनों की संख्या आठ भी दिखलाई पड़ती है। यदि महापुरुष लक्षणों एवं अनुव्यञ्जनों से युक्त प्रतिमा के प्रति अधिक अभिरुचि हो तो ऐसे लोगों के लिए इनका दिव्य-काय चक्रवर्ती राजा के रूप में भी बनाया जा सकता है।

१७. कृष्णपा

कृष्णपा या कृष्ण चर्मपा पूर्ण योगी, जटाशिखा बाँधे हुए; छः प्रकार के अस्थि आभूषणों से भूषित, व्याघ्र-चर्म का अधोवस्त्र पहने, रंग के साँवले, हाथ में डमरू और कपाल धारण किये, बाहुओं में त्रिशूल धारण किये हुए, बैताली या राक्षसी पर सवार हों। उनके ऊपर आकाश में स्वतः घूमते हुए सात छत्र और स्वतः बजते हुए सात डमरू विद्यमान हों।

१८. आर्यदेव

आर्यदेव या कर्णरिपा भिक्षु के रूप में, करन नामक वृक्ष की बड़ी-सी पत्ती हाथ में लिए हों।

१९. थकनपा

थकनपा योगी के रूप में एक वृक्ष के मूल में आधे लेटे हुए (कोई कलाकार वृक्ष के मूल में खड़े भी बना देते हैं) हों। आसपास दोनों ओर नगर का चिह्न तथा उनके सामने एक भिक्षु आकर उनसे कुछ बातें करते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

२०. नरोपा

नरोपा या नड़पा का वर्ण गहरा नीला या नील और रक्त का मिश्रण है। वे जटा, शिखा एवं मुकुट धारण किये हुए हों। शरीर पर नर-चर्म धारण किये हुए तथा उस नर-चर्म के हाथ और पैर अपने हाथों से पकड़े हुए हों। दोनों पैर नृत्य-मुद्रा में हों अथवा एक पैर सिमटा हुआ और दूसरा पैर फैला हुआ हो।

२१. श्यालिपा

श्यालिपा एक योगी के वेश में हों तथा एक भेड़िये का शव अपने कन्धों पर उठाये हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

२२. तिल्लिपा

तिल्लिपा या तिलोपा के शरीर का रंग गहरा नील है। वे तिल कूटते हुए मुद्रा में दिखाई पड़ते हों। सामने उनकी पत्नी एक पात्र लेकर उनके ओखली में तिल डालती हुई दिखाई पड़ती हो।

२३. चत्रपा

चत्रपा एक भिक्षु के रूप में बहुत से पोथियाँ पीठ पर उठाये हुए तथा एक छोटी-सी पोथी या पुस्तक हाथ में लिए खड़े हों या उन्हें बैठे हुए अध्ययन-अध्यापन की मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

२४. भद्रपा

भद्रपा जनेऊ धारण किये हुए, सुलझे हुए बाल संवारकर, शिखा बाँधे हुए, कर्णाभूषण आदि हलके रत्नाभूषण पहने हों, सामने मदिरा से भरा कलश और सुअर का माँस (पूरा शव) रखे हुए दिखलाई पड़ना चाहिए। उनके दाहिनी ओर एक उच्च शिला पर (उनके) गुरु एक योगी के रूप में बँधी हुई जटा-शिखा वाले विराजमान हों, ऐसा बनाना चाहिए।

२५. धुखन्तिपा

धुखन्तिपा श्मशान के बहुत से चिथड़े इकट्ठे करके अपने हाथ से सिलते हुए मुद्रा में बनाये जायें।

२६. अयोगीपा

अयोगीपा या अजोकपा एक योगी के रूप में श्मशान में लम्बा होकर सोये हुए मुद्रा में बँधी हुई जटा वाले बनाये जायें।

२७. कल-कलपा

कलकलपा सुन्दर रूपवान, हलकी जटा-शिखा बाँधे हों। श्मशान में समाहित-मुद्रा में विराजमान हों।

२८. धोबीपा

धोबीपा किसी पात्र या नदी में पुराने कपड़े धोते हुए दिखलाई पड़ना चाहिए।

२९. कङ्कनपा

कङ्कनपा एक योगी के वेश में अपने हाथ के कंकण की ओर देखते हुए समाधि लगाकर बैठे हों और उनके ऊपरी ओर आकाश में बहुत से देवी-देवता उनकी पूजा कर रहे हों ऐसा दिखलाना चाहिए।

३०. कम्बलपा

कम्बलपा, भिक्षु रूप में हों, अपने शरीर के बराबर जमीन खोदकर, उस गड्ढे के अन्दर बैठकर, गड्ढे के मुख पर चारों ओर सूखे नर-मुण्डों के घेरे को देखते हुए, भावना की मुद्रा में, अथवा किसी पर्वत की गुफा के अन्दर समाहित-मुद्रा में बैठे हुए दिखलाई पड़ते हों।

३४० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

३१. डिङ्गिपा

डिङ्गिपा या डिङ्गिरिपा एक पात्र में या ओखली में धान को मूसल से कूटते हुए तथा उससे निकालकर धोते हुए अवस्था में दिखलाये जायें। उनके एक ओर मदिरा बेचनेवाली एक स्त्री अवश्य बैठी हो।

३२. भद्देपा

भद्देपा (भन्देपा) एक राजकुमार के रूप में बैठे हों। उन्हें एक भिक्षु भिक्षा-पात्र को जो हाथ में लेकर आकाश मार्ग से उड़ रहा हो, ऐसे आकाशीय दृश्य को देखते हुए सामने खड़े देवशिल्पज्ञ विश्वकर्मा से बातें करते हुए दिखाया जाय।

३३. तन्देपा

तन्देपा या तन्तेपा एक योगी के रूप में जूआ खेलते हुए अवस्था में दिखलाये जाय।

३४. कुकुरिपा

कुकुरिपा या कुकुराजा योगी के रूप में अस्थि-आभूषण पहने जटाधारी, बड़ी प्रसन्न-मुद्रा में अपनी गोद में एक कुतिया बैठाये हुए दिखलाये जायें।

३५. कुचिपा

कुचिपा एक योगी के रूप में हों, गले के पीछे एक गाँठ उभरी हुई हो, कुछ अप्रसन्न-मुद्रा में बैठे हों। उनके सामने आचार्य नागार्जुन विराजमान हों, इस रूप में दिखलाये जायें।

३६. धर्मपा

धर्मपा ब्राह्मण पुरोहित के रूप में विराजमान हों और उनके आस-पास बहुत-सी पोथियाँ रखी हों।

३७. महिपा

महिपा स्थूल अंगों से युक्त हों, गले में उभरे हुए माँस पर हलकी-सी झुर्रियाँ पड़ी हुई हों। अन्य लोगों को शारीरिक बल प्रतियोगिता की मुद्रा में दिखाया जाय।

३८. अचिन्तपा

अचिन्तपा एक लकड़हारे योगी के रूप में जंगल में लकड़ी काटते हुए या लकड़ी काटकर उसे उठाकर चलते हुए अवस्था में या वन में एक वृक्ष के मूल में आधा लेटे हुए कुछ गम्भीर सोच-विचार की मुद्रा में हों।

३९. भवहिपा

भवहिपा (भवह, भातख, बतखपा आदि) राजा के रूप में, हाथ में अमृत भरे कपाल को धारण किये दिखलाई पड़ते हों। उनके बायीं ओर से उनकी पत्नी उन्हें आलिङ्गन करती हुई दिखलाई पड़ती हों।

४०. नलिपा

नलिपा योगी के रूप में किसी झील के तट पर बैठे हुए पद्म-युक्त सरोवर से पुष्प सहित पद्ममूल तोड़ते हुए दिखलाये जायें।

४१. भुसुकुपा

भुसुकुपा (शान्तिदेव) भिक्षु के रूप में चारों ओर भिक्षु संघ से परिवृत्त लालिमायुक्त गौरवर्ण, एक ऊँची गद्दी पर बैठे हुए, दिखलाई पड़ना चाहिए। शारीरिक स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो। हाथ प्रवचन-मुद्रा में गद्दी से आकाश की ओर कुछ उठे हुए हों।

४२. इन्द्रभूति

इन्द्रभूति राजा के रूप में विराजमान दिखलाई पड़ना चाहिए। वे चारों ओर में अनेक प्रकार के नृत्य, संगीत और वाद्य-यन्त्र बजानेवाली स्त्रियों से परिवृत्त हों।

४३. मेकोपा

मेकोपा पूड़ी बेचते हुए एक योगी के रूप में, सामने नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ फैलाकर, उसे बेचने के लिए उद्यत दिखलाई पड़ते हों।

४४. कुदालिपा

कुदालिपा (कोदलिपा) सिर पर पगड़ी बाँधकर, कुदाल लेकर जमीन खाना हुए दिखलाई पड़ते हों।

३४२ : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

४५. कमरिपा

कमरिपा (कम्परिपा) योगी के रूप में लोहार का काम करते हुए हों। अर्थात् तपते हुए लोहे को पीटते हुए आस-पास निहाई, सँड़सी, हथौड़े, भाथी, अंगार आदि लोहार के औजारों से घिरे हुए दिखलाई पड़ते हों।

४६. जालन्धरपा

जालन्धरपा एक योगी के रूप में जटा-शिखा, अस्थि-आभूषणों से विभूषित हों। उनका एक पैर पीछे से मोड़कर कन्धे पर चढ़ा हुआ तथा दूसरा पैर फैला हुआ हों। वे धरती पर घुटने के बल पर बैठे हुए हों। दोनों हाथों की तर्जनियों के अग्रभाग मिले हुए और शेष उँगलियाँ परस्पर आलिङ्गित मुद्रा में सिर के ऊपर उलटकर रखी हुई हों। सामने उनकी कर्म-मुद्रा (अर्थात् पत्नी) उन्हें दण्डवत प्रणाम करती हुई दिखलाई पड़ती हों।

४७. राहुलपा

राहुलपा श्मशान में बैठे हुए हों। शरीर का रंग नीला तथा उसमें हलका बुढ़ापा झलक रहा हो। सिर के बाल मुंडे हुए हों और वे श्मशान में आवरण रहित नगनावस्था में पड़े हुए स्त्री के विकृत शव को देखते हुए समाहित मुद्रा में बैठे हुए हों।

४८. धर्मपा

धर्मपा एक वृद्ध भिक्षु के रूप में हाथ में पोथी लिए हुए हों।

४९. धोकरिपा

धोकरिपा एक बड़े-से झोले के अन्दर एक बड़ा पात्र डालकर भिक्षा माँगते हुए खड़े हों।

५०. मेधिनपा

मेधिनपा योगी के रूप में दो बैलों के कन्धों पर जुआ रखकर, हल लेकर खेत जोतते हुए दिखलाई पड़ते हों।

५१. पङ्कजपा

पङ्कजपा ब्राह्मणकुमार के रूप में एक कमलयुक्त सरोवर के तट पर स्थित आर्य-अवलोकेश्वर के मन्दिर के अन्दर स्थित आर्यलोकेश्वर की मूर्ति की पूजा करते हुए, भिक्षु का तथा पूजा के दृश्य का अवलोकन करते हुए, खड़े दिखलाई पड़ते हों।

नोट— इनके वृत्तान्त में लोकेश्वर को ईश्वर (महेश्वर) के रूप में समझने का भ्रम होने की बात कही गई है। अतः इस लोकेश्वर को लाल वर्ण, बायें हाथ में पद्म और दाहिने हाथ से उस की पंखुड़ियाँ खोलते हुए, पत्नी के द्वारा बायीं ओर से आलिङ्गन करते हुए तथा दोनों ओर त्रिशूल और कपाल रखे हुए होना चाहिए^१।

५२. घण्टपा

घण्टपा (गण्टपा) योगी के रूप में शरीर पर अस्थि के आभूषण, व्याघ्र-चर्म का अधोवस्त्र, जटा-शिखा आदि से सुसज्जित हों। रंग के साँवले, वज्र और घण्टा हाथ में धारण किये हुए कर्म-मुद्रा से आलिङ्गित हों।

कर्ममुद्रा-साक्षात् वज्र-योगिनी, लाल रंग हाथ में कुब्जखड्ग (शस्त्रविशेष) और कपाल धारण किये हों, (दोनों) आकाशमार्ग से चलते हुए दृष्टिगोचर हों। अथवा सहज चक्रसंवर की प्रतिमा की तरह दाहिना पैर आगे फैला हुआ एवं बायाँ पैर किञ्चित् समेटा हुआ हो। आकाश मार्ग से गमन को परिलक्षित करने के लिए (दोनों मूर्तियों को) बादल के बीच में बैठे हुए दिखलाना चाहिए।

नीचे की धरती से पाताल को फोड़कर पानी निकलता हुआ दिखलाई दे, जिसमें नगर का आधा भाग डूबा हुआ हो। उस झील-सदृश पानी के बीच से आर्य-लोकेश्वर-ख-सर-पाणि की एक मूर्ति का आधा भाग निकला हुआ दिखलाई पड़ना चाहिए।

१. यह नोट मूल पाण्डुलिपि में एक साथ लिखी हुई है। अतः यहाँ अनुवाद एक साथ कर दिया है।

५३. जोकिपा

जोकिपा या योगीपा एक योगी के रूप में, निर्वसन, हाथ में दण्ड लिए हुए, अपनी सभी सामग्री एक कपड़े में बाँधकर उसे डण्डे के एक ओर लटकाकर कन्धे पर रखे हुए चलने की मुद्रा में दिखलाई दें।

५४. चालुकिपा

चालुकिपा योगी का वेश धारण किए हुये मृगचर्म का बिछौना बिछाकर एक बहुत बड़े से मसलन को तकिये के रूप में रखकर सोये हुए हों। सामने बड़ा-सा भावना-स्तम्भ गड़ा हुआ हो, ऐसा बनाना चाहिए।

५५. गोधुरिपा

गोधुरिपा या गुण्डरिपा-योगी के वेश में हों। अधोवस्त्र के नाम पर पत्तियों से बना गमछा पहने हों। सिर मुंडा हुआ हो। जाल बिछाकर चिड़िया का शिकार करने की मुद्रा में दिखलाई पड़ना चाहिए।

५६. लुचिकपा

लुचिकपा-ब्राह्मण के वेश में हों। बाल और दाढ़ी चिमटी से उखाड़ने के कारण ऊबड़-खाबड़ अवस्था में दिखलाई पड़ना चाहिए।

५७. नगुणपा

नगुणपा एक योगी के रूप में हों। पलंग के सहारे पीठ टिकाकर भोजन करती हुई मुद्रा में हों। उनके सामने एक योगी बैठे हुए दिखलाई पड़ें।

५८. जयानन्द

जयानन्द एक राजमन्त्री के रूप में हाथ में झांझड़ी नामक वाद्ययन्त्र लेकर नाना प्रकार अन्न के बलि का दान करते हुए दिखलाई दें। उनका शिष्य-परिवार मृदंग, बाँसुरी, झांझर, वीणा आदि बजाते हुए चारों ओर से घेरकर बैठा हो।

५९. पचरिपा

पचरिपा योगी के रूप में वृक्ष के मूल में बैठे हों। उनका सिर मुंडा हुआ, केवल एक त्रिकोनी लंगोटी मात्र धारण किये हुए हों। कचौड़ी का आधा भाग लेकर उसे

खाते हुए दिखलाई दें। उनके सामने आर्य लोकेश्वर या उनके निर्माणकाय के रूप में एक भिक्षु विराजमान हो।

६०. चम्पकपा

चम्पकपा, राजा के रूप में अपने उपवन में गद्दी पर विराजमान हों। उनके चारों ओर चम्पक नामक वृक्ष सुशोभित हों। उन वृक्षों की शाखाएँ गोल आकार की, पत्तियाँ गहरे हरे रंग की और उनके फूल सफेदी लिए हुए पीले रंग के हों।

६१. भिखनपा

भिखनपा तुम्बी-पात्र धारण किये हुए हों। उनके सामने उपस्थित धर्म-उपदेश देने की मुद्रा में बैठी एक डाकिनी हो, जो स्वभाव से अत्यन्त शान्त, बिना सँवरे लम्बे बाल, थोड़े अस्थि-आभूषण से सजी हुई हो, वे उसे अपने दाँत निकालकर समर्पित करते हुए दिखलाई पड़ें।

६२. घिलिपा

घिलिपा विविध प्रकार के तेल के पात्र इकट्ठे करके तेल बेचने की मुद्रा में हों। उनके समीप नाना प्रकार की भोजन-सामग्रियों से सजे मंच के सामने एक पण्डित धर्म-उपदेश की मुद्रा में विराजमान दिखलाई देना चाहिए।

६३. कुम्भरिपा

कुम्भरिपा, कुम्भ या मिट्टी के बर्तन बनाने के कार्य में लगे हुए हों। उनके आस-पास अपनी स्त्री तथा बाल-बच्चे बैठे हों।

६४. चपरिपा

चपरिपा एक योगी के वेश में मेखली^१ (अर्थात् अलफी नामक) वस्त्र पहने हुए हों। वे एक वृक्ष के नीचे बैठे हों। उनके एक ओर जलती हुई आग और उसमें

१. मेखली वस्त्र उस वस्त्र को कहते हैं, जिसमें एक लम्बी पट्टी के बीच से सिर निकालने की जगह हो, उसका एक छोर सामने से और दूसरा छोर पीछे पीठ के ऊपर से नीचे की ओर लटकता हुआ फैल जाता है। उसे कमरबन्ध या मेखले के द्वारा बाँध देने पर वह पूरे शरीर को ढकनेवाला वस्त्र बन जाता है।

नोट— इस अंश को पाण्डुलिपी में मूल पाठ के साथ ही रखा है। द्र० पृ० ८, ९, दिल्ली

से धुआँ निकलता हुआ दिखाई दे तथा दूसरी ओर रसायन भरा बड़ा-सा बर्तन रखा हुआ हो। योगी स्वयं एक वृक्ष की बड़ी-सी पत्ती लेकर उस रसायन द्रव्य में डुबो-डुबोकर आस-पास के लोगों पर छिड़क रहे हों। उनके सामने एक स्त्री अपने बच्चे के साथ हाथ जोड़कर बैठी हुई हो। उस स्त्री के पीछे नगर के अनेक लोग आते हुए दिखलाई दें।

उस मूल वृक्ष वाले स्थान से कुछ दूरी पर एक गुफा हो। जिसके अन्दर एक ही आसन पर बीच में एक देवता, उसके दाहिने ओर उससे कुछ छोटे आकार के एक देवता तथा बाँयी ओर एक देवी, तीनों एक साथ विराजमान हों।

६५. योगिनी मणिभद्रा

योगिनी मणिभद्रा सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित, एक गृहिणी स्त्री के रूप में उड़कर आकाश प्रदेश में विराजमान हो। उनके नीचे की धरती पर एक बड़े से पानी के गड्ढे के टूटने से चारों ओर बिखरे हुए उसकी टुकड़ियों का दृश्य दिखलाई दे।

६६. योगिनी मेखली

मेखली निर्वसन अर्थात् वस्त्र रहित और योगिनी के अनुरूप अस्थि आभूषणों से विभूषित हो। बायें बाहु में त्रिशूल धारण किये हुए, बिना सँवरे बाल, अपने मुँह से एक तलवार निकालकर दाहिने हाथ में लेती हुई तथा बायें हाथ में नर-कपाल धारण किये हुए हों।

६७. योगिनी कनखला

योगिनी कनखला उपर्युक्त मेखला के आकार की ही हों। इनकी विशेषताएँ ये हैं कि दाहिने हाथ में कुब्जखड्ग नामक शस्त्र, बायें हाथ में अपना सिर काटकर लिए हुए दिखलाया जाता है। परन्तु साधारण लोगों की कल्पना में यह दृश्य अच्छा नहीं लगता। लोग ऐसा बनाना नहीं चाहेंगे, अतः वे आर्य छिन्नमस्तका योगिनी के प्राचीन चित्रों के अनुसार अपना सिर काटकर हाथ में रखी हुई तो बनाते हैं पर शरीर के साथ भी एक सिर बना देते हैं। तदनुसार यहाँ भी शरीर के साथ सिर बनावें तो अनुचित नहीं होगा।

ये दोनों योगिनी मेखला और कनखला आकाश में बैठी, दोनों पैर नृत्य-मुद्रा में अर्थात् दाहिना पैर फैलाये हुए और बायाँ पैर समेटते हुए तथा एड़ी उठाकर अंगुलियों के अग्रभाग से धरती पर स्पर्श करते हुए^१ दिखलाई जाती हो।

६८. कलकलपा

कलकलपा एक योगी के वेश में गहरे नीले रंग के और श्मशान में विराजमान हों। उनके समक्ष कुछ ऊँचे स्थान पर अस्थि-आभूषणों से विभूषित एक योगी उन्हें धर्म-उपदेश देते हुए दिखलाई दें। योगी के हाथ उपदेश-मुद्रा में हों।

६९. कन्तलिपा

कन्तलिपा कपड़ा सिलते हुए योगी के वेश में बैठे हों। उनके सामने की ओर बैठी एक डाकिनी धर्मोपदेश-मुद्रा में उन्हें देशना दे रही हों।

७०. धगुलिपा

धगुलिपा-घास से रस्सी बनाते हुए योगी के रूप में रस्सियाँ बेचते हुए दिखलाई पड़ते हों।

७१. उडलिपा

उडलिपा-एक योगी के रूप में सिर पर पगड़ी बाँधे हों। शरीर पर चोला पहने, हलके रत्न-आभूषण, सँवरी हुई दाढ़ी और आश्चर्य के साथ आकाश की ओर देख रहे हों। उनके सामने के आकाश पर पञ्चरंगी बादल छाये हुए हों। उन रंगीन बादलों में घोड़ा, हाथी तथा विविध पक्षियों का आकार बना हुआ हो और बादलों के नीचे दो हंस उड़ते हुए जा रहे हों।

उडलिपा के समक्ष एक दूसरे योगी हाथ में वृक्ष की पत्तियाँ लिए हुए दिखलाये जाते हों।

७२. कपालिपा

कपालिपा-रंग के साँवले श्मशान में पड़े एक स्त्री के शव के कपाल को निकालकर हाथ में लिए हों, वे सभी प्रकार के अस्थि-आभूषणों से सुसज्जित हों।

१. इन शारीरिक अंगक्षोपण-मुद्राओं का आन्तरिक चित्त, वायु, नाड़ी मण्डल और ज्ञान आदि से विशेष सम्बन्ध रहता है। द्रष्टव्य, चक्रसंवर आदि तन्त्र, कंग्यु० पृ०...।

७३. किरपालपा

किरपालपा सुन्दर रूप रंग के एक योगी हैं। क्रोध से उनके चेहरे पर कुछ रेखाएँ उभरी हुई हैं। रत्न-शिखा और पञ्चशिखावाले मुकुट पहने हुए हैं। बाल के नीचे की सीमा पर रेशमी 'वीरसिरबन्धन' बाँधे हुए हैं। उनके बाल दोनों ओर बाँधे हुए सुवर्ण-सिकड़ी को अन्दर से निकालकर नीचे की ओर लहराते हुए हैं। वे तलवार एवं ढाल हाथों में लिए राजगद्दी पर विराजमान हैं।

७४. सागरपा

सागरपा-भिक्षु के रूप में हैं। उनके समक्ष आर्य अवलोकेश्वर खड़े हैं।

७५. सर्वभक्षपा

सर्वभक्षपा-एक योगी हैं। उनके सामने एक बहुत बड़े पात्र में विविध खाद्य-पदार्थ भरे हैं; जिन्हें निकालकर वे खाने की मुद्रा में दिखलाई पड़ते हैं।

७६. नागबोधि

नागबोधि-एक भिक्षु के रूप में समाहित-मुद्रा में विराजमान हैं। उनके एक ओर गुफा के अन्दर एक भिक्षु हो, जिसके सिर से मृग का सींग निकला हुआ हो तथा वे समाहित अवस्था में विराजमान दिखलाई पड़ते हैं।

७७. दारिकपा

दारिकपा-एक योगी हैं। वे जटा, अस्थि-आभूषण, हाथ में वज्र और घण्टी धारण किये हुए हैं। अनेक स्त्री-परिवारों के साथ वे आकाश मार्ग से उड़ते हुए जा रहे हैं और नीचे धरती पर बहुत बड़ा जन-समूह आचार्य की ओर देख रहा हो। एक स्थल पर एक बहुत लम्बे शिला-स्तम्भ के ऊपरी भाग पर एक पत्थर के हाथी की बहुत बड़ी प्रतिमा रखी हुई हो।

७८. पुतलिपा

पुतलिपा-एक योगी हैं। "हेवज्र" का थंका (पटचित्र) टाँगकर उसके समीप वे राजा के साथ कुछ वार्तालाप करते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

७९. पनहपा

पनहपा-एक योगी हैं। वे घुंघुरु आदि अनेक अलङ्कारों से ग्रथित जूते पहनकर दौड़ते हुए मुद्रा में दिखलाई पड़ते हैं।

८०. कोकिलपा

कोकिलपा एक राजा के रूप में दिखलाई पड़ते हैं। वे अनेक फल-फूलों से लदे उपवन में गद्दी पर विराजमान हैं। उनके आस-पास बहुत सारी युवतियाँ नृत्य, संगीत, करती हुई एवं विविध वाद्ययन्त्रों को बजाती हुई विद्यमान हैं। कुछ युवतियाँ स्नान कर रही हैं। उपवन के वृक्षों पर बहुत-सी कोयलें बैठी हुई हैं। राजा उनके सामने उपस्थित एक भिक्षु से वार्तालाप कर रहे हैं।

८१. अनङ्गपा

अनङ्गपा-अत्यन्त सुन्दर रूपवाले भिक्षु के रूप में दिखलाई पड़ते हैं। वे झोपड़ी के अन्दर बैठे हैं और एक अति सुन्दर भिक्षु सामने आकर उनसे भिक्षा माँग रहा हो।

८२. योगिनी लक्षिङ्कर

लक्षिङ्कर या लक्ष्मीकर श्मशान में बैठी हैं। उनके बाल बिखरे हुए तथा हाथ में कुब्ज-खड्ग और नरकपाल हो। बायें बाहु में त्रिशूल धारण किये हुए तथा अस्थि-आभूषण पहनी हुई हैं। इन्हें पगली के रूप में भी प्रतिबिम्बित किया जाता है।

८३. समुद्रपा

समुद्रपा-एक योगी हैं। वे समुद्र और नगर के बीच के रास्ते से गुजरते हुए दिखलाए जायें, सिर पर पगड़ी बाँधे हैं। उनके समक्ष सिद्ध अचिन्तपा निर्वसन हैं, फैली हुई जटावाले तथा प्रवचन-मुद्रा में बैठकर उन्हें उपदेश दे रहे हैं।

८४. व्यालिपा

व्यापिला-ये ब्राह्मण पुरोहित के रूप में विराजमान हैं। सामने बड़ा-सा पात्र तथा आस-पास और भी छोटे-मोटे बर्तन रखे हैं; जिनमें रसायन द्रव्य भरे हैं। स्वयं

३५० : चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त

उन रसायन द्रव्यों का प्रयोग करते हुए बहुत से लोहे को सोने में परिणत करने में कार्यरत हों। उनके बायीं ओर उनकी पत्नी, बाल-बच्चे और लड़के की पत्नी तथा एक घोड़ी भी हो।

उनके समीप समुद्र के पानी से एक पहाड़ निकलता हुआ दिखलाई दे तथा उस पहाड़ के ऊपरी भाग पर एक सुन्दर कुटिया बनी हो।

समाप्तम्

इस प्रकार चौरासी सिद्धों के चित्र (या मूर्ति) बनाने की विधि उनके जीवन वृत्तान्त के अनुरूप, भट्टारक तारानाथ के मत को बिना विकृत किये यहाँ यथावत लिखी गयी हैं।

इसे रिखा-रिगुजिन-छेवङ्-नोर बु द्वारा सिक्किम इग-रिखोइ दव्येन् ग्नस् में लिखा गया है^१।

॥ भवतु सर्वमङ्गलम् ॥

अनुवादक- आचार्य सेम्पा दोर्जे

१. इस मूल ग्रन्थ का भट्टारक तारानाथ कृत 'सिद्धों के चित्र लिखने की विधि' नामक ग्रन्थ है। उसके अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण एवं भ्रष्ट हो जाने पर उस ग्रन्थ के आधार पर श्री 'छेवंग नोरबु' ने इस ग्रन्थ को तैयार किया है।

विस्तृत जानकारी के लिए भूमिका देखें।

